तेईसवां अध्याय।

ग्वालों का मथुरा के चौबों से भोजन मांगना॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् श्याम व बलराम एक दिन गौ चराने वास्ते वनमें जाकर ग्वालों के साथ आनन्दपूर्वक खेलते थे उस समय ग्वालों ने व्रजनाथजी से कहा महाराज जो कलेवा हम लोग अपने घर से लाये थे सो खा गये पर भूख हमारी नहीं गई इसलिये कुछ खिलाइये यह बात सुनकर श्यामसुन्दर अंतर्यामीने विचारा कि मथुरावासी ब्राह्मणों की स्त्रियां मेरे दर्शन वास्ते इच्छा रखतीहैं सो आज उनका मनोरथ पूर्ण किया चाहिये ऐसा विचारकर नन्दलालजीने ग्वालवालों से कहा देखो वनमें जहां धुआं उठताहै वहाँ पर मथुरिया ब्राह्मण राजा कंस के डरसे छिपकर यज्ञ व होम करते हैं तुम लोगोंमें से पांच चार बालक वहां जावो व दण्डवत् करके मेरा नाम लेकर उनसे भोजन मांग लावो यह बात सुनतेही कई ग्वालोंने वहां जाकर विनयपूर्वक उनसे कहा॥

दो० हाथ जोरि ठाढ़े भये ग्वालवाल यक साथ। भोजन मांगत हैं कह्यो माखन प्रभु व्रजनाथ॥

हे राजन् उन ब्राह्मणों ने जो अपने अज्ञान व कर्म के अभिमान से श्याम व बलरामकी महिमा नहीं जानते थे यह वचन सुनकर ग्वालवालों से कहा तुम मूर्खलोग नहीं जानते कि यह सब भोजन हमने देवतों के नाम पर यज्ञ करनेवास्ते तैयार कियाहै जब तक यज्ञ परमेश्वर का सम्पूर्ण नहीं होगा तब तक भोजन नहीं पावोगे यज्ञ होने उपरांत तुमको भी प्रसाद मिलैगा व श्याम व बलराम अहीरोंके घर पालन हुये उनसे हम ब्राह्मण लोग उत्तम कुलहैं यह कठोर वचन ब्राह्मणोंका सुनतेही सब ग्वालवाल निराश होकर पछताते हुये केशवमूर्तिके पास जाकर बोले हे व्रजनाथ हम लोग अपना मान छोड़कर तुम्हारे कहनेसे भीख मांगने गये तिसपर भी भोजन नहीं पाया अब क्या करैं भूख बहुत सतावती है यह बात सुनतेही केशवमूर्तिने हँसकर बलरामजीसे कहा कि वह ब्राह्मण लोग विना भक्ति हमारे भेदको नहीं जानते कि स्वामी यज्ञ व होम का कौन है अपने कर्म के अभिमान में अन्धे होरहे हैं बहुत उत्तमहै जो वह लोग इसीतरह अपने

अज्ञानमें पड़े रहें फिर श्यामसुन्दर ने ग्वालबालों से कहा कि अब तुम लोग उनकी स्त्रियोंके पास जो बड़ी धर्मात्मा व हरिभक्तहैं जाकर कहो कि श्याम व बलराम ने जो वनमें गौ चराने आये हैं भूखे होकर तुम से भोजन मांगा है वह स्त्रियां तुमको बड़े आदर भाव से भोजन देवेंगी यह सुनतेही ग्वालबालों ने चौबाइनों से जाकर कहा हे माता श्रीकृष्ण व बलरामजी ने तुमसे भोजन मांगा है सो तुम क्या कहती हो ॥

दो० ग्वालनके सुनि वचन सब हर्षि उठीं व्रजवाम। कहत हमारो भाग्य धनि भोजन मांग्यो श्याम ॥
सो० करतरहीं नितध्यान सुनिसुनिजिनकेगुणश्रवण। सुफलजन्मनिजजान तिनको भोजनलेचलीं
दो० अति बड़भागी जीव हैं जिनको व्रजमें वास। माखन प्रभुके दरशते पावत परम हुलास ॥

उन स्त्रियोंके सदा मनसा वाचासे यह इच्छा रहती थी कि कोई ऐसा दिन भी होगा जो हमैं दर्शन केशवमूर्ति के मिलैंगे इसलिये उन्होंने बड़े प्रेमसे मेवा मिठाई व पकवान व पूरी व कचौरी व दूध व दही व माखन आदिक सोने व चांदी की थालियों में रखकर ग्वालों को दिया और कुछ अपने हाथ में लेकर जिस स्थान पर मुरलीमनोहर थे ग्वालबालों के साथ वहां को चलीं उस समय उनके पति आदिकों ने बहुत मना किया कि तुमलोग ग्वालोंके साथ मत जाव पर उन्होंने जो परम भक्त थीं किसी का कहना नहीं माना ॥

सो० जिनके उर नँदलाल बसैं लकुट मुरलीलिये। तिन्हैं न भय यमकाल कौन भांति रोकी रुकैं ॥
चौ० तब ग्वालन से पूछत बाला। केतिक दूर अहैं नँदलाला ॥
चलो आज हम नयनन देखैं। जीवनजन्मसुफल करि लेखैं ॥

यह वचन सुनकर ग्वाल बोले हे माता थोड़ी दूर हैं जिस समय वह लोग बीच प्रेम दर्शन मोहनीमूर्तिके आनन्दसे चली जाती थीं उसी समय एक मथुरिया ब्राह्मण बजोरी अपनी स्त्रीको राहमें से पकड़ लाया तब उसने कहा हमको श्यामसुन्दरका दर्शन करने जाने देव अपने ऊपर अपयश मत लेव मुझे उनके दर्शनकी बड़ी लालसाहै और वह परब्रह्म परमेश्वर पृथ्वी का भार उतारने वास्ते अवतार लेकर संसारी मनुष्य की तरह लीला करते हैं तुम लोग वेद पढ़कर यज्ञ व होम करते हो पर उनको अपने अज्ञानसे नहीं पहिचानते ॥

दो० को जन जाने भेव यह यज्ञ करत केहि काज। भोजनमांगत हैं वही माखन प्रभु ब्रजराज॥

हे स्वामी मेरा प्राण तो नन्दलालजी से जा मिला इस झूठे शरीर को रोक कर क्या करोगे मेरे मरने उपरांत सिवाय पछताने के तुमको और कुछ हाथ नहीं लगेगा जिस मनुष्य को परमेश्वर से प्रीति न हो वह किसी काम का नहीं होता यह सब ज्ञान कहने पर भी उस मथुरियाने नहीं मान कर अपनी स्त्री को कोठरी में बन्द करके ताला दे दिया तब उसी साइत प्राण उसका बीच ध्यान केशवमूर्ति के निकल कर इस तरह सब स्त्रियों से पहिले वहां जा पहुँची जिसतरह पानी तुरन्त बहकर नदी व समुद्र में मिलजाता है॥

सो० कठिन प्रेम का पंथ जहां नेमकी गति नहीं। कहत सकल यह ग्रंथ प्रेमभाव के वश हरी॥

हे राजन् जब पीछे से वह सब स्त्रियां बड़े प्रेमसे भोजन लिये हुये जहां पर केशवमूर्ति बीच छाया वृक्ष एक सखा के कांधे पर हाथ दिये बांकी सूरत बनाये कमल का फूल हाथ में लिये खड़े थे जा पहुँचीं तब चरण उनका चूमकर थालियां भोजन की सामने धरदीं व उस मोहनीमूर्ति को देखतेही प्रसन्न होकर आपस में कहने लगीं हे सखी यही नंदलालजी हैं जिनकी बड़ाई हम लोग सदा सुनकर ध्यान किया करती थीं आज हमारे भाग्य उदय हुये जो इनका दर्शन पाया अब इन चन्द्रमुखकी शीतलताई से अपनी अपनी आंखें ठंढी करो व संसारमें जन्म लेनेकाफल उठाओ हे राजन् मुरलीमनोहरकी कृपासे उस समय उन स्त्रियोंकी दिव्य-दृष्टि होगई तब उन्होंने मोहनप्यारे को पूर्णब्रह्म जानकर हाथ जोड़कर विनय किया हे दीनानाथ विना कृपा तुम्हारी इस सांवलीसूरतिका दर्शन किसीको नहीं मिलता न मालूम कौन जन्मके पुण्य हमारे सहायक हुये जो तुम्हारा दर्शन पाया व अनेक जन्मके पाप हमारे छूट गये व हम लोगोंके पति आदिक अपने अज्ञान व अभिमानसे संसारीमाया मोहमें डूबकर ऐसे अन्धे होगये जो परमेश्वर वैकुण्ठनाथको जिनके नामपर यज्ञ करते हैं मनुष्य समझकर मांगने पर भी भोजन नहीं दिया तन व धन वही उत्तम समझना चाहिये जो तुम्हारे काम आवे जो लोग मनुष्यका तन

पाकर तुम्हारी भक्ति व सेवा करते हैं उन्हीं का जन्म लेना स्वार्थ है व यज्ञ व तप व ध्यान व ज्ञान वही उत्तम होता है जिसमें तुम्हारा नाम आवे॥

दो० जो जन मन वचसे करैं माखन प्रभुसे हेत। चारि पदारथ देतहैं पाप दुःख हरिलेत॥

यह वचन प्रीति व भक्ति से भरा हुआ सुनतेही केशवमूर्ति उनकी कुशल पूछकर बोले मैं नन्दमहरका बेटाहूं तुम लोग ब्राह्मणी होकर मुझे दण्डवत् मत करो इसमें मुझको दोष लगैगा जो लोग ब्राह्मण या उनकी स्त्रियोंसे अपना काम व टहल लेते हैं वह संसारमें कुछ बड़ाई नहीं पाकर पापके भागी होते हैं तुमने हमें भूखा जानकर दयाकी राह वनमें आनके भोजन दिया सो मैं इसके बदले तुम्हारा क्या सन्मान करूं वृन्दावन मेरा घर यहांसे दूर है कदाचित् अपने घरपर होते तो यथाशक्ति तुम्हारा आदर भाव करते सो यहां मुझसे तुम्हारा कुछ शिष्टाचार नहीं बनिपड़ा इस बातका पछताव मेरे मनमें रहगया तुमलोगोंको यहां आये वहुत विलम्ब हुआ अब अपने अपने स्थानपर जाव ब्राह्मण लोग तुम्हें जोहते होंगे किसवास्ते कि स्त्री अर्धांगी होती है विना तुम्हारे गये देवता यज्ञ व होम ब्राह्मणोंका अंगीकार नहीं करेंगे॥

सो० सुना वचन निर्वान कर्म धर्म वाणी सुखद। द्विजत्रिय परमसुजान बोलीं सब कर जोरिकै॥

हे वैकुण्ठनाथ आपका दर्शन करने व तुम्हारे चरणकमलकी भक्ति व प्रीति रखनेसे संसारीमाया छूट गई अब हमें घर दुवार व कुल परिवारका कुछ मोह नहीं रहा सिवाय इसके हमलोग विना आज्ञा अपने पति आदिकके तुम्हारा चरण देखने आई हैं कदाचित् वह लोग हमको अपने घरमें न रक्खें तो हम कहां जावेंगी इससे यह बात उत्तम है कि हम सब आपके चरणों के पास बनी रहें व तुम्हारी सेवा व टहल करके अपना परलोक बनावें व हे महाप्रभु एक स्त्री तुम्हारे दर्शनों की इच्छासे हमारे साथ आवती थी सो उसका पति वर्जोरी उसे पकड़कर राहमें से फेर लेगया न मालूम उसकी क्या गति हुई यह बात सुनकर मोहनीमूर्ति ने हँस दिया व उस स्त्रीका स्वरूप सबको दिखलाकर कहा देखो यह स्त्री तुमलोगोंसे पहिले मेरे यहां आन पहुँची जो कोई परमेश्वरमें प्रीति रखता है उसका

नाश कभी नहीं होता है राजन् उस स्त्रीको केशवमूर्तिकी सेवामें देखकर पहिले सबको आश्चर्य मालूम हुआ फिर सब स्त्रियोंने मुरलीमनोहर से विनय किया हे व्रजनाथ आप अर्थ धर्म काम मोक्ष चारों पदार्थके देनेवाले होकर हमको अपने चरणोंसे अलग न कीजिये तुम्हारा चरण छोड़कर अब हम जाय नहीं सक्तीं यह सुनकर केशवमूर्ति बोले सुनो तुम लोग परमेश्वरके प्रेममें लीनहो पर गृहस्थको वेदके अनुसार सब काम करना चाहिये शास्त्रमें ऐसा लिखाहै जो स्त्री अपने पतिको परमेश्वर तुल्य जान कर उसकी आज्ञा पालन करै व दूसरे पुरुषको पापकी आंखसे न देखै उस पतिव्रताको योगी व ज्ञानीसे उत्तम समझना चाहिये वह स्त्री जो कुछ शुभ या अशुभ अपने मुखसे किसी को कहै वह बात सच होजाती है और उसको चारों पदार्थ अपने स्वामीसे मिलसक्ते हैं॥

दो० यहि विधि ते निश्चय करै जो नारी मनमाहिं। चारि पदारथ सो लहै यामें संशय नाहिं॥

इस लिये तुम लोग अपने पतिके पास जाव वह तुमसे खेद न करके प्रसन्न होंगे यह वचन सुनतेही सब चौबाइनोंने अमृतरूपी नटवरवेष केशवमूर्तिको आंखोंकी राह अपने हृदयमें पी लिया व उनसे भक्ति वरदान लेकर दण्डवत् करके अपने स्थान पर चलीं व जिस ब्राह्मणने अपनी स्त्री को कोठरी में बन्द कर दियाथा उसने ताला खोलकर देखा तो अपनी स्त्री को मरी हुई पाकर रोने पीटने लगा जिससमय उसकी लोथ जलाने का उपाय कर रहाथा उसी समय सब स्त्रियां अपने स्थान पर पहुँचीं॥

दो० माखन प्रभुको दरशले आईं सुघर सुजान। तिनके दरशप्रतापते विप्रन पायो ज्ञान॥

हे राजन् जाती समय ब्राह्मणलोग अपनी अपनी स्त्रियोंपर क्रोधित हुये थे जब वह केशवमूर्तिका दर्शन करके फिर आईं तब उनका माथा चमकता हुआ देखकर ब्राह्मण लोग कहने लगे देखो जिनका दर्शन ब्रह्मादिक देवता व ऋषीश्वरोंको जल्दी ध्यानमें नहीं मिलता उन परब्रह्म परमेश्वरका दर्शन इन स्त्रियोंने करके अपना जन्म सफल किया व हम लोगोंने अपने अज्ञानसे नहीं पहिचाना कि स्वामी यज्ञ व होम का कौन है हमने वेद व

पुराणमें ऐसा सुना था कि परब्रह्म परमेश्वर यदुकुलमें अवतार लेकर नन्द व यशोदाको बाललीला का सुख दिखलावैंगे सो यही वैकुण्ठनाथ बाललीला करते हैं उन्होंने ग्वालबालों को भोजन मांगनेवास्ते हमारे पास भेजा था सो हमसे बड़ी चूक हुई जो सच्चिदानन्द को भोजन न दिया व जिनके प्रसन्न होने वास्ते हमलोग यज्ञ व होम करते हैं उन्हें मनुष्य समझकर उनके सन्मुख नहीं गये व अपने अज्ञान व अभिमानसे हमारे मन में दयाभी नहीं आई सो हमारे यज्ञ व तप करनेपर धिक्कारहै कि हमने परमेश्वरको नहीं पहिंचाना हमलोगों से इन स्त्रियोंको अच्छा समझना चाहिये जिन्होंने विना जप तप किये व कथा पुराण सुने अपने ज्ञानसे परमेश्वरको पहिंचानकर भोग लगाया व उनका दर्शन करके अपने नेत्रोंका सुख पाया इसीतरह ब्राह्मणोंने बहुत पछताकर अपनी अपनी स्त्रियोंसे विनयपूर्वक कहा तुम्हारी बराबर दूसरोंका भाग्य न होगा जो परब्रह्म परमेश्वर के दर्शन तुमको मिले फिर ब्राह्मणोंने श्यामसुन्दरको ध्यानमें हाथ जोड़कर विनय किया हे दीनानाथ हमलोगोंका अपराध क्षमा कीजिये व हमारे हृदयमें अज्ञानताकी काटि जो जमीहै उसको ज्ञानरूपी अग्निसे जला दीजिये जब इसीतरहपर बहुत स्तुति व विनती ब्राह्मणोंने की तब केशवमूर्तिने अपराध उनका अपने हृदय में क्षमा करदिया व सब स्त्रियों ने लोथ उस चौबाइनकी देखकर उसके पति से कहा हमने तेरी स्त्री को नन्दलालजीकी सेवा में देखाथा यह वचन सुनतेही वह मथुरिया रोकर बोला मैं भी अपनी स्त्री को तुम्हारे साथ जाने देता तो किसवास्ते वह मरती ऐसा कहकर वह मथुरिया रोता हुआ केशवमूर्ति के पास दौड़ा गया व अपनी स्त्रीको वहां चतुर्भुजीरूप देखकर जब श्यामसुन्दरके सामने अति विलाप करके रोने लगा तब ब्रजनाथजीने कहा अपनी स्त्रीके भक्ति करने से तूभी चतुर्भुजीस्वरूप होजा सो नन्दलालजीने स्त्री पुरुष दोनोंको विमान पर बैठाकर वैकुण्ठमें भेज दिया व जो कुछ पदार्थ ब्राह्मणकी स्त्रियां देगईं थीं उसको बांटकर ग्वालोंसमेत आनन्दपूर्वक भोजन किया उस समय श्रीदामाने कहा हे नन्दलालजी गायें चरती हुई दूर चली गईं उनको वहां-

रना चाहिये यह बात सुनतेही केशवमूर्तिने ऐसी मुरली बजाई कि सब गायें आप दौड़कर वहां चली आईं ॥

दो० या विधि मुरली टेरके घेरलई सब गाय । सांझ समय घरको चले हलधरजूके भाय ॥

जब केशवमूर्ति वंशी बजाते हुये वृन्दावनके निकट पहुँचे तब सब ब्रजबाला उनकी छवि देखने से प्रसन्न होकर बोलीं ॥

दो० प्रेममगन आनन्द अति कहत सकल ब्रजबाम । देखोसखियशुमतिसुवनशोभितअतिबलराम ॥
कहत मुदितमन युवतिजन धनिधनिसखिबह मोर । जिनके पंखनको मुकुट दीन्हो नन्दकिशोर ॥

हे राजन् जिस समय वैकुण्ठनाथजी गायोंके पीठपर हाथ फेरकर अपने पीताम्बरसे उनका शरीर पोंछतेथे उस समय स्वर्गमें कामधेनु गौ पछता कर कहती थी परमेश्वर हमाराभी जन्म वृन्दावनमें देते तो केशवमूर्ति हमारे ऊपरभी हाथ फेर कर मेरा दूध दुहते ॥

दो० धनिधनिब्रजकीधेनु यह चारत त्रिभुवननाथ । झारत पोंछत दुहत नित हितकर अपने हाथ ॥

चौबीसवां अध्याय ।

श्यामसुन्दर का गोवर्द्धन पहाड़ की पूजा करना ॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् जिसतरह श्यामसुन्दरने गोवर्धन पहाड़ अपनी कानी अंगुलीपर उठाया था वह कथा कहते हैं सुनो गोकुल व वृन्दावनमें वर्षवें दिन ब्रजवासी लोग कार्त्तिक वदी चतुर्दशी को छत्तीस व्यंजन बनाकर राजा इन्द्रकी विधिपूर्वक पूजन किया करते थे जब वह दिन आया तब वृन्दावनवासियोंने अनेक तरहका पकवान व मिठाई आदिक इन्द्रकी पूजावास्ते अपने अपने घर बनवाया व यशोदा बड़ी पवित्रतासे सब पदार्थ बनाकर रखती थीं जिसमें कोई जूठा न करदेवै ॥

दो० सैंत सैंत अति नेम सों धरति अछूते जाति । श्याम कहूं परसैं नहीं यह मनमाहिं डराति ॥
सो० शंक करत मनमाहिं सुरपति पूजा जानि जिय । यशुमतिजानतिनाहिं सब देवनके देव हरि ॥

हे राजन् केशवमूर्तिने घर घर यह तैयारी देखकर मनमें ऐसा विचारा कि इन्द्रकी पूजा छुड़ाकर गोवर्धन पहाड़को पुजवाना चाहिये ऐसा विचारकर यशोदासे पूछा हे मैया आज सब ब्रजवासियों के घर पकवान व मिठाई तैयार होनेका क्या कारण है यशोदा बोली हे बेटा इस समय

मुझे बात करनेकी छुट्टी नहीं है तू अपने पिता से जाकर पूछ ले यह बात सुनकर मोहनप्यारे बलरामजीसमेत नन्दराय के पास गये ॥

दो० तब हरि बोले नंदसों मधुरमन्द मुसुकाय। करत पुजाई कौनकी बाबा मोहिं बताय ॥

हे बाबा वह कौन देवता जिनकी पूजा करनेसे भक्ति व मुक्ति मिलती है उनका नाम व गुण मुझसे वर्णन कीजिये बड़ों को उचित है कि अपने कुलकी रीति छोटों को बतला देवैं लड़कपनकी सीखी हुई बात याद रह कर कभी नहीं भूलती यह सुनकर नन्दजी बोले हे बेटा अबतक तुमने इस पूजाका हाल नहीं सुना यह सब सामग्री वास्ते पूजा करने इन्द्र जो सब मेघोंका राजा है बनती है उनके पूजने से वर्षा अच्छी होकर घास व अन्न उपजताहै जिसके उत्पन्न होने से सब जीव सुख पावते हैं व यह पूजा हमारे कुलमें बहुत दिन से होतीहै ॥

दो० माखन प्रभु बोले तभी तात बात सुनिलेहु। जहँ पूजन नहिं होतहै तहँ बरसत नहिं मेहु ॥

हे बाबा आजतक जो कुछ हमारे बड़ोंने जान या अजानमें पूजा इन्द्रकी किया सो अच्छा हुआ पर तुमलोग जान बूझकर धर्मकी राह छोड़के कुराह पर क्यों चलते हो किसवास्ते कि संसार में तीन तरहका धर्म व कर्म होताहै एक वेद व शास्त्र के अनुसार दूसरा लोकव्यवहार तीसरा अपने मनसे सो वेदके प्रमाण करनेसे फल उसका मिलताहै भला तुम्हीं बतलावो इन्द्रकी पूजा करने से क्या मिलैगा वह किसी को भक्ति व मुक्ति व ऋद्धि व सिद्धि व वरदान नहीं देसक्ता व इन्द्र आप सौ यज्ञ करके इन्द्रासन पावता है तब देवता उसे अपना राजा करके मानते हैं इससे वह परमेश्वर नहीं होसक्ता जब वह दैत्यों से लड़ाई में भागकर कहीं जाय छिपताहै तब नारायणजी सहायता करके फिर उसे इन्द्रासन पर बैठाल देते हैं ऐसे निर्बल की तुमलोग पूजन क्यों करते हो अपना धर्म पहिचान कर परमेश्वरकी पूजा क्यों नहीं करते इन्द्र का किया कुछ नहीं होसक्ता और जो लोग अपने अज्ञान से नारायणजी को जो इन्द्रादिक सब देवतों के मालिक हैं छोड़कर दूसरे देवतोंकी पूजा करते हैं उन्हें मूर्ख समझना चाहिये किस वास्ते कि हर्ष व शोच परमेश्वरकी इच्छासे होताहै विना इच्छा नारायण

जी के एक पत्ता भी वृक्षका नहीं हिल सक्ता इन्द्र भी उन्हींकी कृपासे इस पदवीको पहुँचाहै व जो बात विधाताने सबके कर्म में लिख दिया वही होकर उसमें तिलभर घट बढ़ नहीं सक्ता सुख सम्पत्ति व परिवार आदिक अच्छी वस्तु अपने धर्म व कर्म से मिलता है व हाल वर्षाका इसतरह पर समझो कि आठ महीने तक सूर्यदेवता जो जल पृथ्वीका सोखते हैं वही जल चार महीने बरसातमें वर्ष कर उसीसे अन्न व घास आदिक सब उत्पन्न होते हैं व ब्रह्माने जो चार वर्ण ब्राह्मण व क्षत्रिय व वैश्य व शूद्र संसारमें बनाये हैं उनके पीछे एक कर्म इस तरह पर लगा दिया है कि ब्राह्मण वेद व विद्या पढ़ैं व क्षत्री सबकी रक्षा करैं व वैश्य खेती व्यापार व शूद्र इन तीनों वर्णकी सेवा करैं सो हे पिता हमारा वर्ण वैश्य का है व हमारे यहां बहुतसी गौ इकट्ठी हैं व ब्रजगोकुल जन्मभूमि हमारा है इस वास्ते गोप व ग्वाल हमलोगों का नाम पड़ा सो हमारा भी यह कर्म है कि खेती व व्यापार करके गौ ब्राह्मण की सेवा करैं व वेद व शास्त्र की भी ऐसी आज्ञा है कि अपने वर्ण का धर्म न छोड़ें जो लोग अपना धर्म छोड़कर दूसरे वर्ण का कर्म करते हैं उनको ऐसा समझना चाहिये जिस तरह कुलवन्ती स्त्री अपने पति को छोड़कर दूसरे पुरुष के पास रहै सो हे नन्दबाबा मुझ बालक का कहना सच मानो तो आप लोग इन्द्र का पूजन छोड़कर गोवर्धन पहाड़ व गौ ब्राह्मण व वनकी पूजा कीजिये किस वास्ते कि गोवर्धन पहाड़ यहां का राजा है व इस पहाड़ व वनमें चरने से सब गौ व बछवे हमारे पालन होते हैं व उन्हीं का दूध व घी आदिक बेचने से हमलोगों की जीविका होती है जो अपना पालन करै उसे अपना राजा समझकर पूजना चाहिये इस वास्ते यह सब पकवान व मिठाई आदिक जो बना है सो गोवर्धन पहाड़ पर ले चलकर उनका पूजन करो व सब पदार्थ उन्हें भोग लगाकर गौ व ब्राह्मण व कंगालों को खिलादेव और साल से इस संवत् में अधिक वर्षा होगी यह वचन केशवमूर्तिका सुन नन्द व उपनन्द व वृषभानु आदिक परमेश्वर की इच्छा से प्रसन्न होकर बोले ॥

दो० ताते सोई कीजिये कृष्ण कही जो बात। सब ब्रजवासी पूजिये गोवर्धन उठि प्रात ॥

जब यह सम्मत आपस में ठीक होगया तब नन्दराय ने गांव में ढिंढोरा पिटवा दिया कि कार्त्तिक सुदी परेवा को हम चलकर गोवर्धन पहाड़ की पूजा करेंगे सो सब कोई पकवान व मिठाई व सामग्री लेकर गौवों समेत चलना हे राजन् यह आज्ञा नन्द व उपनन्द की सुनकर सब लोग प्रसन्न होगये व गोप व ग्वालों ने अपने अपने गौ व बछवे का अनेक रंग से पूंछ व सींग चित्रकारी करके गले में घंटा बांध दिया व कार्त्तिक सुदी परेवा को प्रातःसमय ब्रजवासियों ने स्नान करके सब सामग्री गाड़ी व बैलों पर लदवा लिया और सब स्त्री व बालक उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहिनकर नन्द व वृषभानु के साथ बाजे बजाते हुये गोवर्धन पर्वत को पूजने चले॥

दो० गाखनप्रभु अति चावसों भूषण वस्त्र मँगाय। गिरिगोवर्धन ले चले गोधन सबै बनाय ॥
नन्दमहर उपनन्द सब श्याम राम दोउ भाय। पहुँचे गोवर्धन निकट निरखि शिखर सुख पाय॥
सो० उतरे सहितसमाज चहुँओर ब्रजलोगसब। मधि शोभित गिरिराज कोटिकाम शोभासरस॥

जब श्रीकृष्णजी की आज्ञानुसार सब किसी ने पूजन गोवर्धन पहाड़ की धूप व दीप आदिक से विधिपूर्वक किया व इतना पकवान व मिठाई वहां इकट्ठा हुआ कि जिसका ढेर दूसरा पहाड़ मालूम होता था और अनेक रंग के माला व फूल व कपड़े चढ़ावने से शोभा गोवर्धन पहाड़ की ऐसी दिखाई देती थी जिसका वर्णन नहीं होसक्ता उस समय मोहनप्यारे ने ब्रजवासियों से कहा तुमलोग आंखें बन्द करके ध्यान गोवर्धनजी का करो तो वह प्रत्यक्ष दर्शन अपना देकर भोजन करेंगे तब मुरलीमनोहर के कहने से नंदजी आदिक सब ब्रजवासी हाथ जोड़कर खड़े होगये व आंखें बन्द करके ध्यान गोवर्धन पहाड़ का किया तब श्यामसुन्दर अपने एक चतुर्भुजी विशालरूप अतिसुन्दर व तेजमान से उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहिने गोवर्धन पहाड़ पर प्रकट हुये उस समय अपने श्रीकृष्णरूपसे नन्दादिक ब्रजवासियों से कहा तुम्हारी भक्ति व प्रीति सच्ची देखकर गोवर्धनजी तुम लोगों को दर्शन देने वास्ते प्रकट हुये हैं सो अच्छी तरह दर्शन करो यह वचन सुनतेही ब्रजवासियों ने आंख खोलकर देखा तो

उस स्वरूप के दर्शन पावने से बहुत प्रसन्न हुये व उनको दण्डवत् करके आपसमें कहने लगे जिस तरह आज गोवर्धनजीने दर्शन दिया इसतरह इन्द्र का दर्शन कभी नहीं हुआ था न मालूम हमारे पुरुषे ऐसे प्रत्यक्ष देवता की पूजन छोड़कर इन्द्र को क्यों पूजते थे॥

दो० कहेउ कृष्ण तब नन्द सों भोजन लेव मँगाय। गिरिआगे सब राखिकै अर्पौ विनय सुनाय॥

यह वचन सुनतेही गोप व ग्वाल जल्दी से परात व थाली भोग की उठाकर उनके निकट लेगये तब गोवर्धननाथजी हाथ फैला फैला कर भोजन करनेलगे॥

दो० देखनको धाये सभी ब्रजके नर अरु वाम। भयो देवता गिरि बड़ो ताहि पुजावत श्याम॥
सो० बड़े महर उपनन्द नंद आदि ठाढ़े सबै। कहत जो कछु नँदनन्द करत सकल सोई तहां॥
दो० इतहि नंदको कर गहे गोपिनसों वतलात। उत अपनो धरि चारभुज रुचिसों भोजन खात॥
सो० श्रीराधासुखपायमुदित विलोकति श्यामछवि। भक्तनके सुखदाय नितनव करत विनोद ब्रज॥
दो० प्रीति रीतिके भावसों भोजन सबको खाय। होइ प्रसन्न अतिनन्दसों तब बोल्यो गिरिराय॥
सो० लेव नंद वरदान अब जो तुम हमसों चहौ। मैं लीन्हों सुखमान बहुत करी तुम भक्ति मम॥
दो० नन्द गोप अरु नदसुत श्रीवृषभानु समेत। बार बार गिरिराज के चरण परत अतिहेत॥
सो० करि सबको सन्मान दे प्रसाद निजहाथ सों। सबन कही घरजान होइ प्रसन्न गिरिराज तब॥
दो० प्रकट देत हैं दरश गिरि सबके आगे खात। परम हर्ष नर नारि सब सबके मुख यह बात॥
सो० महिमा अमित अपार श्रीगोवर्धन अचलकी। जेहिपूजत करतार शारद विधि नहिं कहिसकैं॥

उस समय ललिता सखी ने राधासे कहा यह सब लीला मनहरण प्यारे की है जो दूसरा स्वरूप अपना पहाड़ में प्रकट करके पकवान व मिठाई चखते हैं हे राजन् जब गोवर्धननाथजी भोजन करके अन्तर्धान होगये तब नन्दजी ने वहां होम करने उपरान्त परिक्रमा कर ब्राह्मणों को बहुत सा सोना व गौ आदिक दान दिया व पहिले ब्राह्मण व गौ व कंगालों को भोजन खिलाकर पीछे से आप सब ब्रजवासियों समेत भोजन किया व श्रीकृष्णजी ने एक ग्रास अपने हाथ से उठाकर खाया सो ब्रह्मा व महादेव व विष्णु आदिक सब देवता व तीनों लोक के जीवों का पेट भर गया॥

दो० माखनप्रभु हरिदेव हैं सब देवनको मूल। मूलहि सींचे होत हैं हरे पात फल फूल॥

हे राजन् उस दिन ब्रजवासी रात को उसी जगह टिककर बड़े आनन्द

से रात भर गाते बजाते रहे दूसरे दिन उसी तरह आनन्द मचाते हुये गौ व बछड़े समेत अपने घर आये उसी दिन से अन्नकूट की पूजा संसारमें प्रकट हुई ॥

सो०खेलतनवनितख्याल भक्तपालनँदलालव्रज। दुष्टनके उरशाल सुर नर मुनि मोहत निरखि॥

पच्चीसवां अध्याय।

गोवर्धन पहाड़को अपनी अंगुलीपर श्रीकृष्णजीका उठाना ॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् जब उस साल व्रजवासियोंने इन्द्रकी पूजा नहीं की तब इन्द्रने जो श्यामसुन्दरकी महिमा नहीं जानता था अपने सभावाले देवतों से पूछा कल्ह व्रजमें किसने कौन देवताकी पूजा किया है यह वचन सुनकर कोई देवता बोला व्रजवासीलोग हर साल तुम्हारी पूजा करते थे इस संवत्में कृष्ण बालक नंदमहर के कहने से व्रजवासियों ने तुम्हारा पूजन छोड़कर गोवर्धन पहाड़ को पूजा है यह बात सुनतेही इन्द्रने क्रोध करके कहा व्रजवासियों को धन अधिक होने से अभिमान उत्पन्न हुआ जो उन्होंने हमारी पूजा करना छोड़ दिया इसलिये मैं उन्हें कालके मुख में डालकर दरिद्री कर दूंगा कृष्ण छोकड़ा जो हमारा शत्रु है उसके कहने से व्रजवासियोंने मेरा अपमान किया सो मैं उस बालक का गर्व तोड़े देता हूं आजतक व्रजवासियोंका मैं मालिक था अब उन्होंने कृष्णको अपना स्वामी समझा है ॥

दो० ऐसे सुरपति क्रोध करि मनमें गर्व बढ़ाय। प्रलयकालके मेघ सब लीन्हें तुरत बुलाय ॥

जब मेघोंका राजा डरता व कांपता इन्द्रके पास आनके हाथ जोड़कर खड़ा हुआ तब इन्द्रने उसे आज्ञा दिया तुम इसी समय सब मेघोंको साथ लेकर व्रजमण्डल पर जाव व इतना पानी व पत्थर बरसावो जिसमें सब व्रजवासी गोवर्धन पहाड़ समेत बहजावें ॥

दो० और ठौर सब छांड़िकै व्रजमहँ बरसो जाय। व्रजवासी गोधन सहित जलसे देव बहाय॥

व इन्द्रने उन्चासों पवनकोभी मेघों के साथ कर दिया जिसमें सरदी व पानी से कोई जीता न बचे यह आज्ञा पातेही मेघराजा उन्चासों पवन समेत बड़े बड़े मेघों को साथ लेकर व्रजमण्डल पर चढ़ दौड़े उनके आवे



N. K. P. L.   श्रीकृष्णजी का व्रज की रक्षा करने में गिरि...

ही आंधी चलने व वदली छा जाने से वृन्दावन में अँधियारा होगया व घड़े के समान बूंद वरसकर विजुली चमकने लगी सिवाय आंधी व पानी व विजुली के और कुछ वहां दिखलाई नहीं देता था तव केशवमूर्ति ने हँसकर वलरामजीसे कहा देखो इन्द्र अपनी पूजा न पावने से क्रोध करके महाप्रलयका पानी वरसाता है यह क्रोध उसका हमारे साथ समझना चाहिये किसवास्ते कि मेरे कहने से व्रजवासियों ने उसकी पूजा छोड़कर गोवर्धन पहाड़ को पूजा था इसलिये उसका गर्व तोड़ना उचित है और यह दशा देखकर नन्द व यशोदा आदिक सव व्रजवासी घवरा गये॥

दो० देखि देखि व्रजकी दशा नंदमहर पछितात। कियो निरादर इन्द्र को मन में वहुत डरात॥
सो० श्याम राम दोउ भाय लिये निकट शोचत महर। जुरे गोप तहँ आय मनही मन मुसुकातहरि॥

हे राजन् जव सव व्रजवासी ऐसे प्रलयके पानी वरसनेसे मारे सरदीके वहुत दुःखी हुये तव भीजते व कांपते हुये श्यामसुन्दरके शरणमें आनकर पुकार पुकार कहने लगे हे गोकुलनाथ इस प्रलयके पानीसे हमारा प्राण वचाइये व तुमने इन्द्रकी पूजा छुड़वाकर हमलोगों से गोवर्धन पहाड़ को पुजाया इसीवास्ते इंद्रक्रोध करके महाप्रलयका पानी वरसाता है अव जल्दी गोवर्धन पहाड़को वुलावो जो आनकर इस वरसनेसे हमारी रक्षा करे नहीं तो एक क्षणमें सव मनुष्य गौवों समेत डूबकर मरने चाहते हैं॥

दो० जव जव गाढ़ परी हमैं तव तुम लियो उवार। यहि अवसर अव राखियो मोहननन्दकुमार॥
सो० व्रजजनके सुखदान देखि विकल व्रजलोग सव। हँसवोले तव कान्ह धरौ धीर उर डरौ मत॥

तुम लोग अपनी अपनी वस्तु व गो व वछवा आदिक अपने साथ लेकर गोवर्धन पहाड़केपास चलो वह तुम्हारी रक्षा करके इन्द्रका अभिमान तोड़ देंगे जव श्यामसुन्दरकी आज्ञानुसार सव व्रजवासी अपनी अपनी वस्तु व गो व वछवासमेत गोवर्धन पहाड़के निकट गये तव व्रजनाथ जी ने पीताम्वरकी कछनी वांधकर मुरली कमरमें खोंस लिया व गोवर्धन पहाड़को अपने वायें हाथकी कानी अँगुली पर फूलके समान उठा लिया और सव व्रजवासी व गो आदिकको उसकी छायामें खड़ा करके सुदर्शनचक्रको आज्ञा दी कि तुम चारोंओर इस पहाड़के फिरते रहो जितना पानी

बरसै सब अपने प्रकाशसे सोखते जाव जिसमें पृथ्वीपर एक बूंद पानी न गिरै वैसाही सुदर्शनचक्रने किया उस समय सब ब्रजवासी केशवमूर्ति की प्रभुता देखकर आपसमें कहने लगे श्रीकृष्णजी परमेश्वरका अवतार मालूम होते हैं नहीं तो मनुष्यकी सामर्थ्य नहीं है जो पहाड़को फूलके समान अंगुली पर उठाने सकै व श्यामसुन्दर पहाड़ उठाये हुये मधुर मधुर शब्द से मुरली बजाकर सबको प्रसन्न करतेथे जिसमें कोई घबरावे नहीं व यशोदा अपने प्राणप्यारे के प्रेम में घबराकर नन्दजीसे कहती थी अपने अज्ञानसे इन्द्रका पूजन छोड़कर गोवर्धन पहाड़ को पूजा था अभी कहीं पहाड़ मोहनप्यारे पर गिर पड़े तो क्या करूंगी ॥

चौ० दाबति भुजा यशोमति मैया। बारबार मुख लेत बलैया ॥
लखि पहाड़ मन अति दुख पावे। पुनि पुनि गोवर्धनहि मनावे ॥
नाथ आपनो भार सम्हारी। करियो कान्हाकी रखवारी ॥
पय पकवान मिठाई मेवा। बहुरि पूजिहौं तुमको देवा ॥

फिर यशोदा ने बलरामजी से कहा कन्हैया तुम्हारी सहाय किया करताथा इस समय तुम भी कुछ उसकी सहायता करो इस तरह नन्दरानी अपने कुलदेवता व परमेश्वर को बारम्बार दण्डवत् करके यह मनावती थी जिसमें मनहरणप्यारे को पहाड़ उठावने में दुःख न पहुँचै ॥

दो० माखन प्रभुके कारणे जाय वारनी माय। ताके मनकी कल्पना केहिविधि बरणी जाय ॥

जब श्यामसुन्दर ने अपनी माता व पिता को दुःखी देखा तब उनको धैर्य देने वास्ते यह उपाय किया ॥

चौ० कहेउ नंदसों निकट बुलाय। तुमहूं सब मिलि करौ सहाय ॥
लै लै लकुट राखि गिरि लेहू। मत राखौ उरमें संदेहू ॥
गोवर्धन गिरि भये सहाय। आप कहेउ मोहिं लेहु उठाय ॥

दो० यह सुनि जहँतहँ गोपसब रहेलकुट गिरिलाय। कहतश्याम तब नंदसों भलेलियोउचकाय ॥
सो० ठाढेढिगबलराम देखिदेखि लीलाहँसत। कौतुकनिधि सुखधाम करतचरितसंतनसुखद ॥

उस समय गोपियां हँसी की राह मोहनप्यारे से कहती थीं तुमने संध्या सवेरे बहुत सा दूध व माखन आदिक हमारा चुराकर खाया था उसी के बल से इतना भारी पहाड़ उठाया है सो आज वह दूध व माखन तुम्हारा खाना सुफल हुआ ॥

चौ॰ श्रीवृषभानु सुता तहँ आई। कुँवर कान्हके अति मन भाई॥
गोर अंग सुन्दर सुकुमारी। श्यामसंग खेलत नित प्यारी॥
सुनत बोल हँसि उठे मुरारी। तवहीं डोल गयो गिरि भारी॥
नरनारिनको अति भयभाई। धाय छिपाय राधिका लाई॥

जब ब्रजबाला पहाड़ गिरनेके डरसे राधिकाको पकड़कर कीर्ति उसकी माता के पास लेगई तब कीर्तिने उसपर क्रोध करके उसे अपने पास बैठाल रक्खा व फिर केशवमूर्तिके पास नहीं जाने दिया शुकदेवजीने कहा हे राजन् इधर श्यामसुन्दर पहाड़को उठाकर ब्रजवासियोंकी रक्षा करते थे व उधर राजा मेघ मूसलधार पानी व पत्थर बरसाता था व बिजुली चमकने से आंख सबकी ढँपजाती थीं व सुदर्शनचक्र इस फुरती से चारोंतरफ गोवर्धन पहाड़के घूमकर सब पानी को अपने तेजसे सोख लेता था कि एक बूंद पृथ्वी पर नहीं गिरता था राजा इन्द्र यह हाल सुनकर आपभी मेघराजकी सहायता करनेके वास्ते चढ़ आया व उसी तरह सात दिन व सात रात पानी बरसता रहा पर किसी जीवको कुछ दुःख नहीं होकर सब कोई आनन्द से गोवर्धन पहाड़के नीचे घरकी तरह बैठे रहे व श्यामसुन्दर हरसाइत प्रेमपूर्वक गोप व गोपियों से पूंछते थे कि हमारे माता व पिता व सखालोग किसतरह हैं कुछ शोच न करें व वे लोग उत्तर देते थे कि सब कोई तुम्हारी कृपा व दयासे आनन्दपूर्वक रहकर पानी व बदली का कौतुक देखते हैं सात दिन तक हरसाइत सब ब्रजवासी केशवमूर्तिका अमृतरूपी मुखारविन्द आंखों से पीते थे इसलिये किसीको कुछ भूख व प्यास नहीं लगी जब मेघराजाका सब पानी चुकगया तब उसने यह हाल इन्द्रसे कहा वह मेघराजाकी बात सुनतेही बहुत लज्जित होकर उन लोगों समेत अपने स्थानपर चला गया जब इन्द्रने यह सब हाल देवतों से कहा तब देवता बोले॥

दो॰ तुमजानत प्रभु भूमि जब दुखित पुकारीजाय। कहेउलेन अवतार तब सोइ विहरतव्रजआय॥
सो॰ कहेउ इन्द्र पछताय मैं भूल्यों जान्यों नहीं। कीन्हीं बहुत ढिठाय भयकरि मन व्याकुल भयो॥

हे राजन् देवतोंका वचन सुनने व ऐसी ऐसी महिमा श्रीकृष्णजीकी देखने से इन्द्रको विश्वासहुआ कि नंदलाल आदिपुरुषका अवतार हैं नहीं

तो दूसरे को क्या सामर्थ्यथी जो पहाड़को अपनी अंगुलीपर उठाकर व्रज-मण्डलकी रक्षा करता ऐसा विचार कर इंद्र अपने कर्तबको शोच करके पछताने लगा व जब मेघों के चले जाने से वर्षा बन्द होकर धूप निकल आई तव व्रजवासी बोले हे व्रजनाथ तुम्हारे डरसे सब मेघराजा भाग गये अब गिरि अपनी अंगुलीपरसे उतार दीजिये यह वचन सुनकर मोहन प्यारेने गोवर्धन पहाड़को उसी स्थानपर रखदिया उससमय देवतोंने आ-काश से उनपर फूल वरसाये व अप्सरोंने अपने विमानों पर से नाच दिखलाकर गंधर्वोंने गाना सुनाया और ऋषीश्वरोंने स्तुति किया व यशोदाने केशवमूर्तिको गोदमें उठाकर बड़े प्रेमसे मुख उनका चूम लिया व उनका हाथ व अँगुली बारम्बार मलकर चटकाने लगी व रोकर अपने प्राणप्यारेसे पूछा हे बेटा सात दिनतक पहाड़ अंगुलीपर उठावनेसे तेरा हाथ दुखता होगा तव नंदलालजी बोले हे मैया गोवर्धन पहाड़ अपनी प्रसन्नतासे तुम लोगोंकी रक्षा करने वास्ते छाया किये रहा मैं तरे अपनी अंगुलीका थोड़ासा आश्रय दिये था इस कारण मेरा हाथ कुछ नहीं दुखता व श्रीदामा आदिक ग्वालवालों ने मोहनप्यारेसे गले मिलकर पूछा है भाई ऐसे कोमल हाथ पर तुमने किसतरह पहाड़ उठाया हमें बड़ा अचम्भा मालूम होता है श्यामसुन्दर बोले तुमलोग जो अपनी अपनी लकुटिय-से पहाड़को उचकाये थे इसलिये मुझे उसका कुछ बोझा नहीं मालूम देता था व सब व्रजवाला मोहनीमूर्तिकी महिमा देखकर बहुत प्रसन्न हुई व उसी दिनसे श्रीकृष्णजीका नाम गिरिधारी प्रकट हुआ और उस समय नन्दकिशोरने व्रजवासियों से कहा॥

दो॰ अब गिरिको पूजौ बहुरि सबसे कहेउ सुनाय। बूड़तते राख्यो व्रजहि कीन्हीं बहुत सहाय।

सो॰ यहसुनि हर्षवदाय फिरि पूज्यो गिरिको सबन। अतिहर्षित नँदराय दियोदान त्रिमन बहुत।

दो॰ दूर भयो दुख शोच सब प्रगटो तब आनंद। नंदसंग घरको चले माखन प्रभु व्रजचंद।

नंदजी श्याम व बलराम व सब व्रजवासी व गायोंसमेत आनन्दपूर्वक अपने अपने स्थान पर आये॥

दो॰ घरघर व्रज आनंद सब गावत मंगलचार। आये सुरपति जीति हरि गिरिधर नंदकुमार।

छब्बीसवां अध्याय।

व्रजवासियों का श्यामसुन्दरकी स्तुति करना॥

शुकदेव मुनि ने कहा हे राजन् जब नंदलालजीने गोवर्धन पहाड़ उठाकर ऐसी महिमा अपनी दिखलाई तब सब गोप व ग्वाल आश्चर्य मानकर आपसमें कहने लगे उठावना पहाड़का जिसतरह हाथी कमलके फूलको उठा लेवे मनुष्यका काम नहीं है सो आठ वर्षकी अवस्थामें नंदकिशोरने इतना भारी पहाड़ अपनी अँगुली पर उठाकर सात दिन बराबर खड़े रहे ये परमेश्वरका अवतार मालूम होते हैं जिन्होंने महाप्रलयके जल बरसनेसे व्रजवासियों का प्राण बचाया इनको हमलोग किस तरह नंदजीका पुत्र कहैं लड़का अपने माता व पिताके स्वभाव पर उत्पन्न होता है सो नंद व यशोदा में ऐसा पराक्रम नहीं है जो श्रीकृष्ण ऐसा प्रतापी पुत्र उनसे उत्पन्न हो इससे मालूम होता है कि यशोदासे किसी देवता या दैत्यने भोग किया होगा इसलिये ऐसा बलवान् व प्रतापी पुत्र उसके उत्पन्न हुआ है नन्दरायके वीर्यका यह बालक नहीं मालूम होता तो नन्द व यशोदा को जातिसे बाहर किया चाहिये ऐसा विचारकर उपनन्द आदिक सब ग्वाल इस बातकी पंचाइत करने वास्ते नंदजी के स्थान पर गये व उसमें जो लोग बड़े थे उन्होंने पहिले नन्द व यशोदासे बहुत स्तुति केशवमूर्तिकी करके कहा हे नन्दराय श्रीकृष्ण परमेश्वरकी कृपासे सर्वदा अमर रहैं जो विपत्तिमें हमारी रक्षा करते हैं परन्तु तुम्हारे पुत्र ये हमको नहीं मालूम होते किसवास्ते कि जब ये बहुत छोटे थे तब इन्होंने पूतना राक्षसी को दूध पीते समय मार डाला व एक वर्षकी अवस्था में तृणावर्त को मार गिराया और जब यशोदाने इनको ऊखलमें बांधा तब इन्होंने यमलार्जुन दोनों वृक्ष जड़से उखाड़ डाले व वत्सासुर व बकासुर व अघासुर राक्षस को मारकर कालीनाग को यमुनाजल से बाहर निकाल दिया व धेनुक व प्रलम्ब राक्षसको मारकर व्रजवासियों को अग्निमें जलनेसे बचाया व इतना भारी पहाड़ कुकरौंधे के समान पृथ्वी पर से उखाड़ कर अपनी अँगुलीपर उठालिया व महाप्रलय के जल से

व्रजवासियोंकी रक्षा करके इन्द्रका अभिमान तोड़ा व जितनी प्रीति मोहन प्यारे में हमलोगोंकी रहती है उतनी हम अपने प्राण व बेटी व बेटेमें नहीं यह सब आश्चर्यकी बातें देखने से हमलोगोंको उत्पन्न होना श्यामसुन्दर का तुम्हारे वीर्य से विश्वास नहीं आता सो तुम सच बतलाओ यशोदाने कौन देवता या दैत्यके वीर्य से उनको उत्पन्न किया है जो वे ऐसे प्रतापी बलवान् परमेश्वर के अवतार समान होकर लीला करते हैं नहीं तो हम लोग तुम्हें जाति से बाहर निकाल देवेंगे ॥

दो० मालिक तीनोंलोकके तुम्हरो पुत्र न होय। जन्म मरण जाको नहीं माखनप्रभु हैं सोय॥

यह वचन अपने जातिभाइयोंका सुनतेही नन्द व यशोदाने घबराकर कहा सुनो भाइयो श्रीकृष्ण मेरा बेटाहै इसमें कुछ सन्देह मत समझो पर जो हाल गर्गजी मथुरासे आनकर कहगये हैं उसमें एक बात मैंने छिपाई थी सो आज कहताहूं गर्ग मुनिने केशवमूर्ति के नामकरणके समय ऐसा कहा था कि तुम इन्हें अपना जना हुआ मत समझो तुम्हारे पिछले जन्म के तप करने से परब्रह्म परमेश्वर अवतार लेकर यहां आये हैं प्रतिदिन अपनी लीला ये तुमको दिखलावेंगे ये सब बातें अब हमको आंखों से दिखलाई देतीहैं सो मैंभी विश्वास करके जानताहूं कि मेरा बेटा परमेश्वर का अवतारहै किसवास्ते कि जो जो काम श्यामसुन्दरने किये हैं वह मनुष्य नहीं करने सक्ता व इन्होंने जन्म व मरण से रहित होकर केवल पृथ्वीका भार उतारने व हरिभक्तोंको सुखदेनेवास्ते अपनी इच्छा से अवतार लिया है व जन्म व मरण तीनों लोकके जीवोंका यह अपने अधीन रखते हैं व गर्गजीने यह भी कहा था कि एकबेर इन्होंने वसुदेवजीके यहां जन्म लियाहै इसलिये इनका नाम वासुदेवभी प्रकट होगा और ये शोच व दुःख गोप ग्वालोंका निवारण करेंगे जो कोई इनका दर्शन करेगा या इनकी लीला व नामकी चर्चा आपसमें रखकर इनके चरणों में ध्यान लगावेगा उसे निस्सन्देह मुक्ति मिलैगी ॥

दो० माखनप्रभु घनश्यामको जो चित धरिहैं नाम। प्रेमभक्तिके धाम में नित करिहैं विश्राम॥

पिछले युगोंमें इनका रंग श्वेत व लाल था इसबेर श्यामरूप से इन्होंने

अवतार लिया है जब यह बात सुनकर ब्रजवासियों के मनका सन्देह मिटगया तब उन्होंने श्रीकृष्णजीको आदिपुरुषजानकरवड़ी भक्ति व प्रीति से उनकी पूजा की व बड़ाई भाग्य नन्द व यशोदाकी करने लगे और आगे जो जो बात श्यामसुन्दरकी बालकलोग कहते थे वह किसीको विश्वास नहीं होता था सो उन बातों को सबोंने सच जाना ॥

दो० जो माखनप्रभुकी कथा कहै सुनै दे चित्त। प्रेम नेमको पद लहै रहै क्षेमसों नित्त ॥

सत्ताईसवां अध्याय।

इन्द्रका श्रीकृष्णजीकी शरणमें आना ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित इन्द्रने श्यामसुन्दर के साथ ढिठाई करने से बहुत लज्जित होकर मनमें कहा देखो मैंने क्या बुरा काम किया जो पूर्णब्रह्म को मनुष्य समझकर उनसे वैर बढ़ाया अब वहां चलकर उनसे अपना अपराध क्षमा कराऊं जिसमें मेरा कल्याणहो ऐसा विचारतेही राजा इन्द्र ऋषीश्वरों को साथ लेकर ऐरावत हाथीपर चढ़ा व अपना अपराध क्षमा कराने वास्ते कामधेनु गोको आगे लिये हुये वृन्दावनको चला जब नन्दलालजी अन्तर्यामीने जो वनमें गो चराते थे जाना कि इन्द्र अपना अपराध क्षमा करानेवास्ते देवतांसमेत मेरे पास आवताहै तब ग्वालवालों से अलग होकर एक ओर वनमें जा बैठे जब राजा इंद्रने वहां आनकर मुरलीमनोहर को दूरसे बैठे देखा तब हाथीपरसे उतर पड़ा और देवतांको साथ लिये व कामधेनुको आगे किये नंगे पावँ गले में डुपट्टा डाले व दांतों में तिनुकादावे साष्टांग दण्डवत् करता व कांपताहुआ श्रीवृन्दावनविहारी के चरणोंपर जाकर गिरपड़ा व बड़ी अधीनतासे रोकर विनय किया हे दीनानाथ निरंजन व निरंकार मेरी हजारों दण्डवत् आपको पहुँचें मैंने अपनी अज्ञानतासे आपको मनुष्य समझकर तुम्हारी परीक्षा ली थी सो अपने किये को पहुँचा जिसतरह अज्ञान बालक शीशे में अपनी परिछाहीं देखकर उसे पकड़ना चाहताहै व धर नहीं सक्ता उसीतरह जो कोई तुम्हारा भेद जाना चाहै उसे अज्ञान बालक के समान समझना चाहिये वही हाल मेरा हुआ जहां ब्रह्मा व महादेव आदिक देवता व ऋषीश्वर तुम्हारे भेद

व बड़ाई को पहुँचने नहीं सक्ते वहां मेरी क्या सामर्थ्यहै जो आपकी महिमा जानने सकूं मैंने राज्य व धनके अभिमान से अन्धा होकर ब्रजवासियों का प्राण मारनेवास्ते महाप्रलयका पानी ब्रजमण्डलपर बरसाया था सो आपने गोवर्धन पहाड़ उठाकर उन लोगोंकी रक्षा की व मेरे अहंकारको तोड़ दिया मैं अपने कर्तबसे बहुत लज्जित होकर अपना अपराध क्षमा करानेवास्ते कामधेनु गोके पीछे पीछे तुम्हारी शरण आयाहूं सो हे ब्रजनाथ मुझ अज्ञानका अपराध दया करके क्षमा कीजिये किसवास्ते कि आप सबके ईश्वर व गुरु व परमात्माहैं सिवाय तुम्हारे दूसरा कोई मालिक तीनों लोक में नहीं है व ब्रह्मा व महादेवभी तुम्हारी दी हुई बड़ाई पाकर दिन रात आपके चरणों का ध्यान अपने हृदयमें रखतेहैं व आप सब जगत्के पिता व उत्पन्न व पालन करनेवाले होकर लक्ष्मीजी तुम्हारे चरणोंकी दासी हैं और आपने वास्ते भार उतारने पृथ्वी व रक्षा करने हरिभक्त व मारने दुष्ट व अधर्मियोंके अपनी इच्छासे अवतार लिया है और जब जब पृथ्वी अधर्मी लोगोंके पाप करने में दुःखी होती है तब तब आप सगुण अवतार लेकर पृथ्वीका भार उतारते हैं और मैं भी आपकी कृपा व दया से देवलोक का राजा हुआहूं पर तुम्हारे भेदको नहीं जानता दूसरेकी क्या सामर्थ्य है जो तुम्हारी महिमा जाननेसकै और यह अपराध मेरा बड़ा दण्ड करने योग्य है पर आप ऐसे दीनदयालुहैं कि जो मनुष्य तुम्हारी शरणमें आया वह कैसाही अपराध किये हो क्षमा कर देते हो व दूसरे ऋषीश्वरोंका अपराध करनेवाला अपने दण्डको पहुँचताहै मुझे इस अपराधनेभी तप व जपका फल दिया जिसके कारण तुम्हारे चरणोंका दर्शन पाया दया करके मेरा अपराध क्षमा कीजिये ॥

सो० कहत बिहारी बार तुम गति अगम अगाध प्रभु। मैं भूल्यों संसार जान्यों ब्रजअवतार नहिं ॥
दो० माखनप्रभु सन्मुख भये सदा सबै सुख होय। जो यह सुखसे है विमुख भव दुख पावै सोय ॥

व कामधेनु गोने मुरलीमनोहरके सामने हाथ जोड़कर विनय किया हे कमलनयन मैं ब्रह्माकी भेजी हुई तुम्हारे पास आईहूं छोटोंका अपराध बड़े लोग सदा से क्षमा करते आये हैं सो आप दीनदयालु कृपालु होकर

इन्द्रका अपराध जो तुम्हारी शरण आयाहै क्षमा करदीजिये व तीनों लोक में किसे सामर्थ्य है जो तुम्हारे भेदको पहुँचने सके और आप सर्व गौ व जीवोंके मालिकहैं इसलिये मैं अपने दूधसे तुम्हें स्नान कराने आईहूं व ऐरावत हाथी अपनी शुण्डमें आकाशगंगाका जल भरकर तुम्हारे स्नान करानेवास्ते लायाहै आज्ञा हो तो स्नान करावैं जब राजा इन्द्र व कामधेनुने बड़ी आधीनतासे यह स्तुति गिरिधर महाराजकी की तब कृपानिधानने दयालु होकर कहा हे इन्द्र तू कामधेनु गौको अपने आगे लेकर हमारी शरणआया इसलिये मैंने तेरा अपराध क्षमा किया सुनो अभिमान करनेसे धर्म छूटकर शरीरमें अज्ञान आवताहै व मूर्खताई करने से पीछे सिवाय दुःख के सुख नहीं मिलता व मनुष्यलोग थोड़ासा भी हाकिमी व धन पावनेसे अपने को भूल जाते हैं तुम तौ अर्व खर्वसे अधिक धन व इन्द्रासनका राज्य रखते हो तुमने ऐसा किया तौ कौन बड़ी बातहै और मैंने दयाकी राह राज्य व धनका अभिमान तोड़ने वास्ते तेरा यज्ञ बन्द कराके गोवर्धनपहाड़को पुजवाया था जिसपर मेरी कृपा होती है उसका अहंकार मैं तोड़देता हूं॥

दो० व्याकुल देखि सुरेश अति दीनबंधु यदुराय। अभय कियो कर माथ धरि भुजगहि लियोउठाय॥

सो० लीनो हृदय लगाय देखि दीनता इंद्रकी। शिर नहिं सकत उठाय बारबार परसत चरण॥

जब केशवमूर्तिने इन्द्रका मस्तक अपने चरणपरसे उठाकर उसको बहुत धैर्य दिया तब इन्द्रने प्रसन्न होकर विनय किया॥

दो० धन्य बड़ाई नाथकी हौं अनाथ भ्रम साथ। कमल हाथ प्रभु माथ धरि कीन्हों मोहिं सनाथ॥

फिर कामधेनु गायने अपने दूध व ऐरावतने गंगाजलसे श्रीकृष्णजी को स्नान कराया व राजा इन्द्रने चरण उनका धोकर चरणामृत लिया व पूजा उनकी धूप दीप नैवेद्य आदिकसे विधिपूर्वक की व कामधेनुने मनहरण प्यारेको गोविंदनाम पुकार कर चौदहों भुवनका राजा कहा उस समय देवतोंने श्यामसुन्दरपर फूल बरसाये व नारद मुनि आदिक ऋषीश्वरों ने प्रसन्न होकर स्तुति की व अप्सराओं ने अपने अपने विमानोंपर नाच दिखलाकर गंधर्वों ने गाना सुनाया व सब पृथ्वी में फूल लगकर

यमुनाजल प्रसन्नतासे लहराने लगा उससमय तीनोंलोकमें इस तरहका आनंद होगया जिसतरह श्यामसुंदरके अवतार लेनेके समय चौदहों भुवनमें खुशीहुई थी व पूजा करने उपरांत जब इंद्र वैकुण्ठनाथके सामने हाथ जोड़कर खड़ा हुआ तब गिरिधारी महाराजने इंद्रसे कहा तुम कामधेनु गौसमेत अपने स्थानपर जाव फिर कभी मेरी लीला व कामों में अपना प्रवेश मत करना सो इंद्र व कामधेनु व ऐरावत हाथी व देवता व ऋषीश्वर आदिक सबलोग केशवमूर्तिको दण्डवत्करके अपने स्थानपर चले गये॥

दो० माखनप्रभुके अंगपर वारत कोटि अनंग। सहसनयन देखत चले कामधेनु के संग॥

जब वृन्दावनविहारी इंद्रको विदा करके सन्ध्यासमय ग्वालबाल व गौवों समेत मुरली बजाते व मधुर मधुर गावते हुये अपने घर आये तब नन्द व यशोदा व गोपियों ने मोहनीमूर्तिकी छवि देखकर अपनी आंखें ठंढी कीं हे राजन् यह गोविंद अभिषेककथा सुनने से अर्थ धर्म काम मोक्ष चारों पदार्थ मिलते हैं और ग्वालबालोंको इंद्रके आनेका हाल कुछ नहीं मालूम हुआ॥

अट्ठाईसवां अध्याय।

श्रीकृष्णजीका वरुणलोकमें जाना॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् कार्त्तिक सुदी दशमीको नन्दजीने सन्ध्या करके एकादशीव्रत निर्जल रक्खा सो दिनभर पूजा व भजनमें बिताकर रातको जागरण किया दूसरे दिन केवल एक घड़ी द्वादशी थी इसलिये पारण करना व्रतका द्वादशीमें अवश्य जानकर पहर रातिरहे नन्दजी उठे व उसी समय अकेले यमुना स्नान करने चलेगये जब यमुनाजलमें स्नान करने पैठे तब जलकी रखवारी करनेवालों ने जाकर वरुणदेवतासे कहा महाराज एक मनुष्य यमुनाजलमें नहाताहै यह बात सुनतेही वरुणने आज्ञा दी उसे जाकर पकड़लावो सो दूतलोग नन्दजी को यमुनाजलमें जप करते हुये नागफांस में बांधकर लेगये उससमय नन्दजी ने श्याम व बलरामका नाम लेकर बहुत पुकारा पर उन्होंने कुछ नहीं माना॥

दो० जलके नीचे ठांव है जहां वरुणको वास। माखनप्रभुके तातको लैराखो तिन पास॥

जब नंदजी वरुणदेवताके पास पहुँचे तब वरुण उनको वैकुण्ठनाथ का पिता पहिचानतेही यह समझकर बहुत प्रसन्न हुआ कि श्रीकृष्णजी अंतर्यामी अपने पिताको लेनेवास्ते अवश्य यहां आवेंगे तो इसी बहाने उनका दर्शन मिलैगा ऐसा विचार कर वरुणदेवताने नंदजीको अपने महलमें लेजाकर सन्मानपूर्वक बैठाला व एक सिंहासन बहुत उत्तम श्यामसुंदरके वास्ते बिछाकर उनके आनेकी आशा देखने लगा व वरुण की स्त्रियोंने नंदरायकी स्तुति करके कहा हे नंदजी तुम्हारा बड़ा भाग्यहै जो सच्चिदानंद परमेश्वर तुम्हारे पुत्र कहलातेहैं यहां तो नंदरायका आ-दरभाव देवकन्या करती थीं और वहां जब नंदजी स्नान करके घर नहीं आये तब यशोदाने घबराकर ग्वालोंको उनकी सुधि लेने वास्ते यमुना किनारे भेजा जब ग्वालोंने उनको वहां न देखकर धोती व झारी उनकी उठा लाये तब यशोदा रोकर कहने लगी रातको नहाते समय कोई घड़ि-याल आदिक उनको खागया होगा॥

दो० अतिब्याकुल यशुमति भई उठी रोय अकुलाय। सुनि धाये ब्रजलोगसब नंदहि खोजतजाय॥
सो० यमुनातट पुनि नांव नंदनंद टेरत सबै। ढूंढि फिरे सब ठांव भये बिकल ब्रजलोग सब॥

हे राजन् जब ग्वालों के ढूंढ़ने पर भी नन्दजी का पता कहीं न लगा तब यशोदा व रोहिणी आदिक अति विलाप से रोने लगीं उस समय श्यामसुन्दरने यशोदासे कहा अय मैया तू मत रो मैं अभी जाकर नन्द बाबाको ढूंढ़ लाताहूं जब उनके कहने से यशोदा आदिक को कुछ धैर्य हुआ और वैकुण्ठनाथ अन्तर्यामी ने जाना कि नंदजी को वरुणदेवता के दूत पकड़ ले गये हैं और वरुण मेरे दर्शनों की इच्छा से नंदजी को बैठाले हैं तब वरुणलोक में चले गये उस समय मुखारविंद उनका सहस्र सूर्य के समान चमकने लगा जब वरुणदेवता ने श्रीकृष्णजी को आते देखा तब देवता व ऋषीश्वरों समेत दण्डवत् करता हुआ आगे से गया और राहमें पीताम्बर बिछावता हुआ बड़े आदर भावसे अपने घर लिवा लाया व रत्नजड़ित सिंहासन पर बैठाकर चरण उनका धोया व चरणामृत लेकर विधिपूर्वक उनका पूजन किया॥

दो॰ धूप दीप नैवेद्य करि प्रभु पर पुष्प चढ़ाय। करी आरती प्रेमसों घंटा शंख बजाय॥

सो॰ प्रभु पद नायो माथ करि प्रदक्षिणा दण्डवत। तुम त्रिभुवनके नाथ जोरि हाथ अस्तुति करत॥

हे महाप्रभु आज मेरा जन्म सफल हुआ जो आपने दया की राह कृपा करके अपने चरणों का दर्शन दिया व इसी लाभ वास्ते मैं नन्दजी को अपने यहां बैठाले रहा नहीं तो उसी क्षण उनको स्थान पर पहुँचा देता हम लोग आपको तीनों लोक का पिता जानकर तुम्हारा बाप किसी को नहीं समझते मेरे दूत नन्दजी को नहाते समय अनजान में यहां पकड़ लाये थे सो उन्होंने दण्ड पाने योग्य अपराध किया पर मैंने उनका बहुत गुण माना जिस कारण आपका दर्शन मुझे प्राप्त हुआ मेरी दण्डवत् आप व नंदराय को पहुँचे॥

सो॰ मैं कीन्हों अपराध सो प्रभु उर नहिं लाइये। तुमहो सिंधुअगाध क्षमाकरो निज जानिजन॥

व वरुण की स्त्रियों ने दण्डवत् करने उपरांत हाथ जोड़कर मुरलीमनोहरसे कहा नंद व यशोदा व ब्रजवासियों का बड़ा भाग्य है जिनके यहां परब्रह्म परमेश्वर लीला करतेहैं ब्रजगोकुलकी बड़ाई कोई वर्णन नहीं कर सक्ता फिर वरुण देवता नंदराय को श्यामसुन्दर के पास लेआये तब वह उन्हें देखते ही प्रसन्न होगये॥

सो॰ हर्ष उठे नँदराय देखि श्याम को शिशुवदन। लखि उनकी प्रभुताय रहे मुदित चकित हिये॥

जब नन्दजी ने मोहनप्यारे की महिमा इस तरह पर देखी कि देवता लोग अपना शिर उनके चरणों पर धरके स्तुति करते हैं तब वह मन में कहने लगे मेरा बड़ा भाग्य था जो वैकुण्ठनाथने मेरे यहां अवतार लिया जब वरुण देवताने बहुतसे मणि व रत्नादिक श्यामसुन्दर व नंदराय को भेंट देकर अपराध अपना क्षमा कराया तब केशवमूर्ति नन्दजी समेत अपने स्थान पर आये उस समय यशोदा आदिक ब्रजवासियों को बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ और यशोदा ने नंदराय से कहा तुम मेरे बरजने परभी रात को नहाने चले गये थे सो परमेश्वर ने आज तुम्हारा प्राण बचाया नंदराय बोले अरी बावरी तू क्या पछताती है मैं त्रिलोकीनाथ का पिताहूं मुझे कोई नहीं दुःख देसक्ता फिर नन्दजीने बहुतसा दान व दक्षिणा दिया

व यशोदा ने अपने जातिभाइयों में मिठाई बटवा कर खुशी मनाया जब उपनंदादिक ने भेंट करने वास्ते आनकर नंदराय से पूछा तुमको कौन पकड़ लेगया था तब नन्दजी बड़े हर्ष से बोले मुझे वरुण देवता के दूत रात को नहाते समय पकड़ ले गये थे सो मोहनप्यारे के पहुँचतेही सब देवतोंने चरणोदक लेकर उनका पूजन किया बड़े भाग्य से परब्रह्म परमेश्वरने मेरे घर अवतार लिया है जिनके प्रताप से देवतों का दर्शन मैंने पाकर रत्नादिक भेंट उनसे लिया जो बात गर्गमुनि कहि गये थे वह सब आंखों से देखा ॥

दो० नंद कहत हरिनेह में हम लैहैं वह धाम । जन्म मरण जहँ भय नहीं रहत सदा विश्राम ॥

यह सुनकर ब्रजवासियोंने कहा हे नंदराय हम लोग उसी दिन श्रीकृष्ण जी को परमेश्वरका अवतार समझे थे जिस दिन उन्होंने गोवर्धन पहाड़ उठाकर ब्रजमण्डलकी रक्षाकी थी हमारे तुम्हारे पिछले जन्मके पुण्य सहाय हुये जो सच्चिदानंद परमेश्वर ने तुम्हारे यहां अवतार लिया ऐसा कह कर वृन्दावनवासी केशवमूर्ति के पास चले गये व हाथ जोड़कर विनय किया हे महाप्रभु आज तक हम लोग तुम्हारी महिमा न जानकर अपने अज्ञान से तुमको नंद महर का पुत्र समझते थे अब हमें विश्वास हुआ कि आप आदिपुरुष सब जगत् के उत्पन्न करने व सुख देने व दुःख हरनेवाले त्रिलोकीनाथ हैं इसीतरह बहुत स्तुति करके उन्होंने मन में विचारा जिस तरह मुरलीमनोहर ने अपने पिता को वरुणलोक दिखलाया उसीतरह हमलोगों को भी वैकुण्ठ का दर्शन कराते तो अच्छा होता नन्दकुमार अन्तर्यामीने उनकी यह इच्छा जान कर रात को जब सब ब्रजवासी सोये तब लोगोंपर अपनी माया ऐसी फैलादी कि उन्हें दिव्यदृष्टि होकर स्वप्न में इसतरह पर वैकुण्ठ का दर्शन हुआ कि वहां पृथ्वी सोने की होकर सब स्थान रत्नजड़ित बने हैं व बहुत उत्तम उत्तम तड़ाग व बाग आदिक बने होकर सब स्त्री व पुरुष महासुन्दर भूषण व वस्त्रसंयुक्त चतुर्भुजी दिखलाई दिये व एक बहुत बड़े उत्तम स्थान में रत्नजड़ित सिंहासन पर श्यामसुंदर को चतुर्भुजी स्वरूप से लक्ष्मीजी समेत बैठे व पार्षदों को चारों ओर खड़े

व अप्सराओं को उनके सामने नाचते व गंधर्वों को गावते व वेदों को अपना रूप धारण किये व तेंतीस करोड़ देवतों को उनके सम्मुख हाथ जोड़कर स्तुति करते हुये देखा यह सुख वैकुण्ठ का देखकर ब्रजवासियोंने चाहा कि हमलोग मोहनप्यारे के सिंहासनके पास जाकर उनसे कुछ बातें करें पर किसी ने उनको वहां तक जाने नहीं दिया तब ब्रजवासियों ने मनमें कहा इस वैकुण्ठ से हमारा वृन्दावन बहुत अच्छा स्थान है जहां दिन रात ब्रजनाथजी के साथ रहकर उनसे हँसते खेलते हैं यहां तो उनके सिंहासन तक भी कोई हमको जाने नहीं देता ॥

दो० अकुलाने दृग सबन के देखनको तेहिकाल। मोरपंख माथे धरे मुरलीधर गोपाल ॥
सो० ब्रजवासिनको ध्यान नटवरवेष गोपाल को। अमितरूप भगवान तदपि उपासन रीति यह ॥

हे राजन् जैसे ब्रजवासियों ने ध्यान नटवररूप मोहनप्यारे का किया वैसे उनकी निद्रा खुल गई तब वह लोग अपने अपने घरसे उठकर केशवमूर्ति के पास चले गये व वैकुण्ठनाथका दर्शन करने से उनके हृदय में ज्ञान उत्पन्न हुआ तब सब ब्रजवासी नन्दकिशोर के चरणों पर गिरपड़े व हाथ जोड़कर इसतरह पर उनकी स्तुति करनेलगे हे दीनानाथ तुम्हारी महिमा अपरम्पार है हमलोग ऐसी सामर्थ्य नहीं रखते जो उसकी बड़ाई करसकें परन्तु तुम्हारी कृपासे आज हमको इतना मालूम हुआ कि आप परब्रह्म परमेश्वर हैं व पृथ्वीका भार उतारनेवास्ते तुमने जन्म लिया यह बात सुनतेही श्यामसुन्दरने फिर अपनी माया उनपर ऐसी फैलादी कि वह ज्ञान भूल कर उन्होंने इस बातको स्वप्न के समान समझा और सब ब्रजवासी प्रसन्न होकर अपने अपने घर चले आये ॥

दो० श्रीवैकुंठ दिखायके माखनप्रभु ब्रजराय। निज माया विस्तारके दीन्हें गोप भुलाय ॥

व नन्दजीनेंभी वरुणलोक में जानेका हाल स्वप्नवत् समझकर केशवमूर्ति को अपना पुत्र जाना वह सब ब्रह्मज्ञान उनको भूल गया ॥

दो० करतचरित्रविचित्रप्रभुब्रजवासिनकेमाहिं। लखिलखिशिवब्रह्मादिसुरमुनिजनमनहिंसिहाहिं
सो० अतिआनँदब्रजलोगहरिकेनितनवचरितलखि। सबकोसबसुखयोग ब्रजवासीप्रभुनन्दसुत ॥

हे राजन् श्यामसुन्दर अंतर्यामीने गोपियोंका सच्चाप्रेम देखकर श्रीदामा

आदिक अपने सखोंसे कहा सब व्रजबाला सोलहों शृंगार किये वृन्दा- वनकी राहसे मथुरामें गोरस बेंचने जाती हैं सो वनमें रोंककर उनसे दूध दही का दान लेना चाहिये ॥

सो० अब इनसंगविहार करो दानदधि लाइकै । यह मन कियो विचार हरि व्रजमोहन लाड़िले ॥

जब यह सम्मत ग्वालबालोंने प्रसन्न किया तब नन्दलालजी श्रीदामा आदिक पांचहजार सखा समेत प्रातःसमय बीच वन के जाकर वृक्षोंके ओटमें छिप रहे और उसी समय सब व्रजबाला सोलहों शृंगार किये मथुरा को गोरस बेचने चलीं ॥

दो० हँसत परस्पर आपमें चली जायँ सब भोर । पाइ घातमें सखन तब घेर लई चहुँओर ॥

सो० देखि अचानक भीर चकितरहीं चहुँदिशि चितै । सहमींकछुकशरीर कितते आये ग्वाल सब ॥

उस समय नंदकुमारने व्रजबालोंसे कहा तुमलोग नित्य गोरस बेंचने जाती हो सो हमारा दान देदेव तब जाने पावोगी यह वचन सुनकर गोपियां बोलीं दण्ड लेना राजोंका धर्म है हम और तुम दोनों राजा कंस की प्रजाहैं तुम क्यों हमसे दण्ड मांगते हो नंदजी तुम्हारे पिताने आजतक कभी ऐसी बात नहीं की कलहकी बातहै तुम गोरस हमारा चुराकर खाते थे और जब कोई पकड़ता था तब रोकर भागजाते थे आज वनमें स्त्रियों को घेरकर राह लूटते हो यह बात अच्छी नहीं है ॥

चौ० चोरी करि नहिं पेट अघायो । अब वन में दधिदान लगायो ॥

यह सुनकर केशवमूर्तिने कहा तुमलोगोंने लड़कपनमें हमको बहुत खिझाया था अब हम सयाने हुये बिना दण्ड लिये नहीं जाने देवेंगे ॥

दो० तबतो हम लड़काहते सहीबात अनजान । अब सूझे कहुँ समुझिके छांड़िदेहु अभिमान ॥

सो० हम मांगत दधिदान तुम उलटीपलटी कहत । करत नन्दकी आन बिना दिये नहिं जाइयो ॥

यह सुनकर गोपियोंने कहा कदाचित् तुम दही व दूधके भूखे हो तो थोड़ा थोड़ा हमसे लेकर खालेव पर दान हमसे नहीं दिया जायगा छोटेमुख बड़ी बात कहना अच्छा नहीं होता अभी हमलोग राजा कंसके पास जाकर यह हाल कहें तो वह तुमको पकड़कर दण्ड दे हम कौनसा लवँग व इलायची लादे हैं जो तुमको दण्ड देवें ॥

सो० लेव दही बलिजाउँ हमको होत अबेर अब । लिये दानको नाउँ एक बूंद नहिं पाइहौ ॥

यह वचन सुनकर मोहनप्यारे बोले तुमलोग राजा कंससे मुझे क्या डरावती हो मैं उसको कुछ नहीं समझता सीधीतरह दान देवगी तो अच्छा है नहीं तो सब दूध व दही तुम्हारा छीनलूंगा तो रोती हुई यशोदा पास जावोगी बहुत दिनोंतक तुमने चोरीसे दान हमारा पचायाहै आज सब दिनकी कसर लेकर तुम्हें जाने दूंगा॥

दो० दान लगत यहँ श्यामको सो अब लेब चुकाय। तब मैं देहौं जान सब मोको नंद दुहाय॥
सो० दधि लेजात प्रभात आवतहौ निशि बेंचिके। दानमारि नित जात भलीकरत यह बात नहिं॥

यह बात सुनकर गोपियां बोलीं जो तुम्हारे बड़ोंने कभी नहीं किया वह करने लगे तो किसतरह हमलोगोंका यहां रहकर निर्वाह होगा॥

दो० हमैं कहत हौ चोट्टी आप भये हौ साह। बड़े भये चोरी करत अब लूटतहौ राह॥

यह बात सुनकर मोहनप्यारे बोले तुम्हारे धमकाने से मैं कुछ नहीं डरता तुम वृन्दावन छोड़कर चली जावगी तो क्या होगा मैं अपना दण्ड छोड़ दूं॥

दो० गांव हमारो छांड़िकै बसियो का पुर माहिं। ऐसो को तिहुँलोकमें जो मेरे वश नाहिं॥

हे राजन् इसीतरह कुछ देरतक सब व्रजबाला मोहनप्यारे से प्रकटमें झगड़ा करती रहीं पर अन्तःकरणसे उनकी छवि देखकर प्रसन्न होती थीं जब केशवमूर्ति ने सब गोपियोंका गोरस छीनकर ग्वालबालों समेत खालिया व वानरों को खिलाकर शेष पृथ्वी पर गिरादिया व मटुकी तोड़ कर वस्त्र उनका धक्काधुकी करके फाड़ डाला तब सब गोपियोंने यशोदाके पास जाके अपने फटे हुये वस्त्र दिखलाकर कहा तुमने अपने बेटेको अच्छा उद्यम सिखलाया है कि वह ग्वालबालोंको साथ लियेहुये वनमें सब गोपियों को रोककर दही व दूधका दान मांगते हैं हमलोगोंने नई बात समझकर दण्ड नहीं दिया इसीवास्ते सब गोरस हमारा छीन लिया व अञ्चल पकड़ कर वस्त्र हमारा फाड़ डाला आजतक तुम्हारे कुलमें कोई ऐसा नहीं हुआ था जिसने दही व दूधका दण्ड लिया हो॥

दो० सुनत ग्वालिनिनके वचन बोली यशुमति मात। मैं जानी तुम सबनके उर अन्तरकी बात॥

तुमलोग मोहनप्यारे का पीछा न छोड़कर उसे पापकी दृष्टिसे देखती

हो व अपने हाथ कपड़ा फाड़कर झूठा उलहना मुझे देने आवती हो॥

दो० धन्य धन्य तुम कहत हो मोको आवत लाज। माखन मांगत रोय हरि दोष देत विन काज॥

यह बात सुनकर ब्रजवालोंने कहा यशोदा माता तुम्हें ऐसा उचित नहीं है जो विना समझे हमें दोष लगावती हो दश गौ अधिक रखने से तुम कुछ वढ़ नहीं गई हम तुम जाति में वरावर हैं यह चलन तुम्हारा वेटा करेगा तो हम यह गांव छोड़कर निकल जावेंगी मोहनप्यारेका हाल तुम नहीं जानतीं जव वनमें चलकर देखो तव तुम्हें मालूम हो॥

सो० सुनो महरि तुम बात हरि सीखे टोना कछू। वनहि तरुण है जात वालक ह्वै आवत घरै॥

यशोदाने उनको उत्तर दिया तुमलोग गांव छोड़नेके वास्ते मुझे क्या धमकाती हो जहां तुम्हारा मन चाहै वहां जाकर बसो तुम्हारे वास्ते मैं अपना वेटा नहीं निकाल देऊंगी॥

दो० कहा करौं तुम आय सव कहतीं अटपट वात। मोको यह भावै नहीं तरुखिन इहै स्वहात॥

यह बात सुनतेही ब्रजबाला लज्जित होकर अपने अपने घर चली आईं और वृन्दावनमें यह चर्चा घरघर फैलगई कि नन्दकुमारने गोरसका दण्ड गोपियों पर लगायाहै यह सुनतेही सव ब्रजवालोंको यह इच्छा हुई कि हम लोग भी दही दूध बेचनेके वास्ते जावैं तो नन्दकिशोरकी छवि वनमें देख कर अपनी अपनी आंखें ठण्ढी करें जव दूसरे दिन राधा आदिक सोलह हजार गोपियां गोरस वेचने मथुराको चलीं तव मोहनप्यारेने सखा समेत जो वृक्षोंपर चढ़े हुये छिपे थे वनमें ब्रजवालोंको घेरकर कहा आज दान देकर जाने पावोगी॥

दो० हँसिबोली राधाकुँवरि कहा वनिज हमपास। कहो श्याम सो नाम धरि देहिं दान हमवास॥

यह वचन अपनी प्यारीका सुनकर नन्दलालजी बोले आज तुम्हारे यौवनका दान लेऊंगा हे राजन् जव इसीतरह कुछ वेरतक सव ब्रजवाला मोहनप्यारे से झगड़ा करती रहीं तव श्यामसुन्दरने ऐसी माया अपनी उनपर फैला दी कि सव गोपियां कामरूप मदमें मतवाली होगईं॥

दो० व्याकुल है सव मदनमें नैनमूंदि धरिध्यान। कहत कान्ह अव शरण हम लीजै सर्वस दान॥

सो० ऐसो कहि मन माहिं देहदशा भूलीं सवै। लेहु श्याम वलिजाहिं यह धन तुम सव आपनो॥

यह दशा गोपियोंकी देखकर वैकुण्ठनाथ भक्तहितकारीने उन लोगों

की इच्छा पूर्ण करने वास्ते अनेकरूप अपने जो किसीको दिखलाई न देवैं धारण करलिये व सब व्रजवालोंसे ध्यानमें भेंट करके कामरूपी रोग उनका छुड़ादिया तब उन्होंने हँसकर कहा हे प्राणप्यारे तुमने हमारे यौवनका दानभी लिया अब आज्ञा देव तो अपने अपने घर जावें यह वचन सुनकर केशवमूर्ति बोले तुम्हारे यौवनका दान मैंने पाया दही व दूधका दण्ड चुकादेव तो अपने अपने घर जाव यह वचन सुनते ही व्रजबालोंने प्रसन्न होकर दही व दूध अपना श्यामसुन्दरको ग्वालबालों समेत खिला दिया पर मोहनप्यारेकी मायासे बर्तन उनका ज्योंका त्यों भरा रहा जिस समय गोपियां श्यामसुन्दरको ग्वालबालों समेत बैठाकर दही व दूध खिलाती थीं उससमय देवता लोग अपने अपने विमानों परसे यह आनन्द देख कर व्रजवालों की बड़ाई करके कहते थे कि धन्यभाग व्रजकी स्त्रियोंका है जिनसे परब्रह्म परमेश्वर त्रिलोकीनाथ गोरस मांगकर खाते हैं व गोपियां उनकी सेवा करके जन्म अपना स्वार्थ करती हैं दही खाती समय मन-हरण प्यारे बोले मैंने सबके गोरसका स्वाद पाया पर राधाप्यारीका दही नहीं चीखा यह वचन सुनतेही राधाने हँसकर अपना दही अपने हाथसे नन्दकिशोरके मुखमें खिला दिया ॥

सो० प्यारी को दधि खाय बोले यों मोहन विहँसि । मधुरे कहो सुनाय मीठो है यह सबनतें ॥

हे राजन् गोरस खाने उपरांत मोहनीमूर्तिने अपनी चितवनि व मुसुकान से उनका मन हरलिया और बोले आज अपना दान लेकर हम तुमसे बहुत प्रसन्न हुये इसलिये अब तुमसे घाट वाट पर कोई रोक नहीं करेगा अब अपने अपने घर जाव विलम्ब होने से तुम्हारे घरवाले चिन्ता करते होंगे यह वचन सुनकर गोपियों ने कहा हे मोहनप्यारे दान मांगती समय हमने तुमको कठोर वचन कहा है उसका अपराध क्षमा कीजिये और तुम्हारी मोहनीमूर्ति देखे विना हमें चैन नहीं पड़ती घर किस तरह जावें तुम्हारी प्रीति विना धन व परिवार सब वृथा है यह बात सुनकर नन्द-किशोर बोले मैं तुम्हारा ऐसा प्रेम देखकर एकक्षण तुमसे विलग नहीं रहता व तुम्हारा कठोर वचन मुझे बुरा नहीं मालूम होता मैं तुम लोगोंको

प्रसन्न करने वास्ते वैकुण्ठ छोड़कर तुम्हारा दुर्वचन अपनी इच्छासे सुनता हूं तुमने अपना मन देकर मुझे पायाहै जव अपना चित्त मुझसे फेरलेवगी तव मैं तुमसे अलग हो जाऊंगा ॥

दो० तुमकारण वैकुण्ठतजि प्रकटतहौं ब्रजआय। वृंदावन तुम्हरो मिलन यह न विसारो जाय॥

ऐसा कहकर श्यामसुन्दर ग्वालवालों को साथ लिये हुये दूसरी ओर वनमें चले गये व सव ब्रजवाला अपने अपने घर न जाकर वौरहोंकी तरह वृक्षोंसे पूछने लगीं तुम गोरस मोल लेवगे व कभी दही व दूधके वदले मोहनप्यारे व श्रीकृष्ण व नन्दलाल का नाम बेचने वास्ते पुकार कर कहती थीं ॥

दो० लीने गोरसदान हरि तुम कहँ रहे छिपाय। दरस तुम्हारे जात नहिं तुम दधि लेत छिनाय॥

सो० लेहु आपनो दान तुम रिसकर उठि धाइहौ। हमें न देइहौ जान वनमें हम ठाढीं सवै॥

दो० श्याम विना यह को करै लायो दधिको दान। तन सुधि भूली तवहिंसे बांकी मृदु मुसुकान॥

सो० मन हरि लीन्हो श्याम ताबिन वनिये कौनविधि। ऐसे कहिसव वाम घरको चलनविचारहीं॥

हे राजन् इसी तरह विपरीत वातें कहती हुई गोपियां अपने अपने घर पहुँचीं पर रूप श्यामसुन्दर का आठों पहर उनके हृदय व आंखोंमें वना रहता था यह दशा देखकर घरवाले वहुत समुझाते थे पर कहना किसीका उन्हें अच्छा नहीं लगता था ॥

दो० प्रकट्यो पूरण नेह उर जित देख्यो उत श्याम। समझाये समझै नहीं सिखदै थाक्यो ग्राम॥
ऐसो सिखवत मातु पितु सो न करत कछु आन। लागतहैं तिनके वचन उरमें वाणसमान॥

सो० उन्हें कहतमनमाहिं धिकधिक उनकी वुद्धिको। जिन्हेंश्याम प्रियनाहिं तिन्हैंवनेत्यागे भले॥

हे राजन् श्यामसुन्दर राधाप्यारीपर लक्ष्मीजीका अवतार होनेसे अति प्रीति रखते थे इसलिये राधिकाभी उनके ऊपर अधिक मोहित रहकर जव दूसरे दिन गांवमें दही वेचने गई तव मटुकी शिरपर लिये चौगिर्द मकान नन्दजीके घूमकर वौरहोंके समान लोगोंसे पूछने लगी मेरा चित्त चुराने वाला नंदकुमार कहां वसता है मैं उसे वड़ी दूरसे ढूंढ़नेवास्ते आई हूं उस का घर इस गांव में है या नहीं ॥

दो० जिन्हें कहत मोहिं नंदघर कहां सो देव वताय। जहां वसत वह सांवरो मोहन कुंवर कन्हाय॥

जब राधिका लज्जा छोड़कर दही के वदले नंदकुमार व नंदकिशोर व

श्रीकृष्ण व श्यामसुंदरका नाम पुकारने लगी तब यह दशा उसकी देख कर गोपियोंने पूंछा हे राधिका तू क्या वेचती है राधा बोली ॥

दो० मोहनमूरति श्यामकी मोतन रही समाय। ज्यों मेंहदीके पातमें लाली लखी न जाय ॥

यह सुनकर एक सखीने कि वह भी केशवमूर्तिकी चाहना रखती थी कहा अय राधिका तू बुद्धिमान् होकर दूसरोंको ज्ञान सिखलावती थी सो आज क्या दशा हुई ऐसी निर्लज्जता करना तुझे न चाहिये इसमें सब गांववाली स्त्रियां तुझे गँवारी कहकर बदनाम करैंगी व तेरे माता व पिता सुनकर तुझको मारैंगे तू केशवमूर्ति ऐसे रूपवान् पुरुष को पाकर अपनी प्रीति क्यों प्रकट करती है ॥

दो० कृष्णप्रेमधन पाइके प्रकट न कीजै बाल। राखो यों उरगोइके ज्यों मणि राखत ब्याल ॥

यह वचन सुनकर राधिका बोली तू मुझे क्यों समझावतीहै मेरा मन मोहनीमूर्तिने हरकर मेरे हृदयमें अपनावास करलिया इसलिये माधुरीमूर्ति देखे विना मुझे चैन नहीं पड़ती हाथ मेरा वशमें नहीं है घूंघुट कौन काढ़े यह बात सारे ब्रजमें फैलचुकी कि मैं श्यामसुन्दरके हाथ बिककर उनकी दासी होगई ॥

चौ० मन मान्यो मोहनपर मेरो। जग उपहास करै बहुतेरो ॥

दो० बारबार तू कहत क्या मैं नहिं समुझत बात। मोहिं दृगनमें बसिगयो वा यशुमतिको तात॥

सो० रहत न मेरी थान अपनीसी मैं कर थकी। तूतौ बड़ी सुजान कहा देत सखि दोष मोहिं ॥

हे सखी मैंने अपना प्रेम नन्दकिशोरसे लगाया इसलिये मुझे किसीकी लाज नहीं रही अब मेरे हृदयमें यह बात ठन गई जिसतरह दूध पानी में मिलजाता है उसी तरह नन्दलालसे मिलकर संसारमें श्याम व श्यामा अपना नाम धराऊं ॥

दो० मेरोमन हरिसँग लग्यो लोकलाज कुलत्याग। और ताहि सूझत नहीं भयो जहाजकोकाग॥

हे सखी तू मेरी बड़ी प्यारीहै कदाचित् तुझसे होसकै तो दया करके मेरे चित्तचोर से भेंट करादे नहीं तो मेरा प्राण उसके विरह में निकलने चाहता है ऐसा कहकर राधा प्यारी अति विलाप करके पुकारने लगी हे यशोदा के लाल अपना दर्शन दिखलाकर दही का दान लेजाव अब तुम्हारे वियोगका दुःख मुझसे नहीं सहाजाता ॥

सो० ऐसे सखी सुनाय मौन गही पुनि नागरी । देहदशा विसराय मगन भई रसश्यामके ॥

जब उस सखीने देखा कि राधाप्यारीके रोम रोममें श्यामरूप बसिगया मेरा कहना व समझाना इसे कुछ गुण नहीं करता विना भेंट किये श्यामसुन्दर के इसका दुःख नहीं छूटेगा तब उस सखीने दयाकी राह केशवमूर्ति से जाकर कहा हे मोहनप्यारे एक सुन्दरी चन्द्रमासी गोरी नीली सारी पहिने मटुकी दहीकी शिरपर लिये तुम्हारा नाम लेलेकर चारों ओर पुकारती व ढूंढ़ती हुई अभी वंशीवटको चली गई है जल्दी जाकर उस विरहिनीकी अग्नि अपनी अमृतरूपी दृष्टिसे ठंडी करो नहीं तो वह आप के विरहमें बौराकर मरजावे तो आश्चर्य मत समझो केशवमूर्तिने यह हाल अपनी प्यारीका सुनतेही व्याकुल होकर तुरन्त उस सखीको विदा करदिया व आपने उसीसमय वंशीवटमें पहुँचकर राधाकी इच्छा पूर्णकी ॥

दो० परम हर्ष दोऊ मिले राधा नंदकुमार । कुंजसदन शोभित मनो तनुधरि छवि शृंगार ॥

जब श्यामाका चित्त श्यामसुन्दरके मिलनेसे ठिकाने हुआ तब उसने कहा हे प्राणप्यारे जिस दिन तुमने मेरी गौ खरकामें दुहिदी थी उसी घड़ीसे मेरा मन ऐसा मोहि लिया कि तुम्हारी सांवली सूरत देखे विना मुझे एकक्षण चैन नहीं पड़ता व गांववाले मुझको तुम्हारे साथ बदनाम करते हैं सो मेरे चित्त में अब ऐसा आवताहै कि माता पिता आदिक अपने कुल परिवारको छोड़कर तुम्हारे साथ प्रकट प्रीति करूं ॥

सो० मैं लीन्हों दृढ़नेम सुनो श्यामसुन्दर सुखद , तुम पदपंकज प्रेम यही बात अब राखिहौं ॥

यह वचन सुनतेही गिरिधर महाराजने हँसकर कहा हमारी तुम्हारी पिछले जन्म की प्रीतिहै उसको प्रकट करना न चाहिये जिसमें तेरे माता पिताके निकट हमारी बदनामी न होवे संसारी लोग तुझे नाम न धरें मैं तेरे साथ अकेले में भेंट करके तेरी इच्छा पूर्ण करादिया करूंगा ॥

सो० सुनत श्यामके बैन हर्षभई मन नागरी । भयो हिये अतिचैन प्रीति पुरातन जानि जिय ॥
दो० कहत श्याम अब जाव घर तुमको भई अबार । प्रीति पुरातन गुप्तउर करिये जगव्यवहार ॥
सो० परमप्रेम उरलाय घर पठई हरि भावती । चली महासुख पायफिरिफिरि चितवत श्यामतन ॥
दो० कृष्णराधिकाकेचरित अतिपवित्रसुखखान । कहत सुनत भवभयहरण रसिकजननकेप्रान ॥

हे राजन् जब राधिका अपना मनोरथ पाकर घरको चली जाती थी

तब राह में वही सखी जिसने उसका हाल केशवमूर्ति से कहा था फिर मिली उसने श्यामाका मुखारविंद प्रसन्न देखकर अपनी बुद्धिसे जान लिया कि यह अपनी मनोकामना पाआईहै ऐसा विचारकर उस सखीने राधिका से पूछा ॥

दो० फिरतहती व्याकुलअभी जिनके दर्शनलागि। कहां मिले नँदनन्दसो धनिधनि तेरोभागि ॥
सो० नहिं पावतहैं जाहि योगीजन जप तप किये। वश करि पायो ताहि तैं कैसे कहु नागरी ॥

यह बात सुनतेही राधा नाक व भौं चढ़ाकर बोली तू मुझे वृथा बदनाम करती है कदाचित् यह बात कोई जाति भाई सुनपावैं तो मेरा ठिकाना न लगै ॥

चौ० को नँदनंद कहत तू जिनको। मैं कबहूं देख्यों नहिं तिनको ॥

यह चरित्र राधिकाका सुनकर उस सखीने कहा हम तुम दोनों ब्रजमें रहती हैं तुम्हारी चतुराई हमसे नहीं छिपैगी दो घड़ी हुई तू गली गली नन्दलालजीका नाम लेकर रोती फिरती थी अब कहती है कि मैं उनको नहीं जानती ऐसा सयानपन तैंने अभी कहांसे सीखलिया ॥

दो० निपुणभई उनको मिली वह सुधि गई भुलाय। आवतहै बनकुंजते बातैं कहत बनाय ॥
सो० रीझे श्यामसुजान कहे देत अँगकी पलक। मोसों कहत सयान सँग पगरहे सनेह जल ॥

जब राधाप्यारी ने बहुत पूछने परभी उस सखीसे मोहनप्यारेकी भेंट होने का हाल नहीं बतलाया तब वह ब्रजबाला हँसकर बोली बहुत अच्छा तू मेरे सामने की छोकरी होकर मुझसे छल करती है अब तू अपने घरजा मैं तेरा झूठ व सत्य प्रकट करदेऊंगी यह बात कहकर वह सखी अपने घर चलीगई व श्यामा अपने स्थानपर आई ॥

चौ० सकुच सहित वृषभानुदुलारी। गई सदन गुरुजन डर भारी ॥

उसे देखकर कीर्तिने कहा तू दिनभर दही वेचनेके बहाने कहां रहती है आज तेरा भाई कहता था कि राधा मोहनप्यारेका प्रेम रखकर उनके पीछे फिरा करती है तुझको कुछ लज्जा नहीं आती सब गांववाले तुझे श्यामसुन्दर के साथ बदनाम करते हैं ऐसी बात मतकर जिसमें तेरे माता पिताकी हँसी हो यह वचन सुनकर राधा बोली ॥

दो० खेलनके मैं जाउँ नहिं कहा कहत री मान। मुझसे जाती सहि नहीं यहसब झूंठी बात ॥

सो० घर घर खेलन जात गोपनकी सबलड़किनी। तू मोको रिसियात उनके मात पिता नहीं॥

ऐसी ऐसी झूंठ सत्य बात कहकर राधाने अपनी माताको प्रसन्न कर लिया व अपने मनका भेद किसीसे नहीं बतलाया और उस सखीने जाकर ललिता आदिक सब व्रजबालोंसे कहा कि आज राधिकाने श्यामसुन्दरसे भेंट करके अपनी इच्छा पूर्ण की जब वह वंशीवटसे अपना मनोरथ पाकर आती थी तब मैंने उसका मुखारविन्द प्रसन्न देखकर भेंट होने का हाल पूंछा तब वह सुनकर बोली॥

दो० मोसों तब लागी कहन को हरि काको नांव। कै गोरे कै सांवरे बसत कौन से गांव॥

सो० मैंतो जानत नाहिं लेत नामतुमकौनको। लख्यो न स्वप्ने माहिं सांची कहत कि हँसत तुम॥

यह बात सुनकर ललिता आदिकने कहा हमारे सामने राधिका की सामर्थ्य नहीं है जो मुकरनेसकै तब वह सखी बोली अब वैसी राधिका नहीं है जो पहिले थी भेंट करने से उसका हाल तुम्हें मालूम होगा॥

दो० बड़े गुरुकी बुद्धि पढ़ि काहू नहिं पतियात। एकौ बात न मानिहै सौ सौगन्दै खात॥

जब ललिता आदिक सखियां इकट्ठी होकर यही बात पूछने के वास्ते राधिका के स्थानपर आईं तब श्यामा उनके मनका हाल जान गई कि ये मेरा भेद पूछने आई हैं॥

दो० काहूको कीन्हों नहीं आदर करि चतुराय। मौन गही बोलत नहीं बैठि रही निठुराय॥

उसकी यह दशा देखतेही ललिता आदिक आपसमें उसके पास बैठकर जब इधर उधरकी बातें करने लगीं तब एक सखी ने राधा से कहा तुमने मौनव्रत कबसे धारण किया है उसका हाल हमें भी बतलाओ कौन गुरु से यह मंत्र सीखाहै हमलोग भी वह धारण करना चाहती हैं॥

दो० अब तुमहीं को हम करैं गुरू देव उपदेश। हमहूँ राखैं मौनव्रत करैं तुम्हैं आदेश॥

सो० हमको कियो अजान चतुरभई तुम लाड़िली। कहँ सीख्यो यह ज्ञान ऐसी बुधिलागीकरन॥

यह बात सुनकर राधाने कहा सुनो ललिता हमारे तुम्हारे बीचमें कुछ भेद नहीं है जो मैं तुमसे कोई बात छिपाती पर झूठी बात मुझसे सही नहीं जाती कल्हि राह में मुझसे इस सखीने कहा कि तेरी भेंट श्यामसुन्दर से हुई है मैंने आजतक कभी केशवमूर्तिको स्वप्ने में भी नहीं देखा और यह मुझको वृथा पाप लगाती है सो मुझे यह ठिठोलीकी बात अच्छी नहीं

लगती इसमें मेरे वास्ते बदनामी समझना चाहिये विना देखे कोई बात नहीं कहना होता मुझे इसने नन्दलालसे कब भेंट करते देखा था जो ऐसी बात कही अभी कोई जातिभाई सुनै तो मेरा ठिकाना न लगे ॥

दो० और कहै तो मोहिं कछु नहिं व्यापै मनमाहिं। तुमहिं कहो जो बात यह तो दुख होय कि नाहिं॥
सो० तुमपर रिसमोहिं गात याते आदर नहिं कियो। सुनि प्यारीकी बात रहीं सबै मुखतन चितै॥

तब ललिता बोली हे राधा मुझसे इस सखी ने कुछ नहीं कहा कदाचित् यह मुझसे कुछ कहती तो मैं इससे झगड़ा करती व तेरी अ· लोनी देहीपर हमलोग क्यों लोन लगावैं तू बड़ी पतिव्रताहै तेरे श्याम को इसने कहां देखा होगा विना भाग्य उनका दर्शन मिलना बड़ा कठिन है तेरे बराबर हमलोगों का भाग्य कहां है जो केशवमूर्ति का दर्शन हमैं मिलै यह सुनकर राधिका बोली ॥

दो० वृथा झौंड़ मोसों करत कहि कहि झूठी बात। भलो नहीं उपहास यह मैं सकुचत दिन रात॥

यह रुखाई राधाकी देखकर ललिता ने कहा ॥

सो० जब आवैं इत श्याम तब हम तोहिं बताइहैं। तोहिं देखिहैं वाम हमहूं है अभिलाष अति॥
दो० ऐसे कह सब हँसि उठीं प्यारी वदन निहारि। आईथीं अतिगर्व करि चलीं सखी सब हारि॥
सो० कहत परस्पर जात निडर भई अब राधिका। कबहूं तो हम घात पड़िहैं दोऊ आयकैं॥
दो० सब व्रजगोपिनके बसी यही बात मन आन। हरि राधा दोऊ मिलैं निशिवासर यह ध्यान॥
सो० सब सन्मुख यह बात और कछू चरचा नहीं। नन्दमहरको तात सुता महरवृषभानुकी॥

जब बहुत पूछने पर भी श्यामाने मोहनप्यारेके भेंट होनेका हाल स· खियोंसे नहीं बतलाया तब वहलोग वहां से अपने अपने घर आनकर इस खोज में लगीं कि राधा व मोहनको भेंट करती समय पकड़ना चाहिये जिसमें श्यामाका झूंठ बोलना प्रकट होजावे और राधिका व कृष्णमें ऐसी प्रीति बढ़ी कि एक क्षण दोनोंको विना देखे चैन नहीं पड़ती थी सो श्यामाने दूसरे दिन मोहनीमूर्तिको देखनेकी इच्छासे ललिता आदिक सखियों के घर जाकर कहा चलो बहिन यमुना स्नान कर आवैं जब स· खियोंने बड़े आदर भावसे राधाको बैठाला तब वह बोली आज मैं तुम्हारे घर नये शिरसे आईहूं जो इतना आदर करतीहो ललिता बोली जैसा अपने गुरु का मन्त्र पढ़कर तुमने हमारे जानेसे मौन साध लिया था तैसा हमलोगों

को नहीं आवता जैसे सदा हम सब तुम्हारा सन्मान करती थीं वैसे आज भी किया यह बात सुनतेही राधाने हँसकर कहा उस दिनका बदला आज तुम लोगोंने मुझसे लिया यह सुनकर सब सखियां हँसने लगीं॥

दो॰ यहिविधि हासहुलासकरिसखिनसंग सुकुमारि। चलिनहाय यमुनानदी श्रीवृषभानुदुलारि॥

सो॰ सकलरूपकी रास नवनागरि मृगलोचनी। भरी अनन्दहुलास कृष्ण प्रेममें एकचित॥

जब श्यामा सखियों समेत यमुनाजल से स्नान करके बाहर निकलीं तब उसने क्या देखा कि केशवमूर्ति नटवररूप साजे कदमके नीचे खड़े हुये वंशी बजाते हैं उस मोहनीमूर्तिको देखतेही राधाने मोहित होकर लज्जा छोड़दिया व नन्दकुमारको टकटकी बांधकर देखने लगी॥

दो॰ श्यामा नटवररूप को देखतही सुखपाय। चित्रपुतरीसी रही देहदशा बिसराय॥

सो॰ उत वह रहे लुभाय नागरनवलकिशार वर। प्यारी मुख दृगलाय नयन नहीं भटकत कहूं॥

यह दशा देखकर ललिता आदिक सखियों ने राधासे कहा कल्ह तू मोहनप्यारे की भेंट करनेसे मुकर कर कहती थी कि मैंने उनको स्वप्नमें भी नहीं देखा आज क्या दशा तेरी हुई जो सांवली सूरतको टकटकी बांध कर देखरहीहै अच्छीतरह इनको देखलेव जिसमें यह मोहनीमूर्ति तुम्हें न भूलै तेरे दिखलाने वास्ते केशवमूर्तिको हमने यहां बुला दिया है॥

चौ॰ राखो चीन्हि इन्हें अब नीके। यह हैं मनभावन सबहीके॥

दो॰ भले शकुन आई इहां भयो तुम्हारो काज। अब कछु हमको देवगी मिलैं तुम्हैं ब्रजराज॥

यह बात सुनतेही राधा मनमें पछताकर कहने लगी देखो कल्ह में सखियों से मुकर गई थी आज प्राणप्यारे की छवि देखकर मेरी यह दशा होगई अब मेरी चोरी सखियोंने पकड़ली इन लोगोंसे मैं बहुत लज्जित हुई जब ऐसा विचारकर राधा का मुख मलीन होगया तब ललिता बोली प्यारी तुम मत पछताओ॥

दो॰ क्रियोदरशतुमश्यामको घर चलिहांकीनाहिं। चीन्हिलेहुमिलिहैंबहुरियह कहिसबमुसकाहिं॥

सो॰ तब सखियनके साथ चली सदनको नागरी। उरमें धरि ब्रजनाथ प्रेममगन बोलै नहीं॥

जब राधाप्यारी नटवररूप मोहनप्यारेका अपने हृदयमें रखकर घरको चली तब सखियोंने उससे कहा ऐ प्यारी तू अपने मनमें चोरी प्रकट होने का कुछ शोच मत कर यह नटवररूप इसी तरहका है जिसके देखने से

किसी व्रजबालाका चित्त ठिकाने नहीं रहता पिछले जन्मके पुण्यसे तेरा बड़ा भाग्यहै जो त्रिलोकीनाथ तुम्हें ऐसा प्यार करते हैं व तैंने उनको अपने वश करलिया है यह सुनकर राधा मनमें बहुत प्रसन्न हुई पर लज्जासे कुछ नहीं बोली ॥

सो॰ सखिन कह्यो मुसक्याय क्यों प्यारी बोलत नहीं । की हमसे रिसिआय लियोमौनव्रतज्या जगुनि॥

यह वचन सुनतेही राधाने हँसकर कहा श्यामसुन्दरका स्वरूप कैसा था मैंने तो अच्छीतरह नहीं देखा इसका क्या कारणहै जो तुम्हें दो आंख से उनका सारा अंग देखपड़ा मेरी दृष्टि तो उनकी भृकुटीपर गई सो वह छवि छोड़कर दूसरे अंगपर न जानेसकी जो मैं उस मोहनीमूर्ति का सारा अंग देखती ॥

दो॰ मैं तबते अपने मनहिं यही रही पछिताय । देखनको छवि श्यामकी ललचत नयन बनाय ॥
बिन पहिंचाने कौन विधि करौं श्यामसों प्रीति । नहिं वह रूप न भात्र वह क्षण क्षण औरैरीति॥

सो॰ मैं जानी यह बात हैं अनंदकी खानि हरि । पहिंचाने नहिं जात कहा करौं दो लोचनी ॥

यह सुनकर गोपियां बोलीं हे राधा तेरे बड़े भाग्यहैं जो तू ऐसी प्रीति वैकुंठनाथ से रखतीहै संसारमें दूसरेका भाग्य ऐसा न होगा ॥

दो॰ धनि धनि तेरे मात पित धन्य भक्ति धनि हेत । तैं पहिंचाने श्यामको हम सब बाल अचेत ॥

सो॰ धनि यौवन धनिरूप धनि धनि भाग सुहाग तुम । तुम मोहन अनुरूप चिरंजीव जोड़ी अचल॥

इस तरह सब गोपियां श्यामासे हँसती व बोलती हुईं अपने अपने घर चली आईं पर उन्हे राधा व मोहनकी प्रीति देखकर सवतियाडाहसे आठों पहर उनका रूप आंखोंके सामने बसारहता था एक दिन राधिका श्यामसुन्दरके विरहमें व्याकुल होकर अकेली पानी भरनेवास्ते यमुना किनारे चली राहमें मोहनप्यारेको देखतेही उनका हाथ पकड़कर बोली तुमने मेरा मन क्यों चुरालिया है उसे फेरदेव तन मेरा घर में रहकर मन चंचल दिन रात तुम्हारे पीछे पीछे फिरा करताहै प्यारीका वचन सुनतेही नन्दकुमारने उसको गलेसे लगाकर कहा मैं भी तेरे देखनेवास्ते आठोंपहर व्याकुल रहताहूं जिस समय श्यामा व श्याम यह प्रीति भरी हुई बातें आपसमें कर रहे थे उसी समय ललिता आदिक सखियां वहांपर आन पहुँचीं उनको देखतेही केशवमूर्ति अपने ग्वालोंको पुकारते हुये दूसरी ओर चलेगये व

ललिताने राधासे कहा आज तो तेरी चोरी पकड़ी गई तू नित्य हमलोगों को झूठा बनाकर एकान्त में सुख उठावती थी ॥

दो० कहत रही जब तब यही हरि सँग देखो मोहिं । तब कहियो जो भावही लीजो बेसरि खोहिं ॥
सो० अब हम लईछुड़ाय बेसर देहौ कै नहीं । कै करिहौ चतुराय और कछू हमसे अभी ॥

यह बात सुनतेही राधिका लज्जित होकर अपने घर चली आई पर मन उसका मोहनप्यारेके भेंटवास्ते व्याकुल रहा इसलिये उसको रातभर तारा गिनते वीतगई प्रातःसमय उसने मोतियोंका हार अपने गलेसे उतारकर धोतीके अंचलमें वांध लिया व कीर्ति अपनी मातासे कहा कल्ह यमुना किनारे मेरा हार कहीं गिरपड़ा था सो न मालूम कौन सखीने उठालिया ॥

दो० नेकु नींद नहिं निशि पड़ी तेरी सौं सुन मात । याहीं डरसे आज मैं उठी बड़े परभात ॥
सुन राधा तेरी नहीं अब पतियारी मोहिं । चौकी हार हमेल कछु नहिं पहिरावौं तोहिं ॥

यह सुनकर श्यामा बोली तुम क्रोधित क्यों होतीहो मैं उसे ढूंढ़ने जाती हूं मुझको देर लगै तो घबराना मत ऐसा कहकर राधा अपने घरसे निकली व पिछवारे स्थान नन्दजीके झूठ मूठ ललिता सखीका नाम पुकारकर बोली मैं वंशीवटमें जाती हूं तूभी जल्द आव उस समय नन्दलालजी ने रसोई खानेवास्ते बैठकर पहिला ग्रास उठाया था जैसे श्यामाका बोल सुना वैसे उठखड़े हुये यशोदाने पूछा तुम घबराकर कहां चले तब उनसे कहा एक ग्वाल मुझसे कहगया था कि वनमें गौके बछिया हुई है सो मैं वहां जाताहूं ऐसा कहकर मोहनप्यारे वंशीवटको चलेगये तब उनके सखों ने जो वहां बैठकर खाते थे यशोदासे कहा वनमें बछिया नहीं हुई है वहां राधाप्यारी गई होगी इस कारण मोहनप्यारेभी उससे भेंट करनेवास्ते विना भोजन किये चले गये यशोदाने उनकी बातका विश्वास नहीं किया पर केशवमूर्ति के भूखे चलेजाने से पछताकर शोच करने लगी व श्यामा व श्याम ने वंशीवटमें जाकर आनन्दपूर्वक भोग व विलास किया ॥

दो० नवलकुंज नवनागरी नवनागर नँदनन्द । प्रेमसिंधु मर्य्याद तजि मिले उमँगि आनन्द ॥
सो० यह अचरजकी बात को मानै को कहिसके । गोपसुताके साथ रमत ब्रह्म तुमईश्वर ॥

जब सन्ध्या समय मोहनप्यारेने राधासे कहा अब तुम अपने घर जाओ तब श्यामा बोली मुझसे तुम्हें छोड़कर घर जाया नहीं जाता तुम्हारेवास्ते

अपने माता व पिताकी गाली व मार नित्य सहतीहौं नन्दलालजीने कहा तेरे लिये हम अपने हाथ का ग्रास फेंककर चले आये इसी तरह दोनों मनुष्य प्रीति भरी हुई बातैं करते अपने घर पर गये व राधाने हार मोतीका अपनी माताको देकर कहा जिसके वास्ते तू शोच करती थी वह मैं यमुना किनारेसे ढूंढ़कर लेआई सो अपना हार ले कीर्तिने मनमें समझा कि राधाने श्यामसुन्दरकी भेंट करनेवास्ते यह झूठा चरित्र हारका किया था श्रीकृष्णजी परमेश्वरका अवतारहैं इसलिये राधा आदिक ब्रजवालों को उनके देखे विना चैन नहीं पड़ता शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित नन्द-किशोरको भी राधिका की इतनी प्रीति वढ़ी कि नित्य किसी जगहपर उस से भेंट करके अपना चित्त प्रसन्न करते थे सो एक दिन श्यामसुन्दर उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहिनकर घड़ीरात्रि बीते राधाके स्थानपर गये और रात भर उसके साथ आनन्दपूर्वक विहारकरके प्रातसमय अपने घर चले आये॥

दो॰ बार बार जिय लाड़िली यही शोच पछिताात। गये श्याम आलस भरे तनिक न सोये रात॥

सो॰ देखैं सखी न कोय श्याम गये मो सदनते। मैं राख्यो है गोय अबलग यह रस सखिनसे॥

जब ललिता आदिक सखियोंने जो आठोंपहर राधाकृष्णके पकड़नेकी घात में रहती थीं श्यामसुन्दरको राधाके घरसे निकलते देखा तब उन लोगोंको बड़ी डाह उत्पन्न हुई केशवमूर्तिके जाने उपरांत श्यामाने भी अपने द्वारेपर आनकर देखा तो चारोंओर उसे सखियां खड़ी हुई दिखलाई पड़ीं तब उसको विश्वास हुआ कि इन लोगोंने मेरे घरसे निकलती समय मोहनप्यारेको अवश्य देखा होगा ऐसा विचार कर उसको लज्जा मालूम हुई तब उसने मनमें कहा अभीतक नन्दलालजी से मेरी प्रीति छिपी थी सो आज प्रकट होगई नित्य सखियों से मुकरजाती थी आज इन्हें क्या उत्तर दूंगी॥

दो॰ ऐसे शोचत लाड़िली कबहूं प्रभुहिं मनाय। कबहूं प्रभुको सुख समुझि प्रेम मगन ह्वैजाय॥

उसी समय ललिता आदिक सखियां राधाके घरपर गईं उनको देखते ही राधाप्यारीने चतुराई से विना पूछे कहा हे ललिता आज प्रातसमय वृन्दावनविहारी मेरे द्वारेपरसे होकर न मालूम किधरजाते थे उन्हें देखकर

तभी से मैं व्याकुल होरही हूं सखियोंने यह बात सुनतेही आपस में कहा देखो यह बड़ी चतुरी है हमारे पूछने से पहिले इसने यह बात बनाकर कही जिसमें हम कुछ पूछ न सकें ऐसा कहकर सखियां बोलीं हे राधा तू बड़ी सयानी होकर अपने मनका भेद हमलोगों से नहीं कहती रातभर मोहन-प्यारे के साथ विहार किया इस समय हमलोगों को बहकातीहो ॥

दो० कछु दिनते तेरी प्रकृति अरी परी यह कौन। निठुर भई मोसों रहत जब तब साधे मौन ॥
सो० अपने मनकी बात कछु हमसों भाषत नहीं। ऐसे कहि मुसकात प्यारी सों ब्रजनागरी ॥
दो० सुनिसुनि बानी सखिनकी प्यारी जिय अनुराग। पुलक रोम गदगद हियो समभ्ह आपनोभाग
सो० वचन कह्यो नहिं जाय प्रीति प्रकट चाहत कियो। हरि उर रहे समाय बाहर लखतप्रकाशनहिं

जब सखियों की बात सुनकर राधिका ने हँसदिया तब ललिता सब-तियाडाह से रूखी होकर बोली ॥

स० तुम जानतीहौ जु अजान भई कहि आगे से उत्तर धावती हौ।
बतलाती कछू औ कछू कहती अनुरागकी आंखें दुरावती हौ ॥
हमैं काह पड़ी जो मने करिहैं कवि बोधा कहैं दुख पावती हौ।
बदनामीकी गैल बचाये चलो बड़े बापकी बेटी कहावती हौ ॥

तब राधिका ने उत्तर दिया ॥

स० हमसे मनमोहनसों हित है चुगुली करि कोऊ कहा करिहै।
अबतो बदनाम भई ब्रजमें गुरुलोगन जानि कहा डरिहै ॥
कहैं ठाकुर लालके देखिबे को ब्रज भूलो सबै बिसरो घरहै।
तुम आपने काम ते काम करो कोउ आपने जानि कुवां गिरिहै ॥

यह बात राधिकाकी सुनकर सखियां अपने अपने घर चली गईं व राधिकाके मनमें इस बातका अहंकार उत्पन्न हुआ कि श्यामसुन्दर मेरा बहुत प्यार करते हैं अब वह किसी दूसरी सखीसे बोलैंगे तो मैं उनसे झगड़ा करूंगी जिस समय राधिका अपने घर बैठी हुई यह विचार कररही थी उसी समय केशवमूर्ति वहां जाकर झरोखेमें से ताकनेलगे तब राधाने उनसे कहा तुमको घर घर झांकनेकी कुचाल पड़ीहै यह बात मुझे अच्छी नहीं लगती ऐसा कहकर राधिका अपने अभिमानसे बैठीरही व मोहन-प्यारेको उसने नहीं बुलाया तब श्रीकृष्णजी गर्वप्रहारी अन्तर्यामी उसके मनकी बात जानकर वहां से अपने घर चलेगये जब राधाने देखा कि

मोहनप्यारे भीतर नहीं आये तव अपने अभिमान करने से लज्जित होकर द्वारेतक दौड़ आई जव उनको वहांपर नहीं देखा तव विरह सागरके बीच अचेत होगई ॥

दो॰ भई विकल अति नागरी विरह विथाकी पीर। खान पान भावै नहीं सुधि वुधि तजीशरीर॥
सो॰ घर वाहर न सुहाय सुख सव दुखदायक भये। रह्यो शोच उर छाय व्रजवासीप्रभु मिलनको॥

जव उसने देखा कि विना भेंट मोहनीमूर्तिके चित्त मेरा ठिकाने नहीं होगा तव वह ललिता आदिक सखियों के घर इस इच्छा से दौड़ी गई जिसमें वहलोग केशवमूर्तिको समझाकर मेरे पास बुलालावें ललिताने उसे उदास देखकर पूछा कहो प्यारी आज तुम किस चिन्ता में हो राधाने मुसकराकर कहा ॥

दो॰ छिपत छिपाये कौन विधि सखि तुमसों यह वात। देखे विन नँदनन्दके धीरज धरत न गात॥
नयननते क्षण टरत नहिं नीके लख्यो न जात। कहा कहौं तुमसों सखी यह अचरजकीवात॥
सो॰ मिले मोहिं जव श्याम सुनो सखी तुमसों कहौं। करिकै उरमें धाम तवसे मन मेरो हर्‌यो॥
दो॰ नहिं जान्योहरिक्याकियो मन्दमन्द मुसुकाय।मनसमुझतरीझतनयनसुखकछुकहो न जाय॥
सो॰ तवसे कछु न सुहाय कासों कहिये वात यह। अमलपरेउ दृग आय देखनकोसुन्दरवदन॥

हे वहिन नन्दकुमार मेरा वहुत प्यार करते थे सो आज वह मेरे घर आनकर झरोखे से मुझे देखने लगे पर मैंने अपने अभिमान व अज्ञानसे उनको भीतर नहीं बुलाया इसी वास्ते वह खेद मानकर चलेगये सो तुम लोग कोई ऐसा उपाय करो जिसमें उनका दर्शन मुझको मिलै नहीं तो मेरा प्राण उनके विरहमें निकलना चाहता है यह वात सुनकर ललिता आदिक सखियों ने सवतियाडाह से राधाको कहा जो मोहनप्यारे तुझसे विना भेंट किये चलेगये तो तुमभी मान करके घर वैठरहो कदाचित् उनको तेरी चाहना होगी तो फिर तेरे घर आवैंगे यह वात सुनकर राधाने कहा एक वेर अभिमान करके मैंने यह फल पाया कि उनके विरहमें मेरी यह दशा हुई अव मुझे मान करनेकी सामर्थ्य नहीं है जो फिर उनसे मान करूं ॥

दो॰ पुनि पुनि सिखवत तुम सखी मान करनकोमोहि। मनतोमेरेहाथनहिंमानकौनविधिहोहि॥
सो॰ उमँग रही दिनरात श्यामगहौं अभिलाषकरि। मननहिं मानत वात मान करौं कैसे सखी॥

क० घर तजों बन तजों नागर नगर तजों वंशीराम सब तजि काहूपै न लजिहौं ।
देह तजों गेह तजों नेह कहौ कैसे तजों आज काज राज बीच ऐसी साज सजिहौं ॥
बावरे भयेहैं लोग बावरी कहत मोको बावरी कहेसे मैं हूं काहू न बरजिहौं ।
कहैया औ सुनैया तजों बाप और भैया तजों दैया तजों मैया पै कन्हैया नाहिं तजिहौं ॥

ऐसा कहकर राधा जब अति विलाप करके रोने लगी तब सखियों ने उसपर दया करके आपसमें कहा इसका दुःख छुड़ाना चाहिये नहीं तो श्यामसुन्दरके विरहमें यह मरजावेगी ॥

सो० लीन्हीं सखियन जान हरिरँगराती लाडिली । सुन्दर श्याम सुजान रोम रोम याके रमे ॥

ऐसा समझकर ललिता सखीने राधासे कहा तू धैर्य धरकर यहां बैठी रह मैं तेरे चित्तचोरको लाकर तुझे मिला देतीहूं ऐसा कहकर ललिता वंशीवट में चली गई व केशवमूर्तिके पास पहुँचकर बोली हे प्राणप्यारे राधा ने प्रेमवश तुमसे अभिमान कियाथा सो अपराध उसका क्षमा करो इस समय वह तुम्हारे विरहकी अग्निमें जल रही है तुम जल्दी चलकर अपने चन्द्रमुखकी शीतलताई से उसका हृदय ठंढा करो ॥

दो० चलोश्यामसुन्दर नवलछैलछबीलेलाल । तुम्हें मिलनकोनबलवह अतिव्याकुलयहिकाल ॥
मैं आई तुमसों कहन चलो देखावों नैन । देखि परम सुख पाइहो जो मानो मो बैन ॥
सो० भरि भरिलोचन नीर श्याम श्याम मुखकहि उठत । चलोहरो यह पीर मैं आई लखिधायके ॥

यह बात सुनतेही नन्दलालजी व्याकुल होकर उठे व ललिताके घर पहुँचकर क्या देखा कि राधिका अपने कर्तबसे लज्जित होकर रोरही है यह दशा उसकी देखतेही केशवमूर्तिने उसका घूंघट उठाकर मोहनीमूर्ति अपनी उसको दिखलादी वैसे राधाभी प्रेमवश होकर उनसे लपटगई ॥

दो० वहचितवनिवहहँसिमिलनिवहशोभासुखभारि । भईचित्रशललितानिरखियकटकरहीनिहारि

जब ललिताने अपने साथी सखियों को बुलाकर उन दोनोंका प्रेम दिखलाया तब वह लोग ऐसी प्रीति श्याम व श्यामाकी देखकर बड़ाई भाग्य राधाकी करने लगीं व केशवमूर्तिकी छवि देखतेही सबोंने अपना अपना हृदय ठंढा किया उस समय मोहनप्यारे राधापर ऐसे मोहित होगये कि अपना भूषण व वस्त्र व मुरली उसपर बारम्बार नेवछावर करनेलगे व इसी प्रेममें श्यामसुन्दरने सब गहना राधाप्यारीका उतारकर आप पहिन

लियाव उसकी आंखोंमें से अंजन निकालकर आप अपने नेत्रों में लगा लिया व सारी अपने पीताम्बरकी पहिनकर स्त्रीके समान अपना रूप बना लिया व राधाप्यारी किरीट व मुकुट श्रीकृष्णजीका पहिनकर कन्हैयाजी के समान बनगई और बोली हे श्यामसुन्दर तुम स्त्रीकी तरह मान करके बैठो हम तुम्हें विनती करके मनावें जब स्त्रीरूप मोहनप्यारे रूठकर बैठे तब कृष्णरूप राधा बारम्बार उनके चरणों पर गिरकर मनाने लगीं पर श्यामसुन्दर न मानकर उस समय ऐसी माया अपनी राधापर फैलादी कि उसको इस बातका ज्ञान नहीं रहा कि मैं स्त्रीहूं तब वह मोहनप्यारेके चरणोंपर शिर धरकर रोने लगी यह दशा उसकी देखतेही वैकुंठनाथने अपनी माया हरकर राधासे कहा मैं तेरे कहने से रूठकर बैठाथा तू किस वास्ते घवड़ा गई जब राधाका चित्त ठिकाने हुआ और उसने अपना मुख शीशे में देखा तब लज्जित होकर किरीट मुकुट आदिक उतार डाला व स्त्रियोंका गहना व कपड़ा पहिन लिया जब थोड़ासा दिन रहा तब श्याम व श्यामा दोनों स्त्रीरूप से वंशीवटको चले ॥

दो०. चले हरषि वनकुंजको युगल नारिके रूप। एक गोरी एक सांवरी शोभा परम अनूप॥

जब राहमें चन्द्रावली सखीसे भेंट हुई तब उसने पहिचाना कि यह श्याम व श्यामा स्त्रीरूप बनकर वंशीवटमें विहार करने जाते हैं तब चन्द्रावलीने हँसकर श्यामासे पूछा कहो प्यारी यह नई सखी सांवली सूरति मोहनी मूरति कहां से आई जो तेरे साथ विहार करने जाती है तब राधा बोली यह सखी मथुरामें रहती है मैं ललिता के साथ वहां दही बेचने गई थी सो मेरी व इसकी जान पहिचान होगई उसी कारण मेरे भेंटवास्ते यहां आई है उस समय मोहनप्यारे ने यह समझकर कि चन्द्रावलीके पहिचान लेनेसे सब सखियां मेरी हँसी करेंगी घूंघटसे अपना मुख छिपा लिया तब चन्द्रावली बोली हे राधा तू इस सखीको भी मथुरासे बुलाकर अपने घरके पास टिकादे तो तुम और यह दोनों जो महासुन्दरी व तरुण हो श्यामसुन्दरसे प्रीति करके उनको सुख देना और यह स्त्री ऐसी मोहनीरूप है जिसे दूसरी अपनाको देखकर मोहित होजावै टुक इसका मुखारविन्द

मुझे भी तो अच्छी तरह दिखलावो जिसमें मेरी आंखें ठंढी हों ॥

दो० ऐसेकहि चन्द्रावली गह्यो श्यामकर जाय। यह अवलों कहिं ना सुनी तियसों तिय शरमाय ॥

फिर चन्द्रावली मोहनीमूर्तिका घूंघट उठाकर बोली तुम मुझसे क्या लज्जा करतीहो मैं तुम्हें आगे से पहिंचानतीहूं जब चन्द्रावली स्त्रीरूप श्यामसुन्दर से आंख लड़ाकर उनका गाल मलने लगी तब केशवमूर्तिने लज्जित होकर आंख नीची करली यह हाल उनका देखकर चन्द्रावली बोली हे राधाप्यारी जबसे तैंने इस सखीसे प्रेम लगाया तब से हमलोगोंकी प्रीति छोड़ादी तुम दोनों वृन्दावनके कुञ्जमें जाकर सुख विहार करो तुम्हें अपने स्वार्थके सिवाय दूसरेका सुख अच्छा नहीं लगता जब मोहनप्यारे ने समझा कि यह मुझे पहिंचान गई अब इससे छिपाय रखना वृथाहै तब हँसकर चन्द्रावलीको अपने गले लगा लिया व दहिने चन्द्रावली व वायें तरफ राधाका हाथ पकड़े हुये आनन्दसे वंशीवटको चलेगये व रातभर वहां राधाप्यारीसे भोग व विलास किया प्रातसमय केशवमूर्ति पुरुषरूप बनकर अपनेस्थानपर चले आये व राधा व चन्द्रावली अपने अपने घर गईं॥

दो० अतिविचित्रनँदलालकी लीलाललितरसाल। जोसुखदुर्लभशिवसनक सोलूटतव्रजबाल॥

एक दिन राधाप्यारी सोलहों शृंगार करके अपना मुख शीशे में देखने लगी सो श्यामसुन्दरकी मायासे उसने अपनी परछाहीं देखकर यह समझा कि कोई दूसरी चन्द्रमुखी कहीं से यहां आई है जो यह व्रजमें रहेगी तो मोहनप्यारे मुझे छोड़कर इससे प्रीति करेंगे ॥

दो० यह आई केहि लोकते महासुन्दरी नारि। व्रजमें तो ऐसी नहीं कोई गोपकुमारि ॥

ऐसा विचारकर राधाने अपनी परछाहीं से कहा तुम कहांसे आई हो तुरंत अपने घर चलीजाव इस गांवमें मोहनप्यारा अति ढीठ रहकर सब व्रजवालोंको नंगी कर देताहै यहां रहकर उसके हाथसे बहुत दुःख पावोगी॥

दो० तेरे हितकी कहति हौं मान चाह मति मान। विरजबसे दुख पाउगी सुन तू सुघर सुजान ॥

सो० ऐसो ढीठ न आन त्रिभुवनमें कोऊ कहूं। जैसो व्रजमें कान मनभायो सबसों करत ॥

दो० यहतो बोलति है नहीं अति गरबीली बाम। देखतही यहि रीझि हैं छैल छबीले श्याम॥

सो० भई सवति यह आय अबहरि याके वश भये। मोर मरण भो आय उपजायो उर विरहदुख ॥

जिस समय राधा यह बातें बौरहोंके समान अपनी परछाहीं से कहरही

थी उसी समय केशवमूर्तिने भी वहां आनकर झरोखे में से यह हाल उसका देखा व राधाको उनका आना नहीं मालूम हुआ॥

सो० देखि झरोखे लाय रहे श्याम यकटक निरखि। उरआनन्द बढ़ाय देखत प्यारीकी छविहिं॥
कहतरसीली बात ज्यों ज्यों तिय प्रतिबिम्बसों। त्यों त्यों सुनि हर्षात व्रजवासी प्रभुसांवरो॥

जब वह परछाहीं राधाकी कुछ उत्तर न देकर वहांसे नहीं गई तब राधा उसको अपनी सवति समझकर चिन्ता करने लगी व मोहनप्यारे यह हाल श्यामाका देखकर चुपचाप उसके पीछे चलेगये व अपने दोनों हाथों से आंखें उसकी बन्द करके शीशा उलट दिया॥

सो० लीन्हें सन्मुखआन पानि पकड़िके लाड़िली। भलीकरी तुम कान मैं सखियन धोखेरही॥

जब शीशा उलट देनेसे वह स्त्री राधाको नहीं दिखलाई दी तब उसे परछाहीं समझकर प्रसन्न होगई और श्यामसुन्दरके साथ विहार करने लगी जब कुछ वेर बीते तब मोहनप्यारे अपने घर चले गये और ललिता आदिक सखियां राधाके मकान पर आईं जब राधाने उन्हें बड़े आदरभाव से बैठाला तब ललिता बोली ऐ प्यारी आज तुझे श्यामसुन्दर मिले हैं जो इतना आदर हमारा करती हो यह बात सुनकर राधा हाल आने श्री कृष्णजी व उलट देने शीशेका कहकर बोली हे ललिता यह सब सुख मुझे तुम्हारी कृपासे मिलता है यह सुनकर ललिता उसके भाग्यकी बड़ाई करने लगी जिस समय यह सब प्रेम भरी हुई बातें राधा सखियनसे कर रही थी उसी समय फिर मोहनप्यारे अपना शृङ्गार करके नटवररूप साजे वनमाला विराजे मुरली बजाते हुये राधाप्यारीको देखने आये पर सखियों का यमघट देखकर भीतर नहीं गये व्रजवालों से आंखें लड़ाते नयन मटकाते हुये दूसरी तरफ़ जा निकले॥

दो० छविसागरसुखकीअवधिगुणमन्दिररसखान। मोहिलियो मन तियनको रसिकनरेशसुजान॥
सो० मुरली मधुर बजाय प्यारी प्यारी नाम कहि। सबको चित चुराय गये सदन आनंदघन॥

जब सखियोंका मन उन्हों ने अपनी चितवन में मोहि लिया तब वह सब कामातुर होकर कहने लगीं यह सब दोष हमारी आंखोंका है जो श्यामसुन्दरकी छवि देखतेही मोहित होगईं व हमारा कुल परिवार व

लोकलाज छुड़ाकर व्रजगोकुल में हमें वदनाम किया आप जाकर उनकी छवि देखने से प्रसन्न होती हैं व हमैं दिन राति उनके विरहमें सिवाय दुःख के कुछ सुख नहीं मिलता ॥

दो० अब यह लोचन श्यामके सखी हमारे नाहिं। बसे श्याम रसरूप यह श्याम बसे इनमाहिं ॥
सो० कहाकरैं सखि श्याम नयननही को दोष यह। हठकरि भये गुलाम नेक मंदमुसकान पर ॥
दो० लालचवश ज्यों मीन मृग आप बँधावत आय। रूपलालची नयनहू भये श्यामवशजाय ॥
अब हम तलफत उन विना मृत्यु भई अफसोस। पैसा खोटा आपना परखैया क्या दोस ॥

ऐसी ऐसी वातैं सब व्रजबाला आपस में कहती हुई श्यामसुन्दर का नटवररूप हृदयमें राखिकर अपने अपने घर चली गईं पर आठोंपहर स्वरूप मोहनीमूर्तिका उनकी आंखों में वसा रहता था ॥

दो० प्रेम भरे छवि सों भरे भरे अनन्द हुलास। युगल माधुरी रस भरे व्रजमें करत विलास ॥
सो० करत अनेकविहार रूपराशिगुणनिधि युगल। राधा नन्दकुमार व्रजवासी जनसुखकरन ॥

उनतीसवां अध्याय।

श्रीकृष्णजीका मुरली बजाना ॥

शुकदेवजी वोले हे राजन् जिस तरह श्यामसुन्दरने कामदेवका अभिमान तोड़ने वास्ते गोपियोंके साथ रासलीला की थी वह कथा अपनी बुद्धिप्रमाण तुम से कहते हैं चित्त लगाकर सुनो जवसे वृन्दावनविहारी ने चीर हरने के समय गोपियों से शरदपूनो को रासलीला करने के वास्ते कहाथा तवसे सव व्रजवाला उसी इच्छा में एक दिनको वर्षभरके समान समझकर कहती थीं कि जल्दी कुवारका महीना आवे तो हम लोग प्राणप्यारे से रासलीला करके अपना जन्म स्वार्थ करें जव वर्षा वीतकर शरद ऋतु आई तव मोहनप्यारेने विचारा कि अपने वचन प्रमाण गोपियों से रासलीला करना चाहिये ऐसा समझतेही कुवारकी पूर्णमासीको तीनघड़ी रात वीते मुरलीमनोहर किरीट मुकुट साजे वनमाला विराजे अंग अंग पर गहना जड़ाऊ पहिने पीताम्बरकी कछनी काछे नटवररूप वनाये अपने घरसे निकल कर वनमें चलेगये तो क्या देखा कि इस समय चन्द्रमा एक कला अपनी जो महादेव के पास रहती है वहभी लाकर सोलहों कलासे

प्रकाश किये है व यमुनाजल मोतीके समान निर्मल होकर कमल फूल रहाहै और हरियाली घटाटोप वृक्षोंकी चाँदनीमें अति शोभायमान होकर आकाश में तारे खिल रहेहैं व शीतल मन्द सुगन्ध हवा बहकर यमुना जी लहरें लेरही हैं॥

दो० श्रीवृन्दावन धामकी शोभा परम पुनीत। वरणि सकैं कवि कौनविधि मनबुधिवचनसुनीत॥
सो० औरसकलसुख धाम वैकुण्ठादिक श्यामके। यह विचारविश्राम याते अति सुन्दर सुखद॥

हे राजन् उस समय मोहनप्यारे ऐसे सुन्दर मालूम देते थे जिनके ऊपर हजारों कामदेवको न्यवछावर करिडालैं वह शोभा देखते ही नन्दकिशोरने एक ऊंचे वृक्षपर बैठकर योगमाया संयुक्त मुरली प्रेमसे बजाई और उसकी ध्वनिमें राधा व गोपियोंका नाम ले लेकर उन्हें अपने पास बुलाने लगे उस समय ऐसी माया केशवमूर्तिने करदी कि जिन व्रजबालों ने उनको पति बनावनेकी इच्छा से व्रत व पूजन किया था उन्हींको वह मुरली सुन पड़ी और दूसरे किसीने नहीं सुनी व मोहनप्यारे ने वंशी में मन हरने व काम बढ़ानेवाला ऐसा राग गाया जिसका शब्द सुनते ही श्यामा आदिक सोलह हजार व्रजबाला कामातुर होकर मोहित होगईं व लाज व काज छोड़कर उलटा व पलटा शृंगार करके इस तरह वृन्दावनको दौड़ीं जिस तरह श्रावण व भादौं में नदी व नालोंका पानी समुद्रादिक में वेग से बहजाता है॥

दो० अधर मधुर मुरली धरे मुरलीधर सुखदैन। ध्वनि सुनि मोहित गोपिका तन मन प्रकटे मैन॥
सो० रह्यो न मनमें धीर बाजी बाजी कहि उठीं। व्याकुल महा शरीर सुनि मुरली व्रजकीतरुणि॥
क० बाजी हैं बौरानी बाजी देखिबेको द्वारधाई बाजी अकुलानी सुनि बंशी बंशीधरकी।
बाजी ना सँभारैं चीर बाजी ना धरत धीर बाजिनके उठी पीर बिरहागि भरकी॥
बाजी नाहिं बोलैं बाजी संग माहिं लागिडोलैं बाजिन बिसरिगई सुधिबुधि घरकी।
बाजी कहैं बाजी बाजी बाजी कहैं कहां बाजी बाजी कहैं बंशी बाजी साँवरे सुंदरकी॥

हे परीक्षित जो गोपी गौ दुहतीथीं बर्तन दूधका उनके हाथसे गिरपड़ा व जो भोजन करती थीं उन्होंने हाथ भी नहीं धोया व जो रसोई बनावती व दूध आगपर चढ़ाये थीं उन्होंने उसी तरह चूल्हेपर छोड़ दिया व जो सुरमा व काजल लगावतीथीं वह लोग दूसरी आंख में बिना लगाये

उठ दौड़ीं व जो अपने पतिके पास अचेत सोई थीं वह उसी तरह नंगी चली गईं व जो बालकको दूध पिलावती थीं वह उसे रोता छोड़कर चल निकलीं व जो अपने पतिको भोजन करावती थीं वह विना खिलाये उठ चलीं व जो व्रजबाला मोहनप्यारेकी चर्चा करती थीं वह उसे छोड़कर उठभागीं व घवड़ाहट से एकने दूसरीका हाल नहीं पूछा कि तू कहां जाती है व व्याकुलता से हाथ का गहना पांव में व गलेका भूषण भुजापर बांधि लिया व लहँगाकी जगहपर चादर पहिनकर सारी ओढ़ली व मारे जल्दी के चोली हाथमें लिये हुये उठधाईं व अपने घरवालोंका कहना किसी ने नहीं माना ॥

दो॰ प्रीति लगी हरिनाथसों तन मनकी सुधि नाहिं। जितने भूषण बांहके पहिरे जांघन माहिं॥
या विधि जो जाविधिहतीं सुधिबुधिसबैबिसार। भाजिचलींव्रजराजपहँलाजकाजधरिद्वार॥

जब एक गोपी अपने पतिके पास सोई थी उठकर भागचली व उसके पुरुषने उसे बरजोरी पकड़कर नहीं जाने दिया तब वह व्रजबाला बीच ध्यान मुरलीमनोहर के तनु अपना छोड़कर दिव्यरूप से सब गोपियों के पहिले श्यामसुन्दरके पास जाय पहुँची वैकुण्ठनाथजीने उसकी प्रीति व भक्ति देखकर उसे मुक्ति दी इतनी कथा सुनकर परीक्षित बोले महाराज उस गोपीने श्रीकृष्णजी को परमेश्वर जानकर प्रीति नहीं की कामदेव के वश होकर अपना प्राण दिया था फिर किसतरह मुक्ति पाई यह वचन सुनतेही शुकदेवजी क्रोधित होकर बोले हे राजन् कईबेर मैंने तुझे समझाया पर तू विश्वास नहीं रखता सुनो परमेश्वर निर्गुणरूप सब जीवों के मालिक होकर सदा एकरस रहते हैं जिस तरह पारस पत्थरसे लोहा जान या अजान में छूकर सोना होजाता है व अमृत पीने से जी नहीं मरता उसी तरह परमेश्वरकी ओर मन लगावनेवाला जीव मुक्त होताहै देखो जिस शिशुपालने परमेश्वरको ऐसा दुर्वचन कहा व जो पूतना व वत्सासुर आदिक दैत्य उनका प्राण मारने आये थे उन्हें परमेश्वर ने कैसी गति दी नारायण शत्रुता व मित्रतासे कुछ प्रयोजन न रखकर केवल अपनी ओर मन लगाये रहने से प्रसन्न होतेहैं काम क्रोध मोह लोभ किसी तरह

घर उनको याद करै व जो कोई उनका ध्यान व स्मरण मरते समय करता है उसकी मुक्ति होने में कुछ सन्देह नहीं रहता ॥

दो० जो शिशुपाल महा अधम हरिको निन्दनहार। ताहूको निजपुर दियो ऐसे अधमउधार ॥

जो मनुष्य प्रकटमें छापा तिलक लगाकर लोगों को दिखलानेवास्ते जप व भजन करते हैं व अन्तःकरणसे प्रीति नहीं रखते उनकी मुक्ति होना कठिनहै सच्चे मनसे भक्ति व प्रीति रखनेवाले मुक्तिपदवी पर पहुँचते हैं व जो लोग श्रीकृष्णजी की दया से भवसागर पार उतर गये थोड़ासा उनका हाल सुनो नन्द व यशोदा ने मोहनप्यारेको अपना पुत्र जाना व गोपियों ने उनको महासुन्दर देखकर अपना पति बनाने चाहा व राजा कंसने अपना शत्रु प्राण लेनेवाला समझा व ग्वालों ने मित्र जाना व पाण्डव और यदुवंशियों ने अपना नातेदार व भाईबन्द जानकर योगी व मुनीश्वरोंने परमेश्वरभाव समझा था उन सबको नारायणजी ने कृतार्थ किया एक गोपी उनसे प्रीति लगाकर मुक्त हुई तो क्या आश्चर्यकी बात है यह वचन सुनतेही परीक्षितने विनय किया महाराज अब मेरा सन्देह छूटगया अब कृपा करके आगे कथा सुनाइये शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जब राधाप्यारी आदिक सोलह हजार ब्रजबाला बड़े उमँगसे केशवमूर्तिके पास जा पहुँचीं उस समय शोभा मनहरण प्यारेकी कैसी मालूम देती थी जैसे तारों में चन्द्रमा रहते हैं व मोहनीमूर्तिकी छवि देखते ही सब गोपियां उन पर मोहित होकर जब आंखोंकी राह रूप रस पीनेलगीं तब वृन्दावनविहारीने पहिले कुशल उनकी पूंछकर फिर रुखाई से कहा तुम्हारे आवने से मैं प्रसन्न हुआ जो कुछ कहो सो करूं पर रात्रिमें भूत व प्रेतकी डरावनी समयहै तुम सब तरुण तरुण स्त्रियां अपने कुल व परिवारकी प्रीति छोड़ कर उलटा पलटा शृंगार किये बौरहों के समान घबड़ाई हुई यहां क्या करने आई हो ॥

दो० तुम अपनो घर छोड़िकै क्यों आई बनमाहिं। रैनिसमय घरकी वधू घरतजि कहूं न जाहिं॥

तुम्हारे घरवाले तुमको ढूंढ़ते होंगे कदाचित् तुमको चांदनीरात में भोग व विलासकी इच्छा हुई थी तो अपने अपने पतिके साथ करतीं जो

प्रेमकी राह मुझे देखने आई हो तो मैं भी अपने साथ प्रीति करनेवालेसे नेह रखताहूं पर स्त्रीको अपने पतिकी आज्ञा पालन करना व लोकलाजका डर रखना जप व तपके बराबर होताहै वेद व शास्त्रमें ऐसा लिखते हैं कि जो स्त्री अपने पतिको अन्धा, काना, कुबड़ा, कोढ़ी, कुरूप, लूला, लँगड़ा व निर्धन, कुटिल, लम्पट, जुवारी, रोगी कैसाही अवगुणोंसे भराहो परमेश्वर तुल्य समझकर प्रेमपूर्वक उसकी टहल सेवा करती हैं वह संसार में मनोकामना पाकर अन्तसमय मुक्त होतीहैं और उन्हें सब कोई कुलवन्ती कहताहै और जो स्त्री अपने पतिको परमेश्वरके तुल्य न जानकर उसकी निन्दा करतीहैं या उसे दुर्वचन कहकर सेवामें नहीं रहतीं या दूसरे पुरुष से प्रीति रखती हैं उनको लोकनिन्दाका डर लगा रहकर मनवांछित फल नहीं मिलता व मरने उपरान्त नरकमें जाकर दुःख भोगना पड़ताहै और जैसा हम दूरसे तुम्हारी भक्ति व प्रीति करने में प्रसन्न थे तैसा यहां आने में खुश नहीं हुये किसवास्ते कि रातको यहां चले आवने में तुम्हारे घरवाले खेद मानकर सब व्रजवासी हमें व तुम्हें बदनाम करेंगे भला जो कुछ तुमने किया सो अच्छा हुआ अब चांदनी व वन व यमुनाकी शोभा देखचुकीं इसलिये घर जाकर अपने अपने पतिकी सेवा व टहल प्रेमपूर्वक करो जिसमें तुम्हारा कल्याण हो ॥

दो० निजपतितजिपरपतिभजे तियकुलीननहिं होय। मरेनरकजीवतजगतभलोकहाहैनहिंकोय॥

सो० युवतिनको पति देव कहत वेद में भी कहीं। करो उन्हींकी सेव जो तुम चाहत सुखलहन॥

हे राजन् यह वचन ज्ञानरूपी सुनते ही सब व्रजबाला शोचित होकर यह दशा उनकी होगई कि शिर नीचा करके ठण्ढी ठण्ढी श्वास लेकर नखसे पृथ्वी खोदने लगीं व चुपचाप चित्रकारी सी रहकर विरहसागरमें डूबगईं व आंसू बेपरवाह गिरने से सुरमा व काजल आंखोंका बहकर गालोंपर चला आया व कोई व्रजबालाकी बेसर टूटकर गिरपड़ी व पहिले मारे खुशीके जो मुखारविन्द उनका ललितथा सो पीला होगया ॥

दो० निठुरवचन सुनिश्यामकेयुवतिभईंअकुलाय। चकितभईंमनगुनिरहीं मुखकछुवचन न आय॥

उनमें जो व्रजबाला चतुरीथीं वह विरहकी अग्निमें जलकर यों बोलीं

हे श्यामसुन्दर तुम बड़े ठग हो पहिले तुमने मुरली बजातीसमय सब किसीका नाम लेकर अपने पास बुलाया व अचानकमें ज्ञान व ध्यान व तन व मन हमारा तुम्हारी मोहनीमूर्ति व वंशीकी ध्वनिने हरलिया अब तुम कठोरताई से वेद व शास्त्र समझाकर हमारा प्राण लिया चाहते हो हे मोहनप्यारे जैसे रातको तुमने हमें बुलायाहै वैसे हमारी इच्छा पूर्ण करो हमलोग मर्याद वेद व शास्त्र व लोकलाज व प्रेम व कुलपरिवारको छोंड़कर तुम्हारे चरणों में जिनका ध्यान देवता व ऋषीश्वर करते हैं प्रीति लगाया आदिपुरुष परमेश्वरको छोंड़कर ऐसा धर्म नहीं सीखतीं जो संसारी मायाजालमें फँसकर नष्ट होवें संसारी मायामें फँसे रहनेसे किसीका कल्याण नहीं होता व मन हमारा तुम्हारे प्रेममें उलझ रहाहै इसलिये बीच काम गृहस्थीके नहीं लगता तुम्हारे चरण छोंड़कर एक पग जाना हमें कठिनहै इतनी दूर घरपर किसतरह जावें॥

दो० अब तुमको यह उचित नहिं सुनो श्याम सुखराश। मन हमरो अपनायकै हमको करत निराश॥

सो० पाप पुण्य कह नाथ यहतो हम जानैं नहीं। बिकीं तुम्हारे हाथ अधरामृतके लोभसे॥

हे महाप्रभु हमलोग अबला अनाथ कुछ झूठ व कपट न जानकर तुम्हें अपना पति मनसा वाचासे समझती हैं आपकी मृदु मुसुकानने सब व्रजबालों को मोहलिया दूसरे तुम्हारी सहाय मुरली ऐसी मिली है जिसकी ध्वनि सुनने से चित्त हमारा ठिकाने नहीं रहा व तुम्हारे चरणों की प्रीति करनेवाला मनुष्य कुल परिवारका प्रेम व लोकनिन्दाका कुछ डर नहीं रखता सो हे अन्तर्यामी व्रजराज शरण आयेकी लाज तुम्हारे हाथहै व हमने बड़ोंके मुखसे ऐसा सुनाथा जो कि तुमसे प्रीति रखता है उसके साथ तुमभी प्रेम करते हो सो अब यह वचन झूठ मालूम हुआ किसवास्ते कि हमलोग तुम्हारे स्नेहसे इस समय वनमें आईं और तुम अपने पाससे हमें खेदते हो व ऐसा भी लोग कहतेहैं कि एक मनका हाल दूसरा मनुष्य जिससे वह प्रीति करै जानताहै सो यह भी तुमने कहनेवास्ते बनादिया है नहीं तो हमारे दर्दकी प्रीतिका हाल तुम जानते सिवाय इसके वेद व शास्त्रके अनुसार जबतक तुम्हारा चाहनेवाला संसारी मायासे अपना मन

विरक्त नहीं करता तबतक तुम्हारे पास उसका पहुँचना कठिन है व उसी शास्त्रके प्रमाणसे हमलोगभी अपने घरवालों की प्रीति छोड़कर तुम्हारे शरण आई हैं कदाचित् तुम शास्त्रको झूठा करके हमारे चाहने पर भी हमलोगों से प्रीति नहीं रखते तो हमारा मन जो तुमने हरलिया है सो फेरिदेव नहीं तो अपनी दासी हमें बनाओ कदाचित् प्रकटमें हमें छोड़-दोगे तो हमारा वश नहीं चलता पर हमारे हृदयमें जो तुम्हारा वास आठों पहर रहताहै वहांसे भागकर कहां जाओगे ॥

दो० कर छटकाये जात हौ अबल जानिके मोहिं। हृदयनसे जब जाहुगे मर्द बखानों तोहिं॥

जिस तरह तुम्हारे चरणोंकी सेवा लक्ष्मीजी वैकुण्ठमें करतीहैं उसी तरह हमको तुम्हारे चरणारविन्द प्यारेहैं जिन चरणनकी धूरि मिलनेवास्ते ब्रह्मा व महादेव आदिक सब देवता चाहना रखते हैं वे चरणकमल हम किस तरह छोड़देवें इस मोहनीमूर्तिकी हमलोग दासी होकर अपना तन मन धन इसपर न्यवछावर समझतीहैं तीनोंलोक में कौन ऐसा जीव जड़ व चैतन्यहै जो तुम्हारी छवि देखने व वंशीकी ध्वनि सुनने से मोहित न होजावे हे व्रजनाथ तुम्हारा नाम दीनदयालुहै हमसे अधिक कोई दूसरा संसारमें दीन न होगा इसलिये दयालु होकर हमारी इच्छा पूर्ण कीजिये नहीं तो तुम्हारे विरहकी अग्निसे अपना तनु जलाकर मरतीहैं व मरते समय यह इच्छा करेंगी कि सौ जन्म तक तुम्हारी दासी होकर सेवा किया करें तब हमारे मरने का तुम्हें दोष होगा ॥

दो० विरहविकललखि गोपियनकृपासिंधुभगवान। उमँगिउठेहगभरि लिये दीनवचनसुनिकान॥

जब केशवमूर्तिने सच्ची प्रीति गोपियों की देखी तब बड़े प्रेमसे सब व्रजवालों को अपने पास बैठाकर कहा कदाचित् तुम्हारी ऐसी इच्छाहै तो मेरे साथ रासमण्डल करो यह वचन सुनतेही सब गोपियां इसतरह प्रसन्न होगईं कि जिसतरह मछलीको गर्म बालू परसे उठाकर कोई पानीमें डाल-देवै फिर वृन्दावनविहारीने योगमायाको बुलाकर आज्ञा दी कि तुम हमारी रासलीला करनेके वास्ते एक स्थान बहुत अच्छा यमुना किनारे तय्यारकरके वहां बनी रहो व इन व्रजवालोंको भूषण व वस्त्र आदिक जिस वस्तु

की इच्छा हो सो देव यह वचन सुनतेही योगमायाने उस समय जब एक चबूतरा गोल व बहुत बड़ा रत्नजटित तय्यार करदिया व उसके चारोंओर केलेके खम्भे गाड़कर मोती व फूलोंकी झालर उसमें लगाया तब मोहनप्यारे ने राधा आदिक गोपियोंसमेत वहां जाकर देखा तो उस चबूतरेकी शोभा चांदनी से चौगुनी दिखलाई दी व चारोंओर बालू यमुनाजी की सफ़ेद बिछावनके समान होकर एकओर हरियाली वृक्षोंकी बहुत सोहावनी दिखलाई देतीथी जब उस चबूतरेके निकट हरिइच्छासे अनेकतरहके भूषण व वस्त्र व बाजनोंका ढेर लगगया तब व्रजबालोंने योगमायाकी आज्ञानुसार वहां जाकर इच्छापूर्वक गहना व कपड़ा पहनलिया व सोलहों शृंगार करने उपरान्त अनेक तरहके बाजा लेकर श्यामसुन्दरके पास आईं व कामवश होकर उस चबूतरेपर गाने बजाने लगीं तब श्रीकृष्णजीने राधाप्यारीके साथ बीचमें अपने निज रूपसे रहकर और सब दो दो गोपियों में अपना एक एक रूप प्रकट करदिया उस समय केशवमूर्ति गोपियों के बीचमें इसतरह सुन्दर मालूम देते थे जिसतरह सुनहली मालाके दानों में नीलमणि रहती है जब श्यामसुन्दरने व्रजबालोंके गले में हाथ डालकर मुख चूमने व गाल छूने उपरांत उन्हें छातीसे लगाया व वंशी बजाकर अनेक राग व रागिनी उनको सुनाया तब गोपियों का कलेजा जो विरहकी अग्निसे जल रहाथा मोहनप्यारेके चन्द्रमुखके स्पर्श करनेसे शीतल होगया जब घूमते समय वृन्दावनविहारी व्रजबालोंके पीछे पीछे परछाहीं की तरह फिरते थे तब श्यामा आदिक गोपियां उनकी छवि व सुन्दरताई पर मोहित होजातीथीं व कभी मुरलीमनोहर अपनी आंख व भौंह मटकाकर उन्हें प्रसन्न करते व कभी उनका गाना व बजाना सुनकर आप आनन्द होते थे व कोई व्रजबाला उनकी मुरली छीन कर आप बजातीं व कोई स्वर मिलाकर गाने लगती थीं॥

दो० हँसे जमी सुख पाइकै चन्द्रमुखिनकी ओर। प्रेम प्रीति रसवश भये प्रीतम नवलकिशोर॥

हे राजन् उस समय वहां ऐसा आनन्द होरहा था जिसे ब्रह्मा व महादेव आदिक देवता देखकर कहते थे बड़ा भाग्य व्रजवासियों का है देखो

जिस परब्रह्म परमेश्वर का दर्शन हमलोगों को जल्दी ध्यान में नहीं मिलता वह वैकुंठनाथ सब ब्रजबालों के साथ रास व विलास करते हैं॥

दो॰ धनि धनि कहि वर्षैंसुमनमुदितसकलसुरनारि। धनिमोहन धनिराधिकाधनिहैं गोपकुमारि॥

हे परीक्षित जब गोपियोंने ऐसी कृपा मनहरणप्यारे की अपने ऊपर देखी तब अभिमानसे कहनेलगीं हमारे बराबर सुन्दर कोई दूसरी स्त्री न होगी इस वास्ते नन्दकिशोर हमलोगोंके वश होकर हमें बहुत प्यार करते हैं त्रिलोकीनाथको हमने ताली बजाकर नचाय दिया अब बिना आज्ञा हमारे कुछ नहीं करेंगे ऐसा विचारकर बाजी गोपी कटाक्ष करके बोली हे नन्दलाल मेरे पांव नाचते नाचते दुखने लगे व कोई उनका हाथ पकड़ कर बैठ गईं व कोई कन्धा थाँभकर खड़ी होरहीं॥

दो॰ याहीविधिब्रजसुंदरिन देत परमसुख श्याम। लखिपतिगतिआधीनअति भईं गर्वितावाम॥
सो॰ परम प्रेमकी खान रूपशीलगुणआगरी। क्यों न करैं अभिमान जिनके वश त्रिभुवनपती॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जब गोपियां लज्जा व धर्म छोड़कर मुरलीमनोहरको पापकी दृष्टिसे देखने लगीं तब गर्वप्रहारी भगवान्‌ने विचारा यह सब ब्रजबाला अज्ञानकी राह मुझे अपना पति समझकर अंगसे लपटाती हैं व मुझे अपने भक्तोंकी सब बात उत्तम मालूम होकर अभिमान अच्छा नहीं लगता इसलिये मैं इनको अकेली छोड़कर अंतर्धान होजाऊं तब गर्व इनका टूटजावेगा देखो मेरे जाने उपरांत यह लोग वन में क्या करती हैं॥

दो॰ उन जान्यो हरि वश कियो लाईं मन अभिमान। प्रभु अन्तर्यामी भये क्षणमें अन्तर्धान॥
सो॰ यह विचारि जिय जान लै वृषभानुकुमारिसँग। ह्वैगये अन्तर्धान ब्रजवासी प्रभुसंगते॥

तीसवां अध्याय।

श्रीकृष्णजीका गोपियों करके खोजना॥

राजा परीक्षित इतनी कथा सुनकर बोले श्यामसुन्दरके अन्तर्धान होने उपरांत गोपियोंकी क्या दशा हुई शुकदेवजीने कहा हे राजन् जब रासमण्डल में से केशवमूर्ति श्यामा समेत अन्तर्धान होगये तब सब गोपियों का सुख व विलास स्वप्नके धन समान जातारहा और सब ब्रजबालाइस

तरह व्याकुल होगई जिस तरह हरिणी अपने झुण्ड से बिलग होने में घवड़ाजाती है जब चित्त ठिकाने हुआ तब आपस में कहने लगीं॥

क० वांसुरीकी धुनि सुनि आई तजि लाज काज सोई व्रजराज साज समय वितैगये।
मन्द मुसकायकै लोभाय मन हाय हाय रूपरस प्याय प्रेम चित्तसों चितैगये॥
कहैं वलदेव नीच घानसों है मारी तान लेके तुम मान लाज हमरी रितैगये।
टोह ना मिलत कछु चाह ना हमारी श्याम मोहनी दिखाय रूप मोहन कितैगये॥

दूसरी गोपी वोली यह चित्तचोर इसी वृन्दावन के कुंजों में कहीं छिपा होगा यह वचन सुनतेही सब व्रजबाला श्यामसुन्दर का नाम ले ले कर चारोंओर यमुना किनारे व वनमें पुकारके कहने लगीं हे प्राणपति हमें छोंड़कर तुम कहां चलेगये जब गोपियां उनकी खोज में दौड़ते दौड़ते थकगईं व रोते रोते आंखों में अँधेरा छागया तब उनकी यह दशा होगई जिस तरह सांप मणि खोजाने से घवड़ाजाता व मछली विना पानी के तड़फने लगती है॥

दो० यहि विधि सब खोजतफिरैंविरहातुर व्रजबाल। भईविकलपावत नहींकितखोजैं नँदलाल॥

उस महादुःखके समय एक गोपी वोली ऐ सखी मनहरणप्यारे मुझे छटकाकर कहां चलेगये अभी तो मेरे गले में वांह डाले खड़े थे तुमलोगों में किसी ने उनको जाते देखा है यह सुनकर दूसरी व्रजवाला जो विरहकी अग्निमें जलरही थी हाय मार कहने लगी अरी बावरी मैं उनको देखती तो किसवास्ते जाने देती हमलोग तो उनकी सेवा मनसा वाचा कर्मणा से करतीथीं न मालूम कौन ऐसा अपराध हुआ जो आधीरात को इस वनमें अकेली छोंड़कर चलेगये इसी तरह सब व्रजवाला अपना अपना दुःख एक दूसरी से कहकर वहुत विलापकर वोलीं हे व्रजनाथ हमलोग अवला अनाथको किसवास्ते इतना दुःख देते हो हमने अपना तन मन दोनों तुम्हारे ऊपर न्यवछावर करदिया है इसलिये हमलोगोंको विना दामकी दासी समझकर जल्दी अपना दर्शन देव जब बहुत ढूंढ़ने व विलाप करने पर भी कहीं कुछ पता मोहनप्यारे का नहीं मिला तब वड़े शब्द से रुदन करके वोलीं हे परमेश्वर हमलोग अवला अनाथ कहां जाकर उन्हें ढूं

व किससे अपना दुःख कहैं व कौन ऐसा उपाय करैं जिसमें हमारा चित्त चुरानेवाला मिलजावै यहां तो कोई वटोही भी नहीं दिखलाईदेता जिससे उनका पता पूछैं जिस समय गोपियां इसी तरह विलाप कररही थीं उसी समय एक सखी बोली सुनो प्यारियो इस वनमें जितने वृक्ष व पशु व पक्षी देखतीहौ यह सब पिछले जन्मके ऋषि व मुनि होकर उन्होंने कृष्णलीलाका सुख देखनेवास्ते व्रजमें जन्म लियाहै इनलोगों ने श्यामसुन्दरको अवश्य देखाहोगा इनसे उनका हाल पूंछो तो मालूम होनेसक्ता है यह सुनकर सब व्रजवाला बौरहों के समान पशु व वृक्षोंसे पूंछनेलगीं अभी श्रीकृष्ण हमारा मन चुराकर मारेडरके भागगये हैं तुमने देखा था दूसरी व्रजवाला बोली हे गूलर व वट व पीपर व कटहर व बेर व पाकर व मौलसिरी व जामुन व आम व अमिली व कदम व बेल व फालसा आदिकके वृक्ष परोपकार करने वास्ते तुमलोग मृत्युलोकमें जन्म लेकर अपनी छाया व फल व फूलों से सबको सुख देते हो सो हम लोगोंका मन हरकर नन्दलालजी अन्तर्धान होगये तुम्हें दिखलाई तो नहीं दिये थे दूसरीने कहा हे नींब व कचनार व चम्पाके वृक्ष तुमने कहीं नन्दकुमारको देखाहै दूसरीने पूछा हे तुलसी तुम श्यामसुन्दर को बहुत प्यारी होकर वे तेरे विना भोजन नहीं करते इसलिये उनका हाल तुझे अवश्य मालूम होगा ॥

दो० श्रीतुलसी को देखिकै जियकी कहत सुनाय। माखनप्रभुकी प्राणप्रिय प्रीतम देव बताय ॥

दूसरी व्रजबालाने कहा हे अनार तेरे दांत निकले रहने से मुझे मालूम होताहै तैंने नन्दलालको अवश्य देखा होगा दूसरी बोली अय केला तेरे नरम नरम पत्तोंपर सदा मनहरणप्यारे भोजन किया करते थे उन्हें देखाहो तो दयाकरके बतलादे अब उनके विरह का दुःख हमसे नहीं सहाजाता दूसरी कहनेलगी अय अशोक के वृक्ष तेरा नाम परमेश्वरने इसीवास्ते अशोक रक्खा जिसमें दूसरोंका शोक मिटादे सो हमलोग श्रीकृष्णके विरहसागरमें डूबरही हैं तैंने नन्दकिशोरको देखाहो तो बतलाकर हमारा शोच छुड़ादे नहीं तो आजसे अपना नाम अशोक मत रख दूसरी

ने कहा अय चन्दन तुझे नन्दकुमार बहुत प्यारा जानकर अपने अंग में लगाते थे तू उन्हें जानता हो तो बतलाकर यश उठाले ॥

दो० माखनप्रभु जिन द्रुमनसों परसत श्यामशरीर । तिनको भेंटत गोपिका मेटत उरकी पीर ॥

दूसरी बोली अय जुही व मालती व नेवारी व चमेलीके फूल तुमने इसतरफ़ कन्हैयाको जाते देखाथा तुम्हारा रूप देखने से मालूम होताहै कि वे अपना हाथ तुमपर फ़ेरते गयेहैं इसलिये तुमलोग प्रसन्नतासे फूलेहुये हमारी हँसी करते हो दूसरी बोली अय केतकीके फूल तेरी सुगन्ध लेनेवास्ते अनेक देशके भौंरे आते हैं सो हम दुखियारियों पर दयालु होकर उनसे श्यामसुन्दरका पता पूंछके हमैं बतलादे दूसरीने कहा हे पृथ्वी तेरे ऊपर केशवमूर्ति सदासे बड़ी प्रीति करते आये हैं जब तुझको हिरण्याक्ष दैत्य पातालमें लेगया तब वह वाराहरूप धरकर अपने दांतोंपर उठालाये थे व वामन अवतार लेकर तुझे राजाबलिसे दान लियाथा इसलिये तेरे बराबर दूसरेका भाग्य नहीं होसक्ता तुझे उनका पता चरण धरने से अवश्य मालूम होगा हमें अपने ऊपर न्यवछावर समझकर वेग उनका हाल बतलादे ॥

दो० चरणकमल जगदीश के सदा रहैं तुम शीश । माखन ईश बताइके हमसे लेहु अशीश ॥

हे राजन् जब बहुत पूंछनेपर भी किसीने कुछ पता श्यामसुन्दरका नहीं बतलाया तब और अधिक विलाप करके चारोंओर उन्हें खोजनेलगीं उनकी दशा देखकर सब पशु व पक्षी व वृक्ष उस वनके इतना शोच करते थे जिनका हाल वर्णन नहीं किया जाता उसी समय एक गोपीने श्रीकृष्णजीके पांवका चिह्न देखकर सब व्रजबालोंको दिखलाया तो वह आकार देखतेही सबोंने वहांकी धूरि उठाकर अपनी आंखों में लगाया व उस पृथ्वीको चूमकर बोलीं भला उस चित्तचोरका पता तो मिला कि इसी ओरको गयाहै फिर सब गोपियां उस चरणका पता देखती हुई आगे चलीं जब थोड़ीदूर और बढ़ीं तब एक स्त्रीके पांवका चिह्नभी दिखलाई पड़ा जब उसे देखकर उन्हें और अधिक डाह उत्पन्न हुई तब बड़ी करुणासे आपस में कहा देखो श्मामा उन्हें बहुत प्यारी थी जो उसे अपने साथ लेगये हैं उसने पिछलेजन्म महादेव व पार्वतीका बड़ा तप कियाथा जो अकेले में

श्यामसुन्दरके साथ सुख उठाती है और हमलोग उनके विरह में रातको झटकती फिरती हैं दूसरी सखी बोली श्यामसुन्दरका ध्यान व स्मरण करने वाला मुक्तिपदवी पाताहै श्यामाकी बराबरी वह भी नहीं करनेसक्ता क्योंकि श्यामा नन्दकुमारका मुख चूमकर अपना जन्म स्वार्थ करती है ॥

दो० वह ऐसी बड़भाग्यहै सुन्दरि सुघरि सुजान। माखनप्रभुके संग में अधर करै मधु पान ॥

इसी तरह शोच करती हुई थोड़ी दूर और आगे जाकर क्या देखा कि वहां राधाप्यारी के पांवका चिह्न न होकर केवल श्यामसुन्दरके चरणों का आकार दिखलाई दिया तब आपसमें कहने लगीं मालूम होताहै कि यहां से मोहनप्यारे श्यामाको स्नेहवश कन्धेपर चढ़ाकर लेगये हैं तब थोड़ीदूर और आगे पहुँचकर घास जमीरहने से कुछ चिह्न पांवका पृथ्वीपर नहीं दिखलाई दिया तब अधिक व्याकुल होकर वहां से फिरने लगीं तो एक जगह नरम नरम पत्तोंके बिछावनेपर राधाप्यारीका जड़ाऊ शीशा पड़ा हुआ पहिचानकर एक गोपीने कहा हे सखी मनहरणप्यारे ने यहां बैठकर राधाका श्रृंगार करने उपरान्त उसकी चोटी फूलों से अपने हाथ गूंधी थी उस समय पीछे बैठने से केशवमूर्तिका मुखारविन्द श्यामाको नहीं दिखलाई दिया तब उसने इस कारण शीशा लेकर देखा था जिसमें उनकी मोहनीमूर्ति मुझे दिखलाई देकर मेरा चन्द्रमुख उन्हें देखपड़े यह बात सुनतेही सब व्रजबाला सवतियाडाह से और अधिक व्याकुल होकर जब मोहनप्यारेको ढूंढ़ती हुई थोड़ीदूर और आगे गईं तो क्या देखा कि राधाप्यारी वनमें अकेली खड़ी हाथ पसारे ऐसा रोरही है जैसे सांप मणि खोजाने से विकल होजावे व उसका विलाप देखकर सब पशु व पक्षी व वृक्ष उस वनके रोते थे व श्यामा रुदन करके कहती थी हे प्राणप्यारे रातको मुझे वनमें अकेली छोड़कर कहां चलेगये अपनी दासी समझकर मेरी सुधि लेव राधाको देखतेही सब व्रजबाला ऐसी प्रसन्न हुईं कि जैसे किसी का गया हुआ धन आधा मिलजावै ॥

दो० जिततितते धाईं सबै व्रजसुन्दरि अकुलाय। व्याकुल लखि अतिलाड़िलीलीन्हीं कण्ठलगाय ॥

सो० कहां गये गोपाल बारबार पूंछत सबै। पूंछि पड़ी तेहिकाल मुखते वचन न आवही ॥

तब ललिता आदिक गोपियों के देखने से राधाका रोना कुछ थोड़ा हुआ तब ठण्ढी सांस लेकर बोलीं ॥

दो० क्या पूंछो मुझसों सखी मोहनकी निठुराय। नहिं जानौं वह कित गये मोहूंको छटकाय॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित कारण छोड़जाने राधाका यहहै जब केशवमूर्तिने राधा समेत अन्तर्धान होकर अनेक गहना फूलोंका बनाकर श्यामाको पहिनाया व उसको भोग व विलास करके बहुत सुख दिया तब राधाने अभिमानकी राह विचारा कि मेरे बराबर कोई दूसरी स्त्री सुन्दर न होगी मोहनप्यारे को मैंने वश कर लिया उन्होंने केवल मेरी चाहना के वास्ते व्रजवालोंको बुलाकर रासमण्डल किया था इसीवास्ते सबको छोड़ कर मुझे अपने साथ लेआये हैं ऐसा समझकर श्यामा बोली हे मनहरण-प्यारे मेरे पांव नाचने व राह चलने से दुखने लगे इसलिये मुझसे पैदल नहीं चला जाता मुझे अपने कन्धेपर चढ़ाकर ले चलो यह वचन सुनते ही गर्वप्रहारी भगवान्‌ने जाना कि इसने मेरी महिमा न जानकर अभि-मान किया इसलिये कुछ दण्ड इसको करना चाहिये ऐसा विचारकर श्यामसुन्दरने अपनी पीठ झुका दी व मुसकराकर राधासे कहा आवोमेरे कन्धेपर चढ़ो जैसे श्यामाने हाथ पसार कर कांधेपर बैठने चाहा वैसे व्रज-नाथ अन्तर्धान होगये तब वह उसी तरह हाथ पसारे खड़ी रहगई ॥

दो० चकित भई जब नागरी गये कहां भजि श्याम। मनहीं मन पछितात अति भूलीतनसुधिवाम॥
सो० मैं कीन्हों अभिमान नारिबुद्धि ओछी सदा। वह प्रियपरम सुजान जानलई मम जीयकी॥
दो० माखनप्रभुके विरहदुख कासों वरणी जाय। अपनो दोष विचारिकर बारबार पछिताय॥

हे राजन् जब गोपियों ने धैर्य देकर राधा से पूछा तब उसने अपने अभिमान करने व श्यामसुन्दरके अन्तर्धान होनेका हाल ज्यों का त्यों कह सुनाया तब व्रजवालोंने श्यामाको भी अपने समान विरहअग्नि में जलते हुये देखा तब अति विलाप करके बोलीं हे व्रजनाथ तुम्हारे वियोग में हमको एक क्षण कल्पके समान मालूम होकर प्राण निकलने चाहताहै इसलिये दयालु होकर दर्शन देव जब बहुत ढूंढने पर भी कहीं पता उन का नहीं मिला तब निराश होकर अतिविलाप करने लगीं ॥

क० विरहानल डाढी सब ठाढीसी गिरीं भूमि गाढी पीर बाढी निजहाथ धुनैं माथहीं।
मोहनके हेत सों अचेत ह्वै पुकारउठीं अब सुधि लेत न हमारी प्राणनाथहीं॥
कैसी गति कीन दीनसुखद प्रवीन कान्ह कहै बलदेव मीन जैसे बिन पाथहीं।
दुसह समोई दोऊ दीनन से खोई अति विरहमें भोई गोपी रोई एक साथहीं॥

उस समय एक गोपी जो चतुरी थी बोली सुनो प्यारियो इस रोने व दौड़ने से कुछ अर्थ नहीं निकलता जब वही करुणानिधान दयालु होकर अपना दर्शन देवैं तब वह मिलने सक्ते हैं नहीं तो उनका पता लगना कठिन है इसलिये सब कोई एक जगह बैठकर उनका ध्यान व स्मरण करो तो विश्वासहै कि वे दुःखभंजन दयालु होकर दर्शन अपना देवैंगे यह वचन सुनतेही सब ब्रजबाला यमुना किनारे जहां श्यामसुन्दर से विलग हुईं थीं जाकर उनकी चर्चा आपस में करने लगीं व उस चबूतरे सुख स्थानको देखकर बोलीं हे मनहरणप्यारे जब से तुमने ब्रज में जन्म लिया तब से सदा हमारी रक्षा करके हमैं सुख दिया आज क्यों इतने कठोर व निर्दयी होकर दुःखसागर में डुबावते हो कदाचित् हमारा प्राण तुमको लेना था तो गोवर्धन पहाड़ हमारे ऊपर क्यों नहीं गिरा दिया ऐसे जीने से मरना अच्छा है फिर गोपियों ने योगमायाको जो अनेक तरहका रूप धारण कर लेतीथी अपने साथ लेलिया व आपसमें बाललीला श्यामसुन्दर की करना आरम्भ किया उसमें एक ब्रजबालाने आप श्रीकृष्ण बनकर योगमाया को पूतना बनाया व दूध पीती समय छाती की राह प्राण उस का निकाल लिया जब दूसरी गोपी यशोदा बनकर दही मथने लगी व कृष्णरूप ब्रजबालाने बर्तन दही व मट्ठेका तोड़कर ग्वालरूप गोपियों समेत माखन खाना आरम्भ किया तब यशोदाने क्रोध करके उन्हें ऊखलसे बांध दिया उससमय कृष्णरूप गोपीने यमलार्जुन दोनों वृक्ष जो योगमाया बनी थी उखाड़ डाला जब इसीतरह योगमाया ने वत्सासुर व बकासुर व तृणावर्त्त व अघासुर राक्षस बनकर कृष्णरूपी ब्रजबालाको मारनेचाहा तब श्यामरूप गोपीने उसे मार गिराया फिर योगमायाने बहुतसी गौ वहां प्रकट कर दिया तो कृष्णरूप गोपी उन्हें चराने लगी जब योगमाया ने

कालीनाग बनकर फुफकार मारना आरम्भ किया तब केशवरूप व्रजबाला ने उसको नाथ डाला जब दूसरी गोपी ने बहुत कपड़ा लपेटकर गोवर्धन पहाड़ बना दिया तब कृष्णरूप व्रजवालाने उसे अँगुलीपर उठा लिया व पानीकी जगह उस पहाड़पर वृक्षोंका पत्ता बरसाया जब वृक्ष हिलने व पत्तोंके गिरनेसे शब्द होता था तब सब व्रजवाला उसे खटका पांव मनहरणप्यारे का समझकर कहती थीं हे श्यामसुन्दर देखो तुम्हारी याद व चर्चा करके हमलोग अपने अपने मनको धैर्य देती हैं अब तुम जल्दी अपनी मोहनीमूर्ति दिखलाओ ॥

दो० माखन प्रभुके रूप गुण ध्यान धरे जो कोइ । मन्द होय दुख शोच सब बहु सुख पावै सोइ॥

हे राजन् उससमय गोपियों ने बालचरित्र श्रीकृष्णजीका करके ऐसा मन उसमें लीन करलिया कि अपने तनु व वस्त्रकी सुधि भूलगईं ॥

इकतीसवां अध्याय ।

केशवमूर्तिके विरहमें गोपियोंका विलाप करना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जब फिर गोपियोंका चित्त ठिकाने हुआ तब यमुना किनारे बैठकर कहनेलगीं हे प्रीतम जबसे तुम व्रजमें आये तब से नित्य नये सुख हमलोगों को दिखलाये जिन हाथोंसे तुमने लक्ष्मीका दान लेकर उन्हें अपने चरणों में वास दिया है वही हाथ अपनी दासियों के मस्तकपर रक्खो ॥

क० जाही हाथ धनुष चढ़ायो है जु सीतापति जाही हाथ रावण सँघारि लंक जारी है ।
जाही हाथ तारयो औ उबारयो हाथ हाथीगहि जाही हाथ सिंधुमथि लक्ष्मीको निकारी है ॥
जाही हाथ गिरिवर धारि गिरिधारी भयो जाही हाथ नन्दकाज नाथ्यो नाग कारी है ।
हौंतो मैं अनाथ हाथ जोरे कहौं दीनानाथ वाही हाथ मेरो हाथ गहिबे की बारी है ॥

जिस दिन से हमलोगों ने तुम्हारी मोहनीमूर्ति देखी है उसी दिन से हमारा ध्यान व प्राण तुम्हारे चरणोंके पास रहकर संसारी व्यवहारमें नहीं लगता सो हमें महादीन व दुःखी जानकर अपना चन्द्रमुख दिखलाओ हमारी आंखें जो रोते रोते जल रही हैं उन्हें ठण्ढी करो कदाचित् तुम्हें हम लोगोंको अपने विरहमें मारना था तो राक्षसों के हाथ व दावानल अग्नि

व कालीनागके विष व इन्द्रके कोप से क्यों बचाया कदाचित् तुम नन्द व यशोदाके बेटा होते तो ऐसी कठोरताई न करते न मालूम किसके जने हो तुम्हारे विरहमें हमारा हृदय जल रहा है इसलिये दुःखी होकर यह कठोर वचन तुमको कहती हैं हमारे मन का हाल तुम्हें अच्छी तरह मालूम होगा॥

दो० दही दूध ले जात थे माखन प्रभु व्रजराज। तबहूं तो बरज्यो नहीं वैर करत क्यहि काज॥

यह वचन सुनकर दूसरी गोपी बोली सुनो प्यारियो उनको ताना मारने से कभी नहीं पावोगी केवल विनय करने से वे प्रसन्न होंगे किस वास्ते कि उनका नाम दीनदयालु है॥

दो० तब उन सब गोपिन कह्यो नाहीं और उपाय। माखनप्रभु बिनती करौ तबै मिलैंगे आय॥

यह बात विचारकर सब व्रजबालों ने कहा हे श्यामसुन्दर तुम केवल नन्द व यशोदाके पुत्र नहीं हो आपको ब्रह्मा व महादेव आदिक देवता पृथ्वीका भार उतारने व संसारीजीवोंकी रक्षा करनेवास्ते क्षीरसागर में से प्रार्थना करके लिवालाये हैं सो हे प्राणनाथ हमलोगों को एक बड़ा अचम्भा मालूम होताहै जब हमारी ऐसी अबला व दुखियारियों का प्राण लेते हो तो रक्षा किसकी करोगे क्या हम स्त्रियों का प्राण मारने वास्ते आपने मूर्खताई पकड़ी है हे मनहरणप्यारे तुम्हारे मन्द मन्द मुसुकान व तिरछी चितवन व भौंहकी मटक व गर्दनकी लटक व बातोंकी चटक जब हमलोगोंको याद आवती है तब चित्त हमारा ठिकाने नहीं रहता जब तुम वनमें गो चराने जाते थे तब चार पहर दिन तुम्हारे विरह में हमको चार युगके समान बीतते थे फिर सन्ध्यासमय तुम्हारा चन्द्रमुख देखकर अपनी आंखें ठण्ढी करके कहती थीं ब्रह्माजी बड़े मूर्ख हैं जिन्हों ने आंखोंपर पलक बना दी कि पलक भांजने से उतनी देरतक तुम्हारी मोहनीमूर्ति नहीं दिखलाई पड़ती हे जगत्पालन जिन चरणों का ध्यान ब्रह्मा व महादेव आदिक देवता आठोंपहर अपने हृदय में रखते हैं उन्हीं चरणों का दर्शन देकर हमारी इच्छा पूर्ण करो वे चरण कैसे हैं जिनके देखने व दण्डवत् करने से अनेक जन्म के पाप छूट जाते हैं व लक्ष्मीजी अपने हाथ उन्हें दाबती हैं हे श्यामसुन्दर जब तुम्हारे विरहमें हमारा प्राण

निकल जावैगा तब पीछे से अमृत पिलाकर क्या करोगे अब तक केवल तुम्हारे मिलनेकी आशापर प्राण अपना राखे हैं सो अपनी छवि दिखला कर कामरूपी दुःख हमारा छुड़ावो व वंशी सुनाकर चिन्ता हमारी मिटावो रातसमय स्त्रियोंको कोई अकेला नहीं छोड़देता जिसतरह तुम लक्ष्मीजी को दिन रात छाती में लगाये रहते हो उसीतरह हमलोगोंको भी अपने चरणोंसे अलग मत करो निर्दयी छोड़कर वेग अपना दर्शन देव तुम्हारा नाम संसार में गोपीनाथ प्रकट है सो अपने नाम की लज्जा करो या अपना नाम गोपीनाथ मत रक्खो तुम अपने श्यामरंगके समान मनभी काला करके ऐसी निर्दयी करते हो जो हमें विरहसागरसे बाहर नहीं निकालते और तुम्हें ढूंढ़ती समय हमारे पांवों में कांटे चुभते हैं तिसपरभी दया तुम्हें नहीं आवती हमलोगोंको अपने दुःख पावनेका तो इतना शोच नहीं है पर तुम्हारे कमलरूपी चरणों में रातको भागती समय जो कांटे चुभते हैं वह हमारे कलेजे में सालते हैं किसवास्ते कि तुम्हारे चरणोंका वास हमारे हृदय में रहता है इसलिये तुम जल्दी यहां चले आवो तो तुम्हारे कोमल कोमल चरणों को नरम नरम छातियों पर मलकर अपना अपना कलेजा ठण्ढा करें या तुम कहीं बैठकर रात बितादेव जिसमें तुमको दुःख न होवे तुम्हें कष्ट पहुँचनेसे हमलोगोंका प्राण निकल जावैगा अपने जानकारी में हमलोगोंने कुछ अपराध तुम्हारा नहीं किया फिर किसवास्ते खेद मानकर इतनी कठोरताई करतेहो कदाचित् इसवास्ते हमारे ऊपर क्रोध किये हो कि विना आज्ञा अपने पतियों के तुमलोग रातको मेरे पास क्यों चली आईं सो इस बातमें भी हमलोगों का दोष नहीं है किसवास्ते कि तुम्हारी वंशी सुनकर देवता व ऋषीश्वर आदिकका चित्त ठिकाने नहीं रहता व उसकी ध्वनि सुनने से देवकन्या मोहित होकर अपनेको नहीं सँभालने सकीं हमलोगोंकी क्या सामर्थ्य है जो मुरली सुनकर अचेत न होजावें कदाचित् आप ऐसा कहें कि तुम्हारी कामरूपी अग्नि अपने अपने पतिसे भेंट करने में बुझैगी सो ऐसा न समझिये हमारी अग्नि उनसे बुझने योग्य होती तो हम अपने अपने पतिको छोड़

कर तुम्हारे पास क्यों आतीं सो हे दीनानाथ कदाचित् हमलोगोंकी प्रीति मनसा वाचा कर्मणासे तुम्हारे चरणों में हो तो अपना दर्शन देकर हमारा दुःख हरो ॥

दो० अंग अंग सब दृगभये मोरपंखकी भांति। पाखन प्रभु जो आमिले सुन्दर मुखमुसुकाति ॥

हे राजन् जब यह सब बिनती व विलाप करनेपर भी केशवमूर्तिका दर्शन नहीं मिला तब सब व्रजबालोंने व्याकुल होकर मिलनेका भरोसा छोंड़ दिया व मूर्च्छित होकर पृथ्वीपर गिरपड़ीं व अतिविलाप से रोदन करके कहनेलगीं हे माधव हे मुकुन्द हे मोहनप्यारे हे नन्दलाल हे केशव-मूर्ति अब हमलोग तुम्हारे विरह में अपना प्राण देतीहैं जैसा उचित जानो वैसा करो ॥

बत्तीसवां अध्याय।

गोपियों के मध्य में श्यामसुन्दरका प्रकट होना ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जब इसीतरह सब व्रजबाला विलाप करते करते मरण तुल्य होगईं तब उनकी सच्ची प्रीतिने श्यामसुन्दरके अन्तःकरणमें प्रवेश किया जब केशवमूर्तिने देखा कि अब ये मेरे विरहमें मरने चाहती हैं तब अचानक उसी जगह श्यामसुन्दरने पीताम्बर व वैजयन्ती माला पहिनेहुये इसतरह प्रकट होकर दर्शन दिया जिसतरह नटलोग अपने करतब से अन्तर्धान होकर फिर प्रकट होजाते हैं ॥

क० राखैंगी न प्रान यह जानिकै कुँवरकान्ह प्रकटे सुजान बीचतान बान मारे हैं।
लखतही गोपिनके वृंदमें अनंद बाढ़ी मंद मुसुकात व्रजचंद यों निहारे हैं ॥
भनै बलदेव कहे बानी सुधासानी सुनो सकल सयानी तुम सबै दुःखभारे हैं।
गले माल डारे मुख पीतपटवारे पिय कहत पुकारे हम ऋणियां तुम्हारे हैं ॥

हे राजन् अपने चित्तचोर को देखते ही सब व्रजबाला सचेत होकर इसतरह उठखड़ी हुईं जिसतरह मुर्देके तनमें प्राण आजावें उससमय जैसी प्रसन्नता व्रजबालोंको मोहनप्यारेका दर्शन पानेसे हुई उसका हाल वर्णन नहीं होसक्ता उस आनन्दका सुख वही मनुष्य कुछ जानताहै जिसका बिछुड़ा हुआ मित्र बहुत दिनोंपर आनमिले वैसे गोपियां कामरूपी सांप

के डसजाने से कुम्हिला गई थीं जिस तरह कि अमृत पड़ने से सूखे वृक्ष हरे होजाते हैं उसीतरह मोहनीमूर्ति की अमृतरूपी दृष्टि पड़ने से उनके तनुमें प्राण आगया जैसे रातिको कमलका फूल मलीन रहकर प्रातसमय सूर्यके प्रकाशसे फूलजाताहै वैसे गोपियां जो मुरझाई हुई थीं वृन्दावन-विहारीका सूर्यरूपी कुंडल देखतेही खुशीसे फूलगईं जिसतरह डूबताहुआ मनुष्य थाह पाकर खुशी होताहै उसीतरह ब्रजबालों ने जो बीच विरह-सागर केशवमूर्ति के गोता खारहीथीं उनको देखतेही किनारे लगगईं व मोहनीमूर्तिको चारों ओरसे घेरलिया ॥

दो० कामतापसे वाम यक लगी श्याम उरजाय । ज्यों चन्दन के वृक्षमें रहत सर्प लपटाय ॥

हे राजन् इसीतरह किसी ब्रजबालाने केशवमूर्तिके अंगसे लपटकर अपनी छाती ठंढी किया व किसीने उनका मुख चूमकर अपने मनोरथके फलोंसे झाल भरलिया उससमय श्यामा बोली हे प्राणनाथ हमलोग तुम्हारे प्रेममें लोकलाज तजकर यहां आईं सो तुम हमें अकेली छोड़कर अन्तर्धान होगये यह कौन न्यायकी बातहै वृन्दावनविहारीने कहा तुम्हे रात को अपने घरसे वनमें चला आवना उचित नहीं था तुमलोग वहां बैठी हुई मेरा ध्यान व स्मरण करतीं तो मैं बहुत प्रसन्न होता ऐसा कहकर मुरलीमनोहरने राधाप्यारीको गलेसे लगालिया व मीठी मीठी बातें सुनाकर सब ब्रजबालोंको प्रसन्न किया तब एक गोपीने फूल कमलका मोहन-प्यारेके हाथसे छीन लिया दूसरी ब्रजबाला उनका हाथ पकड़कर बड़े प्रेम से बोली हे चितचोर इतनी देरतक तुम कहां रहे दूसरी गोपीने अपना मुँह चन्द्रमुखसे मिलाकर उनका जूठा पान प्रेमकी राह खालिया दूसरी ब्रजबाला चित्रकारीके समान खड़ी होकर उनका रूप रस आंखोंकी राह पीने लगी व दूसरी गोपीने श्यामसुन्दरके मुखका चुम्बा लेतीसमय उनका ओठ अपने ओठसे दबादिया दूसरी सखी बोली तुम बहुत भागकर चले जाते थे अब मेरे हृदयसे बाहर जावोगेतो मैं जानोंगी कि बड़े बलवान् हो दूसरी ब्रजबाला अपना हाथ मोहनप्यारेके कन्धे पर रखकर उनकी छवि देखने लगी जब यह दशा ब्रजबालोंकी देखकर श्यामसुन्दर उन्हें यमुना किनारे ले

गये तब एक गोपीने अपनी ओढ़नी बिछाकर बड़े प्रेमसे केशवमूर्तिको उसपर बैठाला और सब व्रजवालों ने उनको इसतरह चारोंओरसे घेरलिया जिसतरह चंद्रमाके आस पास तारे रहते हैं व कोई गोपी क्रोधसे बोली तुम कपटकी राह पराया तन व मन हरकर किसीका गुण नहीं मानते आज हमारी इच्छा पूर्ण करो नहीं तो अपना प्राण तुमपर देवेंगी जब ऐसा कह कर सब व्रजवालों ने उस चांदनीकी शोभा देखने व शीतल मन्द सुगन्ध हवा बहने से कामातुर होकर श्यामसुन्दरसे भोगकी इच्छा किया तब वैकुण्ठनाथ अन्तर्यामी भक्तहितकारी उनका मनोरथ सिद्ध करनेवास्ते जितनी गोपियां थीं उतने रूप होगये उससमय व्रजवालों ने अपनी अपनी ओढ़नी उतारकर बालूपर बिछादिया व उस कोमल बिछौनेपर मोहन-प्यारे को बैठाकर कामरूपी बातें उनसे करनेलगीं तब श्यामसुन्दर ने पहिले बाललीलाका सुख उन्हें दिखला कर फिर किशोर अवस्था अपनी बनालिया व सब गोपियों से अलग अलग गन्धर्व विवाह करके उनकी मनोकामना पूर्ण किया उससमय बड़े आनन्दमें एक व्रजवाला जो तिरछी चितवनसे देखती थी बोली हे प्राणनाथ तुम बड़े कपटी व निर्दयी हो और सब व्रजवाला सीधी व भोली तुम्हारे छलमें आनकर धोखा खाती हैं व मेरा मन तुमसे बोलनेको नहीं चाहता पर क्या करूं तुम्हारी मोहनी मूर्ति देखकर विना बोले रहा नहीं जाता देखो जब तुम अन्तर्धान होगये थे तब हमलोगों ने तुम्हारे विरहमें कितना दुःख उठाया फिर इसतरह प्रकट हुये जानो कहीं नहीं गये थे सो तुम्हें मनमें कपट रखना व गुणको छोड़कर अवगुणकी ओर देखना उचित नहीं है यह वचन सुनकर दूसरी गोपी बोली अय प्यारी तुम चुप रहो अपने कहने से कुछ शोभा नहीं होती देखो मैं श्रीकृष्णके मुखसे उनकी कठोरताई का हाल कहलादेती हों ऐसा कहकर उस गोपी महाचञ्चलने मुसुकराकर पूछा हे मोहनप्यारे संसार में चार तरहके मनुष्य होते हैं एक वह जैसे दो मनुष्य आपसमें प्रीति रख कर एक दूसरेके साथ नेकीके बदले भलाई करें दूसरे वह एक ओरसेप्रीति होकर दूसरा प्रेम न रक्खे तीसरे वह कि बुराई करनेवाले के साथ भी

भलाई करता है चौथा वह कि नेकी करनेपर भी जान बूझकर उसके साथ बुराई करै बतलाओ इन चारों में कौन भला होकर किसको बुरा कहना चाहिये ऐसा सुनकर श्यामसुन्दरने कहा तुमने बहुत अच्छी बात ज्ञान बढ़ावनेवाली पूंछी है मैं आप चाहता था कि संसारी मनुष्योंका हाल तुम से कहूं अब अपने प्रश्नका उत्तर मन लगाकर सुनो जो मनुष्य आपसमें नेकीके बदले भलाई करते हैं उनको संसारमें अच्छा समझना चाहिये जैसे संसारीलोग विवाह आदिकमें एक दूसरे के घर बैना व भाजी देते हैं पर यह प्रीति सदा स्थिर नहीं रहती दूसरे वह कि एककी ओरसे प्रीति होकर दूसरा मनुष्य उनके साथ प्रेम न रक्खै जैसे माता पिता पुत्रको बहुत प्यार करते हैं परन्तु पुत्र उतना प्रेम नहीं रखता तीसरे जो मनुष्य विना इच्छा सबके साथ भलाई करता है उसे वर्षा के समान समझना चाहिये जिस तरह पानी वर्षकर सब छोटे व बड़ों को सुख देता है और उसके बदले किसी से कुछ नहीं चाहता यही हाल परमहंस व महात्मालोगोंका भी समझो कि वह लोग अपनी सामर्थ्यभर दूसरेका भला करके उससे कुछ चाहना नहीं रखते चौथे जो मनुष्य भलाईके बदले जान बूझकर उसके साथ बुराई करते हैं उन्हें शत्रु समझना चाहिये और वे मनुष्य कृतघ्न व अधर्मी कहलाते हैं यह वचन सुनते ही सब व्रजबाला आपसमें एक दूसरेका मुख देखकर हँसने लगीं व एक गोपीने दूसरी सखीसे सैनमें बतलाया कि श्रीकृष्णजी चौथे मनुष्यकी तरह हैं तब मोहनप्यारे बोले तुमलोग मुझे हँसकर क्या कहती हो मैं निर्गुणरूप आत्माराम इन चारोंसे रहित रहकर किसी के साथ कुछ प्रीति नहीं रखता मुझसे जो कोई जिस बातकी चाहना करता है उसकी इच्छा पूर्ण करदेताहूं व विश्वम्भर नामसे सब जीवोंको पालन करके एक क्षण किसी जीवको नहीं भुलावता व किसीसे कुछ इच्छा न रखकर केवल सच्चा प्रेम उनका चाहताहूं व अय गोपियो तुमलोग मुझसे प्रीति रखती हो इसलिये यह बात कहताहूं जिसतरह संसारी मनुष्य गाड़े हुये धनको आठों पहर याद रखकर उसका हाल किसीसे नहीं कहता इसीतरह जो मनुष्य मुझसे गुप्तप्रीति रख कर मेरे चरणों में अपना मन लगाये रहता है उसे मैं बहुत प्यार करताहूं॥

दो॰ माखनप्रभु गोपालसों यहि विधि राखो हेत। ज्यों निर्धन धन पायके भेद न काहू देत॥

कदाचित् तुम ऐसा कहो कि मनसा वाचा कर्मणासे हमलोग तुम्हारे चरणोंमें ध्यान लगाये रहती हैं फिर तुम क्यों हमैं छोड़कर अन्तर्धान हो गये थे तो इसका यह कारण है हमने तुम्हारी प्रीतिकी परीक्षा लिया था तुमलोग इस बात का कुछ बुरा न मानकर मेरा कहना सच्चा जानो मैं प्रेम बढ़ावने वास्ते तुमलोगोंमें से अन्तर्धान होगयाथा। जिसतरह जाड़े में धूप अच्छी मालूम होती है उसीतरह अपने मित्र से अलग रहने में प्रेम अधिक होताहै अय गोपियो तुम्हारे प्रेम व ध्यान करने से मैं बहुत प्रसन्न रहता हूं पर तुमलोग अपने कुल व परिवारकी लज्जा छोड़कर रातको जो यहां चली आईं यह अच्छी बात नहीं किया ऐसा करने में न हम प्रसन्न हुये न दूसरेको यह बात अच्छी मालूम होगी जबतक मनुष्य जन्म लेकर जीता रहै तबतक कोई खोटा काम उपहासका न करे कदाचित् मन उस का अशुभ कर्म करनेवास्ते चाहै तौ भी ज्ञानकी राह अपने मनको रोकै जिसमें कोई उसे बुरा न कहै और यह भी मैं जानता व समझता हूं काम-रूपी प्रेम बढ़नेसे वेड़ी लज्जाकी टूट जातीहै व उसको किसीका समझाना कुछ गुण नहीं करता तुमलोगों की प्रीति व विलाप करने का हाल मैं आंखों से खड़ा हुआ देखता था तुमलोगों ने मायारूपी वेड़ी संसारकी जो कभी पुरानी नहीं होती तोड़कर मेरे साथ ऐसी सच्ची प्रीति किया है जैसे परम दरिद्री बड़ा धन पावे इसलिये मैं तुमसे उऋण नहीं होसक्ता॥

चौ॰ जैसे आई मेरे काज। छांड़ी लोक वेद की लाज॥
ज्यों वैरागी छांड़ै गेह। मन दै हरिसों करै सनेह॥
मैं क्या तुम्हरी करौं बड़ाई। हमसे पलटो दियो न जाई॥

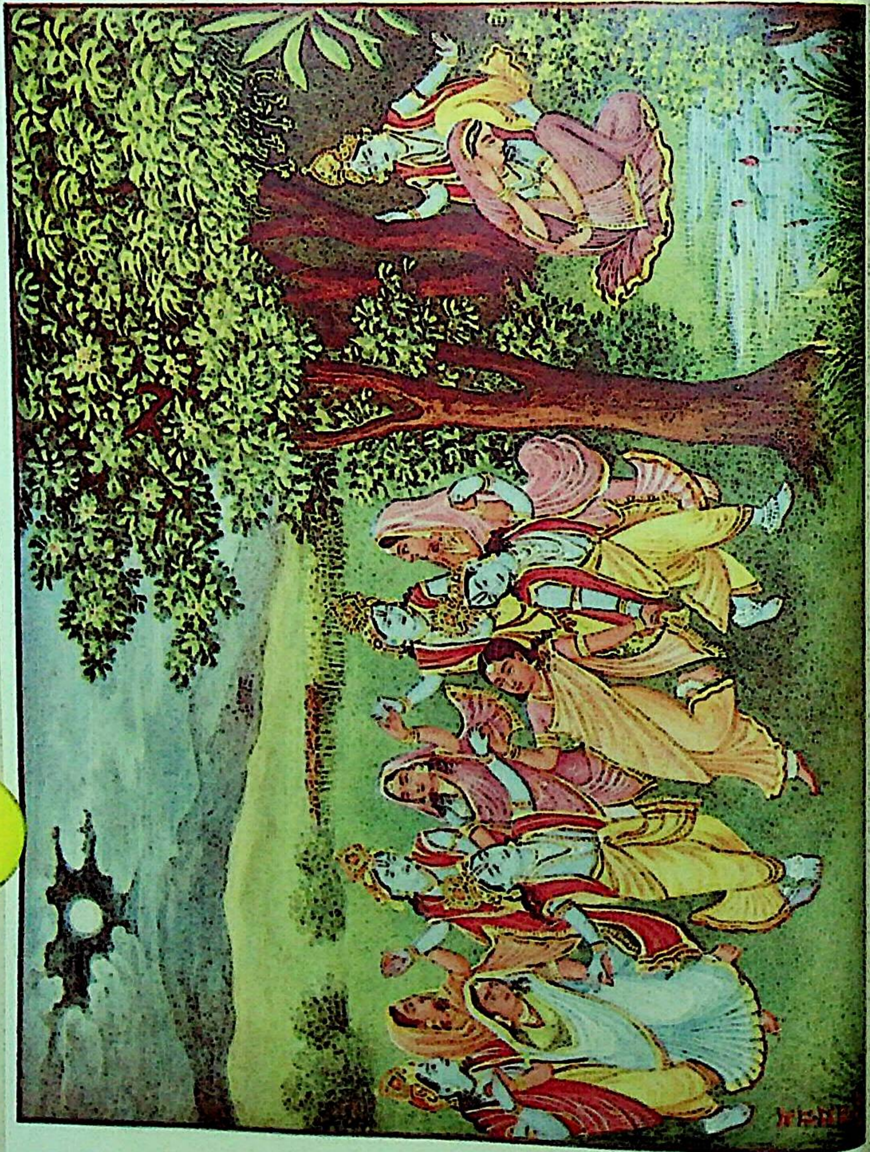
हे प्राणप्यारियो ब्रह्माके आयुर्दा प्रमाण जीकर एक एक गोपियों की सेवा जन्म भर करों तो भी तुमसे उद्धार नहीं होसक्ता इस वास्ते तुम्हारा ऋणियां हूं॥

दो॰ अब तुम रहो उदास मति मनमें करो हुलास। महारास अब साजिकै पूरण करिहौं आस॥

तेंतीसवां अध्याय।

श्रीकृष्णजी का गोपियों के साथ महारास करना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित जब श्यामसुन्दरने यह वचन प्रेम भरा हुआ कहकर गोपियों को धैर्य दिया तब सब व्रजबाला बड़े आनन्द से हाथ श्यामसुन्दरका पकड़कर नाचने लगीं इतनी कथा सुनकर परीक्षित ने पूछा महाराज रासलीला में जिस गोपीका हाथ मुरलीमनोहर पकड़े थे उसका अंग मोहनप्यारेसे स्पर्श होताथा और सब व्रजबालोंकी कामना किसतरह पूरी हुई थी शुकदेवजी बोले हे राजन् परब्रह्म परमेश्वरकी महिमा कोई नहीं जान सक्ता मुरलीमनोहरने दो दो गोपियों के बीच में एक एक रूप अपना प्रकट करके दाहिने व बायें दोनों गोपियों का हाथ पकड़े हुये मण्डल बांधकर रासलीला किया था पर उनकी माया से सब गोपियां अनेक रूप धारण करनेका हाल न जानकर यह समझती थीं कि केशवमूर्ति हमारे साथ नाचते हैं और इस आनन्दरूपी नाचमें हाथ व पैरकी ठोकर देकर अंगसे अंग रगड़ना व आंख व भौंह मटकाकर कटाक्ष करना व गर्दन टेढ़ी करके कुण्डल हिलावना जो जो बातें रास व विहार में चाहिये वह सब मुरलीमनोहर व्रजबालोंके साथ व गोपियां वृन्दावनविहारी से करती थीं उससमय शोभा श्यामरंग मोहनप्यारेकी गोरी गोरी गोपियोंमें कैसी मालूम देती थी जैसे सुनहले दानोंकी मालामें नीलमणि रहती है व नाचती समय उनके कानोंका कुण्डल कैसी शोभा देता था जैसे श्याम घटा में बिजुली चमकती है उसी समय ब्रह्मा व महादेव आदिक देवता व ऋषीश्वरोंने ध्यान परमेश्वरका छोड़ दिया व रासलीलाका सुख देखने वास्ते अपनी अपनी स्त्रियों समेत विमानों पर बैठकर वृन्दावन में आये व आकाशमार्ग से श्यामसुन्दर व व्रजबालों पर फूल बरसाकर व्रजवासियों के भाग्यकी बड़ाई करने लगे व गन्धर्वोंने अनेक तरहका बाजा बजाकर गाना आरम्भ किया व देवकन्या व अप्सरा रासलीलाकी शोभा देखतेही कामरूपी मदमें ऐसी मोहित व अचेत होगईं कि उनके कमरका घुँघुरू खुलकर गिरपड़ा व तन मनकी सुधि जाती रही ॥



दो॰ देवराज शोभित सरिस इन्द्राणी के संग। माखन प्रभुके दरशको हँसत नयन सब अंग॥

चन्द्रमा व तारागण वह आनन्द देखतेही चित्रकारी से खड़े होगये और उन्हें आगे चलने की सामर्थ्य नहीं रही व चन्द्रमाने प्रसन्न होकर अपनी किरणसे रासमंडल पर अमृत बरसाया सो चन्द्रमाके खड़े रहनेसे वह रात छः महीनेके बराबर होगई पर नारायणजीकी महिमासे रात बढ़ने का हाल किसी ने नहीं जाना इसलिये उस रात्रिका नाम संसारमें प्रेम-रात्रि प्रकट हुआ हे राजन् नाचनेके परिश्रमसे व्रजवालोंके मुखपर पसीना निकलकर बिथरे हुये बालोंमें कैसी शोभा देता था जैसे काले काले सांप ओसकी बूंद चाटने आये हों उससमय श्यामसुन्दर अपने पीताम्बर से पसीना उनका पोंछ देतेथे व कोई गोपी नाचते नाचते थककर केशवमूर्ति का हाथ पकड़े हुये पृथ्वीपर बैठ जातीथी पर नाचना व ताल व स्वर नहीं बिगड़ता था बाजी व्रजवाला अपना हाथ मोहनप्यारेके शिर व कंधे पर रखकर कहती थी नाचते नाचते मेरा पांव दुखने लगा तनिक सुस्ताकर फिर नाचूंगी कोई व्रजवाला मोहनप्यारेकी माला चूमकर कहती थी अय प्राणनाथ तुम्हारे गले में यह हार बहुत सुन्दर मालूम होता है व बाजी गोपी घूमते घूमते थककर श्यामसुन्दरके गले से लपटके कहती थी मैं तुम्हारे शरण आई हूं मुझे कभी अपने चरणों से अलग मत करना व कोई सखी मोहनप्यारेके हाथसे कमलका फूल छीनकर उन्हें कहती थी मेरे कलेजे पर हाथ रखकर देखो कैसा धड़कता है आठों पहर तुम मेरे हृदय में रहते हो इसलिये मैं डरती हूं कि कलेजा धड़कने से तुमको कुछ दुःख न पहुँचे॥

दो॰ नखशिखसे भूषण सजे व्रजभूषणके हेत। गान करत अति चाव सों निरतत अति छविदेत॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् इसीतरह श्यामसुन्दर व्रजवालों के साथ अनेक तरहका बाजा बजाकर छः राग व छतीस रागिनी अलापके रास व विलास करते थे व कभी वंशी में अनेक तरहकी उपज बजाकर मन व्रजवालों का अपनी ओर मोहिलेते थे उस आनन्द रूपी नाचमें गोपियां कामदेवके मदमें ऐसी मोहित होगई कि उनको

अपने तनु व मनकी कुछ सुधि नहीं रही कभी घूमती समय अंचल ब्र
बालों का उड़जाता था तो कुचोंकी सुन्दरताई देखकर देवता मोहिजाते
व कभी नाचती समय मुकुट श्यामसुन्दरका खुलकर गिरने लगता था त
गोपियां अपने हाथसे उसे बांध देती थीं व कभी मोतियोंका हारब्र
बालों के गलेसे टूटकर गिरजाता व वनमाला श्यामसुन्दरका खुलक
गिरपड़ता था उसके उठानेकी सुधि कोई नहीं रखता था कभी कोई सर्ख
मुरलीमनोहर के साथ गाकर ऐसा स्वर मिला देती थी कि वृन्दावनवि
हारी उस के गाने से मुरली बजाना भूलजाते थे ॥

दो० माखनप्रभु घनश्यामसँग सुन्दरि ब्रजकीवाम। दामिनि ज्यों शोभितमहा निरततगतिअभिर
निरततहांहुलाससों माखन प्रभु सुखरास। आसपास वनिता सबै सुभग सुत्रास निवास

हे राजन् जिसतरह बालक अपना मुख शीशे में देखकर भूल जाता
उसीतरह सब ब्रजबाला राग व रंगके मदमें मोहित होकर अपना गहन
व कपड़ा एक दूसरी पर न्यवछावर करती थीं उससमय राग व रागिनि
का ऐसा सामा बँधाथा जिसे सुनकर यमुना जल बहने से थँभि रहा
हवा चलने से ठहरगई व सब पशु व पक्षी उस वनके वह लीला देखक
मोहित हुये कि चरना व उड़ना भूलकर चित्रकारी से खड़े होगये केशव
मूर्ति व राधाप्यारी जो बीचमें नाचतेथे उनकी सुन्दरताई पर सब ब्रजबाल
बलायें लेकर आपसमें प्रसन्न होती थीं उससमय एक ब्रजबालाने आ
नन्द बनकर दूसरी सखीको वृषभानु बनाया व श्रीकृष्णका विवाह राधिक
से करके समाधियोंके समान आपसमें शिष्टाचार किया व श्यामाके हाथ
कंकण बांधकर श्यामसुन्दरसे कहा खोलो जब वह कंकण नहीं खुला त
सब ब्रजबाला हँसनेलगीं व राधा श्रीकृष्णकी विधिपूर्वक पूजाकरके बोलीं

दो० तहँ नँदनंदन लाड़िली श्रीवृषभानुकुमारि। दुलह दुलहिनि राजहीं शोभा अमित अपारि
सो० दुलह नन्दकुमार दुलहिनि श्रीराधाकुँवरि। सन्तन प्राणअधार अचलरहै जोड़ी सदा

हे राजन् यह चरित्र देखकर राधा व कृष्ण बहुत प्रसन्न होते थे व ना
चतीसमय गोपियों के अंगसे जो फूल टूटकर गिरपड़ते थे उनपर ऋषी
श्वर व मुनीश्वर भँवररूप धरकर रासलीलाका सुख देखने वास्ते गूंजते

और शब्द घुँघुरू पायजेब व करधनी ब्रजबालोंकी सुनकर वह भौंरे उड़ना भूलगये इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् किसे सामर्थ्य है जो गोपियों की बड़ाई वर्णन करने सकै अन्तसमय सब ब्रजबालों ने आप मुक्ति पाकर तीन तीन पीढ़ी अपने माता व पिताको कृतार्थ कर दिया व परमात्मा पुरुषने अपने भक्तों का मनोरथ पूर्ण करनेवास्ते ब्रजबालारूप जीवात्मा से सच्ची रासलीला करके जैसा सुख उन्हें दिया वह आनन्द का हाल कहा नहीं जाता जिसतरह बालक अज्ञान शीशे में मुख देखकर अपनी परछाहीं से खेलताहै वही गति केशवमूर्तिने किया जब अंगके स्पर्श से गोपियोंके शरीरका केशर व चंदन मोहनप्यारेके तनु व वैजयन्ती माला में लगजाता था तब वृन्दावनविहारी गोपियों से कहते थे मैंने केशर व चंदन नहीं लगाया यह सब तुम्हारे शरीरका मेरे अंगमें लगकर सुगंध उड़ती है जब गोपियां नाचती व कूदती हुई गिर पड़ती थीं तब वृन्दावन-विहारी अनेक रूपसे उनका हाथ पकड़कर अपने पास खींच लेते थे देवता लोग वह सुख देखकर डाहकी राह कहते थे हे श्यामसुन्दर ह-मारा जन्मभी वृन्दावन में देते तो तुम्हारे साथ रासलीला करके जन्म अपना स्वार्थ करते ॥

दो० धनिवृन्दावन धन्यसुख धन्यश्याम धनिरास । धनिधनि मोहनगोपिका नितनवकरतहुलास ॥

हे परीक्षित रासलीला करते करते मोहनप्यारेके मनमें कुछ तरंग आगई तो सब ब्रजबालों को साथ लिये हुये जागने की गर्मी मिटाने वास्ते य-मुनाजल में पैठ गये जिसतरह मतवाला हाथी हथिनियों को साथ लेकर जलक्रीड़ा करताहै उसीतरह अलग अलग रूप धरकर राधा आदिक गोपियों से जलविहार किया जब स्नान करने से जागने व नाचने की गर्मी मिटाकर बाहर निकले तब योगमायाने सब ब्रजबालों व अनेक रूप श्यामसुन्दरके पहिरनेवास्ते उत्तम भूषण व वस्त्र वहां लादिया व इतर आदिक सुगन्ध अंगमें लगाकर एक एक गजरा सबके गले में ऐसा पहि-नाया जिसका फूल कभी न कुँभिलावे जब वृन्दावनविहारी श्यामा आदिक गोपियोंको संग लेकर वनविहार करनेलगे तब देवतोंने उनपर

फूल बरसाये व उतारी हुई गीली धोतियां उनकी आपस में प्रसादों के समान टुकड़े टुकड़े बांटलिया जब वनविहार करचुके तब श्यामसुन्दरने गोपियों से कहा स्नान करने से तुम्हारी मांदगी छूटगई अब चार घड़ी रात्रि बाकी है सो अपने अपने घर जाव यह वचन सुनते ही सब व्रजबाला उदास होकर बोलीं हे व्रजनाथ तुम्हारा चरण छोंड़कर अपने घर कैसे जावैं वैकुण्ठनाथने कहा जिसतरह योगी व ऋषीश्वरलोग मेरा ध्यान करते हैं उसी तरह तुमलोग भी अन्तःकरण से मेरी याद रक्खो तो आठों पहर तुम्हारे पास में बनारहूंगा यह बात सुनतेही सब व्रजबाला मनको धैर्य देकर श्यामसुन्दर से विदा हुईं और अपने अपने स्थानपर आईं व घरवालों को सोया हुआ देखने व अपनी अपनी मनोकामना पावने से बहुत प्रसन्न हुईं व परमेश्वरकी माया से यह बात उनके घरवालों ने नहीं जाना कि हमारी स्त्रियां रात्रिसमय कहीं बाहर गईं थीं इसलिये मोहन प्यारे से किसी ग्वालने कुछ बुरा नहीं माना इस तरह कभी कभी नन्द लालजी गोपियों के साथ रासलीला व वनविहार करते थे इतनी कथा सुनकर परीक्षितने पूंछा हे मुनिनाथ एक संदेह मुझे है सो छुड़ा दीजिये श्रीकृष्णजी ने पृथ्वी का भार उतारने व धर्म के बढ़ाने वास्ते अवतार लेकर विपरीत वेद व शास्त्र के परस्त्रियों से क्यों विहार किया यह वचन सुनकर शुकदेवजी बोले हे राजन् में तुमसे पहिले गोपियों के जन्म लेने का हाल कहचुकाहूं कि वे सब वेदकी ऋचा थीं व लक्ष्मीजी ने राधाका अवतार लेकर श्रीकृष्णजी के साथ संसारमें लीला की थी इसलिये उनको श्यामसुन्दरसे अलग समझना न चाहिये और जो अनेकरूप वृन्दावनविहारीका सब गोपियोंके पास था उस बातकी महिमा कोई नहीं जानने सक्ता और जिस काम में बुद्धिका प्रवेश न हो उस बात में दोष लगाना न चाहिये विष खाना महादेवका काम होकर दूसरे को ऐसी सामर्थ्य नहीं थी जो उसकी गर्मी सहने सक्ता परमेश्वर निर्गुणरूप संसारी बातों से कुछ प्रयोजन नहीं रखते इसलिये उन्हें दोष लगाना अधर्म होता है वेद व शास्त्रका वचन सच्चा मानकर उसीके प्रमाण करना

चाहिये व वैकुण्ठनाथकी लीला में संदेह करना उचित नहींहै व जिन परमेश्वरका नाम लेने व ध्यान करने से बड़े बड़े योगी व मुनि कृतार्थ हो जाते हैं उन आदिपुरुष परमेश्वर को मनुष्य समझकर दोष लगाना बड़ा पापहै अग्नि में जिसतरह अशुद्ध वस्तु भी जलनेसे पवित्र होजाती है उसीतरह समर्थ लोग क्या नहीं करते और यह सब लीला नारायणजी ने संसारीजीवों को भवसागर पार उतरनेवास्ते जगत् में की थी जिसके पढ़ने व सुनने से कलियुगवासी लोग मुक्ति पावैं और वह परब्रह्म परमेश्वर अपने सुखवास्ते कुछ नहीं करते जो कोई उनकाभजन व स्मरण करके जिस वस्तु की चाहना रखता है उसका मनोरथ पूर्ण करते हैं यह स्वभाव उन का सदा से चला आताहै व संसारी व्यवहारसे रहित होकर सब वस्तुमें वर्तमान रहते हैं पर ज्ञान प्राप्त हुये विना किसी को नहीं दिखलाई देते व गोपीनाथका यश गावनेवाले मनुष्य परमपदको पहुँचते हैं व श्यामसुन्दर की लीला सुननेका फल सब तीर्थ स्नान करने के बराबर होताहै व ब्रज-बालोंके जो पति थे उनके शरीरमें भी श्यामसुन्दरका प्रकाश था इसलिये सब गोपियों के पति श्रीकृष्णजीको समझना चाहिये और यह पंचाध्यायी की कथा वांचने व सुननेवाले जीव सब पापोंसे छूटकर मुक्तिपदार्थको पाते हैं परमेश्वरकी कथा में किसी बात का सन्देह न रखकर वेद व पुराण के वचनपर विश्वास करना चाहिये ॥

दो० मोमनमें अचरज बड़ो तुमसों ज्ञानी होय । माखनप्रभुकी कथामें भरम मानिये सोय ॥

हे परीक्षित आज से ऐसा सन्देह चित्त में कभी मत लेआना अज्ञान मनुष्य को क्या सामर्थ्य है जो परमेश्वर के कामों में अपनी बुद्धि मिलाने सकै ॥

दो० माखनप्रभु गोपालकी लीला परम पुनीत । भाग्य उदय जगमें वही जो सुनिये करि प्रीत ॥

चौंतीसवां अध्याय ।

नन्दजीकी आधी टांगको अजगर सांपका निगल जाना ॥

शुकदेवजी बोले हे राजन् जिसतरह श्यामसुन्दर ने सुदर्शन विद्याधर को सांपकी योनिसे छुड़ाकर शंखचूड़ दैत्यको मारा था उसकी कथा कहते

हैं सुनो नंदजी ने एकदिन सब ग्वाल व गोपियों से कहा हमने श्रीकृष्ण जी के जन्मते समय यह मानता मानी थी कि जब मोहनप्यारे बारह व के होंगे तब मैं अपने सब जाति भाई व बाजे गाजे समेत जाकर पूज अम्बिका देवी की करूंगा सो महारानी की कृपा से वह दिन मुझे दि लाई दिया इसलिये सबको चलकर पूजा उनकी करना चाहिये यह वच सुनतेही वे लोग प्रसन्न होगये तब एकदिन नन्द व यशोदा कृष्ण बलराम व सब ग्वालबाल व गोपी व छोटे बड़ों को साथ लेकर बड़े हर्ष गाते बजाते चले व दूध व दही व मेवा व मिठाई आदिक सामग्री पूज की गाड़ी व बैलोंपर लदवाये हुये सरस्वती के किनारे पहुँचकर स्ना किया व पुरोहित को बुलाकर विधिपूर्वक देवीजीको पूजा और हाथ जो कर बोले हे अम्बिका माता तुम्हारी कृपासे मेरी मनोकामना पूरी हुई फि नन्दजीने बहुतसी गो व सोना विधिपूर्वक दान देकर हजार ब्राह्मणों को अच्छीतरह भोजन खिलाया उसदिन महादेवभी देवतोंसमेत दर्शन करने आये थे जब पूजा करने व परिक्रमा लेने व ब्राह्मण खिलाने में सारा दि बीतकर संध्या हुई तब नन्दजी आदिक सब लोग तीर्थ व्रत रखकर रात को वहीं सो रहे ॥

दो॰ ऐसी विधि सोये सभी। सुधि न रही तनु माहिं। बारम्बार पुकारिये तबहूं जागत नाहिं॥

हे राजन् उसी निद्राके समय जब आधीरातको एक अजगर आनक नन्दराय की आधी टांग निगल गया व उन्होंने जागकर अपनेको का के मुखमें फँसे देखा तब श्रीकृष्णको अपनी रक्षावास्ते पुकारा नन्दरायका बोल सुनतेही सब ग्वाल बाल व गोपियोंने उठकर उजियाला करके देखा तो मालूम हुआ कि एक अजगर नंदजीकी आधीटांग निगले हुये पड़ा है यह दशा देखतेही वह लोग जलती हुई लकड़ियोंसे उस सांप को मारने लगे पर उसने नंदजी को नहीं छोड़ा तब सबोंने हार मानकर श्रीकृष्णजी को जगाया जब श्यामसुन्दरने बालकों की तरह आंख मलते हुये उठकर जैसे अँगूठा अपने बायें पांवका छुवाया वैसे उस अजगर ने नंदजी का पैर छोड़ दिया व जमुहाई लेकर मनुष्यरूप बहुत सुंदर भूषण व वस्त्र पहिने

राजोंके समान होगया व नंदलालजी को दण्डवत् करके उनके सामने खड़ा होकर स्तुति करने लगा यह हाल देखकर नंदआदिक गोप व गोपियों ने अचम्भा माना तब श्यामसुन्दरने उस मनुष्य से पूछा ॥

दो० तुवस्वरूप सुन्दर महा उपमा कही न जाय। सर्परूप काहे धरेउ हमसे कहो बुझाय ॥

यह वचन सुनतेही वह हाथ जोड़कर बोला हे वैकुण्ठनाथ आप अन्तर्यामीसे कोई बात छिपी नहीं है परन्तु तुम्हारी आज्ञानुसार अपना हाल कहता हूं सुनिये मैं सुदर्शन नाम विद्याधर हंसपुरमें रहकर धन व सुन्दरताई व बुद्धिके अभिमानसे अपने सामने किसीको कुछ वस्तु नहीं समझता था व देवतालोगभी मेरा सन्मान बहुत करते थे सो एकदिन विमान पर बैठकर सैर करनेवास्ते निकला जब राहमें अंगिरा ऋषीश्वरका कुरूप जो कुबड़े थे देखकर मुझे हँसी आई और मैं ठट्ठेकी राह कई बेर अपना विमान उड़ाता हुआ उनपर लेगया तब ऋषीश्वरने विमानकी परछाहीं ऊपर पड़नेसे क्रोधित होकर मुझे ऐसा शाप दिया कि तू अजगर सांप होजा जब यह शाप सुनकर मैंने अपना अपराध क्षमा करानेवास्ते अति बिनती उनकी की तब उन्होंने कहा मेरा वचन फिरने तो नहीं सक्ता पर कुछदिनोंमें श्रीकृष्णजीका चरण छूनेसे तुझे फिर विद्याधरका तनु मिलेगा सो मैं तभी से अजगर होकर तुम्हारे चरणोंकी इच्छा रखता था इसीवास्ते आज मैंने नन्दजीका पांव पकड़ा जिसमें तुम्हारा दर्शन मुझे प्राप्त हो सो आपने दयाकी राह मुझे अपना दर्शन देकर कृतार्थ किया जिन चरणकमलका दर्शन ब्रह्मा व महादेव व इन्द्रादिक देवतोंको ध्यान में जल्दी नहीं मिलता उन चरणों को अंगिरा ऋषीश्वर के प्रताप से छूकर मैं पवित्र हुआ ॥

दो० ताहि शाप कैसे कहौं वह तो भई अशीश। जेहि प्रताप जगदीशके पग लागे मम शीश ॥

इसलिये उन ऋषीश्वरके उपकार से मैं जन्मभर उऋण नहीं होसक्ता किसवास्ते कि उन्होंने बुराईके बदले मेरे साथ भलाई की जो अच्छे लोग हैं वह किसी की बुराई नहीं चाहते यह स्तुति व दण्डवत् करनेके उपरान्त वह विद्याधर विमानपर बैठके अपने लोकको चला गया तब ब्रजवासी

लोगों ने अचम्भा मानकर यह निश्चय किया कि यह परब्रह्म परमेश्व का अवतार हैं प्रातसमय नन्द आदिक गोप व गोपियां अम्बिका देवी का दर्शन करके अपने घर आये हे राजन् एक दिन श्याम व बलराम चांदनी रात में व्रजबालोंके साथ यमुना किनारे रास व विलास करके बां सुरी बजाते थे सो केशवमूर्तिने मुरली की ध्वनिसे व्रजबालोंका मन ऐसा मोहि लिया कि गोपियां बांसुरी के शब्दपर मोहित होकर श्यामसुन्दर के पीछे पीछे इसतरह गाती फिरती थीं जिस तरह परछाहीं साथ नहीं छोड़ती उससमय व्रजबालोंका चित्त ऐसा अचेत होगया कि अपने तनु व वस्त्र कुछ सुधि उन्हें नहीं रही थी सो अचानक उसी समय शंखचूड़ नाम यक्ष कुबेर देवताका सेवक अतिबलवान् व मित्र तृणावर्त्त आदिक दैत्योंका जिसके शिरमें बहुत बढ़िया मणि थी घूमता हुआ वहां पर आया तो उसने क्या देखा कि श्याम व बलराम बांसुरी बजा रहे हैं और वंशी की ध्वनिपर सब व्रजबाला मोहित होरही हैं यह आनन्द उससे देखा नहीं गया इसलिये कुछ गोपियोंको अपने कमन्दमें फँसाकर उत्तरओर लेचला जबतक बांसुरी की ध्वनि गोपियों के कानमें पहुँचती रही तबतक वे सब ऐसी अचेत थीं कि उन्हें अपने फँसनेकी कुछ सुधि मालूम नहीं हुई जब दूरतक खींच लेजाने से उन्हें वंशीका शब्द सुनाई न दिया तब वे सब चैतन्य होकर अपने को कमन्द में फँसी देखतेही चिल्लाने लगीं॥

चौ० पूरणब्रह्म प्रीतिरस पागीं। कृष्ण कृष्ण करि टेरन लागीं॥
हे भगवन्त सन्त हितकारी। वेगि आय सुधि लेव हमारी॥

यह दीन वचन सुनतेही श्याम व बलरामने दो वृक्ष उखाड़ लिये और जिस तरह सिंह हाथीको मारनेवास्ते झपटता है उसी तरह दोनों भाई दौड़ कर गोपियों के पास जापहुँचे व पुकारकर कहा अब तुम लोग कुछ चिन्ता मत करो॥

दो० तुम्हरे करुणा वचन सुनि मैं आयाहूं धाय। शंखचूड़ शिर चूर करि तुमको लेव छुड़ाय॥

जब उनकी ललकार सुनतेही वह यक्ष व्रजबालों को छोड़कर भागा तब केशवमूर्तिने गोपियोंकी रक्षाके वास्ते बलरामजीको वहां छोड़ दिया

व आप हवा व बिजुलीकी तरह दौड़कर शंखचूड़के ऐसा मुक्का मारा कि वह मरगया तब मुरलीमनोहरने उसके शिरकी मणि निकालकर बलराम जी को दे दिया व व्रजवालों को साथ लेकर आनन्दपूर्वक अपने घर आये इसीतरह श्रीकृष्णजी नित्य नई नई लीला करके वृन्दावनवासियों को सुख देते थे ॥

पैंतीसवां अध्याय ।

गोपियोंके विरहकी कथा ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित एक दिन श्रीकृष्णने ग्वालोंके संग गौ चराती समय वृन्दावन में वंशी बजाकर ऐसा राग व रागिनी गाया जिस का शब्द सुनतेही ब्रह्मा व महादेव आदिक देवता अपनी स्त्रियों समेत मोहित होगये जैसा राग व रागिनी वांसुरीमें गाते थे वैसा गाना ब्रह्मा व महादेव व नारद आदिक किसी से नहीं बन पड़ता था व राधाप्यारी आदिक व्रजबाला अपने परिवारवालोंके डरसे केशवमूर्तिके पास वनमें न जाकर नित्य उनके विरह में व्याकुल रहती थीं व घर में एक क्षण चित्त उनका नहीं लगता था इसलिये अपनी अपनी गोल बांधकर कुछ व्रज-बाला राहमें व कोई झुण्ड यशोदाके पास व बाजी गोल गांवमें बैठ बीच याद व चर्चा मोहनप्यारे के दिन अपना काटती थीं उनमें कोई व्रजबाला सूर्य के सामने हाथ जोड़कर विनयपूर्वक कहती थी महाराज तुम जल्दी अस्त होजाव तो सन्ध्या समय मोहनप्यारे घरपर आवें तब मैं उनका रूप रस पीकर अपने कलेजेकी तपनि बुझाऊँ व बाजी गोपी केशवमूर्ति की सुंदरताई वर्णन करके उनके ध्यानमें अचेत होजातीथी व कोई व्रजबाला नंदलालजी का यश गाकर मन अपना प्रसन्न करती व बाजी गोपी केशवमूर्ति के विरह में घबड़ाकर रोने लगती थी तब ज्ञानवान् गोपियां उसे समझाकर कहती थीं सुनो प्यारी इस घबड़ाने व रोनेसे क्या मिलेगा उत्तम यह है कि हमलोग बीच स्मरण व चर्चा मनहरणप्यारे के दिन अपना काटें जब सब व्रजबाला यह बात मानकर बीचचर्चा बालचरित्र श्रीकृष्णजीके लीनहुईं तब एक गोपी बोली हे सखियो बांसुरीका बड़ाभाग्य

समझो जो श्यामसुन्दर के ओठों से लगी रहती है व मोहनप्यारे अपना हाथ लगाकर उसमें ऐसी उपज निकालते हैं कि जिस शब्दके सुनने से जीव जड़ व चैतन्यका चित्त ठिकाने नहीं रहता ॥

दो० जारसको हमतप कियो पटऋतु सबव्रजनाम । सो रस मुरली लेत अब सहजै वशकरि श्याम॥
सो० गावत मीठी तान मुरली सँग अधरन धरे। अब याके वश कान्ह अवरन वश वह करिरहीं॥

दूसरी सखीने कहा किसवास्ते बांसुरीकी ऐसी बड़ाई नहो जिस किसी का हाथ श्यामसुन्दर पकड़ें वह तीनों लोकका मालिक होसक्ता है मनुष्यों की क्या सामर्थ्य है जो वंशी की ध्वनि सुनकर अचेत न होजावें उसके शब्दपर ब्रह्मादिक देवता व ऋषीश्वर मोहित होकर यह इच्छा रखते हैं कि हमलोगोंको परमेश्वर मनुष्यका जन्म वृन्दावनमें देते तो आठोंपहर श्यामसुन्दरका दर्शन करने व मुरली सुनने से आनन्द होकर हरिचरणों की धूरि अपने शिर व आंखों पर लगाते उसी तरह देवतों की स्त्रियां अपने अपने पति के साथ रहने पर भी उस बांसुरीके बोल पर मोहित होजाती हैं ॥

दो० माखनप्रभुकी बांसुरी श्रवणन सदा सुहाय । जाकी ध्वनिसुनिकै सबै सुर मुनिरहत लुभाय॥

दूसरी सखी बोली कदाचित् मनुष्य व देवता जो ज्ञानवान् हैं बांसुरी की ध्वनि पर मोहित होगये तो कौन बड़ी बात है उस मुरली का शब्द सुनतेही पशु व पक्षी चरना व पागुर करना व उड़ना भूलकर चित्रकारी से खड़े रहजाते हैं व किसी से नहीं भड़कते ॥

दो० एक सखी यहिविधि कहै सुर नरकी मतिशुद्धि । पशुपक्षी सब होत हैं जिनकी शुद्धि न बुद्धि॥

दूसरी ने कहा हे प्यारियो मुरली के शब्द में ऐसा गुण है कि कोई कैसोही चिन्ता में बैठाहो उसका बोल सुनतेही प्रसन्न होजाता है ॥

दो० फिरियै याके संग लगि लोकलाज घर त्यागि । जब जब सो जहँ बाजिहै मोहनके मुखलागि॥
सो० करिहै नाना रंग यह जानत टोना कछू । या मुरली के रंग देखो हरि कैसे भये॥

दूसरी ब्रजबालाने कहा वह बांसुरी बड़ी चतुरी व कुटनी है जिससमय श्रीकृष्णजी को किसी की चाहना होती है उस समय वह बांसुरी बजाकर उसे अपने पास बुलालेते हैं व यमुनाजल भी वह शब्द सुनकर बौराय जाता है इसीवास्ते बेड़ियां लहर की उसके पांव में पड़ीहैं व वृक्षों की डालों

जो नीचे ऊपर लिपटी रहती हैं वह भी बांसुरी सुनने से अचेत होगईं हैं नहीं तो चैतन्य मनुष्य किसी से नहीं लिपटता व कमल का फूल भी उसी शब्द पर मोहित होकर मतवालों की तरह आठोंपहर शिर अपना हिलाता है व बादल उसी ध्वनि पर मोहित होकर विरहियों की तरह रोयकर आंख से पानी बरसाता है ॥

सो० हरिको करि वश माहिं मुरली लूटै अधररस । उर डर मानत नाहिं हम सबते बोलत निठुर॥

दूसरी गोपी बोली मैं जानती थी श्यामसुन्दर केवल लड़कपन के खेलमें बड़े चतुर हैं पर अब मुझे मालूम हुआ कि गाने व बजाने में भी कोई उनकी बराबरी नहीं करसक्ता दूसरी व्रजबालाने कहा ब्रह्मा व महादेव आदिक देवतों व बड़े बड़े ऋषीश्वरों व ज्ञानियों का ध्यान भी वंशी सुनकर इसतरह छूटजाता है जिस तरह कोई नींद से जाग उठै दूसरी गोपी बोली मुरली हमारी सवति श्यामसुन्दर को ऐसी प्यारी है कि दिन रात उसको अपनी छाती से लगाये रहते हैं पिछले जन्म मुरली ने बड़ा भारी तप किया था जिसके प्रताप से मोहनप्यारे को अपने वश करलिया ॥

दो० जैसे हैंगे हरि निठुर वंशी भई सहाय । अब मुरली अरु श्यामकी जोड़ी मिली बनाय ॥
सो० मेटत पिछले दाग जो वशकरि पायो पिया । धनि धनि मुरली भाग अब गरजत अधरन चढ़ी ॥

दूसरी सखी ने कहा हे प्यारियो मुरली का क्या अपराध है यह सब कठोरताई नन्दलालजी की समझनी चाहिये कि उन्होंने नारी प्रीति छोड़दिया व वंशी नीच जाति को अपनी रानी बनाकर रक्खा है दूसरी व्रजबाला बोली कि मुरली बांसके तनुमें जन्म पाकर एक पैर से खड़ी रही बरसात व गर्मी व सर्दी का दुःख अपने ऊपर उठाकर परमेश्वर का तप किया फिर अपना पोर पोर कटवाया व अग्निकी गर्मी ऊपर सहकर अंग अंग में अपने छेद कराया इतना दुःख उठाकर उसने त्रिलोकीनाथ को अपने वश किया है इसीवास्ते तीनों लोकों के जीव उसके शब्द पर मोहित होजाते हैं हमलोगों को क्या सामर्थ्य है जो उसकी बड़ाई व बराबरी करसकें जब उसके समान तुमलोग भी तप करो तब मोहनप्यारे तुम्हारे साथ भी वैसी प्रीति करसक्ते हैं उनका पाना सहज मत समझो देखो जब हमलोगोंने

भी श्यामसुन्दर के मिलने वास्ते व्रत किया तब उन्होंने हमारे वास्ते ची
छिपाकर हमको नंगी देखा था यह अपने अपने भाग्य का फल है ॥
दो० मुरलीकी सर मतिकरो कहो हमारो मान। धनि धनि वाहि बखानिये सुन वाको यश कान।
सो० रहै विश्वभरि जीति मोहनमुखलगि वांसुरी। मेटि सकल श्रुति नीति रीति चलावत आपनी।

दूसरी गोपीने कहा मुरली से प्रीति रखने में हमारे वास्ते भी अच्छ होकर उसके साथ वैर करने में कुछ फल नहीं मिलैगा इसलिये वंशी से डा करना न चाहिये हमलोग केशवमूर्ति के साथ बालापन से प्रीति रखती उनके चरणों का स्मरण व ध्यान करने से तुम्हारा अर्थ भी सिद्ध होगा।
सो० हमको है यह आश वह हैं अन्तर्यामि हरि। करिहैं नहीं निराश उर अन्तरकी जानिकै।

दूसरी ब्रजबाला बोली वंशी श्यामसुन्दर के ओठों का अमृत पीक अमर होगई इसी वास्ते अपना बोल सुनाकर हमलोगों को ज्ञान सिख लाती है यह वचन सुनतेही राधाप्यारी श्रीकृष्ण के विरह में डूबकर रो लगी तब दूसरी गोपीने उससे कहा तू उदास मत हो श्रीकृष्णजी ते ऊपर मोहित होकर तेरा नाम बांसुरी में बजाते हैं व तू रानी होकर मुरल तेरी दासी है हमलोग वृथा बांसुरी को सवति जानकर उससे वैर रखती मोहनप्यारे ने मुरली को सबगुणनिधान समझकर उससे प्रीति लगाई है।
दो० अब मुरली छूटै नहीं याके वश भये श्याम। प्रकट कियो सब जगत में मुरलीधर निज नाम।

दूसरी गोपीने कहा हे सखी मोहनप्यारा चित्तचोर वृन्दावन में ग्वाल के कन्धे पर हाथ रक्खे हुये गौ चरावता फिरता होगा व वंशी की ध्वनि सुनकर सब गौ इकट्ठी होगई होंगी दूसरी सखी बोली मोहनप्यारे ऐ सुन्दर हैं जिनके मुख से हँसती समय फूल झड़ते हैं उसका मोहनीरू देखने व वंशी सुनने से कामदेव हमारे वशमें नहीं रहता व बाँसुरी क शब्द सब जीवों के पैरमें ऐसी बेड़ी डाल देता है कि किसी को चलने की सामर्थ्य नहीं रहती ॥
दो० धनि धनि वंशी बांसकी धनि याके मृदु बोल। धनि ल्याये गुण जांचिके बनते श्याम अमोल।

हे परीक्षित इसीतरह सब गोपियां बीचचर्चा श्यामसुन्दरके दिन अपना काटकर सन्ध्यासमय राहपर आनबैठती थीं व केशवमूर्ति अन्तर्यामी की

प्रीति जानकर सन्ध्यासमय बलरामजी व गौ व ग्वालों को साथ लिये व मोरपंख की टोपी शिर पर धरे व कुण्डल जड़ाऊ कानों में पहिने बांसुरी बजाते हुये इस सुन्दरताई से घर आते थे कि उनका दर्शन करने से सब छोटे व बड़ों का मन प्रसन्न होजाता था व गोपियां बड़े प्रेम से आगे दौड़ कर श्रीकृष्णचन्द्रके मुखकी शीतलताई से अपने हृदय की अग्नि ठण्ढी करती थीं व श्यामसुन्दर के पगकी धूरि अपने अपने अञ्चल से झाड़कर परिक्रमा लेने उपरांत अपने घर आवती थीं॥

दो० हरिस्वरूप के सिंधु में गोपी कूदीं धाय। नयनन पावैं दरशरस मनकी तृपा बुझाय॥

जब श्याम व बलराम अपने घर पहुँचतेथे उससमय यशोदा व रोहिणी बड़े प्रेमसे उबटन फुलेल मलने व स्नान कराने उपरांत छत्तीस व्यंजन खानेवास्ते देतीथीं तब वह ग्वालबालों के साथ प्रसन्न होकर भोजन करते थे नित्य यही नेम उनका रहताथा एक दिन वृन्दावनविहारीने ऐसा विचार किया कि हमने रासलीलामें अन्तर्धान होकर श्यामाआदिक गोपियोंको अपने विरहका बहुत दुःख दियाथा उसके बदले अब मुझे उचितहै कि राधाप्यारीको जो लक्ष्मीजीका अवतारहैं मान कराऊं और मैं उसके पांव पकड़कर उसे प्रसन्न करूं व सब व्रजबालोंका दुर्वचन सुनकर उन्हें दुःख देनेके बदले मैं उऋण होजाऊं सो एकदिन राधाप्यारी सोलहों शृंगार किये अपने घर बैठीथीं जब मोहनप्यारेने अपनी इच्छानुसार उसके स्थानपर जाकर श्यामाको अपने गले लगालिया व उसकी सुन्दरताई पर बलायें लेनेलगे तब केशवमूर्तिकी मायासे श्यामाने अपने मुखारविन्द की परछाहीं बीच जड़ाऊ गहने मुरलीमनोहरके जो गलेमें पहने थे देख कर क्या समझा कि इस दूसरी सुन्दरीसे नन्दलालजी ने प्रीति करके उसको छातीमें लगारक्खाहै सो मुझको दिखलानेवास्ते ले आये हैं जब ऐसा विचारकर राधाप्यारीको सवतिया डाह हुई तब उसने रोनी सूरत बनाकर कहा ऐ मोहनप्यारे मैंने जाना तुम प्रकटमें मेरे साथ प्रीति करके अन्तःकरणसे इसमहासुन्दरीको ऐसा चाहतेहोकि आठोंपहर अपनी छाती से लगाये रहकर एक क्षण अलग नहीं करते इस सखीका बड़ा भाग्य

समझना चाहिये जो रातदिन तुम्हारे हृदय में बसती है अब तुम इस
साथ प्रीति करो मैं तुम्हारे योग्य नहीं हूं यह वचन सुनतेही ज्योतिस्स
रूप उसके सामने हाथ जोड़कर बोले ऐ प्राणप्यारी तुम्हारे सिवाय को
है जिसको हम चाहते हैं तुम हमारी बातका विश्वास रखकर ऐसा म
विचारो इसीतरह बहुत विनती करके नन्दलालजी ने श्यामाका हा
पकड़कर अपने पास बैठालने चाहा पर वह सवतियाडाहसे नहीं बैठक
बोली ऐ केशवमूर्ति अपनी प्यारीसे जिसको हृदयमें रखतेहो बोलो अ
हमको तुमसे कुछ प्रयोजन नहीं है ऐसा कहकर राधा अपनी परछाहींक
गालियां देनेलगी तब मोहनप्यारेने कई बेर समझाकर कहा यह दूसर
स्त्री न होकर मेरे जड़ाऊ गहने में तेरी परछाहीं दिखलाई देती है प
श्यामाको सवतिया डाहसे उनकी बातका विश्वास नहीं हुआ उसीसम
एक सखी वहां आई व दोनोंको उदास देखकर बोली ॥

दो० वह हरिसे पूछतभई कहो न मोहिं बताय। आज दशा कैसी लगत बैठे कहा गँवाय।
सो० क्यों तन रह्यो भुलाय अति व्याकुल देखत तुम्हैं। रह्यो वदन कुम्हिलाय ऐसो शोच कहा परो।

यह सुनकर श्रीकृष्णजीने कहा ऐ सखी मैंने तो कुछ अपराध रा
का नहीं किया इसने अपनी परछाहीं मेरे जड़ाऊ गहने में देखकर उ
दूसरी स्त्री समझाहै इस कारण मुझसे रूठकर नहीं बोलती तू किसी तर
इसका सन्देह मिटाकर प्रसन्न करदे जब यह बात कहकर श्यामसुन्दर
आंखोंमें आंसू भरलिया तब उस सखीने मुरलीमनोहरसे कहा तुम वृन्दा
वनमें चलो मैं राधाप्यारीको वहां लिये आतीहूं यह सुनकर मोहनप्या
वृन्दावनकी कुञ्जमें चलेगये तब उस सखीने राधाके पास जाकर कह
तुम्हें गोपीनाथ ने बुलायाहै श्यामा बोली तू नहीं जानती नन्दकुमार
दूसरी सुन्दरीसे प्रीति करके उसको अपने हृदयमें बसायाहै अब वह मेर
चाहना नहीं रखते मैं उनके पास जाकर क्या करूं तब फिर वह सख
बोली हे राधा तू जिनकी वस्तु मँगनी लेआई है वह तेरे बदले मोहन
प्यारेको वनमें घेरे खड़ेहैं और तुम यहां मचलाकर बैठीहो ऐसा न चाहि
श्यामाने कहा मैं किसीकी वस्तु मँगनी नहीं लेआई हूं जो घेरे हों उन

का नाम बतला देव तब वह सखी बोली हरिणीकी आंख व चीतेकी कमर व हाथीकी चाल व अनारके दांत तू मँगनी लाईहै वे लोग नन्दलालजी से तगादा करते हैं तब यह बात प्रीति भरी हुई सुनकर राधाने हँस दिया तब वह सखी बोली हे प्यारी तू बड़ी अज्ञान होकर मोहनप्यारे से वृथा खेद मानती है जिसतरह आगे एक दिन तैंने शीशा देखकर अपनी परछाहींको सवति समझा व उसी तरह आजभी नंदलालजीके जड़ाऊ गहनेमें अपनी परछाहींको दूसरी स्त्री जानकर मोहनप्यारेसे खेद माना इसलिये वह तेरे विरहमें व्याकुल होकर राधा राधा पुकारते हैं सो तू जल्दी चलकर उनकी चिन्ता छुड़ादे जब यह वचन सुनकर श्यामा का चित्त ठिकाने होगया तब वह पछताकर कहने लगी हे सखी तुम मोहनप्यारेसे जाकर कहदो मैं शृंगार करके अभी आतीहूं जब वह सखी श्यामसुन्दरके पास यह सँदेशा कहने गई तो क्या देखा कि वृन्दावनविहारी राधाप्यारीके विरहमें व्याकुल होकर वृक्षके तले लोटरहे हैं॥

सो० बैठत उठत अधीर कोऊ सुधि पावत नहीं। बढ़त विरहकी पीर श्रीराधाराधा रटत॥

यह दशा उनकी देखकर वह सखी बोली हे प्राणप्यारे तुम किस वास्ते इतना शोच करतेहो अभी एक क्षणमें श्यामा आ पहुँचती हैं यह वचन सुनतेही मुरलीमनोहर उठबैठे व फूलोंकी शय्या बिछाया और चारों ओर चौंक चौंक कर ताकनेलगे जब श्यामाके आवने में कुछ देर हुई तब फिर वह सखी राधाके पास जाकर बोली ऐ श्यामा मनहरणप्यारे तेरे विरह में रोरहे हैं तू क्यों नहीं चलती॥

सो० मुख नहिं बोलत बैन अतिव्याकुल तेरे विरह। भरभर डारत नैन कहा कहूं उनकी दशा॥

राधा यह वचन सुनतेही बहुत प्रसन्न होकर उस सखी के साथ वनमें जा पहुँची श्यामसुन्दरने प्यारीको देखतेही आनन्द होकर उस सखीकी बड़ाई की व श्यामाको अपने हृदयमें लगाकर कामदेवकी अग्नि बुझाई॥

दो० परम प्रेम दोऊ मिले श्रीराधानँदनन्द। गुणआगर नागर युगल छविसागर सुखकन्द॥
गयो श्याम श्यामासदन सखीसहित सुखपाय। मनचरित्र रसखेलकर व्रजवासिनसुखदाय॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित देखो जिस

त्रिलोकीनाथका दर्शन ब्रह्मा व महादेव आदिक देवता व ऋषीश्वर जल्दी ध्यानमें नहीं पावते वह परमेश्वर व्रजकी स्त्रियों के वास्ते ऐसा शोच करते थे उनकी लीला कौन जान सक्ताहै ॥

सो० जो प्रभु अगम अपार वेद भेद जानत नहीं। सो व्रज करत विहार मरम न वाको पावहीं॥

एक दिन श्यामसुन्दरने वृन्दावनकी गलीमें ललिता सखीको आवती हुई देखकर रोंका तब ललिता बोली तुम झूंठी प्रीति मेरे साथ रखकर कभी मुझ गरीबिनी के घर नहीं आवते यह सुनकर नन्दलालजीने कहा॥

दो० तुम कैसे बिसरत प्रिया हँसि बोले घनश्याम। आजु आय सुख लेहिंगे रैन तुम्हारे धाम॥

सो० सुन हर्षी व्रजबाम चली सदन मुसकायके। लखि सुखपायो श्याम मुदित गये अपनेसदन॥

हे राजन् ललिताने बड़े हर्षसे अपने घर आनकर सोलहों शृंगार किया व स्थान व शय्याकी तैयारी करके आशा आवने श्यामसुन्दरकी देखने लगी जब आधीरात बीतनेपरभी श्रीकृष्णजी वहां न आनकर शैब्या सखी के घर चले गये तब ललिता ने उदास होकर कहा ॥

दो० कहत श्याम आये नहीं होनलगी अधरात। गये आश दे मोहिं पुनि कहा धरौं जिय बात॥

सो० वे बहुनायक श्याम जाय लोभाने अनत कहुँ। मन मन शोचत वाम कारण क्या आये नहीं॥

जब ललिता को इसी शोच व विचार में सारी रात जागते बीत गई तब प्रातसमय नन्दलालजी अपना वचन याद करके ललिताके घर पहुँचे॥

दो० तब बोली मुसकाय प्रिय कहा काम मम धाम। ताही के घर जाइये बसे जहां निशि श्याम॥

सो० प्रात देखावन मोहिं आये रंग बनाय के। मैं सुख पायों जोहि भले बने हौ लाल अब॥

जब यह वचन सुनकर श्यामसुन्दरने मुसकरा दिया तब ललिता ने उन्हें स्नान कराया ॥

दो० रुचि भोजन दे सेजपर पौढ़ाये घनश्याम। रसवशकरि नवनागरी किये सुफल मनकाम॥

थोड़ीदेर केशवमूर्ति वहां रहकर उसकी इच्छा पूर्ण करने उपरान्त अपने घर चले आये इसीतरह मोहनप्यारे कभी श्यामा व कभी चन्द्रावली व कभी सुखमा आदिक गोपियोंके स्थानपर रातभर रहकर उनकी इच्छा पूर्ण करते थे जब एक व्रजवाला से वचन हारकर दूसरी सखीके घर चले जाते और वह व्रजवाला हठकर मान करती तब बहुत बिनती करके उसे

मनाते इसीतरह मोहनप्यारे एक रूप अपना नन्द व यशोदाके पास रखते और अनेकरूप धरकर कभी कभी व्रजवालोंकी मनोकामना पूर्ण करते थे॥

दो० कबहुँ कहत हरिआइहैं उरमें हर्ष बढ़ाय। कबहुँ विरह व्याकुल जरत अतिआतुरअकुलाय॥

सो० कबहुँ कहत सुखपाय बहुत नारि राखैं पिया। बसे अनत कहुँ जाय मोसों झूठी अवधि करि॥

एक रात श्यामसुन्दर किसी सखीके घर रहकर जब प्रातसमय राधाके पास गये तब वह खेद मानकर रूठ बैठी इसलिये मोहनप्यारेने बहुत बिनती करके सौगन्द खाई कि हे प्राणप्यारी अब मैं दूसरी गोपी के घर कभी नहीं जाऊंगा तब वह प्रसन्न हुई पर त्रिलोकीनाथने जो सबकी इच्छा पूर्ण करनेवाले थे सौगन्द खाने पर भी व्रजवालों के घरका जाना नहीं छोड़ा सो एक दिन श्यामसुन्दर कौमुन्दा सखीके घरपर रहे व प्रातःकाल वहां से आवने लगे उसीसमय अचानक में राधाप्यारी कौमुन्दा सखीको यमुनास्नान करने वास्ते बुलाने गई जैसे श्यामाने केशवमूर्ति को उसके घरसे निकलते देखा वैसे क्रोधित होकर विना नहाये अपने घर चली आई व नन्दलालजी उसे देखतेही भय मानकर मनमें कहनेलगे आज हमारी चोरी राधाने पकड़ लिया जब मुरलीमनोहरसे विना भेंट किये राधाप्यारी के नहीं रहा गया तब कई सखियोंको साथ लेकर उसे मनावने गये उन्हें देखतेही श्यामा क्रोध से बोली॥

दो० घरघरडोलतफिरतनिशिबोलतलगत न लाज। आयदिखावैंप्रातमोहिंनिशिवासरके साज॥

सो० मैं आई अब बाज जित चाहो तितहू फिरौ। इनको यहां न काज राज करैं व्रजमें सदा॥

जब श्यामसुन्दरके विनती करने व सखियोंके समझानेपर भी राधाने क्रोध अपना क्षमा नहीं किया तब कई सखी बोलीं हे श्यामा चार दिनके जीवनपर मत अभिमान कर वृन्दावनविहारी तेरे खेद करनेसे उदास हो कर अपना अपराध क्षमा कराने वास्ते तुम्हारे पास आये हैं सो तुम हँस बोलकर इनका शोच छुड़ादेव॥

दो० आदर करि बैठायके पियको कंठ लगाय। घर आये नहिं कीजिये ऐसी विधि निठुराय॥

सो० है तू नागरि वाम मनमें क्या ऐसी धरी। वे ठाढ़ेहैं श्याम तू मुखते बोलत नहीं॥

श्यामा यह सुनकर बोली जिसके घर श्यामसुन्दर रातभर रहे हैं वहां

जावैं मेरे साथ अब इनको क्या काम है अभी चार दिन हुआ इन्हों मुझसे सौगन्द खाई थी कि अब किसी सखीके घर न जाऊँगा सो आ मैंने अपनी आंखसे इनको कौमुन्दा गोपी के यहां से निकलते देखा इ लिये मैं इनके योग्य नहीं हूं लम्पट मनुष्यसे प्रीति करके कौन नष्ट होवै।

दो० ऐसो गुण हरिको सखी निपट कपटकी खानि । अब इन सों मोसों कभी नहीं बनैगी जानि॥
सो० हैं हरि कपटनिधान बहुनायक सँग रमिरहे । तिनको करत बखान जो वामन है वलिछल्यो॥
दो० ऐसो कहि चुप होरही मुर बैठी रिस गात। मधुरे वचननसे कहत निपट सखिनसों बात॥
सो० आये हैं करि गौन चतुर नारिसँग निशिजगे। इनसों मिलिहै कौन विरह अग्नि में जलनको॥
सखी कह्यो मुसुकाय नहिं मानत मेरो कह्यो । श्याम मनावैं आय मैं जान्यों तव मानिहै ॥

जब सखियोंके समझानेसे राधाने नहीं माना तब उन्होंने श्यामसुन्द से कहा हम लोग समझाते समझाते हार गईं पर राधा नहीं मानती तु आप उसे समझाकर मनालेव ॥

दो० मान तजै नहिं लाड़िली थाकीं सबै मनाय। नेक यत्न कुछ कीजिये रचिये आप उपाय॥
चले बनै है लाल अब और यत्न नहिं कोय । काछ काछिये जौन विधि नाच नाचिये सोय॥
सो० आपकाज महकाज बड़े कही हैं बात यह । तजो श्याम उरलाज करि विनतीप्रियसों मिलौ॥

जब ऐसा कहकर सब सखियां अपने अपने घर चली गईं तब नन्द कुमार भी वहां से बाहर चले आये पर मन उनका नहीं माना तब स्त्रीरू बनगये व श्रीकृष्णजीकी ओर से राधाजीके पास जाकर यह सँदेशा कह मैं इस समय तेरे देखनेवास्ते वृन्दावनके कुंजमें गई थी सो तुझे उस जग नहीं पाया पर श्यामसुन्दर तेरे खेद मानने से वहां अतिविलाप करते उन्होंने मेरे पांव पकड़कर बहुत विनती से तुझे बुलाया है सो तू मा छोड़कर मोहनप्यारे के पास चल यह बात कहकर गोपीरूप मोहनप्या श्यामाके चरणोंपर गिरकर विनती करनेलगे ॥

दो० क्षणक्षणपरसतचरणकरक्षणक्षणलेतबलाय। कहतप्रियाअबमानतजिपुनिपुनिहाहाखाय॥

जब राधाप्यारी उस स्त्रीके विनती करने से प्रसन्न होकर चलनेवास्ते तेयार हुई तब श्यामसुन्दरने अपना रूप धरकर श्यामाको गले से लगा लिया तब दोनोंने बड़े हर्षसे एक थाली में भोजन किया व अपने अपने

कामदेवकी अग्नि भेंटरूपी जलसे बुझाई इसीतरह मोहनप्यारे राधा आदिक गोपियों का मनोरथ पूर्ण किया करते थे ॥

दो० यह लीला आनन्दमय सकल रसनको सार । भक्तन हित हरि करतहैं गाइ तरत संसार ॥
सो० घर घर करत विहार ब्रजयुवतिनके संग हरि । गावतहैं श्रुति चार ब्रजवासी हरिकी कथा ॥

छत्तीसवां अध्याय ।

श्रीकृष्णजी का वृषासुर राक्षस को मारना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित जब वर्षा ऋतु आई तब राधाप्यारी नें श्यामसुन्दर से कहा तुम हिंडोला झूलने की लीला करो तो हम सब सखियां तुम्हारे साथ झूला झूलकर बरसात के गीत गावें यह वचन सुनतेही श्यामसुन्दर ने जड़ाऊ झूला कुंजों में डलवादिया तब राधाप्यारी आदिक ब्रजबाला उत्तम उत्तम भूषण व अनेक अनेक रंग के वस्त्र पहिनकर श्यामसुन्दर के साथ झूलने व गानेलगीं उससमय वृन्दावनविहारी ने मुरली सुनाकर व अनेक राग रागिनी गाय के उन्हें अतिप्रसन्न किया वह आनन्द देखनेवास्ते ब्रह्मादिक देवता व गन्धर्व अपनी अपनी स्त्रियों समेत विमानों पर चढ़कर वृन्दावन में आये और बड़े हर्ष से राधाकृष्ण पर फूल वर्षाये व ब्रजबालों के भाग्य की बड़ाई करनेलगे इसीतरह बरसात भर राधाआदिक गोपियों के साथ विहार करके उन्हें सुख दिया जब फागुन का महीना आया तब श्यामा आदिक ब्रजवालों ने मोहनप्यारे से हाथ जोड़कर विनय किया महाराज हमलोगों के साथ होली खेलो यह वचन सुनकर नंदलालजी बोले तुमलोग अपने अपने घर जाकर तैयारी करो में भी अपने सखों को साथ लेकर वहा होली खेलने आऊंगा जब सब ब्रजवालों ने अपने अपने घर जाकर होली खेलने की तैयारी की तब नंदकुमारने ग्वालवालों को बुलाकर केसरिया कपड़ा पहिनाया व रंग अबीर व इत्र आदिक अपने अपने शरीर पर डाल कर सुगन्धित फूलों के गजरे गले में पहिन लिये व डफ बांसुरी झँझरी बजाकर फगुवा गावते व ब्रजबालों को गालियां देते व अबीर उड़ावते व अनेक तरह के स्वांग बनाये लड़कों को नचावते हुये ब्रजमें होली खेलने निकले जो गोपी राह में दिखलाई

देती थी उसपर रंगकी पिचकारियां मारकर हँसते थे और सब व्रजबाला अपनी अपनी खिड़की कोठों पर से मोहनप्यारे व ग्वालबालों पर रंग अबीर व कुमकुमा आदिक डालकर गालियां सुननेसे प्रसन्न होती थीं जब इसीतरह वृन्दावनविहारी होली खेलते हुये राधाप्यारी के स्थान परवरसाने गांवमें पहुँचे तव श्यामा अपनी सखियों समेत सोलहों शृंगार किये रंगकी पिचकारियां लिये गली में जाकर मोहनमूर्ति के सामने खड़ी हुई जब दोनों ओर से पिचकारियां चलकर अबीर उड़ने लगा तब श्यामा सखियों से बोली आजअपनेचित्तचोरको पकड़कर चीरहरनेका बदलालेनाचाहिये॥

दो० ललितादिक व्रजनागरी सब सुन्दरि को साज। तिनमें श्रीराधाकुँवरि सब गोपिनशिरताज॥
सो० कर्परूप को रास गुणआगर नवनागरी। राजत भरी हुलास मनमोहन मनभावती॥
दो० ग्वालबाल के झुण्डमें शोभित यों व्रजनाथ। ज्यों चन्दा आकाश में तारागण लिये साथ॥

जब रंग व अबीर उड़ने से अँधियारा छागया तब श्यामा ने सखियों से कहा मनहरणप्यारे को किसी उपाय से पकड़ो यह वचन सुनतेही एक सखी ने बलरामजी का वेष बनाकर धोखे में केशवमूर्ति को पकड़लिया और राधाआदिक व्रजबालों ने उन्हें घेरकर कहा तुमने यमुना किनारे चीर छिपाकर हमको बड़ा दुःख दिया था आज उस दिन का बदला लिये बिना न छोड़ेंगी ऐसा कहकर एक गोपी ने श्यामसुन्दर का पीताम्बर छीनलिया व दूसरीने आंखों में काजल देकर माथे पर सिंदूर व बेंदी लगादिया व किसी ने भूषण व वस्त्र पहिनाकर उन्हें स्त्रीरूप बनाया॥

दो० गये भागि मोहन तभी सखियनको छिटकाय। आय मिले निज सखन में रहीं नारि पछिताय॥
सो० कर मींजत पछितात कहत परस्पर बात सब। भली मिली थी घात दांव लेन पायो नहीं॥
दो० भाजे भाजे कहति सब ताली दे व्रजबाल। जो तुम जाये नन्द के ठाढ़े रहौ गुपाल॥

जब उन्हें स्त्रीरूप देखकर सब ग्वालबाल हँसने लगे तब मुरली मनोहरने एक ग्वाल को सखीरूप बनाकर राधा के गोल में भेजा व अपना पीताम्बर किसी उपाय से मँगालिया उस समय श्यामा बोली हे प्राणनाथ आज तुम चतुराई करके उचकिगये फिर पकड़ेंगी तो मालूम होगा॥

चौ० पकड़ नचावैं तुम्हें मुरारी। तब कहियो हमको व्रजनारी॥

यह बात सुनकर व्रजनाथने सखियों से कहा मैं तनिक श्यामा की

संकोच करता हूं नहीं तो अपने ग्वालों को लगाकर अभी तुम्हारी दशा दिखादूं यह सुन गोपियां मुसकराकर बोलीं तुमको नन्दकी सौगन्द है जो ऐसा न करो तब मोहनप्यारे अपने सखा समेत पिचकारियां रंग की ब्रजबालोंपर मारकर अबीर उड़ाने व फगुवा गाकर उन्हें गालियां देनेलगे व श्यामाने भी सखियों समेत मोहनप्यारे आदिक से अच्छीतरह होली खेली वह आनन्द देखनेवास्ते देवता व गन्धर्व अपनी अपनी स्त्रियों समेत विमानों पर बैठकर वहां आये व राधाकृष्ण पर फूल वर्षाकर आपस में कहनेलगे देखो जिस वैकुण्ठनाथ के चरणों का दर्शन ब्रह्मादिक देवतों को जल्दी ध्यान में नहीं मिलता वही परब्रह्म परमेश्वर ग्वालबाल व गोपियों के साथ होली खेलकर उनको सुख देते हैं जब सन्ध्या तक राधा-कृष्ण होली खेलचुके तब ललिता सखी ने आनकर केशवमूर्तिसे विनय किया कल्ह हमलोग भी तुम्हारे गांवमें होली खेलने आवेंगी॥

सो० घर आये घनश्याम सखनसंग गावत हँसत। गई प्रिया निजधाम सखिनसहित आनँदभरी॥

उस समय राधिका सखियोंसे बोली॥

क० धाये नंदलाल वो गुलाल दोऊ एकसंग झुमढिगयो जो दृग आनन मदै नहीं।
धोय धोय हारी पदुमाकर तिहारी सौंह अब तो उपाय कोऊ चितै चदै नहीं॥
कहा करौं कहां जाउँ कासों कहौं कौन सुनै कीजिये उपाय जामें दरद बदै नहीं।
एरी मेरी बीर जैसे तैसे इन आंखिनसे कढिगो अबीर पै अहीर को कढै नहीं॥

दूसरे दिन प्रातसमय राधाप्यारीने सखियोंसमेत सोलहों शृंगार किया व सोने चांदीके बरतनों में रंग व अबीर व गुलाब व इत्र भरवाकर बड़ी तैयारीसे होली खेलने चली जब श्यामा गाती व बजाती रंग व अबीर उड़ाती हुई ने नन्दगांव में जाकर यशोदाका स्थान घेर लिया तब श्याम व बलराम भी अपने सखों समेत फगुवा गाते हुये बाहर निकले व रंग व अबीरसे राधा आदिक के साथ होली खेलने लगे जब रंग व अबीर उड़ने से चारों ओर लाल होगया तब ललिता आदिक कई सखी मोहनप्यारेको पकड़नेवास्ते दौड़ीं पर नन्दकुमार फुरती करके भागगये इसलिये बलराम जी को पकड़ लेआईं तब श्यामा आदिकने उनको रंग व अबीरसे नहला

कर आंखोंमें काजल व माथेपर बेंदी लगा दिया व उनसे विनती करा छोड़ा तब बलरामजीका रूप देखकर श्यामसुन्दर व सखालोग हँसनेल उस समय गोपियों ने घात लगाकर मोहनप्यारेको भी पकड़ा और ज उन्हें अपनी गोल में लेगईं तब चन्द्रावली बोली हे चित्तचोर चीर हरने बदले आज तुम्हें नंगा करके छोडूंगी ॥

दो० लै आई प्यारी निकट हँसत कहत ब्रजबाल। कहौ लाल कैसे फँसे बहुत करत रहे गाल

उससमय ललिता उनकी मुरली छीनकर बजाने लगी व एक सखी मोहनप्यारेको रंग व अबीरसे नहलाकर आंखोंमें काजल व माथेपर बेंद लगाया व दूसरी ने उनका पीताम्बर छीनकर उन्हें लहँगा व सारी अँगिया पहिनाया व एक सखी ने मोतियों से मांग गूंधा व स्त्रीरूप बन कर राधाके पास बैठाल दिया तब श्यामाने बड़े हर्षसे अपने हाथसे उन गालोंपर इत्र व अबीर लगाकर उनका मुख चूमलिया ॥

दो० निरखि वदन प्यारी हँसी श्यामरहेसकुचाय। गहि प्यारी निजहाथसों दीन्हो पान खिला

सो० सखियाँ करत कलोल गांठि जोरि अंचल दई। ब्रजमें रहै अमोल यह जोड़ी युग युग सदा

जब ब्रजबालों ने राधाकृष्णको गांठिबन्धन कियेहुये बीच में बैठाक रंग व अबीरसे नहला दिया व उनकी छवि देखकर प्रेमसे गावनेलगीं त यशोदा ने ललिताको घर में बुलाकर कहा रसोई खानेका समय हुआ इसलिये तू सबको भीतर बुलाले जब ललिता श्यामा आदिक सखियों भोजन करनेवास्ते भीतर लिवा लेगई व श्यामसुन्दर ब्रजबालों से छूटक अपने गोलमें चले आये तब ग्वालबालोंने बलरामजीको बुलाकर उनक रूप दिखलाया व मोहनप्यारे को सौगन्द धराकर जब उसीतरह उनक हाथ पकड़े हुये नन्द व यशोदाके पास लेगये तब वह अपने लाल क स्त्रीरूपसे देखतेही बड़े हर्षसे लिपटा कर बोले अय बेटा तुम्हारा यह रू किसने बनाया नन्दकुमारने कहा अय बाबा ललिता आदिक राधा क सखियोंने यह भूषण व वस्त्र मुझे पहिनाया है फिर यशोदाने श्यामा आ दिक ब्रजबालोंको छत्तीस व्यञ्जन खिलाये व पान इलायची देकर अपने यहां से उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र राधाको पहिनाये ॥

सो० रह्यो नन्दघर छाय होरीको आनन्द अति। कहत यशोमतिमाय फगुआ कहा सो दीजिये॥

यह सुनकर व्रजवालोंने कहा हे नन्दरानीजी हमलोग फगुवाके बदले मोहनप्यारेको लेवैंगी तव नन्दमहरि व्रजवासियों समेत हँसने लगी व श्यामसुन्दरने लहँगा आदिक उतारकर अपना मुकुट व पीताम्वर पहिन लिया व सब ग्वालवाल व व्रजवालोंको साथ लेकर यमुना स्नान करने गये जब केशवमूर्तिने नहाकर फूलडोल लीला किया तव देवतोंने आकाश से उनपर फूल बरसाये इसीतरह केशवमूर्ति नित्य नई लीला करके व्रज-वासियों को सुख देते थे एक दिन राजा कंसने वृषासुर दैत्य को बुलाकर विनयपूर्वक कहा हम तुमको सब दैत्योंसे वलवान् समझकर अपना परम मित्र जानते हैं सो तुम नन्दके वेटे कृष्ण व रामको मारडालो तो मैं तुम्हारा बड़ा उपकार मानूं यह वचन सुनतेही वृषासुर बैलरूप वहुत वड़ा पर्वतके समान होगया व दोनों सींग अपने वड़े वड़े कँगूरा ऐसे वनाकर वादल की तरह गर्जता व लाल लाल आंख निकाले पूंछ फटकारे हुये सन्ध्या समय वृन्दावनमें आनपहुँचा व मारे क्रोधके मुखसे झाग निकालकर एक बार ऐसा चिल्लाया कि उसका शब्द सुनकर स्त्रियोंका गर्भ गिर पड़ा व खुरोंसे पृथ्वी खोदके सींगों पर पहाड़ उठाकर उलटने लगा व वृक्षों को सींगसे उखाड़ कर श्यामसुन्दरको खोजता फिरता था यह दशा देखकर दिग्पाल व देवता डरगये व पृथ्वी कांपनेलगी व ग्वाललोग उसे अपना कालसमझकर श्रीकृष्णजीकी शरण पुकारनेलगे व सबोंने किवाड़े अपने बन्द कर लिये उससमय श्याम व बलरामभी ग्वालोंसमेत गो चराकर जैसे गांवके निकट पहुँचे वैसे गो व बछवे मारे डरके भागकर जिधर तिधर चले गये व ग्वालवाल वृषासुरको देखकर रोनेलगे जब मोहनप्यारेने यह दशा ग्वालवाल व व्रजवासियोंकी देखी तव उन्हें धैर्य देकर बोले तुमलोग शोच मत करो देखो मैं अभी इस दुःखदायी को मारे डालता हूं। ऐसा कहकर वृषासुरके सन्मुख चले गये और ललकारकर वोले कपटरूपी दैत्य तू गोपी व ग्वालोंको किसवास्ते डराकर धमकाता है हमारे सामने आव तेरे ऐसे बहुत राक्षसोंको मैंने मारडालाहै उन्हें देखतेही वृषासुरने प्रसन्न होकर मन

में कहा कि जिसके मारनेवास्ते मेरी इच्छा थी बहुत अच्छा हुआ जो
वालक आपसे मेरे सामने चला आया अभी इसको मारकर राजा कंस
पास जाताहूं ऐसा विचारकर वृषासुर विजुलीके समान केशवमूर्तिपर दौ
व उसने अपने सींग पृथ्वीमें गड़ाकर ऐसा चाहा कि वैकुण्ठनाथको ती
लोक समेत उठा लूं तब श्यामसुन्दर ने उसका सींग पकड़कर उसे अ
रह पग पीछे हटादिया फिर वह भी बल करके मोहनप्यारेको हटानेलगा।

दो० वह आवे हरि ओरको प्रभु पाछे लेजाहिं । या विधि जो आयो गयो रही शक्ति कछु नाहिं।

जब इसीतरह बल करते करते वह दैत्य थक गया तब मुरलीमनोहर
एक वेर उसको पृथ्वीपर पटक दिया जब फिर उसने बड़े क्रोध से मोह
प्यारे को दोनों सींगों में अड़ाया तब केशवमूर्ति ने फुरती से निकल
दोनों सींग उसके धर लिये व ऐसा ढकेला कि वह अचेत होकर पृथ्वी
गिर पड़ा उससमय श्यामसुन्दरने सींग व पैर पकड़कर इसतरह शरी
उसका उमेठा जिसतरह कोई गीला कपड़ा निचोड़ता है तब उसके मु
व नाक व मूत्रकी राहसे लोहू बहकर वह दैत्य मरगया यह हाल देखते
देवतों ने आकाश से मुरलीमनोहरपर फूल बरषाये व सब वृन्दावनवा
बड़े हर्षसे उनकी स्तुति करके बोले अय मोहनप्यारे हमलोगोंने इस दै
को बैल समझा था बहुत अच्छा भया जो मारा गया ॥

सो० दुष्टदलन गोपाल मुदित कहत नरनारि सब । भक्तनके रछपाल व्रजवासी नँदलाड़िले।

उससमय राधिका बोली अय मोहनप्यारे बैलरूप दैत्य मारने से तु
को पाप लगा इसलिये सब तीर्थ स्नान करो तब किसीको छूना यह व
सुनतेही नन्दकुमारने दो कुण्ड गोवर्धन पहाड़के पास खुदवाकर कहा अ
राधाप्यारी मैं इसी जगह सब तीर्थोंको बुलालेता हूं सो उनकी इच्छानुस
उसी समय गंगा व यमुना व सरस्वती आदिक सब तीर्थ अपने अ
रूपसे वहां आये व अपना नाम बतलाकर जब दोनों कुण्डोंमें ज
डालके चलेगये तब श्यामसुन्दरने उसमें स्नान किया व बहुतसी गो
सोना देकर वहांपर ब्राह्मणोंको भोजन खिलाया व नन्दजी व वृषभा
आदिकने नन्दकुमारपर बहुतसा द्रव्यादिक न्यवछावर करके गरीबों

दिया व आनंद मचातेहुये अपने अपने घर आये उसी दिनसे वे तीर्थ राधाकुंड व श्रीकृष्णकुण्ड नामसे प्रसिद्ध होकर आजतक वृन्दावनमें हैं इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् जब समाचार मारेजाने वृषासुरका कंसको पहुँचा तब उसने बहुत उदास होकर विश्वास करके जाना कि मैं इस बालकके हाथसे अवश्य माराजाऊंगा सो श्यामसुन्दरकी इच्छानुसार एक दिन नारदजी कंसके पास आये जब उसने बड़े आदर-भावसे बैठाला तब नारद मुनि बोले हे मूर्ख तैंने कुछ जाना कि वृषासुर आदिक बड़े बड़े दैत्योंको किसने माराहै तू मेरा वचन विश्वास करके मान तैंने जो कन्या देवकी की पत्थरपर पटककर मारीथी वह कन्यारूपी योगमाया यशोदाके उत्पन्न होकर श्रीकृष्ण ने देवकी से जन्म लिया था व वसुदेवजी अपना बालक रात्रिको नन्दके घर पहुँचाकर उसके बदले वह कन्या उठालेआयेथे व बलरामभी वसुदेवका बेटाहै जिसको योगमाया ने देवकी के पेटसे निकालकर रोहिणीके गर्भ में धर दिया था व वसुदेव ने तुझसे गर्भपात होनेका हाल कहा व उन्होंने तेरे डरसे रोहिणी अपनी स्त्री को नंदजीके यहां गोकुलमें भेजकर रक्खी थी उसीजगह बलभद्रजीने जन्म लिया है जब देवकीके प्रथम बालक उत्पन्न हुआ तभी हमने तुझसे कह दिया था कि तू वसुदेव के संतानसे चैतन्य रहियो पर इसमें तेरा क्या वशहै भाग्यका लिखाहुआ मिट नहीं सक्ता तीन कोसपर तेरा शत्रु है जो कुछ तुझसे बनपड़े आगेके वास्ते उपाय कर यह वचन सुनतेही पहले कंस भयसे काँपने लगा फिर उससे क्रोधित होकर वसुदेव व देवकी को अपने सामने बुलाकर कहा ॥

दो० प्रथम दियो सुत ल्यायकै मन परतीत बढ़ाय। ज्यों ठग कछू दिखायकै सर्बस ले भगिजाय ॥

चौ० मिलारहा कपटी तू मुझे। भला साधु जाना मैं तुझे ॥
कृष्ण नन्दघर तू पहुँचाय। देवी हमैं दिखाई आय ॥
मनमें कछू कहै मुख और। आज तोहिं मारौं यहि ठौर ॥
मित्रसगा सेवक हितकारी। करै कपट सो पापी भारी ॥

दो० मुखमीठा मनविषभरा रहै कपटके हेत। आपकाज परद्रोहिया उस से भला जो प्रेत ॥

जब ऐसा कहकर कंस वसुदेव व देवकीको मारनेवास्ते नंगी तलवा लेके दौड़ा तब नारदमुनि ने हाथ उसका पकड़कर कहा हे राजन् इन मारनेसे तेरा अर्थ नहीं निकलैगा जिनसे तुझको अपने प्राण का भ उनके मारनेका उपाय करना चाहिये यह सुनकर कंसने उनको प्राण नहीं मारा पर बेड़ी व हथकड़ी डालकर फिर उन्हें कैद किया जब ना जी वहां से चलेआये तब कंसने केशीनाम दैत्यको जो बड़ा बलवान बुलाकर विनयपूर्वक उससे कहा हे केशी यह समय सहायता करनेको

चौ० महाबली तू साथी मेरा। बड़ा भरोसा मुझको तेरा॥
एकबार तू व्रजमें जावै। राम कृष्ण हति मुझे दिखावै॥

जब केशी दैत्य यह वचन मानकर वृंदावनको चला तब कंसने चा व मुष्टिक व शल व तोशल बड़े बड़े पहलवानों को बुलाकर कहा श्याम व बलराम वसुदेवके पुत्रोंको किसी बहाने यहां बुलाते हैं तुम कुश्ती लड़कर उन्हें मारडालो तो तुमको बहुत द्रव्य देवैंगे ऐसा कह कंस अपने मंत्रियोंसे बोला तुमलोग कोई ऐसा उपाय करो जिसमें र व कृष्ण मारेजावैं तब उन्होंने कहा महाराज आप ऐसे प्रतापी व बल होकर क्यों डरते हो हमारा सम्मत यहहै कि तुम एक रंगभूमि बहुत उ बनवाओ व धनुषयज्ञ के बहानेसे नन्दादिक को राम कृष्ण समेत बुलवाओ तो कोई मल्ल या कुवलयापीड़ हाथी दोनों भाइयोंको मार लेगा यह सम्मत कंसने मानकर कार्त्तिकसुदी चतुर्दशीको मुहूर्त धनु महादेवका ठहराया व अपने सेवकों को आज्ञा दिया कि तुमलोग तु एक स्थान बहुत उत्तम रंगभूमिका पहलवानोंके लड़नेवास्ते बनवा व उसमें एक मचान बहुत ऊंचा व चौड़ा मेरे बैठनेको ऐसा तैयार करा जिसमें किसीका हाथ न पहुँचै व उसी तरहका दूसरा मचान भी मेरे व मित्रोंके बैठनेवास्ते बनवाओ कि वहलोगभी हमारे पास बैठेंगे व पी डेवढ़ीपर धनुष महादेवजीका रखवाओ व विधिपूर्वक उसे पूज कर नग ढिंढोरा पिटवादेव कि राजमन्दिरपर धनुषयज्ञकी पूजा है जब राम धनुषके पास पहुँचें तब हमारे शूरवीर उन दोनों बालकोंसे कहें कि

धनुष चढ़ाये भीतर न जाने पावोगे जब वह अहंकारसे धनुष चढ़ानेवास्ते उठावैं तब मेरे शूरवीर उनको मार डालैं जो उनको मारैगा उसको मुँहमांगा धन देऊंगा व उनको मारने से मुझे अपनी मृत्यु का खटका मिटजावैगा व दूसरे द्वारपर कुवलयापीड़ गजपति को जो दश हजार हाथी का वल रखताहै वास्ते मारने उन लड़कोंके खड़ा कर रक्खो कदाचित् वह पहिली डेवढ़ीसे जीते वचकर भीतर आये तो वह हाथी एक झपटमें उनको पैरतले दबाकर मारडालैगा और तीसरी डेवढ़ी रंगभूमिके स्थानपर मेरे मंत्री व शूरवीर अनेक शस्त्र लियेहुये चैतन्य वैठेरहैं जिसमें दोनों बालक भीतर न आनेपावैं राजा कंस यह आज्ञा देकर सभामें आन बैठा व सबकी ओर देखकर विचारनेलगा कि राम कृष्णके बुलाने वास्ते किसे भेजें जब उसको अक्रूरसे अधिक बुद्धिमान् दूसरा कोई नहीं दिखलाई दिया तब उसने अक्रूरको अकेलेमें लेजाकर उनकी वड़ाई करके कहा हे अक्रूर में तुमको बड़ा बुद्धिमान् व अपना मित्र जानकर मनकी बात कहताहूं मुझे श्याम व बलराम वसुदेवके वेटोंसे दिनरात अपने प्राणका डर लगा रहताहै यह हाल तुम्हें भी मालूम होगा जिस तरह विष्णु भगवान्ने देवतों के वास्ते तीन पग पृथ्वी राजा बलिसे दान लिया व उसको पातालमें भेजकर सदा इन्द्रकी रक्षा करते हैं उसी तरह तुमको भी हमारी सहायता करनी चाहिये अच्छे लोग आपदुःख उठाकर दूसरे का उपकार करते हैं इसलिये तुम मेरे भलेवास्ते वृन्दावन में जाव आकाशवाणी होने व नारदमुनि के कहने से मैं जानता हूं कि आठवां बालक देवकी का अवश्य मुझे मारेगा पर मनुष्य को अपने सामर्थ्य भर रोग छूटने व प्राण बचानेवास्ते औषधि करनी चाहिये आगे होनहार किसी तरह मिट नहीं सक्ता॥

दो० कहत कंस अक्रूरसों मैं जानत मनमाहिं। तुमसमान या लोक में और दूसरो नाहिं॥

इस वास्ते तुम श्याम व बलराम को नन्द व उपनन्द समेत धनुषयज्ञ के बहाने से अपने साथ लिवालाओ मैं तुम्हारा बड़ा उपकार मानूंगा व तुम मेरे चढ़ने के रथ पर बैठके चलेजाव धनुषयज्ञ के उत्सव का हाल सुनकर वे लोग अवश्य आवैंगे व मैंने उन दोनों बालकों के मारनेवास्ते

जो उपाय विचारा है उसे भी सुनलेव मेरे निकट पहिली डेवढ़ी में ध
चढ़ावती समय मेरे शूरवीरों के हाथ से मारे जावेंगे कदाचित् वहां बच
तो दूसरे द्वारपर कुवलयापीड़ हाथी उनको अपने पैरों से रौंदकर मारडा
गा वहां से भी बचकर रंगभूमि में पहुँचे तो चाणूर व मुष्टिक कि हाथी दिग
भी उनका सामना कर नहीं सक्ते उन्हें अवश्य मारडालेंगे जो उनसे
बचे तो मैं अपने हाथ से श्याम व बलराम को मारकर अपना काम सँ
रूंगा व उन्हें मारने उपरांत वसुदेव व देवकीको जो वही विपकी मूल
उग्रसेन आदिक यदुवंशियों समेत मारडालूंगा व हरिभक्तों की जड़ सं
से उखाड़ कर जरासन्ध अपने श्वशुर व बाणासुर व दन्तवक्र आदि
राजोंसमेत जो मेरे मित्र हैं आनन्दपूर्वक राज्य करूंगा सो तुम नन्दजी
कहदेना कि वह बकरा व भैंसाआदिक अपने यज्ञ करने वास्ते भेंट ले
यहां तुरन्त लेआवें व मैं भी इष्टमित्रों को इसी बहाने यहां बुलाता हूं
वचन अभिमान भरा हुआ कंस से सुनकर अक्रूरने कहा हे राजन् आ
क्रोध करके बुरा न मानें तो मैं कुछ विनय करूं कंस बोला बहुत अ
कहो हम खेद न लावेंगे तब अक्रूर ने कहा महाराज आपने जो आज्ञा
सो करूंगा परन्तु इन्द्र वज्रनाम शस्त्र रखने व रावण मृत्यु को बांधे रहने
भी काल से नहीं बचे जो कोई उत्पन्न हुआ है वह एकदिन अवश्य मरे
व मनुष्य अपने कल्याण के वास्ते अनेक उपाय करके मनमें कुछ वि
रता है और परमेश्वर की इच्छानुसार कर्मों के फल से उसके विपरीत हो
उसमें तिल भर घटने बढ़ने नहीं सक्ता जिस तरह अज्ञान मनुष्य यह
देखने पर भी नहीं समझते कि होनहार प्रबल होकर मेरा किया कुछ न
होगा उसी तरह तुमने भी आगम बांधकर यह उपाय विचारा है इसमें
मालूम परमेश्वर की इच्छानुसार तुम्हारे वास्ते कैसा हो जिस तरह स
जीव मरती समय हाथ व पांव फटकते हैं वही हाल तुम्हारा भी मुझे माल
होता है मैं तुम्हारी आज्ञानुसार राम व कृष्ण को ले आऊंगा पर उन दो
बालकों से शत्रुता करने में तुम्हारा प्राण नहीं बचेगा ॥

दो॰ मैं वृन्दावन जातहौं तेरो भल कछु नाहिं। यह कहिआयो धामको कंस गयो घरमाहिं

सैंतीसवां अध्याय।

श्रीकृष्णजी का केशी व व्योमासुर दैत्य को मारना॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जिसतरह श्यामसुन्दर ने केशी दैत्यको मारा व नारदजीने आनकर मोहनप्यारे की स्तुति की व व्योमासुर नन्दलालके हाथसे मारा गयाथा वह कथा वर्णन करते हैं सुनो जब केशी दैत्य को कंसने श्याम व बलरामके मारनेवास्ते भेजा तब वह स्वरूप अपना घोड़े के समान लम्बा व चौड़ा बनाकर प्रातसमय वृन्दावन को चला व अपने स्वामी को पालन करने वास्ते बड़े हर्ष से पूंछ फटकारे व आंखें लाल लाल निकाले टापों से पृथ्वी खोदता हुआ वृन्दावन में पहुँचा उसका रूप देखतेही गोपी व ग्वालोंने बहुत भय मानकर जाना कि हम लोगोंके वास्ते महाप्रलय आया इस घोड़े के हाथसे हमारा प्राण नहीं बचेगा जब यह दशा अपनी व्रजवासियों ने देखी तब श्रीकृष्णजी के पास जाकर सब वृत्तान्त कहा॥

दो० व्रज आयो केशीअसुर जानिलियो नँदलाल। सन्मुख उसके हर्षसे चले कंसके काल॥

श्यामसुन्दरने चलतीसमय सब व्रजवासियों से कहा तुमलोग कुछ मत डरो मैं अभी उसको मारकर तुम्हारा शोच छुड़ादेता हूं ऐसा कहकर मोहनप्यारेने काछा अपना बांधलिया व केशीके सन्मुख जाकर ललकारा हे कपटरूप राक्षस जो तू मेरे मारनेवास्ते आयाहै तो औरोंको क्यों डराकर धमकाताहै मुझसे आनकर लड़ तो तेरा बल व पराक्रम देखूं जिस तरह दीपक के ऊपर पतंगे आपसे आनकर जलमरते हैं उसी तरह तू भी यहां मरने वास्ते आयाहै अब मेरे हाथसे जीता बचकर न जावेगा यह वचन सुनतेही केशी दैत्य क्रोधित होकर मोहनप्यारे की ओर दौड़ा और जब उसने दोनों पैर अगिले उठाकर उनको टाप मारने चाहा तब मुरलीमनोहर ने दोनों पांव उसके पकड़ लिया और इस तरह घुमाकर फेंका जिस तरह गरुड़जी सर्पको उठाकर फेंकदेतेहैं जब वह घोड़ा दोसौ पग पर जा गिरा व थोड़ी देर अचेत रहकर चैतन्य हुआ तब वह अपना मुख फैलाकर इस इच्छासे नन्दलालजी पर झपटा कि उनको निगलजावे उस समय मोहन-

प्यारेने अपना हाथ लोहेकेसमान कड़ा बनाकर इसतरह उसके मुखमें डा
दिया जिसतरह सांप बिलमें घुसजावे जब बहुत काटने पर भी गिरिधा
लाल के हाथमें कुछ घाव न होकर सब दांत उस घोड़े के टूट गये त
श्यामसुन्दरने अपना हाथ उसके मुख में ऐसा मोटा किया कि उसे श्वा
लेने की जगह न रहकर प्राण निकलनेलगा उस समय केशी दैत्यने म
कहा देखो जैसे मछली बंसी को निगलकर प्राण देतीहै उसीतरह मै
केशवमूर्ति का हाथ पकड़ कर अपना प्राण खोया ऐसा विचार कर केशी
श्यामसुन्दर का हाथ अपने मुखसे निकालने वास्ते बहुत चाहा जब ह
उनका नहीं निकला तब वह घोड़ा चिल्लाकर पृथ्वी पर गिरपड़ा व
पेट उसका खरबूजे के समान फटकर प्राण निकलगया व रुधिर नदी
तरह बहनेलगा तब देवतों ने उसके मारेजाने से प्रसन्न होकर श्यामसुन्
पर फूल बरसाये व वृन्दावनवासी यह आनन्द देखकर बोले हे नंदला
तुमने बड़े दुष्टको मारकर हमलोगों के प्राण बचाये व नंद व यशोदा
मोहनप्यारे को गोदमें उठाकर उनका मुख चूम लिया व बहुतसा दान
दक्षिणा उनके हाथ से दिलवाया॥

सो॰ बलमोहन दोउ भाय चिरंजीव जोड़ी युगल। देत अशीश मनाय व्रजवासी प्रभुको सबै

जब राजा कंसने हाल मारे जाने केशी का सुना तब वह मारे शोक
अचेत होगया व श्रीकृष्णजी कपटरूप घोड़ा मारने उपरांत थोड़ी दूर आ
जाकर कदम के नीचे खड़ेहुये तब उसीसमय नारदजीने वहां आन
इस तरह पर स्तुति उनकी की हे त्रिलोकीनाथ बहुत अच्छा हुआ
आपने केशीको जोकि सब दैत्योंसे बलवान् था मारडाला हे जगदात्म
परब्रह्म परमेश्वर हे ज्योतिस्स्वरूप अलख भगवन् हे आदिपुरुष निरञ्ज
निराकार चाणूर व मुष्टिक व शल व तोशल पहलवान व राजा कं
अपने भाइयों समेत व दन्तवक्र आदिक उनके मित्र मुझे मृतक दिखला
देते हैं मेरी दण्डवत् आपको अंगीकार हो हे दीनदयालो दुष्टद
हे केशवमूर्ते भक्तवत्सल आप मरा हुआ पुत्र सांदीपन अपने गुरु
यमपुरीसे फेर लेआवेंगे मेरा नमस्कार तुम्हैं पहुँचे हे जगन्नाथ जगजी

हे माधव मुकुन्द अविनाशिन् हे वैकुण्ठनाथ लक्ष्मीरमण ! जरासन्ध व शिशुपाल आदिक अधर्मी राजा व राक्षसों को आप मारकर अठारह अक्षौहिणी दल का महाभारत में नाश करावेंगे मेरी दण्डवत् अंगीकार कीजिये हे कल्याण केशव गिरिधारिन् हे दीनदयालो गोपीनाथ आप समुद्र में द्वारकापुरी बसाकर पाण्डवों को लोक व परलोक का सुख देंगे मेरा नमस्कार लीजिये हे दीनदयालो दैत्यसंहारण कालयमन व भौमासुर आदिको आप मारेंगे और सोलह हजार एकसौ कन्या जो उसने अपना विवाह करने वास्ते इकट्ठी किया है उन्हें विवाहैंगे व रुक्मिणी की इच्छा पूरी करने वास्ते शिशुपाल आदिक राजों को जीतकर उससे विवाह करेंगे व आज के तीसरे दिन राजा कंस को तुम्हारे हाथ से मरा हुआ देखूंगा व इन्द्रपुरी से आप पारिजातक का वृक्ष लाकर सत्यभामा अपनी स्त्री के घर बैठालैंगे व राजा नृगको गिरिगिटान की योनि से छुड़ाकर मुक्ति देवेंगे व स्यमन्तकमणि जाम्ववती कन्या समेत जाम्ववान् भालू के यहां से लाकर उसके साथ अपना विवाह करैंगे हे महाप्रभो अब कंसके अधर्म करनेसे सब यदुवंशी व गौ ब्राह्मणको पृथ्वी पर बड़ा दुःख होताहै सो कृपा करके पृथ्वीका भार उतारिये हे सीतापते मैं तुम्हारी दयासे आप को पहिंचानकर शरणागत हुआ नहीं तो आपकी लीला अपरम्पार का चरित्र कोई नहीं वर्णन करसक्ता पर मैं तुम्हारी दया से इतना जानता हूं कि आप हरिभक्तों को सुख देने व गौ व ब्राह्मणकी रक्षा करने व दैत्य अधर्मी राजोंको मारनेवास्ते वारंवार संसारमें सगुण अवतार लेकर पृथ्वी का भार उतारते हैं ॥

चौ० या विधि से तुमको पहिचानी। निशिदिन शरण तुम्हारी जानी ॥
सदा फिरों तुम्हरे रँग राता। हितसों गुण गावों दिनराता ॥
कृपा करो मेरो भ्रम टारो। भवसागर ते पार उतारो ॥
बार बार बहु बिनती कीन्हों। नमस्कार करि आयसु लीन्हों ॥

दो० कालरूप शिशुपालके मारन प्रभुगोपाल। नित नव लीला करतहैं ब्रजमें मोहनलाल ॥

जब इसीतरह नारदजी तीनों काल के जाननेवाले ने बहुत स्तुति

श्यामसुन्दरकी की और उनसे विदा होकर ब्रह्मलोक को चलेगये
वृन्दावनविहारी ग्वालवालों को साथ लिये भाण्डीरवटके नीचे बैठ
आप राजा बने व बाजे ग्वालबालों को मंत्री व किसी को दीवान
बाजे को सेनापति व किसी को सिपाही बनाकर फलबुझौवल खेल
लगे व राजा कंस जब चैतन्य हुआ तब उसने व्योमासुर को बुलाकर क
सुनो मित्र मुझे श्याम व बलराम से अपने प्राण का खटका दिन रा
रहता है सो मैंने जितने दैत्य उनके मारने वास्ते भेजे सबको उन्हों
मारडाला अब तुम्हारे समान कोई दूसरा शूरवीर मुझे दिखलाई नहीं दे
इसलिये तुम मेरे वास्ते वृन्दावन में जाकर श्याम व बलराम को मारआ
तो तुम्हारा बड़ा उपकार मानूंगा यह सुनकर व्योमासुर बोला महाराज
अपना तनु तुम्हारे ऊपर न्यवछावर समझकर अपनी सामर्थ्य भर तुम्हा
आज्ञा पालन करूंगा जो सेवक अपने स्वामी की आज्ञा पालन करै उस
लोक व परलोक दोनों बनता है ऐसा कहकर व्योमासुर कंससे बिदा हु
व ग्वालरूप धरकर जहां केशवमूर्ति खेलते थे तहां आया व उसने हा
जोड़कर मोहनप्यारे से विनय किया महाराज मैं भी तुम्हारे साथ खेल
चाहता हूं यह वचन सुनतेही श्यामसुन्दर अन्तर्यामी ने उस कपटरू
ग्वालको पहिंचान कर कहा तुम अपना संदेह छोड़कर जिस खेलवा
कहो वही खेल हम तुमसे खेलैं कपटरूपी ग्वाल बोला जिस तरह भेड़ि
अपनी पीठ पर भेड़ी उठाकर भाग जाता है उसी तरह एक लड़का दू
बालक को पीठपर चढ़ाकर दौड़े यही खेल खेलो मुरलीमनोहर ने क
बहुत अच्छा जब मोहनप्यारे व्योमासुर को साथ लेकर फलबुझौवल
आंखमुँदौवल खेलने लगे तब वह कपटरूपी ग्वाल बहुत लड़कों को
उसे नहीं पहिंचानते थे छिपती समय एक एक को उठाकर पर्वत
कंदरा में रख आया व उस कंदरा के द्वारेपर शिला धरदी जब सब ग्वाल
को कंदरा में छिपा आया व श्यामसुन्दर अकेले रहगये तब कपटरू
ग्वाल ललकार कर बोला हे मोहनप्यारे आज तुमको सब यदुवंशी
ब्रजवासियों समेत मारकर राजा कंसकी आज्ञा पालन करूंगा ज

व्योमासुर ग्वाल तन छोड़कर अपने निज रूपसे श्रीकृष्णजी को मारने वास्ते झपटा तब दैत्यसंहारणने उसका गला दबाकर पशुकी तरह लात व मुक्कोंसे मारडाला व ग्वालवालों को कंदरा में से निकाल लाये उस समय देवता व विद्याधरों ने श्यामसुन्दर पर फूल वर्षाकर बड़ा आनन्द मचाया सन्ध्या समय केशवमूर्ति गौ व ग्वालवालों समेत मुरली बजाते आनन्द मचातेहुये अपने घर आये उसी दिन रातको नन्दरानी ने ऐसा स्वप्न देखा कि आज श्याम व बलराम वृन्दावन में नहीं हैं कहीं चलेगये यह स्वप्न देखतेही पहिले नन्द व यशोदा ने बड़ा शोच किया फिर स्वप्नेकी बात झूठी समझकर अपने मनको धैर्य दिया ॥

अड़तीसवां अध्याय।

अक्रूर का लेजाने वास्ते श्याम व बलराम के वृन्दावन में पहुँचना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित कार्त्तिक वदी द्वादशी को केशी व व्योमासुर दैत्य मारेगये व उसीदिन प्रातसमय जब अक्रूर कंस के रथपर चढ़कर वृन्दावन को चले तब वह राहमें विचार करने लगे देखो इस जन्म तो मुझसे कोई शुभ कर्म नहीं हुआ आजतक मेरा जन्म कंस अधर्मी की संगति में बीता पिछले जन्म न मालूम कौन ऐसा यज्ञ व तप मैंने किया था जिस पुण्य से उन चरणों का दर्शन जिनकी धोवन गंगा जी होकर तीनों लोकों को तारती हैं पाऊंगा जिन चरणों का ध्यान ब्रह्मादिक देवता व सनकादिक ऋषीश्वर आठों पहर अपने हृदय में धर कर उनकी रज मिलने वास्ते दिन रात चाहना रखते हैं वही धूर अपने मस्तक पर चढ़ाकर भवसागर पार उतर जाऊंगा ॥

दो॰ शिलाशाप मोचनकरण हरण भक्त उरपीर। आज देखिहौं वह चरण सकल सुखनके हीर ॥

जिसतरह पापी लोग सत्संग करनेसे कृतार्थ होजाते हैं उसी तरह मेरा भाग्य भी उदय हुआ जो कंसने मुझे श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द के लेने वास्ते भेजा इसी बहानेमें भी मोहनीमूर्तिकी छवि देखतेही अनेक जन्मके पापों से छूटकर लोचनोंका फल पाऊंगा नहीं तो मुझ ऐसे पापी संसारी माया जाल में फँसे हुये लोभी को उन परब्रह्म परमेश्वर का दर्शन कहां

मिलता यह सब उन्हीं वैकुण्ठनाथ की कृपा से संयोग हुआहै राजा कं
मेरे ऊपर बड़ी दया की जो इस काम के वास्ते मुझे भेजा जिस आदिपु
भगवान्ने कालीनागको नाथकर उसके मस्तक पर नृत्य किया व नन्द
गौ चराकर गोपियोंके साथ रासमण्डल खेला व देवतोंके वास्ते तीन
पृथ्वी राजा बलिसे दान लिया व देवलोक का राज्य इन्द्रादिक देवतों
दे डाला वही वैकुण्ठनाथ अपना बालचरित्र ब्रजवासियों को दिखला
अनेक तरह का सुख उन्हें देतेहैं जिन चरणों के दर्शनवास्ते लक्ष्मी
नारदमुनि व मार्कण्डेय व अम्बरीष आदिक बड़े बड़े ऋषीश्वर व महा
चाहना रखतेहैं उन चरणों का दर्शन व स्पर्श सहज में ग्वालबाल
गोपियों को प्राप्त होताहै इसलिये वृन्दावनवासियों का बड़ा भाग्य स
मझना चाहिये ॥

दो० निराकार निरलेपके भेद न जानै कोय । जो करता सब जगत के माखनभखुहैं सो

आज मुझको अच्छे अच्छे सगुन दिखलाई देकर हरिण मेरे दाहि
ओर से बायें चले आवते हैं इसलिये अवश्य मुझे नारायणजी का द
मिलेगा हे मन वह आदिपुरुष अविनाशी सबसे पहिले थे व महाप्र
होने उपरांत भी वही स्थिर रहैंगे कदाचित् तुझे इस बात का सन्देह हो
आदिज्योति भगवान् ने किसवास्ते संसार में जन्म लिया तो कभी ऐ
मत समझना उन्होंने केवल वास्ते सुख देने अपने भक्त व भवसागर
उतारने संसारी जीव व मारने दैत्य व अधर्मी व भार उतारने पृथ्वी
अपनी इच्छासे जन्म लियाहै उनके भेद व महिमा को कोई पहुँचने न
सक्ता वह अन्तर्यामी सब भले व बुरे के उत्पन्न करनेवाले होकर संसा
माया से रहित हैं उनको सतोगुण व रजोगुण व तमोगुण नहीं व्याप
और वृन्दावनकी महिमा वैकुण्ठसे अधिक जान कर ग्वालबालोंको ब्र
व महादेव से छोटा न समझना चाहिये ॥

क० एक रजरेणुकापै चिन्तामणि वारिडारों लोकनको वारों सेवा कुंजके विहारपै ।
लतनके पातनपै कल्पवृक्ष वारिडारों रमाहू को वारिडारों गोपिनके द्वारपै ॥
ब्रजकी पनिहारिनपै शचीरची वारिडारों वैकुंठहूको वारिडारों कालिन्दी के घाटपै ।
कहै अभयराम एक राधाजू को जानतहौं देवनको वारिडारों नन्दके कुमारपै ॥

व दैत्यलोगों को बड़ा भाग्यमान समझकर परमेश्वर की दया उनपर भी जाननी चाहिये किस वास्ते कि जब नारायणजी उनका वध करते हैं तब वह स्थान वैकुण्ठ में रहने वास्ते उन्हें मिलता है वहां हजारों वर्ष तपस्या करने पर भी मनुष्य नहीं पहुँचने सक्ता और रावण व हिरण्याक्षकी कथायें जो उनके हाथ से मारेगये थे इस बातकी साक्षी हैं किस वास्ते कि श्यामसुन्दर के डर से उनके शत्रुओं को दिन रात अपने प्राण का भय रहकर किसी क्षण उनका रूप चित्त से नहीं उतरता इसी कारण वह लोग मुक्ति पाते हैं देखो मेरा भाग्य उदय हुआ जिस रूप को देखने वास्ते बड़े बड़े योगीश्वर व महात्मा तीनों लोकों की चाहना रखते हैं उस मोहनीमूर्ति को देखकर अपना जन्म स्वार्थ करूंगा व पहिले ग्वालबालों को जो दिन रात श्यामसुन्दर का दर्शन करते हैं दण्डवत् करूंगा फिर शिर अपना उन चरणों पर धरकर वह रज अपने मस्तक पर चढ़ाऊंगा जो धूरि ब्रह्मादिक देवतों को जल्दी नहीं मिलती जब वह दीनानाथ जगत् के मुक्ति देनेवाले दया से अपना हाथ मेरे मस्तक पर धरकर मुझे उठावेंगे तब अपने बराबर किसी तपस्वी व ज्ञानी का भाग्य नहीं समझूंगा पर मैं एक बातसे बहुत डरता हूं कदाचित् मुझे कंस का भेजा हुआ जानकर ऐसा न करैं सो यह सन्देह करना न चाहिये जिस तरह मैं मनसा वाचा कर्मणा से उनकी भक्ति रखकर उन्हें अपना स्वामी जानता हूं उसी तरह वह अन्तर्यामी भी मुझे अपना दास जानकर दया करैंगे॥

दो० हरिदासनको दासहौं मन में करि विश्वास। कंसदूत नहिं जानिहैं माखन प्रभु सुखरास॥

जब वह करुणानिधान मेरा हाथ पकड़कर घर में लेजावेंगे तब मैं अपने समान किसी को नहीं समझकर सब हाल कंस का सच्चा सच्चा उनसे बतलादूंगा संसारी जवों को मायारूपी रस्सी में बँधे रहने से मुक्ति होना कठिन है पर वही दीनदयालु मुझे अपना जातिभाई समझकर अवश्य भवसागर पार उतार देवेंगे जिस समय वह अपनी कृपा से मुझे चाचा कहकर पुकारेंगे उस समय बड़े बड़े महात्मा मेरे ऊपर डाह करेंगे॥

दो० हे मन तू मति शोच कर ई तनहीं को लाज। आपुहि काज सँवारि हैं माखन प्रभु ब्रजराज॥

जब अक्रूर इसी तरह विचार करता हुआ तीन कोस रस्ता दिन भां
काटकर संध्या समय वृन्दावन के निकट पहुँचा और उसने वहां पृथ्वी
श्रीकृष्णजी के चरणों का आकार जिसमें गदा व पद्म व शंख व चक्र
ध्वजा के चिह्न थे देखा तब रथ ते उतरकर उन चरणों की धूरि अपने शि
व आंखों में लगाई व उस जगह दण्डवत् करके बोला जहां पर तुम्ह
चरणों का आकार रहता है वहां बड़े बड़े ज्ञानी व ऋषीश्वर सदा दण्ड
किया करते हैं जब अक्रूर को इसी विचार में प्रेम उत्पन्न होकर आंखों
आंसू बेपरवाह बहने लगे तब सब गोप व ग्वाल सच्ची प्रीति उसकी देख
अपने अपने प्रेम का घमण्ड भूलगये पर अपना बड़ा भाग्य समझ
आपस में कहने लगे देखो जिन चरणों की धूरि अक्रूर अपने मस्तक
चढ़ाते हैं उन चरणों की सेवा हमलोग दिन रात करते हैं इतनी क
सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् उसी समय मुरलीमनोहर पीताम
पहिने फूलों का गजरा गले में डाले बलरामजी व ग्वालबालों समेत वन
गौ चराकर हँसते हुये वृन्दावन के निकट पहुँचे॥

दो० माखन प्रभुमुख देखिके रोम रोम सुखपाय। प्रेमभाव से मगन ह्वै परेउ चरण पर धा

हे परीक्षित अक्रूरने कभी श्याम व कभी बलरामके चरणोंपर शिर
कर इस तरह आंसूसे चरण उनका धोया जिसतरह संसारीजीव ऋषी
व महात्माके आने से पांव उनका धोते हैं जब थोड़ी देर बीते रोना अ
का कम हुआ तब उसने हाथ जोड़के विनय किया महाराज मैं अ
यादव तुम्हारा दास हूं यह वचन सुनतेही श्यामसुन्दर उसे अपना
समझकर शिर उसका पैरपरसे उठाने लगे पर वह उनके प्रेममें ऐसा म
था कि उसको अपने तनुकी सुधि नहीं रही शिर कौन उठावे इसलि
श्याम व बलरामने प्रीतिपूर्वक अपने हाथोंसे उसका शिर पकड़कर उठा
और उसको चाचा कहकर बड़े आदरसे भीतर लेगये व नंदराय अ
के गले मिले जब मोहनप्यारे बड़े प्रेमसे आसनपर बैठाकर अपने ह
उनका चरण धोनेलगे तब वह लज्जावश होकर पैर अपना मुरलीमनो
की ओर से खींचने लगा पर श्यामसुन्दर पांव उनका न छोड़कर

हे चाचा तुम हमारे पिताकी जगह हो इसलिये तुम्हारी सेवा करना हमको उचित है ऐसा कहिकर श्रीकृष्णने अक्रूरका चरण धोया व उनके शरीर में अतर व चंदन लगाकर बड़े प्रेमसे छत्तीस व्यञ्जन खिलाया व हाथ धुला कर पान व इलायची दिया जब अक्रूर भोजन करके पलँग पर लेटे तब श्याम व बलराम उनका पांव दाबने लगे व नंद व उपनंद आदिक ने अक्रूरजीके पास आनकर पूछा कहो वसुदेव व देवकी कैसे हैं व राजा कंस किसतरह प्रजाका पालन करताहै हमारे जानकारीमें जबतक कंस अधर्मी जीवेगा तबतक गौ व ब्राह्मण व प्रजाको उसके हाथसे सुख नहीं मिलेगा जहांका राजा निर्दयी व अधर्मी हो वहां की प्रजा सुखसे नहीं रहती जिस कंसने छः बालक अपनी बहिनके बिना अपराध मारडाले उसको वधिकसे अधिक समझना चाहिये यह सुनकर अक्रूर बोले जबसे कंस उत्पन्न हुआ तबसे यदुवंशी व प्रजालोग दुःख पाते हैं जिसतरह बकरीके गोलमें एक भेड़िया रहने से उनको अपने प्राण का डर लगा रहताहै उसीतरह मथुरा-वासियों को कंसके जीने तक सुख नहीं मिलेगा उसका हाल सब तुम्हें मालूम हैं और हम क्या कहें ॥

उन्तालीसवां अध्याय ।

अक्रूरके साथ श्याम व बलरामका मथुरामें जाना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जब नन्द व उपनन्द अक्रूरसे मथुराका हाल पूछकर अपने अपने स्थानपर गये तब श्याम व बलराम जैसा विचार राह में अक्रूरजी करते जाते थे वैसा सन्मान करके पूछा अय चाचा आप दया व प्रीतिकी राह हमको देखनेवास्ते आये हो सो आपने बहुत अच्छा किया पर तुमने हमारे चरणोंपर जो तुम्हारे लड़कोंके समानहैं किसवास्ते गिरकर हमें दोष लगाया हमको तुम्हारी सेवा करनी चाहिये भला यह तो बतलाओ मथुरावासियों का दिन किसतरह कटता है व वसुदेव व देवकी हमारे माता पिता अच्छीतरह हैं व राजा कंस मेरा मामा बड़ा पापी यदु-कुल में उत्पन्न हुआ है जो गो ब्राह्मण व यदुवंशियों को दुःख देकर नाश करता है व हमें वसुदेव व देवकी के फिर कैद होने का समाचार सुनकर

वड़ा शोच हुआ सच पूछो तो वह लोग हमारे वास्ते इतना दुःख पाते हैं हमको गोकुल में लेआकर न छिपाते तो इतना कष्ट क्यों पाते जब वह हमारी याद करते होंगे तब उनको बहुत दुःख होता होगा बड़ा आश्चर्य है कि देवकी के छः पुत्र मारने व इतना पाप बटोरने पर भी कंसका मन अधर्म करनेकी ओरसे नहीं फिरा और यह बतलाइये कि आपका आना यहां किसकारण हुआ व तुम्हें चलते समय राजा कंसने क्या कहा यह वचन सुनतेही अक्रूरने खड़े होकर हाथ जोड़के विनय किया हे वैकुण्ठ नाथ अन्तर्यामिन् कंसके अनीति करनेका हाल आपको मालूम है मैं क्या कहूं कंस वसुदेव व उग्रसेनका प्राण लेने वास्ते नित्य इच्छा करता है पर वह लोग आजतक तुम्हारी कृपासे बचे जाते हैं व कंसका हाल जो कुछ आपने सुना सो उसीतरह परहै जब वृषभासुर दैत्य आपके हाथसे मारागया तब नारदमुनिने आनकर कंससे कहा तेरी मृत्यु श्रीकृष्णजीके हाथहै और वह नन्द व यशोदाके बालक न होकर वसुदेव देवकीके पुत्र हैं यह हाल सुनकर कंसने वसुदेव व देवकीको फिर कैद किया व उसी दिनसे तुम्हारे प्राण मारने के उपाय में रहकर धनुषयज्ञके बहाने तुम दोनों भाई व नन्दजी आदिक को मुझे बुलाने वास्ते भेजा है यह बात सुनतेही श्यामसुन्दरने बलरामजीकी ओर देखकर हँसदिया व नन्दराय से कहा अय बाबा अक्रूरजी यदुकुल में बड़े महात्मा होकर कंसकी आज्ञानुसार धनुषयज्ञका उत्सव देखनेवास्ते हमलोगोंको बुलाने आये हैं इनके साथ जाने में बहुत अच्छा होगा सो तुम भी गोपग्वालों समेत घी व दही व माखन आदिक भेंट लेकर चलो ॥

दो० माखनप्रभुकी बातयह सुनिकैगोपीग्वाल। गये सकल मुरझाय तनु भयेविकलतेहिकाल॥

हे राजन् नन्दराय श्रीकृष्णजीके वचनकी कई बेर परीक्षा लेचुके थे इस लिये उनके वचनका टुलखना उचित नहीं जाना व नन्द व यशोदा स्वप्न की बात याद करके शोच करने लगे पर श्यामसुन्दरकी इच्छानुसार नन्द जीने वृन्दावनमें ढिंढोरा पिटवाकर सब ग्वालबालोंको कहला भेजा कि राजा कंसने धनुषयज्ञ का उत्सव देखनेवास्ते हमलोगों को बुलाया है सो

कल्हि प्रातसमय सब ग्वालवाल दूध व दही व घी व माखन आदिक लेकर मथुराको चलें जब यह समाचार गोपियोंने सुना कि श्यामसुन्दर मथुराको जाते हैं तब वह सब मोहनप्यारेका वियोग समझकर मृतकके समान होगईं व उनके घरों में ऐसा रोना व पीटना होने लगा कि जैसे किसीका प्राणी मर जावे॥

दो० ठौर ठौर ऐसी दशा कहत न आवै बैन। बढ़ी श्याम बिछुरन व्यथा ढुरत उमँगि जल नैन॥

सो० फिरत विकलसवग्वाल पूछतएकहिएकसों। चलनचहत नँदलाल मनमलीनव्याकुल सबै॥

फिर सब गोपियां ठौर ठौर बैठकर आपसमें कहने लगीं देखो यह क्या प्रलय हमारेऊपर आया एकक्षण विरह मोहनप्यारेका हमसे सहा न जाकर उनके देखे विना चैन नहीं पड़ती थी सो अब वह मथुरा जातेहैं उनके वियोग में हमारा प्राण कैसे बचैगा इस अक्रूर मूर्ख को क्या प्रयोजन था जो हमलोगों का प्राण लेने वास्ते आया सच पूछो तो श्रीकृष्णजी ने हमारी प्रीति से मन अपना खींच लिया नहीं तो उनको मथुरा जाने का क्या प्रयोजनहै व नन्दलालजी न जावें तो राजा कंस उनका क्या करैगा तब दूसरी गोपी बोली परमेश्वरकी दयासे आज कोई बड़ा मनुष्य वृन्दावनमें मरजाता या कोई दूसरा कारण होकर हमारा चित्त चुरानेवाला कल्हि मथुराको न जाता तो बहुत अच्छा होता दूसरी अपनी छाती पीट कर कहने लगी बड़ा शोच है जो प्राणप्यारा मुझसे अलग होगा॥

चौ० अब हरि जब मथुरा को जैहैं। तनु बिनु प्राण कौन विधि रैहैं॥

दूसरी गोपी बोली मुझे केशवमूर्तिके देखनेसे तीनों लोकोंका सुखप्राप्त होताथा अब विना देखे उनके किसतरह चैन पड़ेगी दूसरी बोली जब वह एकवेर आंख उठाकर मेरी ओर देखते थे तब मैं बहुत आनन्द होकर अपने बराबर किसीको नहीं समझती थी उनके जाने उपरांत मेरी क्या दशा होगी दूसरी ने कहा हे ब्रह्मन् तुम बड़े कठोर हो जो पहिले मोहनप्यारेसे प्रीति लगाकर अब उनके विरहसागर में मुझे डुबाना विचार कियाहै जिसतरह दूरसे कोई प्यासा पानी देखकर पीने वास्ते जावै और वहां पहुँचकर उसे बालू दिखलाई देवे वही गति हमारी हुई राम व कृष्ण

दोनों नेत्र हमारे चले जायँगे तो हमलोग विना आंख के जीकर क्या करेंगी श्याम व बलराम विना एक क्षण हमारा जीना कठिन है ॥

दो० जो राजनके राजहैं माखनप्रभु व्रजराज। अब जीवैं कैसे सखी वह छूटतहैं आज॥

हे राजन् इसीतरह सब व्रजबाला विरहकी माती हुई अपने अपने मनका हाल एक दूसरीसे कहकर विलाप करती थीं जब रातभर उनको मछलीके समान तड़पते बीत गई तब प्रातसमय सब गोप व ग्वाल वृन्दावनवासियों ने गोरस आदिक गाड़ी व बैलोंपर लदवा दिया व भैंसा व भेंड़ा व बकरा भेंटके वास्ते लेकर नन्दजी के द्वारपर आये व जिस जगह अक्रूरजी श्याम व बलरामको अपने आगे बैठाकर तय्यारी चलनेकी करते थे वहां पर सब स्त्री व पुरुष बालक व बड़े जानकर मोहनप्यारे के वियोग में अपनी अपनी आंखों से जलकी धारा बहाने लगे व इतना रोये कि उनके आंसू बहने से पृथ्वी वहांकी कीचड़के समान्द होगई और उन लोगोंने आपसमें कहा देखो कंस अधर्मी के राज्यमें सुख व आनन्द स्वप्न होगया व सब व्रजबाला उनके चौगिर्द खड़ी होकर बड़ी करुणा से कहने लगीं हे व्रजनाथ तुम किसवास्ते हम लोग अबला अनाथनको अपने विरहसागरमें डुबाकर प्राण लिया चाहते हो सब वृन्दावनवासियों का जीना तुम्हारे आधीन है जिसतरह हाथकी लकीरें कभी नहीं मिटतीं उसीतरह भले मनुष्यकी प्रीति कभी नहीं घटती जैसे बालूकी भीति नहीं ठहरती वैसे मूर्खकी प्रीति नहीं निबहती हे गोपीनाथ हमलोगोंने तुम्हारा क्या अपराध किया जो हमें पीठ दिखाकर चले जाते हो ॥

दो० एक सखी ऐसे कहै मैं शोचत मनमाहिं। ये सुत यशुदा नन्दके हमैं छोड़िहैं नाहिं॥

गोपियां ऐसा श्रीकृष्णजी को कहकर अक्रूरसे बोलीं हे अक्रूर तुम हमलोगोंका दुःख न जानकर जिसके आधीन हमारा प्राणहै उसे अपने साथ ले चले अब हमारा जीवन कैसे होगा क्यों ऐसा करते हो ऐसे जीने से तुम हमारा वध करडालते तो अच्छा था व अक्रूर दयावन्त को कहतेहैं सो तुम अपने नामके विपरीत कठोरताई करतेहो जैसा दुःख राजा कंसने हमलोगोंको दिया उसका दण्ड श्यामसुन्दरसे पावैगा दूसरीने

कहा देखो ब्रह्मा हमको स्त्रीका तनु देकर हमारे ऊपर कुछ दया नहीं करते भवँररूपी आंख हमलोगोंकी कमलरूपी मुखारविन्द मोहनप्यारेका देखने वास्ते दिन रात चाहना रखतीथीं कहो अब किसतरह इन नयनोंको विना देखे सांवली सूरति मोहनीमूरति के चैन मिलैगा ॥

दो॰ माखनप्रभुको रूपरस पियत रहीं जो नित्त। अब खारी जल कूपको किहि विधि आवै चित्त॥

दूसरी सखी बोली सच पूंछो तो ब्रह्मा व अक्रूरका क्या दोषहै यह सब कठोरताई श्यामसुन्दरकी समझना चाहिये कि उनका चित्तभी शरीरके समान कालाहै हम लोगोंने कुल व परिवारकी प्रीति छोड़कर अपना प्रेम उनसे लगाया था सो अब वह हमैं इस दुःखसागरमें छोड़कर चले जातेहैं मथुरानगरकी स्त्रियां दिन रात मोहनप्यारे के भेंट होनेकी इच्छा मनमें रखकर परमेश्वरसे वरदान मांगती थीं सो अब नारायणजी ने विनय उनकी सुनी व दूसरीने कहा वहांकी स्त्रियां रूप व गुणसे भरीहैं श्यामसुंदर उनकी प्रीतिमें फँसकर वहां रहजावेंगे व हम लोगोंको भूलकर यहां क्यों आवेंगे उन स्त्रियोंका बड़ा भाग्यहै जो मनहरणप्यारेके साथ सुख उठावेंगी न मालूम हमारे तपमें क्या भूल पड़ी कि हमसे नंदलालजी विछुड़ते हैं दूसरी बोली आज अच्छे शकुन मथुराकी स्त्रियोंको हुये होंगे कि वह लोग श्यामसुन्दर का दर्शन पाकर अपने लोचनोंका फल प्राप्त करेंगी दूसरीने कहा श्रीकृष्णको किसी ने मथुरामें नहीं बुलाया उनका मन वहांकी स्त्रियां देखनेवास्ते चाहताहै इसीवास्ते यह वहाना करके जातेहैं दूसरीने कहा इस चित्तचोरने हमलोगोंके साथ कौन भलाई की है कि वहांकी स्त्रियों से करेंगे रूपवान् लोग अपनी सुन्दरताई के अभिमान से किसीको कुछ वस्तु नहीं समझते दूसरी व्रजवाला वोली वृन्दावनवासियोंके बुरे दिन आये और मथुरावासियों का भाग्य उदय हुआ इसीवास्ते मोहनप्यारे वहां जाते हैं दूसरीने कहा यह अक्रूर हमारे वास्ते यमराजका दूत वनकर आयाहै जिसतरह किसी भूखेके आगे ग्रास उठाती समय कोई थाली भोजनकी खींच लेवे उसीतरह श्यामसुन्दरको हमसे विलग करताहै यह कौन न्यायकी वातहै जो मछलियों को पानीसे

निकालके गर्म वालूपर डालदेवे कदाचित् हमें दुःख देने से उसको कुछ मिलता होगा इसलिये ऐसा करताहै॥

दो॰ जो दुख देवै जीवको महाकष्ट वह पाय। बोवै बीज बबूलको आम कहांते खाय॥

दूसरीने कहा हे प्राणप्यारी इसमें किसीको दोष देना न चाहिये हमारे खोंटे दिन आने से प्राणप्यारे जातेहैं हमारा भाग्य अच्छा होता तो अक्रूर क्यों आवता जिस समय गोपियां अपने अपने विरहका दुःख एक दूसरीसे कहरही थीं उसीसमय श्याम व बलराम चलने के वास्ते रथपर चढ़े तब व्रजबालोंने कहा देखतीहो श्रीकृष्णजी हमारे रोने व विलाप करने पर कुछ दया न करके मथुरा जानेको तय्यार होगये॥

दो॰ माखन प्रभु आनन्दसों चढ़ि बैठे रथमाहिं। बहुत भलो है सारथी अजहूं हांकत नाहिं॥

दूसरी बोली हम सब अपने कुल व परिवार की लज्जा छोड़ चुकी हैं जब रथ यहां से चलै तब श्यामसुन्दरकी फेंटपकड़कर रोंक रक्खो जिसमें वह जाने न पावैं यह सुनकर दूसरी ने कहा प्यारी तू सच कहती है जब प्राण मेरा केशवमूर्ति ने हर लिया तब उन्हें किस तरह जाने देंगी जिस लाज के मारे परमेश्वर का वियोग हो उसे भरसाईं में डारदें इस समय लज्जा करने में पीछे बहुत दुःख उठाना पड़ैगा दूसरी बोली हमलोग बौरही होकर पड़ी रहैं और वह मथुरा की स्त्रियोंसे जाकर चैन उड़ावैं यह बात कैसे होने पावैगी हमें लाज से कुछ काम न होकर अपना अर्थ साधना चाहिये दूसरीने कहा हम लोगों को इस मोहनीमूर्ति के देखने से सुख मिलता था सो अब जाते हैं भला दिनभर तो हम समझैंगी कि गो चराने वन में गये हैं सन्ध्या को विना चांदनी उनके हमारा प्राण कैसे बचेगा दूसरी बोली हे सखी उस दिन देखो रातकी वात तुझे याद है या नहीं जब श्यामसुन्दर ने हम लोगों के साथ रासलीला करके हमें सुख दिया था दूसरीने कहा हे सखी जो कोई इनकी लीला भुला देवे उसे पशु समझना चाहिये दूसरी बोली जब सन्ध्या समय वृन्दावनविहारी वन में गो चराकर घर आवते थे तब उनके घूंघुरवाले बालों पर धूरि पड़ी हुई कैसी शोभा देती थी व हम लोग मार्ग में बैठकर उनका दर्शन पाती

थीं तब उनकी छवि देखने व वंशी सुनने से कैसा आनन्द मिलता था बताओ अब वह सुख किसतरह प्राप्त होगा हे राजन् इसीतरह सब व्रजबाला बौरहों के समान अपने अपने विरह का हाल श्याम व बलराम व अक्रूर को सुनाकर विलाप करती थीं व लाज छोड़कर बारम्बार कहती थीं हे माधव हे मुकुन्द हे गोविन्द हे दीनदयालु हे केशवमूर्ति हे गोपी-नाथ हे श्यामसुन्दर हे मुरलीमनोहर हे श्रीकृष्ण हे व्रजनाथ हे दुःखभञ्जन परमेश्वर के नाम पुकारकर उन्हें अपना दुःख सुनाती थीं उस समय उनका रोना व विलाप देखकर कौन ऐसा चैतन्य जीव वहां था कि जिसने आंसूकी धारा अपनी आंखों से नहीं बहाया जब जड़रूप वृक्षों से भी उनका दुःख नहीं देखा गया तब जड़ से डाली तक मारे शोचके हिलने लगे व अक्रूर उन सबों की यहदशा देखकर राजा कंसकी आज्ञा व अपने तनुकी सुधि भूलगया जब उनका विलाप उससे नहीं देखागया तब उसने रथपर चढ़कर हांकना चाहा उस समय व्रजवालों ने दौड़कर रथ पकड़ लिया व बड़ी करुणा से विनय किया हे गोपीनाथ तुम किसवास्ते हम लोग अबला अनाथ को अपने विरहसागर में डुबाकर प्राण लिया चाहते हो हमें भी अपने साथ ले चलो तो धनुषयज्ञ का उत्सव व राजा कंसको देख आवें हम लोगों ने अपना कुल परिवार व लोकलाज छोड़-कर तुमसे प्रीति लगाई तिसपर तुम क्यों ऐसे निर्दयी होकर हमारा प्राण लेते हो तुम अक्रूर के साथ जो रथ साजकर आया है न जाव तो कंस तुम्हारा क्या करैगा अक्रूर अपना मुख काला करके फिर जायगा हे राजन् उसी समय एक ओर तो गोपियों की यह दशा थी दूसरी ओर से यशोदा रोती हुई आनकर बोलीं हे अक्रूर तुम मेरे प्राणप्यारों को किस वास्ते ले जाते हो इनके बिना मैं किस तरह जीवोंगी ॥

दो० कहा धनुप यह देखिहैं बालक अतिअज्ञान। कियो नृपति कछु कपट यह पड़त मोहिं यों जान ॥
सो० मैं नहिं देहौं जान मोनिर्धन के श्याम धन। लेहि कंस वरु प्रान को जीवै नँदनन्द बिनु ॥

क० प्राणके अधारे मेरे बारे ये पधारे चाहैं भूपके अखारे जहां भारे सजे शूरमें।
पीर बढ़ी है शरीर डूबते वियोग नीर कैसे कैसे धरौं धीर प्रेम के अधीरमें ॥

डारै वरु कंस कारागार में जँजीर भरी येरी बीर जरिजाव धन धाम चूरमें।
जोपै ये कन्हैया बलभैया दोऊ लाल मेरे खेलैं करि मैया बैन नैनके हजूरमें॥

व रोहिणी रोकर कहने लगी श्याम व बलराम व्रज गोकुल के जीवन आधार हैं इनके जाने से हम लोग कैसे जीवैंगी फिर यशोदा बहुत विलाप करके बोली अय मोहनप्यारे तुम हमारी प्रीति छोड़कर क्यों जाते हो मैं तुम्हारे ऊपर न्यवछावर होकर कहती हूं कि अपनी जननीको छोड़कर मति जाव तुम्हारे देखे विना मुझसे एक क्षण नहीं रहाजायगा जब यशोदा के यहसब कहने पर भी केशवमूर्ति रथसे नहीं उतरे तब वह पृथ्वी पर गिरपड़ी व अतिविलाप करके कहने लगी अय प्राणप्यारे तुम कठोर होकर मेरा प्राण लिया चाहते हो अक्रूर मुझे मारने वास्ते वृन्दावन में आनकर मेरे बुढ़ौती समय की लकुटिया छीनकर लिये जाता है अय वेद्य तुमको भी कुछ दया नहीं आवती जो मुझे इसतरह छोड़कर चले जाते हो हेराजन् जब इसीतरह यशोदा व रोहिणी व गोपियां रथ पकड़कर रोने लगीं तब मोहनप्यारे हँसते हुये रथपर से उतरकर बोले तुम लोग मति चिन्ता करो एक मनुष्य तुम्हारे पास भेजूंगा उस समय यशोदा श्यामसुन्दर को गले लगाकर बड़ी करुणा से बोलीं अय बेटा तुम जल्दी धनुपयज्ञ देखकर यहां चले आवना वहां किसी से प्रीति लगाकर अपनी जननी को भूलि मति जाना यह सुनकर मुरलीमनोहर ने यशोदा को बहुत धैर्य दिया व श्रीदामा ग्वाल से कहा कि तुम गोपियों से कहिदेव शोच न करें मैं फिर मिलूंगा जब मोहनप्यारे इसीतरह सबको धैर्य देकर व माता को दण्डवत् करके रथपर चढ़े तब नन्दजी ने यशोदा व गोपियों से कहा तुम लोग उदास मति हो मैं श्याम व बलराम को धनुषयज्ञ दिखलाकर अपने साथ लेआऊंगा परमुझे इस बातका डर है कि राजाकंस बलराम व कृष्ण से कुछ कपट न करै यह बात सुनकर एक बूढ़े मनुष्य ज्ञानी ने कहा अय नन्दजी श्यामसुन्दर परब्रह्म परमेश्वर का अवतार हो कर इन्होंने पृथ्वी का भार उतारने वास्ते जन्म लिया है यह राजा कंस को क्या समझते हैं काल की भी मृत्यु इनके हाथ है यह वचन सुनकर

नन्दादिक को धैर्य हुआ इतनी कथा सुनकर परीक्षित ने पूंछा हे मुनिनाथ बड़ा आश्चर्य है कि अक्रूर ने यह दशा यशोदा व गोपियों की देखकर उन्हें कुछ धैर्य नहीं दिया शुकदेवजी बोले हे राजन् उस समय अक्रूर ने इतना गोपियों को कहा था कि श्यामसुन्दर फिर भेंट करके तुम्हें सुख देवेंगे जब अक्रूर ने सब को रोते छोड़कर रथ श्याम व बलराम का मथुरा की ओर हांका व नन्दजी ग्वालबालों समेत गाड़ी आदिकपर बैठकर उसके साथ चले तब यशोदा बड़े विलाप से कहने लगीं॥

चौ० मोहन इधर देख तो लीजै। बिछुरत लाल हमैं कछु दीजै॥
लेहु निहारि जन्मको खेरो। बहुरि बिरजमें होत अँधेरो॥
यह कहि ग्वाल सखनको फेरो। अपनी गाय जायके घेरो॥
ऐसे कहि यशुमति बिलखाई। किये यत्न बहु प्राण न जाई॥
तलफत विकल राम महतारी। अति व्याकुल सब व्रजकी नारी॥

दो० देखिदुखित व्रजलोग सब और यशोदामाय। तबहरि यह कहि सुख दियो बहुरि मिलैंगे आय॥

जबतक रथकी ध्वजा व धूर उड़ती हुई यशोदा व व्रजवासियों को देख पड़ी तबतक उन्हें आशा बनी थी कि अबभी हमारे प्राणनाथ फिर आवेंगे इसलिये वह रथकी ओर टकटकी बांधकर देखती रहीं जब दूर जानेसे धूरि रथकी नहीं दिखलाईदी व तन गोपियोंका व्रजमें रहकर मन धूरिकी तरह उड़ता हुआ श्यामसुन्दरके पीछे पीछे चलागया तब अचेत होकर यशोदा समेत गोपियां गिरपड़ीं जब फिर वह चैतन्य हुईं तब रोती पीटती घरको चलीं पर उन्हें मारे विरह केशवमूर्तिके राह नहीं सूझती थी तब एक सखी यशोदासे बोली॥

सो० कहाकरैं व्रज जाय मन हरिलेगयो सांवरो। परत न आगे पांय पाछेही लोचन लखत॥
दो० यों व्रज तिय पछिताय सब देखि यशोदा दीन। सब आईं अपने घरन क्लेशित बदन मलीन॥
सो० सब व्रजपरमउदास विरहिनदुखसम्पतिसपन। रहेप्राणयहिआस श्यामकह्यो मिलिहैं बहुरि॥

क० कुटिल अक्रूर क्रूर बैरी काहू जनमको चेटकसी डार सरलैके व्रजमूरिगो।
व्याकुल बिहाल बाल बंशीधर श्याम बिनु मीनसी तलफ मानो प्रेमरस भूरिगो॥
चरणउठाय सब चकित चितौत ऊंचे धाम चढ़ि चिन्तामणि चैन सब चूरिगो।
बारबार कहत बिसूरि जलपूरि नैन धूरि ना उड़ात आली अब रथ दूरिगो॥

हे राजन् इसीतरह यशोदा व गोपियां श्यामसुन्दरके विरहमें व्याकुल

रहकर उनकी चर्चामें दिन अपना काटने लगीं व अक्रूर ने आवतीसमय मनमें उदास होकर कहा देखो मैंने राजा कंस अधर्मीके कहने से बहुत बुरा काम किया कि श्याम व बलरामके मारेजानेका उपाय सुनने व देखने पर भी इन्हें अपने साथ लेजाता हूं मेरे बराबर कोई दूसरा पापी संसार में न होगा जब कंस बलराम व कृष्णको मार डालेगा तब सब व्रजबाला जिनको मैं रोते व विलाप करते छोड़ आया हूं वे बहुत दुःख पावेंगी इस अधर्म करनेके बदले न मालूम मुझे कौन नरक भोगना पड़ेगा श्यामसुन्दर अन्तर्यामीने अक्रूरके मनका हाल जानकर विचारा देखो अक्रूर ऐसा ज्ञानी मुझे लड़का समझकर मेरे मारेजानेका शोच करता है इसलिये अपनी महिमा दिखलाकर यह शोच इसका छुड़ादिया चाहिये जब अक्रूर यमुना किनारे पहुँचे और रथ अपना वृक्ष के नीचे श्याम व बलराम समेत खड़ा करके नहाने गये तब मोहन प्यारेने नन्दराय से कहा तुम ग्वालबालोंको साथ लेकर आगे चलो अक्रूरजी स्नान व पूजा करलेवें तो मैंभी पीछे आन पहुँचता हूं यह बात सुनकर नन्दजी ग्वाल बाल समेत आगे बढ़े व अक्रूरने जैसे यमुनाजलमें गोता मारा वैसे नन्द लालजी को पानीके भीतर देखा जब आश्चर्य मानकर शिर अपना बाहर निकाला तब वह रथपर बैठे दिखलाई दिये दूसरी बेर फिर गोता मारा तो वही हाल देखकर जब तीसरा गोता लगाया तब क्या देखा कि श्रीकृष्ण जी सांवली सूरत लक्ष्मीसमेत जड़ाऊ गहना अंग अंग पर पहिने केशर व चन्दनका तिलक लगाये कौस्तुभमणि व वैजयन्ती माला व वनमाला गलेमें डाले पीताम्बर व जनेऊका जोड़ा पहिने व उपरना रेशमी ओढ़े चतुर्भुजी स्वरूप से शंख चक्र गदा पद्म धारण किये हुये शेषजीके ऊपर विराजते हैं व शेषजी श्वेतवर्ण होकर अपने हजार मस्तक पर जड़ाऊ मुकुट बांधे व नीलाम्बर पहिने हुये बहुत शोभायमान दिखलाई दिये व श्यामसुन्दर घूंघुरवाले बालोंपर क्रीटमुकुट जड़ाऊ साजे व मकराकृतकुण्डल पहिने सुन्दर नासिका व कपोल कमलनयन तिरछी चितवन दांत बिजुलीके समान चमकते मन्द मन्द मुसुकाते व भुजा व छाती अतिविशाल

व गहरी नाभि पतली कमर व जंघा मोटी पांवके नख चमकते हुये ऐसे महासुन्दर दिखलाई दिये जिसका वर्णन नहीं होसक्ता व आकार यव व अंकुश व वज्रादिक पैरके तलुवेमें दिखलाई देकर क्या दृष्टिमें पड़ा कि ब्रह्मा व महादेव व इन्द्र व वरुण व कुबेर आदिक देवता व नव योगीश्वर व नारदमुनि व मार्कण्डेय व भृगुआदिक ऋषीश्वर व सनकादिक व गरुड़ व आठ वसुदेवता व काल चौवीस तत्त्व व ध्रुव व प्रह्लाद आदिक भक्त व वेदव्यास व उंचास पवन व आठों दिग्पाल व सातों द्वीप व अग्नि व सातों समुद्र व बारहों सूर्य व चन्द्रमा व बालखिल्य ऋषीश्वर व धर्मराज व कामधेनु व कामदेव व सातोंपुरी व विद्याधर व सिद्ध व गन्धर्व व दिव्यपितर व गंगा व सरस्वती आदिक नदियां व अरुन्धती व वशिष्ठ व यक्ष व राक्षस व कंस व देवकन्या व सब व्रत व तीर्थ व कल्पवृक्ष आदिक अपना अपनारूप धारण किये श्रीकृष्णजीके सामने हाथ जोड़े हुये स्तुति करते हैं व अप्सरा उन्हें नाच दिखाकर गन्धर्व गाना सुनाते हैं व ब्रह्मादिक देवता स्तुति करने उपरान्त केशवमूर्तिके तेजसे कुछ बोलनेकी सामर्थ्य न रखकर चित्रकारी से चुपचाप खड़े उनका मुख निहारते हैं जिसकी ओर नन्दलालजीने आंख उठाकर दयासे देखा वह प्रसन्न होकर उनका गुणानुवाद गाने लगा उनमें बाजे मोहनप्यारेके चँवर हिलाते व बाजे उनके धूप दीप करके सुगन्धित फूलोंका गजरा पहिनाते व बाजे अनेक तरहकी वस्तु उन्हें भेंट देकर बारम्बार दण्डवत् करते थे ॥

दो० माखन प्रभु व्रजनाथके सभी देवता साथ । हाथ जोड़ि अस्तुति करैं धरे चरण पर माथ ॥

जब अक्रूरको यह सब महिमा श्यामसुन्दरकी यमुनाजलमें देखकर विश्वास हुआ कि श्रीकृष्ण परब्रह्म परमेश्वरका अवतार हैं तब वह शोच अपना छोड़कर चतुर्भुजी रूपके पास चलागया व चरणोंपर गिरके हाथ जोड़कर विनय किया ॥

दो० तन मन रह्यो भुलायके देखि रूप अभिराम । माखन प्रभु घनश्यामको लाग्यो करनप्रणाम ॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् जो कोई इस अध्याय को प्रीतिसे कहै व सुनै जानों उसको श्यामसुंदरके दर्शन प्राप्त हुये ॥

चालीसवां अध्याय।

अक्रूर का श्रीकृष्णजी चतुर्भुजीरूप की यमुनाजल में स्तुति करनी ॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित जब अक्रूरने यमुनाजल में महिमा श्रीकृष्णजी की देखकर उन्हें पूर्ण ब्रह्म जाना तब उसी जगह इसतरह पर स्तुति उनकी की हे नाथ निरंजन आप तीनों लोकों के मालिक होकर आवागमन से रहित हैं व कोई ऐसी सामर्थ्य नहीं रखता जो तुम्हारी लीला व आदि व अन्त का भेद जानने सकै सो मेरी दण्डवत् आपको पहुँचै यह बात सुनकर परीक्षित ने पूंछा हे मुनिनाथ जब परब्रह्म परमेश्वर के भेद को कोई नहीं पहुँचसक्ता फिर उनकी महिमा जाननेवाला किसको कहना चाहिये शुकदेवजी बोले हे राजन् उनकी महिमा जानना बहुत कठिनहै पर तुम जितने जड़ व चैतन्य जीव देखते हो सब में उन्हीं के तेज का प्रकाश समझो व जो कुछ संसारमें दिखलाई देता है वह सब परमेश्वर की इच्छा व महिमा से उत्पन्न होकर उन्हीं का रूप है संसारमें कोई कोई ज्ञानी व तपस्वी परमेश्वर के स्मरण व ध्यान करने के प्रताप से कुछ कुछ भेद उनका जानने सक्ते हैं ॥

दो० माखनमधु कर्त्तार को जानो गा विधि लोग। घट घट में व्यापक सदा हैं सब करने योग ॥

हे राजन् अक्रूरने श्रीकृष्णजी से यमुनाजलमें विनय किया हे महाराज आप ब्रह्मा व महादेव आदिक देवता व तीनों लोकों के मालिक हैं जिस तरह सब नदी व नालों का पानी बहिकर समुद्रमें मिल जाताहै उसीतरह संसारी मनुष्य जो पूजा व दान व स्मरण दूसरे देवतों के नाम पर करते हैं वह सब आपको पहुँचताहै व मरने उपरांत सब जीव तुम्हारे रूप में समा जाते हैं अलख अगोचर जहां ब्रह्मादिक देवता आपके गुण व महिमा को नहीं पहुँचनेसक्के वहां दूसरे को क्या सामर्थ्यहै जो तुम्हारी महिमा जानने सकै सो मेरी दण्डवत् लीजिये हे आदिपुरुष निराकार चारों वेद आपका श्वासा होकर तुम्हारा आदि व अन्त नहीं जानते व आप घटने व बढ़ने से रहित होकर अपनी स्तुति कराने की कुछ इच्छा नहीं रखते जैसे गूलर के फल में मच्छड़ व जलचर जीव अपना हाल नहीं जानते वैसे सब

ब्रह्माण्ड के जीव सतोगुण व रजोगुण व तमोगुणसे उत्पन्न होकर मायावश तुम्हें नहीं पहिंचानते व तुम्हारे विरादरूपके रोम रोम में अनेक ब्रह्माण्ड हैं जिसतरह गूलर के वृक्ष में फल लगा रहता है सो मैं उसी विरादरूप को नमस्कार करता हूं हे पूर्णब्रह्मन् निर्मल रूप आप चौदहों भुवन के कर्ता व धर्ता होकर केवल गौ व ब्राह्मण व हरिभक्तों के उद्धार करने व सुख देने व अधर्मियों के मारने वास्ते संसार में अवतार धारण करते हैं॥

चौ० हंसरूप धरके अवतारा। नीर क्षीर तुम करो निबारा॥

हे ज्योतिस्स्वरूप दीनानाथ आपने मत्स्य रूप धरकर वेद को पाताल से निकाला व हयग्रीव अवतार लेकर मधुकैटभ दैत्यको मारा और वास्ते मथने समुद्र व निकालने चौदहों रत्न के कच्छप अवतार धरकर मन्दराचल पहाड़ को अपनी पीठ पर उठाया व वाराह अवतार लेकर हिरण्याक्ष दैत्य को मारने उपरांत पृथ्वी पाताल से निकाल लेआये व नृसिंहरूप धारण करके हिरण्यकशिपुको मारकर प्रह्लाद अपने भक्त की रक्षा की व देवतोंके भले वास्ते वामन अवतार लेकर तीन पग पृथ्वी राजा वलि से दान लिया व परशुराम अवतार धरकर क्षत्रियों का वध किया व रामचन्द्र अवतार से अधर्मी रावण को मारकर विभीषण को लंका का राज्य दिया व गंगाजी तुम्हारे चरण का धोवन होकर तीनों लोकों के जीवों को तारती हैं व बलभद्र व प्रद्युम्न व अनिरुद्ध तुम्हारे रूप हैं इसलिये मैं तुम्हारे सब अवतारों को दण्डवत् करताहूं इतनी कथा सुनकर परीक्षित ने पूंछा महाराज उस समय तक अनिरुद्ध व प्रद्युम्न उत्पन्न नहीं हुये थे अक्रूर ने उनका नाम किस तरह जाना शुकदेवजी बोले हे राजन् उद्धव व अक्रूर श्रीकृष्णजी के भक्तों में होकर उनकी दया से तीनों कालों का हाल जानते थे जिस तरह नारदमुनिको भूत व भविष्यत् व वर्तमान का हाल मालूम रहता है उसी तरह हरिभक्तलोग भी तीनों कालों का हाल जानते हैं फिर अक्रूर ने कहा आप बौद्ध अवतार लेकर दैत्यों को यज्ञ करने से वरजेंगे व कलियुग के अन्त में कलङ्की अवतार धरकर नये सिरे से धर्म सतयुग का प्रचार करेंगे व कोई मनुष्य आपका तप व ध्यान करने से भवसागर

पार उतर जाते हैं व किसी को आप संसारी मायाजाल में फँसाक
कौतुक उनका इसतरह देखते हैं जिसतरह कोई मनुष्य अपना मुख
शीशे में देखे विना कृपा तुम्हारी इस मायाजाल से छूटना बहुत कठिन
व पूजा आपकी कई जगह पर होकर बाजे मनुष्य तुम्हारी मूर्ति वनाक
पूजते हैं व कोई तुम्हारे रूप व चरणों का ध्यान अपने हृदय में रखते हैं
बाजे तुम्हारे नाम पर यज्ञ व होम करते हैं व ज्ञानी आपको सब जीवों
एक रूप देखता है व बाजे मनुष्य विरक्त होकर वनमें तुम्हारा तप व ध्यान
करते हैं व कोई गृहस्थी में रहने पर भी मन से तुम्हारा स्मरण व ध्यान
रखकर भवसागर पार उतर जाता है व बाजे लोग सिवाय तुम्हारे दूस
देवता से प्रीति न रखकर बारम्बार तुम्हें दण्डवत् करके संसारी व्यवहार
स्वप्नवत् समझते हैं तुम्हारी पूजा स्मरण व गुणों का वर्णन बड़े बड़े योगी
श्वर व ज्ञानी व शेष व महेश व शारदा व गणेश नहीं करनेसक्के मुझ
अज्ञान को क्या सामर्थ्य है जो तुम्हारी महिमा वर्णन करनेसकूं आपक
नाम दीनदयालु है इसलिये मुझे दीन व अपना दास जानकर अज्ञान
अभिमान की काटि जो मेरे हृदय में जमी है सो उसको ज्ञानरूपी अग्नि
से जला दीजिये व मुझे आठों पहर अपने चरणों के पास रखकर ऐसा
ज्ञान उपदेश कीजिये जिसमें आपको अपना उत्पन्न करनेवाला जानकर
तुम्हारी सेवा व चर्चा में दिन रात लीन रहूं॥

दो० मैं अज्ञान तुमशरण हौं माखन प्रभु भगवान। ऐसी बुधि मोहिं दीजिये तुम्हैं सकौं पहिचान॥

इकतालीसवां अध्याय।

अक्रूर का श्याम व बलराम समेत मथुरा में पहुँचना॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जब श्रीकृष्णजीने यमुनाजल में यह सब
स्तुति अक्रूर से सुनकर चतुर्भुजीस्वरूप अपना देवतों समेत अन्तर्धान कर
लिया तब अक्रूर इस बातका अचम्भा मानकर पानीसे बाहर आया व श्याम
व बलरामको रथपर बैठे देखकर डरता व कांपता उनके पास पहुँचा यह
दशा उसकी देखकर केशवमूर्तिने पूंछा हे चाचा तुम इससमय घबराये क्यों
हो व नहाती समय शिर पानीसे बारम्बार निकाल कर हमारी ओर क्यों

देखते थे व चलनेका शोच भूलकर इतनी देरतक तुम क्या करतेरहे तुमने यमुनाजलमें कुछ आश्चर्यकी बातें तो नहीं देखीं यह वचन सुनतेही अक्रूर ने हाथ जोड़कर विनय किया हे नाथ निरंजन अन्तर्यामी जो कुछ पानीके भीतर मैंने तुम्हारी महिमा देखी सो वर्णन नहीं होसक्ती ॥

चौ० भलो दरश दीन्हों जलमाहीं । कृष्णचरित्त को अचरज नाहीं ॥
मोहिं भरोसो भयो तुम्हारो । वेगे नाथ मथुरा पग धारो ॥

दो० अब मोसों पूंछत कहा तुम त्रिभुवन के नाथ । कर्ता हर्ता जगतके सकल तुम्हारे हाथ ॥
माखन प्रभु करतारकी लीला कही न जाय । सर्व जीव संसार के जामें रहे लुभाय ॥

यह सुनतेही श्रीकृष्णजी ने हँसकर कहा आवो रथपर चढ़ो रास्ता चलना है तब अक्रूरने पहिले शिर अपना उनके चरणोंपर रखदिया फिर बैठकर रथ चलाया व नन्दादिक ग्वाल जो आगे गये थे मथुराके निकट बागमें डेरा करके श्याम व बलराम की आशा देखने लगे तब श्रीकृष्णजी भी वहां पहुँचकर रथसे उतरे तब अक्रूरने हाथ जोड़कर उनसे विनय किया हे दीनानाथ मैं चाहताहूं कि आजकी रात मेरी कुटी अपने चरणोंसे पवित्र कीजिये जिसके घर आपके चरण जावें उसके पुरुषा स्वर्गको पहुँचते हैं जिन पांवोंने अहल्या गौतम ऋषीश्वरकी स्त्रीको शापसे छुड़ाया व बलिको सुतल लोक का राज्य दिया व जिन चरणोंका धोवन गंगाजीको भगीरथ बड़े तपसे अपने पुरुषों के तारनेवास्ते मर्त्यलोकमें लाये व शिवजीने अपने मस्तक पर रक्खा वही चरण धोकर चरणोदक पीने व शिरपर चढ़ावनेसे अपने कुल व परिवार समेत कृतार्थ हुआ चाहताहूं ॥

चौ० ऐसे चरण सरोज तुम्हारे । तिनको सदा प्रणाम हमारे ॥

दो० माखन प्रभुके नाम गुण कहै सुनै ज्यहि ठौर । सुर नर रज उस ठौरकी धरैं शीश ज्यों मौर ॥

हे महाराज मैं तुम्हारा दास इन चरणों को छोड़कर कहीं न जाऊंगा यह बात सुनतेही श्यामसुन्दरने हाथ अक्रूरका बड़े प्रेमसे पकड़कर उनसे कहा हे चाचा आज रातको हम यहां रहेंगे काल्हि राजा कंसको मारकर पीछेसे बलराम समेत तुम्हारे स्थानपर आवेंगे आज सबको यहां छोड़कर जाना उचित नहीं है जब अक्रूरने यह सुना तब उनसे बिदा होकर राजा

कंसकी सभा में चलागया कंसने बड़े आदरसे अपने पास सिंहासनप
बैठाकर पूछा जहां गये थे वहां का हाल कहो॥

चौ० सुनि अक्रूर कहै समुझाई। व्रजकी महिमा कही न जाई॥
कहा नन्दकी करौं बड़ाई। बात तुम्हारी शीश चढ़ाई॥
राम कृष्ण दोऊ हैं आये। भेंट सबै व्रजवासी लाये॥

सो आज वे वहुत ग्वालवाल संग रहनेसे नगरके वाहर टिकेहैं कवि
राजसभामें आवैंगे यह सुनकर राजा कंस बहुत प्रसन्न हुआ और वोल
हे अक्रूरजी आज तुमने हमारा वड़ा काम किया जो राम व कृष्णक
लेआये अब अपने घरजाकर आराम करो अक्रूर यहआज्ञा पातेही अप
स्थानपर आये व कंस श्याम व बलराम के मारने का उपाय विचार
लगा इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी वोले हे परीक्षित जब नन्दादि
डेरा लेकर सुचित्त हुये तव श्याम व बलरामने पूंछा हे वावा तुम्हारी आज्ञ
हो तो हम मथुरापुरी देख आवें नन्दराय ने कुछ पकवान व मिठाई दोन
भाइयोंको खिलाकर कहा वहुत अच्छा तुम जाकर देख आवो पर विलम
मत करना यह वचन सुनतेही उसी रोज चारघड़ी दिन वाकी रहे श्याम
बलराम ग्वालवालोंको साथ लेकर चले मथुरानगरमें किला व स्था
बिल्लौरके बनेहुये वहुत उत्तम दिखलाई दिये व सोनहुले रत्नजटित द्वा
पर मोतियोंकी झालरें वँधी थीं व झरोखे व खिड़कियोंमें अनेक मणिज
टित होकर किलेके चारों ओर ऐसी गहरी खाई खुदीथी जिसमें वारहों म
हीने पानी भरा रहता था व किलेकी दीवारपर ताख व झरोखोंमें कवूतर
तूती व कोकिला आदिक अनेक रंगके पक्षी रहकर मीठी मीठी वोलि
बोलते थे व सव गली व सड़कउस नगरकी कूड़ा व धूरआदिकसे सफा है
कर गुलावजल व रगड़ेहुये चन्दनका छिड़काव वहां होरहाथा व दीवा
महलोंकी ऐसी चमकती थीं जिनमें मुख दिखलाई देता था व सव स्थानों
छोटे छोटे व नगरके चारों ओर वड़े वड़े वहुत वाग और उनमें उ
उत्तम फूल व फल लगे होकर अच्छा अच्छा स्थान वहां वैठने के वा
बनाथा और वृक्षोंपर अनेक रंगके पक्षी वोलते थे व अच्छे अच्छे तड़ा

व बावली व कुण्डोंमें मोतीके समान पानी भरा रहकर कमल फूला था व उन फूलों पर भँवरे गूंजकर तालाब किनारे अनेक रंगके पशु व पक्षी आपसमें कलोल करते थे व फूलोंकी क्यारियां कोसों तक फूलकर मन्द सुगन्ध हवा बहती थी व पानीकी पनवाड़ियां लगीरहकर कुयें व बावलियोंपर रहँट व पुरवट चलताथा व मालीलोग मीठेमीठे स्वरोंसे गायकर पेड़ोंको सींचते थे व नगरकी रक्षावास्ते जो चारों ओर अष्टधातुकी दीवार बनी थी उसमें व सब स्थानोंपर सोनहुले जड़ाऊ कलशे ऐसे बने थे जिनकी चमकसे आंख सामने नहीं ठहरती थी सब मथुरावासियोंके द्वार पर केला व वन्दनवार बाँधकर गावना व बजाना मंगलाचार होरहा था॥

दो० शोभा मथुरा नगरकी कासों बरणी जाय। जहां श्याम त्रिभुवनपती जन्म लियोहै आय॥

जब श्याम व बलराम ऐसी शोभा देखते हुये मथुरापुरीमें पहुँचे तब उनका दर्शन पाकर मथुरावासी अपने अपने लोचनोंका फल प्राप्त करने लगे॥

चौ० जो जो छवि देखैं मगमाहीं। सो करुणा करिकै पछिताहीं॥
असुर कंस है बड़ो कसाई। अब इनको होइहै दुखदाई॥

दो० बड़ी धूम मथुरानगर आवत नन्दकुमार। सुनि धाये पुर लोग सब गृहके काज बिसार॥

जब मथुराकी स्त्रियों ने श्याम व बलरामके आवनेका हाल सुना तब उनमें बहुतसी वृन्दावनविहारी के देखनेवास्ते घरसे बाहर निकल आईं व अनेक स्त्रियां अपने कोठे व खिड़की व झरोखों पर आन बैठीं॥

दो० माखनप्रभु आवत सुने मनमें भयो हुलास। मारग में ठाढ़ी भई हरिदर्शन की आस॥

व बहुत स्त्रियां आपसमें गोल बांधकर सड़क व गलियों में एक दूसरी से यह कहती थीं यही श्याम व बलराम हैं जिनको अक्रूर लेने गये थे इस मोहनीमूर्तिको अच्छीतरह देखकर अपनी अपनी आंखें ठण्ढी करो॥

चौ० यहि विधि जहां तहां खड़ि नारी। प्रभुहि बतावैं हाथ पसारी॥
नील बसन गोरे बलरामा। पीताम्बर ओढ़े घनश्यामा॥
सुनतहतीं पुरुषारथ जिनको। देख्यो रूपनयनभरि तिनको॥

यही दोनों बालक कंस के भानजे हैं जिन्होंने केशी आदिक सब दैत्यों को मारकर अनेक लीला गोकुल व वृन्दावन में की थीं पिछले जन्म हम

लोगोंने बड़े शुभकर्म किये थे जिनके प्रतापसे वैकुण्ठनाथ का दर्शन पाया जो जो स्त्री उनका समाचार पाती थी वह सब उलटा पलटा शृंगार करके अपने गोद का बालक रोता छोड़कर इस जल्दी से बाहर चली आती थी कि उसको अपने तन व वस्त्र की सुधि नहीं रहती थी ॥

दो० माखनप्रभुके दरशको बहिविधि दौड़ीं नारि। ज्यों सरिता सागर मिलन चलत वेगसों वारि॥

जब मथुरावासी स्त्रियां मोहनीमूर्तिका रूपरस आंखोंकी राह पीने लगीं तब केशवमूर्ति ने अपनी मृदुमुसकान व तिरछी चितवन से मन उन्हांका हरलिया और वे स्त्रियां श्यामसुन्दर को देखतेही उनपर मोहित होगई॥

दो० कहत सकल बड़भागिहैं वृन्दावनकी नारि। जो सुख पावति हैं सदा माखनप्रभुहि निहारि॥

शुकदेवजी ने कहा हे राजन् इसीतरह सब स्त्री व पुरुष मथुरावासी मोहनप्यारे के दर्शन से प्रसन्न होकर अनेक तरह पर बालचरित्र नन्द लालजी का आपसमें कहते थे व ब्राह्मणलोग श्याम व बलराम के माथे पर तिलक लगाकर उन्हें आशीर्वाद देते थे जिस गली व सड़क व चौराहे में श्याम व बलराम जाते वहां पर सब स्त्री व पुरुष उनके दर्शन से अपना जन्म स्वार्थ करते थे व मोती व रत्नादिक न्यवछावर करके अक्षत व लावा व फल उनपर बरसाते थे उस नगर की शोभा व बहुत भीड़ देखकर केशवमूर्तिने अपने साथी ग्वालबालोंसे कहा कोई राह मत भूलना कदाचित् भूल जाना तो जहां डेरा है वहां चले जाना उससमय मोहनप्यारेने राह में क्या देखा कि राजा कंस का धोबी जो कपड़ों को रंगताभी था मदिरा पान किये व कई लादी कपड़ा लिये कंस का यश गाता हुआ उसी ओर चला आता है उसको देखकर श्यामसुन्दरने बलरामजीसे कहा कहो तो इसके कपड़े छीनकर हम व तुम दोनों भाई ग्वालबालों समेत पहिन लेवें और जो कुछ बचें उन्हें लुटा देवें बलरामजी ने कहा जो आपकी इच्छा हो सो कीजिये यह वचन सुनतेही श्रीकृष्णजीने जो सब धोबियों में मालिक था उससे कहा तुम कुछ कपड़े हमें पहिरने वास्ते देओ तो राजा कंससे भेंट करके तुम्हें फेर देवेंगे व जो कुछ राजा के यहां से मुझे मिलेगा उसमें से तुमको भी देवेंगे ॥

दो० हँस्यो वचन सुनि श्याम के कह्यो गर्वकरि बैन। बलि के बकरा ह्वैरहे आयो है पट लैन॥

सो० राखी घरी बनाय ह्वै आवो नृपद्वार सें। तब लीजो पट आय जो भावै सो दीजियो॥

ऐसा कहकर वह धोबी केशवमूर्ति से बोला तुम लोग गँवार मनुष्य वनके रहनेवाले सदा इसीतरह का कपड़ा पहिना करते थे जो मांगने आये हो तुम नहीं जानते कि यह सब कपड़े राजा कंस के हैं ऐसी बात फिर कहोगे तो राजा तुम्हें दंड देगा॥

चौ० वनवन फिरत चरावत गैया। अहिर जाति कामरी ओढ़ैया॥
नटको वेप बनाकर आये। नृप अम्बर पहिरन मनभाये॥
जुरिकै चले नृपति के पासा। पहिरावन लेने की आसा॥
नेक आश जीवन की जोऊ। खोवन चहत अभी तुम सोऊ॥

यह सुनकर मोहनप्यारेने कहा हम सीधी तरह वस्त्र मांगते हैं तुम उलटी पलटी बातें क्यों कहते हो मँगनी कपड़ा देनेमें तुम्हारी कुछ हानि न होकर सदा तुम्हारा यश संसार में बना रहैगा यह सुनतेही वह धोवी क्रोध से बोला हे बालक तैंने अभीतक राजा कंसको नहीं देखा पर उसके प्रतापका हाल भी नहीं सुना गँवार लोग राजसी व्यवहार नहीं जानते तेरा मुखयह कपड़े पहिरने योग्यहै ऐसी तृष्णा छोड़कर मेरे सामनेसे चला जा नहीं तो अभी तुझको मारडालता हूं जब श्यामसुन्दरने यह दुर्वचन धोवीका सुना तब क्रोधित होकर दोनों अँगुली अपनी तिरछे हाथ से उसके गले में मारा कि शिर उसका भुट्टा सा कटकर गिरपड़ा यह दशा मालिक धोबी की देखतेही उसके साथी लादी व पेटारी आदिक छोड़कर भागगये व राजा कंस के पास जाकर सब वृत्तान्त कहदिया व मोहनप्यारे ने अपने व बलरामजी व ग्वालबालों के पहिरने वास्ते कपड़े निकालकर बाकी सब लुटादिये ग्वालबाल वस्त्र पहिरना नहीं जानते थे इसलिये दामन में हाथ व अँगरखेमें पांव डालने लगे व केशवमूर्तिनेभी उलटा पलटा कपड़ा पहिन लिया इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित कदाचित् तुझे इस बातका सन्देह हो कि सब वस्तुका ज्ञान श्रीकृष्णजीकी कृपासे उत्पन्न हुआ है वह कपड़ा पहिरने क्यों नहीं जानते थे सो उनके भेद व लीलाका हाल

कोई जानने नहीं सक्ता और वह परब्रह्म परमेश्वर संसारी सुख की कु
इच्छा नहीं रखते पर उनके भक्त व सेवक प्रीतिसे जो कुछ उन्हें भोग लगा
कर भूषण व वस्त्र पहिना देते हैं उसे वह दया की राह अंगीकार करते
इसलिये वह अपने को वस्त्र पहिरने से अज्ञान बनाकर चाहते थे कि को
भक्त मेरा आनकर आपसे मुझे पहिना दे सो उनकी इच्छानुसार उ
जगह बायक नाम दरजी हरिभक्त आन पहुँचा व श्यामसुन्दर से हा
जोड़कर बोला महाराज प्रकटमें मुझे राजा कंसका सेवक कहते हैं पर
अपने मनसे आठोंपहर तुम्हारे चरणोंका ध्यान रखता हूं मुझे आज्ञ
दीजिये तो सब किसी को अच्छी तरह वस्त्र पहिना दूं मुरलीमनोहरने उ
अपना दास जानकर कहा बहुत अच्छा यह वचन सुनतेही उस दरजी ने
बड़ी प्रीति से छोटे बड़े कपड़ों को काट छांटकर श्याम व बलराम व स
ग्वालबालों को पहिना दिया व हाथ जोड़ के उनके सामने खड़ा हुअ
तब मुरलीमनोहर बोले हे बायक हम तुमसे बहुत प्रसन्न हुये तू सद
भक्तिपूर्वक धनीपात्र रहकर मरने उपरान्त मुक्ति पावेगा व तेरे वंश में स
हरिभक्त उत्पन्न होंगे ऐसा वरदान देकर फिर केशवमूर्तिने उस दरजी
कहा हे बायक जैसी टहल तैंने मेरी की वैसा फल मैंने तुझको नहीं दिय
इसलिये तुझसे लज्जित हूं इतनी कथा सुनकर परीक्षितने पूंछा महाराज
थोड़ी सेवा करनेके बदले श्यामसुन्दरने उसको ऐसा वरदान दिया फिर ल
ज्जित रहने का कारण क्या था शुकदेवजी बोले हे राजन् वैकुण्ठनाथने
समझा कि कपड़े पहिनावती समय इसने सब तरहसे मन अपना बटोरकर
मेरे काममें लगाया व बिना इच्छा हमारी सेवा की इसलिये मैंने जो इसको
दिया सो उस टहल की बराबरी नहीं रखता हे परीक्षित देखो एक बेर कपड़ा
पहिनावने के बदले वह दरजी इस पदवी को पहुँचा जो लोग नित्य
श्रीकृष्णजी को भूषण व वस्त्र पहिनाकर उनकी पूजा व सेवा करते हैं वह
न मालूम कैसा फल पावैंगे जब श्याम व बलराम वहां से आगे चले तब
सुदामा नाम माली हरिभक्त आनकर केशवमूर्ति के चरणों पर गिरपड़ा व
बड़े प्रेम से श्याम व बलराम को ग्वालबालों समेत अपने घर ले जाकर

उत्तम आसन पर बैठाला व चरण उनका धोकर चरणामृत लिया और विधिपूर्वक पूजा उनकी की व सुगन्धित फूलों का गजरा पहिनाकर इस तरह पर स्तुति उनकी की ॥

चौ० दयासिन्धु तुम दीनदयाला। कृपावन्त सबके प्रतिपाला ॥
ऐसे चरण सरोज तुम्हारे। मित्र शत्रु जन सबै उधारे ॥
मोपर कृपा करो हरि देवा। आयसु देव करौं कछु सेवा ॥

जब वृन्दावनविहारी ने यह स्तुति माली से सुनी तब उसकी सच्ची भक्ति व प्रीति देखकर कहा हे सुदामा हम तेरे ऊपर प्रसन्न हैं जो इच्छा हो सो वरदान मांग यह वचन सुनकर माली ने विनय किया मैं यही चाहताहूं कि तुम्हारे चरणों की भक्ति सदा मेरे हृदय में बनी रहकर मुझे ज्ञानी व ऋषीश्वरों का सत्संग रहै श्यामसुन्दर ने उसे मुखमांगा वरदान देकर कहा तू सदा धनीपात्र व सुख से रहैगा व तेरे वंश में भी सब धनवान् होकर मेरी भक्ति करैंगे यह कहकर श्रीकृष्णजी वहां से उठे ॥

दो० या विधि दया जनाइकै माली कियो सनाथ। आनँदसों आगे चले माखनप्रभु व्रजनाथ ॥

बयालीसवां अध्याय।

श्यामसुन्दरका महादेवजी का धनुष तोड़ना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित जब श्यामसुन्दर सुदामा माली को वरदान देकर बाजार में गये तब क्या देखा कि कुब्जा मालिनि कटोरियों में चन्दन रगड़ा हुआ भरकर थाली में रक्खे हुये चलीजाती है श्यामसुन्दर ने उसे देखकर हँसी की राह पूंछा कि तुम किसकी स्त्री बहुत सुन्दरी होकर यह चन्दन कहां ले जाती हो हमैं देवगी यह वचन सुनकर कुबड़ी ने विनय किया हे मोहनीमूर्ति मैं कुब्जा नाम कंसकी दासी होकर नित्य चन्दन उसके लगाने वास्ते लेजातीहूं और वह इस सेवा करने से बहुत प्रसन्न होकर मेरा पालन अच्छी तरह करता है पर तुम्हारे चरणों का ध्यान सदा अपने हृदयमें रखकर आपका गुणानुवाद गाया करती थी सो आज तुम्हारा दर्शन पाने से मेरा जन्म सफल होकर लोचनों का फल मिला राजा कंस के चन्दन लगाने से मेरा परलोक नहीं बनता

इसलिये अब मुझे यह इच्छाहै कि तुम्हारी आज्ञा पाऊं तो अपने हाथ
तुम्हारे चन्दन लगाकर कृतार्थ होजाऊं॥

दो० माखनप्रभुसों कूबरी यहिविधि कहत सुनाय। मोहनमूरति श्यामकी मनमें रही लुभाय॥

नन्दकुमारने कुब्जा की भक्ति व प्रीति सच्ची देखकर उससे कहा बहुत अच्छा यह वचन सुनतेही कुबड़ीने बड़े प्रेमसे श्याम व बलराम के मस्तक व अंगपर विधिपूर्वक चन्दन लगाया तब श्यामसुन्दर ने प्रसन्न होकर बलरामजी से कहा कि इस सेवा के बदले कुब्जा का अंग सीधा करदेना चाहिये ऐसा कहकर श्रीकृष्णजी ने अपना पांव कुबड़ी के पैर पर रखकर दो अंगुली अपने हाथकी उसकी ठोढ़ी में लगाके उसे उचका दिया तो कूबड़ उसका छूटकर वह सीधी व अतिसुन्दरी होगई॥

सो० को करिसकै बखान जाहि बनाई आप हरि। भई रूपगुणखान कुब्जा मन आनन्द अति॥

हे परीक्षित जब कुबड़ी ने अपने को महासुन्दरी देखा तब वह अंचल से मुख अपना ढांपकर मुसकराती हुई विनयपूर्वक बोली हे प्रीतम जिस तरह तुमने दयालु होकर मुझे रूप व तरुणाई दी उसीतरह मुझ दासी के घर चलकर मेरी इच्छा पूर्ण कीजिये यह वचन सुनतेही मोहनप्यारेने हाथ उसका पकड़कर प्रेमपूर्वक कहा तू धैर्य रख जिसतरह चन्दन लगाकर तैंने हमारी छाती ठण्ढी की उसी तरह हम भी तेरी इच्छा पूर्ण करेंगे॥

दो० कंसनृपति को देखिकै हम ऐहैं तुवधाम। यह कहकर आगे चले माखनप्रभु घनश्याम॥

कुब्जा ने यह वरदान पावतेही आनन्द से अपने घर जाकर केसरि व चन्दन का चौक पुरवाया व स्थान अपना अच्छी तरह अलंकृत करके मोहनप्यारे के आने की आशा देखने लगी जब मथुरावासी स्त्रियां यह हाल सुनकर उसके घर गईं तब उसका रूप व तरुणाई देखकर बोलीं॥

चौ० धनि धनि कुब्जा तेरो भाग। जाको विधिना दियो सुहाग॥
ऐसो कहा कठिन तप कीन्हों। गोपीनाथ भेंट भुज लीन्हों॥

हे कुब्जा रानी जब श्यामसुन्दर तेरे घर आवैं तब हमको भी उनका दर्शन कराना इसीतरह मथुरावासी स्त्रियां कुब्जाकी बड़ाई करती थीं व श्याम व बलराम ग्वालबालों समेत हँसते हुये चले जाते थे बाजार में जो

मनुष्य जिस वस्तुका रोजगार करताथा वह लोग रत्न व वस्त्र व पान व मिठाई आदिक सोने व चांदीकी थालियों में रखकर उन्हें भेंट देते थे व श्रीकृष्णजी उनका क्षेम कुशल पूंछकर अपनी मीठी मीठी बातोंसे उन्हें प्रसन्नकरतेथे॥

चौ० मारग में जो दर्शन पावैं। रामकृष्णकी कुशल मनावैं॥
काम स्वरूप श्याम तनु सोहैं। मथुरा की कामिनि सब मोहैं॥

व मथुरा की स्त्रियां अपना अपना गहना व कपड़ा श्यामसुन्दर पर न्यवछावर करके कहती थीं इनके वियोग में न मालूम गोपियों की क्या दशा हुई होगी जब इसीतरह घूमते हुये श्याम व बलराम रंगभूमि के पहिले द्वारे पर जहां महादेव का धनुष रक्खा था तहां पहुँचे तब राजा कंसके दश हजार शूरवीरों ने जो धनुष की रखवारी करते थे श्यामसुन्दर को देखतेही दूर से ललकार कर कहा यहां मति आवो दूर खड़े रहो मोहनप्यारे उनके बर्जने पर भी न मानकर बेधड़क वहां चले गये व धनुष महादेवका जो तीन ताड़ लंबा व मोटा व भारी ऊंचे चबूतरेपर रक्खा था बायें हाथसे उठाकर इसतरह सहजमें दो टुकड़े कर दिये जिसतरह हाथी ऊखको तोड़ डालता है जब धनुष टूटनेका शब्द तीनों लोक में पहुँचकर राजा कंसने भी सुना तब श्रीकृष्णजीको अतिबलवान् समझकर उनके डरसे कांपने लगा और जब वह सब शूरवीर राम व कृष्ण से लड़ने आये तब दोनों भाइयोंने उसी धनुषके टुकड़ों से मारकर उन्हें गिरा दिया उस समय देवतों ने प्रसन्न होकर श्याम व बलराम पर फूल बरसाये जब कोई उनके सामने लड़नेवाला नहीं रहा तब केशवमूर्तिने बलरामजी से कहा हमलोगों को डेरा छोड़े बहुत विलम्ब हुआ नन्द बाबा चिन्ता करते होंगे सो चलना चाहिये ऐसा कहकर श्यामसुन्दर ग्वालबालों समेत अपने डेरे पर आये व मथुरावासी धनुष तोड़ने व शूरवीरोंके मारेजानेका वृत्तांत सुन कर आपसमें कहने लगे यह दोनों बालक मनुष्य न होकर कोई देवता मालूम होते हैं जो ऐसे ऐसे काम इन्होंने किये देखो होनहार प्रबल होकर राजा कंसने घर बैठे अपनी मृत्यु आप बुलाई है इनके हाथ से वह जीता नहीं बचैगा व नन्दरायने श्याम व बलराम आदिक को अच्छे अच्छे

कपड़े पहिने देखकर जाना कि कन्हैयाने यह सब किसीसे छीन लिये ऐसा समझकर बोले हे बेटा तुम यहां भी उत्पात करते हो यह वृन्दावन हमारा गाँव नहीं है जो ग्वालिनियोंका दही छीन व चुराकर खाजाते थे मथुरापुरी में ऐसी उपाधि करोगे तो अच्छा न होगा यह सुनकर श्याम सुन्दर बोले हे बाबा हमने नगर में बहुत उत्सव देखा अब भूख लगी है भोजन देव यह वचन सुनतेही नन्दजीने दूध व दही व माखन व पकवान व मिठाई आदिक निकाल दिया ॥

दो० विविध भांति भोजन कियो सब ग्वालनके साथ। रैन गवांई चैनसों माखनप्रभु ब्रजनाथ।

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जब कंसने अपने शूरवीरोंके मारेजानेका हाल सुना तब वह मनमें बहुत उदास होकर कहने लगा मुझे बड़े बलवान् शत्रुसे काम पड़ाहै अब मेरा प्राण नहीं बचेगा इसी शोचमें राजा कंस भीतर भीतर जलकर इसतरह निर्बल होगया जिस तरह काठ घुनोंके खाजानेसे भीतर खुखला होकर ऊपर ज्योंका त्यों बना रहताहै पर मारे लज्जाके अपने मनका हाल किसीसे न कहकर उसी चिन्ता में पलँगपर जाकर लेट रहा जब करवट लेते लेते पहर रात रहे उसकी आँख लगगई तब उसे स्वप्न में शरीर अपना विना शिर मालूम होकर चन्द्रमा दो टुकड़े दिखलाई दिये व अपनी परछाहीं में छेद मालूम होकर सूर्यका प्रकाश झरोखों में से देख पड़ा व सोने के समान वृक्ष दिखलाई देकर ललित फूलोंका हार अपने गलेमें देखा व अपने को नंगे शरीर रेत में नहाते व तेल अंगपर मले गदहे पर चढ़े श्मशान पर भूत व प्रेत साथ लिये मुर्दोंसे गले मिलते देखकर वृक्षोंमें अग्नि लगीहुई दिखलाई दी यह बुरा स्वप्न देखतेही कंस घबड़ाकर उठ बैठा तो फिर उसे केशवमूर्तिके मारे डरसे नींद नहीं आई तिसपर भी वह प्रातसमय सभा में बैठकर अपने सेवकोंसे बोला कि रंगभूमिमें बिछावन आदिक बिछवाकर सब राजोंको जो धनुषयज्ञ देखने आये हैं बुलाओ और नन्दादिक ब्रजवासी व यदु वंशियोंको बुलाकर यथायोग्य सबको बैठावो व अखाड़ा कुश्ती लड़नेको तैयार करो मैं भी वहां पहुँचताहूं ॥

दो० योधा सभी बुलायकै तिनसों कहेउ सुनाय। अबहीं रचो बनायकै रंगभूमि तुम जाय ॥

यह आज्ञा पातेही उन लोगोंने रंगभूमिकी रचना करके सब किसीको बुला भेजा और यथायोग्य स्थानपर उन्हें बैठा दिया व चाणूर व मुष्टिक व शल व तोशल व कूट आदिक पहलवान अपने अपने चेलों समेत अखाड़े में आनकर इकट्ठे हुये व घमण्डसे ढोल बजाकर ताल ठोंकनेलगे व राजा कंस भी अभिमानपूर्वक वहां आनकर बहुत ऊंचे मचानपर जहां जड़ाऊ सिंहासन बिछा था बैठ गया व नन्द व उपनन्द आदिक राजा कंसको भेंट देकर ग्वालबालों समेत एक मचानपर बैठे उससमय कंसने चाणूर व मुष्टिक आदिक पहलवानों को बुलाकर कहा आज तुमलोग श्याम व बलरामको कुश्ती लड़कर मार डालो तो हम तुम्हें बहुतसा द्रव्य देवैंगे पहलवानोंने हाथ जोड़कर विनय किया महाराज हमलोग सामर्थ्य भर धोखा न करैंगे इतनी कथा सुनाकर शुकदेवस्वामी बोले हे राजन् उससमय ब्रह्मा व महादेव आदिक देवता वैकुण्ठनाथका दर्शन करने व विजय देखनेवास्ते अपने अपने विमानोंपर चढ़कर आकाश में आन पहुँचे व मथुरावासी स्त्री व पुरुष इतने वहां इकट्ठे हुये जिनकी गिनती नहीं होसक्ती ॥

दो० माखनमभुके दर्शकी सबके मनमें चाय। परफुल्लित ठाढ़े भये रंगभूमि में आय ॥

तेंतालीसवां अध्याय।

श्याम व बलरामका कुवलयापीड़ हाथीको मारना ॥

शुकदेवजीने कहा जब प्रातसमय राजा कंस रंगभूमि में जाकर बैठा व सबलोग वहां आनकर इकट्ठे हुये तब श्याम व बलरामजी ग्वालबालों समेत रंगभूमिके द्वारे पर जहां कुवलयापीड़ हाथी झूमि रहा था पहुँचे ॥

चौ० देखि मतंग द्वार मतवारो। गजपालहि बलराम पुकारो ॥
सुनो महावत बात हमारी। लेहु द्वारते गज तुम टारी ॥

यह बात हम तुमको पहिले से कहते हैं कि हाथी अपना हटाकर हमें राजा कंसके पास जाने देव नहीं तो अभी हाथी समेत तुझे मार डालेंगे तू श्यामसुन्दरको बालक न जानकर तीनों लोकोंका मालिक समझ दुष्टों

को मारने व पृथ्वीके भार उतारने वास्ते इन्होंने जन्म लिया है यह वच सुनतेही हाथीवान हँसकर बोला तुम गौ चरानेसे त्रिभुवनपति न होक शूरवीरोंकी तरह बातें करते हो मैं जानता हूं कि तुमको दैत्योंके मारने धनुष तोड़ने से अभिमान उत्पन्न हुआ है जबतक इस गज से जो द हजार हाथीका बल रखताहै न लड़ौगे तबतक राजसभामें न जाने पावो तुम ऐसे सुन्दर होकर क्यों अपना प्राण देनेवास्ते यहां आये हो कि शूरवीरको ऐसी सामर्थ्य नहीं है जो इस हाथीसे लड़ने सकै इन्हीं दि के वास्ते कंसने यह हाथी पाल रक्खा था आज इसके हाथसे तुम्हारा प्रा वचना कठिन है यह बात सुनतेही केशवमूर्तिने बालोंका जूड़ा लपेटक उपरना रेशमी कमर से बांधलिया ॥

दो० तभी कोपि हलधर कह्यो सुनु रे मूढ़ कुजात। गजसमेत पटकों अभी मुख सँभाल कहु बात।

यह सुनतेही जैसे गजपालने हाथीको अंकुश देकर बलरामकी ओ झोंका वैसे कुवलयापीड़ बादलके समान गर्जता हुआ उनपर दौड़ा उ समय बलभद्रने एक मुक्का ऐसा उस हाथी के मारा कि वह शुण्ड सिको कर चिल्लाता हुआ पीछेको हट गया ऐसा बल रेवतीरमणका देखतेही ब बड़े शूरवीर जो वहां खड़े थे अपने मनमें हार मानकर कहने लगे इ दोनों बालकोंको कौन जीतने सकैगा व गजपालने भी डरके विचार कि जो यह लड़के हाथीसे नहीं मारे जावेंगे तो राजा कंस मुझे जीता छोड़ैगा ऐसा समझते ही गजपालने हाथी को बड़े जोरसे अंकुश मारक श्याम व बलरामपर डटाया जब हाथीने झपटकर मोहनप्यारे को शूं लपेटलिया व पृथ्वीपर पटककर दोनों दांतोंसे दबाया उस समय देवता ग्वालबाल व मथुरावासी यहहालदेखकर परमेश्वरसेश्यामसुन्दरकी कुश मनावने लगे तब केशवमूर्तिने छोटा रूप बनाकर दोनों दांतोंके बी चलेजाने से अपनेको बचालिया और वहांसे कूदकर सन्मुख होगये व ताल ठोंककर हाथीको ललकारा यह फुरती श्यामसुन्दर देखतेही सब छोटे बड़े बेडर होकर हँसने लगे जब हाथी ललकार सुन फिर उनकी ओर दौड़ा तब वृन्दावनविहारी पेटके तलेसे निकलकर प

चलेगये व उसकी पूंछ पकड़कर सौ पगतक इसतरह हाथीको पीछे घसीटा जिसतरह गरुड़जी सर्पको घसीट लेजाते हैं जब वह हाथी मुरलीमनोहरकी ओर फिरा तब बलरामजीनें उसकी पूंछ पकड़कर खींच लिया फिर दोनों भाई उस हाथीको कभी पूंछ कभी शूंड़ व कभी मुक्का मारके ऐसे खिलावनेलगे जैसे बिल्ली चूहेको खेल खिलाकर मारती है जब वह हाथी एक भाईपर झपटता तब दूसरा भाई उसे मुक्का मारकर छिटकजाता था कभी श्याम व बलराम उसके नीचे व कभी पीछे व कभी दोनों दांतोंके बीचमें व कभी सामने जाकर मुक्का व तमाचा मारके अलग होजाते थे व कभी दोनोदांत उसके पकड़के पीछे हटादेते व कभी पूंछपकड़कर खींच लेजाते थे॥

दो० यद्यपि धावै कोपिकै मूड़ हिलावत जाय। माखनप्रभु गोपालसों तदपि न कछू बसाय॥

जब वह हाथी दौड़ता व मुक्का तमाचा खाते खाते निर्बल होगया तब श्यामसुन्दर ने शूंड़ पकड़कर ऐसा झटकामारा कि हाथी मूर्च्छित होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा उस समय श्यामसुन्दरने उसकी छातीपर पांव रखकर दोनों दांत उसके उखाड़ लिये और वही दांत ऐसे हाथीके मस्तकपर मारे कि वह मरगया तब एक दांत आप लेकर दूसरा बलरामजी को देदिया यह हाल देखकर जब हाथीवान व राजा कंसके शूरवीर लड़नेवास्ते सन्मुख आये तब श्याम व बलरामने उन्हीं दांतोंसे उनकोभी मारडाला उस समय देवतोंने आकाशसे दोनों भाइयोंपर फूल बरसाये व मथुरावासियों ने प्रसन्न होकर कहा कंस अधर्मीने बिना अपराध इन दोनों बालकों के मारनेवास्ते हाथी खड़ा किया था सो बहुत अच्छा हुआ जो हाथी मारागया॥

दो० जो भूपति मनसा करी सो कछु ह्वैहै नाहिं। प्रकट कंसके काल हैं आये मथुरा माहिं॥

उससमयहाथीके लोहूका छींटा श्याम व बलरामके कपड़ोंपर पड़ा हुआ कैसा सुन्दर मालूम होता था जैसे बरसातमें बीरबहूटी पृथ्वीपर शोभा देतीहै व पसीना उनके मुखारविंदपर ऐसा दिखलाई देता था जिस तरह कमलके फूलोंपर ओसकी बूंदें रहती हैं जब श्याम व बलराम हाथीके मारने उपरांत ग्वालवालों समेत हँसते हुये धीरे धीरे बीच रंगभूमि

के जाकर खड़े हुये तब उस सभावालोंने जो लाखों मनुष्य वहांथे मोह प्यारेको अपनी अपनी इच्छानुसार देखा ॥

चौ० जाकी रही भावना जैसी। प्रभु मूरति देखी तिन तैसी ॥

हे परीक्षित श्रीकृष्णजीने गीतामें अर्जुनसे कहा मेरे जिस रूप ध्यान कोई करै मैं उसी रूपका दर्शन उसको देता हूं सो चाणूर आदि पहलवानों को श्याम व बलराम महाशूरवीर दिखलाई दिये व मथुरा स्त्रियोंको कामरूप अतिसुन्दर देख पड़े व ग्वालबाल उनके साथियों अपना मित्र व भाई बन्धु जाना व नन्दादिक ग्वालोंने अपना लड़ समझा और जो राजा कंसके मित्र वहांपर थे वे लोग श्याम व बलर को शत्रुरूप देखकर डरगये व राजा कंस उन्हें अपना काल जान भय से कांपने लगा व यदुवंशियोंने उनको अपनी रक्षा करनेवा समझा व योगी व ज्ञानियोंको पूर्णब्रह्म दिखलाई दिये व दूसरे लोगों केशवमूर्तिको देखकर जाना यह वही बालक है जिन्होंने छोटी अवस में पूतना राक्षसी को मारकर दो वृक्ष यमलार्जुन जड़से उखाड़डाले गोवर्द्धन पहाड़ अपनी अँगुली पर उठाकर राजा इन्द्रका अभिम तोड़ा व अघासुर व धेनुक व प्रलम्ब व केशी आदिक दैत्यों को म कर कालीनाग को यमुना से निकाल दिया व गोकुल व वृन्दावन ऐसे ऐसे कठिन काम किये जिसका हाल सुनकर आश्चर्य मालूम हो है आज कुवलयापीड़ हाथीको लड़कोंके खेल के समान मारडाला बाजे उनको बालक देखकर शोच करके कहते थे कंस बड़ा निर्दयी बड़ा अधर्मी है जो छोटे छोटे बालक कोमलवदनको वरजोरी पहलवान कुश्ती लड़ाकर इनका प्राण लिया चाहता है यहांसे उठ चलो यह अ न देखना चाहिये॥

दो० रीति अनीति निहारिकै कहैं परस्पर लोग। अब यह ठौर अधर्मको नहीं बैठने जोग॥

जब ऐसा विचारकर बाजे उनमें से उठगये व बाजे अपना अंचल फै फैलाकर परमेश्वर से यों वरदान मांगने लगे जिसतरह श्यामसुन्दर धनुष महादेवका तोड़ कर हाथीको माराहै उसीतरह ये पहलवान भी

हाथसे मारे जावें इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजीने कहा हे राजन् जिस समय मोहनप्यारे उस अखाड़े में जाकर खड़े हुये उससमय चाणूर व मुष्टिक आदिक पहलवानोंने अनेक रंगका जांघिया पहिने हुये चारों ओर से आनकर उन्हें घेरलिया व चाणूर पहलवानने निकट जाकर वैकुण्ठनाथ से कहा आज मेरे राजाका चित्त उदास है मन बहलानेवास्ते मुझे तुम्हारे साथ कुश्ती लड़ाकर देखा चाहते हैं इसीवास्ते तुम्हें यहां बुलाया है व नौकरोंको अपने मालिककी आज्ञा माननी चाहिये सो आओ हम व तुम कुश्ती लड़कर राजाको प्रसन्न करें॥

दो० रीति धर्म अरु नीतिकी सब जानत मनमाहिं। स्वामिकाजते जगतमें औ कछु उत्तमनाहिं॥

और हमने सुनाहै कि तुम कुश्ती लड़ना अच्छा जानते हो वनमें ग्वालवालों के साथ लड़ा करते थे सो आज मैं तुम्हारे बलकी परीक्षा लिया चाहता हूं किसी बातका डर अपने मनमें मत रक्खो यह सुनकर श्यामसुन्दरने कहा हे चाणूर हम ऐसे प्रतापी राजोंको क्या प्रसन्न करेंगे पर तू अपने स्वामी की आज्ञा पालने चाहता है तो मैं तेरे साथ लड़ूंगा॥

चौ० यद्यपि तू बलको अधिकारा। मैं अहीर बालक सुकुमारा॥
तदपि एकवार मैं लरिहौं। युद्ध विषे तोसों नहिं टरिहौं॥

तुम्हारे राजाने बड़ी दया करके मुझे बुलायाहै पर न्याय सब किसी को करना चाहिये तुम्हारा राजा अधर्मी व बेदर्द होकर तुम उससे अधिक निर्दयी मालूम होते हो किस वास्ते कि मुझ बालक से तुमको कुश्ती लड़ना जो तरुण व बलवान् हो शोभा नहीं देता वैर व प्रीति व विवाह व कुश्ती बराबरवालेसे करना चाहिये पर राजा कंससे हमारा कुछ वश नहीं चलता इसलिये तुमसे लड़ेंगे पर हमको बचाकर कुश्ती लड़ना जोरसे पटककर मेरा हाथ व पैर मत तोड़ डालना जिसमें हमारा व तुम्हारा दोनों मनुष्य का धर्म बना रहै व राजा कंस भी प्रसन्न होवैं यह बात सुनकर चाणूर बोला देखनेमें तुम बालक दिखलाई देते हो परन्तु तुम्हारी कीर्ति व काम सुनने व कुवलयापीड़ हाथी का मारना देखनेसे आप कोई अवतार मालूम होते हैं इसलिये मुझे तुम्हारे साथ किसी तरह कुश्ती लड़ना

उचित नहीं है पर क्या करूं अपने स्वामीकी आज्ञा न मानूं तो मे
धर्म जाता है ॥

चौ० फिर चाणूर कह्यो हरषाई। तुम्हरी गति जानी नहिं जाई ॥
तुम बालक मानुष नहिं दोऊ। कीन्हें कपट रूप सुर कोऊ ॥
खेलत धनुष खण्ड द्वै करे। मार्यो तुरत कुवलया तरे ॥
तुम से लड़े हानि नहिं होय। ये बातैं जानै सब कोय ॥

चवालीसवां अध्याय।

श्याम व बलराम का चाणूर आदिक पहलवान व राजा कंसको मारना ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जब ऐसी बातैं कहकर मोहनप्यारे चाणू
व बलभद्रजी मुष्टिक पहलवानसे कुश्ती लड़ने लगे तब मथुरावासियों
बालक व जवान की कुश्ती देखकर आपस में कहा राजा कंसको हम
कुश्ती लड़ानेसे मना करैं तो वह अधर्मी हमैं मारडालैगा व इस जग
बैठे रहने में हमारा धर्म नहीं रहता इसलिये यहां से उठजाना उचित है।

दो० जो अनीति देखै नहीं ताको पाप न होय। जो जैसी करणी करै वह फल पावत सोय

हे राजन् जो मनुष्य श्यामसुन्दरको बालक जानते थे वह ऐसा वि
चारकर वहां से बाहर चले गये व जातीसमय कंसको शाप देकर कह
लगे यह अपने अधर्म का दण्ड अवश्य पावैगा व मुरलीमनोहरने लड़
समय अपनी महिमा से अपना शरीर हीरेके समान ऐसा कड़ा बनालि
जिसे कोई अस्त्र भी काटने न सकै जब श्यामसुन्दर ने हाथ से हाथ शि
से शिर छाती से छाती ठोढ़ी से ठोढ़ी पैर से पैर चाणूरसे मिलाया त
चाणूर ने अनेक दांव व पेंच लगाकर श्यामसुन्दरको पकड़ने चाहा प
वह उसके हाथ नहीं आये तब चाणूरने उदास होकर कहा देखो हम
बहुत पहलवानोंको एक दांव व पेंचसे मार डाला था न मालूम इस बा
लक के कितना बल है जिसपर मेरा कुछ वश नहीं चलता और य
लड़का एक अँगुलीभी मुझे मारता है तो मैं घबड़ा जाता हूं इतनी कथा
सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् जिस परब्रह्म परमेश्वरको महादेव
ब्रह्मा नहीं पकड़ने सक्ते व जिन्होंने अपने दो पगमें चौदहों लोक ना

लिये थे उनको चाणूर पहलवान किसतरह पकड़ने सक्ता है चाणूर व मुष्टिक श्याम व बलराम की महिमा नहीं जानते थे पर उन्होंने पिछले जन्म बड़ा तप किया था जिसके प्रतापसे उनका शरीर वैकुण्ठनाथके अंगमें स्पर्श होता था यह बात ब्रह्मादिक देवतों को भी जल्दी नहीं प्राप्त होती जब चाणूर अपने छल व बलसे केशवमूर्तिपर झपटता था तब वह पीछे कूदकर बचाते थे॥

दो० मोहन मुखपर शरमजल सोहै अतिसुखदाय। ज्यों फूलनके पातपर रहै ओस लपटाय॥

जब चाणूर ने पीछे हटकर एक मुक्का श्यामसुन्दर की छाती पर बड़े जोरसे मारा और उनके अंगपर फूलसी भी चोट नहीं लगी तब नन्दलाल जी ने दोनों हाथ उसके पकड़कर अपने शिरके चारों ओर घुमाया और ऐसा पृथ्वी पर पटका कि शरीर उसका अखाड़ेकी मिट्टीमें धँसकर प्राण निकल गया व जिसतरह बालक चिउँटीको पकड़कर मार डाले उसीतरह बलरामजी ने भी मुष्टिक पहलवानको कुश्ती लड़कर मारडाला व चैतन्यात्मा दोनों पहलवानोंका वैकुण्ठमें पहुँचा जब उसके मारने उपरांत शल व तोशल व कूट पहलवान खड्ग लेकर श्यामसुन्दरसे लड़नेवास्ते आये तब केशवमूर्ति ने बायें पैरसे लात मारकर शल व तोशलको व बलरामजीने बायें हाथके मुक्का से कूट पहलवानको मारडाला इन पाँचों के मरतेही बाकी पहलवान जो उनके साथी व चेले वहां थे अपना अपना प्राण लेकर भाग गये यह दशा देखतेही मथुरावासी व हरिभक्तलोग प्रसन्न होकर आपसमें कहने लगे बड़ा भाग्य उस पृथ्वीका समझना चाहिये जहां इन लड़कोंका चरण पड़ता है व गोप व ग्वालबालोंकी बराबरी कोई नहीं करने सक्ता जो इनके साथ दिन रात रहकर अपना जन्म स्वार्थ करते हैं और गोपियां धन्य हैं जो आठोंपहर मोहनीमूर्तिका ध्यान अपने हृदय में रखकर इनके साथ प्रीति करती हैं व जो जीव ब्रजगोकुल में जन्म लेकर श्यामसुन्दर का दर्शन करता है उसको देवतों से उत्तम समझना चाहिये॥

दो० ब्रजवासिनके भाग्यकी महिमा कही न जाय। जिनके चितमें नित बसैं माखन प्रभु यदुराय॥

राजा कंसने पापी होने परभी हमारे साथ बड़ी भलाई की जिस
बुलाने से हमलोगोंने वैकुण्ठनाथका दर्शन पाया नहीं तो इनका दर्श
मिलना देवतोंको कठिन है हे राजन् उससमय मथुरावासियोंने इसीतरह
बहुत स्तुति श्याम व बलरामकी की व देवतोंने आकाश से उनपर फू
बरसाये व मथुरापुरी में यह समाचार सुनकर सब छोटे बड़े आनन्द होग
व सिवाय राजा कंस और जितने लोग रंगभूमि में थे सबोंने प्रसन्न हो
रामकृष्ण की जयजयकार की व बजनिये अनेक तरह का बाजा बजा
लगे व श्याम व बलराम बड़े हर्षसे ग्वालबालों को दांव पेंच बतलाने ल
व राजा कंस चाणूर आदिक पहलवानों के मारेजाने से बहुत उदास हो
कर मथुरावासियों को कहने लगा तुमलोग श्रीकृष्णजी की विजय हो
से प्रसन्न होकर बाजा बजवाते हो जब उसकी बातका उत्तर किसीने न
दिया तब उसने क्रोधसे चिल्लाकर अपने साथी दैत्य व वीरोंको जो मचा
पर बैठे थे कहा कि तुमलोग इन लड़कों को बाहर लेजाकर खड्ग
मारडालो व बाजा बन्द करके गोपग्वालों को बांध लेव व वसुदेव देव
को उग्रसेन समेत मारकर रंगभूमि का फाटक भीतर से बन्द करदेव य
वचन सुनतेही जब उन्होंने नंगी तलवार लिये श्याम व बलरामको आ
कर घेर लिया तब दोनों भाइयों ने एक क्षण में बहुत से दैत्य व वीरों
लड़कर मारडाला व बाकी दैत्य इसतरह मुरलीमनोहरके प्रकाशसे अप
प्राण लेकर भाग गये जिसतरह प्रातसमय सूर्य के निकलने से त
छिपजाते हैं व जब वसुदेव व देवकी ने श्याम व बलराम के कुश्ती लड़
वास्ते आने का हाल सुना तब वह दोनों व्याकुल होकर परमेश्वर
उनकी कुशल मनाने लगे ॥

दो० बारबार करुणा करैं धरैं धरणि पर शीश। मम पुत्रन के हूजियो रक्षपाल जगदीश

जब मोहनप्यारे अन्तर्यामी ने माता पिता को दुःखी जानकर कंस
यह वचन सुना तब ऐसा प्रण किया कि आज कंसको मारकर वसुदेव
देवकी को छुड़ाना चाहिये ऐसा विचारतेही श्यामसुन्दर ने अपना ब
रूप बनालिया व इसतरह कूदकर मचान पर जहां राजा कंस खड्ग लि

बड़े अभिमानसे बैठाथा चढ़गये जिसतरह बाज कबूतरपर झपटताहै उन्हें देखते ही पहिले कंस ने विचारा कि भाग जाऊं फिर मनमें धैर्य धरकर जब उन पर खड्ग चलाने लगा तब नन्दलालजी उसका वार बचाकर उसे खेल खिलाने लगे उससमय देवतों ने विमानों पर चढ़ेहुये आकाश में से विनय किया हे परब्रह्म परमेश्वर कंस महापापीको तुरन्त मारडालो क्यों इसके मारनेमें विलम्ब करतेहो यह बात सुनतेही श्यामसुन्दरने ऐसा प्रकाश अपने शरीर में प्रकट किया जिसकी चमक देखना न सहकर कंस ने अपनी आंखें बन्द करलीं तब मोहनप्यारेने पैरके ठोकरसे मुकुट उसका गिरा दिया व शिरका बाल पकड़ के मचान से पृथ्वी पर पटक कर तीनों लोकों का बोझा अपने शरीर में लियेहुये उसके ऊपर कूदपड़े ॥

दो० जब धरणी में आयकै पर्यो उतानो भूप। उरऊपर दर्शन दियो श्याम चतुर्भुज रूप ॥

हे राजन् वैकुण्ठनाथ के कूदतेही कंस का प्राण निकल गया पर आठों प्रहर सोते व जागते व बैठते व उठते व खाते व पीते व चलते व फिरते श्यामसुन्दर का रूप उसकी आंखों में बसा रहता था इसलिये मुक्तिपदवी पर पहुँचा ॥

दो० मःखनप्रभुके रूपकी महिमा अगम अपार। जाके सुमिरण ध्यानते तरत सकल संसार ॥

देखो क्या बड़ा भाग्य उन मनुष्यों का है जो लोग नित्य परमेश्वर का स्मरण व ध्यान करते हैं जब कंस को मरा देखकर आठ भाई उसके अपना अपना हथियार लिये हुये गोपीनाथ को मारने वास्ते दौड़े व बलरामजी ने हल व मूशल ले उन सबको मारडाला तब सब किसी ने बड़े शब्द से श्याम व बलराम का जयजयकार किया यह समाचार सुन-कर सब छोटे बड़े मथुरावासी प्रसन्न होगये व देवतों ने दुन्दुभी बजाकर नन्दनबाग के पुष्प दोनों भाइयों पर बरसाये व नेवतेवाले हरिभक्त राजा कल्याणरूप को दण्डवत् करके अपने अपने स्थानपर गये व नन्द व उपनन्द आदिक यह सब चरित्र स्वप्नवत् समझ कर अपने डेरे पर चले आये व केशवमूर्ति मारे क्रोधके अपने हाथ कंसके शिरका बाल पकड़कर इसतरह उसकी लोथ सड़क में घसीटते हुये यमुना किनारे लेगये जिस

तरह हाथी को मार सिंह घसीट लेजाता है कंसने वसुदेव व देवकी को कैद रखकर बहुत दुःख दिया था इसीवास्ते मोहनप्यारे ने उसकी लोथ घसीटा व लोथ खींच लेजाने से वहां कंसखारनाला प्रकट होकर अवतक मथुरा में बाजीसमय कंसकी खाल दिखलाई पड़ती है व दूसरा कारण घसीटने लोथ का यह समझो जिसमें मथुरा की रज लगने से शरीर उस अधर्मी का पवित्र होजावै यमुना किनारे लोथ पहुँचाकर थोड़ी देर मुरलीमनोहर उस जगह बैठेथे इसलिये वहांका नाम विश्रामघाट प्रसिद्ध हुआ जब यह समाचार रनिवासोंमें पहुँचा तब कंसकी रानियां व भौजाइयां व नातेदार स्त्रियां रोती पीटती हुई यमुना किनारे पहुँचीं ॥

दो० सब धाईं सुधि पायकै आईं जहां नरेश। तोड़े हार शृंगार सब छोड़े शिरके केश॥

हे राजन् उन स्त्रियों ने अपने अपने पतियों का मुख देखते ही उनका शिर गोद में रख लिया व अतिविलाप से रोकर यों कहने लगीं हे कंस तू ऐसा प्रतापी राजा होने पर भी इस दुर्दशा से मारा हुआ पृथ्वी पर पड़ा है जो तू श्यामसुन्दर व बड़ों से विना अपराध वैर न करता तो किस वास्ते तेरी यह गति होती हरिभक्त व महात्मों को दुःख देना अच्छा नहीं होता यह सब हाथी व घोड़े व द्रव्य अपना छोड़कर तू चला जाता है व हमारी दशा व रोनेपर कुछ ध्यान नहीं करता तेरे वियोग से हम लोगों की क्या गति होगी संसार में अपने बराबर तू किसी को नहीं समझता था अब वह सब घमण्ड तेरा क्या हुआ जो इस तरह पर पृथ्वी पर विना कफन के पड़ाहै तेरे सोने व बैठने वास्ते शीशमहल व रंगमहल की अटारियां जो बनी हैं उनमें अब कौन बैठे व सोवैगा व तेरे जड़ाऊ सिंहासन पर कौन बैठकर मथुरावासियों का न्याय करैगा ॥

दो० यह मन्दिर सुन्दर महा जिनके सम नहिं और। तुम बिन ऐसो कौनहै जो बैठे यहि ठौर॥

जब इसी तरह अनेक बातें कहकर सब रानियां व स्त्रियां महाविलाप करने लगीं तब श्यामसुन्दर करुणानिधान उन पर दयालु होकर बोले हे मामीजी जो कुछ भाग्य में लिखा होताहै वह किसी तरह नहीं मिटता जैसे पाप कंस ने किये वह सब तुमने देखे हैं परमेश्वरकी इच्छा इसीतरह

पर जानकर धैर्य धरो मैं तुम्हारी आज्ञा अच्छी तरह पालन करूंगा अब इन लोगों की क्रिया व कर्म करना उचित है ॥

चौ० मामी सुनो शोक नहिं कीजै। मामाजी को पानी दीजै ॥
सदा न कोऊ जीता रहै। झूठा वह जो अपना कहै ॥

श्यामसुन्दरके समझाने से सब स्त्रियोंने अपने अपने पुरुषों की लोथ जलाकर क्रिया व कर्म उनका किया व श्यामसुन्दरने कंसका क्रिया व कर्म उग्रसेनके हाथसे कराया ॥

दो० कंसहतन लीला सुनै मन चित दे जो कोय। माखनप्रभु के नेह में ताको भय नहिं होय ॥

पैंतालीसवां अध्याय।

श्यामसुन्दरका उग्रसेनको राजगद्दीपर बैठालना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित जब कंस आदिक की लोथ जलाकर सब अपने अपने घर गये तब श्यामसुन्दर व बलरामजी अक्रूरको साथ लेकर कैदखाने में वसुदेव देवकीके पास आये जब माता व पिताकी बेड़ी व हथकड़ी कटवाकर दोनों भाइयों ने शिर अपना उनके चरणों पर रख दिया तब देवकी रोकर बोली अय प्राणप्यारे तुम बारह वर्ष तक कहां रहे मैंने आजतक कभी तुमको गोदमें नहीं खिलाया ॥

दो० सुनि जननीके वचन प्रभु कृपासिंधु यदुराय। भये प्रेमबश दुखित लखि बोलेअतिसकुचाय ॥

हे माता व पिता मैं कैसा अभागी तुम्हारे यहां उत्पन्न हुआ जो मेरे कारण तुम लोगोंने इतना दुःख उठाया इसमें हमारा कुछ अपराध नहीं है किसवास्ते कि जबसे आप हमको गोकुलमें नन्दजीके घर पहुँचाय आये तब से मैं परवश था इसलिये तुम्हारे पास नहीं आनेसका और मुझे सदा यह इच्छा बनी रहती थी कि जिसके पेटमें दश महीने रहकर हमने जन्म लिया उसने बालचरित्र हमारा नहीं देखा और हमने लड़कपन में माता व पिता का कुछ सुख नहीं पाया दूसरेके घर रहकर वृथा इतने दिन गँवाये जिन्होंने हमारे वास्ते इतना दुःख उठाया उनकी कुछ सेवा हमसे नहीं बनपड़ी हमें तुम्हारी सेवा करना व बाललीला का सुख दिखलाना उचित था सो यह सब सुख नन्द व यशोदाको प्राप्त हुआ ॥

दो० सबै जीव सन्तानसे सुख पावत दिन रैन। तुम्हें हमारे जन्मसे बहुतै भये कुचैन॥

हे माता जिस पुत्रसे उनके मा व बाप दुःख पाते हैं वह बेटा अव नरक भोगता है संसार में उन्हीं को सामर्थी पुरुष समझना चाहिये अपने माता व पिता की टहल मनसा वाचा कर्मणासे करते हैं मनुष्य में जो कोई अपने मा व बाप व गुरु व बड़े वृद्धोंकी सेवा व स्त्री बाल का पालन नहीं करता उसके लोक व परलोक दोनों बिगड़ जाते हैं

दो० तात मातसों प्राणधन कपट करै जो कोय। ताको तीनोंलोकमें कभी भलो नहिं हो

हे पिता मैं ब्रह्माकी आयुर्दा पाकर जन्म भर तुम्हारी सेवा करूं तो आपसे उऋण नहीं होसक्ता इसलिये तुम्हारा ऋणियां होकर यह वि करता हूं कि मेरा अपराध क्षमा कीजिये और सब दुःख व सुख अ कर्मानुसार समझिये हे माता अब तुम शोच छोड़कर आनन्द मनावो तुम्हारी आज्ञानुसार स्वर्ग व पाताल जानेसे नहीं डरूंगा व अष्टसि नवनिधि तुम्हारी दासी बनी रहेंगी॥

दो० यद्यपि हम अवगुणभरे प्रकटे महाअसाध। तद्यपि सुतहित जानिकै क्षमा करो अपरा

जब यह बात सुनकर वसुदेव व देवकीको ज्ञान प्राप्त हुआ तब उन्हें समझा कि यह हमारे पुत्र न होकर त्रिभुवनपति हैं उन्होंने अपनी इ से पृथ्वीका भार उतारने वास्ते अवतार लेकर जो जो काम किया है मनुष्य नहीं करने सक्ता ऐसा समझकर वह दोनों मोहनप्यारेकी स्तु करनेलगे पर श्रीकृष्णजी और बहुतसी लीला संसार में करनी चाहते इसलिये उन्होंने वह ब्रह्मज्ञान उनका हरलिया तब वसुदेव व देवकी उ अपना बेटा जानकर गोद में बैठाकर प्यार करने लगे व उनका माथा मुख चूमनेसे प्रसन्न होकर पिछला दुःख भूल गये व श्याम व बलरा को साथ लेकर बड़े हर्ष से अपने घरपर आये॥

चौ० परम हुलास नयन उर पेखैं। अपनो जन्म सुफल करि लेखैं॥
अति आनन्द भयो मन माहीं। सो लिखि सकत शारदा नाहीं॥

हे राजन् वसुदेवजी ने घर पहुँचकर उसीसमय दशहजार गौ वि पूर्वक जो श्यामसुन्दरकी जन्मतीसमय मनमें संकल्प किया था ब्राह्म

को दान दिया व दोनों भाइयों को ग्वालबालों समेत छत्तीस व्यंजन भोजन कराके उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहिनाया तब मुरलीमनोहर ने बलरामजी से कहा बिना राजाके प्रजाको दुःख होगा व वसुदेवको राजगद्दी पर बैठालने से संसारी लोग ऐसा कहैंगे कि राज्य लेने के लालच से कंसको मारडाला इसलिये उग्रसेन को जिनका राज्य कंसने छीन लिया था राज्य देना चाहिये ऐसा विचार कर श्यामसुन्दर व बलराम व वसुदेवजी समेत उग्रसेन के पास चले गये व उन्हें दण्डवत् करने उपरान्त बहुतसा धैर्य देकर बोले अय नानाजी आप राजसिंहासन पर बैठकर प्रजाको पालन कीजिये व हमें अपना दास जानकर किसी बातका सन्देह मनमें न लाइये सब पृथ्वी के राजा अपने अपने देश का रुपया देकर तुम्हारे अधीन रहैंगे ॥

चौ० जो जन तुम्हरी आन न मानैं। क्षणमें तिन्हैं बांधि हम आनैं ॥
निर्भय राज्य करो जगमाहीं। अब तुमको संशय कछु नाहीं ॥

यह वचन सुनतेही उग्रसेन हाथ जोड़कर विनयपूर्वक बोले महाराज आपने बहुत अच्छा किया जो राजा कंस व उसके भाइयों को कि वह सब पापी व अधर्मी थे मारकर यदुवंशियों का दुःख छुड़ाया जिसतरह तुमने दैत्य व राक्षस व अधर्मियों को मारकर हरिभक्तों को सुख दिया उसीतरह राजसिंहासन पर बैठकर प्रजाका पालन कीजिये यह बात सुनकर मोहनप्यारे बोले आपने सुना होगा कि राजा ययाति के शाप देने से यदु आदिक उनके बेटोंने राजगद्दी नहीं पाई थी व हम भी उसी कुल में उत्पन्न हुये हैं इसलिये मुझे राजसिंहासन पर बैठना न चाहिये ॥

सो० करौ बैठि तुम राज दूरि करौ संदेह सब। हम करिहैं सब काज जो आयसु दीजै हमैं ॥

हे नानाजी आप सिंहासन पर बैठकर गौ ब्राह्मण व हरिभक्तों को सुख दीजिये व जो यदुवंशी कंसके डरसे मथुरापुरी अपनी जन्मभूमि छोड़कर दूसरे देश में जाबसे हैं उनको बुलाकर यहां बसाइये व प्रजा से अधिक करलेने का लोभ न रखकर किसीको बिना अपराध दण्ड न दीजिये जब उग्रसेन ने कहना श्यामसुन्दर का अपना भाग्य उदय समझकर मान

लिया तब श्रीकृष्णजी भक्तहितकारी ने उग्रसेनको राजसिंहासनपर बै कर विधिपूर्वक तिलक राजगद्दी का लगादिया व श्याम व बलरामने अ हाथ से उनका चँवर हिलाया व सब छोटे व बड़ों ने मंगलाचार मनाया मथुरावासी आनंदित होकर श्यामसुन्दर की स्तुति करने लगे व देवत आकाश से उनपर फूल बरसाये व राजा उग्रसेन के कहला भेजने से यदुवंशी जो भाग गये थे फिर मथुरा में आन बसे जब मोहनप्यारे ने बहुत दुःखी व कंगाल देखा तब द्रव्य व वस्त्र व भूषण व गांव व स आदिक जिसको जिस वस्तु की चाहना थी उसे वही पदार्थ देकर ऐ प्रसन्न करदिया कि उनको फिर कुछ इच्छा नहीं रही व वसुदेव व देव परम आनन्द हुये व जो यदुवंशी बूढ़े व निर्बल थे वह लोग श्यामसुन्द की अमृतरूपी दृष्टि पड़ने से तरुण व बलवान् होगये ॥

दो० उग्रसेन के राज्य में सुखको सदा समाज। सभी काम कीन्हे जहां माखन प्रभु व्रजराज

इतनी कथा सुनाकर शुकदेव स्वामी बोले हे परीक्षित श्यामसुन्दर इसी तरह सब किसी को सुख देकर बलरामजी से कहा यशोदा ने ह दोनों भाइयों को बड़ी प्रीति से पालन करके इतना बड़ा किया सो हमारे वास्ते बहुत शोच करती होंगी व नन्दराय व्रजवासियों समेत चलने की आशासे जो बागमें टिके हैं चलकर उनको बिदा करनाचाहि

चौ० बहुत हेत हमसों उन कीन्हों। विविध भांति हमको सुख दीन्हों॥
सकुचत हौं अपने मनमाहीं। उनसे उऋण कबहुँ हम नाहीं॥
पलटो नहीं उन्हें जो दीजै। अब चलि बिदा उन्हें व्रज कीजै॥

ऐसा कहकर मोहनप्यारेने बहुत सा द्रव्य व रत्न व भूषण व वस्त्र अप साथ लिवा लिया व राजा उग्रसेन व वसुदेवजी को संग लेकर जहां नंदादिक टिके थे वहांको चले जिस समय नन्दजी अपने डेरे पर बैठे यह विचार कर रहे थे कि कई दिन वृन्दावन से आये हो चुके श्याम बलराम आवैं तो चलैं ॥

सो० अब कैसे व्रजजाहिं बलमोहन दोऊ बिना। अतिव्याकुल उरमाहिं कबलौं नयनन देखि

उसी समय मोहनप्यारे ने वहां पहुँचकर नन्दजी के चरणों पर सि

अपना धरदिया तव नन्द ने शिर उनका उठाकर छाती में लगा लिया व वसुदेव व राजा उग्रसेन प्रेमपूर्वक नन्दराय के गले मिलकर जब सब कोई वहां बैठे व नन्दराय मनमें समझे कि अब श्यामसुन्दर हमारे साथ वृन्दावनको चलेंगे तव केशवमूर्ति ने सब वस्तु जो वहां लेगये थे नन्दराय के सामने रखकर विनय किया अय वावा मैं तुमसे किसी तरह उऋण नहीं होसक्ता आपने मेरा बड़ा प्रतिपालन किया है॥

दो॰ चौंकिउठे नँदरायसुनि तू क्या कहत गुपाल। मोसों कहत कि आनसों किन कीन्हों प्रतिपाल॥

यह वचन सुनतेही केशवमूर्ति ने कहा अय बावा हमको कहते हुये संकोच मालूम देता है आपने गर्ग पुरोहित का कहना सच न मानकर मुझे अपने बेटे समान पालन करके बड़ा सुख दिया मैं कहीं रहूं पर तुम्हारा कहलाऊंगा व हमारे पिता ने रोहिणी मेरी माता को बड़ी विपत्ति में तुम्हारे घर पहुँचा दिया था सो तुमने सन्मानपूर्वक उसको अपने यहां रक्खा व मैंने गोरस आदिक व्रजवासियों का खाकर अनेक उपद्रव किया सो सब आपने दया की राह क्षमा करादिया व राजा कंस मेरे शत्रु से तुम लोगोंने नहीं डरकर मेरा पालन किया व यशोदा ने मुझे पुत्र जानकर पाला सो अब तुम्हें व यशोदा को अपने माता व पिता से अधिक जानकर तुम से उऋण नहीं होसक्ते पर एक वात कहताहूं तुम कुछ खेद मत मानना अबहम थोड़े दिन मथुरा में यदुवंशी आदिक जाति भाइयों के साथ रहकर अपने माता व पिताको सुख देवेंगे आज तक उन्होंने हमारे वास्ते बड़ा दुःख पाया है जो वह हमको तुम्हारे यहां न पहुँचाते तो क्यों इतना दुःख उठाते सो तुम घर पर जाकर यशोदा माता व सब वृन्दावनवासियों को जो मेरे वास्ते शोच करते होंगे धैर्य देव व यशोमति मैया से कहि देना जिस तरह मेरे वास्ते माखन रख छोड़ा करती थीं उसी तरह अब भी घर रक्खा करें प्रकट में हम तुम से विलग होते हैं पर अन्तःकरण से सदा तुम्हारे पास रहेंगे सो मेरे ऊपर दया रखकर कभी मुझे मति भूलना॥

चौ॰ मैया से पालागन कहियो। हम से प्रेम करे तुम रहियो॥
होंगी दुखित यशोमति मैया। मोहिं बिनु व्रजतिरिया सब गैया॥

तातें वेगि गमन ब्रज कीजै। जाय सबनको धीरज दीजै॥
मोरी सुरति न उरते टारो। मैं तुमसे कबहूं नहिं न्यारो॥

दो० निठुरवचन सुनि श्यामके भये विकल अतिनन्द। उमँगि नीर नयननचले पड़गयेदुखकेफन्

यह बात श्यामसुन्दर के मुख से निकलतेही नन्दराय इतना विला करके रोये कि उनको हिचकी लगगई व अचेत होकर गिरपड़े व ग्वाल बाल उदास होकर आपस में कहने लगे हमारे निकट नन्दकिशोर ह लोगों से कपट करके यहां रहिजाया चाहते हैं नहीं तो ऐसा कठोर वच न कहते ऐसा विचार कर श्रीदामा ग्वाल ने कहा हे मोहनप्यारे अ मथुरा में तुम्हारा क्या काम है जो ऐसे निर्दयी होकर अपने बूढ़े बाप रो हुये को विदा करके यहां रहना चाहते हो राजा कंस को तुमने मारा तो अच्छा किया अब वृन्दावन में चलकर वहां का राज्य करो मथुरा की राज धानी देखकर लोभ करना न चाहिये हाथी व घोड़ा व द्रव्य व राज देखकर मूर्खलोग लोभ करते हैं तुमको वृन्दावन ऐसा सुख जहां सद वसन्त ऋतु वनी रहती है कहीं नहीं मिलैगा हे भाई तुम वृन्दावन छोड़ कर दूसरी जगह मति रहो कदाचित् निर्दयी होकर यहां रहिजावोगे तो राधा आदिक सोलह हजार गोपियां जो दिन रात तुम्हारा चन्द्रमुख देखकर अपनी आंखें ठण्ढी करती थीं व पांच हजार ग्वालबाल जो तुम्हा साथ गौ चराते समय मुरली की ध्वनि सुनकर अपना जन्म सफ जानते थे वह सब तुम्हारे विना कैसे जीवेंगे हे नन्दकिशोर तुम मे कहना न मानकर हम लोगों की प्रीति छोड़ दोगे तो यहां रहने में तुमको क्या यश मिलैगा जिस उग्रसेन को तुमने राज्य दिया है रात दिन उसकी सेवकाई करनी पड़ेगी यह अपमान तुम से किस तरह सहा जायगा इ लिये वृन्दावन को चलो॥

चौ० ब्रज वन नदी विहार विचारो। गायनको मनते न बिसारो॥
नहिं छोड़ैं तुमको ब्रजनाथा। चलिहैं सभी तुम्हारे साथा॥

इसीतरह ग्वालवालोंने अनेक बातें श्यामसुन्दरसे कहीं पर उन्हों नहीं माना तब कुछ ग्वालवाल श्याम व बलराम के साथ मथुरामें र

वास्ते तय्यार होकर नन्दरायसे बोले आप निश्चिन्त होकर घरपर चलिये हमलोग पीछेसे इनको अपने साथ लेकर वृन्दावनमें पहुँचते हैं यह वचन सुनतेही नन्दजी विरहसागरमें डूबकर चित्रसे चुपचाप खड़े होकर मोहनप्यारेका मुख देखने लगे व मारे शोचके ऐसा घवड़ा गये जिसतरह सांप काटने से मनुष्य व्याकुल होजाता है ॥

दो० विरहव्यथा काष्टित महा जानतहौं सब कोय । जासों बिछुरत प्राणपति ताकी गति कह होय ॥

यह दशा उनकी देखकर बलरामजी ने नन्दरायसे कहा आप इतना शोच क्यों करते हैं थोड़े दिनमें हमलोग यहां का काम करके तुमसे आन मिलेंगे ॥

चौ० हरि प्रकटे भूभार उतारण । कह्यो गर्ग तुमसों सब कारण ॥
मातु पिता हमरे नहिं कोऊ । तुम्हरे पुत्र कहावैं दोऊ ॥

हे बाबा वृन्दावनका ऐसा सुख दूसरी जगह मिलना कठिनहै इसलिये तुम्हारा घर छोड़कर कहीं न जाऊंगा हमारी माता अकेली वहां व्याकुल होती होगी इसवास्ते आपको यहांसे विदा करते हैं जिसमें तुम्हारे जानेसे उनको धैर्य हो यह वचन सुनतेही नंदजी महाव्याकुल होकर श्यामसुन्दर के चरणोंपर गिरपड़े और रोकर बोले अय बेटा एकबार तुम दोनों भाई मेरे साथ चलकर अपनी माता आदिक सब किसीको धैर्य देकर फिर चले आवना मैं तुम्हारा चरण छोड़कर वृन्दावन नहीं जाने सक्ता तुम्हारी माता माखन रोटी तय्यार करके बैठीहुई राह देखती होगी मैं उससे जाकर क्या कहूंगा तुम जल्दी घर पर चलो ॥

चौ० क्यों जीवें बिनु दर्शन पाये । भये निठुर मथुरा क्यों आये ॥

अय बेटा हमने बारहवर्षतक पालनकर तुमको सयानाकिया पर तुम्हारे प्रताप व महिमाको नहीं जाना अब वसुदेवजी के बेटा होकर तुमने गर्ग जीका वचन सच्चा किया जब जब हमपर दुःख पड़ताथा तब तब तुम हमारी रक्षा करते थे कदाचित् तुमको अपने वियोगमें हमलोगोंको मारना था तो उसी दिन गोवर्धन हमारे ऊपर क्यों नहीं गिरा दिया जिसके तले हम सब कोई दबकर मरजाते तो आज यह दशा हमको क्यों देखनी पड़ती ॥

दो० देखि प्रीति अतिनन्दकी मन वसुदेव सिहात। सकुचि रहे सब प्रेमवश कहि न सकत कछुबात॥

जब इसीतरह नन्दादिक रोने व विलाप करने लगे व मोहनप्यारे उनकी दशा देखकर विचारा कि यह लोग हमारे वियोगमें जीते न बचैं तब अपनी मायाको जिससे सब संसारको भुलारक्खाहै उनपर फैलादी व हँसकर कहा अय बाबा तुम किसवास्ते उदास होते हो मैं तुमसे कहीं दूर न जाकर तीन कोसपर यहां रहूंगा यशोदा मेरी माता व सब स्त्री पुरुष वृन्दावनवासी हमारे वास्ते शोच करते होंगे इसलिये उनको धैर्य देनेवास्ते तुमको बिदा करताहूं जब परमेश्वरकी माया व्यापनेसे नन्दराय को कुछ धैर्य हुआ तब वह हाथ जोड़कर बोले हे जगन्नाथ तुम मथुरामें रहना चाहते हो तो मेरा क्या वश है हम तुम्हारी आज्ञासे वृन्दावनको जाते हैं पर व्रजवासियों को मत भूलना॥

दो० मेटि दियो सन्ताप सब कियो सुकृतकी खान। भरसाखी चौदह भुवन सुर मुनि वेद पुरान॥

यह वचन सुनतेही वसुदेवजी बहुत द्रव्य व रत्नादिक नन्दरायको देकर विनयपूर्वक बोले हे नन्दजी जो उपकार तुमने मुझपर किया है उससे मैं उऋण नहीं होसक्ता इन दोनों बालकोंको अपना जानकर यहां वहां रहनेमें कुछ भेद मत समझना हे राजन् यह बात सुनकर नन्दराय ने श्यामसुन्दरको दण्डवत् की व पांच सात ग्वालबालोंको वहां छोड़ दिया और सबको साथ लेकर रोते पीटते वृन्दावनको चले पर सब कोई मथुराकी ओर पीछेसे देखते जाते थे॥

चौ० चले सकल मग शोचत भारी। हारे सरबस मनहुँ जुवारी॥
काहू सुधि काहू सुधि नाहीं। लटपट चरण परत मगमाहीं॥

जब श्यामसुन्दर नन्दजी आदिक को विदा करके राजा उग्रसेन व वसुदेव समेत राजमंदिर पर पहुँचे तब यदुवंशीलोग व्रजवासियोंकी प्रीति देखकर आपसमें उनकी बड़ाई करने लगे व रास्ते में नन्दजी मोहनप्यारे की महिमा याद करके व्रजवासियोंसे कहते जाते थे देखो हमने बड़ा अपराध किया जो परब्रह्म परमेश्वरसे अपनी गौवें चरवाईं व थोड़ासा दही व मक्खन गिराने व खिलानेके कारण यशोदाने उनको उखल से

बांध दिया तिसपरभी उन्होंने अपनी बड़ाई नहीं छोड़ी गोवर्धन पहाड़ उठाकर ब्रजवासियोंकी रक्षा की व मेरे लेनेवास्ते वरुणलोक में दौड़ेगये व हमलोगोंने अपने अज्ञानसे उन्हें नहीं पहिंचाना जब नन्दराय ऐसी ऐसी बातें अपने साथियोंसे कहते व पछिताते हुये वृन्दावनके निकट पहुँचे तब मोहनप्यारे के विरहमें अचेत होकर गिरपड़े जब यशोदाने जो आठोंपहर मथुराकी राह निहारा करती थी देखा कि गोप व ग्वाल वृन्दावनकी ओर चलेआते हैं तब वह बड़े हर्षसे इसतरह दौड़कर श्याम व बलरामको देखने चली जिसतरह बछड़ेको देखकर गौ दौड़ती है॥

दो० धाई अति हर्षित भई सुनत रोहिणी माय। दर्शआश धाईं सबै ब्रजतिरिया हुलसाय॥

जब उन्होंने नन्दरायके पास पहुँचकर श्याम व बलरामको नहीं देखा तब यशोदाने घबड़ाकर नन्दजीसे पूछा अय कन्त तुम मेरे राम व कृष्णको कहां खोकर उनके बदले यह गहना व कपड़ा लेआये जिसतरह अन्धा मनुष्य पारस पत्थर पड़ा पाकर उसे नहीं पहिंचानता और जब उसे फेंक कर पीछे से गुण उसका सुनता है तब सिवाय रोने व पछितानेके कुछ हाथ नहीं आता उसीतरह तुम मेरे अनमोल लाल को अपने हाथसे खोकर यह सब कांच उठा लाये हो उनके बिना यह सब द्रव्य व रत्न लेकर क्या करोगे हे मूर्ख जिनके क्षणभर अलग होनेसे छाती फटती थी अब उनके बिना हमारा दिन कैसे कटैगा मेरे वर्जनेपर भी तुम उन्हें बरजोरी लिवा लेगये अब उनके बिना हमलोग अन्धे होकर किसतरह जीवेंगे यह वचन यशोदा का सुनतेही नन्दजी आंख नीचे किये हुये रोकर बोले हे प्रिया सत्य है यह सब भूषण व वस्त्रादिक श्रीकृष्णने मुझे दिये पर यह सुधि नहीं रखता कि किसने लिये श्यामसुन्दर की बातें तुझसे क्या कहूं उनकी कठोरताई सुनकर तुझे बड़ा दुःख होगा जब वे कंसको मारकर मेरे पास आये तब अपने को वसुदेवजीका बेटा बतलाकर प्रीतिहरण बातें कहने लगे उनका वचन सुनतेही जब मैं अचम्भा मानकर रोनेलगा तब मुझे बहुत धैर्य देकर विदा करदिया हे प्रिया हमने तो तभी गर्गमुनिके कहनेसे उनको नारायण जानाथा पर मायावश होकर उनको पुत्र समझते थे सो अब पुत्रभाव छोड़

कर परमेश्वर समान उनका भजन करना चाहिये जब यशोदाने यह
हाल नन्दरायसे सुना तब वह और अधिक मायावश होकर रोने लगी
श्यामसुन्दरको अपना बेटा जानकर नन्दरायसे बोली हे कन्त तुम
धिक्कार है जो उनके मुखसे आधी बात सुनकर चले आये व श्याम ब
रामको मथुरामें छोड़कर यहां मुख दिखलाते हो राम व कृष्ण विना
कर क्या सुख पावोगे ॥

चौ० मारग सूझि परयो किहि भांती। बिदा होत फाटी नहिं छाती ॥
दो० कैसे प्राण रहे हिये बिछुरत आनँदकन्द। सुनी नहीं दशरथकथा कहूं श्रवण मतिमं
सो० मैं मथुरामें जाय रहिहौं हरिकी धाय बनि। लीजै ठोंक बजाय अब अपनो व्रज नन्द

हे मूर्ख तुम मेरे दोनों प्राणप्यारों को कहां छोड़ आये मैं अभागी अ
लाल के साथ न जाकर तुमलोगोंके कहनेसे घर बैठरही मैंभी साथ जा
तो किसवास्ते उनको छोड़ आवती ॥

चौ० जीवनप्राण सकल व्रज प्यारो। छीन लियो वसुदेव हमारो ॥
सुफलकसुत वैरी भो भारी। लैगो जीवनमूल हमारी ॥
पूछत बिलखि यशोमति मैया। कहौ नन्द क्या कह्यो कन्हैया ॥
तुमको बिदा व्रजहि जब कीन्हों। फिरि कछु मोहिं सँदेशो दीन्हों ॥
तुम कछु हरिसों विनय न भाखी। कहा श्याम मनमें यह राखी ॥

यह सुनकर नन्दजी बोले ॥

दो० मैं अपनेसों बहु कियो वे प्रभु त्रिभुवननाथ। जो चाहैं सोई करैं कहा बसै मो हाथ
सो० कहिकैंतोहिंप्रणाम बहुरि श्याम ऐसे कह्यो। करिकै कछु सुर काम मिलिहौं तुमसे आयव्र

व बलरामजीने ऐसा कहा है कि मेरी माता दुःखी होने न पावै तु
जाकर उसको धैर्य दे देना कुछ दिनों में हम भी आनकर उससे मिलें
यशोदा यह सन्देशा अपने लालका सुनतेही शोचमें डूबगई व नंद
यशोदा आदिक सब व्रजवासी मुरलीमनोहरका बालचरित्र याद कर
रोते व पीटते हुये अपने अपने घर आये पर विना श्याम व बलराम
को वृन्दावन उजाड़ सा मालूम देता था व नन्द व यशोदा कभी गो
नाथको अपना बेटा जानकर उनकी याद में रोते कभी ईश्वरभाव सम
कर उनके चरणोंका ध्यान करते थे व केशवमूर्तिके विरहमें सब पशु

पक्षी व ग्वाल व गौ आदिक व्याकुल रहकर फल व फूल कुंजोंके कुम्हि- लागये जब श्यामसुन्दरने उन ग्वालवालोंको जो मथुरामें रहिगये कुछ दिन उपरांत भूषण व वस्त्रादिक देकर बिदा किया और उन लोगों ने वृन्दावनमें आनकर सब चरित्र नंदलालजीका जो उन्होंने कुब्जा आदिक के साथ किया था ब्रजवासियों से कहा तब गोपियोंने कुबड़ीका समाचार सुनतेही सवतियाडाह से बड़ा शोच किया व विश्वास माना कि अब नन्दलालजी वृन्दावन नहीं आवेंगे यह बात समझतेही ब्रजबाला आपसमें इकट्ठी होकर एकने दूसरीसे कहा देखो श्यामसुन्दरने त्रिलोकीनाथ होकर ऊंच नीच जातिका कुछ विचार नहीं किया और कुब्जाको सुन्दररूप देखकर अपनी रानी बना लिया दूसरी बोली कुब्जाने मोहनप्यारे को ऐसा वशमें किया है कि विना आज्ञा उसकी कोई काम नहीं करते अब किसवास्ते वह उनको यहां आने देगी अक्रूरने आकर हमारे चित्तचोरसे कुबड़ी का सन्देशा कहा था इसीवास्ते वे मथुरा जाकर बसे हैं दूसरीनें एक गोपीसे पूंछा तैंने कुब्जाको देखाहै या नहीं वह बोली मैं दही बेचने मथुरा गई थी तब उसको देखा था वह मालिनकी बेटी बहुत टेढ़ीथी उसको देखकर सब स्त्री व पुरुष हँसा करते थे सो श्यामसुन्दर ने लाज व धर्म छोड़कर दासीको अपनी रानी बनाया यह बात सुनकर हमलोगोंको लज्जा आवती है दूसरी बोली हे सखी तुमने यह बात नहीं सुनी॥

चौ॰ कुब्जा सदा श्यामकी प्यारी। वे भर्ता उनकी वह नारी॥
रूप रत्न कूबड़ में राख्यो। ज्यों मोती सीपन से भाख्यो॥
ब्रजवनिता छांड़ी अब यातें। बूझी सकल श्यामकी बातें॥

दूसरीने कहा हे प्यारी वह दिन नंदलालजीको भूल गये जब राजा कंसके डरसे भागकर ब्रजमें आये व ग्वालवेष बनाकर यहां छिपे थे व घरघर माखन चुराकर खाया॥

दो॰ देव मनावत दिन गये बड़े होनकी आस। बड़े भये तब यह कियो बसे कूबरी पास॥
सो॰ यशुमति लाड़ लड़ाय बारेते सेवा करी। ताहूको बिसराय भये देवकी पुत्र अब॥

दूसरीने कहा जैसे कोयलका अण्डा कौवा सेवै तो बच्चा उत्पन्न होकर अपने जाति भाइयोंमें मिलजाता है वैसे मोहनप्यारे नन्द व यशोदा

व हमलोगोंकी यह दशा करके वसुदेव व देवकीके पास चले गये दू
सखी बोली अब वे राजाके पास सिंहासन पर बैठते हैं इसलिये उन
व्रजवासी व मुरलीका नाम लेने व मोरपंख देखनेसे लज्जा आवती है
दो० भयो नये अब राज वह नये मात पितु गेह । नई नारि कुब्जा मिली नये सखा नये
सो० भूले व्रजकी बात कुञ्जकेलि रसरासको । भये आपनी घात दिनदिन सुख दूनो भ

दूसरीने कहा अब तुमलोग उनकी चर्चा क्या करती हो अपने म
विचारकर देखो तो वह हमारे जातिभाई नहीं हैं आगे उनका नाम
गोपीनाथ व नंदलाल व कन्हैया व श्रीकृष्ण था सो वहां वासुदेव भ
हुआ थोड़े दिनके वास्ते उन्होंने व्रजवासियोंसे प्रीति करके पानी व
व आग लगने से सबकी रक्षा की हे राजन् जिस तरह मछली विना पा
के तलफती है उसी तरह सब व्रजबाला दिनरात व्याकुल रहकर
मोहनप्यारेकी आपसमें रखके कहती थीं ॥

दो० देखो नहीं सुहात कछु घर वन विन नँदनन्द । विरह व्यथा जारत नहीं भयो तपन अति
कहँलगि कहिये हे सखी मनमोहन के खेल । उन विन यों गोकुलभयो ज्यों दीपकविन ते
सो० रहत नयनजलछाय सुमिरि सुमिरि गुणश्याम के। कहिये किसे सुनाय भये पराये कान्ह

दूसरी गोपी बोली कोई मनुष्य मथुरामें जाकर मोहनप्यारेसे कहता
सब व्रजबाला तुम्हारे विरहसागरमें डूब रही हैं सो तुम जल्दी पहुँच
उन्हें अथाह जल से बाहर निकालो और तुम वृन्दावनमें फिर आन
बसो तुमसे गौ चराने वास्ते कोई नहीं कहैगा व तुम्हें माखन व दही
राने से नहीं बर्जेंगी ॥

दो० मांगत दान न बर्जिहैं अब नहिं करिहैं मान । आय दर्श पुनि दीजिये तुमबिन निकसत प्रा
सो० ऐसे कहि गहि पाँय लावैं फेरि मनाय हरि। बसैं बहुरि व्रज आय तब नँदनन्दन सां

दूसरी ने कहा अब मोहनप्यारे को क्या प्रयोजन है जो राजसी
व विलास छोड़कर यहां ग्वाल कहलावैं व हाथी व घोड़ा व सुखपाल
सवारी तजकर यहां गौ चरावैं दूसरीने कहा हे प्यारियो वह मोहनी
मुझे एक क्षण नहीं भूलती ॥

दो० सपनेहूं में देखिये नींद पड़त जो नैन। कीन्हों बहुत उपाय मन आंख खुलत नहिं चै

दूसरी बोली हे सखी श्यामसुन्दर विना मुझे अपना घर व

उजाड़ मालूम होकर वृन्दावन की कुञ्ज देखने से रोना आता है व वहां के जो फल अमृत का स्वाद देते थे वे अब विषसमान मालूम होते हैं व जिन पक्षियों का शब्द सुनकर मन प्रसन्न होता था उनका बोलना अब हृदय में गांसी ऐसा लगता है ॥

चौ० जब से बिछुरे कुँवर कन्हाई। तब से भये सबै दुखदाई॥

हे राजन् इसी तरह सब व्रजबाला आठों पहर बौरहों के समान व्याकुल रहकर जो पथिक उस राह से जाता था उसके पांव पकड़ कर कहती थीं हे बटोही श्यामसुन्दर हम लोगों का मन चुराकर मथुरा में जाके राजा हुये हैं उनसे यह संदेशा हमारा कहदेना कि जिन व्रजबालों का प्राण तुमने इन्द्र के पानी बरसाने से गोवर्द्धन पहाड़ उठाकर बचाया था वे सब उसी तरह तुम्हारे विरह में आठों पहर अपनी आंखों से आंसू जल के समान बरसाती हैं और जैसे उस समय आंधी बहती थी वैसे उनका ऊर्ध्व श्वास चलता है सो फिर वह लोग उसी विरहसागर में डूबकर मरजाने चाहती हैं केवल तुम्हारे मिलने की आशा पर अब तक जीती हैं सो तुम उनको दीन व अपनी दासी जानकर जल्दी चले आवो और हम दुखियारियों को डूबने से बचाकर हमारे हृदय की तपन अपनी अमृतरूपी दृष्टि से बुझावो जब विरहसागर में हम लोग डूबकर मरजावैंगी तो पीछे से आन कर क्या करोगे ॥

दो० एक बार फिरि आनकर दीजै दर्शन श्याम। तुमबिन व्रज ऐसो लगत ज्यों दीपक बिन धाम॥

दूसरी सखी ने कहा हे बटोहियो तुम्हें नारायणजी की सौगन्द है जो ऐसा न कहो और यह भी मोहनप्यारे से कहदेना कि राधाप्यारी तुम्हारे वियोग में ऐसी दुर्बली व निर्बल होगई है जो उठने व बैठने की सामर्थ्य न रहकर पहिचानी नहीं जाती दो चार दिन में मरजावै तो आश्चर्य नहीं भला पिछली प्रीति समझ कर तो उसका प्राण बचाओ ॥

दो० सुधिबुधि सब तनकीगई रह्यो विरहदुखछाय। मरणनिकट पहुँचीअभी वेगि खबरिल्योआय॥
सो० ऐसे निज निज हेत कहत सँदेशो श्यामको। पथिक चलन नहिं देत होत सांझ ताको वहां॥

जब पपीहा वृन्दावन में बोलता था तब उसकी बोली सुनकर वे सब

विरहिनी कहती थीं और हम लोग इसी तरह अपने दुःख में व्याकुल
तिसपर तू ऐसा शब्द बोलकर क्यों हमारे हृदय की दबीदवाई अग्नि
सुलगाता है॥

चौ० करत कहा इतनी कठिनाई। हरि बिन बोलत व्रज में आई॥
उपजावत विरहिनि उर आरत। काहे अगिलो जन्म बिगारत॥
एक कहत चातक से टेरी। हे पक्षी मैं चेरी तेरी॥
लेटे होयँ जहां सुखदाई। ऊंची टेर सुनावो जाई॥
दो० मानैंगे तेरो कहो मेरे हित घनश्याम। लेहु सुयश चातक बड़ो लैआवो सुखधाम॥

जिस तरह पपीहा स्वाती के बूंद वास्ते चाहना रखता है उसी तरह सब
व्रजबाला मोहनप्यारे के मिलने वास्ते व्याकुल रहती थीं॥

दो० कोऊ ऐसे कहि उठत व्रजमें बोलत मोर। रह्यो पड़त नहिं टेर सुनि बिन श्रीनन्दकिशोर॥
सो० बोलत करत बिहाल मोर सखी बैरी भये। बसे त्रिदेश गुपाल यह वनसे मारे॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् इसी तरह सब वृन्दावनवासी श्यामसुन्दर
के ध्यान व चर्चा में दिन अपना काटते थे॥

चौ० धन्य जन्म जो हरि के दासा। सबविधि धन्य जिन्हैं हरि आसा॥
दो० नन्द यशोमति गोपिकन निशिवासर यह ध्यान। व्रजवासी प्रभुदर्श को आशलगी रह प्रान॥
सो० बिसरे सब व्यवहार अवर न दूजी गति कछू। अन्ध लकुटआधार एक सुरति नँदनन्दकी॥

हे राजन् मुझे ऐसी सामर्थ्य नहीं है जो व्रजवासियों के विरह का सब
हाल वर्णनकरसकूं इसलिये अब मथुरा की बात कहता हूं सुनो जब श्याम
व बलराम नन्दजी आदिक को विदा करके अपने घर पर आये तब वसु-
देव व देवकी ने दोनों भाइयों को देखकर ऐसा सुख पाया जैसे कोई तप
करनेवाला अपना मनोरथ पाकर प्रसन्न होता है व मथुरापुरी में उस
दिन से मंगलाचार होने लगे और वसुदेवजी ने देवकी से कहा श्याम व
बलराम अहीरों की संगति में रहने से अपने जाति व कुल का व्यवहार
नहीं जानते सो इनका यज्ञोपवीत आदि करना चाहिये देवकी बोली
बहुत अच्छा जब वसुदेव ने गर्ग पुरोहित व अपने जातिभाइयों को
बुलाकर सब हाल कहा तब गर्गजी बोले इनको गायत्री मंत्र देकर
क्षत्रिय बनाना चाहिये॥

दो० याते इनको प्रीति करि दीजै यज्ञपवीत। जाते सीखैं सकल विधि जो यदुकुलकी रीत॥

यह वचन सुनतेही वसुदेवजी ने इष्टमित्र व यदुवंशियों को नेवता भेजकर अपने यहां बुलाया व सब तीर्थों का जल मँगाकर श्याम व बलराम को स्नान कराया व शास्त्रानुसार दोनों भाइयों को यज्ञोपवीत पहिनाकर पुरोहितने गायत्री मंत्र उपदेश किया तब वसुदेवजीने बहुत सी गौ विधिपूर्वक सोना व रत्नादिक ब्राह्मणों को दान दिया और अपने जातिभाई व ब्राह्मणों को छत्तीस व्यंजन खिलाकर सन्मानपूर्वक विदा किया और जो मंगलामुखी व कंगाल लोग वहां आये थे सबको मुँहमांगा द्रव्य देकर धनीपात्र बना दिया उस समय देवतों ने आकाश से राम व कृष्णपर फूल बरसाये व स्त्रियों ने मंगलाचार गीत गाया व वैकुण्ठनाथ की इच्छा व दया से मथुरा में लक्ष्मी का वास होकर सब छोटे व बड़े धनवान् होगये॥

सो० अन्त न पावैं शेश वेद श्वास जाकी सकल। ताहि दियो उपदेश गायत्री गुरु गर्ग मुनि॥

हे राजन् वसुदेवजी ने श्याम व बलराम का जनेऊ करने उपरांत दोनों भाइयों को रथ पर बैठाकर सांदीपन पण्डित सम्पूर्ण विद्यानिधान के पास जो काशीपुरी अपने देश से उज्जैन में जा बसे थे विद्या पढ़ने वास्ते भेजदिया राह में केशवमूर्ति ने सुदामा ब्राह्मण को देखकर पूंछा तुम कहां जाते हो उसने कहा विद्या पढ़ने जाता हूं तब मुरलीमनोहर ने उसको भी रथ पर बैठालिया व उज्जैन में सान्दीपन पण्डित के पास जा पहुँचे और हाथ जोड़कर उनसे विनय किया॥

चौ० हमपर कृपा करो मुनिराय। विद्यादान देहु मन लाय॥

जब दोनों भाइयोंने इसतरह आधीन होकर गुरुसे कहा तब पण्डित जी बड़ी कृपा व दयासे श्याम व बलरामको अपने घरमें रखकर विद्या पढ़ाने लगे एक दिन पण्डिताइनने श्यामसुन्दर व सुदामाको चना कलेवा देकर लकड़ी तोड़ने वास्ते वनमें भेजा सो श्रीकृष्णजीके हिस्सेका कलेवा भी सुदामा अपने पास बांधे था जब वे दोनों वन से लकड़ीका बोझा लेकर आवने लगे तब आंधी चलकर ऐसा पानी बरसा कि घर तक नहीं पहुँचकर रातको वनमें रहगये जब सुदामाको बहुत भूख मालूम हुई तब उसने श्यामसुन्दरका कलेवा भी उन्हें न देकर आप खालिया व चना

खाती समय कुटुर कुटुर शब्द सुनकर केशवमूर्तिने सुदामासे पूछा हे भा
तुम क्या खाते हो हमें भी देव तो अपनी भूख मिटावें सुदामाने लाल
की राह परब्रह्म परमेश्वरसे झूठ कहा कि मैं कुछ नहीं खाता मारे सर
के हमारा दांत बोलता है इसी झूठ बोलने के पापसे सुदामा महादरि
हुआ था व श्याम बलराम ने अपनी सेवा से गुरुको ऐसा प्रसन्न किया
चौंसठ दिनमें चारों वेद व छः शास्त्र व अठारह पुराण व राजनीति
मंत्र व यंत्र व तंत्र व ज्योतिष व वैद्यक व कोक व बाणविद्या आदि
सब गुण दोनों भाइयों को याद होगये तब सांदीपन गुरुने मनमें क
मनुष्य वर्ष दिन में भी एक विद्या नहीं पढ़ने सक्ता सो ये दोनों बाल
कोई अवतार मालूम होते हैं दो महीने चार दिन में चौदहों विद्या
चौंसठ कला पढ़ लिया इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राज
देखो जिस परब्रह्म परमेश्वरके श्वाससे चारों वेद उत्पन्न हुये उन्होंने स
विद्या तीनों लोकके मालिक होकर गुरुसे पढ़ी थी उनकी लीला व महि
कोई नहीं जानने सक्ता जब विद्या पढ़ने उपरांत केशवमूर्तिने गुरुसे हा
जोड़कर विनय किया कि आपकी दयासे मैं सब विद्या पढ़कर अप
मनोरथको पहुँचकर हम अनेक जन्म अवतार लेकर तुम्हारी सेवा करें त
भी विद्या पढ़ानेके बदले से उऋण नहीं होसक्ते हमारी समाई देखकर
कुछ आज्ञा कीजिये वह गुरुदक्षिणा तुम्हारी भेंट करें व आपका आशी
र्वाद लेकर अपने घर जावें जिसमें विद्या पढ़ने का फल हमें मिले य
वचन सुन कर सांदीपन गुरुने कहा मुझे तो कुछ इच्छा नहीं है ए
तुम्हारी गुरुआइनसे पूछें उसे जो चाहना हो वह वस्तु तुमसे मांगै ए
कहकर सांदीपन अपनी स्त्रीके पास जाकर बोले ये राम व कृष्ण दो
बालक जिन्होंने चौंसठ दिनमें सब विद्या मुझसे पढ़लिया परमेश्वर
अवतार मालूम होते हैं इनसे जो गुरुदक्षिणा मांगी जावे इनको दे
सहजहै तब पण्डिताइनने हाथ जोड़कर कहा हे स्वामी ये बालक ना
यण के अवतार हैं तो मेरा बेटा जो समुद्रमें डूबगया है उसको ला
जिसके शोचसे में सदा दुःखी रहती हूं यही गुरुदक्षिणा उनसे मांगो

दो० सम्पति तो तबहीं भली जो सुतहो घरमाहिं । सम्पति लै क्या कीजिये जो घरमें सुत नाहिं ॥

जब सान्दीपनको भी यह बात भली मालूम हुई तब स्त्री पुरुष दोनों मनुष्योंने श्याम व बलरामके पास जाकर कहा हे वैकुण्ठनाथ हमारे एक पुत्रके सिवाय दूसरा पुत्र नहीं था सो एक पर्वमें साथ लेकर समुद्रकिनारे स्नान करने गये थे जब हमलोग जल में पैठकर नहाने लगे तब वह बालक समुद्रमें डूब गया तभीसे एक क्षण उसका शोच नहीं भूलता जो तुम हमारी इच्छापूर्वक गुरुदक्षिणा दिया चाहते हो तो वही बेटा हमारा लादेव यह वचन सुनतेही श्यामसुन्दर लादेना उस बालकका अंगीकार करके उसी समय दोनों भाई रथपर चढ़े व सांदीपन व पण्डिताइनको दण्डवत् करके जब एक क्षणमें क्रोधसे भरे हुये समुद्रकिनारे पहुँचे तब समुद्र मनुष्यका रूप धरकर डरता व कांपता पानीसे बाहर निकला व बहुतसी मणि व रत्नादिक श्यामसुन्दर को भेंट देकर दण्डवत् करके विनय किया हे परब्रह्म परमेश्वर उत्पन्न करनेवाले चौदहों भुवनके मेरी दण्डवत् आपको पहुँचे गंगाजी तुम्हारे चरणका धोवन होकर तीनों लोकको कृतार्थ करती हैं व तुम अपनी दया व कृपासे नित्य राजा बलिके द्वारेपर बने रहकर पृथ्वी का भार उतारने व हरिभक्तों को सुख देनेवास्ते सगुण अवतार धारण करते हो व आप शेषनागकी छातीपर सदा शयन करके सब गुण विद्या जानते हो व शेषनाग दोहजार जिह्वासे दिनरात तुम्हारी स्तुति करते हैं तिसपरभी आपका आदि व अन्त नहीं जानते और गरुड़ जी आपके वाहन हैं ज्ञानी व ऋषीश्वर व वेदभी तुम्हारी महिमा व भेद को नहीं पहुँचसक्के मेरी क्या सामर्थ्य है जो आपकी स्तुति करने सकूं मेरे बड़े भाग्य हैं जो तुमने दयालु होकर दर्शन अपना दिया व तुम्हारे चरण देखनेसे मैं कृतार्थ हुआ ॥

दो० आज्ञाहो सो कीजिये मन चितदे वह काज । सब दासनको दासहौं तुम राजनके राज ॥

यह स्तुति सुनतेही केशवमूर्तिने प्रसन्न होकर समुद्रसे कहा कि सान्दीपन हमारे गुरु अपने कुटुम्बसमेत यहां स्नान करने आये थे सो तू अपनी लहरसे उनका बेटा बहा लेगया है जल्दी लादे गुरुकी आज्ञासे मैं उसे

लेने आया हूं समुद्र हाथ जोड़कर बोला हे महाप्रभु अन्तर्यामी वह
लक मेरे पास नहीं है परन्तु पांचजन्यनाम दैत्य वड़ा बलवान् शंखरू
पानीमें रहकर सब जीवोंको बहुत दुःख देता है वह उस बालकको न
समय उठालेगया हो तो मैं नहीं जानता यह वचन सुनतेही श्रीकृष्ण
बलरामसमेत पानीमें कूदपड़े जब शंखासुरके मारने पर भी उस बालक
पता नहीं पाया तब पछताकर बलरामजी से कहा अय भाई हमने
इस दैत्य को मारा व उस बालकका ठिकाना नहीं लगा यह बात सु
कर बलरामजी बोले हे दीनानाथ यह चिन्ता छोड़कर इस दैत्य का उद्धा
कर दीजिये तब केशवमूर्तिने उसे मुक्ति देकर शेषरूपी तनु उसका
पने बजाने वास्ते उठालिया व उसीसमय यमपुरीके द्वारेपर जाकर
शंख बजाया जैसे वह शब्द नरकवासियों ने सुना वैसे वे लोग नर
निकलकर वैकुण्ठ को चले गये धर्मराज दौड़े हुये बाहर आन
हरिचरणोंपर गिर पड़े व बड़े आदर से श्याम व बलरामको अपने
लेजाकर जड़ाऊ सिंहासनपर बैठाला व चरण उनका धोकर चरणा
लिया व विधिपूर्वक पूजा उनकी की व सुगन्धफूलों के गजरा
मोती व रत्नादिक की माला दोनों भाइयों को पहिनाया और
क्षमा लेकर उन्हें चवँर हिलानेलगा व बड़े प्रेमसे हाथ जोड़कर
तरह स्तुति श्यामसुन्दरकी की हे परब्रह्म परमेश्वर आप सदा हँसते
आनन्दमूर्ति रहते हैं तुम्हें कभी कुछ चिन्ता नहीं व्यापती व लक्ष्मी
आठोंपहर तुम्हारी सेवामें बनी रहकर आप हरिभक्तोंकी सब इच्छा
करतेहैं व वैकुण्ठ तुम्हारा देवलोकसे ऊंचा होकर आपने मुझ ऐसे ब
अधर्मियोंको मुक्ति दियाहै व तुम्हारी नाभिसे कमलका फूल निकल
उससे ब्रह्मा उत्पन्न हुये व आपकी दयासे ब्रह्माने तीनोंलोककी रचना
पर तुम्हारे भेद व आदि व अन्तका हाल वेभी नहीं जानसक्के व तुमने
जीवों के उत्पन्न व पालन करनेवाले होकर अपनी इच्छासे अपना बाल
रूप प्रकट किया है सो मेरी दण्डवत् आपको पहुँचे जहां शेष व मह
व गणेश तुम्हारी स्तुति नहीं करने सक्के वहां मुझे क्या सामर्थ्य है

तुम्हारा गुण वर्णन करने सकूं जिसतरह पिछले जन्मके पुण्य उदय होने से आपने दयालु होकर मुझको दर्शन दिया उसी तरह अपने आवनेका कारण वर्णन कीजिये यह सुनकर श्यामसुन्दर बोले मेरे गुरुका वेटा जो समुद्र में डूबकर मरगयाहै उसे फेर देना चाहिये कदाचित् तुम ऐसा कहो कि मरा हुआ जीव यमपुरी से फिरकर नहीं जाता सो यह मर्यादभी मैंने बाँधा था इसलिये तुझे मेरी आज्ञा पालना चाहिये यह वचन सुनतेही धर्मराजने सांदीपनका पुत्र वहां लाकर विनय किया हे दीनानाथ मुझे पहिले से मालूमथा कि आप गुरुपुत्र लेनेवास्ते आवैंगे इसलिये इस वालकको हमने आजतक बड़े यत्नसे रखकर दूसरे तनमें जन्म नहीं दिया यह वचन सुनतेही मुरलीमनोहर धर्मराजको भक्तिवरदान देकर वलरामजी व उस वालक समेत वहांसे अन्तर्धान होगये व गुरुके पास वह वालक लाकर बोले आपने बड़ी दया करके हमें विद्या पढ़ाया व हमसे कुछ सेवा नहीं वनपड़ी और जो कुछ आज्ञा कीजिये सो करैं सांदीपन अपना वेटा देखतेही श्यामसुन्दरको परब्रह्म अवतार समझकर वहुत स्तुति करके बोले हे त्रिलोकीनाथ जिस किसी के तुम्हारे ऐसा चेला हो उसे कौन इच्छा वाकी रहैगी पर मैं प्रसन्न होकर तुम्हें यह आशीर्वाद देताहूँ कि विद्या तुम्हारी सदा नई बनी रहकर संसारमें यश तुम्हारा छाया रहै जव सांदीपन व पण्डिताइनने श्याम व वलरामको आनन्दपूर्वक विदा किया दोनों भाई उन्हें दण्डवत् करके मथुराको आये उनके आनेका समाचार पातेही वसुदेव व राजा उग्रसेन यदुवंशियों समेत आगेसे होकर गाते व वजाते सन्मानपूर्वक उन्हें राजमन्दिरपरलेगये व सवछोटेवड़ोंने मंगलाचारमनाया॥

दो॰ गुरुकी आज्ञा पायकै माखनप्रभु व्रजचन्द। आये मथुरा नगर में सबके आनँदकन्द॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् देखो गुरुके वास्ते श्रीकृष्णजी वैकुण्ठनाथ होकर यमपुरीमें चलेगये थे गुरुकी इतनी बड़ी पदवी समझना चाहिये संसारमें तीन तरहके गुरु होते हैं एक जो मंत्र-उपदेश करै दूसरा जो विद्या पढ़ावै तीसरा जो धर्मकी वात सिखलावे इन तीनों को ईश्वर समान मानकर उनकी सेवा करना उचित है॥

छियालीसवां अध्याय।

श्रीकृष्णजी का उद्धवको गोपियोंके ज्ञान सिखलानेके वास्ते भेजना॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् जिसतरह श्यामसुन्दरने नन्द व यशो व व्रजवालोंको ज्ञान सिखलानेवास्ते उद्धवको भेजाथा वह कथा कह सुनो जब कभी मुरलीमनोहर नन्द व यशोदा व श्यामाआदिक गोपि की बातें उद्धव से कहतेथे तब वह अपने ज्ञानके अभिमानसे मित्रता राह उनका ठट्ठा करते थे इसवास्ते गर्वप्रहारी भगवान्ने एक दिन र लीला आदिक व्रजवासियोंकी चर्चा छोड़कर बलरामजी से कहा भाई मैंने अपने वचनप्रमाण कोई मनुष्य वृन्दावनमें नहीं भेजा इसलि वह लोग मेरेवास्ते चिन्ता करते होंगे सो किसी को भेजकर उन्हें देना चाहिये॥

चौ० कहां नवल व्रजगोपकुमारी। कहँ राधा वृषभानुदुलारी॥

दो० कहां यशोदा नन्द से सुखद तात औ मात। कहँ वह सुख व्रजधामको नहिं बिसरत दिनरा

सो० कहां सखनको संग कहां खेल वृन्दाविपिन। कहँ वह प्रेमतरंग वंशीवट यमुनातीर

जब बलभद्रजीको यह बात भली मालूम हुई तब केशवमूर्तिने म विचारा कि उद्धवको अपने ज्ञानका बड़ा अभिमान रहता है इसलि गोपियोंको ज्ञान सिखलाने वास्ते उसको भेजकर देखें कि व्रजवालोंको प्रीतिके सामने ज्ञान प्रवेश करता है या नहीं व उद्धव का अभिमान वहां जाने से टूट जावेगा॥

दो० ऐसे हरि बैठे करत अपने मन अनुमान। उद्धव के मन से करौं दूर ज्ञान अभिमान

सो० आयगये तेहिकाल उद्धवजी हरिके निकट। विहँसि मिले नँदलाल सखासखा कहि अंकभरि

उसीसमय श्यामसुन्दरने उद्धवसे प्रेमपूर्वक कहा हे मित्र जबसे मैं श्यामाआदिक व्रजवालोंके साथ रासलीला किया था उससमय महादे आदिक देवतोंको ऐसा कामदेवने सताया कि शिवजी गोपेश्वर व चन्द्र चन्द्रकलारूप स्त्री होकर मेरे साथ रासमण्डल खेलने आयेथे व उसीतर अनेक देवतोंने स्त्रीका तनु धरकर वहां सुख उठाया था सो नन्द यशोदा व राधाआदिक सब व्रजवाला मेरे विरहमें बड़ा दुःख पातेहैं व हम उन

कह आये थे कि वृन्दावन में फिर आवैंगे उसी आशा पर उनका प्राण आजतक बचा है ॥

दो० वे सब मेरे विरहमें अतिहैं महामलीन । कल न परत क्षण रैनदिन जैसे जलबिन मीन ॥

सो हे मित्र मेरा मन भी उनकी सच्ची प्रीति देखकर यहां नहीं लगता और व्रजका सुख एक क्षणभी नहीं भूलता इसलिये तुमको बड़ा ज्ञानी व शान्तस्वभाव व अपना परम मित्र जानकर वृन्दावन में भेजा चाहता हूं सो तुम वहां जाकर नन्द व यशोदा व गोपियों को ऐसा ज्ञान समझावो कि जिसमें वहलोग मेरे वियोगका शोच छोड़कर धैर्य धरैं व रोहिणीमाता को अपने साथ लेआओ यह सुनकर उद्धवने मोहनप्यारेको समझाया हे दीनानाथ संसारी झूठी प्रीति स्वप्नवत् समझकर परमेश्वर अविनासी पुरुषका ध्यान करना उचित है यह ज्ञान भरीहुई बात सुनतेही मुरली-मनोहर हँसकर बोले हे उद्धव जो बात तुमने कही सो सच है पर क्या करूं गोपियां मेरे विरहमें बड़ा दुःख पाती हैं सो तुम ऐसा ज्ञान उनको उपदेश करना जिसमें कन्तभाव छोड़कर परमेश्वर समान मेरा भजन करैं व पहिले नन्द यशोदा को इसतरह समझाना कि वह मुझे पुत्र भाव तजकर ईश्वरसमान समझैं ॥

दो० यक प्रवीन अरु सखा मम तुमसों ज्ञानी कौन । सो कीजै जो व्रजवधू साधन सीखैं मौन ॥

सो० ज्यों सुख पावैं नारि ज्ञानयोग उपदेश से । डारैं मोहिं बिसारि ब्रह्मअलख परचो करैं ॥

यह वचन सुनकर उद्धवने विनय किया बहुत अच्छा मैं तुम्हारी आज्ञा-नुसार वहांजाकर सबको ज्ञान समझाऊंगा पर वह लोग मेरे कहने से न मानैं तो लाचार हूं यह सुनकर श्यामसुन्दर बोले ॥

दो० वचन कहतही समझिहैं बहहैं परम प्रवीन । दै हैं शीतल विरह से ज्यों जल पाये मीन ॥

ऐसा कहकर श्याम व बलराम ने अनेक तरहका भूषण व वस्त्र नन्द व यशोदा व ग्वालबाल व राधाआदिक व्रजबालोंके देनेवास्ते उद्धव को दिया और एक चिट्ठी में बड़ों को दण्डवत् व छोटों को अशीष व व्रज-बालोंको योग व ज्ञान लिखा और वह चिट्ठी उद्धवको देकर बोले तुम आप पढ़कर इसका हाल सबको सुना देना व जैसे बनि पड़े उन्हें धैर्य देकर जल्दी चले आना ॥

दो० उद्धव व्रजमें जायकै बिलमि न रहियो जाय। तुम बिन हम अकुलाहिंगे श्यामकरत चतुरा
सो० तुमहौ सखा प्रबीन बार बार सिखवौं कहा। जिये ज्यों जलबिनमीन सोई मतो विचारियो

फिर गोपीनाथने अपने पहिरनेका भूषण व वस्त्र उद्धवको पहिनाक
रथपर बैठायकै वृन्दावनको बिदा किया व चलते समय आंखों में आं
भरकर बोले हे उद्धव तुम इतना सन्देशा और यशोदा मातासे कहदेना

चौ० नीकी रहो यशोमति मैया। कछु दिन में अइहैं दोउ भैया॥

दो० कहा कहौं जा दिवससे जननी बिछुरेउँ तोहिं। ता दिन से कोऊ नहीं कहत कन्हैया मोहिं
सो० कहो सँदेश न जात अतिदुख पायो मातु तुम। अब मोंको निज तात वासुदेव देवकिका
क० कामरी लकुट मोहिं भूलत न एको पल घुँघुची न बिसारैं जोपै लाल उरधारे हैं
जादिनते छाकैं छूटगईं ग्वालबालनकी तादिनते भोजन न पावत सकारे हैं।
भनै यदुवंश यह नेह नन्दवंश ही सों बंशी न बिसारै जोपै बंश बिस्तारे हैं
ऊधो व्रज जाय मेरो लाइयो चौगान गेंद मैयाते कहियो हम ऋणियां तुम्हारे हैं
कौन विधि पावै यह कर्म बलवान उदै छाछ छछुआकी व्रजभामिनिको भावै
मुक्कहु पदारथ सो दे चुके बाकी को अब देऊं जननी को कहा याते पछितावैं
विधिने बनाई आइ कौन विधि मेटै ताइ ऐसे करि शोचत रहत दिनरातवैं
ऊधो व्रज जैयो मेरी मैयासे बुझाय कहियो जापै ऋण बाढ़े सो विदेश उठिजावैं

व बलभद्रजी रोकर बोले अय उद्धव मेरी ओर से नन्द व यशोदा
हाथ जोड़कर कहदेना व्रजका सुख हमें कभी नहीं भूलता इसलिये
आनकर तुमसे भेंट करूंगा हम दोनों भाइयों को अपना पुत्र जान
कभी मत भूलना और जब वसुदेवजीने उद्धवके जानेका हाल सुना
बहुतसी सौगात नन्द व यशोदाके वास्ते देकर ऐसी चिट्ठी लिख दी
तुमने हमारे बेटों को जो पालन कियाहै इस उपकारके बदले से मैं
जन्म नहीं उऋण होने सक्ता तुम श्याम व बलरामके वास्ते वहां
चिन्ता करते हो यहां आनकर देख नहीं जाते जिससमय उद्धवजी
से वृन्दावनको चले उसीसमय व्रजवालोंने अन्तःकरणकी शुद्धता से
लूम किया कि आज मोहनप्यारे का संदेशा लेकर कोई आदमी आ
है या वह आवेंगे ऐसा विचारतेही एक गोपी अपने आंगनमें कौवा
लता हुआ देखकर कहनेलगी॥

दो० जो हरि गोकुल आवहीं तो तू उड़रे काग। दस दही तोहिं देहिंगे अरु अंचलकी

दूसरी गोपी ने कहा आज मुझे बाईं आंख फड़कने से मालूम होताहै कि मोहनप्यारे चित्तचोर यहां आया चाहते हैं सो तुम लोग शोच अपना छोड़कर हर्ष मनाओ मोहनप्यारे का चन्द्रमुख देखकर अपनी अपनी आंखें ठंढी करना ॥

दो॰ घरघर शकुन विचारहीं व्रजतिरिया बड़ भाग । व्रजवासी प्रभु दर्शको सबके मन अनुराग ॥

हे राजन् सन्ध्यासमय उद्धवने वृन्दावनमें पहुँचकर क्या देखा कि घने घने वृक्षोंपर अनेक तरहके पक्षी सोहावनी बोली बोलकर धवरी धूमरी काली पीली गायें चारों तरफ घूमरही हैं ॥

दो॰ वृन्दावन शोभित महा यमुनाजल चहुँओर । द्रुमवेली प्रफुलित सदा बोलत कोकिलमोर ॥

सच है जिस स्थानपर वैकुण्ठनाथने आप विहार किया हो वहां क्यों नहीं ऐसी शोभा रहै अबतकभी वह स्थान देखने से चित्त मोहि जाता है उद्धवने उस वनको स्थान लीला करने श्यामसुन्दरका समझकर दण्डवत् किया जब वह सब आनन्द देखतेहुये उद्धव गाँवके निकट पहुँचे तब नन्दराय आदिक दूरसे रथ व भेष श्यामसुन्दरका देखतेही उनको मुरलीमनोहर समझकर मिलनेवास्ते दौड़े व केशवमूर्तिको न देखकर मन में उदास होगये पर उद्धवको भेजा हुआ मोहनप्यारेका जानकर बड़े आदर भावसे अपने घर लिवा लाये व पाँव उनका धोकर छत्तीस व्यञ्जन खिलवाये व पान इलायची देकर उत्तम शय्या उनके आराम करनेवास्ते बिछा दी जब उद्धव थोड़ी देर तक सोकर उठे तब नन्द व यशोदाने वसुदेव व देवकी व श्याम व बलरामकी कुशल उनसे पूंछकर बोले ॥

दो॰ नंदगोप करजोरिकै पूंछत शीश नवाय । माखन प्रभु गोपालकी कहो कथा समुझाय ॥
करत हमारी सुधि कभी कछु उद्धव बलवीर । पुलकगात गद्गद वचन पूछत नंद अभीर ॥

सो॰ चूक पड़ी अनजान कइ पछताने आजुके । घर आये भगवान जाने हमन अहीरकर ॥

अय उद्धव वसुदेव व देवकी का भाग्य बड़ा बलवान् है जो श्याम व बलराम उनके बेटे बनकर हमें बिराना समझते हैं बहुत अच्छा हुआ जो कंस अधर्मी अपने भाइयों समेत मारा गया व वसुदेव व देवकीने कैद से छुट्टी पाई भला यह तो बतलाओ कि कभी राम व कृष्ण मुझे व यशोदा को याद करते हैं या नहीं जिस दिनसे मोहनप्यारेने मुझे विदाकर दिया

तब से मेरा खाना व पहिरना व हँसना व बोलना सब सुख जाता रहा
उसी दिन से यशोदा दिनरात उन्हींके चर्चा व ध्यान में रहकर माखन
रोटी लिये हुई उनकी आशा देखा करती है ॥

दो० जेहि विधि तब खेलत हते ग्वालबालके साथ। सो कबहूं सुधि करतहैं माखनप्रभुव्रजनाथ

हे उद्धव मैं नित्य इच्छा करता हूं कि मथुरा जाकर उन्हें देख आऊं
क्या करूं संसारीकामसे छुट्टी नहीं मिलती जब वनमें जाकर मोहनीमूर्ति
चरण का चिह्न पृथ्वी पर देखता हूं तब मुझे यह सन्देह होता है कि
कहीं कुंजों में भूल गये हैं जब ढूंढ़ते समय उनको नहीं पाता तब हा
मानकर घर चला आता हूं व उनकी मुरली व लकुटिया देखकर जो
दशा मेरी होती है वह हाल वर्णन नहीं कर सक्ता व मदनमोहन ने मुझ
से फिर वृन्दावन आने का करार किया था सो बतलाओ यहां आवेंगे
नहीं देखें हमारा भाग्य उदय होकर कब उनका दर्शन मिलता है हे उद्धव
मैं श्यामसुन्दर को अपना पुत्र जानता था और वह मुझे पिता कहते
पर उन्होंने बड़े बड़े आपत्काल में व्रजवासियों की रक्षा की ॥

दो० सहसनयन दुखमानिकै कोपकियोजेहि काल। हमकारण गिरिनखधरयो माखनप्रभुगोपाल

हे उद्धव उन्होंने लड़कपन में पूतना राक्षसी व वत्सासुर आदिक बड़े
बड़े राक्षसों को मारकर कालीनाग को यमुनाजल से निकाल दिया
गोपियों का गोरस चुराकर उनके साथ रासलीला की व अनेक बालचरित्र
अपना हम लोगों को दिखलाकर बड़ा सुख दिया बतलाओ कभी इन बातों
की चर्चा वसुदेव व देवकी से करते हैं या नहीं ॥

दो० उद्धव तुमसे क्या कहौं मनमोहनकी बात। जो लीला व्रजमें करी सो बरणी नहिं जात

हे उद्धव मैं गर्गमुनि के कहने से जानता हूं कि वह परब्रह्म परमेश्वर हैं
व पृथ्वी का भार उतारने वास्ते अपनी इच्छा से उन्होंने अवतार लिया है

दो० याते यह निश्चय कियो हम अपने मनमाहिं। आदिपुरुष भगवान हैं पुत्र हमारे नाहिं

व यशोदा रोकर उद्धव से बोली ॥

चौ० कुशल हमारे सुतकी कहौ। जिनके साथ सदा तुम रहौ ॥
कबहूं वह सुधि करत हमारी। उन बिन हम दुख पावत भारी ॥
सबदिन से आवन कहि गये। बीती अवधि बहुत दिन भये ॥

हे उद्धव जिन आदि ज्योति नारायणजी का दर्शन ब्रह्मादिक देवतों को जल्दी ध्यान में नहीं मिलता वह हमारे घर आये और हमने अपने अज्ञान से उनको पुत्र जाना॥

चौ० फाटत नहीं वज्रकी छाती। अब यह समुझि हृदय पछताती॥
वैसो भाग्य कभी अब पैहौं। फेरि श्याम को गोद खिलैहौं॥

दो० ग्वालसखा सँग जोड़ अब गौवैं कोले जाय। को आवे संध्यासमय वनते गऊ चराय॥

हे उद्धव अब मैं अपने अंचलसे किस की धूर झाड़कर छाती में लगाऊँ व किसका मुख चूमकर बलैया लेऊं क्षण भर वह सांवली मूर्ति मुझे नहीं भूलती कैसे धैर्य धरौं भला तुम सच कहो मनहरण प्यारे वहां किस तरह सीधे रहते हैं यहां तो ब्रजवालों के साथ अनेक उपाधि किया करते थे वहां किसके साथ खेलते होंगे मुझे तो उनके विना देखे एक क्षण युगसमान वीतता है वह इतने दिन मेरे विना क्योंकर वहां रहे व मैं गोवर्धन पहाड़ आदिक उनके लीला स्थान देखकर समझती हूं कि अभी आया चाहते हैं सो वतलावो कवतक यहां आवेंगे जब इसी तरह नन्द व यशोदा अनेक वातैं कहकर मोहनप्यारे के विरह में रोते रोते व्याकुल होगये तब उद्धव उन्हें धैर्य देने वास्ते बोले तुम लोग उदास मत हो पीछे से श्यामसुन्दर भी आते हैं जब यह वचन सुनतेही वह दोनों प्रसन्न हो गये तब उद्धव ने मुरलीमनोहर व वसुदेवजी की सौगात भेजी हुई उनके सामने रखकर चिट्ठी पढ़ के सुना दी॥

दो० नंद गोप वलफैं महा माखन प्रभुके हेत। बुद्धिमान उद्धव तिन्हैं या विधि उत्तर देत॥

हे नन्दराय जिनके घर आदिपुरुष भगवान् ने आनकर वाललीला का सुख दिखलाया उनकी स्तुति कौन वर्णन कर सक्ता है सो तुम बड़े भाग्यवान् हो जो आठों पहर तुम्हें याद व प्रीति वैकुण्ठनाथ की बनी रहती है इसलिये वह भी एक क्षण तुमसे विलग नहीं होते सो मैं तुमको जीवन्मुक्त समझता हूं॥

दो० माखन प्रभुको रैन दिन ध्यान धरै जो कोय। प्रभुता तीनों लोककी ताको प्रापत होय॥

यशोदा बड़े प्रेम से वह चिट्ठी शिर व आंखों में लगाकर रोती हुई

बोली हे उद्धव यह ज्ञान भरी हुई बातैं छोड़ सच बतलाओ मोहनप्या यहां कब आवैंगे भला मुझको अपनी माय समझकर एक बार फि दर्शन दे जाते तो उनका बड़ा उपकार मानती ॥

दो० उद्धव यद्यपि हमैं सब समुझावत व्रजलोग । उठत शूल तद्यपि निरखि माखन प्रभु सुखभो

हे उद्धव मैं नित्य प्रातसमय माखन रोटी अपने कन्हैया को खिला थी वहां यह हाल जाने विना कौन उसे सवेरे भोजन देता होगा वह लज्जावश किसी से न मांगकर भूखे रहते होंगे इस बात की चिन्त मुझे अधिक लगी रहती है कि वह खाने विना दुःख पाकर दुवला होगा होगा यह बात सुनकर उद्धव ने कहा तुम लोग श्यामसुन्दर को आदि पुरुष जानकर मेरी बात का विश्वास मानो जिस तरह आग लकड़ी छिपी रहकर दिखलाई नहीं देती उसी तरह उन निर्गुणरूप का प्रका सवके तनमें होकर वह जगदात्मा सब जगह वने रहते हैं पर ज्ञान हुये विना दिखलाई नहीं देते इसलिये तुम लोग भी उन्हें आठों प अपने निकट जानकर उनके वास्ते चिन्ता मत करो वह केवल अप भक्तों को सुख देने व पृथ्वी का भार उतारने के कारण सगुण अवत लेकर संसारी मनुष्यों को धर्म का रास्ता दिखलाने वास्ते लीला करते जैसे भृंगीकीट को देखकर दूसरा कीड़ा उसी के रंग होजाता है प्रीतिपूर्वक परमेश्वर से ध्यान लगानेवाले उन्हीं का रूप होजाते हैं तुम लोग भी उनको घट घट व्यापक एकसा समझकर अपने अन्त करण में उनका ध्यान लगाओ तो उन्हीं के समान तुम्हारा स्वरूप हो जायगा और वह किसी के पुत्र न होकर कोई माता व पिता उनक नहीं है तुम्हारे पिछले जन्मका पुण्य सहाय हुआ जो उनके साथ इत प्रीति रखते हो ॥

दो० पहिले ब्रह्मा भेषधरि सिरजत सब संसार । विष्णुरूप से पालकर शिव है करत सँहार

इसलिये तुम जितने स्त्री व पुरुष पिता व पुत्र आदि संसार में देख हो सवमें उन्हीं का प्रकाश समझो ॥

दो० मति जानो सुतकरि तिन्हैं वह सबके करतार । तात मात तिनके नहीं भक्तन हित अवतार

सो० हम सब हैं अज्ञान प्रभु महिमा जानैं नहीं । वह प्रभु पुरुषपुराण जन्ममरण से हैं रहि

हे नन्द व यशोदा तुम मोहनप्यारे अन्तर्यामी को ईश्वर जानकर भजो तो वह अपना दर्शन ध्यान में देकर तुम्हारा दुःख छोड़ा देवेंगे यह वचन सुनकर यशोदा वोली उद्धव मैं अपने मनको बहुत समझाती हूं पर चित्त मेरा नहीं मानता॥

दो० नन्द यशोदा गोपसों माखन प्रभु की बात। ऐसी विधि उद्धव कहत बीती सगरी रात॥

जब चार घड़ी रात रही तब उद्धव नन्दरायसे पूछकर यमुनास्नान करने गये तो राहमें क्या देखा कि सब गोपियां वृन्दावनवासी अपने अपने घरमें दीपक जलाकर बालचरित्र व गुणानुवाद श्रीकृष्णजी का गातीहुई दही मथन करती हैं सो उद्धव जिस जिस द्वारेपर होकर चले जाते थे उस घरके स्त्री व पुरुषोंको श्यामसुन्दरकी चर्चा करते सुनकर उन्हें बड़ाहर्ष होताथा जब उद्धवजी यमुनाकिनारे पहुँचकर स्नानकरने उपरांत नित्य नेम पूजा करने लगे तब प्रातसमय गोपियां चौका झाड़ूआदिक गृहस्थीके कामकाज से छुट्टी पाकर यमुनाजल भरनेवास्ते घड़ा लिये हुई झुण्डका झुण्ड निकलीं उस समय आपसमें इस तरह पर मोहनप्यारेकी चर्चा करती हुई चलीं॥

चौ० एक कहै मोहिं मिले कन्हाई। एक कहै वह छिपे लुकाई॥
पीछेसे पकड़ी मोरि बांह। वह ठाढ़े हरि बटकी छांह॥
कहत एक गोदूहत देखे। बोली एक भोरही पेखे॥
एक कहै वह धेनु चरावें। सुनो कानदै बीन बजावें॥
या मारग हम जायँ न माई। दान मांगिहैं कुँवर कन्हाई॥
एक कहत हरि कीन्हों काज। वैरी मार्यो लीन्हों राज॥
काहे को वृन्दावन आवें। राज छांड़ि क्यों गाय चरावें॥
छांड़ो सखी अवधिकी आश। चिन्ता छूटे भये निराश॥
एक नारि बोली अकुलाय। कृष्णआश क्यों छोड़ी जाय॥
ऐसी कहत चलीं व्रजनारी। कृष्णवियोग विकल तन भारी॥

दो० दुखसागर यह व्रज भयो नाम नाव निरधार। डूबे विरहवियोग जल श्याम करैं कब पार॥

इसीतरह सब व्रजबाला श्यामसुन्दरकी चर्चा करतीहुई यमुनाकिनारे चली जाती थीं राहमें नन्दजीके द्वारेपर रथ खड़ा देखकर बोलीं मालूम होता है अक्रूर फिर आया एकवेर तो उसने हमारे प्राणनाथ को अपने

साथ लेजाकर राजा कंस को मरवा डाला अब क्या हमारी लोथ ले
उसका पिण्डा पारैगा दूसरी सखी बोली कदाचित् मनहरणप्यारेने हम
सुधि लेने वास्ते किसीको भेजा हो ॥

दो० तिनसों और सखी कहै तुम्हैं नहीं कुछ ज्ञान। अब हमसों अरु कान्हसों काहेकी पहिचा

जब इसीतरह सब गोपियां आपसमें बातैं करतीहुई यमुना कि
पहुँचीं तब उद्धवजी उनकी प्रीतिभरी हुई बातैं सुनकर मनमें कहने ल

चौ० जिनके प्राण प्राणपति पाहीं। लाज काज पतिकी सुधि नाहीं॥

दो० माखनप्रभुको विरह दुख कासों बरणो जाय। जासों बिछुरे प्राणपति ताको कहा सुख

सैंतालीसवां अध्याय।

उद्धवका गोपियों को ज्ञान सिखलाना ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जब उद्धव पूजासे सुचित्त होकर नन्
घर आने लगे तब गोपियोंने जो जल भरनेवास्ते यमुनाकिनारे गई
उद्धवको श्यामसुन्दरका पीताम्बर व मुकुट व वनमाला पहिने देख
आपसमें कहा मोहनप्यारे मथुरा जातेसमय एक मनुष्य भेजनेवास्ते क
गये थे सो यह उन्हींका भेजा हुआ मालूम होताहै जब यह हाल बू
वास्ते गोपियां एक वृक्षके नीचे निराली जगह खड़ी होगईं तब एक स
बोली यह मनुष्य मुरलीमनोहरका भेष बनाये हमारी ओर देखता आ
दूसरीने कहा यह उद्धवजी कल्हसे मोहनीमूर्तिका संदेशा लेकर नंदरा
घर टिके हैं यह वचन सुनतेही जब राधाआदिक गोपियोंने उद्धव
भेजा हुआ श्यामसुन्दर का जानकर बड़े आदरसे बैठनेवास्ते कहा
वह भी उन लोगोंकी सच्ची प्रीति देखकर बैठगये तब सब व्रजबाला उ
चारों ओर बैठकर कुशल पूंछने उपरांत बोलीं हे उद्धव हमैं मालूम हु
कि तुमको वृन्दावनविहारीने नन्द व यशोदाके धैर्य देनेके वास्ते भेजा

चौ० भली करी उद्धव तुम आये। समाचार माधव के लाये॥
पठयो मात पिता के हेत। और न काहू की सुधि लेत॥
सर्बस दीनों उनके हाथ। उरझे प्राण चरण के साथ॥

एक सखीने कहा ऐ उद्धव उन्हैं हमलोगोंकी दया क्यों होगी

हमारी सुधि लेवें कदाचित् ऐसा कहो कि तुमलोग उनकी चर्चा क्यों करती हो तो इसका यह कारण है ॥

दो॰ हरिके सुमिरण ध्यानमें रहत सकल संसार। याते हमहूं करत हैं देखि जगत व्यवहार ॥

दूसरी गोपी बोली हे उद्धव मोहनप्यारा बड़ा कपटी व निर्दयी है जिसतरह वेश्या स्त्री द्रव्य लेनेसे प्रयोजन रखकर सच्ची प्रीति पुरुषकी नहीं करती व पक्षी फूले फूले वृक्षपर बैठकर सूखे वृक्षसे कुछ प्रयोजन नहीं रखते व भँवरा फूलोंका रस लेकर उड़जाता है व दण्डी भिक्षा लेने उपरान्त देनेवाले के पास खड़ा नहीं रहता व प्रजालोग नये हाकिमकी आज्ञा मानकर पुराने हाकिमका कुछ डर नहीं रखते व चेला विद्या पढ़ने उपरान्त फिर गुरुके पास नहीं रहता व यज्ञ करानेवाला ब्राह्मण यजमानसे दक्षिणा लेकर फिर उससे कुछ प्रयोजन नहीं रखता व हरिणआदिक पशु हरे वनमें रहकर जले हुये वनमें नहीं ठहरते व पुरुष भोग करनेके पहिले जितनी प्रीति स्त्रीकी करताहै प्रसंग करने उपरांत उतना प्रेम नहीं रखता उसीतरह श्यामसुन्दर भी मर्त्यलोकमें जन्म लेने से संसारी मनुष्यके समान जब तक यहां रहकर हमारे साथ रास व विलास करतेथे तब तक उन्हें हमलोगों का प्रेम था अब उनको क्या प्रयोजन है जो हमारी सुधि लेवें जैसे उनकी मृदु मुसकान व तिरछी चितवन व अमृतरूपी मीठी मीठी बातोंपर लक्ष्मी जी व देवकन्या मोहिजाती हैं वैसे हमलोगोंकी भँवररूपी आँखें भी कमलरूपी चन्द्रमुख मोहनीमूर्तिका रस पीकर उसी मदमें आठोंपहर मतवाली बनी रहती हैं ॥

दो॰ लीला मोहनलालकी सदा चैन सुखदैन। ताही सुमिरण ध्यानमें जीवत हैं दिन रैन ॥

हे राजन् श्यामसुन्दरकी चर्चामें गोपियां ऐसी लीन होगईं कि उनको अपने तनु व वस्त्रकी सुधि नहीं रही उससमय एक भँवर श्यामरंग उड़ता हुआ वहां आया उसे देखकर एक गोपी बोली हे सखियो जो संदेशा उद्धव से कहती हो वही समाचार इस भँवरेसे जो श्रीकृष्णजी के समान काला है उन्हें कहला भेजना चाहिये जो बातें गोपियोंने मधुकरसे कहीं थीं उसको भँवरगीत कहते हैं ॥

दो० माखनप्रभुके विरहमें गोपिन को नहिं चैन। भँवर सुनाकर कहत हैं उद्धव से सब

उसब्रजबालाकी बात सुनकर दूसरीने उत्तर दिया प्यारी तुझे विश्‍ होता है कि भँवरा हमारा दूत होकर संदेशा मोहनप्यारेको पहुँचावे सो मेरे निकट जितने श्याम वर्ण हैं उनसे अपने स्वार्थकी आशा रखना चाहिये॥

दो० कहै एक त्रिय सुन सखी कारे सब यकतार। इनसे प्रीति न कीजिये कपटिनको

सो० देखा करि अनुमान कारे अहि कारे जलद। कविजन करत बखान भँवर काग कोयल

दूसरी बोली हे भँवरा मुझे किसी श्याम रंगका विश्वास नहीं आ पर क्या करूं उस चित्तचोरकी बातें व सुन्दरताई याद आवनेसे मेरा ठिकाने नहीं रहता॥

दो० मृदु मुसकानि विष डारके गये भुजँग लौं भाग। नन्दयशोदा यों तजे ज्यों कोयलसुत

जब वह भँवरा सुगन्ध शरीर गोपियोंकी जो चंदन व केशर मलेहुये थीं सूंघकर उनके पास आया तब एक सखी ने कहा हे भँवरा हमारे निकट मति आव जो तेरे समान श्यामवर्ण होकर मथुराकी से विहार करता है वहां जा॥

दो० कामिनि मथुरानगरकी माखनप्रभुके हेत। विविध सुगन्ध लगावहीं वह सुवास नहिं

दूसरी बोली इस भँवरेकी नाक मथुरावासी स्त्रियोंके अंगकी सुग सूंघकर भर गई है इसलिये बेपरवाह रहकर कहीं नहीं बैठता दूसरीने हे भँवरा तू मथुरामें जाकर यह संदेशा हमारे चित्तचोर से कह देना अपने चाहनेवालोंकी प्रीति छोड़कर उन्हें दुःख देना कौन न्याय है तरह भँवरा एक क्षणसे अधिक किसी फूलपर नहीं बैठता वही तुम्हारा भी समझना चाहिये व लक्ष्मीजी तुम्हारा स्वभाव न जान अपनी अज्ञानता से तुमपर मोहित हैं वह तुम्हारे कठोरताईका हाल नतीं तो कभी तुमसे प्रीति न करतीं व मथुराकी स्त्रियां भी तुम्हारे देयीपनका हाल न जानकर मायाजालमें फँसी हैं॥

दो० नातो तुम सांची कहो जो जानत सबकोय। माखनप्रभु के नेहमें कैसे लागत

दूसरीने कहा जो हमारा प्राण हरकर चलागया और कुछ सुधि

लेता ऐसे कपटीको तू क्या संदेशा भेजती है दूसरीने कहा हे भँवरा तुम हमारी ओरसे मथुरा की रानियों को कहिदेना कि अभीतक तुमको श्यामसुन्दरकी कठोरताई का हाल नहीं मालूमहै परमेश्वर तुम्हारी प्रीति व उनका निर्दयीपन प्रतिदिन अधिककरै जिसमें हमारीसी गति तुम्हारी भी होजावे दूसरी बोली हे सखियो श्यामसुन्दर सर्व गुणोंमें भरे होकर जैसी सुन्दरताई वह रखते हैं वैसा रूपवान् तीनों लोक में कोई न होगा इसलिये सब स्त्री स्वर्ग व मर्त्यलोक की उनपर मोहिजाती हैं हम गँवारियों की कौन गिनती है दूसरीने कहा ऐ भँवरा तैंने माधवके चरणकमल का रस पिया इससे तेरा नाम मधुकर हुआ सो तू मोहनप्यारे कपटीका मित्र व दूत होकर हमारे पास आया है सो श्यामवर्ण सब कपटी होते हैं इसलिये तू हमको मति छू दूसरीने कहा ऐ भँवरा तू कुब्जाके अंगका केशर अपने मस्तक पर लगाकर श्यामसुन्दरकी आज्ञानुसार जो मुझे लेने आयाहै सो मैं केवल तेरे विनती करने से जाने नहीं सक्ती जब मैं कुवड़ी दासीके बराबर भी नहीं हूं फिर वहां जाकर क्या करूं इसलिये तुम मथुरा में जाकर उन्हींके सामने कृष्ण व कुवड़ीका यश गावो जिसतरह बहेलिया अलगोजा बजाकर हरिणको वनमें पकड़लेता है उसीतरह मोहनप्यारेंने मुरली बजाकर हमलोगोंको भी अपने प्रेमके जालमें फँसालिया ॥

दो० जो मैं ऐसा जानती प्रीति किये दुख होय। नगर ढिंढोरा फेरती प्रीति करै जनि कोय ॥

जिससमय वह गोपी यह बातें भँवरेसे कहरही थीं उसी समय ललिता सखी बोली सुनो प्यारियो श्रीकृष्णजीने कुछ इसी जन्म में कठोरपन नहीं किया यहसदा इसी तरह कपट करते आये हैं रामावतारमें बालिवानरको विना अपराध मारकर सूर्पणखा रावण की वहिन जो उनपर मोहित हुई थी नाक कटवालिया व वामनअवतार में राजा बलिके पास जाकर तीन पग पृथ्वी दान मांगी जब उसने ब्राह्मण समझकर संकल्प दिया तब विराट्रूप धरकर दो पगमें चौदहों भुवन नापलिया व तीसरे पगके बदले राजा बलि ऐसे धर्मात्माको बांधकर पातालमें भेज दिया सिवाय इसके और जो काम कपटका उन्होंने किया है वह हाल कहां तक तुमसे कहूं

जिसकी कुछ गिनती नहीं हो सक्ती कदाचित् तू कहै कि ऐसे क
मनुष्यसे प्रीति करके क्यों इतना दुःख उठाती है सो सुन मैं किस गि
में हूं बड़े बड़े राजा उनकी स्तुति व कथा सुनने से घरद्वार व राज पा
स्त्री व पुत्रोंकी प्रीति छोड़कर मुक्त होनेवास्ते वनमें चले जाते हैं व
मोहनीमूर्तिकी छवि देखकर देवकन्याओंका चित्त ठिकाने नहीं र
यह सब हाल तुम अपनी आंखोंसे देख चुकी हो दूसरीने कहा मैं
जानती कि श्यामसुन्दरको अपने वियोगमें हमारे प्राण लेनेसे क्या
निकलैगा जो ऐसा करते हैं दूसरीने कहा हे भँवरा हमलोगोंने मो
प्यारेसे इसवास्ते प्रीति लगाई थी जिसमें कुछ रोज निबहैगी सो वह
पनी मृदु मुसुकान से मन हमलोगों का चुराकर इसतरह बिलग हो
जानो कभीकी जान पहिँचान नहीं थी कदाचित् मैं उनको ऐसा क
जानती तो कभी प्रीति न करती दूसरी बोली हे सखी तैंने नहीं सुना
कुब्जा दैत्योंका जूठा खाकर दासी कहलावती थी उसे अब श्यामसु
ने पटरानी बनाया है यह बात सुनकर हमलोगोंसे लज्जावश कि
मुख नहीं दिखलाया जाता ॥

दो० अब खेलत दोउ लाज तजि बारहमासी फाग। लौंड़ीकी डौंड़ी बजी ह्रांसी औ अनु

दूसरीने कहा देखो जिसे नारायण व दीनदयालु कहते हैं वह
दया भुलाकर ऐसा निर्दयी होगया कि तीन कोस राह चलकर ह
दुःख छुड़ानेवास्ते नहीं आता केवल संदेशा भेजकर हम दुखियारि
घावपर नोन छिड़कता है ॥

दो० एक सखी याविधि कहै पगी श्यामकी प्रीति। हमहूं सीखा आजते पत्रलिखनकी री

दूसरी सखी बोली ऐ भँवरा तू अवश्य उस चित्तचोरसे पूछियो
यह कठोरताई छोड़कर कभी अपना दर्शन देवेंगे या नहीं दूसरीने
हे उद्धव श्याम व बलराम बालापनकी प्रीति समभकर कभी हमलो
को याद करते हैं या नहीं यह सुनकर दूसरी गोपीने उसे उत्तर दि
सखी अब श्याम व बलराम मथुरावासी महासुन्दरी व चतुर स्त्रि

वश होकर वहां विहार करते हैं हम गँवारियों को किसवास्ते याद करेंगे हमलोग पहिले ऐसा जानतीं तो क्यों वहां उनको जाने देतीं ॥

दो० आछे दिन पाछे गये हरिसे कियो न हेत। अब पछिताये होत क्या चिड़ियां चुनिगईं खेत ॥

जिसतरह आठ महीनेतक पृथ्वी व वन व पर्वत मेघकी आशापर तपने का दुःख अपने ऊपर उठाकर बैठेरहते हैं व बरसातमें मेघराजा पानी बरसाने से उनको ठण्ढा करता है उसीतरह श्यामसुन्दर भी आनकर अपने चन्द्रमुख की शीतलताई से हमारे हृदयकी तपन बुझावेंगे दूसरी बोली हे सखियो इन वृथा बातों से कुछ प्रयोजन नहीं निकलता तुम्हें उद्धवसे यहां आवने का कारण पूछना चाहिये यह वचन सुनकर दूसरी बोली हे उद्धव तुम किसवास्ते यहां आये हो कभी वह भी इस ओर आवने चाहते हैं या नहीं दूसरी ने कहा यह क्यों नहीं पूछती कि राम व कृष्णने गुरुके यहां सिवाय कपटके कुछ धर्म व दया भी पढ़ा है या नहीं दूसरी बोली हे प्यारियो वसुदेव जीने श्याम व बलराम को यहां अहीरों की संगति में रहने से तीर्थजल से स्नान कराके उन्हें जनेऊ पहिनाया अब वह किसवास्ते उनको यहां आने देंगे दूसरी गोपी जो विरहसागर में डूबरही थी झुंझलाकर बोली जब वह निर्दयी हमारी सुधि नहीं लेता तो तुमलोग किस वास्ते बारम्बार उसका हाल पूछती हो यह कठोर वचन सुनकर दूसरी बोली हे उद्धव इस गँवारी के मुखमें आग लागै जो ऐसी बात कहती है तुम सच बतलाओ वह कब यहां आवेंगे ॥

चौ० ता दिन उइहैं भाग्य हमारे। जा दिन मिलिहैं नन्ददुलारे ॥

दूसरी बोली हे उद्धव तुम हमारे प्राणनाथ के भेजेहुये यहां आये हो इसलिये जहां तुम्हारे चरण परते हैं वहां की धूर हमलोगों को अपनी आंखों में लगाना उचित है उद्धव यह दशा गोपियों की देखकर मनमें कहने लगे देखो संसार में इनके बराबर दूसरे किसीको भक्ति व प्रीति वैकुण्ठ-नाथकी न होगी ऐसा समझकर उद्धव आनन्दरूपने राधाप्यारी को जो अलग खड़ीहुई यह सब बातें सुनती थीं दण्डवत् किया व रत्नोंकी माला जो श्यामसुन्दरने भेजा था उसे देकर कहा हे गोपियो तुम्हारे समान दूसरे

का भाग्य होना बहुत कठिन है जो आठों पहर ऐसी प्रीति श्यामसुन्द
रखती हो पिछले जन्मके पुण्यसे मैंने तुम्हारा दर्शन पाया संसारी मनु
वेद व पुराण सुनकर यज्ञ व होम व दान व व्रत व तीर्थ इसी आशापर
रते हैं जिसमें हरिचरणों की भक्ति उत्पन्न हो पर तुम्हारे समान वह पद
नहीं पाने सके इसलिये मुझको ऐसा आशीर्वाद देव जिसमें मुझे भी
म्हारे समान हरिचरणों में प्रीति हो ॥

दो० महिमा तुम्हरे भाग्यकी कासों बरणी जाय । जिनके चितमें नित बसैं माखन प्रभु यदुरा

हे व्रजबालो श्रीकृष्णजी ने मेरे ऊपर बड़ी दया करके यहां भेजा कि
तुम्हारा दर्शन पाकर कृतार्थ हुआ अब जो चिट्ठी व सन्देशा प्राणनाथ
लायाहूं मन लगाकर सुनो जब उद्धवने श्याम व बलराम की कुशल क
कर चिट्ठी गोपियों को दी तब राधाप्यारी आदिक सब व्रजबालों ने
अपनी अपनी छाती में लगाया ॥

दो० अतिहित पाती श्यामकी सब मिलिमिलि सुखपाय । उद्धवकर दीन्हीं बहुरि दीजै बांचि सुना

जब उद्धवजी चिट्ठी खोलकर पढ़नेलगे तब गोपियोंने क्या देखा
चिट्ठी में कुब्जानाम लिखकर हरतालसे मारने उपरान्त वहां गोपिका
नाया हुआ था यह देखकर गोपियां बोलीं देखो मोहनप्यारेका मन आ
पहर कुब्जामें लगा रहता है इसीवास्ते उन्होंने गोपिकाकी जगह उस
नाम लिखकर उसपर हरताल ऐसा लगाया मानों पीताम्बर अपना उस
ओढ़ायाहै हे राजन् उद्धव चिट्ठी सुनाकर गोपियों से बोले कि श्या
सुन्दरने मुझको तुम्हारे पास आत्मज्ञान समझानेवास्ते भेजकर ऐसा क
है कि तुमलोग मुझमें भोगकी आशा छोड़कर योग साधो तो तुम्हें
योगका दुःख न होगा तुमलोग मेरा ध्यान जो दिनरात करती हो इ
लिये मैं तुम्हारे समान दूसरे को प्यारा नहीं जानता सो ऐ गोपियो
श्रीकृष्णजी आदिपुरुषको जो तीनों लोकके उत्पत्ति व पालन करने
हैं अपना पति समझना न चाहिये सुनो हवा व पानी व मिट्टी व आ
व आकाश पांचतत्त्वसे शरीर मनुष्यका बनकर उस तनुमें उन्हीं
प्रकाश रहनेसे मनुष्यको चलने व फिरने व बोलने व शुभ अशुभ

करनेकी सामर्थ्य रहती है पर नारायणजीकी मायासे वह रूप उनका किसी को दिखलाई नहीं देता इसवास्ते निर्गुणरूपका स्मरण व ध्यान किया करो तो वह आठों पहर तुम्हारे पास वनेरहेंगे व सगुणरूप पास रहने से ज्ञान व ध्यानमें विघ्न समझकर श्यामसुन्दर तुम्हारे कल्याणवास्ते मथुरा जाकर अलग बसे हैं सो तुमलोग मोहनप्यारेका चमत्कार स्त्री व पुरुष व गृहस्थ व ब्रह्मचारी व वानप्रस्थ व संन्यासी व ग्वाल व गायों में एकसा जानकर सब जीव जड़ व चैतन्यको उन्हींका रूप समझो जो मनुष्य इस तरह आदिपुरुष भगवान्को सब जगह व्यापक जानता है उसे कुछ वियोगका दुःख नहीं होता॥

चौ० योगसमाधि ब्रह्म चित लावै। परमानन्द तबहिं सुख पावै॥

दो० आतमहीसे देखिये परम आतमारूप। सबमें पूरण एकरस अद्भुत महाअनूप॥

हे गोपियो वह उत्पन्न होने व मरने व घटने व बढ़ने से रहित होकर आकाश समान सब जगत्पर अपनी छाया रखते हैं जिस तरह किसी स्त्री का पुरुष परदेश गयाहो और वह अपने पतिको सोते व जागते उठते व बैठते खाते व पीते ध्यान में अपने पास देखती रहै तो उसको पुरुषसे अलग कहना न चाहिये उसीतरह तुमलोग भी जो ऋषीश्वर व योगीश्वरों से अधिक पदवी रखती हो उनके ध्यान में लीन रहकर उन्हें अपने से बिलग मत समझो तो वियोगका दुःख तुम्हें न होगा॥

दो० ताही सुमिरण ध्यानमें रहोसबहि चितलाय। याही विधि तुमसों कह्यो माखनप्रभु समुझाय॥

और यहभी केशवमूर्तिने कहा है जब तुमलोगोंने रासलीला करती समय पुरुषभाव समझकर पापदृष्टिसे मुझे देखा तब मैं अन्तर्धान होगया जब तुमने ज्ञानकी राह मुझे परमेश्वर जानकर मेरा ध्यान किया तब मैंने तुम्हारी भक्ति देखकर फिर तुमको दर्शन दिया सो उसी तरह मेरे निर्गुणरूपका ध्यान करो तो आठों पहर तुम्हारे पास बनारहूंगा॥

दो० सुनतहि उद्धवके वचन रहीं सबै शिरनाय। मानहुं मांगत सुधारस दीन्हों गरल पियाय॥

यह ज्ञान भरीहुई बातें सुनकर श्यामाने कहा हे उद्धव जहांसे यह सब रत्नादिक व मोतीकी माला लेआयेहो वह अनमोल लाल मेरा कहां है

उनके विना हमैं तीनोंलोककी सम्पत्ति अच्छी नहीं लगती इसलिये यह गहना उसी को जाकर फेर देव मेरे काम का नहीं मैं केवल उस मोहनीमू का दर्शन चाहतीहूं ॥

क० धर्मके सँघाती एक बाती न कहत बनै थिर में थहराती जो लहाती हित रामके।
जाके पूत नाती करैं प्रीति अविहाती यह काहू न सोहाती वश भये ऐसे वामके॥
मोहन कुजाती कुविजाती संग जाती अब हमसों कहाती ये हमारे कौन कामके।
छाती दाहिबेको यह पाती ले सिधारे ऊधो घाती करी तुमहूं संघाती सखा श्यामके॥

दूसरी गोपी बोली हे उद्धव यह कौन न्यायकी बात है जो हमलोगों को योग साधनेवास्ते कहकर आप कुब्जा आदिक मथुराकी स्त्रियोंसे भोग विलास करते हैं भला यह तो बतलाओ कभी उस आनन्द व खुशी सभा में हमारी चर्चा भी होती है या नहीं ॥

दो० यह सब दोप लगै हमैं कर्म रेख को जान। प्रेमसुधारस सानिकै अब लिखि पठयो ज्ञान॥

दूसरी ने कहा हमलोग दिनरात मोहनप्यारेके ध्यानमें रहकर सिवाय रोने के दूसरा कुछ काम नहीं करतीं तिसपर वह योग व वैराग्य लिखकर हमारे कलेजे की दवी दवाई अग्नि सुलगाते हैं ॥

चौ० ज्ञान योग विधि हमैं सुनावें। ध्यान छोड़ि आकाश बतावें ॥
जिनको मन लीला में रहै। उनको को नारायण कहै ॥
बालकपनसे जिन सुख दयो। सो क्यों अलख अगोचर भयो ॥
जो तनु में प्रिय प्राण हमारे। सो क्यों सुनि हैं वचन तुम्हारे ॥
एक सखी उठि कहै विचारी। उद्धव की करिये मनुहारी ॥
इनसे सखी कछू नहिं कहिये। सुनिकर वचन मौन धरि रहिये ॥
एक कहै अपराध न याको। यह आयो भेजो कुब्जा को ॥
अब कुब्जा जो जाहि सिखावै। सोई वाको गायो गावै ॥
कबहूं श्याम कही नहिं ऐसी। कही आय ब्रज में इन जैसी ॥
ऐसी बात सुनै को माई। उठत शूल सुनि सही न जाई ॥
कहत भोग तजि योग अराधो। ऐसी कैसे कहिहैं माधो ॥
जप तप संयम नियम अपारा। यह सब विधवा को व्यवहारा ॥
युग युग जीवें कुँवर कन्हाई। शीश हमारे पर सुखदाई ॥
हमको नियम धर्म व्रत येहा। नँदनन्दनपद सदा सनेहा ॥
उद्धव तुम्हें दोप को लावे। यह सब कुब्जा नाच नचावे ॥

दो० रहन देव ऐसे हमैं अवधि आशकी थाह। फिरि हमको पावैं नहीं डारैं सिंधु अथाह॥

सो॰ लायो युवतिनयोग जो योगिनके भोगतुमहिमतनु गर्यो वियोग भयो अधिकदुखश्रवणसुनि॥

उसी समय राधिका बोली ॥

स॰ जो हरि जाय वसे मथुरा हमरे जिय प्रीति बनी रहि सोऊ।
ऊधो बड़ो सुख येहू हमें अरु नीके रहैं वह मूरति दोऊ॥
हमरे नामकी छाप पड़ी अरु अंतर बीच कहै नहिं कोऊ।
श्रीराधाकृष्ण सबै तौ कहैं अरु कूबरीकृष्ण कहै नहिं कोऊ॥

दूसरी बोली हे उद्धव अबतक हमलोगों को श्यामसुन्दरके आवने की आशा बनी थी सो तुमने यह योग व वैराग्यका सन्देशा सुनाकर हमें निराश किया हम गँवारी अहीरियां सिवाय गोरस बेंचनेके योग साधने का हाल क्या जानैं तुम दयाकी राह हमैं अबला अनाथ समझकर अपने साथ श्यामसुन्दर के पास लेचलो ॥

दो॰ अधरअरुण मुरली धरे लोचन कमलविशाल। क्यों बिसरतउद्धवहमें मोहन मदनगोपाल ॥
क॰ ऊधो तुम सुघर सिखावत हौ नीके योग हौं तो गति चाहत न काशी अविनाशी की।
ब्रह्माकी इन्द्रकी उपेन्द्रकी न चाहौं भूति तोयनिधि धनेशकी दिनेशकी न पाशी की॥
तन मन नयन में पूरि रहे प्यारेलाल बाल कहा जानैं गति शंकर उदासी की।
नाशी लोकलाज वृन्दावन के मवासी संग मेरी मति दासी भई कान्ह ब्रजवासी की॥

उद्धव ब्रजवालोंका वचन सुनतेही अपने ज्ञानका अभिमान भूलकर उन्हें उत्तर देने नहीं सके ॥

दो॰ योगकथा युवतिन कही मनहींमन पछिताय। प्रेमवचन तिनके सुनत रहिगये शीश नवाय॥
सो॰ तब जान्यो मनमाहँ ये गुणहैं सब श्यामके। भेज्यो सुघर सुजान याही कारणके लिये॥

उद्धवने फिर ज्ञानकी राह कहा हे ब्रजवालो जिसतरह पानीपर रेखा खींच देने से स्थिर नहीं रहती उसी तरह संसारी व्यवहार स्वप्नके समान झूठा होता है इसलिये तुमलोगों को चाहिये कि अपनी अपनी आंखें बन्द करके हृदय में ध्यान एक फूल कमल व चतुर्भुजीरूप नारायणजीका मन लगाकर करो तो उस पुष्पके वीचमें तुमको दर्शन परमेश्वरका प्राप्त होयगा यह बातसुनकर एक गोपीने कहा हे उद्धव कदाचित् नन्दलालजी रूप व रेखा नहीं रखते थे तो यशोदाने उनको किसतरह जानकर पालने में झुलाया व ऊखलसे क्योंकर बांधे गयेथे व हमारा गोरस किसतरह

चुराकर खाया तुम्हारे झूठे ज्ञानको लेकर ओढ़ैं या बिछावैं तुम अपने ज्ञानसे हम सब अबला अनाथिनियों को योग व वैराग्य सिखलाते तुम्हें कुछ लज्जा नहीं आती दूसरी बोली हे उद्धव एक तो हम आप श्या सुन्दरके विरह में व्याकुल होरही हैं दूसरे तुम और ऐसी ऐसी झूठी सिखलाकर हमारे घाव पर नोन छिड़कते हो मोहनप्यारे ने हमलोगों इसतरह तज दिया कि जिसतरह सांप केंचुलि छोड़कर फिर उससे कुछ जन नहीं रखता दूसरीने कहा हे उद्धव कन्हैया ने दावानल व इंद्रके व दैत्यों के हाथसे हमारा प्राण बचाकर यहां अनेक लीला की देखो ने परब्रह्म परमेश्वरका अवतार होकर राजा कंसकी दासीको अपनी बनाई यह बात सुनकर हमलोगों को लज्जा अती है॥

चौ० उद्धव कहां कंसकी दासी। यह सुनि होत सकल व्रज हासी॥

दो० गावत सब जग गीत अब वा चेरी के काज। उद्धव यह अनुचित बड़ो चेरीपति व्रजरा

सो० हमैं देत वैराग आपु तो दासी वश भये। चतुर चिचोड़त आग उद्धव यह अचरज

दूसरी बोली हे उद्धव कदाचित् मोहनप्यारे को कूबड़ प्यारा हो तो लोगभी कुबड़ी बनकर मथुरामें चलैं व अपनी टेढ़ी चाल दिखलाकर फिर यहां लेआवैं जिसमें कुबड़ी उनसे छूटै हे उद्धव फिर कोई ऐसा होगा जो मोहनप्यारे यहां आनकर हमलोगों का दुःख छुड़ावैंगे बोली अब मुझे वृन्दावन आवनेकी आशा जाती रही॥

दो० यहां चरावत थे सदा नन्दमहरकी गाय। वहां जाय राजा भये माखन प्रभु

दूसरी ने कहा हे उद्धव जब मोहनप्यारेने हम गोपियोंको छांड़ तो अपना नाम गोपीनाथ किसवास्ते धराया और जब उन्होंने कुब प्रीति की तब फिर जग दिखानेवास्ते चिट्ठी व संदेशा भेजकर हृदय की दबी दबाई आग क्यों सुलगाते हैं॥

सो० उद्धव कहियो जाय अबहूं चेरी को तजो। यह दुख सह्यो न जाय सब्रति कहावति

हे उद्धव इतनी बात मेरी ओर से कुब्जा को अवश्य कह देना श्यामसुन्दर की नई प्रीति पर तू मोहित हुई है पर उनकी कठोरता हाल भी सुन रख॥

क० जाकी कोख जायो ताको कैद करवाय आयो धायकर मारी नारि निठुर मुरारि हैं।
जेती व्रजनारी तेती मिलिमिलि मारी अनमिलिहूं मारी जो मिलिहैं ताहि मारिहैं॥
सुनरी ए चेरी मैं तो तेरी सौं कहति वेतो सरसनयन हरि आंशुवनि ढारिहैं।
बड़ेहैं शिकारी पर इन्हें न सँभारी नारि मारिवेको नवल कन्हैया तलवारि हैं॥

दूसरी बोली हे उद्धव हमलोग अपना दुःख तुमसे कहांतक कहें कदाचित् वह प्रथमसे वसुदेव व देवकी के पास रहकर यहां न आवते तो हमलोगोंको क्यों इतना दुःख उठाना पड़ता॥

चौ० करिकै ऐसी प्रीति कन्हाई। अब चितभरी महा निठुराई॥
जबसे व्रज तजि गये विहारी। तबसे ऐसी दशा हमारी॥

हे उद्धव उसी दिनसे हमलोगोंका खाना पीना हँसना बोलना सब सुख छूटगया दिनभर उनके आनेका रास्ता देखते व रातको तारे गिनते वीतकर सिवाय चर्चा व ध्यान उस मोहनीमूर्तिके दूसरी वात हमें अच्छी नहीं लगती ऐसे जीनेसे हमलोग मरजातीं तो उत्तम था॥

दो० कहँलगि कहिये निजव्यथा औ हरिकी निठुराय। तापरलाये योग तुम अबलन करनसहाय॥
सो० कठिन विरहकी पीर जेहि व्यापै सो जानिहै। क्यों धरिहैं मन धीर सुनिकर वचन भयावने॥

दूसरी बोली हे उद्धव पहिले अक्रूर आनकर श्यामसुन्दरको यहांसे मथुरा में लेगया सो उनके विरहमें हमलोगों की यह गति हुई अब तुम सगुणरूपकी प्रीति छुड़ाकर इसतरह निर्गुणरूपका ध्यान करनेवास्ते हमें सिखलाते हो जिसतरह कोई भूखेके आगेसे थाली भोजनकी छीनकर उसे मिट्टी खानेको कहै जो श्यामसुन्दरको ज्ञान सिखाना था तो किस वास्ते रातको वंशी बजाकर हमलोगोंको घरसे बुलाया व रास विलास करके हमारा तन व मन हरलिया अब मथुरामें जाकर ज्ञानी हुये हैं जब तुम्हारा व श्यामसुन्दर का एक सम्मत है तब तुम हमारी सहायता क्यों करोगे॥

दो० मनकी मनहीमें रही कहिये कहा विचार। हम गोहार जितते चहैं उतते आई धार॥
सो० जानतहैं सब कोय जैसी हम सेवा करी। हम सहि लीनों सोय पावोगे अपनो कियो॥

दूसरीने कहा हे उद्धव शास्त्रानुसार गुरु अपने चेलोंके कानमें मंत्रोपदेश करते हैं दूसरेसे मंत्र नहीं कहला भेजते कदाचित् उन्हें हमलोगोंसे योग सधवानाहै तो आप यहां आनकर वृन्दावनके कुंजों में ज्ञान सिखलावें॥

दो० तब खेलत सौगन्ददे राख्यो कछु न बचाय। अब सीखे यह योगकहँ उद्धव कहियो जाय॥

सो० हमको निर्गुणज्ञान जहँ स्वारथ तहँ सगुणहैं। लिखि भेज्यो निरवान चाटैं सहत लगा...

दूसरी बोली ऐ उद्धव जिन सखियोंके बालोंमें श्यामसुन्दर अ... हाथसे फुलेल डालकर फूलोंसे शिर गूंधते व अच्छा अच्छा गह... कपड़ा पहिनाकर उनके अंगपर अतर लगाते थे उन्हींलोगोंके अं... भस्म लगाने व शिरपर जटा रखने व योग साधने वास्ते कहला भेजाहै... कानोंमें अपने हाथ जड़ाऊ कर्णफूल व वाली व पत्ता पहिनाकर ... होतेथे उन्हीं कानोंमें अब मिट्टीकी मुद्रा डालनेको कहाहै जिस त... हमलोगों को गोटे व किनारीकी रँगीहुई सारियां पहिनावते थे ... अंगपर गेरुआ वस्त्र पंहिरनेवास्ते कहाहै जिस गले में श्यामसुन्दर अ... हाथ डालकर गले लगातेथे उस गले में अब सेल्ही पहिरने को आ... दी है यह कौन न्याय करते हैं॥

दो० वहि गोकुल वहि कुञ्जवन वही सखा वहि ठौर। यक उद्धव ब्रजराजबिन भई औरकी औ...

क० याही कुञ्ज कुञ्जनमें गुञ्जत भँवरभीर याही कुञ्ज कुञ्जनमें अब शिर धुनत हैं।
याही रसनाते करी रसकी रसीली बातैं याही रसनाते अब गुनगन गिनत हैं॥
आलम विहारी बिन हृदय अचेत भये येहो दई हित कहत कैसे बनत हैं।
जेही कान्ह नयननके तारे हुये निशि दिन तेही कान्ह कानन कहानी अब सुनत हैं॥

दूसरी ने कहा॥

क० ओढ़िबेको कन्था अरु भसम रमाइबेको कानों के कुण्डल कर टोपियां बनावैंगी।
हाथ में कमण्डलु औ खप्पर भराइबेको आदेश आदेश करि शृंगियां बजावैंगी॥
ऋद्धि दीनी कुबजाको सिद्धि दीनी गोपिनको फिरैंगी दुआर द्वार अलख जगावैंगी।
एकबात उद्धवजी मन में विचार देखो येती ब्रजबाला मृगछाला कहां पावैंगी॥

दूसरी बोली ऐ उद्धव जिसतरह ठगलोग पहिले बटोहियोंके ... लगकर विनयपूर्वक उससे प्रीति करके पीछे सब धन उनका लूट ले... उसीतरह मोहनप्यारेने प्रथम हमलोगोंसे प्रीति लगाकर तन व मन ह... हरलिया अब योग व वैराग्य की छुरी मारकर हमारा प्राण लिया चाहते...

दो० हरि हमसे ऐसी करी कपट प्रीति विस्तार। मुखसे कछु नहिं कहिसकैं समुझत बार...

दूसरी बोली ऐ उद्धव एक तो श्यामसुन्दर पहलेसे बड़े निर्दयी... दूसरे तुम्हारे ऐसे कठोर सखा मिले फिर किसवास्ते वह ऐसा संदेशा...

भेजें और तुम हमलोगोंको ज्ञान विज्ञान समझाकर योगसाधनेवास्ते जो कहतेहो सो हमैं इन बातोंसे क्या प्रयोजन है यह कर्म योगियोंको चाहिये और यह जो तुमने कहा कि सबके तनुमें उन्हींका प्रकाश रहताहै इसकारण तुमभी वही हो फिर जिसतरह श्रीकृष्णजीने गोवर्धन पहाड़ अपनी अँगुली पर उठाया था उसीतरह तुमभी यह पर्वत उठाकर मुरली बजाओ जब तुम ऐसा नहीं करनेसक्के फिर किसतरह तुमको उनके समान जानकर तुम्हारा ज्ञान उपदेश सच्चा मानें इसलिये हमलोग अच्छीतरह जानती हैं कि उनके समान कोई दूसरा नहीं है तुम किसवास्ते झूठ कहकर हमलोगों को धोखा देते हो तुमसे होने सकै तो उस चित्तचोरको यहां लिवालावो हमारा हृदय उस मोहनीमूर्ति के प्रेमसे भर रहाहै दूसरी वस्तु योग व ज्ञान की वहां समाने नहीं सक्की इसलिये हमलोगोंसे योग व वैराग्य साधा नहीं जायगा यह चिट्ठी जहांसे ले आये हो उन्हींको जाकर फेरदेव योग व वैराग्य वही साधकर यह सब ज्ञान कुब्जा रानीको पढ़ावें जिसमें उसकी शोभा हो जिसतरह अंधेको शीशा देखने व ज्वरके रोगीको भोजन करने से कुछ सुख व गुण नहीं होता उसीतरह हमको योग सिखलानेसे तुम्हारा कुछ अर्थ नहीं निकलैगा॥

सो० देखु मूढ़ चित लाय कहँ परमारथ कहँ विरह। राजरोग कफ जाय ताहि खवावत हौ दही॥

दूसरी बोली हे उद्धव पहिले तुम ब्रजवालोंकी दशा देखकर तब उन्हें योग व वैराग्य सिखलावो जिसतरह डूबता हुआ मनुष्य पानी परकी फेन पकड़नेसे नहीं बचता उसीतरह हमलोगोंको जो बीच विरहसागर मोहनी-मूर्ति के गोता खा रही हैं तुम्हारा ज्ञान उपदेश अच्छा नहीं लगता॥

दो० हम विरहिनि विरहा जरीं तुम मतिजारो अंग। सुख तो तबहीं पाइहैं जब नाचैं हरिसंग।

क० आयो आयो भयो ऊधो अब ब्रजमण्डलमें रागमें कुराग योग रीति को सुनायो है।
झोली झण्डा गुदड़ी औ भस्म मुद्रा कानन में हाथन में खप्पर ये स्वांग ले दिखायो है॥
संयम नियम ध्यान धारणा दृढ़ावत हो ब्रह्मको प्रकाश रसरास दरशायो है।
कुबरी पै पढ़िआयो वेदको पढ़ाय आयो रथ चढ़ि आयो अनरथ गढ़िलायो है॥

दूसरी सखी बोली हे उद्धवजी तुम योग और ज्ञान की गठरी बांधकर मथुरा से जो अपने शिरपर यहां ले आये हो सो ब्रजवासियों को योग

व ज्ञान लेने की इच्छा नहीं है तुम यह गठरी काशी में ले जाकर व
लोगों को जो मुक्ति की चाहना बहुत रखते हैं देव ॥

चौ० क्या हम करैं मुक्ति ले रूखी । अबला श्यामसंग की भूखी ॥

जिस तरह पियासा मनुष्य जबतक पेट भर पानी नहीं पीता तब
उसकी पियास ओस चाटने से नहीं जाती उसी तरह विना देखे मोहनप
के हमारी आंख नहीं मानती ॥

चौ० फिर वह रूप प्रकट जब देखैं । जीवन सुफल तभी करि लेखैं ॥

हे उद्धव जब यह एक मन हमारा श्यामसुन्दर के चरणोंमें अटक
तब योग व वैराग्य कौन साधै मैं तुमको मोहनप्यारे का भक्त जानती
पर तुम्हारे ज्ञान सिखलाने से जो सगुण रूप व लीला छोड़कर नि
रूप व आकाश पाताल का हाल बतलावते हौ मुझे जान पड़ा
तुमको श्रीकृष्णजी की कुछ भक्ति व प्रीति नहीं है ॥

चौ० उद्धव हरि हैं ईश हमारे । सो अब कैसे जात विसारे ॥

दो० योग दीजिये लै तिन्हैं जिनके मन दश बीस । कित डारत निर्गुण यहां उद्धव व्रजमें
योग कथा अब मति कहो उद्धव वारम्बार । भजै और नँदनंद तजि वाको है धि

जिस तरह हाथी कमल की डाल में नहीं बांधा जाता उसी तरह स
रूपी हमारा विरह चिनगारीरूप तुम्हारे ज्ञान से सूखने नहीं सक्ता दे
जहां छः महीने की रात रास विलास में श्यामसुन्दर के साथ पल
मालूम हुई थी वहां अब एकक्षण उनके वियोग में युगसमान बीतता
हम से उन्होंने वृन्दावन आवने के वास्ते कहा था उसी आशा पर
लोग जीती हैं ॥

चौं० उद्धव हृदय कठोर हमारे । फटे न बिछुरत नन्ददुलारे ॥

हमसे मछलियों को उत्तम समझना चाहिये जो पानी से बिछुड़ते
अपना प्राण छोड़ देती हैं ॥

दो० कहँलगि कहिये आपनी उद्धव तुम से चूक । श्यामविरह तनु जरत है सुनत न कोई कू
सो० उद्धव कहियो जाय मोहन मदनगुपालसों । नयनन देखैं आय एकबार व्रजकी दश

इसी तरह अनेक बातें कहकर गोपियों ने आंसुओं से उद्धव का चरण
धोया व विलाप करके कहने लगीं हे श्यामसुन्दर अब तुम्हारे विरह

दुःख हमसे सहा नहीं जाता इसलिये अपनी मोहनीमूर्ति दिखलाकर हमारी चिन्ता हरो नहीं तो हमलोगों का प्राण ले लेव आशा दुःखदायी होकर निराश होजाने से शोच नहीं रहता ऐसा कहकर गोपियों ने उद्धव का हाथ पकड़ लिया व सब स्थान रासमण्डल लीला करने श्यामसुन्दर का उन्हें दिखलाकर बोलीं हे उद्धव यह सब स्थान देखकर हमें एक क्षण वह मोहनीमूर्ति नहीं भूलती सो तुम इतना सँदेशा हमारा विनयपूर्वक मोहनप्यारे से कह देना कि तुम्हारे विरहसागर की लहर से शरीररूपी घर हमारा गिरने चाहता है सो जल्दी आनकर रक्षा इसकी करो॥

दो० तुमतौ महाप्रवीण हौ कहँ कहा समुझाय। माखन प्रभु से सबनकी विनती कहियो जाय॥

जब यह संदेशा कहती हुई सब व्रजबाला बौरहों के समान अचेत होगईं तब उद्धव यह दशा देखतेही उन्हें दण्डवत् करके बोले हे व्रजबालाओ मनुष्यतनु पाने का फल तुम्हीं को प्राप्त है जो आठों पहर उन आदिपुरुष जिनके चरणों का ध्यान ब्रह्मादिक देवता अपने हृदय में रखते हैं करती हो तुम्हारी बड़ाई कोई नहीं करने सक्ता वेद व शास्त्र में स्त्री को निषिद्ध कहते हैं पर तुम्हारा ज्ञान देवतों से भी उत्तम है वैकुण्ठनाथ जितनी प्रीति तुम लोगों की रखते हैं उतनी लक्ष्मी जी पर नहीं करते॥

दो० जा विधि सुख तुमको दियो वृन्दावनके माहिं। स्वप्नेहू में लक्ष्मी वह सुख पावत नाहिं॥

हे व्रजबालाओ परमेश्वर मुझे भी एक गोपी का जन्म देते तो क्या अच्छी बात होती अब मैं वृक्षादिक का जन्म लेकर यहां रहा चाहता हूं जिसमें तुम्हारे चरणों की धूरि मेरे शिर पर चढ़ा करै तुम्हारा प्रेम देखकर देवता मोहित होजाते हैं मेरी क्या सामर्थ्य है जो तुम्हारी स्तुति करने सकूं जिस तरह श्रीकृष्णजी को परमेश्वर समान जानता हूं उसी तरह तुम लोगों को भी बूझकर उनसे विलग नहीं समझता जो पदवी ब्रह्मादिक देवता बड़े परिश्रम से पावते हैं वह तुम लोगों को सहज में प्राप्त हुई इसलिये तुम्हें उन्हीं का रूप समझना चाहिये॥

दो० महाधन्य तुम गोपिका धन्य तुम्हारो नेम। माखन प्रभु गोपाल सों जिनको बाढ़ो प्रेम॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित इस बात में कुछ

सन्देह मत समझो जो मनुष्य अपना मन प्रेमपूर्वक परमेश्वर में ल
वह उन्हीं का रूप होता है देखो गोपियां बीच कुल ब्राह्मण व क्षत्रिय
होकर कभी उन्होंने वेद व पुराण नहीं सुना व किसी तीर्थ का स्नान
कभी तप व जप भी नहीं किया केवल श्रीकृष्णजी के चरणों में
रखने से इतनी बड़ी पदवीको पहुँच गईं जिस तरह बड़ा ढेर रुई व ल
का एक चिनगारी आग से जल जाता है उसी तरह उद्धव का ज्ञान
वालों के सामने भूल गया तब उद्धव बारम्बार शिर अपना गोपि
चरण पर रखकर कहने लगे मैं तुम्हारे दर्शन से कृतार्थ हुआ मनुष्य
क्षण श्यामसुन्दर का स्मरण करने से मुक्ति पाता है तुम लोग तो
पहर उनके याद व ध्यान में रहती हौ मैं तुमको ज्ञान बतलाने आया
सो तुम से परमभक्ति सीख चला मुझे अपना दास समझकर मेरी
करती रहना हे राजन् उससमय उद्धव प्रेम में डूबकर व्रजभूमिपर लो
लगे व वृन्दावनके वृक्षोंसे गले मिलकर कहा तुम सब वृक्ष व पक्षी आदि
बड़ा भाग्यहै जो तुमने यहां जन्म पाया जिन परब्रह्म परमेश्वरका द
ब्रह्मा व महादेवको जल्दी ध्यानमें नहीं मिलता सो उन्होंने व्रजभू
आनकर तुमलोगोंको बाललीलाका सुख दिखलाके अपना दर्शन दि
इसीतरह उद्धवजी गोपियोंकेसाथ जहां जहां वृन्दावनविहारीने ली
की थी वहांपर दो दो चार चार दिन हरिचर्चामें मग्न रहे॥

दो० ऊधो मन आनन्द अति लखिके प्रेम विलास। आयाथा दिन दोय को बीत गये पट मा

सो० तब उपज्यो मन शोच वचन कृष्णके यादकरि। मनमें भयो सँकोच श्याम बुलाये बेगिम

यह सुनकर गोपियोंने कहा हे उद्धव तुमने हमारे भले वास्ते
सिखलाया व हमलोगोंने प्रेमवश तुमको दुर्वचन कहा सो बड़े लोग
पर सदासे दया करते आये हैं इस कारण हमारा अपराध क्षमा करके
उपाय करना जिसमें श्यामसुन्दर अपना दर्शन देवें और हमलोगों
दशा तुम अपनी आंखों से देखे जाते हो जैसा उचित जानना वैसा
रना और यह भी मोहनप्यारेसे कह देना हमारा अपराध क्षमा करके
पकड़े की लज्जा रक्खें॥

दो० प्रभु दीननपति दीनहित यही हमारी आस। कबहूं दर्श दिखाइके हरिहैं लोचन प्यास॥

ऐसा कहकर जब राधा आदिक गोपियां उद्धव को बड़े प्रेमसे अपने घर लिवालेआईं तब उद्धवने भी सच्चा प्रेम उनका वैकुण्ठनाथ में देखकर उनके घर भोजन किया उससमय गोपियां बोलीं हे उद्धव तुम वहां जाकर श्यामसुन्दरसे कहना आगे आप दयाकी राह हमारा हाथ पकड़कर वृन्दावनकी कुंजोंमें लिये फिरते थे अब राजगद्दी पाकर कुब्जाके कहने से हमैं योग व वैराग्य लिख भेजा है हमलोग आजतक गुरुमुख भी नहीं हुईं योग व ज्ञानका हाल क्या जानैं॥

चौ० उनसे बालापनकी प्रीति। जानैं कहा योगकी रीति॥
उद्धव यों कहियो समुझाय। प्राण जात हैं राखैं आय॥

सो० ऐसे कहि व्रजबाम भईं विरहसागर मगन। उद्धव करि परणाम आये यशुमति नन्दके॥

फिर उद्धवने नन्द व यशोदासे कहा तुम सब व्रजवासी धन्य हो जो त्रिलोकीनाथ ने तुमको बाललीलाका सुख दिखलाया व मैं भी तुमलोगों का प्रेम देखकर इतने दिन यहां रहा अब मुझे विदा करो तो वहां जाकर तुम्हारा संदेशा मोहनप्यारेसे कहूं यह वचन सुनतेही यशोदा माखन व घी व मिठाई आदिक अनेक वस्तु श्याम व बलरामके वास्ते देकर बोली हे उद्धव तुम देवकी बहिन से यों कहना कि मेरे राम व कृष्णको फुसलाकर वहां रख न छोड़ैं जल्दी यहां भेज देवैं मैं उनके देखे विना दिन रात व्याकुल रहती हूं व मोहनप्यारेको बहुत आशिष देकर मेरी ओरसे यह कहदेना तुम्हारे विना यशोदा बड़ा दुःख पावती है॥

चौ० इतनी दया मातुपर कीजै। एकबार फिर दर्शन दीजै॥

सो० दई यशोमति माय मुरलीललित गुपालकी। उद्धव दीजो जाय प्यारी यह अति लालकी॥

नन्दजीने कहा हे उद्धव तुम आप बुद्धिमान् होकर यहांकी दशा देखे जाते हो अधिक हम क्या कहें पर मेरी ओरसे इतना मोहनप्यारे अन्तर्यामीसे कहदेना कि एकबेर अपना दर्शन देकर व्रजवासियोंका दुःख हरैं॥

दो० मातु यशोदा नन्दजू तनिक धरत नहिं धीर। कहत सँदेशो श्यामको भरत नयनमें नीर॥
नन्द दोहनी भरिदई कहेउ नयन भरि नीर। या धवरीको दूध यह जो भावत बलवीर॥

जब यह संदेशा कहकर नन्द व यशोदा रोने लगे व उद्धव उन्हें धैर्य

देने उपरान्त रोहिणी को साथ लेकर वहां से चले तब सब ग्वालबाल गोपियों ने राम व कृष्णके वास्ते अनेक वस्तु देकर ज्ञानकी राह कहा उद्धव तुम हमारी ओरसे दोनों भाइयों को हाथ जोड़कर इतना संदेश कहदेना कि आठोंपहर प्राण हमारा तुम्हारे चरणों में लगा रहता है लिये दयालु होकर ऐसा वरदान दीजिये कि जन्म जन्मान्तर हमारे हृ से तुम्हारा ध्यान न छूटै यह सुनकर उद्धव बोले हे व्रजवासियो तुम्हें सच्ची प्रीति व भक्ति परमेश्वर की है कि संसारी मनुष्य तुम्हारा नाम व दर्शन करने से भवसागरपार उतरजावें व तुम्हारी मुक्ति होने में संदेह नहीं सो तुमलोग जीवन्मुक्त हो जब इसीतरह उद्धवजी सब छो बड़ों को समझाय बुझाय आशा भरोसा देकर मथुरामें पहुँचे व मोह प्यारेको दण्डवत् करके मुरली आदिक सब वस्तु उनके सामने रख तब श्याम व बलराम उनको देखतेही उठ खड़े हुये व बड़े प्रेमसे गले मिलकर कहा हे उद्धव तुमने वृन्दावनमें बहुत दिन लगाये कहो व्रजवासी आनन्द रहकर कभी हमारी याद करते हैं या नहीं॥

चौ० नन्दबबा अरु यशुमति माय। कहौ कौनविधि देख्यो जाय॥
बसत प्राण मेरे में जिनके। कैसे दिन बीतत हैं तिनके॥
कहो दशा व्रज गोपिन केरी। जिनको प्रीति निरन्तर मेरी॥
उद्धव समुझत व्रजकी बाता। भये प्रेमवश पुलकित गाता॥

यह सुनतेही उद्धवने श्यामसुन्दरसे हाथ जोड़कर विनय किया हे कुण्ठनाथ वृन्दावनकी महिमा व व्रजवासियोंका प्रेम मुझसे कुछ नहीं जाता आपने बड़ी दया करके मुझे वृन्दावनमें भेजा सो उन दर्शन पाकर कृतार्थ होआया सब गोपी व ग्वाल आठोंपहर तुम्हारे चर का ध्यान अपने हृदयमें रखकर केवल अवधिकी आशा पर जीते दीनानाथ जब मैं सन्ध्यासमय वृन्दावनमें पहुँचा तब ग्वालबाल दू मेरा रथ देखते ही तुम्हें समझकर दौड़े हुये मेरे पास आये जब मुझे पर बैठे देखा तब आंखों में आंसू भरकर चुप होरहे व यशोदा तुम्हारे रहमें आठोंपहर यही पछिताती हैं कि मैंने श्यामसुन्दर त्रिलोकी

को नहीं पहिचानकर ऊखलसे बांध दिया था सो अब मनहरणप्यारे विना सारा व्रज सूना होगया ॥

चौ० दशरथ प्राण तजे सुतलागी। मैं देखतही रही अभागी ॥

दो० यद्यपि मैं बांध्यो बहुत तुमबिन कछु न सोहात। उनकी दशा विलोकिम्वहिं युगसमबीती रात॥

जब प्रातसमय यमुना किनारे स्नान करने गया तब राधा आदिक गोपियोंने मुझे आपका सेवक समझतेही बड़े आदरसे बैठाल कर तुम्हारी कुशल पूंछी और मैंने तुम्हारी चिट्ठी सुनाकर उनको ज्ञान वा योग अच्छीतरह समुझाया पर उन्होंने मेरा कहना सच न मानकर सब दोष कुब्जाको लगाया और सब व्रजबाला तुम्हारे प्रेममें डूबकर इसतरह बौरहोंके समान रोने लगीं कि सब ज्ञान व योग मेरा उनके सामने भूलकर प्रेमभक्ति मैंने उनसे पाई ॥

दो० गही एकही बात उन मेटि वेदविधि नीति। गोपवेष मजि सांवरे रहैं विश्वभर जीति ॥

सो० नहिं सीखे कछु ज्ञान जो विधि जाहिं सिखावने। तुमहूं बड़े सुजान वहां जाव तो जानिहौ ॥

जिसतरह हरिण अपने गोलसे अलग होकर चौकड़ी भूल जाता है उसीतरह उनका प्रेम देखकर मेरे ज्ञानका अभिमान टूटगया मैंने छः महीने रहकर वहांका हाल देखा तो सब वृन्दावनवासियोंको तुम्हारे ध्यान व चर्चामें लीन पाया वहां जानेसे मैं भी उनके समान होकर यहांका आवना भूलगया हे वासुदेव महाराज आपने किसवास्ते ऐसी कठोरताई उनसे की है तुम्हारी मायाको सिवाय आपके दूसरा कोई जानने नहीं सक्ता ॥

दो० निगम कहत वश भक्तके पूरण सबसुखसाज। करि सुदृष्टि व्रज देखिये बांह गहेकी लाज ॥

सो० बहुत दुखित तनुक्षीन व्रजवासी तुम विरहवश। तुमतनमन हरिलीन रटत चातकी लौं सबै॥

हे महाप्रभु राधिकाकी दशा आपसे क्या कहूं वह सब शृंगार छोड़कर मैली धोती पहिने हुये दिन रात तुम्हारे विरहमें रोया करती है व महादुबली होकर पहिचानी नहीं जाती व बौरहों के समान कभी श्रीकृष्ण पुकारकर कभी नखसे पृथ्वी खोदतीहै उसके घरवाले अनेकतरह समझाते हैं पर किसीका कहना उसको प्रवेश नहीं करता उसका प्राण निकलने में सन्देह नहीं पर तुम जो कहिआये हो कि हम फिर आवैंगे उसी आशा पर वह आजतक जीती है ॥

चौ० अचरज मोहिं बड़ो यह आवे। प्रभु तुमको कैसे यह भावे॥
करुणामय प्रभु अन्तर्यामी। भक्तन हित धारेउ तनु स्वामी॥
वेगि कृपा करि दर्शन दीजै। व्रज जन मरत जिला सबलीजै॥

दो० यह मुरली दै बिलखिकैं कहेउ यशोमति माय। एकबार हित नन्दके दर्श दिखावो आय॥
सो० जिन गौवनको श्याम आप चराई प्रीति करि। बहुरि न आई धाम बिड़री कुंजनमें फिरत॥

हे दीनदयालु मैं अधिक कहांतक कहूं आप अन्तर्यामी सबके मनका हाल जानते हैं जब यह बात सुनकर श्यामसुन्दरको व्रजवासियोंकी प्रीति याद आई तब आंखों में आंसू भरकर रोने लगे॥

दो० व्रजवासिन के प्रेममें माखनप्रभु बलवीर। भरत उश्वास उदास चित भरे नयन में नीर॥

केशवमूर्तिने मुरलीको उठाकर छातीसे लगालिया व आंखें बन्द करके बीच ध्यान व्रजवासियोंके डूब गये फिर व्रजका नाम लेकर ठण्ढी श्वासें लेते व पीताम्बरसे आंसू पोंछते हुये बोले हे उद्धव तुम अच्छीतरह सबको ज्ञान सिखा आये॥

चौ० मनमें यों प्रभु कियो विचारा। व्रजभक्तन मम रूप अधारा॥
मेरे मुक्ति बड़ी निधि जोई। सो व्रजवासी लेत न कोई॥
ताते जो जिनके मन भावै। सोई मोहिं करत बनि आवै॥
भक्ताधीन जो परम हमारे। व्रजवासी हमको अतिप्यारे॥
सदा बसत याते व्रजमाहीं। इन सम मोहिं और हित नाहीं॥

दो० मनकरि हरि व्रजमें रहैं मिलि व्रजवासिन साथ। तनु धरि देवनकाजहित भये द्वारकानाथ॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् उससमय ब्रह्माने नारद से कहा देखो जिस परब्रह्म परमेश्वरके दर्शन शिवजी के ध्यान में जल्दी नहीं मिलते वही त्रिलोकीनाथ व्रजनारियों के वास्ते रोते हैं वेदकी ऋचाओंने आनकर गोपियों का जन्म लिया था॥

दो० परसै उनकी चरणरज वृन्दावन के माहिं। सोऊ गति उनकी लहै यामें संशय नाहिं॥

हे राजन् उनका बड़ा भाग्य समझना चाहिये जो लोग वृन्दावनकी रज अपने माथेपर चढ़ावते हैं जब व्रजका हाल सुनकर श्यामसुन्दर व बलदेव उदास होगये तब उद्धव श्यामसुन्दरसे विदा होकर वसुदेव देवकीके पास पहुँचे व नन्द व यशोदा का संदेशा उनसे कहकर अपने घर गये व रुक्मिणीजी श्याम व बलरामसे भेंट करके राजमन्दिरमें गईं व रामकृष्ण

उस दूध व मक्खन आदिकको जो नन्द व यशोदाने भेजा था बड़ी प्रीति से खाया व उद्धवजीको भी उसमें से भेजवा दिया ॥

अड़तालीसवां अध्याय ।

कुब्जा और अक्रूरके घरपर श्यामसुन्दर का जाना ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जिस दिनसे मुरलीमनोहरने कुब्जा के घर जानेका करार किया था उसी दिनसे वह नित्य फूलोंकी शय्या बिछाकर मोहनप्यारेकी आशा देखा करती थी सो एक दिन श्रीकृष्णजी भक्तवत्सल अन्तर्यामीने उसका प्रेम देखकर विचारा कि हमने कुब्जासे कहाथा कि कंसको मारकर तेरे घर आवैंगे सो अभीतक वह वचन पूरा नहीं हुआ इसलिये वहां जाना चाहिये ऐसा विचारतेही उद्धवको साथ लेकर कुब्जाके घर गये ॥

चौ० जब कुब्जा जान्यो हरि आये । पीताम्बर पांवड़े बिछाये ॥
अति आनन्द गई उठि आगे । पूरबजन्म पुण्य सब जागे ॥

जब श्रीकृष्णजी सूर्यसे अधिक तेजवान् रूप बनाये हुये बीच मन्दिर कुब्जाके पहुँचे तब उनके प्रकाशसे वह रत्नजटित स्थान जगमगाने लगा व कुब्जाने बड़ी भक्ति व प्रीतिसे उनको जड़ाऊ चौकीपर बैठाला व उद्धव को बैठने वास्ते आसन दिया और कुब्जा कमलरूपी चरण मोहनप्यारे के गोदमें लेकर बड़े प्रेमसे दाबने लगी ॥

दो० आसपास सज साजिके महाराज के काज । आनँदसों मनमें कहै धन्य भाग्य है आज ॥

फिर कुब्जाने चरण केशवमूर्तिके अपने हाथ धोकर चरणामृत लिया व बहुत उत्तम भूषण व वस्त्र जो बनवा रक्खे थे उन्हें पहिनाकर इतर व चंदन उनके अंगमें मल दिया व छत्तीस व्यंजन उनको खिलाकर पान व इलायची सामने रक्खा फिर श्यामसुन्दरको शीशमहलमें रत्नजटित पुष्पों की शय्यापर लेजाकर बैठाला ॥

दो० फिर कुब्जा अस्नानकरि पहिरचो चीर सुरंग । रत्नजटित भूषण सजे नखशिखलौं सब अंग ॥

जब वह सोलहों शृंगार करके बड़े प्रेमसे श्यामसुन्दरके निकट आई तब श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द सबका मनोरथ पूर्ण करनेवाले कुब्जाको

हाथ प्रीतिपूर्वक धरकर अपनी शय्यापर लेटालिया व उसकी इच्छा
करके लोक व परलोक दोनों जगहका सुख उसे दिया ॥

दो० टेढ़ीसे सीधी करी दियो रूप अभिराम । दासीसे रानी भई पूजी सब मन

हे राजन् देखो जिस पदवीको योगी ऋषीश्वर बड़े तप व जप
सेभी जल्दी नहीं पहुँचने सक्ते वह फल कुब्जाने एक दिनके चन्दन
वने से सहजमें पाया जो लोग नित्य विधिपूर्वक नारायणजी का
करते हैं उनको न मालूम कैसी पदवी मिलेगी अपना मनोरथ प्राप्त
उपरांत कुब्जाने श्यामसुन्दर से हाथ जोड़कर विनय किया हे त्रिलो
नाथ तुम्हारी मोहनीमूर्ति देखनेकी मुझे आठोंपहर अभिलाषा वनी
है इसवास्ते मैं चाहतीहूं कि कुछ दिन यहां रहकर मुझे सुख दीजिये के
मूर्ति बोले तू धैर्य रख जब मुझे याद करैगी तब मैं तेरे घर आया करूं

चौ० फिर उठि उद्धवके ढिग आये । भये लाजवश नयन नवाये ॥

जब मोहनप्यारे उद्धव समेत अपने स्थानपर गये तब मथुरावासि
ने यह हाल सुनकर कुब्जाके भाग्यकी बड़ाई की ॥

चौ० धनि धनि कुब्जा हरिकी रानी । धनि धनि कृष्ण प्रीति करि मानी ॥
सदा रहै हरिकी यह रीती । मानत एक भक्त से प्रीती ॥
धनि धनि चन्दन अंग लगायो । धनि धनि भवन जहां हरि आये ॥

फिर एक दिन केशवमूर्तिने उद्धवसे कहा तुम स्त्रीकी भक्ति देख
अब चलो एक पुरुषका प्रेम दिखलावैं ऐसा कहकर मोहनप्यारे बलराम
से बोले हे भाई हमने अक्रूरके घर जाने वास्ते करार किया था सो अ
तक नहीं गये अब वहां चलकर अक्रूरको हस्तिनापुर भेजके युधि
आदि अपने भाइयोंकी सुधि मँगवाना चाहिये ऐसा कहकर बल
उद्धवसमेत अक्रूरके स्थानपर गये उन्हें देखतेही अक्रूर आगेसे आ
शिर अपना हरिचरणोंपर रख दिया व मुरलीमनोहरने शिर उसका उ
कर अपनी छाती में लगा लिया फिर अक्रूर अपनी भाग्य उदय स
कर बड़े प्रेम व भक्तिसे श्याम व बलराम व उद्धवको घरके भीतर लिवा
गये और दोनों भाइयोंको जड़ाऊ चौकीपर बैठाकर चरण उनके धो
अपनी स्त्री समेत चरणामृत लेकर विधिपूर्वक पूजा उनकी की व सुग

उड़नेवास्ते अगर आदिक को अपने घर में जला दिया व छत्तीस व्यञ्जन सोनहुली थालियोंमें लाकर उनके सामने रक्खा जब श्यामसुन्दरने भक्ति व प्रीति उसकी सच्ची देखकर बलरामजी व उद्धव समेत आनन्दपूर्वक भोजन किया तब अक्रूर पान व इलायची उनके सामने रखकर दोनों भाइयों के चमर हिलाने लगा उससमय मोहनीमूर्तिको टकटकी बांधकर देखने से अक्रूरको ऐसा प्रेम उत्पन्न हुआ कि वह चरण वृन्दावनविहारीका पकड़कर अपनी आंखोंमें मलने लगा जिसतरह परम दरिद्री बहुत धन पाकर प्रसन्न होता है उसीतरह अक्रूरको मोहनप्यारेके आने से परमहर्ष प्राप्त होकर प्रेमके आंसू बहने लगे॥

दो० तब अक्रूर कर जोरिकै अस्तुति कही सुनाय। तुम तो पुरुष प्रधानहौ माखनप्रभु यदुराय॥

फिर अक्रूरने हाथ जोड़कर विनय किया हे दीनानाथ तुम उत्पन्न होने व मरने से रहित होकर तुम्हारे आदि व अन्त व भेद व लीला को कोई जानने नहीं सक्ता सो मेरी दण्डवत् आपको पहुँचे तुम रजोगुण से संसार की उत्पत्ति व सतोगुण से पालन व तमोगुण से नाश करके कुछ इच्छा नहीं रखते व तीनोंलोकका व्यवहार अपनी माया से प्रकट करके आप उससे विलग रहतेहैं व संसारी मायामोहमें फँसनेवाला मनुष्य भवसागर पार नहीं उतरता व विना कृपा तुम्हारी मुक्ति मिलना बहुत कठिनहै नारद मुनि व सनकादिक ऋषीश्वर व ध्रुव व प्रह्लाद व अम्बरीष आदि हरिभक्त केवल तुम्हारी दया से इतनी बड़ी पदवीको पहुँचे हैं व गरुड़ सब पक्षियों के राजा तुम्हारा वाहन होकर आप सदा शेषनागके मस्तक पर विराजते हैं व गंगाजी तुम्हारे चरणका धोवन होकर तीनों लोकको तारती हैं व पांचो तत्त्व तुमसे उत्पन्न होकर चारों वेद तुम्हारी श्वास हैं सो विना दया आपकी तुमको कोई पहिंचानने नहीं सक्ता तुमने केवल पृथ्वी का भार उतारनेवास्ते अपनी इच्छा से सगुण अवतार लेकर अनेक दैत्य व राक्षसों को मारा है व अब भी बहुतसे दैत्य व अधर्मी राजोंको सेना समेत मारोगे सो मेरी दण्डवत् लीजिये में तुम्हारे पूजन व स्तुति करने की सामर्थ्य नहीं रखता पर अपने भाग्य पर न्यवछावर होता हूं जो आपने दया की राह

आनकर मुझे दर्शन दिया व इस झोपड़ीको अपने चरणोंसे पवित्र कि
जो कोई विरक्त होकर तुम्हारा ध्यान व स्मरण साथ प्रीति के करत
उस पर तुम दयालु होकर अर्थ धर्म काम मोक्ष उसे देते हो ॥

दो० माखनप्रभु गोपालसों जो राखत है हेत। अपने चारों हाथ सों चार पदारथ दे

जैसे कुब्जा के रूपको देखकर उसकी इच्छा पूर्ण की वैसे मुझपर
दयालु होकर ऐसा ज्ञान देव जिसमें आठोंपहर तुम्हारे चरणोंका ध
रखकर आवागमनसे छूट जाऊं जब यह स्तुति सुनकर केशवमूर्तिने अ
से वरदान मांगनेवास्ते कहा तब वह हाथ जोड़कर बोला महाराज मैं
चाहता हूं कि स्त्री व पुत्रोंकी प्रीति मेरे मनसे छूटकर तुम्हारे चरणोंमें भ
उत्पन्न हो श्यामसुन्दरने उसे इच्छापूर्वक वरदान देकर कहा साध
महात्मा की संगत करने से तुम्हारा चित्त शुद्ध होजायगा फिर मोहन
अपनी माया से अक्रूरका ब्रह्मज्ञान हरकर बोले हे चचा तुम यदुकु
श्रेष्ठ व हमारे पिताके तुल्य होकर इतनी विनय हमारी क्यों करतेहो तुम्
टहल व स्तुति करना हमको उचित है और मैं आपके दर्शन वास्ते आ
जब यह मायारूपी वचन सुनकर अक्रूरका ज्ञान भूलगया तब उसने श
व बलरामको वसुदेवजीका पुत्र जानकर बड़े प्रेम से गोद में उठा लि
बड़े हर्षसे उन्हें प्यार करनेलगा तब मोहनीमूर्ति बोले हे चचा तुम्हारे
व प्रतापसे दैत्यलोग मारे गये पर एक बात का शोच मुझे बना है
आप दया की राह छुड़ा दीजिये मैं सुनता हूं जब से राजा पाण्डु
फूफा वैकुण्ठको सिधारे तबसे राजा दुर्योधन युधिष्ठिर आदिक मेरे भा
व कुन्ती मेरी फूफूको बहुत दुःख देता है सो आप हस्तिनापुर जाइये
उनको धैर्य देकर वहां की कुशल लेआइये हमारा मन उनके वास्ते
उदास रहता है जब अक्रूर उनकी आज्ञानुसार हस्तिनापुरको गया
श्याम व बलराम उद्धव समेत अपने घर आये ॥

उंचासवां अध्याय।

अक्रूरका हस्तिनापुरमें पहुँचना व पाण्डवोंका समाचार ले आना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जब श्यामसुन्दरने बहुतसी वस्तु

व युधिष्ठिर आदिकके वास्ते देकर अक्रूरको विदा किया तव वह रथपर बैठ-कर कई दिनमें हस्तिनापुर पहुँचे व नगरके वाहर तालाव व वावली व वाग व देवस्थान वनाया हुआ राजा पाण्डु व उनके पुरुषोंका देखकर वहुत प्रसन्न हुये जब वह रथसे उतरकर राजा दुर्योधन व विदुर बैठेथे वहां गये तव सव किसी ने अक्रूर को यादवकुलमें श्रेष्ठ समझकर सन्मानपूर्वक बैठाला उससमय दुर्योधन अभिमानी ने व्यंग्यकी राह अक्रूरसे पूंछा ॥

चौ० नीके शूरसेन वसुदेव । नीके हैं मोहन बलदेव ॥
उग्रसेन राजा के हेत । और न काहू की सुधि लेत ॥
बेटा मारि करत हैं राज । तिन्हैं न काहू से है काज ॥

यह सुनकर अक्रूर चुप होरहा व उसने मनमें विचारा कि इन अध-र्मियोंकी सभा में मुझसे दुर्योधनका कठोर वचन नहीं सहा जायगा इस लिये यहां बैठना न चाहिये ऐसा विचारकर अक्रूर वहांसे उठ खड़ा हुआ व विदुरजी को साथ लेकर युधिष्ठिरके घर चला गया तो क्या देखा कि कुन्ती राजा पाण्डु अपने पतिके शोचमें उदास बैठी है अक्रूर ने कुन्ती के चरणों पर शिर रखकर सौगात भेजी हुई श्यामसुन्दरकी सागने धरदी व युधिष्ठिर आदिक पांचो भाइयोंको गोदमें उठाकर वहुत प्यार किया व जव कुन्तीने आदरपूर्वक अक्रूरको अपने पास बैठाला तव अक्रूरने कुन्ती से कहा अय माता विधातासे कुछ किसीका वश नहीं चलता व सदा कोई अमर नहीं रहता संसारमें जन्म लेकर दुःख व सुख दोनों भोगने पड़ते हैं इसालिये शोच करने से कुछ लाभ न होकर केवल शरीर दुःख पावता है यह सुनकर कुन्तीने अपने मनको धैर्य दिया व वसुदेव आदिककी कुशल पूंछकर वोली हे अक्रूर कभी श्याम व वलराम मुझे व युधिष्ठिर आदिक अपने पांचो भाइयोंको याद करतेहैं या नहीं मेरे बेटोंकी रक्षा जो यहां दुःख-सागर में पड़े हैं कव आनकर करेंगे ॥

दो० मम पुत्रनको तेज बल वर्णत सब संसार । दुर्योधन सुनिकै कुढै दुर्मति अधम गँवार ॥

इसलिये अव मुझसे अन्धे धृतराष्ट्रका दुःख देना जो दुर्योधन अपने पुत्रके सम्मत से काम करताहै सहा नहीं जाता व दुर्योधन दिन रात मेरे

बेटोंके प्राण लेनेके उपाय में रहताहै एक बेर उसने भीमसेनको विष लड्डू खानेवास्ते भेजा फिर उन्हें लाह के कोटमें रखकर आग लगवा पर नारायणजीकी दयासे दोनों बेर उनका प्राण बचा जब कौरव इसतरह मेरे बेटोंसे शत्रुता रखते हैं तो वह उनके हाथ से किसतरह बचेंगे यही शोच आठोंपहर मुझे लगा रहताहै जिसतरह बकरी भेड़ि गोलमें अपने प्राणको डरा करती है व हरिणी अपने झुण्डसे विलग सुख नहीं पाती व सांप घर में रहने से भय बना रहताहै वही दशा रहकर यहांसे भागनेभी नहीं सक्ती श्रीकृष्णजी त्रिलोकीनाथने सब का दुःख दूर करनेवास्ते सगुण अवतार लियाहै फिर मेरे पुत्रोंका जो विना बापके हैं क्यों नहीं हरते हैं आजतक अपनेको विना वारि समझती थी पर अब श्यामसुन्दरके सुधि लेनेसे मुझे मालूम हुआ मेराभी कोई सहायकहै जिस तरह मोहनप्यारेने कंसादिक अधर्मियोंको कर अपने माता व पिताको सुख दिया उसीतरह मेरी रक्षाभी वही हे अक्रूर अपना दुःख कहना किसीसे अच्छा नहीं होता मैं तुमको जानकर सब हाल कहतीहूं जिसतरह ग्रहण लगती समय राहु व केतु व सूर्य को ग्रसिलेते हैं उसीतरह मेरे पुत्र दुर्योधन आदिक अधर्मियों घेरेमें पड़े हैं हे अक्रूर तुम मेरी ओर से कृष्णचन्द्र आनन्दकन्द को देकर कहदेना यह बड़े शोचकी बातहै जो मैं तुमसा भतीजा रखकर दुःख से छुट्टी न पाऊं मुझे महादुःखी व दीन जानकर मेरा कष्ट

दो॰ मेरी औ मम सुतनकी तुमहीं को है लाज। और शरण सूझै नहीं माखन प्रभु

हे राजन् अक्रूर हरिभजनके प्रतापसे होनहारके जाननेवाले यह सुनतेही आँखोंमें आंसू भरकर बोले अय माता तुम किसी बातका मत करो तुम्हारे पांचो पुत्र श्रीकृष्णजीकी दयासे अपने शत्रुओंको कर बड़े प्रतापी राजा होंगे व श्याम व बलरामने यह संदेशा तुम्हें कि फूफू किसी बातकी चिन्ता न करें मैं जल्दी उनके पास आता हूं

दो॰ कुन्ती सों याविधि कह्यो शोचो मति मनमाहिं। माखन प्रभु आओर हैं ताको भय

जब अक्रूर इसीतरह कुन्ती व युधिष्ठिरआदिक को धैर्य देकर

बिदा हुये व विदुरको साथ लियेहुये हस्तिनापुरवासियोंसे चलनव व्यवहार युधिष्ठिर आदिक पांचो भाइयोंका पूंछनेलगे तो सबका मत यह पाया जिसमें राजगद्दी युधिष्ठिरको हो फिर अक्रूरने विदुरसमेत धृतराष्ट्रके पास जाकर कहा महाराज तुमने कौरवकुलमें श्रेष्ठ होकर अपनी बड़ाई क्यों खो दी व राजा पाण्डु अपने भाईकी गद्दी लेकर युधिष्ठिर आदिक अपने भतीजोंको जो विना बापकेहैं किसवास्ते दुःख देते हो और तुम ज्ञानवान् होकर दुर्योधन आदिक अपने अधर्मी बेटोंके सम्मत से क्यों ऐसा पाप करते हो मनुष्य अकेला उत्पन्न होकर मरतीसमय कोई उसके साथ नहीं जाता जिनके वास्ते यह सब पाप बटोरते हो वह परलोकमें तुम्हारे काम न आवेंगे और इस अधर्म करने के बदले तुम्हें नरक भोगना पड़ैगा॥

चौ० लोचन गये न सूझै हिये। कुल बहिजाय पापके किये॥

हे धृतराष्ट्र तुमने नहीं सुना जो राजा अपने प्रजा व परिवारको समान न देखकर सबका पालन बराबर नहीं करता वह अवश्य नरक भोगताहै व संसारी व्यवहार स्वप्नेके समान झूठा होकर मरने उपरान्त केवल भलाई व बुराई रहजाती है जो लोग संसारी व्यवहार झूठा समझकर किसी जीवको दुःख नहीं देते वही लोग जगत् में यश पाकर अन्तसमय मुक्त होते हैं इस लिये तुम्हें अपने बेटे व भतीजोंमें कुछ भेद न समझकर युधिष्ठिर आदिकको दुःख देना न चाहिये तुम्हारे बेटे तुमको स्वर्गमें न लेजाकर भतीजे नरकमें न पहुँचावेंगे नरक व स्वर्ग अपनी करणीसे मिलताहै मैं तुम्हारे कल्याण वास्ते धर्मकी बात कहेदेताहूं इसीके अनुसार करनेमें तुम्हारा यश होगा कदाचित् ऐसा नहीं करोगे तो पीछेसे तुम्हें पछताना पड़ैगा॥

दो० याते तजो अधर्म सब चलो धर्मकी रीति। जिनकी नीति अनीतिहै तिनकी होय न जीति॥

यह सुनतेही धृतराष्ट्र अक्रूरका हाथ पकड़कर बोले हे भाई तुम यह अमृतरूपी व मंगलकारी बात हमारे लिये बहुत अच्छी कहते हो और मैं भी समझता हूं कि श्रीकृष्णजीने पृथ्वीका भार उतारनेवास्ते जन्म लेकर सब भला व बुरा करनेकी सामर्थ्य अपने वश रक्खी है जो वह चाहेंगे सो होगा उनकी इच्छा प्रबल है पर मैं क्या करूं तुम्हारा उपदेश

हृदयमें नहीं ठहरता बिजुलीकी तरह चमककर निकलजाताहै व दुर्यो आदिक मेरे बेटे हमारा कहना न मानकर अपनी बुद्धिके प्रमाण क करते हैं इसलिये मैं उनकी बातों में कुछ नहीं बोलता अकेला बैठा हु परमेश्वरका भजन करता हूं तुम मेरी दण्डवत् श्रीकृष्णजीको कह दे यह सुनकर अक्रूरने कहा हे धृतराष्ट्र परमेश्वरकी माया बड़ी बलवा जो मेरा उपदेश तुम्हें नहीं लगता न मालूम वैकुण्ठनाथकी क्या इ है ऐसा कहकर अक्रूर धृतराष्ट्रको दण्डवत् करके उठ खड़ा हुआ व कु के घर पर चलागया और उसे धैर्य देकर रथपर चढ़बैठा ॥

दो० विदुरभक्तसे बिदाह्वै कुन्तीसों करजोर। पाण्डुसुतनको देखिकै चले मधुपुरी ओर॥

अक्रूरने मथुरामें पहुँचतेही राजा उग्रसेन व वसुदेवजीके सामने श्या व बलरामसे हाथ जोड़कर विनय किया हे दीनानाथ मैंने हस्तिना जाकर देखा तो तुम्हारी फूफू व युधिष्ठिर आदिक पांचो भाइयोंको दु धनके हाथसे बहुत दुःखी पाया अधिक मैं क्या कहूं आप अन्तर्यामी हाल जानते हैं कौरवोंका अधर्म कुछ आपसे छिपा नहीं है जब कहकर अक्रूर अपने घर चलागया तब श्रीकृष्णचन्द्र वैकुण्ठनाथ संसा मनुष्योंकी तरह पहिले उदास हो गये फिर बलभद्रजीसे सम्मत क उस समय प्रण किया कि महाभारत कराके पृथ्वीका भार उतारूंगा इ कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् जो मैंने वृन्दावन व मथुरा लीला तुझको सुनाई यह पूर्वार्ध कथा कही है अब उत्तरार्ध श्रीद्वारकानाथकी कृपा से सुनाऊंगा ॥

पचासवां अध्याय।

श्यामसुन्दर व जरासन्ध से युद्ध होना ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जिसतरह श्यामसुन्दरने जरास सेना मारकर कालयवनका नाश किया व राजा मुचुकुन्दको भवस पार उतारकर द्वारका में जाबसे वह हाल कहता हूं सुनो राजा उ धर्मपूर्वक मथुराका राज्य करने लगे श्याम व बलराम भक्तहितकारी

की आज्ञा पालन करते थे व उस राज्य में कोई दुःखी नहीं था पर अस्ति व प्राप्ति नाम दोनों स्त्री राजा कंस की अपने पतिके शोच में वहुत उदास रहा करती थीं सो एकदिन दोनों वहिन आपसमें रोकर कहने लगीं अव यहां अनाथ पड़े रहने से अपने पिताके घर चलकर रहना उचित है यह विचार करतेही दोनों वहिन रथपर चढ़के जरासंधके घर चलीगईं व जिस तरह श्याम व वलरामने राजा कंसको दैत्योंसमेत मारकर उग्रसेनको राज्य दिया था वह सव हाल रो रोकर अपने पितासे कहा यह समाचार सुनतेही जरासन्ध अभिमानी बड़ा क्रोध करके अपने सभावालोंसे वोला ऐसा कौन वीर यदुकुलमें उत्पन्न हुआ है जिसने कंस ऐसे महावलीको दैत्योंसमेत मारडाला अव मैं यह प्रण करता हूं कदाचित् कंसके वदले मथुरापुरीको यदुवंशियों समेत जलाकर राम व कृष्णको जीता वांध न ले आऊं तो अपना नाम जरासन्ध न रक्खूं ऐसा कहकर जरासन्ध अभिमानी जो श्याम व वलरामकी महिमा नहीं जानता था वोला यदुवंशी लोग इस योग्य नहीं हैं जो मैं सेना साथ लेकर उनसे लड़ने जाऊं इसी जगहसे एक गदा फेंककर उन्हें मार डालूंगा ॥

दो० राम कृष्णको मारिकै वैर कंसका लेउँ। कोऊ यादववंशके कुलमें रहन न देउँ ॥

जरासन्धवरदान पावनेकेप्रतापसे जै वेर गदा शिरके चारोंओर घुमाकर जहां फेंकता था उतनेही योजनपर वह गदा जाकर शत्रुओंको मारती थी जव जरासन्ध ने उसी घमण्ड से हजार मनकी गदा सौवेर घुमाकर मथुरापुरी पर जो चार सौ कोस मगधदेशसे थी फेंकी तव श्यामसुन्दर अन्तर्यामीने अपनी गदा चलाकर उसकी गदा मथुरापुरीके निकट गिरा दी जव वह गदा विना काम किये मगधदेशमें फिर आई तव जरासन्धने अचम्भा मानकर मनमें कहा जिसने मेरी गदा को रोक दिया वह विना युद्ध किये नहीं मारा जायगा ऐसा विचारकर उसने सव राजों को जो उसकी आज्ञा में रहते थे वुला भेजा व तेईस अक्षौहिणी सेना साथ लेकर मथुरापुरी पर चढ़ आया जव दशहजार आठसौ हाथी व तीसहजार आठ सौ सत्तर रथ व छासठ हजार घोड़ेके सवार व एक लाख नौहजार साढ़े

तीनसौ पैदल सिपाही इस तरह सब दो लाख आठहजार तीस मनुष्य की सेना इकट्ठी हो तब एक अक्षौहिणी दल कहलाताहै ॥

सो जरासन्धने इसी हिसाबसे तेईस अक्षौहिणी दल व बड़े बड़े शूर वीरोंको साथ लिये हुये कई दिनमें वहां पहुँचकर मथुरापुरी को चारोंओर से घेरलिया तब दशो दिक्पाल व सब देवता मारे डरके कांप उठे व पृथ्वी कम्पायमान होगई इतनी भारी सेना देखतेही सब मथुरावासी अपने प्राणके डरसे घबरागये व श्यामसुन्दरसे विनय की कि हे दीनानाथ जरासन्धने आनकर नगरको चारों ओरसे घेर लिया अब हम लोग कहां भागकर जावैं जिसमें प्राण बचैं जब यह सुनकर मुरलीमनोहर आप मनमें कुछ विचार करने लगे तब बलरामजी बोले हे महाराज आपने पृथ्वीका भार उतारने व हरिभक्तोंको सुख देनेवास्ते अवतार लियाहै अग्निरूप धरकर दैत्यों की सब सेना जला दीजिये यह बात सुनकर वैकुण्ठनाथने कहा हे भाई इन लोगोंका मारना कुछ कठिन नहीं है परन्तु मुझे बहुतसे काम संसारमें करने हैं इसलिये जरासन्ध के वधका उपाय पीछे किया जायगा ऐसा कहकर श्यामसुन्दर बलरामजी समेत राजा उग्रसेनके पास चले गये और बोले महाराज मुझे आज्ञा दीजिये तो जरासन्धसे जाकर लड़ूं व आप यदुवंशियों को साथ लेकर नगरकी रक्षा कीजिये उग्रसेन ने कहा बहुत अच्छा श्याम व बलराम उनसे आज्ञा लेतेही नगरके बाहर आये उस समय उनकी इच्छानुसार दो रथ जड़ाऊ अति उत्तम सूर्य व चन्द्रमाके समान चमकते हुये आकाश से उतरकर श्याम व बलराम के सामने खड़े होगये मुरलीमनोहर के रथपर सुदर्शन चक्र व शार्ङ्ग धनुष व तरकस बाणों से भरा हुआ व नन्दक तलवार व कौमोदकी गदा रक्खी होकर ध्वजापर गरुड़की मूर्ति बनी थी शैब्य व सुग्रीव व मेघपुष्प व बलाहक नाम चार घोड़े अतिसुन्दर उस रथमें जोते होकर दारुक नाम सारथी उसपर था व बलभद्रजीके रथपर हल मूशल उनका रक्खा होकर ध्वजामें ताड़के वृक्षका चिह्न बना था उसी समय ही दोनों भाई अपने अपने रथपर चढ़ बैठे व थोड़ीसी सेना साथ ले

रणभूमि में आये जैसे श्यामसुन्दरने जरासन्धकी सेना में मारू बाजा बजते सुनकर पांचजन्य शंख अपना बजाया वैसे पृथ्वी व आकाश मारे डरके कांपउठा व जरासन्धके शूरवीरोंका हृदय धड़कने लगा जब जरासन्ध रथ अपना बढ़ाकर श्रीकृष्णजीके सामने ले आया तब श्याम व बलराम भी अपना रथ बड़े वेगसे उसके सामने लेगये तब जरासन्धने अभिमान की राह श्रीकृष्णजी से कहा अय बालक तू अपने मामाको मारकर मेरे सामने लड़ने आयाहै इसलिये तेरे ऊपर शस्त्र नहीं चलाऊंगा तू यहांसे भाग जा इसी में तेरा कल्याण है॥

चौ० महाअधम पापी जग माहीं। तेरो मुख देखत हम नाहीं॥
जिन अपने मामाको मारेउ। पापपुण्य कछु नहीं विचारेउ॥
तासों युद्ध कवन विधि कीजे। जासों नेम धर्म सब छीजै॥

दो० तोहिं बालकसों युध करत आवतहै मोहिं लाज। याते हम बलभद्रसों युद्ध करैंगे आज॥

जरासन्ध यह वचन मुरलीमनोहरसे कहकर बोला हे बलभद्र तुझे अपना प्राण प्यारा न हो तो मेरे साथ लड़ अभी तुझको मारूंगा तू नहीं जानता कि मैं जरासन्ध हूं तेरा मारना मेरे निकट क्या बड़ी बात है यह वचन सुनकर श्यामसुन्दर बोले हे जरासन्ध अज्ञान अपनी बड़ाई आप करना अच्छा नहीं होता शूरवीर अपनी स्तुति आप नहीं करते सबसे अधीन रहकर समयपर अपना पुरुषार्थ दिखलाते हैं जो अपनी बड़ाई आप करताहै उसे जगत्में कोई भला नहीं कहता इसलिये तेरी भुजामें जो कुछ सामर्थ्य हो सो दिखलाव तैंने अभीतक बलभद्रका पराक्रम नहीं देखा जिसकी मृत्यु निकट आवती है उसे भली बुरी बात कहनेका विचार नहीं रहता और तू मुझको मामाका मारनेवाला जो कहताहै सो जिसतरह वह अपने अधर्म करने के दण्डको पहुँचा उसीतरह तेरीभी गति होगी यह वचन सुनते ही जरासन्ध बड़े क्रोधसे अपनी सेनासमेत श्याम व बलराम पर दौड़ा व उन्हें बाण मारता हुआ पुकारकर बोला बहुत दिनतक तुम्हारा प्राण बचा अब मेरे आगे से जीते फिरकर जाने न पावोगे जहां राजा कंस व सब दैत्य गये हैं वहां सब यदुवंशियों समेत तुमको भी भेजूंगा यह बात

कहकर जरासन्ध व उसके सेनावालों ने ऐसे बाण व अनेक तरहके
बलरामपर चलाये जैसे सावन भादोंकी बूंदें बरसती हैं उस समय
कृष्णके रथ इसतरहसे छिपगये जिसतरह सूर्य बदली में दिखलाई
देते जब मथुरा नगरकी स्त्रियां जो अपनी अपनी अटारियों पर चढ़
उस युद्ध का कौतुक देखती थीं श्याम व बलराम का रथ नहीं देखा
शोचित होकर रोने लगीं ॥

दो० माखनप्रभु परतापते जीतत सब संसार। ता प्रभुसों जीतो चहै मूरख अधम गं

जब जरासन्ध आदिकने मोहनप्यारेकी सेनाको मारना चाहा तब
व कृष्ण अपना अपना रथ दौड़ाकर उसकी सेनापर ऐसे टूटे जिस
सिंह हाथियोंके गोलमें झपटता है जब श्याम व बलराम चाकके
रथ अपना घुमाकर युद्ध करनेलगे तब शूरवीरलोग मार मार कहकर
देते व कादरलोग मारे डरके पीछे भागकर गिर पड़ते थे उससमय
रहना सेनाका चारों ओरसे घटारूपी मालूम होकर कुण्डल दोनों भा
के बिजुलीके समान चमकते थे व देवता आकाश से यह कौतुक दे
मुरलीमनोहरकी विजय मनावते थे इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी
हे परीक्षित जब श्यामसुन्दर अन्तर्यामी ने मथुरावासियोंको अपने
चिन्ता करते देखा तब धनुष चढ़ाकर ऐसा एक बाण छोड़ा कि वह
मायासे छूटती समय लाखों तीर होकर जरासन्धकी सेनामें शूरवीर
के लगा व बलरामने महाक्रोधसे हल व मूशल अपना उठाकर मा
आरम्भ किया जब दोनों भाइयोंने जो अपनी भृकुटी फेरनेसे तीनों
का नाश करने सक्ते थे मनुष्य तन धरने के कारण अढ़ाई घड़ी में
सेना जरासन्धकी वाहनों समेत मारडाली व सिवाय जरासन्धके
कोई जीता नहीं बचा तब उस रणभूमिमें लोहू नदीरूपी बहकर हा
के शरीर व मस्तकसे रुधिर बहता हुआ कैसा मालूम देता था जैसे
पहाड़ों में झरना झरते हैं व रथियों के मारे जाने से खाली रथ उजड़े
घर मालूम होकर नौकाके समान उसी नदीमें बहते थे व शिर कटा हु
शूरवीरोंका कछुयेकी तरह बहकर हाथ काटे हुये सांप व मछलीके

दिखलाई देते थे व हाथियों का शरीर पुल ऐसा मालूम होता था व धनुष गिरी हुई लहरके समान दिखलाई देकर टूटेहुये पहिया भँवर ऐसे मालूम होते थे व रत्नजटित भूषण सेनापतियों के अंगके गिरेहुये ऐसे चमकते थे जैसे नदीकिनारे वालू चमकती है ॥

दो॰ मणिमुक्तनकी माल बहु टूटिपड़ीं तेहि खेत। वह सब याविधि देखिये ज्यों जलभीतर रेत॥

उससमय केशवमूर्ति को रणभूमि में महादेवजी सेना भूत व प्रेतकी अपने साथ लिये मुण्डों की माला पहिने हुये दिखलाई दिये और क्या देखा कि भूतिनियां व योगिनियां खप्पर भरकर लोहू पीती हैं व गिद्ध कौवे व गीदड़ लोथोंपर बैठे हुये मांस खाकर एक दूसरे से झगड़ते हैं उसीसमय कृष्णचन्द्र आनन्दकन्दकी महिमा से क्षणभरमें हवाने उन सब लोथोंको बटोरकर एकजगह ढेर लगादिया व अग्निने सबको जलाकर भस्म कर डाला व मेघने पानी बरसाकर सब राख व हड्डी आदिकको वहा दिया जिन पांचो तत्त्वों से पुतला तैयार होता है वह पांचो अपने अपने रूपमें मिलगये उस सेनाको आते सबने देखा फिर किसीने न जाना कि क्या होगई जब रणभूमिमें अकेला जरासन्ध खड़ा रहकर बलरामजीसे गदा-युद्ध करने लगा तब बलभद्रने उसके गले में हल डालकर पकड़ लिया व उसका वध करना विचारकर श्यामसुन्दर से पूंछा आज्ञा दीजिये तो इस अधर्मी को मारडालूं श्रीकृष्णजी ने कहा अभी इसके मारने का समय नहीं है भाई मैंने पृथ्वी का भार उतारने व दैत्य व अधर्मी राजों को मारने वास्ते अवतार लिया है सो तुम जरासन्धको जीता छोड़ देव यह कई वेर दैत्य व अधर्मी राजों को बटोरकर मुझसे लड़ने आवेगा तब हम उन सबको मारकर पृथ्वी का भार उतारेंगे जब यह बात सुनकर बलरामजी ने जरासन्ध को जीता छोड़ दिया तब वह अति शोचित व लज्जित होकर अपने देशमें पहुँचा उसने चाहा कि राजगद्दी छोड़ कर वनमें चला जाऊं इतने इष्ट व मित्रके मारेजाने का शोच कैसे छूटेगा तब दूसरे राजा लोग जो उसके मित्र थे जरासन्धका हाल सुनकर वहां आये व उसे धैर्य देकर समझाया कि लड़ाई में जीत व हार सदासे

होती है इसवास्ते शूरवीर व ज्ञानियोंका दोनों बातमें हर्ष व विषाद क
उचित न होकर धैर्य रखना चाहिये किसवास्ते कि फिर सेना बटो
शत्रु से युद्ध करना कुछ मना नहीं है परमेश्वरकी दयासे कृष्ण व बल
को यदुवंशियों समेत मारकर कंसके पास भेज देवेंगे यह वचन सुनं
जरासन्ध धैर्य धरकर सेना बटोरने लगा व श्याम व बलराम अपनी
समेत कि उसमें किसीके घाव भी नहीं लगाथा आनन्दपूर्वक राजम
पर आये उससमय देवतोंने दोनों भाइयोंपर फूल बरसाये ॥

दो० माखन प्रभु या भांतिसों जरासन्धको जीत। आये मथुरानगर में सब सन्तनके

जिससमय श्रीदुःखभंजन भक्तहितकारी नगर में पहुँचे उससमय
मथुरावासियोंने बड़े हर्षसे अपने अपने घर मंगलाचार मनाया व ब्राह्म
ने वेद पढ़ना आरम्भ किया व स्त्रियां कोरे वर्तन में दही सगुन वा
कर अपने अपने द्वारेपर खड़ी होगईं व अनेक स्त्रियां अपनी अपनी अ
रियों पर से उनपर फूल बरसाने लगीं इस तरह श्याम व बलराम स
आनन्द देते हुये राजा उग्रसेन के पास जाकर उनके चरणों पर गि
व सब धन लूटका उन्हें देकर विनय किया हे पृथ्वीनाथ हमने तुम्हारे
व प्रतापसे शत्रुओं को मारकर भगा दिया अब आनन्दपूर्वक राज्य क
प्रजाको सुख दीजिये यह वचन सुनकर उग्रसेनने सब धन लूटका अ
कोश में भेजवा दिया व बड़े हर्ष से राज्य करने लगे हे राजन् जब
तरह सत्रह बेर जरासन्ध तेईस तेईस अक्षौहिणी दल साथ लेकर मथु
लड़ने वास्ते आया व श्याम व बलरामने वही गति उसकी की तब ज
सन्धने अति लज्जित व शोचित होकर मन में कहा अब अपने दे
जाकर क्या मुख दिखलाऊं उत्तम है कि वनमें तप करके किसी देवत
वरदान लेकर राम व कृष्ण से फिर लडूं परमेश्वरकी दया से एक बेर
कृष्णचन्द्र मेरे सामनेसे युद्ध करती समय भाग जावें तो मैं उसको
विजय जानूं जब ऐसा विचारकर जरासन्ध वनकी ओर चला तब परमे
की इच्छानुसार नारदमुनिने राहमें उसे मिलकर पूंछा हे राजन् तुम
वास्ते उदास हो जरासन्ध दण्डवत् करके विनय किया महाराज मैं

वेर श्याम व वलरामसे युद्ध करती समय हार गया इसलिये मारे लज्जा के मुझसे किसीको अपना मुख नहीं दिखलाया जाता जिसमें एकवेर वह भी मेरे सामने से भाग जावैं तो मेरी इच्छा पूर्ण हो यह वचन सुनकर नारदजी बोले हे जरासन्ध कावुल में कालयमन नाम म्लेच्छ राजा वड़ा वलवान् रहकर अकेली अकेला युद्ध करनेकी इच्छा रखता है सो तुम लड़नेका उद्यम न छोड़कर उसे अपनी सहायता वास्ते बुलावो व उसको साथ लेकर तुम दोनों मनुष्य श्याम व वलरामसे लड़ौ तो तुम्हारा मनोरथ मिलैगा यह वचन सुनकर जरासन्धने विनय किया महाराज कावुल यहां से बड़ी दूर है इसलिये दूत संदेशा लेकर वहुत दिनों में पहुँचैगा व आप एक क्षणभर में पहुँच सक्ते हैं सो दयालु होकर मेरी सहायता वास्ते उसे बुला लेआइये तो बड़ा उपकार मानूंगा यह दीन वचन सुनकर नारद जी कालयमनके यहां गये व जरासन्ध अपनी राजगद्दीपर आनकर सेना बटोरने लगा जब नारदमुनि क्षणभरमें बीच सभा कालयमनके पहुँचे तब उसने दण्डवत् करके सम्मानपूर्वक नारदमुनिको अपने पास सिंहासनपर बैठाला व हाथ जोड़कर विनय किया हे मुनिनाथ जिसतरह आपने दयालु होकर दर्शन दिया उसीतरह कृपा करके अपने आवने का कारण कहिये नारदमुनि बोले हमको राजा जरासन्धने तुम्हारे पास भेजकर यह संदेशा कहा है कि मथुरा में श्रीकृष्ण व वलराम दोनों भाई वड़े वलवान् व प्रतापी उत्पन्न हुये हैं सो सत्रह वेर मैं उनसे युद्ध करती समय हार गया अव अठारहवीं वेर उनके साथ युद्ध करने वास्ते तुम्हारी सहायता चाहता हूं इस वात का जैसा उत्तर देव वैसा उससे जाकर कह देउँ व कृष्ण जिन का नाम है वे मेघवर्ण चन्द्रमुख कमलनयन अतिसुन्दर पीताम्वर पहिने व उपरना ओढ़े रहते हैं तुम विना मारे उनका पीछा मत छोड़ना यह वात सुनतेही कालयमन जो नाम व प्रताप जरासन्धका पहिले से जानता था बहुत प्रसन्न होकर मनमें कहने लगा देखो इतने वड़े प्रतापी राजाने हमसे सहायता मांगी है इसलिये उसका संग देना चाहिये ऐसा विचार कर कालयमन वोला हे नारदजी आप मेरी ओर से जाकर जरासन्ध से कह

देव कि मैं तुरन्त अपनी सेना समेत इधरसे मथुराको पहुँचताहूं वह ज
अपनी सेना लेकर उधरसे मथुरा में आवें ऐसा कहकर कालयमन अ
सेना साजने लगा व नारदजी वहां से जरासन्ध के पास आये औ
हाल उससे कहकर ब्रह्मलोकको चले गये व कालयमन तीन करोड़
म्लेच्छों की जो बहुत मोटे बड़े बड़े दांत व लाल आंखवाले भयानक
मैले मैले कपड़े पहिने हुये थे अपने साथ लेकर मथुरा को चला व
दिनों में वहां पहुँचकर अपनी सेना से मथुरापुरी को घेर लिया व
जरासन्ध भी तेईस अक्षौहिणी समेत मथुरा को चला जब मथुरा
कालयमन की सेना देखकर मारे डरके कांपने लगे तब श्यामसुन्द
द्वारकापुरी बसाना विचारकर बलरामजी से कहा अब क्या उपाय क
चाहिये कालयमनने अपनी सेना से नगर को घेर लिया व जरासन्ध
अपनी सेना समेत आज कल्ह में आया चाहता है एक से युद्ध कर
दूसरा राजा मथुरापुरी लूटकर प्रजाको बहुत दुःख देगा॥

दो० याते एक उपाय यह आयाहै मन माहिं। इन्हें अवर कहिं राखिकै युद्ध करन हम जा

बलरामजी ने कहा जैसा उचित हो वैसा कीजिये यह वचन सुनकर
वृन्दावनविहारी ने समुद्रको याद किया वैसे वह उनके निकट चला आ
तब मुरलीमनोहरने समुद्रसे कहा तुम बारहयोजन पृथ्वी अभी पा
खाली करदेव वहां हम एक पुरी बसावैंगे समुद्रने उनकी आज्ञा
उसीसमय बारहयोजन पृथ्वी पानी से खाली करदिया तब श्यामसुन्द
उसी क्षण विश्वकर्माको बुलाकर कहा तुम समुद्रके टापूपर इसी समय
नगर इसतरहका रचो जिसमें सब यदुवंशी आदिक मथुरावासी सुख
यह आज्ञा पावतेही विश्वकर्मा ने उसी समय समुद्रके टापू में जाकर
कोट सुनहला बारह योजनके घेरे में बनाया उसके भीतर अनेक
सुनहले बहुत उत्तम बनाकर उनमें रत्नादिक जड़ दिये व जड़ाऊ कि
लगाकर सब द्वारोंपर मोतियों की झालर लटका दिया व कोटके
जड़ाऊ बनाकर अतिउत्तम बाजार रचदिया व सोलह हजार एकसौ
महल बहुत उत्तम श्यामसुन्दरके रहनेवास्ते बनाकर उनमें ऐसा

रत्नादिक जड़दिया जिसकी चमक हजार सूर्यसे अधिक दिखलाई पड़ती थी व सब स्थानोंमें बाग अनेक रंगके फूल व फल लगेहुये बनाकर कुण्ड व बावलीको गुलाबजल से भरदिया व सब महलों में बड़े बड़े आंगन तैयार करके हाथी व घोड़े व गौ व बैल बांधने व रथ व गाड़ी आदिक रखनेके स्थान बिलग बिलग बना दिये व सब मंदिरों के द्वारपर नौबत भरने व द्वारपालकों के रहने वास्ते बिलग बिलग स्थान बनाकर कोटके चारों ओर उत्तम उत्तम वाटिका लगादीं व जितनी वस्तु गृहस्थी की होती हैं वह सब स्थानों में रखकर चारों वर्णों के रहने के वास्ते अलग अलग महल्ले बना दिये हे परीक्षित जब विश्वकर्माने वैकुण्ठनाथकी दया से यह सब मुहूर्त भर में तैयार करके द्वारकापुरी उसका नाम रक्खा तब वरुण देवता ने श्यामकर्ण घोड़े व कुबेर देवताने उत्तम उत्तम रथ व रत्नादिक व इन्द्रने सुधर्मासभा द्वारका में पहुँचादी इसीतरह अनेक देवता बहुत उत्तम उत्तम वस्तु जिनका नाम कहांतक वर्णन किया जावे वहां लेआकर रख गये जब विश्वकर्माने द्वारकापुरी जहां जाने से काम क्रोध मोह व लोभ नहीं व्यापतेथे रचिकर श्यामसुन्दर से खबर की तब कृष्णचन्द्र आनन्द-कन्दने उसीक्षण योगमायाको बुलाकर कहा तुम अभी मथुरावासियों को गौ व घोड़े व हाथी आदिक सब वस्तु समेत रातोंरात मथुरा से लेजाकर द्वारका में पहुँचा दो पर कोई मनुष्य वहांसे यहां पहुँचने तक यह भेद न जाने योगमायाने उनकी आज्ञानुसार उसी क्षण राजा उग्रसेन व वसुदेव आदिक सब मथुरावासियों को जो नींद में सोये थे वहांसे उठा लेजाकर द्वारकापुरी में पहुँचा दिया जब मथुरावासी समुद्रका शब्द सुनकर नींदसे चौंकउठे तब आपस में अचम्भा मानकर कहनेलगे देखो यहां समुद्र कहांसे आया जब उन्होंने अच्छी तरह विचार किया तो मालूम हुआ कि यह दूसरानगर वासुदेवकी इच्छासे समुद्रमें बसा है जब उन्होंने मथुरासे उत्तम स्थान में अपने को देखा और सब वस्तु गृहस्थी की वहां पाई तब स्त्री व पुरुष प्रसन्न होकर बड़ाई मोहनप्यारे की करने लगे ॥

इक्यावनवां अध्याय।

कालयमन व राजा मुचकुन्दकी कथा॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित जब श्यामसुन्दर मथुरावासियों द्वारका भेज चुके तब बलभद्रजीको मथुरामें छोड़कर आप प्रातः अकेले चतुर्भुजीरूप धारण किये मुकुट जड़ाऊ सूर्य से अधिक चम हुआ शिर पर बांधे कुण्डल व पीताम्बर पहिने कौस्तुभमणि व मोती का हार वैजयन्तीमाला गलेमें डाले व उपरना रेशमी ओढ़े अंग अं रत्नजटित भूषण साजे व शंख व चक्र व गदा व पद्म चारों हाथमें केशरका तिलक लगाये तापहारिणी चितवन मन्द मन्द मुसकराते कालयमन के सन्मुख गये॥

दो॰ जाय कृष्ण दर्शन दियो धरे चतुर्भुजरूप। अंग अंग बहुरंग छवि शोभित परम

जब कालयमनने नारदमुनि के कहने प्रमाण सब लक्षण उनमें तब श्यामसुन्दर को अतिबलवान् समझकर मनमें कहा राजा जरासन्धकी सेनाको इसी पुरुषने माराथा पर इससमय यह कुछ श लेकर पैदल मेरे सन्मुख लड़ने आया सो इसके साथ शस्त्र लिये चढ़े हुये युद्ध करना धर्म नहीं है ऐसा विचारकर कालयमन रथसे पड़ा व उसने पुकारकर अपनी सेनावालों से कहा कि कोई मनुष्य मोहनीमूर्तिपर शस्त्रमत चलावो तब ऐसा कहकर कालयमन आप श्यामसुन्दर के निकट आया जब मोहनप्यारेने एक तो म्लेच्छका छूना उचित नहीं जाना दूसरे उन्हें देवतोंका वरदान सत्य करने राजा मुचकुन्द को अपना दर्शन देकर भवसागर पार उतारनाथा इस वैकुण्ठनाथ उसके सामने से भागे व कालयमन उन्हें पकड़नेवास्ते दौड़कर अभिमानकी राह बोला॥

चौ॰ कालयमन यों कहै पुकारि। काहे भागे जात मुरारि॥
आय पर्‍यो अब मोसों काम। ठढ़े रहो करो संग्राम॥

मुझको राजा कंस व जरासन्ध मत समझना मैं यदुवंशियोंकावीर्य मैं नहीं रक्खूंगा क्षत्रिय व शूरवीरोंको युद्धमेंसे भागना मरणतुल्य होता

दो॰ रिपुसन्मुख ते भाजियो क्षत्रिय को है लाज। प्रकट पिता वसुदेवको दोष लगायो आज॥

हे श्याममूर्ति मैं तुमको बड़ा शूरवीर सुनकर तुम्हारे साथ लड़ने आयाहूं सो एक क्षण ठहर कर मेरे साथ युद्ध करो तुम्हारा प्राण न मारूंगा श्यामसुन्दर उसकी बातका कुछ उत्तर न देकर एक हाथका अन्तर देते हुये इसतरह भागे जाते थे जिसमें वह निराश न होवे व पकड़नेभी न पावे जब कालयमन बहुत दूरतक पीछे दौड़ा चलागया तब केशवमूर्ति बीच कन्दरा गन्धमादन पहाड़के जहां राजा मुचकुन्द सोया हुआ था घुस गये और वहां जाकर पीताम्बर अपना राजा मुचकुन्दको उढ़ा दिया व आप अन्तर्धान होकर उसी जगह एक कोने में खड़े होगये जब पीछेसे कालयमन दौड़ता व हांफता हुआ उसी कंदरा में पहुँचा तब उसने मुचकुन्द को पीताम्बर ओढ़े देख कर क्या जाना कि यह वही पुरुषहै जो भागा आवता था मेरे डरसे पीताम्बर ओढ़कर सो रहा है ऐसा विचारते ही कालयमन बड़े क्रोधसे एक लात राजा मुचकुंदको मारकर बोला यह कौन शूरता है जो रणभूमि में से भागकर यहां सो रहा उठ अभी तुझे मार डालूं जब ऐसा कहकर कालयमनने वह पीताम्बर मुचकुन्दके शरीर पर से खींच लिया तब वह लात लगने व पीताम्बर झटकने से जाग उठा॥

दो॰ ताकी दृष्टिप्रभावते अग्नि उठी तन बाहिं। देखतही जरके भयो यमन भस्म क्षणमाहिं॥

हे राजन् कालयमनने मरतीसमय वैकुण्ठनाथका दर्शन पाया था इसलिये वह सब पापोंसे छूटकर मुक्तिपदवी पर पहुँचा इतनी कथा सुनकर परीक्षितने पूछा हे मुनिनाथ मुचकुन्द कौन महातेजवान् होकर किसकारण कन्दरामें सोया था जिसकी दृष्टि पड़ने से कालयमन ऐसा प्रतापी राजा जलगया शुकदेवजी बोले हे परीक्षित मुचकुन्द राजा इक्ष्वाकु क्षत्रियके कुलमें युवनाश्वका पौत्र व मान्धाताका पुत्र बड़ा प्रतापी व चक्रवर्ती राजा होकर अपने धर्म व तपके बलसे सब राजोंको अधीन किये था उन्हीं दिनों दैत्योंने देवतोंको लड़ाई में जीतकर राजसिंहासन उनका छीन लिया तब इन्द्र वरुण आदिक देवता शूरताई व बड़ाई राजा मुचकुन्दकी सुनकर मर्त्यलोक में आये व बहुत दिन होकर राजा मुचकुन्दसे

विनय किया हमलोग दैत्यों के हाथ से बहुत दुःख पाकर तुम्हारे
आये सो सहायता करके दैत्यों से हमारा राज्य दिलवादीजिये यह
सदासे होती आई है कि जब देवता व ब्राह्मण व ऋषीश्वरोंको
पड़ता है तब क्षत्रीलोग उनकी रक्षा करते हैं यह दीन वचन सुन
राजा मुचकुन्द ने देवतों का सहायक होकर दैत्यों से युद्ध किया व
को जीतकर देवतोंका राज्य देदिया सो जब जब देवतों को दैत्य
दुःख देते थे तब तब राजा मुचकुन्द देवतोंकी सहायता करके दैत्
भगा देता था एक बार मुचकुन्दको दैत्योंसे लड़ते हुये कई युग बी
तब स्वामिकार्त्तिकेयजी देवतोंकी सहायता करने आये उससमय दे
राजा मुचकुन्दसे कहा अब हमलोगोंकी सहायता स्वामिकार्ति
करेंगे तुमने हमारे वास्ते बड़ा परिश्रम किया है इसलिये सिवाय
के जो वरदान मांगो सो तुमको देवैं ॥

दो० अर्थ धर्म अरु कामना ये सब हैं मम हाथ। एक पदारथ मुक्तिको देहैं श्रीव्रजनाथ।

यह सुनकर मुचकुन्दने कहा बहुत दिन हुये मैं अपने घर
बाल बच्चों से विलग पड़ा हूं आज्ञा देव तो जाकर उन्हें देखूं देवतोंने
दिया तुम्हारे वंशमें अब कोई नहीं रहा सब मरगये यह वचन सु
मुचकुन्द बोले यही हाल है तो बहुत दिनसे नींदभर सोया नहीं तुम
कोई ऐसी एकान्त जगह मुझे बतलादेव जहां जाकर सोऊँ व कोई
न जगावै देवतोंने प्रसन्न होकर कहा तुम गन्धमादन पहाड़की क
में जाकर शयन करो हमलोग ऐसा वरदान देते हैं जो कोई वहां
तुमको जगावै उसी समय तुम्हारी दृष्टि पड़ने से जलकर भस्म हो
व हमारे आशीर्वादसे तुम्हें परब्रह्म परमेश्वरका दर्शन प्राप्त होगा सो
मुचकुन्द त्रेता युगसे यह वरदान पाकर उस कन्दरा में सोया था श्या
सुन्दर अन्तर्यामी यह सब भेद जानते थे इसलिये उन्होंने देवतों
वरदान सत्य करने वास्ते कालयमन को वहां लेजाकर मुचकुन्दकी
से मरवा डाला उसके जलने उपरांत वृन्दावनविहारी भक्तहितका
चतुर्भुजीरूप से मेघवर्ण चन्द्रमुख कमलनयन शंख चक्र गदा पद्म

किरीट मुकुट साजे वनमाला विराजे पीताम्बर पहिने तीनोंलोक की सुन्दरताई धारण किये हुये राजा मुचकुन्दको दर्शन दिया जब उनके चन्द्रमुखके प्रकाशसे उस अँधियारी कन्दरामें उजियाला होगया तब राजा मुचकुन्दने उनको देखकर साष्टांग दण्डवत् किया ॥

दो० माखनप्रभुके दर्श ते भयो सरस आनन्द। जोरि हाथ व्रजनाथ से पूछत है मुचकुन्द ॥

हे दीनानाथ तुम्हारे बराबर तीनों लोकमें कोई सुन्दर न होगा जैसे आपने दयालु होकर दर्शन दिया वैसे कृपा करके अपना हाल वर्णन कीजिये मेरी समझमें आप सूर्य या चन्द्रमा या कोई लोकपाल या ब्रह्मा व विष्णु व महेश तीनों बड़े देवतोंमें मालूम होते हैं जो तुम्हारे आवने से यह कन्दरा प्रकाशित होगई और ये कोमल चरण आपके फूलों से भी अधिक नरम हैं इस पहाड़ व कांटोंमें किस तरह विराजे सो अपना नाम व गोत्र बतलाइये कदाचित् आप मुझसे पूछें कि तू कौन है सो मैं मुचकुन्द नाम राजा मान्धाताका बेटा हूं व दैत्यों से लड़ती समय परिश्रम करनेमें देवतोंने मुझे ऐसा वरदान दिया था कि तुम निश्चिन्त होकर सोवो तुम्हें जगानेवाला तुम्हारी दृष्टि पड़नेसे जलकर मरजावैगा इसी वास्ते यह मनुष्य जिसने मुझे जगाया था देखो जलकर भस्म होगया यह सुनकर वृन्दावनविहारीने कहा हे मुचकुन्द मैं कौन सा नाम अपना तुझे बतलाऊं मेरे नामोंकी कुछ गिनती नहीं है मैंने लाखों बेर संसार में अवतार लेकर बहुतसे काम किये हैं कदाचित् कोई चाहे तो बालूकी रेणुका व पानी बरसनेके बूंद गिन लेवे पर मेरे अवतार और कामोंकी गिनती करना बहुत कठिन है इसलिये अपने पिछले अवतारोंका हाल तुझसे नहीं कहसक्ता पर इसबेर पृथ्वीका भार उतारने वास्ते वसुदेव व देवकीके घर यदुकुल में अवतार लिया है इसलिये मेरा नाम वासुदेव भी कहते हैं व हमने मथुरामें राजा कंसको दैत्यों समेत मारकर पृथ्वी का बोझ उतारा व सत्रहबेर तेईस तेईस अक्षौहिणी दल साथ लेकर राजा जरासन्ध मथुरापर चढ़ आया सो वह भी मुझसे हारगया अठारहवीं बेर उसकी सहायता करनेवास्ते यह कालयमन तीन करोड़ सेना म्लेच्छोंकी

साथ लेकर मुझसे लड़ने आया था सो तुम्हारी दृष्टिसे जलकर मर
कदाचित् तुम कहौ कि कालयमन को अपने हाथसे तुमने क्यों न
मारा सो इसका यह कारण है कि देवतोंका वरदान सत्य करने को
मुझे तुमको अपना दर्शन देकर भवसागरपार उतारना था इसलिये
कालयमनको तेरी दृष्टिसे जलाकर अपना दर्शन तुझे दिया पिछले ज
तैंने मेरा बहुत भारी तप किया था उसका फल आज पाकर तू जन्म
मरणसे छूटगया अब तुझे जो इच्छा हो सो वरदान मांग हम दें
वैकुण्ठनाथका दर्शन मिलनेसे मुचकुन्दके मनमें ज्ञान उत्पन्न होकर उस
याद आई कि गर्गमुनि ने मेरी जन्मपत्री देखकर कहा था तुझे परमे
का दर्शन मिलैगा वह बात आंखोंसे दिखलाई दी ॥

दो॰ सोई द्विजको वचन हरि सत्य भयोहै आज। प्रकट आइ दरशन दियो माखन प्रभु ब्रजरा

जब मुचकुन्दको विश्वास हुआ कि यह चतुर्भुजीरूप भगवान हैं
उसने श्यामसुन्दरके सन्मुख हाथ जोड़कर विनय किया हे महाप्रभु
निर्गुण व निराकार अविनाशी पुरुष होकर केवल हरिभक्तों को सुख
वास्ते सगुण अवतार धरते हौ तुम्हारे आदि व अंतको कोई नहीं जा
सारा संसार आपकी मायामें लपट रहाहै इसलिये किसीका ज्ञान ठि
न रहकर सब मनुष्य बीच जाल काम क्रोध मोह लोभके ऐसा फँसरहे
कि किसीतरह मायारूपी जालसे छूटने नहीं सक्के ॥

चौ॰ करत कर्म सब सुखके हेत। याते भारी दुख सहि लेत ॥

जिसतरह कुत्ता सूखी हड्डी चबाती समय अपने मुखके लोहूका स
स्वाद पाकर अज्ञानतासे वह स्वाद हाड़में निकलता समझताहै उसी
मनुष्य स्त्रीप्रसंग करती समय अपने वीर्य गिरनेका क्षणभर सुख पा
अज्ञानतासे जानते हैं कि स्त्रीसे यह आनद हमें मिलता है जे अ
मनुष्य इस झूठे सुखको अच्छा जानकर कामदेव के मदमें परस्त्रीग
करके अपना परलोक बिगाड़ देते हैं व ऐसा काम नहीं करते जिसमें आ
गमनसे छूट जावें उन्हें कुत्तेसे भी निकृष्ट समझना चाहिये हे दीना
संसारीजीवोंको विना कृपा व दया तुम्हारी इस मायारूपी अँधियारे कू

बाहर निकलना बहुत कठिन है जो मनुष्य तुम्हारे शरण होकर आपका ध्यान व स्मरण करै वह मायाजालसे छूटकर परमगतिको पहुँचने सक्ता है सो मैं आजतक राज्य व धनके मदमें तुम्हारे भजन व स्मरण से विमुख रहा व जिन स्त्री व पुत्रोंकी प्रीतिमें फँसकर हाथी व घोड़े आदिक संसारी सुखको अपना जानता था वह सव नाश होकर केवल यह तनु मेरा जिसे राजा कहते हैं रहिगया सो यह भी किसी कामका नहीं है किस वास्ते कि यह तनु मरने उपरांत सियार आदिक के खाजाने से विष्ठा होजाता है व पड़े रहने व सड़िजाने से कीड़े पड़िजाते हैं व जला देनेसे राख होजाता है इसलिये जो लोग अपने तनु व बलका अभिमान करते हैं उन्हें मूर्ख समझना चाहिये मनुष्यतनु पाकर सिवाय भजन व स्मरण परमेश्वरके संसारी व्यवहार में मन लगाना अच्छा नहीं होता पर अज्ञानी मनुष्य शुभकर्म में एक क्षण मन नहीं लगाते व आठों पहर स्त्री व पुत्रकी माया में फँसे रहकर संसारी झूठे व्यवहार को सच्चा जानते हैं जो कोई विना इच्छा केवल तुम्हारे प्रसन्न होने वास्ते आपका ध्यान व स्मरण करता है उसे बड़ा भाग्यवान् समझना चाहिये पर वैसे मनुष्य संसारमें कम हैं मुझ अज्ञानी व अभिमानी को अपने भवसागर पार उतरनेका बड़ा शोच लगा था सो मेरे पिछले जन्मके पुण्य सहाय हुये जो कमलरूपी तुम्हारे चरणों में जिनका ध्यान ब्रह्मादिक देवता व बड़े बड़े योगी व ऋषीश्वर दिन रात अपने हृदय में रखते हैं अपना दर्शन देकर मुझे कृतार्थ किया इसलिये सिवाय भक्ति व ध्यान इन चरणों के जो मुक्ति देनेवाले हैं दूसरी कोई संसारीवस्तु माया मोह में फँसावनेवाली नहीं चाहता ॥

दो० मैं जप तप नहिं कुछ कियो नहिं चीन्हें महराज । एक तुम्हारी कृपाते दर्शन पायों आज ॥

हे महाप्रभु तुम अपने भक्तोंको अर्थ धर्म काम मोक्ष चारों पदार्थ देनेवाले हो इसलिये यह इच्छा रखता हूं कि तुम्हारी कृपासे भवसागर पार उतर जाऊं मैं आपके शरणागत हूं जव राजा मुचकुन्दने यह सव स्तुति की तव श्यामसुन्दरने हँसकर कहा हे मुचकुन्द तेरा ज्ञान धन्य है तैंने सच्ची वात कही तू सदासे मेरा परमभक्त है पिछले जन्म तुमने वहुतसा तप करके हमारा

दर्शन चाहा था उसका फल आज मिलकर तेरी कामना पूर्ण हुई व हमको तैंने पहिंचाना व हमने तुमको वरदान देनेवास्ते ललचाया था सो तैंने किसी वस्तु लेनेकी इच्छा न रखकर केवल मेरे चरणोंकी भक्ति मांगी इस तरहका ज्ञान सब किसीको प्राप्त नहीं होता अब तेरे भवसागर पार उतरने का उपाय बतला देता हूं सो तू कर किसवास्ते कि तैंने पृथ्वी लेने व परस्त्रीगमन करने में बहुत पाप किया है वह विना तप किये नहीं छूटेगा इसलिये तू उत्तर दिशा में जाकर मेरे स्मरण व ध्यान में लीन हो यह तनु छोड़ने उपरांत ब्राह्मण के घर जन्म लेकर मेरी भक्ति करैगा तब यह तनु छोड़ने उपरान्त मेरी ज्योतिमें समा जायगा॥

दो० यदपि पदारथ मुक्तिको राजन दीजत नाहिं। तदपि हम तुमको दियो जानि प्रीति मनमाहिं॥

यह बात सुनतेही मुचकुन्द वैकुण्ठनाथ के चरणों पर गिरपड़ा व जब उन्हें साष्टांग दण्डवत् करके कन्दरा से बाहर निकला तब उसने मनुष्य व वृक्षोंका छोटा रूप देखकर जाना कि कलियुग का लक्षण निकट पहुँचा ऐसा विचारकर उसीसमय राजामुचकुन्द बदरिकाश्रममें तप व जप करनेवास्ते चलागया व सच्चे मनसे परमेश्वर का तप करने लगा व गरमी व सरदी व वर्षाऋतुको बराबर जानकर हर्ष व शोचको एकसा समझा जब वह तनु छोड़कर ब्राह्मणके यहां जन्म पाया तब हरिभक्तिके प्रतापसे मरने उपरान्त परब्रह्म परमेश्वरके रूपमें लीन होगया कालयमन ब्राह्मणके वीर्य से उत्पन्न हुआ था इसलिये मुरलीमनोहरने उसको अपने हाथ से नहीं मारा इतनी कथा सुनकर परीक्षितने पूछा हे मुनिनाथ कालयमन म्लेच्छने ब्राह्मण के वीर्य से किसतरह जन्म पाया शुकदेवजी बोले हे राजन् एक दिन गौड़ ब्राह्मण गर्गमुनिके सालेने ठट्ठे से उन्हें कहा तुम नपुंसक हो जब यही बात सुनकर यदुवंशीलोग हँसीकी राह गर्गऋषीश्वरको हिजड़ा कहने लगे तब उन्होंने यदुवंशियों को नीचा दिखलानेवास्ते महादेवका तप करना आरंभ किया जब शिवजीने प्रसन्न होकर उनसे वरदान मांगने को कहा तब गर्ग मुनि ने हाथ जोड़कर विनय किया मुझे ऐसा पुत्र दीजिये जिसमें सब यदुवंशी डरकर भाग जावें महादेव ने एक फल उन्हें

देकर कहा यह फल स्त्री को खिला देनेसे वैसा पुत्र उत्पन्न होगा सो गर्ग ब्राह्मणने वह फल लेकर अपने पास रख छोड़ा जब तालजंघ नाम क्षत्रिय ने जो काबुलमें बड़ा प्रतापी राजा होकर संतान नहीं रखता था पुत्र उत्पन्न होने वास्ते गर्ग ऋषीश्वर की बहुत सेवा की तब ऋषीश्वर महाराज ने उसकी स्त्री को वीर्यदान देकर वह फल खानेवास्ते दिया सो उसने परमेश्वरकी इच्छानुसार अपनी सौतों के डरसे जल्दीमें वह फल विना स्नान किये खा लिया तब गर्गमुनिने कहा तेरा पुत्र बड़ा प्रतापी बलवान् उत्पन्न होकर म्लेच्छोंका कर्म करैगा इसीकारण कालयमन बेटा तालजंघ क्षत्रिय का म्लेच्छ होगया था यह हाल सुनकर परीक्षित का सन्देह मिटगया॥

बावनवां अध्याय।

श्याम व बलराम का जरासन्धके सामने से उसका मनोरथ पूर्ण करनेवास्ते भागना॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित श्यामसुन्दर मुचकुन्द को विदा करके मथुरा में चले आये व बलरामजीसे कहा हमने राजा मुचकुन्दकी दृष्टिसे कालयमनका नाश कराके मुचकुन्दको बदरी केदार में तप करने वास्ते भेज दिया अब चलो कालयमनकी सेना मारकर पृथ्वीका भार उतारें ऐसा कहकर दैत्यसंहारण बलराम समेत मथुरा से बाहर निकले व कालयमन की सेनामें चले गये॥

दो० संकर्षणको साथ ले माखनप्रभु करतार। कालयमनकी सेन सब हती एकही बार॥

जब क्षणभर में श्याम व बलराम हल व मूसल व बाणों से म्लेच्छों को मारकर सब वस्तु लूटकी अपने साथ लेचले तब राजा जरासन्धने अपनी सेना समेत पहुँचकर उन्हें घेर लिया उस समय वैकुण्ठनाथ भक्तवत्सल ने जरासंधका मनोरथ पूर्णकरनेवास्ते सब वस्तुलूटकी वहां छोड़दी व बलराम समेत उसके सामनेसे पैदल भागे तब जरासंधके मंत्री ने कहा महाराज तुम्हारे प्रतापके सामने कौन ऐसा शूरवीर है जो ठहरसके देखो राम व कृष्ण दोनों भाई घर दुवार व सब वस्तु अपनी छोड़कर आपके डरसे नंगे पांव भागे जाते हैं जब जरासन्धने भी दोनों भाइयोंको अपनी आंखोंसे भागते हुये देखा तब अपनी सेना समेत उनके पीछे दौड़ा व पुकारकर यों कहा॥

चौ० काहे डरके भागे जात। ठाढ़े रहौ करौ कछु बात॥
गिरत उठत कम्पत क्यों भारी। आई है ढिग मृत्यु तुम्हारी॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जब श्याम व बलराम नारदजीका वचन सत्य करनेवास्ते लोकव्यवहार दिखलाकर जरासन्धके सन्मुख से भागे तब वह बड़े हर्ष से उनके पीछे दौड़ा व दोनों भाई भागे हुये प्रवर्षण पहाड़ पर जो ग्यारह योजन ऊंचा था व उसमें सिवाय एक रास्ते के दूसरी राह नहीं थी चढ़ गये व पहाड़के ऊपर जाकर खड़े हुये॥

चौ० देखि जरासँध कहै पुकारी। शिखर चढ़े बलभद्र मुरारी॥
अब यह कैसे जायँ पराय। यह पर्वतको देव जलाय॥

ऐसी आज्ञा पातेही उसके सेवकोंने उस पहाड़ को जहां सदा पानी बरसता था लकड़ियों का ढेर चारों ओर इकट्ठा करके उसमें आगि लगा दी व जो राह पहाड़पर चढ़नेकी थी वहां जरासन्ध आप खड़ा हो गया जब थोड़ी देर में वह अग्नि पर्वत के शिखर तक लहकिकर बुझ गई तब वह उस अग्नि में जब मरना दोनों भाइयों का समझकर मथुरापुरी को चला आया और वहां अपना ढिंढोरा पिटवा दिया व जितने स्थान राजा उग्रसेन व वसुदेवजीके उस नगरमें थे वह सब खोदवाकर उस जगह नये स्थान बनवा दिये व अपना कारोबार वहां छोड़कर सेना समेत हर्षपूर्वक मगध देश में आया व श्यामसुन्दरने बलरामजी से कहा बड़े शोच की बात है जो हमारा चरण आवने से भी यह पहाड़ जल जावै ऐसा कह कर वैकुण्ठनाथने उस पहाड़ को अपने चरणोंसे ऐसा दबा दिया कि पाताल में चला गया आगि बुझने उपरान्त फिर उसीतरह उठा दिया॥

दो० ता गिरिवरते कूदिके माखनप्रभु यदुराय। राम सहित श्रीद्वारका पलमें पहुँचे जाय॥

उन्हें देखतेही सब द्वारकावासी प्रसन्न होगये व मुरलीमनोहरकी दया से आनन्दपूर्वक वहां रहने लगे कुछ दिन बीते राजा रेवतने ब्रह्माजी की आज्ञानुसार रेवती नाम अपनी कन्या चन्द्रमुखी व मृगलोचनीको द्वारकापुरी में लाकर बलरामजीसे विवाह दिया व श्यामसुन्दर बलरामजीसमेत कुण्डिनपुरमें जाकर रुक्मिणी नाम राजा भीष्मककी कन्या जो शिशुपाल

को मांगी गई थी अनेक राजोंमेंसे वरजोरी हरि ले आये व अपने घर लाकर उसके साथ विवाह किया यह सुनकर परीक्षित ने विनय किया कि कृष्णचन्द्र रुक्मिणी को बहुत राजोंमें से किसतरह जीतकर ले आये थे॥

दो० माखनप्रभुके कर्म गुण सुने महा सुख होय। जो कोइ ऋषि मुनिसे सुनेबड़ी भाग्यहै सोय॥

यह वचन सुनकर शुकदेवजी बोले हे राजन् भीष्मक नाम बड़ा प्रतापी राजा विदर्भदेशका कुण्डिनपुरमें रहकर धर्मपूर्वक राज्य करता था व रुक्माग्रज आदिक पांच पुत्र उसके हुये जब रुक्मिणी नाम कन्या महासुन्दरी राजा भीष्मकके यहां उत्पन्न हुई तब उसने मंगलाचार मनाकर ज्योतिषियों से उसके जन्म लग्नका फल पूंछा तब पण्डितों ने कहा कि हमारे विचारमें यह गुण व रूप व शीलकी सागर होकर आदिपुरुष भगवान् से विवाही जावैगी यह सुनकर राजा ने बड़े हर्ष से पण्डितोंको सन्मानपूर्वक बिदा किया जब राजकुमारी प्रतिदिन चन्द्रकलासी बढ़कर कुछ सयानी हुई तब एक दिन नारदमुनि कुण्डिनपुर में गये व उसका हाथ देखकर रुक्मिणीसे कहा तेरा विवाह कृष्णचन्द्र आनन्दकन्द वैकुण्ठनाथ के साथ होगा यह बात सुनकर रुक्मिणी बहुत प्रसन्न हुई व नारदमुनिने द्वारकापुरी में जाकर कहा हे वैकुण्ठनाथ राजा भीष्मकके एक कन्या रुक्मिणी नाम लक्ष्मीके समान अतिसुन्दरी उत्पन्न होकर तुम्हारे विवाहने योग्य है यह बात सुनतेही केशवमूर्ति अन्तर्यामी को भी उसकी चाहना हुई उन्हीं दिनों में याचकों ने कुण्डिनपुर में जाकर यश व गुण मुरलीमनोहरका जो जो काम उन्होंने गोकुल व वृन्दावन व मथुरा में किये थे गाया तब वहां के लोगों को श्यामसुन्दरके दर्शनकी इच्छा हुई जब इस बातकी चर्चा होते होते राजा भीष्मकको खबर पहुँची व उसनेभी उन याचकों को राजमन्दिरपर बुलवाकर श्यामसुन्दरका यश गवाया तब राजा व रानी आदिक उनकी लीला सुनकर अति प्रसन्न हुये॥

चौ० बढ़ी अटा रुक्मिणि सुन्दरी। हरिचरित्र ध्वनि श्रवणन परी॥
अचरज करे भूलि मन रहै। फेरि उचकिकर देखन चहै॥
सुनिकर कुँवरि रही मनलाय। प्रेमलता उर उपजी आय॥
अति आनँदमय भई सुन्दरी। उसकी सुधि बुधि हरिगुणहरी॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित पहिले रुक्मिणी नारदमुनि से मुरलीमनोहरका गुण सुन चुकी थी जब उसने याचकों भी उनकी बड़ाई सुनी तब उसे उनके साथ विवाह करनेकी अधिक इच्छा हुई उसी दिनसे रुक्मिणी आठोंपहर खाते पीते सोते जागते उठते बैठे ध्यान सांवलीसूरत मोहनप्यारेका प्रेमपूर्वक करने लगी और उनके मिलने वास्ते प्रतिदिन पार्वतीजीको पूजनकर यह वरदान मांगती थी॥

चौ० मुझपर गौरि कृपा तुम करो। यदुपति पति दे मम दुख हरो॥

दो० कमलनयनके ध्यानमें मग्न रहै दिन रैन। खान पानकी को कहै लहै नहीं क्षण चैन॥

जब रुक्मिणीने दिन रात मोहनीमूर्तिका ध्यान रखकर अपने मनमें यह प्रण किया कि सिवाय श्यामसुन्दरके दूसरेसे विवाह नहीं करूंगी तब उसके माता पिता भी यह हाल जानकर इसी बातमें प्रसन्न थे जब कभी रुक्मिणी बीचविरह मनहरणप्यारे के उदास होकर रोने लगती थी तब उसकी सहेलियां चर्चा बालचरित्र नंदलालजी का सुनाकर उसे प्रसन्न करदेती थीं।

दो० याविधि लीला कृष्णकी गावैं सब दिन रैन। सो सुनिके श्रीरुक्मिणी लही सदा सुख चैन॥

एकदिन रुक्मिणी सहेलियोंके साथ खेलती हुई राजाके पास आई तब भीष्मक ने उसे विवाहने योग्य देखकर मनमें कहा अब इसका विवाह जल्दी नहीं करता तो संसारीलोग मेरी निन्दा करेंगे जिसके घर कुमारी कन्या तरुण होजाती है उसे दान व पुण्य जप आदिक शुभ कर्म करने का फल नहीं मिलता ऐसा विचारते ही राजाने अपने पांचों बेटे व मंत्री व इष्टमित्रोंको सभामें बैठाकर कहा अब रुक्मिणी सयानी हुई इसलिये कोई राजकुमार जो कुलीन व सब गुणोंसे भरा हो ठहराना चाहिये यह बात सुनकर सभावालोंने अनेक राजकुमारोंका नाम बतलाकर उनके रूप व गुणका वर्णन किया पर राजाके मनमें कोई नहीं भाया तब रुक्माग्रज उसके बड़े बेटेने कहा हे पृथ्वीनाथ नगर चँदेली में राजा शिशुपाल कुलीन व बलवान् है रुक्मिणी उसे विवाह कर संसारमें यश लीजिये जब राजा उसकी बातपरभी नहीं बोले तब रुक्मकेश राजा के छोटे पुत्रने कहा।

चौ० रुक्मिणि पिता कृष्णको दीजै। यदुकुलसे नाता कीजै॥

यह सुनि भीष्मक हर्षे गाता। कह्यो पूत तुम अच्छी बाता।
तू बालक सबसे बड़ ज्ञानी। तेरी बात भली हम मानी॥
दो० तरुण छोटसों पूंछके कीजै मन परतीति। सारवचन गहिलीजिये यही जगतकी रीति॥

यदुवंशियों में राजा शूरसेन बड़े प्रतापी होकर वसुदेवजी उनके पुत्र ऐसे धर्मात्मा हैं जिनके घर आदिपुरुष भगवान्ने श्रीकृष्णनाम से अवतार लिया व राजा कंस आदिक अधर्मियों को मारकर सब यदुवंशी व प्रजाको बड़ा सुख देते हैं ऐसे द्वारकानाथको रुक्मिणी देकर संसारमें यश व बड़ाई लेना उचित है यह वचन सुनतेही तीनों छोटेपुत्र राजाके और मंत्री आदिक सभावालोंने प्रसन्न होकर कहा महाराज आपने बहुत अच्छा विचारा है ऐसा वर व घर दूसरा नहीं मिलैगा यह बात सुनतेही रुक्माग्रज बड़ा पुत्र राजाका जिसके सम्मत से राजकाज होता था सब सभावालोंपर झुंझलाकर बोला॥

चौ० समुझि न बोलत महागँवार। जानत नहीं कृष्णव्यवहार॥
बारह वर्ष नन्द के रह्यो। तब अहीर सब काहू कह्यो॥
दो० जन्म भयो यदुवंशमें बस्यो नन्द घर आय। कांध कमरिया कर लकुट फिरे चरावत गाय॥

हे पिता वह ग्वाल गँवार होकर उसकी जातिपांति का क्या ठिकाना है उसे कोई नंदजीका बेटा जानकर कोई वसुदेवका बालक कहते हैं आजतक यह भेद अच्छीतरह नहीं खुला कि किसका बेटा है व यदुवंशी कुछ प्राचीन राजा नहीं हैं क्या हुआ जो थोड़े दिनोंसे बढ़गये इससे उनकी गिनती तिलकधारी राजों में नहीं होसक्ती कदाचित् श्रीकृष्ण वसुदेव यादवका पुत्र समझाजावे तौभी यादवलोग हमारे बराबर कुलीन न होकर वह अपनी कन्या हमको देवैं तो उचितहै सिवाय इसके श्रीकृष्ण राजा उग्रसेनका सेवक कहलाता है उसे रुक्मिणी विवाहकर संसारमें क्या यश पावैंगे बैर व विवाह बराबरवालेसे करना चाहिये जब रुक्मिणी का विवाह कृष्णके साथ करने में सब कोई मुझे ग्वालका साला कहैंगे तब मैं अपना मुँह लोगों को क्या दिखलाऊंगा॥

चौ० या विधि औगुण भरे कन्हाई। तासों हम नहिं करत सगाई॥

इसलिये शिशुपाल तिलकधारी राजाको जिसके प्रताप व डरसे दूसरे

राजा थर थर कांपते हैं रुक्मिणी विवाह दीजिये व फेर कृष्णका नाम मेरे सामने मत लीजिये जब यह वचन सुनकर सब सभावाले अपने अपने मनमें पछिताकर चुप होरहे व राजा भीष्मक बड़ा पुत्र समझकर कुछ नहीं बोले तब राजकुमार ने उसी समय ज्योतिषियों से शुभलग्न पूंछकर एकब्राह्मण के हाथ तिलक विवाह रुक्मिणी का राजा शिशुपाल के पास भेज दिया जब वह ब्राह्मण तिलक लेकर नगर चंदेली में राजमन्दिर पर पहुँचा व शिशुपाल ने बड़े हर्षसे तिलक लेकर उस ब्राह्मणको सन्मानपूर्वक विदा कर दिया तब वह ब्राह्मण कुण्डिनपुरमें चला आया व राजा भीष्मक व रुक्माग्रज से तिलक लेने का हाल कहकर बोला राजा शिशुपाल बड़े धूमधामसे बरात साजकर विवाहने आते हैं आप अपने यहां तैयारी कीजिये यह बात सुनकर पहिले राजा भीष्मक बहुत उदास होगये फिर अपने मनको धैर्य देकर रानीसे यह सब हाल कहा तब वह अपनी नातेदार स्त्रियों को बुलाकर रुक्मिणी के विवाहका मंगलाचार मनाने लगी व राजा ने अपने मंत्रियोंको विवाहकी तैयारी करनेवास्ते आज्ञा दी व कुंडिनपुरमें यह चर्चा घर घर होने लगी कि राजा रुक्मिणीका विवाह श्रीकृष्णजीसे करते थे पर रुक्माग्रज दुष्ट ने नहीं होने दिया अब शिशुपालसे विवाह उसका होगा इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् जब राजमन्दिरमें केलेके खम्भे गाड़कर सोनेका कलश धरने उपरांत मँड़वा तैयार हुआ व स्त्रियां मंगलाचार गीत गाकर अपने कुलकी रीति करने लगीं व राजाने न्योता भेजकर अपने इष्ट व मित्रों को बुलाया व नाच व रंग आदिक अनेक तरहका मंगलाचार वहां होने लगा तबदोचार सखियोंने आनकर रुक्मिणी से कहा तेरा विवाह रुक्माग्रजने राजा शिशुपालके साथ ठहराया है सो अब तू रानी होगी यह बात सुनते ही रुक्मिणी अपने मनमें बहुत उदास होकर बोली हे प्यारी मेरे स्वामी मनसा वाचा कर्मणा से श्यामसुन्दर वैकुण्ठनाथ हैं उनके सिवाय मैं दूसरेको अपना पति बनाना नहीं चाहती ऐसा कहकर रुक्मिणी शोच व विचार करने लगी ॥

चौ॰ शोचत मन करे दुख भारी । मिलैं कौन विधि कृष्ण मुरारी ॥

दो॰ माखनप्रभुके दरशको किहि विधि करौं उपाय। पुरी द्वारका दूरअति कछु नहिं बनै बनाय॥

रुक्मिणीने बहुत शोच व विचार करके यह बात मनमें ठहराई कि किसीको मुरलीमनोहरके पास भेजकर अपनी इच्छा उनसे प्रकट किया चाहिये आगे वे मालिक हैं जब रुक्मिणीने इसके सिवाय दूसरा कुछ उपाय उत्तम नहीं देखा तब एक ब्राह्मण बुद्धिमान्को अपने माता व पिता व भाईसे छिपाकर बुलाया व अपना मनोरथ कहने व चिट्ठी देने उपरान्त हाथ जोड़कर उससे विनय किया महाराज आप कृपा करके तुरन्त यह चिट्ठी द्वारकामें लेजाइये व श्रीकृष्णजीके हाथ देकर मेरा सन्देशा कहने उपरान्त उन्हें अपने साथ यहां लेआइये तो जन्मभर आपका गुण मानकर यह समझूंगी कि तुम्हारी दयासे मैंने द्वारकानाथ को स्वामी पाया यह वचन सुनतेही वह ब्राह्मण रुक्मिणी से विदा होकर मुरलीमनोहरका ध्यान करता हुआ द्वारका को चला व वैकुण्ठनाथकी कृपासे तुरन्त वहां पहुँचकर द्वारकापुरीकी शोभा इस तरह पर देखी कि रत्नजटित स्थान वहां बने होकर घर घर मंगलाचार व कथा पुराण होरहा है जब वह ब्राह्मण यह सब शोभा व आनन्द देखता हुआ श्यामसुन्दर की डेवढ़ीपर जहां हजारों द्वारपालक खड़े थे जापहुँचा व मारे डरके भीतर जाने नहीं सका तब द्वारपालकोंने उस ब्राह्मणसे पूंछा॥

चौ॰ को हो आप कहांसे आये। कौन देशकी पाती लाये॥

दो॰ सकल व्यवस्था आपनी तिनसों कही जनाय। कुण्डिनपुरको विप्रहौं अबहीं पहुँचो आय॥

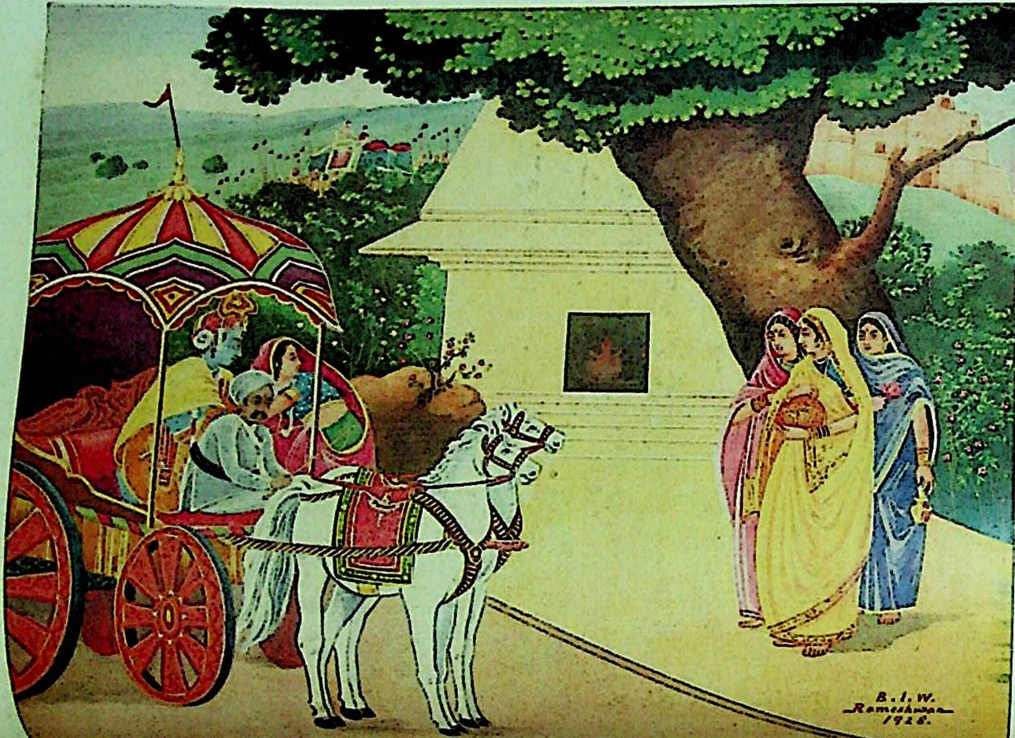
उस ब्राह्मणका हाल सुनकर एक द्वारपालक बोला महाराज तुम किस वास्ते यहां खड़े हो हमारे स्वामीके स्थानमें किसी ब्राह्मणको जाने वास्ते मना नहीं है आप बेधड़क भीतर चले जाइये श्यामसुन्दर सामने सिंहासन पर बैठे हैं वे तुम्हारा बड़ा आदर करेंगे यह वचन सुनते ही जब वह ब्राह्मण कृष्णचन्द्रके सामने जहां वे जड़ाऊ सिंहासन पर पीताम्बर पहिने बैठे थे चलागया तब त्रिलोकीनाथने ब्राह्मणको देखतेही सिंहासन से उतरकर दण्डवत् की व सन्मानपूर्वक अपने पास बैठाला व चरण धोकर चरणामृत लिया व उसके शरीरपर उबटन व फुलेल मलवाकर स्नान

कराया व छत्तीस व्यंजन खिलाकर पान व इलायची दिया व सुगंधित फूलोंका गजरा पहिनाया व बड़े प्रेमसे पूछा महाराज आप कहां से आवते हैं व जिस देशमें तुम रहते हो वहांका राजा अपने कर्म धर्म से रहकर प्रजापालन व ब्राह्मणोंकी सेवा अच्छी तरह करता है या नहीं॥

चौ० कौन काज यहँ आवन भयो। दरश दिखाय हमैं सुख दयो॥

दो० कहत वचन द्विजराजसों माखन प्रभु या भांत। देखत हरिकी दीनता यादव सब मुसुकात॥

यह वचन सुनतेही वह ब्राह्मण रुक्मिणी की चिट्ठी उनके आगे रख कर बोला हे कृपानिधान मेरे आवने का यह कारण है कि कुण्डिनपुर में रुक्मिणी राजा भीष्मक की कन्या आपका नाम व गुण सुनकर दिन रात यह इच्छा रखती है जिसमें तुम्हारे चरणों की दासी होवे सो उसका पिता उसे तुम्हारे साथ विवाहने चाहता था परन्तु रुक्माग्रज वड़े राजकुमार ने यह वात न मानकर सगाई उसकी शिशुपाल से की है इसलिये वह बहुत राजोंको साथ लेकर वड़े धूमधामसे कुण्डिनपुरमें विवाह करने आवेगा व रुक्मिणी मनसा वाचा कर्मणासे तुम्हारे चरणों में प्रीति रखकर उसके साथ विवाह करना नहीं चाहती इसी वास्ते राजकुमारीने व्याकुलता में चिट्ठी भेजकर तुम्हें बुलाया है यह वचन सुनतेही केशवमूर्ति भक्तहितकारीने वड़े हर्ष से वह चिट्ठी उसी ब्राह्मण को देकर कहा तुम इसको पढ़ो ब्राह्मण वह चिट्ठी पढ़कर सुनाने लगा उसमें रुक्मिणी ने लिखा था हे त्रिलोकीनाथ अविनाशी पुरुष तुम्हारे वरावर कोई दूसरा सुन्दर नहीं है सो मेरी विनय सुनिये हे परब्रह्म परमेश्वर मैं आपकी स्तुति सुनकर मनसा वाचा कर्मणासे अपने को तुम्हारी दासी समझती हूं व सिवाय तुम्हारे दूसरे को नहीं चाहती सो आपभी दयालु होकर मुझे अपने चरणों के पास रखिये यद्यपि मैं आपके योग्य नहीं हूं पर तुम्हारी दासियों में रहूंगी मेरा वड़ा भाई वरजोरी मुझे शिशुपालसे विवाहने चाहता है पर मैं यह वात न चाहकर प्रेमपूर्वक यह इच्छा रखती हूं कि तुम्हारी सेवा करके अपना जन्म स्वार्थ करूं कदाचित् आप ऐसा कहैं कि कुलवन्ती कन्या ऐसा कर्म नहीं करतीं जो अपने विवाह का सन्देशा आप भेजें


B. I. W.
Rameshwar
1928.

दीनानाथ इसका यह कारण समझिये तुम्हारी स्तुति जो संसारमें प्रकट सुनकर मेरी लज्जा छूटगई तुम्हारे चरणोंकी रज मिलने वास्ते ब्रह्मा व हादेव आदिक देवता व बड़े बड़े योगी व मुनि इच्छा रखते हैं पर वह धूर उनको जल्दी नहीं मिलती सो मैं अपने मनसा वाचा कर्मणासे यह च्छा रखती हूं जिसमें उन चरणोंकी सेवा करके वह रज अपने मस्तक र लगाऊं कदाचित् वह धूर मुझे नहीं मिलैगी तो उन चरणोंमें ध्यान लगाकर यह तनु छोड़ देऊँगी ॥

चौ० जाको शिव सनकादिक ध्यावें । वेद पुराण भेद नहिं पावें ॥
ताही चरण कमलकी आस । मन मधुकर है कीन्हों वास ॥
दो० तुम चाहो या मति चहो माखन प्रभु यदुराय । मैं चाहति हूं आपको प्रेमप्रीतिके भाय ॥

हे महाप्रभु अब शिशुपाल बरात साजिकर कुण्डिनपुरमें मुझे व्याहने आवैगा सो तुम वेग आनकर शत्रुओं को जीतने उपरांत मुझे यहां से ले जाव कदाचित् आप नहीं आवैंगे तो मैं अपना प्राण तुम्हारे चरणों पर न्यवछावर करके जहां दूसरा जन्म पाऊंगी उसी तनुमें तुम्हारा भजन करिकै हरिचरणों पास पहुँचोंगी ॥

चौ० हौं तुम्हरी चेरी की चेरी । तुमको सकल लाज है मेरी ॥
कृपा करो मोहन यदुनाथा । रथ चढ़ि चलो विप्रके साथा ॥

हे दीनदयालु ऐसा मत करना कि सिंहका आहार गीदड़ लेजावे कदाचित् आप ऐसा कहें कि हम राजमन्दिर में से तुझे किसतरह हरले जावेंगे सो मैं विवाहसे एक दिन पहिले देवीजीकी पूजा करने वास्ते नगरके बाहर जाऊंगी जब वहां से फिरकर घर आने लगूं तब आप राहमेंसे मुझे अपने साथ लेजाना संसार में तुम्हारा नाम दीनदयालु प्रकट है इसलिये मुझे महादीन जानकर दयालु होना ॥

चौ० जो तुम वेगि न पहुँचो आय । तो मोहिं असुर व्याहि लैजाय ॥
दो० यानिधि पाती श्रवण करि माखन प्रभु कर्तार । कुण्डिनपुरके चलनको मनमें कियो विचार ॥

तिरपनवां अध्याय ।

रुक्मिणी को श्यामसुन्दरका हरि ले आवना ॥

शुकदेवजीने कहा अय परीक्षित श्यामसुन्दरने वह चिट्ठी सुनते ही

बड़ी प्रसन्नतासे उस ब्राह्मणका हाथ पकड़ लिया व उसको अकेले
जाकर कहा अय ब्रह्ममूर्ति जिस दिनसे मैंने रुक्मिणी के रूप व गुण
हाल नारदजी के मुख से सुना है उसी दिनसे मैं भी उसके मिलनेकी
चाहना रखता हूं और यह भी मुझको मालूम है कि रुक्माग्रज मेरे
शत्रुता रखकर उसका विवाह मुझसे होने नहीं देता सो तुम आज
को यहां रहो कल्ह प्रातसमय तुम्हारे साथ चलकर रुक्मिणीकी इच्छा
करूंगा जिस तरह काठ में काठ रगड़ने से आगि उत्पन्न होकर साथ
जल जाता है उसी तरह शत्रुओंको सेना समेत जीतकर रुक्मिणी
आऊंगा जब यह बात सुनकर ब्राह्मण देवता को धैर्य हुआ तब मुरली
मनोहरने दारुक सारथीको बुलाकर कहा कल्ह प्रातसमय रथ तैयार
ले आवना जब प्रातःकाल दारुक सारथी रथ उनका साजकर ले आ
तब श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द उस ब्राह्मणसमेत रथपर चढ़कर कुण्डिन
को चले जब वह सारथी रथ दौड़ाकर नगर से बाहर ले गया तब
नाथ ने क्या देखा कि दाहिनी ओर हरिणों का झुण्ड चला जाता है
शकुन देखकर उस ब्राह्मण ने केशवमूर्ति से कहा महाराज अच्छे
मिलनेसे मेरे विचारमें ऐसा आवता है कि जिस कामके वास्ते आप
हैं वह अर्थ तुरन्त सिद्ध होगा श्यामसुन्दर बोले आपकी कृपासे मेरा म
रथ मिलेगा यह बात कहकर रथ आगेको बढ़ाया जब बलभद्रने सुना
मुरलीमनोहर अकेले कुण्डिनपुरकोगये तब उन्होंने जाकर राजा उग्रसेन
कहा महाराज हमने सुना है कि राजा शिशुपाल जरासन्ध आदिक
से राजों को अपने साथ बरात में लेकर रुक्मिणी से विवाह करने
कुंडिनपुर आवता है व मोहनप्यारे यहांसे अकेले बिना कहे वहां चले
हैं इसलिये हमको मालूम होता है कि वहां श्यामसुन्दर व उनलोगों
बड़ा युद्ध होगा आप आज्ञा दीजिये तो हमलोग भी जावें यह बात सुन
ही उग्रसेनने बलराम से कहा तुम सब सेना मेरी साथ लेकर ऐसी ज
कुण्डिनपुरमें जाव कि वासुदेव वहां पहुँचने न पावें राहमें उनसे मिल
उन्हें अपने साथ यहां लेआवो यह वचन सुनतेही बलरामजीने उसी स

अक्षौहिणी दल व बहुत शूरवीरोंको अपनेसाथ लेकर कुण्डिनपुरको कूच किया व राहमें श्रीकृष्णजीसे मिलकर बोले हे भाई मुझे भी साथ न लेकर अकेले चले आये मेरा प्राण तुम्हारे ऊपर न्यवछावर है श्यामसुन्दर भाई के देखने से बहुत प्रसन्न हुये व रुक्मिणीजीकी व्याकुलताका हाल जान: कर महीनेका रास्ता एक दिन व एक रातिमें चले और जिस दिन शिशु-पाल की बरात कुण्डिनपुरमें आवनेवाली थी उसी दिन वहां जा पहुँचे व क्या देखा कि उस नगरमें घर घर मंगलाचार होकर गली व चौराहों में गुलाव जल व चन्दनका छिड़काव होरहाहै व सब छोटे बड़े कुण्डिनपुर-वासी अच्छा अच्छा गहना व कपड़ा पहिने हुये अपने अपने द्वारे व चौराहों पर बरात देखने वास्ते हर्षपूर्वक बैठे हैं॥

दो॰ कुण्डिनपुरकी छवि महा वर्णिसकै कवि कौन। जाकी शोभा देखिकै सुखपावत अपिमौन॥

यह सबशोभा यहांकी देखतेहुये श्यामसुन्दरने अपनारथ राजाभीष्मक के बागमें लेजाकर खड़ा किया व उस ब्राह्मणसे बोले महाराज हम अपना डेरा यहां करते हैं तुम जाकर हमारे आवनेका हाल रुक्मिणी से कहिदेव जिसमें उसको धैर्य हो और वहां का समाचार फिर आनकर हमसे कहो कि उसका उपाय किया जावै यह वचन सुनकर वह ब्राह्मण राजमन्दिर को चला और उसी दिन राजा भीष्मक बरात निकट आवनेका हाल सुन: कर अपनी सेना व न्योतहारी राजों को साथ लियेहुये बरातियोंको आगे से लेने गया व सन्मानपूर्वक उन्हें अपने साथ लेआकर यथायोग्य स्थान में जनवास दिया और अनेक पदार्थ भोजनके सब वस्तुसमेत जो जिसे चाहिये था उनके स्थानपर भेज दिया व बरात पहुँचने की खबर सुनकर राजमन्दिर में स्त्रियां मंगलाचार मनाने लगीं और पुरोहितने रुक्मिणीसे सोना व गोदान दिलवाकर मोतियोंका कँगना उसके हाथमें बँधवा दिया इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित कृष्णचन्द्र आनन्दकन्द कुण्डिनपुरमें पहुँच चुके थे पर रुक्मिणी को उनके आवनेका हाल नहीं मालूम था इसलिये वह यह सब चरित्र देखते ही अपने मनमें शोचित हो कर कहने लगी देखो श्यामसुन्दर चिट्ठी भेजने से मुझे निर्लज समझ

कर अभी तक नहीं आये और उस ब्राह्मणने भी अब तक फिरकर सँदेशा नहीं दिया कि प्राणनाथ आवते हैं या नहीं इससे मालूम होता कि वैकुण्ठनाथ अन्तर्यामी ने मुझे कुरूप समझकर कृपा नहीं किया वह ब्राह्मण रास्ता भूलकर द्वारकाको नहीं गया या बरातके साथ जरासं का आवना सुनकर नहीं आये ॥

चौ० मेरी कछुक चूक मन आनी। याते नहिं आये सुखदानी॥
अजहूं नहिं आये नँदलाला। आय मोहिं बरिहै शिशुपाला॥

हे महाप्रभो जब शिशुपाल कल्ह मुझे विवाहने उपरांत हाथ पकड़ लेजावेगा तब मैं अबला अनाथ क्या करूंगी इससमय मेरे तप व ज देवीजीकी पूजाने भी कुछ सहायता नहीं की हे परमेश्वर मैं क्या करूं कि भाग जाऊं या अपना प्राण दे डालूं अब तुम्हारे विना किसीका भरोसा रखती रुक्मिणी अनेक बातें मनमें विचारकर किसी के पांवका सुनती तो आना उस ब्राह्मणका जानकर चारों ओर देखने लगती थी चन्द्रमाका प्रकाश प्रातसमय मलीन होजाता है वैसे रुक्मिणीका मुख उसी शोचमें उदास होगयाथा जिसतरह पारा एक जगह नहीं ठहर उसीतरह घबड़ाहट से कभी कोठे पर व कभी द्वारे पर कभी खिड़कियों जाकर उस ब्राह्मणके आनेकी राह निहारा करती थी व लज्जावश मनका भेद किसीसे नहीं कहती थी ॥

दो० माखनप्रभुके ध्यानमें प्राणनकी सुधि नाहिं। तबहीं फड़के नयन भुज मुदितभई मनमाहिं॥

यह दशा रुक्मिणी की देखकर एक सखी जो सब भेद जानती बोली हे प्यारी तुम इतना घबड़ाकर क्यों अपना प्राण देती हो वह बि पूंछे अपने पिता व भाई के किसतरह आवैंगे तब दूसरी सखीने कहा दीनदयालु अन्तर्यामी तुम्हारे मनका हाल जानकर विना आये न रहेंगे तुम अपने मनको धैर्य देकर व्याकुल मतिहो मेरी समझमें वह कुण्डिन पुरमें पहुँच चुके हैं उसका वचन सुनकर रुक्मिणी ने कहा इस सम मेरी बाईंआंख व भुजा फड़कती है तब वह सखी बोली इसे बहुत अच्छा शकुन समझो अभी कोई आनकर ऐसी खबर देगा कि श्यामसुन्दर आ

हैं जिससमय रुक्मिणी यह चर्चा अपनी सखियों से कररही थी उसीसमय उस ब्राह्मणने पहुँचकर रुक्मिणीको अशीश देने उपरांत कहा केशवमूर्ति ने वलरामजी व सेनासमेत यहां आनकर राजाके वागमें डेरा किया है ॥

दो० रुक्मिणि विप्रहि देखिके कीन्हों वहुत हुलास। कहत तुम्हारे धर्मसे अब पूजी मम आस ॥

उससमय रुक्मिणीको ऐसी प्रसन्नता हुई कि जैसे मृतकके तनुमें प्राण आजावें व तप करनेवाला अपना मनोरथ पाकर प्रसन्न होवे तव उसने हाथ जोड़कर ब्राह्मण से विनय किया हे द्विजराज तुमने वैकुण्ठनाथके आवनेका हाल सुनाकर मुझे जीवदान दिया मैं इसके वदले तुमको तीनों लोककी सम्पदा दूं तो भी तुमसे उऋण नहीं होसक्ती यह वात कहकर जैसे रुक्मिणी ने कृपादृष्टिसे उस ब्राह्मणकी ओर देखा वैसे उसके घर लक्ष्मीजीका वास होगया फिर वह ब्राह्मण आशीर्वाद देकर राजा भीष्मक के पास चलागया और श्यामसुन्दरके आनेका समाचार ज्योंका त्यों राजा से कहदिया जव राजाने सुना कि श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द मेरे यहां विवाह करनेवास्ते आनकर वागमें टिके हैं तव वह उसी क्षण वड़े हर्ष से वहुत रत्नादिक साथ लेकर अपने चारों छोटे वेटों समेत वाटिका में चला गया जव उसने दूरसे राम व कृष्ण दोनों भाइयों को वैठे हुये देखा तव सवारीपरसे उतरकर पैदल उनके निकट चलागया व रत्नादिक उन्हें भेंट देकर विनयपूर्वक वोला ॥

चौ० मेरे मन वच तुमहीं हरी। कहा कहौं जो दुष्टन करी ॥

हे महाप्रभो जव आपने दयालु होकर अपना दर्शन मुझे दिया तव मैं कृतार्थ होकर अपने मनोरथको पहुँचा फिर राजा भीष्मक वहुत अच्छे स्थान में श्याम व वलरामको टिकाकर राजमन्दिरपर चला आया व सव पदार्थ भोजनादिकका उनके यहां भेजकर यों कहने लगा कि रुक्मिणी श्रीकृष्ण-जी के साथ विवाहने योग्यहै पर क्या करूं मेरा कुछ वश नहीं चलता ॥

चौ० हरिचरित्र जानै नहिं कोय। क्या जानैं अब कैसी होय ॥

जव कुण्डिनपुरवासियों ने दोनों भाइयों के आनेका हाल सुना तव सव छोटे वड़ोंने उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहिनकर झुंडके झुंड उनके

दर्शन वास्ते वहां पहुँचे व उन्हें दण्डवत् करके अपने अपने लोचनों फल प्राप्त किया व बड़े हर्षसे आपसमें कहने लगे ॥

दो० हैं अतिसुन्दर श्याम वर कहैं परस्पर लोग। यह शिशुपाल महाअधम नहीं रुक्मिणी

परमेश्वरकी दयासे हमारी इच्छा पूर्ण होकर रुक्मिणीका विवाह मु मनोहरके साथ होवे और श्याम व बलराम दोनों भाइयोंकी जोड़ी जीविनी रहै हे राजन् जब चार घड़ी दिन रहा तब राम व कृष्ण रथपर कर कुण्डिनपुरकी शोभा देखनेवास्ते निकले जिस गली व बाजार व चौ पर उनकी सवारी पहुँचती थी वहांके सब स्त्री व पुरुष अपनी अप खिड़की व चौवारे व द्वारोंपरसे दोनों भाइयों पर पुष्प आदिक बरसा आपसमें यों कहते थे ॥

चौ० नीलाम्बर ओढ़े बलराम। पीताम्बर पहिने घनश्याम ॥
कुण्डल चपल मुकुट शिरधरे। कमलनयन माधव मन हरे ॥

जब श्याम व बलराम नगरकी शोभा व राजा शिशुपालादिककी से देखते हुये अपने डेरेपर पहुँचे तब रुक्माग्रज उनके आनेका हाल सु ही बड़े क्रोध से अपने बापके पास जाकर बोला तुम सच बतला श्रीकृष्ण हमारे यहां विवाहमें विघ्न करनेवास्ते किसके बुलाने से आये राजा भीष्मकने कहा मैंने उनको नहीं बुलाया तब वह जनवासे में जा शिशुपाल व जरासन्धसे बोला कुण्डिनपुरमें श्याम व बलराम भी आये सो तुम अपने सेनापतियों से कहदेव कि चैतन्य रहैं उन दोनों भाइयों नाम सुनते ही राजा शिशुपाल मारे डरके चित्रकारीसा चुपचाप रहकर नहीं बोला पर जरासन्धने रुक्मसे कहा सुनो मित्र इन्हीं दोनों भाइयों राजा कंसादिक बड़े बड़े शूरवीरों को सहजमें मारलिया था यहां जो आ हैं तो अवश्य कुछ उपाधि करैंगे इन्हैं तुम बालक मत समझो यह प्रतापी होकर आजतक किसीसे नहीं हारे सत्रहवेर तेईस तेईस अक्षौहि दल मेरा इन दोनों भाइयोंने लड़कर मारडाला जब अठारहवींवेर में लेकर इनपर चढ़ा तब यह दोनों भाई विना लड़े मेरे सामने से भाग

पर्वतपर चढ़गये जब मैंने उस पहाड़के चारोंओर आगि लगवा दी तब वहां से कूदकर द्वारकामें जा वसे ॥

चौ० इनको काहू भेद न पायो। करन उपद्रव यहँ भी आयो ॥
यह हैं छली महाछल करैं। काहूको नहिं जानों परैं ॥

इसवास्ते अब कोई ऐसा उपाय करना चाहिये जिसमें हमलोगों की लाज रहै यह बात सुनकर रुक्माग्रज अभिमानसे बोला श्याम व बलराम क्या वस्तुहैं जिनसे तुम इतना डरते हो मैं उनको अच्छीतरह जानता हूं वृन्दावनमें नाच गायकर गौवें चराया करते थे वे बालक गँवार युद्धका हाल क्या जानते हैं तुम किसी बातकी चिन्ता मत करो कृष्ण बलरामको यदुवंशियों समेत हम अकेले हटादेवेंगे हे राजन् उस दिन रुक्म इसतरह उन्हें बोध देकर अपने घर चला आया व शिशुपाल व जरासन्धने आपस में अनेक उपाय विचारकर बड़ी चिन्तासे वह रात काटी प्रातसमय वह दोनों इधर बरात निकालने की तैयारी करने लगे व उधर राजा भीष्मकके यहां मंगलाचार व विवाह का उद्योग होनेलगा व जातिभाइयों की स्त्रियोंने रुक्मिणी को उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहिनाकर दुलहिनों के समान बनाया जब चारघड़ी दिन रहे बहुतसी ब्राह्मणी जो उस रोज मौनव्रत रक्खे थीं रुक्मिणीको हजार सहेलियों समेत साथ लेकर गावती बजावती देवीपूजा करनेवास्ते चलीं तब राजा शिशुपालने यह समाचार सुनकर इस डरसे कि कदाचित् मोहनप्यारे रुक्मिणीको बरजोरी उठा न लेजावें पचास हजार शूरवीर उसकी रक्षा करनेवास्ते संग करदिये सो वह लोग अनेक तरहके शस्त्र लेकर राजकुमारीके साथ चले उससमय रुक्मिणी सहेलियों के झुण्डमें धीरे धीरे हंसरूपी चाल चलती हुई कैसी सुन्दर मालूम होती थी जैसे चन्द्रमा तारोंमें शोभा देताहै व शिशुपाल व जरासन्ध के शूरवीर काले काले कपड़े पहिने उसको चारों ओर घेरे हुये श्यामघटासे मालूम होकर बीचमें जड़ाऊवाला पहिननेसे कान रुक्मिणीजीका बिजुली की तरह चमकता था सो रुक्मिणीजी ने मन्दिरमें पहुँचकर देवीजी का चरण धोया व विधिपूर्वक पूजन करके हाथ जोड़कर विनय किया ॥

दो० बालापनते करतिहौं बहुविधान ते सेव । जो तुम सांची गौरिहौ मनगानत फल दे

यह वचन सुनते ही दूसरी स्त्रियोंने भी जो उसके साथमें थीं हाथ जो कर कहा हे अम्बिके मातः ऐसी कृपा करो जिसमें राजदुलारीका मनो मिलै जब पूजा करने व परिक्रमा लेने व ब्राह्मण खिलावने उपरान्त चन्द्रमुखी जिसके प्रकाश से अँधेरा छूटजाता था रोलीकी बेंदी लगा मंदिरसे बाहर निकली उससमय वह मृगलोचनी ऐसी सुन्दर मालूम दे थी जिसपर हजारों रति कामदेवकी स्त्री न्यवछावर होजावैं ॥

दो० वादिन रुक्मिणि प्रात ते धरेहती व्रत मौन । पूजाकरि छविसों चली वरायिसकै करि

हे राजन् जिससमय वह महासुन्दरी श्यामिलन की आशा लग गजरूपी चालसे धीरे धीरे सहेलियों समेत राजमन्दिरपर आवने ल उसी समय श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द भी तीनों लोकोंकी सुन्दरत धारण किये अकेले रथपर बैठे हुये वहां आन पहुँचे ॥

दो० पूजि गौरि जवहीं चली एक कहत अकुलाय । सुन प्यारी आये हरी देख ध्वजा फहरा

यह वचन सुनते ही जैसे राजकुमारीने घूंघट उठाकर मुसकराती हु रथकी ओर देखा वैसे सब शूरवीर रखवारी करनेवाले वह तिरछी चितव व मन्द मुसुकान देखते ही ऐसे अचेत होगये कि शस्त्र उनके हाथसे गिरप

सो० भृकुटी धनुष चढ़ाय अञ्जन वरुणी पनचके । लोचन बाण चलाय मारे पै जीवत र

उसी समय वृन्दावनविहारीने अपना रथ सखियोंके झुण्डमें लेजा रुक्मिणी के पास खड़ा करदिया जैसे राजकुमारीने लजाती हुई हाथ ब कर मोहनप्यारे को मिलने चाहा वैसे श्यामसुन्दरने बायें हाथसे रुक्मि का हाथ पकड़के अपने रथ पर बैठालिया व शंख बजाकर वहां से र अपना हांका ॥

चौ० कांपत गात सकुच मन भारी । छांड़ि सबै हरिसंग सिधारी ॥
ज्यों वैरागी छांड़ै गेह । कृष्ण चरण से करै सनेह ॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित रुक्मिणी अपने व पूजा का फल पाकर पिछला सब शोच भूल गई व राजा जरासन्ध शिशुपालके शूरवीरों से कुछ नहीं बनपड़ा श्रीकृष्णजी इसतरह उन लो के बीचमेंसे रुक्मिणी को लेकर चलगये जिसतरह सिंह सियारोंके ग

मेंसे अपना आहार लेकर निर्भय चला जाताहै जब वहांसे बारह कोसपर रथ मुरलीमनोहरका जापहुँचातब वहशूरवीर सचेतहोकर उनकेपीछेदौड़े॥

दो० ऐसी विधि कन्या हरी भई प्रकट यह बात। सब राजा सुनकर कुढ़े मनहीं मन पछिताता॥

जब बलरामजीने देखा कि श्यामसुन्दर रुक्मिणी को रथपर बैठाकर द्वारकाकी ओर चलेजाते हैं तब वह भी अपनी सेना साजकर शत्रुओंके लड़नेवास्ते श्रीकृष्णजीके पास चले आये और मुरलीमनोहरने रुक्मिणी को डरसे घबड़ाईहुई देखकर कहा हे प्राणप्यारी अब तू किसी बातका शोच मतकर द्वारकामें पहुँचते ही शास्त्रानुसार तुझसे विवाह करके तेरा मनोरथ पूर्ण करूंगा जब श्यामसुन्दर इसतरह धैर्य देकर अपने गलेकी माला रुक्मिणीको पहिना दी तब उसका भय छूटगया॥

चौवनवां अध्याय।

जरासन्ध व रुक्माग्रज आदिकको श्याम व बलरामसे युद्ध करना॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जब मुरलीमनोहर रुक्मिणीको इसतरह हर लेगये और यह समाचार शिशुपालने सुना तब जरासन्ध व दन्तवक्त्र आदिक सब बरातवाले राजा अपनी अपनी सेना साथ लेकर श्यामसुन्दर के पीछे चढ़ दौड़े व आपस में कहने लगे कि बड़ी लज्जाकी बात है हम लोगोंके रहने परभी यादव का बेटा रुक्मिणी को बरजोरी हरलेजावे जब इसीतरह की चर्चा आपसमें करते हुये निकट रथ श्यामसुन्दरके पहुँचे तब उन लोगोंने ललकारकर कहा तुम दोनों भाई कहांभागे जाते हो खड़े होकर हमारे साथ लड़ाई करो जो शूरवीर क्षत्रियहैं वह युद्ध विषे पीठनहीं दिखलाते यह वचन सुनते ही बलरामजीने अपनी सेना समेत फिरकर उन लोगोंसे ऐसा युद्ध किया कि दोनों ओर से अनेक शस्त्र चलकर नदीरूपी रुधिर बहिनिकला ऐसा भारी युद्ध देखकर रुक्मिणी घबड़ागई और बड़े शोचसे मनमें कहनेलगी देखो मेरेवास्ते श्याम व बलराम इतना दुःख पाते हैं हे परमेश्वर यह सब शत्रु कबतक लड़ेंगे व इतनी सेना किसतरह मारी जावेगी जब रुक्मिणी इसीतरह अनेक बातें विचारकर मारे डरके कांपने लगी तब बैकुण्ठनाथ अन्तर्यामीने उससे कहा तू मेरी

महिमा जान बूझकर इतना क्यों डरती है धैर्य रख अभी एक क्षणमें यह स
शत्रु इसतरह मारेजावेंगे जिसतरह सूर्य निकलने से तारे दिखलाई नहीं
देते जब मुरलीमनोहरके समझाने परभी राजदुलारीका डर नहीं छूटा त
उन्होंने आप लड़ना उचित नहीं जाना व रथ अपना रणभूमि से अल
लेजाकर खड़ा करदिया और युद्धका कौतुक देखने लगे॥

दो० यादव असुरन से लड़त होत महासंग्राम। ठाढ़े देखत कृष्ण हैं करत युद्ध बलराम॥

उससमय बलरामजीने क्रोधित होकर हल व मूसल अपना उठा लिया
व बड़े बड़े शूरवीर व हाथी व घोड़ोंको उससे मारनेलगे जिसतरह किसान
लोग खेत काट डालते हैं उसीतरह बलभद्रजीने क्षणभर में बहुतसी सेना
शत्रुओंकी मार गिराई जब जरासन्ध आदिक राजों ने यह दशा अपनी
सेनाकी देखी तब रणभूमिसे भागकर शिशुपालके पास चले आये इतनी
कथा सुनाकर शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित उससमय देवता अपने विमानों
पर से बलरामजीपर पुष्प बरसाकर उनकी स्तुति करनेलगे जब शिशुपाल
ने यह दुर्दशा अपने साथी राजोंकी देखी तब मारे शोच व लज्जा के मुख
उसका पीला होगया और जरासन्ध से रोकर कहा महाराज रुक्मिणीको
श्रीकृष्णचन्द्र बरजोरी उठा लेगये व लड़ाई में भी हमलोगों से कुछ नहीं
बन पड़ा इसलिये लज्जावश मुझसे अपना मुख किसी को दिखलाया
नहीं जाता और यह कलंक मेरा जन्मभर नहीं छूटैगा इससे कहो तो मैं
भी लड़कर मरजाऊं॥

चौ० नहिं इत रहौं करों बनवासा। लेइहौं योग छांड़ि सब आसा॥

यह बात सुनकर जरासन्धने कहा महाराज आप ऐसे ज्ञानी को मैं
क्या समझाऊं बुद्धिमान् लोग हानि व लाभ में हर्ष व विषाद न करके
सब बातोंको परमेश्वरके आधीन समझते हैं जिसतरह काठकी पुतलियों
मदारी नचाते हैं उसीतरह सब जीवोंके कर्ता धर्ता नारायणजी होकर जो
चाहते हैं सो होता है इसलिये दुःख व सुख को एकसा जानकर संसारी
व्यवहार स्वप्नवत् समझना चाहिये देखो इसीतरह मैं भी सत्रह बेर इनसे
हार गया था पर कुछ उदास नहीं हुआ जब अठारहवीं बेर ये दोनों भाई

मेरे सामनेसे भाग गये तब मैंने कुछ हर्षभी नहीं किया न मालूम यह दोनों कौन अवतार ऐसे बलवान् व प्रतापी हैं जिनसे कोई जीतने नहीं सक्ता ॥

दो० सुख पाछे दुख होतहै यही जगतकी रीति। कबहूं रणमें हारिहै कबहूं लीजै जीति ॥

इसलिये यह समय टाल देना उचित है जिसतरह अठारहवीं वेर मेरा मनोरथ मिलाथा उसीतरह आपभी जीते रहैंगे तो एकदिन तुम्हारी इच्छा पूर्ण होजावेगी जब इसतरह समझाने से शिशुपाल को धैर्य हुआ तब वह और सब राजा उसके साथी सेना समेत जो जीते व घायल बच गये थे अपने अपने देश को चले गये व यादववंशियों ने सब वस्तु लूट की द्वारका में भेज दी ॥

दो०लज्जित होके फिर चल्यो हार मानि शिशुपाल। सब राजनको जीतिकै कूच कियो नँदलाल॥

जब रुक्माग्रजने जरासन्ध आदिकके भाग आवनेका समाचार सुना तब बहुत क्रोधित होकर अपनी सभा में आन बैठा व सब लोगों को जो वहां नेवता करने आये थे बड़े शब्द से सुनाकर कहने लगा यह कौन बात है जो मेरी बहिन को बरजोरी कृष्णचन्द्र उठा लेजावैं जबतक मेरे तनुमें प्राणहै तबतक रुक्मिणीको नहीं लेजाने दूंगा अब मैं यह प्रण क-रता हूं कि अभी जाकर दोनों भाइयों को मारने या जीता पकड़ने उपरांत रुक्मिणीको न लेआऊं तो अपना नाम रुक्म न रखकर कुण्डिनपुर में किसी को अपना मुख न दिखलाऊं ऐसा कहकर एक अक्षौहिणी दल से उनके पीछे चढ़दौड़ा और रास्ते में अपने सेनापतियोंसे कहा तुमलोग यादववंशियों को मारो मैं अपना रथ आगे को बढ़ाकर कृष्ण को जीता पकड़ लेआवता हूं यह वचन सुनते ही सेना उसकी यदुवंशियों से जो बलरामजी के साथ में थे लड़ने लगी व रुक्मने रथ अपना आगे बढ़ाकर श्यामसुन्दरसे ललकारके कहा हे यादव कहां भागा जाताहै तुझे सामर्थ्य हो तो एक क्षण ठहर कर मेरे साथ युद्ध कर मुझे शिशुपाल व जरासन्ध आदिक मत समझना जिसतरह गोकुल व वृन्दावनमें अहीरियों का गोरस चुराकर खाया करते थे उसीतरह मुझको भी व्रजवासी अहीर समझ कर मेरी बहिन चुरा लेभागे तुझे इस बात का कुछ भय नहीं हुआ कि

रुक्मिणी मुझ ऐसे शूरवीर व प्रतापीकी बहिन को बरजोरी उठा ले चले आजतक तुमने राजा भीष्मकका नामभी नहीं सुनाथा जो ऐसी अनीति की जो लोग तुम्हारे सन्मुखसे भाग गये हैं वे क्षत्रिय नहीं थे अब मेरे सामने से तुमको जीते बचकर जाना बहुत कठिनहै जब इसीतरहकी अनेक बातें अभिमानपूर्वक रुक्मने कहकर बहुतसे तीर श्यामसुन्दर पर चलाये तब द्वारकानाथने अपने बाणसे वे सब तीर काट डाले फिर केशवमूर्तिने चार बाणसे चारों घोड़ा और उसके रथको मारकर एक तीरसे सारथीको अचेत किया व एक बाणसे रथकी ध्वजा गिराकर दूसरे तीर से धनुष उस का काट डाला जब रुक्मने छोटे छोटे गदा आदिक अनेक शस्त्र मुरली मनोहर पर चलाये व उन अस्त्रोंको भी श्यामसुन्दरने अपने बाणोंसे काट डाला व कोई अस्त्र उसका मोहनप्यारे के नहीं लगा तब इसतरह क्रोध करके ढाल तलवार हाथ में लिये हुये रथसे कूदकर वृन्दावनविहारी पर झपटा जिसतरह पतंग आपसे जलनेवास्ते दीपक पर जा गिरता है या जैसे बौड़हा गीदड़ हाथी पर झपटै तब मुरलीमनोहरने उसकी ढाल तलवार भी बाण से काटकर गिरा दिया॥

दो॰ तेहि अवसर कोपित भये माखन प्रभु व्रजनाथ। रुक्म हतनके कारणे लियो खड्गनिजहाथ॥

जब श्रीकृष्णचन्द्रने नंगी तलवार लिये हुये रथ से कूदकर रुक्म का शिर काटने चाहा तब रुक्मिणी यह दशा अपने भाई की देखकर डरती व कांपती हरिचरणों पर गिर पड़ी व रोती हुई हाथ जोड़कर बोली॥

चौ॰ मारो मत भाई है मेरो। छांड़ो नाथ तुम्हारो चेरो॥
मूरख अन्ध कहा यह जानै। लक्ष्मीपतिको मानुप मानै॥
नहिं जानैं कोइ तुम्हरो अन्त। भक्त हेतु प्रकटे भगवन्त॥
यह जड़ कहा तुम्हैं पहिचानै। दीनदयालु जग तुम्हैं बखानै॥

सो मैं दीन होकर कहती हूं हे दीनानाथ जिसतरह आप बलभद्रजी को प्यारा जानते हैं उसीतरह मेरा भाई मुझकोभी प्याराहै जिसतरह ज्ञानी लोग बालक व बौड़हे व मूर्खके अपराधपर कुछ ध्यान नहीं करते दुर्वचन उनके कुत्ते के भूंकने समान समझते हैं उसीतरह आपभी मेरे भाई को

मूर्ख समझकर इसका प्राण मुझे दान दीजिये कदाचित् आप इसको मार डालेंगे तो मेरे पिताको जो तुम्हारा भक्त है बड़ा दुःख होगा और यह बात संसारमें प्रकटहै कि जहां तुम्हारे चरण जाते हैं वहां सबको सुख मिलताहै सो यह बड़ा आश्चर्य समझना चाहिये कि भीष्मक तुम्हारा श्वशुर होकर पुत्रका शोक उठावे॥

चौ० बन्धुभीख प्रभु मोको दीजै। इतनो यश तुम जग में लीजै॥

दो० जो तुम याको मारिहौ माखन प्रभु ब्रजराज। तो मोको सब सृष्टिमें अपयश ह्वैहै आज॥

हे राजन् यह बात सुनने व रुक्मिणीकी दशा देखनेसे श्यामसुन्दरने प्राण लेना रुक्मका छोड़कर जैसे सारथीको सैनमें बतलाया वैसे उसने रुक्म की पगड़ी उतारकर भुजा उसकी बांध मूछ व डाढ़ी व शिरके बाल मूड़कर सात चोटी रखने उपरांत उसे अपने रथमें बांधलिया इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित उधर श्रीकृष्णजीने रुक्मकी यह दुर्दशा की इधर बलरामजी सेना उसकी मार व भगाकर यदुवंशियोंको साथ लिये इसतरह बड़े हर्षसे केशवमूर्तिके पास पहुँचे जिसतरह ऐरावत हाथी कमल वनको रौंदकर तोड़ता चला आवता है जब रुक्मको बांधा देखकर सब यदुवंशी हँसने लगे तब बलभद्रजीने मुरलीमनोहरसे कहा हे भाई रुक्मसे तो भूल हुई थी पर आपने भी अच्छा नहीं किया जो अपने सालेका शिर मुड़वाकर उसे बांध रक्खा है इसतरहके जीनेसे रुक्मका मरना उत्तम था कदाचित् यह युद्धविषे सन्मुख मारा जाता तो अप्सरा हाथों हाथ इसे उठाकर स्वर्गमें लेजातीं अब तुम्हारी सरहजभी इसका संग प्रसन्नता से नहीं करैगी॥

चौ० बांध्यो याहि करी बुधि थोड़ी। फिर तुम कृष्ण सगाई तोड़ी॥
यदुकुलको तुम लीक लगाई। अब हमसे को करै सगाई॥

दो० अब याकी गति देखिकै मनमें आवै त्रास। नारि आपनी होय जो सोउ न आवै पास॥

इसलिये जिससमय रुक्म तुम्हारे सामने लड़ने आयाथा उसीसमय उसको समझाकर बिदा करदेना उचित था इष्टमित्र व सम्बन्धियों को अपराध करनेपरभी मारना व बांधना न चाहिये सो आपने प्राण लेनेसेभी

अधिक दण्ड इसको दिया अब इसे बांधकर रखने से क्या गुण निकलेगा यह वचन अपने भाईका सुनतेही श्रीकृष्णजीने रुक्मको छोड़ दिया तब बलदाऊजी ने उसे बहुत संतोष देकर जानेवास्ते कहा व रुक्मिणीजीसे बोले ऐ राजकन्या तुम्हारे भाईकी जो यह गति हुई इसमें कुछ दोष श्यामसुन्दरका नहीं है यह सब इसके पिछले जन्मके कर्मोंका फल था क्षत्रियोंका यह धर्म है कि पृथ्वी व द्रव्य व स्त्रीके वास्ते आपसमें झगड़ा करते हैं जब दो मनुष्य लड़ेंगे तो उसमें से एक जीतकर दूसरा अवश्य हारैगा कर्मका लिखा हुआ किसी तरह नहीं मिटता जो कुछ रुक्मके भाग्यमें लिखा था सो हुआ व संसारमें जिसने जन्म पाया वह अवश्य दुःख व सुख उठावताहै व जीवात्मा सदा अमर रहकर कभी नहीं मरता और यह शरीर सदा बनता विगड़ता रहताहै इसवास्ते अंगकी दुर्दशा होनेसे जीवात्माकी निन्दा नहीं होती इसलिये तुम रोना अपना छोड़कर यह सब दुःख रुक्मके प्रारब्धाधीन समझो यह बात समझाने से रुक्मिणी अपने मनको धैर्य देकर चुप होरही व रुक्म विदा होते समय शिर अपना ऊपर चरण श्यामसुन्दरके रखकर विनय किया हे दीनानाथ मैं तुम्हारी महिमा नहीं जानता था इसलिये मुझसे अपराध हुआ अब दयालु होकर उसे क्षमा कीजिये जब ब्रह्मा व महादेव आदिक देवता आपको नहीं पहिंचान सके तो मेरी क्या सामर्थ्य है जो तुम्हारी महिमा जानने सकूं इसीतरह वहुत विनती व स्तुति करके रुक्म वहां से विदा हुआ॥

दो० कहै सुन्दरी सैनमें किये जेठकी लाज। अब विलम्ब क्यों करतहौ हांको रथ ब्रजराज॥

यह मनसा रुक्मिणीकी समझकर श्रीकृष्णजीने रथ अपना द्वारकाकी ओर हांक दिया व रुक्म अपनी प्रतिज्ञानुसार राजमन्दिर पर नहीं गया व कुण्डिनपुरके निकट भोजकट नाम दूसरा नगर वसाकर वहां रहा व राजा भीष्मकसे मनमें शत्रुतारखकर अपनी स्त्री व पुत्रोंको वहां बुला भेजा जब रामकृष्ण द्वारकापुरीके निकटपहुँचे तब राजा उग्रसेन व वसुदेव आदिक बड़े हर्षसे नगरके वाहर आनकर सन्मानपूर्वक उनको लिवा लेगये व सब द्वारकावासियोंने अपनेअपने द्वारेपर मंगलाचार मनाकर उनकी आरतीकी

दो॰ प्रिया सहित श्रीद्वारका यदुपति पहुँचे आय। पुरवासी प्रफुलित भये आनँद उरन समाय॥

जब केशवमूर्ति इसीतरह सबको सुख देते हुये अपने द्वारे पर पहुँचे तब देवकीजी ने बहुत स्त्रियों समेत वहां आनकर अपने कुलकी रीति की व रुक्मिणी की सुंदरताई देखतेही बड़े हर्ष से उसे व मोहनप्यारेको महलमें लेगईं व राजा उग्रसेन व वसुदेवजी ने उसी दिन गर्ग पुरोहितको बुला कर विवाहका मुहूर्त पूंछा जब गर्ग मुनिने शुभ लग्न विवाहका बतलाया तब राजा उग्रसेनने अपने मंत्रियोंको विवाहकी तैयारी करनेवास्ते आज्ञा देकर दुर्योधन आदिक अनेक राजोंके यहां नेवता भेज दिया जब राजा भीष्मकने जो अपनी कन्या श्यामसुन्दरको विवाहने चाहता था द्वारकामें विवाह होनेकी तैयारी सुना तब उसने बड़े हर्षसे अपने मनमें कन्यादान संकल्प किया व बहुत से रत्नादिक व भूषण व वस्त्र व हाथी व घोड़ा व रथ व पालकी व दासी व दास अपने पुरोहित सहित द्वारकापुरीमें वसुदेव जीके पास भेज दिया व विनती अपनी कहला भेजा जब द्वारकामें उधर देश देश के राजा नेवता करनेवास्ते आनकर इकट्ठे हुये तब इधरसे यह ब्राह्मण सब वस्तु दहेजकी लेकर वहां पहुँचा तो ऐसी भीड़ व शोभा द्वारकामें हुई जिसका हाल वर्णन नहीं होसक्ता जब विवाहवाले दिन केलों के खम्भा गाड़कर मखमली चँदवा रत्नजटित बांधा गया व सुगन्धित पुष्प व नौरलकी बंदनवार बांधकर मोतियोंसे चौक पुरवाने उपरांत मड़वा तैयार हुआ तब राजा उग्रसेन आदिक ने मोहनप्यारे व रुक्मिणीको उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहिनाकर जड़ाऊ चौकीपर बैठाल दिया जब बड़े बड़े यदुवंशी व नातेदार राजालोग वहां आनकर चारोंओर बैठे व ब्रह्मा व महादेव व कुबेरआदिक सब देवता अपना अपना रूप बदलकर वह मंगलाचार देखनेवास्ते उस जगह इकट्ठे हुये तब गर्ग पुरोहित ने शास्त्रानुसार विवाह श्यामसुन्दरका रुक्मिणी के साथ करादिया और दोनों को भाँवरि फिराया॥

चौ॰ पण्डित तहां वेदध्वनि करैं। रुक्मिणिसँग प्रभु भांवरि फिरैं॥
ढोल नफीरी बहुत बजावैं। हरषैं देव सुमन बरसावैं॥

सिद्ध साध्य चारण गन्धर्व। अन्तरिक्ष है देखैं सर्व॥
चढ़िविमान सबमाथ झुकावें। देव वधू सब मंगल गावें॥
हाथ धरे प्रभु भांवरि पारी। वामअंग रुक्मिणि बैठारी॥
खोलत कंकण कृष्ण मुरारी। ऐसे रस्म रीति सब कारी॥
अति आनन्द रचो जगदीशा। हर्षि हर्षि सब देहिं अशीशा॥
कृष्ण रुक्मिणी जोड़ी जीवें। यह चरित्र सुनि अमृत पीवें॥

उस समय स्त्रियां मंगलाचार गीत गायकर व अप्सरा आकाशमें वि-मानों पर नाच नाच के प्रसन्न होती थीं व गंधर्व गाना सुनाके देवता लोग अनेक तरहके रत्नजटित भूषण दुलह व दुलहिनको पहिनाकर आनंद मचाते थे जब विवाह होचुका तब राजा उग्रसेन ने ब्राह्मणोंको बहुतसा दान व दक्षिणा देकर सन्मानपूर्वक विदा किया व याचकों व भँगनोंको मुँहमांगा द्रव्यादिक इतना दान दिया कि उनको दूसरी जगह मांगने की इच्छा नहीं रही व सब यदुवंशी व राजा लोगोंने रुपये व अशरफी नेवता देकर उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र रुक्मिणीको पहिना दिया व राजा उग्रसेनने सब नेवतहारी राजा व कुण्डिनपुरवासी ब्राह्मणों को यथायोग्य सन्मानपूर्वक विदा किया इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् उस दिन द्वारकापुरी व तीनोंलोकों में ऐसा आनंद सबको प्राप्त हुआ जिसका हाल वर्णन नहीं होसक्ता व रुक्मिणीजी के द्वारका में आने से सब छोटे बड़ों के घरमें लक्ष्मीजी का वास होगया व सब राजा उनके आधीन रहकर अपने अपने देशकी सौगात श्याम व बलरामको भेजने लगे जो कोई यह कथा रुक्मिणीमंगलकी सच्चे मनसे कहै व सुनै उसको भुक्ति व मुक्ति सब तीर्थस्नान करनेका फल मिलता है॥

पचपनवां अध्याय।

प्रद्युम्नके जन्मकी कथा॥

इतनी कथा सुनकर परीक्षितने पूंछा हे मुनिनाथ कामदेवको शिवजी ने किस तरह जला दिया था वह कथा वर्णन कीजिये शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित एकदिन महादेवजी कैलास पर्वत पर बीच ध्यान परमेश्वरके बैठे थे उससमय अचानकमें कामदेवने आनकर उन्हें ऐसा सताया कि

ध्यान उनका खुलगया तब उन्होंने क्रोधसे अपनी तीसरी आंख खोलकर कामदेवकी ओर देखा तो वह जलकर राख होगया ॥

दो० कामवलीजबशिवदहेउ तबरतिधरत न धीर। पतिबिनुअतितलफतखड़ी विह्वलविकलशरीर॥

चौ० कामनारि यों लोटत फिरै। कन्त कन्त कहि चाहत मरै ॥

जब शिवजीने यह दशा उसकी देखी तब प्रसन्न होकर कहा हे रते तू शोच मत कर कुछ दिन बीते कामदेव कृष्ण अवतार में रुक्मिणीके गर्भ से उत्पन्न होकर शम्बरासुरके घर आवैगा सो तू शम्बर दैत्यके यहां जाकर रसोई बनाने वास्ते रह वहां तेरा स्वामी तुझे मिलकर सुख देवैगा जब यह सुनकर रति को धैर्य हुआ तब वह मायावतीनाम वृद्धा स्त्रीका रूप धरकर उस दैत्यके यहां चलीगई व रसोई बनानेवालों में मुखिया बनकर अपने पतिके मिलनेकी आशामें रहने लगी व परमेश्वरकी आज्ञानुसार कामदेवने रुक्मिणीके गर्भसे जन्म लिया सो वह बालक श्रीकृष्णजीके रूपसमान ऐसा सुंदर उत्पन्न हुआ जिसे देखकर सूर्यदेवता लज्जित हो जाते थे जब राजा उग्रसेन व वसुदेवजीने ज्योतिषियों से जन्मलग्न का हाल पूंछा तब पण्डितों ने जन्मकुण्डली उसकी बनाकर कहा महाराज हमारे विचारमें ऐसा मालूम होता है कि यह बालक सुन्दरताई व बल व गुण में श्रीकृष्ण ऐसा होगा और कुछ दिन जलवास करने व शत्रु को मारने उपरांत अपने माता व पितासे आन मिलैगा जब ब्राह्मणलोग उस बालकका नाम प्रद्युम्न रखकर दक्षिणा लेने उपरांत अपने अपने घर चले गये तब वसुदेवजीने अपने कुलकी रीति करके मंगलाचार मनाया तब परमेश्वरकी इच्छानुसार नारदमुनिने शम्बर दैत्य से जाकर कहा तू नहीं जानता कामदेव तेरे शत्रुने प्रद्युम्न नामसे कृष्णचन्द्रके यहां जन्म लिया है बारह वर्षकी अवस्थामें वह तुझे मारेगा जब नारदमुनि ऐसा कहकर ब्रह्मलोकको चलेगये तब शम्बर दैत्यने विचार किया मैं अभी प्रद्युम्नको उठा लेआकर समुद्र में डालदूं तो मेरे मनकी चिन्ता छूट जावे ऐसा विचारतेही शम्बर हवारूप बनकर द्वारकामें आया व रुक्मिणी के मंदिर में जाकर बीच सौरीके घुसगया और प्रद्युम्न को जो अठारह

दिनका था वहांसे उठाकर लेउड़ा पर किसी स्त्री ने जो सौरीमें बैठी थी उसे लेजाते नहीं देखा जब रुक्मिणी अपना बालक शय्यापर न देखकर रोने लगी तब सब स्त्रियोंने इस बात का आश्चर्य माना व शम्बरदैत्य प्रद्युम्नको समुद्र में डालकर अपने घर चला आया व श्यामसुन्दरकी इच्छानुसार प्रद्युम्न को एक मछलीने निगलकर तीन वर्ष तक पालन किया जब एक केवट उसी मछलीको जालमें फँसाकर शम्बरदैत्यके यहां भेंट लेगया तब उसने वह मछली अपने रसोई बनानेवालों के पास भेज दिया जब उन्होंने उस मछलीका पेट चीरा तब उसमें से एक बालक श्यामरंग बहुत सुन्दर जीता हुआ निकला जब वह लोग अचम्भा मानकर उसे मायावतीके पास लेगये तब उसने बड़े हर्षसे बालकको लेलिया व शम्बरदैत्यसे छिपाकर उसे पालने लगी कुछ दिन बीते शम्बरासुरने भी उसे देखा तो उसकी सुन्दरताई पर मोहित होकर मायावती से कहा तू इसे अच्छीतरह पालन कर उन्हीं दिनों नारदमुनि मायावतीके पास जाकर बोले यह बालक कामदेवनाम तेरा पति है और इसकी माता रुक्मिणी और पिता श्रीकृष्णजी द्वारकामें रहते हैं व शम्बरासुरने इसको सौरीमें से चुराकर बीच समुद्रके डाल दियाथा सो महादेवजीके आशीर्वाद से तेरे पास पहुँचा है अपना बालापन यहां बिताकर शम्बरदैत्य को मारने उपरांत तुझे द्वारका में लेजायगा यह बात कहकर नारदमुनि चले गये व रति यह हाल सुनतेही बहुत प्रसन्न होकर बड़े प्रेमसे उसको पालने लगी ज्यों ज्यों वह बालक सयाना होता था त्यों त्यों रति को अपने पति मिलनेकी चाहना बढ़कर यों कहती थी॥

चौ० ऐसो प्रभु संयोग बनायो। मछली माहिं कन्त मैं पायो॥

जब प्रद्युम्न पांचवर्षका हुआ तब रति उसको उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहिनाकर उसे देख देख अपनी आंखों को सुख देने लगी व प्रद्युम्न उसको अपनी माता समझकर लड़कोंकी तरह मैया मैया कहता था व मायावती उसके साथ कान्तभाव रखकर दुलार व प्यार करती थी॥

दो० ऐसेही पालत रही बहुत दिना चितलाय। भयो तरुण सुन्दर महा शोभा कही न जाय॥

जब प्रद्युम्न नव दश वर्ष का होकर सब भला व बुरा समझने लगा तब उसने एक दिन मायावती से जो अपना शृंगार करके उसके साथ कटाक्ष करती थी कहा तुम हमारी माता होकर मुझे पतिभावसे देखती हो यह बात सुनकर रति मुसकराती हुई बोली अय कान्त तुम यह क्या बात कहते हो मैं रति तुम्हारी स्त्री हूँ॥

दो० जन्म लियो श्रीद्वारका शम्बरलियो चुराय। और अवस्था जो हती सो सब कही बुझाय॥

जब प्रद्युम्नने मायावती से सब हाल अपने जलने व अवतार लेने व समुद्र में डालने व मछली निगलनेका सुना तब उसने रतिको अपनी स्त्री जानकर शम्बरासुरको अपना शत्रु समझा उससमय मायावती बोली हे कान्त शिवजीके आशीर्वादसे मैं तो अपने मनोरथको पहुँची पर रुक्मिणी माता तुम्हारी ऐसा दुःख पावती है जैसे बछड़े के बिछुड़ने में गौ को सुख नहीं मिलता इसवास्ते अब तुम्हें शम्बर दैत्यको मारकर द्वारका में चलके अपने माता व पिताको सुख देना चाहिये पर यह दैत्य माया-युद्ध बहुत जानता है व तुमने अभीतक युद्धकी विद्या कुछ नहीं पढ़ी इसलिये वह विद्या मुझसे सीख लेव॥

दो० मैं याकी विद्या सकल तुमको देवँ बताय। जाते शम्बर असुर खल तुमसों जीतो जाय॥

जब प्रद्युम्नने बारह वर्षकी अवस्थातक सब बाणविद्या व मायायुद्ध मायावती से सीख लिया तब अपने मनमें युद्ध करनेकी सामर्थ्य पाकर शम्बरदैत्यको दुर्वचन कहने लगा जिसमें उससे युद्ध हो जब एक दिन प्रद्युम्न खेलता हुआ शम्बरासुरकी सभामें चलागया तब उस दैत्यने किसी दूसरे से कहा मैंने इस बालकको अपना बेटा करके पाला है यह वचन सुनकर प्रद्युम्न ताल ठोंककर बड़े क्रोधसे बोला मुझे अपना लड़का मत समझो मैं तुम्हारा शत्रु हूँ मुझसे लड़कर मेरा बल देखलेव यह वचन सुन कर शम्बरासुर हँसता हुआ अपने सभावालोंसे बोला देखो भाई जैसे मैंने दूध पिलाकर सांप को पाला वैसे यह मेरे वास्ते दूसरा प्रद्युम्न उत्पन्न हुआ ऐसा कहकर शम्बर दैत्य प्रद्युम्नसे बोला अय बेटा तुम्हारी क्या मृत्यु आई है जो ऐसी कठोर बातें मुझसे कहते हो उसने उत्तर दिया कि मेराही नाम

प्रद्युम्न है तुमने तो मुझको समुद्रमें फेंककर मेरा प्राण लेने चाहा था नारायणजीकी दयासे जीता वचकर आज तुमसे अपना वैर लेने आया जिसतरह तुमने अपना काल घरमें पाला था उसीतरह अब मुझसे लड़ाई करो कोई किसीका बाप व बेटा नहीं होता संसार की गति सदासे इसी तरहपर चली आती है यह बात सुनकर शम्बरासुर बड़ा शोच व क्रोध करके अपनी सेनासमेत प्रद्युम्नसे लड़ने वास्ते नगरके वाहर निकला व गदा हाथ में लेकर प्रद्युम्नसे ललकारके बोला देखें अब तेरा प्राण कौन बचाता है जब ऐसा कहकर शम्बर दैत्यने उनपर गदा चलाई प्रद्युम्नने अपनी गदा पर कर उसकी गदा गिरा दी तब शम्बरासुरने अग्निबाण उसके ऊपर छोड़ा जब उसेभी प्रद्युम्नने जलवाण मारकर बुझादिया तब शम्बरासुरने झुँझला कर अनेक तरहके शस्त्र उसपर चलाये जब प्रद्युम्नने वे भी सब काटकर गिरा दिये तब दोनों मनुष्य आपसमें लपटकर मल्लयुद्ध करने लगे जब कुश्तीमें प्रद्युम्न नहीं हारा तब शम्बर दैत्य मंत्रकी विद्यासे उसपर पत्थर वरसाने लगा जब प्रद्युम्नने अपने मन्त्रसे पत्थर वरसाना बन्द करदिया तब शम्बरासुर माया के बलसे प्रद्युम्नको उठाकर आकाशकी ओर ले उड़ा उससमय प्रद्युम्नने क्रोध करके एक तलवार शम्बरदैत्यके ऐसी मारी कि शिर उसका भुट्टासा कटकर पृथ्वीपर गिरपड़ा व क्षणभरमें उसकी सेनाभी काटडाली तब देवतों ने प्रसन्न होकर आकाश से उनपर फूल वरसाये व संसारी लोग जो उसके डरसे यज्ञ व होम नहीं करने पाते थे आनन्द होगये व प्रद्युम्नकी बहुत स्तुति करके बोले श्रीकृष्णजी वैकुण्ठनाथ का सामना कोई नहीं करसक्ता अब उनका पुत्रभी ऐसा बलवान् उत्पन्न हुआ जिसके वरावर कोई दूसरा शूरवीर संसारमें दिखलाई नहीं देता॥

दो० जो ऐसे बल देखते निज सुतको भगवान। करते मनमें मुदित है तिहूंलोक को दान॥

जब प्रद्युम्नने शम्बरासुरको मारकर श्यामसुन्दरकी दुहाई उस नगरमें फेर दी तब मायावतीने प्रसन्न होकर निजरूप अपना रतिका महासुन्दर बारह वर्ष की अवस्था बनालिया व उड़नखटोलने पर अपने पतिसमेत बैठकर द्वारकाको गई उससमय प्रद्युम्न श्यामरंग व रति चन्द्रमुखी दोनों

आकाशमें कैसे सुन्दर मालूम देतेथे जैसे कालीघटामें विजुली शोभा देती है जव वे रुक्मिणीके आंगन में उड़नखटोलनेसे उतरकर खड़े हुये तव सव स्त्रियां श्यामसुन्दरकी जो प्रद्युम्नके हरने उपरान्त व्याही गई थीं प्रद्युम्नको जो केशवमूर्तिके रूप समान था देखकर चौंक उठीं व उनके मनमें इस वातका सन्देह हुआ कि मुरलीमनोहर यह नई सुंदरी और कहीं से लाये हैं तव उन्होंने उसकी सुन्दरताई देखनेवास्ते चारोंओरसे आनकर घेर लिया और यह भेद किसीने नहीं जाना कि यह प्रद्युम्नहै उस समय श्रीकृष्णकुमार ने सव स्त्रियोंसे पूंछा कि हमारे माता व पिता कहां हैं जव यह वात सुनकर सव स्त्रियोंको अचम्भा मालूम हुआ तव उन्होंने प्रद्युम्नकी ओर आंख उठाकर देखा तो चिह्न भृगुलताका उनकी छातीपर नहीं दिखलाई दिया तव उन्होंने समझा कि यह श्रीकृष्ण न होकर कोई दूसरा पुरुष है और रुक्मिणीने प्रद्युम्नका मुखारविन्द देखकर अपनी सहेलियों से कहा वड़ा भाग्य उस स्त्रीका समझना चाहिये जिसने ऐसा सुन्दर पुत्र जना और यह स्त्री भी सुन्दरताई में इस वालक की वरावर है मेरा वेटा भी जो कोई चुरा लेगया इसी रूपका था परमेश्वरकी दया व मेरे भाग्यसे जीता होकर यह वही वालक आया हो तो आश्चर्य नहीं मेरा वेटाभी रहता तो इसी अवस्था का होता ऐसा विचारकर रुक्मिणीने प्रद्युम्नसे पूंछा ॥

दो० जन्म भयो किहि गांवमें कहा तुम्हारो नांव। कौन तुम्हारे मातु पितु क्यों आयो यहिठांव॥

यह वचन कहतेही रुक्मिणीको प्रेम हुआ कि उसकी छातीसे दूध वह निकला व वायां अंग फड़कने लगा तव उसे विश्वास हुआ कि यह मेरा पुत्रहै यह वात समझतेही रुक्मिणीने चाहा कि मैं उसको गोदमें उठाकर प्यार करूं पर विना आज्ञा अपने स्वामीकी ऐसा उचित न जानकर मनमें शोच विचार कर रही थी कि उसी समय वसुदेव व देवकी व कृष्णचन्द्र ने वहां पहुँचकर यह हाल देखा जव श्यामसुन्दरने सव भेद जानने पर भी कुछ हाल प्रद्युम्नका किसीसे नहीं कहा तव उनकी इच्छानुसार उसी क्षण नारदमुनिने वहां आनकर सव हाल प्रद्युम्नका ज्योंका त्यों कह सुनाया व रुक्मिणीसे वोले यह तेरा वेटाहै यह वचन सुनतेही रुक्मिणीने दौड़कर

प्रद्युम्नको गोद में उठा लिया व शिर व मुख उसका चूमकर बलायें ले लगी जिसतरह बिछुड़ा हुआ बेटा मिलने से माता व पिताको हर्ष होता उसीतरह रुक्मिणीको आनन्द प्राप्त हुआ व उसने रतिको अपनी गोद बैठाकर बहुतसा प्यार किया ॥

दो० देखि पुत्र प्रफुलित भई या विधि रुक्मिणि माय । हर्ष न जाके चित्तकी वर्णन कह्यो न जाय ॥

श्रीकृष्णजीभी अपने पुत्र व पतोहूको देखकर बहुत प्रसन्न हुये श्याम सुन्दर अन्तर्यामी सब हाल जानते थे कि मेरा बेटा शम्बरासुरके यहां है इतने दिनतक उन्होंने यह भेद रुक्मिणी से नहीं कहा था जब प्रद्युम्न शिर अपना ऊपर चरण माता व पिता व दादा व दादी आदिक के रख अपने बड़ोंको पहिंचाना तब सबों ने उसको आशिष देकर प्यार किया व बहुतसा द्रव्यादिक उसके हाथ से दान व दक्षिणा दिलवाया व सब स्त्री व पुरुष द्वारकावासी अपने अपने घर मंगलाचार मनाकर कहने लगे वसुदेवनन्दनका बड़ा भाग्य है जो खोया हुआ पुत्र एक स्त्री महासुन्दरी अपने साथ लेकर उनके घर चला आया ॥

दो० नर नारी मोहे सबै देखि प्रद्युमन रूप । बिनु देखे क्षण ना रहैं ऐसो रूप अनूप ॥

वसुदेवजीने शुभ लग्नमें बड़ी धूमधामसे विवाह प्रद्युम्नका रतिके साथ करदिया इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् इसतरह कामदेव ने प्रद्युम्न जन्म लेकर रति अपनी स्त्री को सुख दिया ॥

छप्पनवां अध्याय ।

श्रीकृष्णजीका जाम्बवती व सत्यभामासे विवाह करना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जिन दिनों प्रद्युम्न शम्बरासुरके यहां थे उन्हीं दिनों सत्राजित यादवने पहिले श्रीकृष्णजीको मणिकी झूंठी चोरी लगाई पीछे से लज्जित होकर अपनी कन्या उन्हें विवाह दी यह सुनकर परीक्षित ने विनय किया हे कृपानिधान सत्राजितने वह मणि कहांसे पा कर किसतरह श्यामसुन्दरको उसकी चोरी लगाई व फिर क्योंकर अपनी कन्या उन्हें विवाह दी शुकदेवजी बोले सत्राजित नाम यादव द्वारकापुरी में रहता था जब उसने बहुत दिनतक सूर्य देवताका तप व ध्यान सच्चे

मनसे किया तब सूर्य भगवान्‌ने प्रसन्न होकर उसको दर्शन अपना दिया व स्यमंतक नाम मणि उसे देकर वोले तुम इस मणिको मेरे समान जान-कर नित्य विधिपूर्वक इसका पूजन करना तो सुखसे रहोगे व जिस नगर व घर में यह मणि रहैगी वहां रोग व दरिद्र किसी को न होकर महँगी अनाजकी नहीं पड़ैगी व जो कोई सच्चे मनसे इसकी पूजा करैगा उसके घर ऋद्धि सिद्धि बनी रहैगी ऐसा कहकर सूर्य देवता अन्तर्धान हो गये व सत्राजित वह मणि गलेमें डालकर अपने घर चला आया व ज्योतिषियों से शुभमुहूर्त पूंछकर उस मणिको वहुत अच्छे जड़ाऊ सिंहासन पर रक्खा व अपने नेम व धर्म से रहकर विधिपूर्वक प्रतिदिन उसका पूजन करने लगा व प्रभाव उस मणिका यह था कि जो कोई शास्त्रानुसार उसकी पूजा किया करै उसे बीस मन सोना वह मणि नित्य देती थी जब सत्रा-जित यादव उस मणि पूजन के प्रतापसे थोड़े दिनोंमें वड़ा धनाढ्य हो गया तब द्रव्यके अभिमानसे किसीको अपने बराबर नहीं समझने लगा एक दिन वह अभिमानपूर्वक स्यमन्तक मणि अपने गले में पहिन कर श्रीकृष्णजीकी सभामें चला जब यदुवंशियों ने जो वहां वैठे थे उस मणि का प्रकाश सूर्य के समान देखा तब वे लोग उसे सूर्य समझकर वोले अय द्वारकानाथ आपका प्रताप व यश सुनकर सूर्यदेवता तुम्हारे दर्शनवास्ते आवते हैं यह वचन यदुवंशियों का सुनकर श्यामसुन्दरने कहा यह सूर्य देवता नहीं हैं सत्राजित यादवने सूर्य भगवान्‌का तप करके स्यमन्तक मणि उनसे पाई थी वही मणि अपने गले में बांधे हुये चला आवता है जब सत्राजित सभा में पहुँचकर जहां पर यादव लोग चौपड़ खेल रहे थे बैठा व केशवमूर्ति व यदुवंशी उस मणिकी ओर देखने लगे तब वह मन में कुछ समझकर तुरन्त अपने घर चला गया इसीतरह कभी कभी सत्रा-जित वह मणि अपने गले में पहिनकर वहां जाया करता था एक दिन यदुवंशियोंने मुरलीमनोहरसे कहा महाराज यह मणि सत्राजितसे लेकर राजा उग्रसेनको दे दीजिये उसे शोभा नहीं देती यह सुनकर किसी समय श्रीकृष्णजीने सत्राजितकी परीक्षा लेनेवास्ते हँसते हँसते उससे कहा राजा

लोग सबमें श्रेष्ठ होते हैं इसलिये जिसके पास जो अच्छा पदार्थ हो
वह वस्तु उन्हें भेंट देना चाहिये ऐसी बात करनेसे लोक व परलोक
बनते हैं इसलिये तुम यह मणि राजा उग्रसेन को जिन्हें हमभी आपसे
बड़ा जानते हैं भेंट देकर संसार में यश उठा लेव यह बात सुनतेही सत्रा
जित यादव लालचवश उदास होगया व इस बातका कुछ उत्तर न दे
चुप होरहा व उन्हें दण्डवत् करके अपने घर चला आया सो वृन्दावन
विहारी की इच्छानुसार कि सूर्य व चन्द्रमा आदिक सब देवतों के
मालिक थे उसी दिन से जितना गुण उस मणि में था वह जाता रहा
सत्राजितने घर जाकर प्रसेन अपने भाई से कहा श्यामसुन्दरने मुझे
मणि राजा उग्रसेनको देनेवास्ते कहा था सो मैंने नहीं दिया यह
सुनतेही प्रसेन मूर्ख ने द्वारकानाथ अन्तर्यामी पर क्रोध किया और
मणि सत्राजित से लेकर अपने गले में बांध लिया व घोड़ेपर चढ़कर
में अहेर खेलने चला गया वहां एक हरिणके पीछे घोड़ा जो दौड़ाया
अपने साथवालोंसे विलग होकर पहाड़ की कन्दरा पास जिसमें एक
रहता था जापहुँचा जैसे शेर ने घोड़े की टाप सुनी वैसे बाहर निकल
प्रसेनको घोड़े व हरिणको मार डाला जब वह शेर प्रसेन के गले से मणि
लेकर अपनी कन्दरामें घुसने लगा तब रामचन्द्रजीके भक्त जाम्बवंत
वहां पहुँचकर उस शेरको कन्दराके द्वारेपर मारडाला और वह मणि

दो० वाकी इक कन्या हतीं महासुन्दरीरूप। ताके खेलनको दियो सो मणि महा

उस मणिके प्रकाशसे स्थान जाम्बवान्‌का जो अँधियारी कन्दरामें
आठोंपहर दिनके समान उजियाला रहने लगा जब प्रसेनके साथवालों
ने आनकर सत्राजित से कहा तुम्हारे भाईने वनमें एक हरिणके पीछे
घोड़ा दौड़ाया तो फिर उसका पता बहुत ढूंढ़नेपरभी नहीं मिला इसलिये
हमलोग लाचार होकर चले आये यह बात सुनतेही सत्राजितने
शोच करके मनमें संदेह किया कि श्यामसुन्दरने स्यमंतकमणि राजा
उग्रसेनके देनेवास्ते मुझसे कहा था सो मैंने नहीं दिया इसलिये उन्होंने
मेरे भाई को वनमें मारकर वह मणि लेलिया होगा सत्राजित इस बातको

शोच अपने मनमें रखकर दिनरात उदास रहने लगा पर श्रीकृष्णजीके भय से यह बात कह नहीं सक्ता था एक दिन रात्रिको शय्यापर सत्राजित की स्त्रीने उसे उदास देखकर पूछा॥

चौ० कहा कन्त मन शोचत भारी। मुझसे भेद बताओ सारी॥

यह बात सुनकर सत्राजितने कहा अय प्राणप्यारी स्त्रीके पेटमें कोई बात नहीं पचती वह सब हाल अपने घरका दूसरे से कहदेती है व अपना भला व बुरा नहीं समझती इसलिये अपने मनका भेद जिस बातमें खटकता हो स्त्रीसे कहना न चाहिये यह वचन सुनतेही वह झुंझलाकर बोली मैंने कौनसी बात तुम्हारी सुनकर बाहर कहदी थी जो ऐसा कहते हो क्या सब स्त्री एक तरहकी होती हैं जबतक तुम अपने मनका हाल मुझसे न बतलावोगे तबतक मैं अन्न जल नहीं करूंगी यह बात सुनकर सत्राजितने लाचारीसे कहा झूंठ सचका हाल तो परमेश्वर जाने पर मेरे मनमें एक बातका सन्देह है सो तुझसे कहताहूं तू किसीके सामने इस बातकी चर्चा मत कीजियो जब उसने कहा बहुत अच्छा किसीसे नहीं कहूंगी तब सत्राजित बोला एक दिन श्यामसुन्दरने मुझसे स्यमन्तकमणि राजा उग्रसेनको देनेवास्ते कहा था सो मैंने नहीं दिया इसलिये मुझे ऐसा मालूम होता है कि उन्होंने प्रसेनको बनमें मारकर वह मणि ले लिया होगा दूसरेकी सामर्थ्य नहीं है जो मेरे भाईको मारनेसक्ता सत्राजित तो यह बात अपनी स्त्री से कहकर सो रहा पर उसकी स्त्री रातभर शोच विचारमें जागती रहकर जब प्रातसमय उठी तब उसने अपनी सखी व दासियोंसे कहा श्रीकृष्णजीने प्रसेनको मारकर स्यमन्तकमणि लेलिया है यह बात रातको मेरे स्वामीने मुझसे कही थी परन्तु तुमलोग किसीके सामने यह चर्चा मत करना हे राजन् स्त्रियोंके पेटमें कोई बात नहीं पचती इसलिये जब यह चर्चा होते होते फैल गई तब श्यामसुन्दर के महलमें किसी स्त्रीने जाकर कहा ऐसी बात सत्राजितकी स्त्री कहती थी जब यह झूठा कलंक सुनकर मुरलीमनोहरकी स्त्रियां आपसमें यह चर्चा व शोच करने लगीं तब उनमें किसीने वृन्दावनविहारीसे कहा महाराज आपको

सत्राजित व उसकी स्त्री प्रसेनके मारने व स्यमन्तकमणि लेनेका क
लगावते हैं ॥

दो० चहुँदिशि फैली बात यह जानत राजा रंक। सो उपाय अब कीजिये जामें मिटै कलं

श्यामसुन्दर यह झूठा कलंक सुनकर पहिले अपने मनमें उद
होगये फिर कुछ शोच विचारकर राजा उग्रसेनके पास जहांपर वसुदे
बलरामजी आदिक अनेक यदुवंशी बैठेथे जाके कहा महाराज सब
यह झूठा कलंक लगाते हैं कि कृष्णने प्रसेनको वनमें मारकर स्यमन्त
मणि लेलिया है आप आज्ञा दीजिये तो मैं प्रसेन व उस मणिका प
लगाकर कलंक अपना छुड़ाऊं जब उग्रसेन यह बात सुनकर कुछ न
बोले तब श्यामसुन्दर दश पन्द्रह यादववंशी व प्रसेनके सेवकोंको
अहेर खेलती समय उसके संग थे अपने साथ लेकर उसे ढूंढ़ने निक
जहां प्रसेनने हरिणके पीछे घोड़ा दौड़ाया था वहां घोड़े के पैरका चि
देखतेहुये चले जब उस जगह जहां प्रसेन व घोड़ेकी लोथ पड़ीथी पहुँ
तब वहां शेरके पांवका चिह्न देखकर मालूम किया कि शेरने उसको म
डाला पर उस मणिका पता वहां नहीं मिला इसलिये मोहनप्यारे य
वंशियों समेत शेरके पैरका चिह्न देखते हुये जब उस कन्दराके द्वार
जहां जाम्बवन्त रहता था पहुँचे तब वहां क्या देखा कि शेर मराहुआ प
है पर मणि वहां दिखलाई नहीं दी यह अचम्भा देखकर यदुवंशियों
श्यामसुन्दरसे कहा महाराज इस वन में ऐसा बलवान् मनुष्य व पशु क
से आया जो शेरको मारके मणि लेकर इस कन्दरामें घुस गया हमलोगों
अपनी सामर्थ्यभर ढूंढ़ा प्रसेनके मारने का अपयश इस शेरको लगा अ
तुम्हारा झूठा कलंक छूटगया इसलिये फिर चलिये यहसुनकर दैत्यसंहार
ने कहा चलो इस कन्दरामें घुसकर देखें शेरको मारकर मणि कौन लेग
यदुवंशी बोले महाराज हमें इस अँधियारी कन्दराका मुख देखनेसे
मालूम होता है इसमें जाकर अपना प्राण क्यों देवें आपसे भी विनय क
हैं कि इस भयानक गुफामें न जाकर द्वारकाको चलिये हम सबकोई व
चलकर कहेंगे कि प्रसेनको शेरने मारकर स्यमन्तकमणि लेलिया व

शेरको न मालूम कौन मारकर वह मणि कंदराके भीतर लेगया यह हाल हमलोग अपनी आंखसे देख आये हैं इस बातके कहनेसे तुम्हारा कलंक छूट जायगा जब मारे डरके कोई उस गुफामें नहीं गया तब श्यामसुन्दरने अपने साथियों से कहा मेरा चित्त स्यमन्तक मणिमें लगा है इसलिये मैं किसीका कुछ डर न रखकर अकेला इसी कन्दरा में जाता हूं तुमलोग बारह दिनतक मेरी आशा यहां देखना इस अवधितक कन्दरासे बाहर आये तो अच्छाहै नहीं तो यहां का हाल घर पर जाकर कह देना॥

दो॰ द्वादश दिनकी अवधि करि गये तहां यदुराय। यादव जितने संगथे रहे द्वारपर छाय॥

हे राजन् केशवमूर्तिने उस अँधियारी कन्दरामें थोड़ी दूर जाकर क्या देखा कि एक स्थान व बाग बहुत अच्छा जाम्बवंत के रहनेका वहां बनाहै व जाम्बवती महासुन्दरी कन्या उसकी वह मणि हाथमें लिये हुई पालने में झूल रही है व जाम्बवन्त सोया होकर एक दासी उस पालनेके पास बैठी हुई दिखलाई दी जैसे कृष्णचन्द्रने हाथ बढ़ा कर स्यमन्तकमणि लेना चाहा वैसे दासी ने जाम्बवन्त को पुकारा सो जाम्बवन्त नींद से जागकर मुरलीमनोहर के साथ कुश्ती लड़ने लगा सत्ताईस दिनतक बराबर दिनरात जाम्बवन्तने श्यामसुन्दरसे मल्लयुद्ध करके अनेक दांव व पेंच अपने किये जब कोई दांव उसका वृन्दावनविहारीपर नहीं लगा व लड़ते लड़ते मारे भूंख व प्यासकेसब बलउसका घटगया तब दैत्यसंहारणने एक मूका ऐसा जाम्बवन्तके मारा कि वह घुटनेके बल बैठगया उस समय वह अपने मनमें विचार करने लगा सिवाय रामचन्द्र व लक्ष्मणजी के कोई संसारी मनुष्य इतनी सामर्थ्य नहीं रखता जो सत्ताईस दिनतक मेरे साथ लड़कर मुझसे जीतसकै इसलिये मेरे जानमें यह श्यामरूप रामचन्द्रजी का अवतार मालूम होताहै जिनके साथ लड़ने से मेरी यह दशा होगई इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जब जाम्बवन्तके हृदयमें ज्ञानका प्रकाश होकर उसे विश्वास हुआ कि ये रामचन्द्रजीका अवतार हैं तब श्यामसुन्दर भक्तहितकारी अन्तर्यामीने प्रसन्नहोकर उसीसमय रघुनाथ रूप धारण करके धनुष बाण लिये हुये उसको दर्शन अपना दिया जाम्ब

वन्त यह स्वरूप देखतेही साष्टांग दण्डवत् करके हरिचरणोंपर गिरपड़ा
परिक्रमा लेकर उनके सामने खड़ा होगया व बड़े प्रेमसे आंखों में आंसू
हुये हाथ जोड़कर विनय किया हे दीनानाथ सब जगत्के उत्पत्ति व पालन
करनेवाले अन्तर्यामी आपने बड़ी दया की जो पृथ्वीका भार उतारनेवाले
अवतार लेकर मुझे अपना दर्शन दिया नारदमुनि मुझसे कहगये थे कि
रामचन्द्रजी वासुदेव अवतार धरकर तेरे स्थानपर आवैंगे इसलिये मैं त्रेता
युगसे यहां रहकर तुम्हारे दर्शनोंकी आशा देखता था सो आज अपने
मनोरथको पहुँचा आप तीनों लोकके उत्पन्न व पालन करनेवाले होकर
सबसे पहिले थे व महाप्रलय होने उपरान्तभी सिवाय तुम्हारे कोई दूसरा
स्थित नहीं रहेगा आप राजा दशरथके पुत्र अयोध्यापुरी व सब जगत्के
राजा हैं तुम्हारा आदि व अन्त वेदभी नहीं जाननेसक्ता व शङ्ख व चक्र
गदा व पद्म आपके शस्त्र हैं व सब तरहका सुख तुम्हारी कृपासे जीवोंको
प्राप्त होताहै व आप सदा आनन्दमूर्ति रहते हैं किसी बातका शोच आपको
नहीं व्यापता व आप सबका मनोरथ पूर्ण करनेवाले हैं तीनों लोकमें किसी
को ऐसी सामर्थ्य नहीं है जो तुम्हारी महिमा व भेद जानसकै व आप
सीतापति लक्ष्मण व भरत शत्रुघ्नके बड़े भाई ऐसे सुन्दर हैं कि कामदेवभी
तुम्हारे रूपपर मोहित होजाताहै व तुम सदा शेषनागकी छातीपर शयन
करते हो व आपने राजा दशरथ अपने पिताकी आज्ञासे राज्य छोड़कर
लक्ष्मण व सीताजीसमेत चौदह वर्षतक वनवास किया व वनमें अनेक
राक्षसोंको मारकर ऋषीश्वर व हरिभक्तों को सुख दिया जब आपने शूर्प-
णखा की नाक काटकर खर दूषण व त्रिशिरा आदिकको मारडाला तब
रावण योगीका वेष बनाकर पंचवटीमें आया व सीताजीको अकेली देख
कर छलसे हरलेगया और उसने अपने पैरमें आप बसूला मारा जब सुग्रीव
बांदर जो बालि अपने भाईके डरसे विकल था तुम्हारी शरण आया तब
आपने बालि बांदर अधर्मीको मारकर सुग्रीवकी इच्छा पूर्ण की व हनुमान्
जीको अपना भक्त व सेवक समझकर उन्हें यश दिया जब आप बड़ीभारी
सेना भालू व बांदरों की अपने साथ लेकर समुद्रके किनारे पहुँचे तब

विभीषण रावणका भाई तुम्हारी शरण आया सो आपने उसे लंकापति कहा जब समुद्र अज्ञान व अभिमानकी राह तुम्हारे पास नहीं आया तब आपके क्रोध करने से समुद्रका पानी सूखने लगा और सब जलके जीव व्याकुल होगये यह दशा देखतेही समुद्र विनयपूर्वक तुम्हारे चरणोंपर आन कर गिरपड़ा व अपना अपराध क्षमा कराने वास्ते हाथ जोड़कर बोला महाराज आपने दर्शन देकर मुझे कृतार्थ किया यह दीन वचन सुनकर आप उसपर दयालु हुये फिर आप समुद्रमें पुल बँधवाकर भालू व बांदरों की सेनासहित पार उतर गये रावणको कुल परिवार व सेना समेत मार-कर विभीषणको लंकाका राज्य दिया व सीताको साथ लेकर अयोध्यापुरी में आये और ग्यारह हजार वर्ष वहांका राज्य किया उन दिनों त्रेतायुग था तबसे आज मैं तुम्हारा दर्शन पाकर जो ब्रह्मादिक देवतों को जल्दी ध्यानमें नहीं मिलता अपने बराबर किसी दूसरेका भाग्य नहीं समझता सो हे दीनानाथ जिसतरह आप दया करके अपने चरण यहां लेआये उसी तरह दयालु होकर आवनेका कारण बतलाइये यह वचन सुनकर श्याम-सुंदरने कहा हे जाम्बवन्त हम तेरी स्तुति सुनने से बहुत प्रसन्न हुये जो मणि तेरी कन्या हाथमें लिये खेलतीहै इसी मणिकी चोरी मुझे सत्राजित यादवने लगाई इसलिये मैं अपना कलंक छुड़ानेवास्ते यही मणि लेने आयाहूं सो मुझे देव यह वचन सुनतेही जाम्बवंतने मनसा वाचा कर्मणा से प्रसन्न होकर विनय किया हे महाप्रभु मेरे यहां एक स्यमन्तक व दूसरी जाम्बवती कन्या दो मणि हैं सो यह दोनों तुम्हारे भेंट करताहूं आप दया करके अंगीकार कीजिये जिसमें मेरा उद्धार हो यह सुनकर केशवमूर्ति बोले बहुत अच्छा मैंने तेरा कहना माना जैसे यह वचन जाम्बवन्तने सुना वैसे हर्षपूर्वक अपनी कन्या श्रीकृष्णजीको व्याहकर वह मणि दहेज में देदिया इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित इधर तो मोहन-प्यारे सत्ताईसवें दिन जाम्बवन्तसे विदा होकर स्यमन्तकमणि व जाम्बवती को साथ लिये अपने घर चले व उधर यदुवंशी चौबीस दिनतक उनकी आशा देख फिर निराश होकर वहांसे रोतेपीटते द्वारकामें आये जब राजा

उग्रसेन व वसुदेवजी आदिक द्वारकावासियों ने यह हाल सुना तब स
छोटे बड़े स्त्री व पुरुष अन्न जल छोड़कर अति विलाप करने लगे व स
ने सत्राजितको गालियां देकर अनेक दुर्वचन कहा और बहुत लोगों
सत्राजितको मारने चाहा पर बलरामजीने उन्हें मारनेसे वर्जकर समझा
तुमलोग कुछ चिन्ता मत करो दैत्यसंहारण स्यमन्तकमणि लिये हुये आ
घते हैं तीनों लोकमें कोई ऐसा नहीं है जो उनको दुःख देने व मारने
जब उनके समझाने परभी किसीको धैर्य नहीं हुआ तब रुक्मिणी आदि
सब स्त्रियां कृष्णचन्द्रको रोते रोते घवड़ाकर अपने महलसे बाहर निकलीं
आपसमें इकट्ठी होकर द्वारकावासियों समेत मोहनमूर्तिको ढूंढ़ने चलीं।

दो० माखन प्रभु बलवीर विनु धरैं नहीं मन धीर। सबमिलकर खोजनचलीं व्याकुलमहाशरीर॥

हे राजन् नगरके बाहर जो देवस्थान उन्हें दिखलाई देता था वहां
नता मानकर आगे चली जाती थीं जब नगरसे एक कोस बाहर देवी
मन्दिर पर पहुँचीं तब विधिपूर्वक पूजा करने उपरांत हाथ जोड़कर बोलीं
हे अम्बिका माता तुम सबकी इच्छा पूर्ण करती हो इसलिये हमलोग तु
से यह वरदान मांगती हैं जिसमें हमारे प्राणनाथ जल्दी अपना दर्शन
देकर हमलोगोंका दुःख हरैं जिस समय द्वारकानाथकी स्त्रियां देवीजी से
यह वरदान मांग रही थीं व राजा उग्रसेन यदुवंशियों समेत अपनी सभा
में बैठे हुये शोच कररहे थे उसी समय मुरलीमनोहर स्यमन्तकमणि
जाम्बवती को अपने साथ लिये हँसते हुये राजा उग्रसेनकी सभामें जा
खड़े होगये उनका चन्द्रमुख देखते ही वसुदेव आदिक ने अति प्रसन्न
होकर बहुत द्रव्यादिक उनके हाथसे दान व दक्षिणा दिलवाया और य
समाचार सुनकर रुक्मिणी आदिक स्त्रियां बड़े हर्षसे गावती व बजाव
अपने अपने मंदिर में आईं व एक यदुवंशी ने हँसी की राह मोहन
प्यारे से कहा॥

दो० मणिकारण कछु कहिगये जाम्बवन्तके धाम। ब्याहकरन पहुँचे वहां माखन प्रभु घनश्याम॥

केशवमूर्तिने यह बात सुनकर हँस दिया व उसी समय सत्राजित
बुला भेजा व स्यमन्तकमणि उसे देकर कहा तुमने हमको झूठा कलं

लेने मणिं व मारने प्रसेन का लगाया था सो तुम्हारे भाईको शेरने मारकर मणि लेलिया व उस शेरको जाम्बवन्त भालू मारकर मणि लेगया था सो जाम्बवन्तने अपनी बेटी मुझे ब्याह कर यह मणि दहेज में दिया है सो अपना मणि तुम लेव जब सत्राजितने वह मणि देखकर सब हाल सुना तब अतिलज्जित होगया उस समय तो वह श्यामसुन्दरकी आज्ञानुसार मणि लेकर अपने घर चला आया पर मनमें बहुत उदास होकर कहने लगा देखो मैंने बड़ा पाप किया जो झूठा कलंक वैकुण्ठनाथको लगाया अब मुझे उचित है कि सत्यभामा अपनी कन्या उन्हें ब्याहकर यह मणि दहेज में देडालूं तो मेरा अपराध छूटजावै ॥

दो० यह कन्या जगमोहनी सुन्दर महाअनूप। श्रीयदुपति को दीजिये ऐसी रत्नस्वरूप ॥

जब ऐसा विचारकर सत्राजितने अपनी स्त्री से पूंछा तब वह बोली हे स्वामिन् तुमने बहुत अच्छा विचारा है सत्यभामा श्रीकृष्णजी को देकर जगत् में यश लीजिये यह वचन सुनतेही सत्राजितने शुभ लग्न ठहरा कर सब वस्तु तिलककी अपने पुरोहित से वसुदेवजी के यहां भेज दिया तो राजा उग्रसेनने वह तिलक बड़े हर्ष से लेलिया और धूमधाम से बरात साजकर श्यामसुन्दरको ब्याहने आये तब सत्राजितने शास्त्रानुसार अपनी कन्या मुरलीमनोहरको ब्याहकर वही मणि व अनेक रत्नादिक दहेज में दिया सो श्रीकृष्णचन्द्रने और सब दहेज को लेलिया पर वह मणि उसे फेरकर कहा यह मणि हमारे कामकी नहीं है हमसे इसकी पूजा नहीं बन पड़ेगी यह मणि तुम अपने यहां रक्खो जब तुमने अपनी कन्या हमको विवाह दी तब सब धन तुम्हारे घरका हमारा हुआ व जो तुमने हमें कलंक लगाया था उस बातका भी कुछ अपने मनमें शोच मति करो अब हम तुमसे कुछ खेद नहीं रखते जिसकी वस्तु खोजाती है उसका सन्देह अनेक मनुष्योंपर होता है यह सुनतेही सत्राजितने लज्जित होकर वह मणि लेलिया व श्यामसुन्दर सत्यभामा को साथ लेकर बाजे गाजे समेत अपने घर आये इतनी कथा सुनकर परीक्षितने पूंछा हे स्वामिन् कृष्णचन्द्र वैकुंठनाथको झूठा कलंक क्योंकर लगा शुकदेवजी

बोले मुरलीमनोहरने भादौं सुदी चौथका चन्द्र देखा था इसलिये उन
झूठी चोरी लगी थी ॥

दो० भादौं शुक्ला चौथको चन्द्र निहारै जोय। यह प्रसंग श्रवणन सुनै तो कलंक नहिं हो

सत्तावनवां अध्याय।

सत्राजित व शतधन्वा का मारा जाना।

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जिस तरह शतधन्वा यादवने सत्राजि
को मारकर स्यमन्तकमणि उसकी लेलिया व मुरलीमनोहरके भयसे द्वा
रका छोड़कर भागा था वह हाल कहते हैं सुनो एक दिन किसीने द्वार
में आनकर श्याम व बलरामसे यह सन्देशा कहा कि युधिष्ठिर आदि
पांचो भाइयोंको दुर्योधनने लाक्षागिरिके कोटमें रखकर आधी रात
चारों ओरसे आगि लगवादी सो वह लोग अपनी माता समेत जल ग
यह हाल सुनते ही दोनों भाइयों को ऐसा शोच हुआ कि उसी समय र
पर चढ़कर अपनी फूफू व भाइयों की सुधि लेने वास्ते हस्तिनापुर क
गये जब श्याम व बलराम राजा दुर्योधनकी सभामें पहुँचे तब क्या देखे
कि राजा दुर्योधन व धृतराष्ट्र आदिक सब छोटे बड़े उदास बैठे हैं
भीष्मपितामह व द्रोणाचार्यकी आंखों से आंसू बहि रहा है व गांधारी
आदिक कौरवोंकी स्त्रियां पांचो भाइयोंको याद करके रोरही हैं जब य
दशा देखकर श्याम व बलरामजीभी उनके पास जा बैठे व युधिष्ठिर
हाल उनसे पूंछा तो किसीने कुछ उत्तर नहीं दिया परन्तु विदुरने श्याम
सुन्दरके निकट जाकर धीरेसे कह दिया कि दुर्योधन आदिकने तो पांचों
भाइयों के प्राण लेने में कुछ धोखा नहीं किया था पर तुम्हारी दयासे व
लोग बच गये हैं यह हाल सुनकर केशवमूर्ति वहांसे बागमें अपने डे
पर चले आये इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जब श्याम
व बलराम हस्तिनापुर चले गये तब उनके पीछे द्वारका में यह हाल हुआ
कि शतधन्वा यादव द्वारकावासी के यहां जिससे पहिले सत्यभामा
मँगनी हुई थी अक्रूर व कृतवर्माने जाकर कहा एकतो सत्राजितने झूठ
कलंक मणि चुरानेका द्वारकानाथको लगाया दूसरे अपनी बेटीकी मँगनी

पहिले तुम से करके फिर श्रीकृष्णको विवाह दी इसलिये तुम्हारी नाम-धराई जाति भाइयों में हुई इन दिनों श्याम व वलराम हस्तिनापुर गये हैं सो तू उसे मारकर अपना वैर क्यों नहीं लेता हमारे निकट यह वात उत्तम है कि रातको हम तीनों मनुष्य सत्राजितके घर पर चलकर उसे मारडालें व इतने दिनों तक उसने जो सोना स्यमन्तकमणिके प्रतापसे इकट्ठा किया है वह छीन लेवें यह वात मान कर शतधन्वा रातको अक्रूर व कृत-वर्मा के साथ सत्राजितके स्थानपर गया व अक्रूर व कृतवर्माको द्वारे पर खड़ा कर दिया और आप अकेला घरके भीतर जाकर सत्राजित को जो नींद में सोया था मारडाला व स्यमन्तक मणि व जो कुछ सोना उसके घरमें था लेकर वाहर चला आया जव सत्राजितको मारकर तीनों मनुष्य अपने अपने घर चले आये तव शतधन्वा अकेला अपने घर वैठकर शोच करने लगा देखो मैंने अक्रूर व कृतवर्मा का कहना मानकर श्रीकृष्णजी वैकुण्ठनाथसे वैर किया अव न मालूम वह मेरी क्या दशा करेंगे ॥

दो० कृतवर्मा अक्रूर मिलि मता दियो म्वहिं आय। साधु कहै जो कपटकी तासों कहा वसाय ॥

जव सत्राजितकी स्त्री यह दशा अपने पतिकी देखकर रोने पीटनेलगी व सत्यभामाने यह हाल सुनतेही वहां जाकर अपने पिताकी यह गति देखी तव उसने पहिले बड़ा विलाप किया फिर अपनी माताको धैर्य देकर सत्राजितकी लोथको तेलमें रखवा दिया व उसीसमय आप रथपर चढ़कर दैत्यसंहारणके पास हस्तिनापुरको गई ॥

चौ० देखतहीं उठि बोले हरी। घरहै कुशलक्षेम सुन्दरी ॥
सत्यभामा कह जोरे हाथ। तुमविन कुशल कहां यदुनाथ ॥

हे महाप्रभो शतधन्वा रात्रिको अधर्मकी राह सोती समय मेरे पिताको मारकर स्यमन्तकमणि लेगया ॥

चौ० धरे तेल में श्वशुर तुम्हारे। दूर करो सव शोच हमारे ॥

ऐसा कहकर जव सत्यभामा श्याम व वलरामके सामने अतिविलाप करने लगी तव द्वारकानाथने भी वलराम समेत आंखों में आंसू भरकर सत्यभामासे कहा तू अपने मन में धैर्य धर जो कुछ होना था सो होचुका

अब तेरा पिता जीने तो नहीं सक्ता पर जिसने तेरे बाप को माराहै हम मारकर बदला लेवैंगे व जबतक शतधन्वा को न मारूंगा तब दूसरा काम नहीं करूंगा जब यह बात सुनकर सत्यभामा को कुछ हुआ तब वृन्दावनविहारी उसी समय बलरामजी व सत्यभामा को लेकर द्वारका की ओर चले जब शतधन्वा ने सुना कि श्याम व बल हस्तिनापुरसे आते हैं तब वह रहना अपना द्वारका में उचित न जान स्यमन्तक मणि लिये हुये कृतवर्मा व अक्रूरके पास चला गया व जोड़कर बोला सुनो भाई मैंने तुम्हारे कहने अनुसार सत्राजितको कर वैकुण्ठनाथसे शत्रुता की सो अब श्याम व बलरामके हाथसे मेरा बचना कठिन है इसलिये तुम्हारे शरण आया हूं अपने कहने की रखकर जहां बतलावो वहां छिपकर रहूं॥

चौ० मोपर क्रोध कियो यदुनाथा। आवत लिये सुदर्शन हाथा॥
मोको जीवदान अब दीजै। अपने शरण राखि अब लीजै॥

नहीं तो हे अक्रूर तुम हमारा रथ हांको हम श्रीकृष्णजीसे लड़ेंगे।

दो० शतधन्वासे तुरतही उत्तर कह्यो सुनाय। अपराधी यदुनाथको कापै राखो जाय॥

हे शतधन्वा तुम अपने अज्ञानसे यह बात हमैं कहने आये हो पहिले तुमने नहीं समझ लियाथा कि सत्राजितको मारनेमें श्रीकृष्णजी सत्य की सहायता करैंगे हमसे तुम्हारी रक्षा नहीं होसक्ती जहां तुम्हारा मन वहां भाग जावो व हम वैकुण्ठनाथके सेवक होकर ऐसी सामर्थ्य रखते जो तुम्हारा साथ देकर उनके हाथ से अपना प्राण खोवैं व उनसे करके कोई जीता बचने नहीं सक्ता जिन्होंने गोवर्धन पहाड़ अपनी गुली पर उठा लिया व बड़े बड़े योद्धा राक्षसोंको क्षणभरमें मार डाला से कौन लड़ने सक्ता है संसारीलोग अपने अर्थवास्ते बहुत बातें कहते पर बुद्धिमान् मनुष्यको उचितहै कि अपनी हानि व लाभ समझकर काम करे जिसमें पीछे से दुःख न पावे हे राजन् जब अक्रूर व कृतवर्मा ऐसी रूखी रूखी बातें शतधन्वाको सुनाईं तब उसने अपने जीसे निरा होकर वह मणि अक्रूरके सामने फेंक दी व आप एक घोड़ेपर जो बा

कोस एक दिन में जाता था चढ़कर जनकपुरकी ओर भागा जब उसी दिन श्यामसुन्दरने द्वारकामें पहुँचकर उसके भागने का हाल सुना तब अपने स्थानपरभी न जाकर सत्यभामाको महल में भेज दिया व श्याम वबलराम दोनों भाइयोंने अपना रथ शतधन्वाके पीछे दौड़ाया तो जनकपुरके निकट उसको जा घेरा जब उसी जगह घोड़ा शतधन्वाका मरगया तब वह मुरलीमनोहर के रथकी आहट पाकर पैदल भागा जैसे दैत्यसंहारण ने उसको भागते देखा वैसे बलरामजीको रथपर छोड़कर आप उसके पीछे दौड़े व निकट पहुँचकर सुदर्शनचक्र से शिर उसका काट लिया जब उस का कपड़ा आदिक ढूंढ़ने पर भी वह मणि उसके पास नहीं मिली तब बलरामजी से आनकर कहा अय भाई मैंने शतधन्वाको वृथा मारा किस वास्ते कि स्यमन्तक मणि उसके पास नहीं मिली शतधन्वाके मारतेसमय बलरामजी उनके साथ नहीं थे इसलिये परमेश्वरकी माया से बलरामजी के मन में यह संदेह हुआ कि श्यामसुन्दरने वह मणि सत्यभामाके देने वास्ते हमसे छिपाया है तब उन्होंने केशवमूर्ति से कहा हे भाई वह मणि किसी दूसरेके पास है तुम द्वारकामें जाकर ढूंढ़ो एक दिन आप प्रकट हो जायगी मैं मिथिलापुर देखता हुआ पीछेसे आऊंगा इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् श्यामसुन्दर अन्तर्यामी बलरामजी के मन का हाल जानकर वहांसे द्वारकापुरी को गये व बलरामजी मिथिलापुरी में आये जब जनकपुरके राजाने उनके आवनेका हाल सुना तब सन्मानपूर्वक उन्हें राजमन्दिर पर लिवा लेगया और बड़े आदरभाव से उनको अपने यहां रक्खा जब राजा दुर्योधनने जो बलरामजी से प्रीति रखताथा यह हाल सुना कि इन दिनों बलभद्रजी कृष्णचन्द्रसे खेद मानकर जनकपुरमें टिके हैं तब वह मिथिलापुरी में आया व बलरामजी के पास जाकर उन्हें बड़े आदरभावसे अपने डेरेपर लिवा ले गया व विनयपूर्वक हाथ जोड़कर बोला मुझे बड़े भाग्यसे आपका दर्शन प्राप्त हुआ अब मेरे मन में यह इच्छा है कि आप कृपा करके थोड़े दिन यहां रहिये व मुझको अपना चेला बनाकर गदायुद्ध सिखलाइये यह बात सुनने व उसकी सबी

प्रीति देखने से बलदाऊजी दुर्योधनको चेला बनाकर वहां गदायुद्ध सि खानेलगे व श्यामसुन्दरने द्वारकामें पहुँचकर सत्यभामासे कहा कि सत्रा जितके बदले शतधन्वाको मैंने मारडाला पर वह मणि उसके पास नहीं मिली सत्यभामाको इस बातका विश्वास न होकर मनमें यह संदेह हुआ कि मुरलीमनोहर वहमणि बलरामजीको देकर मुझसे बहाना करतेहैं जब अक्रूर व कृतवर्माने शतधन्वाके मारे जानेका हाल सुना तब वह भी अपने प्राण का डर मानकर द्वारकासे भागे व कृतवर्मा दक्षिण दिशामें चलागया अक्रूरजी प्रयागक्षेत्रमें चले आये और स्नान व दान करने उपरांत गयामें जाकर पितरों का श्राद्ध किया व वहां से काशी जी में आनकर रहने लगे अक्रूर प्रतिदिन बीस मन सोना स्यमन्तक मणि से पाकर दानादिक शुभ कर्म में खर्च कर डालता था श्यामसुन्दर अन्तर्यामी यह सब हाल जानते थे पर उन्होंने यह भेद किसीसे नहीं कहा कि अक्रूर स्यमन्तक मणि लेकर काशीजी में टिकाहै सब द्वारकावासी यह समझतेथे कि अक्रूर व कृत वर्माने सत्राजितके मारनेवास्ते सम्मत किया था इसलिये श्रीकृष्णके डरसे वे दोनों भागगये हैं जब बलरामजी कुछ दिन बीते दुर्योधनको गदायुद्ध सिखलाकर द्वारकामें आये तब मुरलीमनोहरने यदुवंशियोंको साथ लेकर लोथ सत्राजितकी तेल में से निकलवाया व दग्धक्रियाकर्म उसका आप किया इतनी कथा सुनाकर शुकदेव मुनि बोले हे राजन् अक्रूरजी जिस देश व गाँवमें रहते थे उस जगह हरिइच्छासे प्रजाकी चाहनानुसार पानी बरसकर अन्न महँगा नहीं होताथा और वहां पर कुछ रोग महामारी आ दिक का न होकर सब छोटे बड़े आनन्दपूर्वक रहते थे जब वैकुण्ठनाथ की यह इच्छा हुई कि फिर अक्रूरको बुलाना चाहिये तब द्वारकापुरीमें अव र्षण होकर रोग व महँगी से प्रजालोग दुःख पावने लगे यह दशा अपने देशकी देखतेही यदुवंशियों ने घबड़ाकर श्यामसुन्दरसे कहा ॥

चौ० हमतो शरण तुम्हारे रहैं। महाकष्ट अब क्योंकर सहैं ॥

महाराज न मालूम परमेश्वरकी क्या इच्छा है जो पानी नहीं बरसता हमलोग तुम्हें छोड़कर अपना दुःख किससे कहैं आप दया करके कोई

ऐसा उपाय कीजिये जिसमें हमारा दुःख छूटजाय यह आधीन वचन सुन कर द्वारकानाथने कहा कि जिस जगहसे साधु व महात्मा चलाजाता है वहांके लोग अनेक तरहका दुःख पावते हैं जबसे अक्रूर द्वारका छोड़कर चलेगये तबसे यहां अन्नकी महँगी व रोगकी आधिक्यता है यह वचन सुनकर यदुवंशी बोले हे कृपानिधान आपने सच कहा हमलोगभी यह बात समझते हैं पर तुम्हारे डरसे कहि नहीं सक्ते थे अक्रूरजी यदुवंशियों में श्रेष्ठ होकर तुम्हारे डरसे भागे हैं जबतक वह द्वारकामें रहे तबतक हमलोगों ने दुःख नहीं पाया सो आप दया करके अक्रूरको यहीं बुलाइये जिसमें सब कोई सुख पावैं यह बात सुनकर श्रीकृष्णजीने कहा बहुत अच्छा तुम लोग अक्रूरको ढूंढ़कर सन्मानपूर्वक यहां लिवा लेआवो यह वचन सुनते ही पांच सात यदुवंशी मिलकर अक्रूरको ढूंढ़ने निकले जब काशीजी में पहुँचकर पता उनका पाया तब उनके पास जाकर विनय किया हे अक्रूर जी तुम्हारे विना द्वारकावासियों ने बड़ा दुःख पाया मुरलीमनोहरके रहने परभी वहां अवर्षण होकर अकाल पड़ा इसलिये श्यामसुन्दरने तुमको बुलाकर कहाहै कि मेरी भक्ति रखते हो तो निस्संदेह चले आवो॥

चौ० साधुनके वश श्रीपति रहैं। तिनसे सब सुख सम्पति लहैं॥

यह बात सुनतेही अक्रूरजी बड़े हर्षसे उसी समय स्यमन्तकमणि लेकर यदुवंशियों के साथ द्वारकाको चले जब अक्रूरजी नगरके निकट पहुँचे तब श्याम व बलराम आगे से आनकर उनको सन्मानपूर्वक लिवा लेगये जैसे अक्रूर द्वारकापुरी में पहुँचे वैसे परमेश्वरकी इच्छानुसार पानी बरसा व अन्न सस्ता होकर सब किसीका रोग छूटगया एकदिन वृन्दावनविहारीने अक्रूरको बुलाकर कहा अय चाचा अब तुम उदासी छोड़कर प्रसन्न रहाकरो हमने तुम्हारा अपराध क्षमा किया और तुम्हारे पास जो स्यमन्तकमणि है उसे किसीके सामने हमारे पास लेआवो जिसमें बलरामजी व सत्यभामा का सन्देह छूटजावै जिसकी वस्तु हो उसको देनी चाहिये जब वह न रहै तो उसके पुत्रको देवै व बेटाभी न हो तो उसकी स्त्रीको देवै व स्त्री भी न होवै तो कन्याके पुत्रको देवै वह भी न हो तो उसके भाईको देडालै जब

भाई भी न रहै तो उसके कुलपरिवार में जो कोई हो उसे देना चाहिये जिसके कुलमें कोई भी न हो तो उसके गुरुको देडालै वह भी न हो तो उसके गुरुके पुत्रको सौंप देवै जब वह भी न रहै तो वह वस्तु ब्राह्मणको देदेवे दूसरेका धन कभी न लेना चाहिये सो सत्राजितके पुत्र नहीं है इसलिये सत्यभामाका वेटा यह मणि लेगा यह वचन सुनतेही अक्रूरने वह मणि राजा उग्रसेनकी सभामें जहांपर बलभद्र आदिक सब यदुवंशी बैठे थे लाकर श्यामसुंदरके सामने रखदिया व हाथ जोड़कर विनय किया हे दीनानाथ यह मणि लेकर मेरा अपराध क्षमा कीजिये आजतक जितना सोना इस मणिने मुझको दिया था वह सब मैंने शुभकर्म में खर्च करडाला जब वह देखकर बलरामजी व सत्याभामाका संदेह छूटगया तब वे दोनों बहुत लज्जितहोकर मोहनप्यारेके चरणोंपर गिरपड़े व बलदाऊजीने रोकर कहा हे दीनानाथ मुझसे वड़ा अपराध हुआ जो तुम्हारे ऊपर झूठा संदेह किया इसलिये वनमें जाकर मरजाऊंगा अब मैं इस योग्य नहीं रहा जो अपना मुँह आपको दिखलाऊं जब यह दशा बलभद्रजीकी गोपीनाथने देखी तब उनको अपनी छातीसे लगालिया व बहुत धैर्य देकर कहा तुम किसी बातकी चिन्ता मत करो मैंने तुम्हारे संदेह करनेसे कुछ खेद नहीं माना संसारमें मायारूपी स्त्री व द्रव्य दोनों बहुत बुरी होकर स्त्री व पुरुष व पिता व पुत्रमें विरोध करा देती हैं इसलिये ज्ञानी मनुष्यको इन दोनोंसे अधिक प्रीति रखना न चाहिये जब श्यामसुन्दरने इसीतरह उन्हें बहुत धैर्य देकर स्यमन्तकमणि सत्यभामाको सौंप दिया तब उसके मनका शोच छूटिगया इतनी कथा सुनकर परीक्षितने पूंछा हे मुनिनाथ जब अक्रूर ऐसा गुण रखता था तो सत्राजित उसके सामने क्यों मारा जाकर वह आप किसवास्ते भाग गया शुकदेवजीने कहा हे राजन् जिस दिनसे अक्रूरने शतधन्वाको सत्राजितके मारनेवास्ते सम्मत दिया उसी दिनसे सब गुण उसका जाता रहा यह बात सुनकर परीक्षित बोले महाराज आपने सच कहा कुसंगति करनेके सिवाय हानिके कुछ लाभ नहीं होता अक्रूरका सुलक्षण जातारहा तो कौन आश्चर्य है पर आप यह कहिये कि अक्रूरमें ये सब गुण किसतरह प्रकट

थे शुकदेवजीने कहा हे राजन् एक समय काशीजीमें अवर्षण होकर बड़ी महँगी पड़ी व उन्हीं दिनों सुफल्क यादव बड़ा धर्मात्मा व सत्यवादी व हरिभक्त किसी संयोगसे वहां जा पहुँचा जब उसके जातेही हरिइच्छासे बड़ा पानी वर्षकर सब लोगोंने सुख पाया तब काशीनरेशने प्रसन्न होकर गांदिनीनाम अपनी कन्या उसको विवाह दी सो उसी कन्यासें अक्रूर उत्पन्न होकर सुफल्कका गुण उसमें प्रकट होगया ॥

दो० मणिलीला अद्भुत महा कहै सुनै जो कोय। ताको कबहूं जगतमें कछु कलंक नहिं होय॥

अट्ठावनवां अध्याय।

श्यामसुन्दरको कालिन्दी व सत्या व भद्रा व लक्ष्मणा आदि से विवाह करना ॥

शुकदेजीने कहा हे परीक्षित श्यामसुन्दर सत्राजित का मरना सुन कर युधिष्ठिर आदिको विना देखे हस्तिनापुरसे चले आये थे सो मन उनका अर्जुन आदिक से भेंट करने वास्ते चाहता था व हाल युधिष्ठिर आदिक का इस तरह पर है जब राजा दुर्योधनने पांचो भाई पाण्डवों व कुन्ती उनकी माता को लाखके कोटमें रखकर आग लगवादी तब वे लोग सुरंग के राह जो विदुरजीने पहिले से बनवा रक्खा था बाहर निकल आये और संन्यासीवेष में अपने को छिपाकर कहीं रहने लगे व एक भिल्लिनि अपने पांच बेटों समेत जो उसी कोटमें जलकर मरगईथी उनकी हड्डी देखने से दुर्योधनको विश्वास हुआ कि युधिष्ठिर आदिक जल गये व उन्हीं दिनों में राजा द्रुपदने अपनी कन्याका स्वयंवर रचा सो वहांपर दुर्योधन आदिक सब पृथ्वी के राजा इकट्ठे हुये व वेदव्यास व धूम्र ऋषी-श्वरके कहजानेसे अर्जुन आदिक पांचो भाई भी अपनी माताको किसी जगह छोड़कर संन्यासीवेष बनाये हुये उस स्वयंवर में पहुँचे जिस समय द्रौपदी चन्द्रमुखी सोलहों शृङ्गार किये अङ्ग अङ्ग पर गहना जड़ाऊ पहिने फूलोंका गजरा हाथमें लिये वहांपर जहां सब राजा बैठे थे आनकर खड़ी हुई तो उसकी सुन्दरताई देखकर सब छोटे बड़े मोहित होगये उस समय धृष्टद्युम्न द्रौपदीके भाई ने पुकारकर कहा जो कोई कड़ाहे में मछली की परछाहीं देखकर शिर नीचे किये हुये बाणसे मच्छको वेधै उसे यह कन्या

विवाह देऊंगा यह वचन सुनतेही राजा शिशुपाल ने उठकर वह धनु
जो मछली वेधनेवास्ते राजा द्रुपदने वहां रखवाया था उठाने चाहा
वह धनुष उठाने नहीं सका और लज्जित होकर फिर आया और यही
दशा राजा जरासन्धकी भी हुई तब कर्णने उस धनुष को चढ़ाकर मच्छ
वेधना चाहा उससमय द्रौपदी कर्णसे बोली तू सूतपुत्र होकर ऐसी सामर्थ्य
नहीं रखता जो मुझे विवाह लेजावे यह वचन सुनते ही कर्णने द्रौपदी
ओर देखकर वह धनुप पृथ्वीपर धर दिया व अपनी जगह आनबैठा
यह दशा उन लोगोंकी देखकर और दूसरे राजा मच्छ वेधने से निरा
होगये तब अर्जुनने युधिष्ठिर बड़े भाई की आज्ञा लेकर जैसे उस मच्छ
को अपने बाणसे वेधडाला वैसे द्रौपदीने जयमाल उनके गलेमें पहि
दिया यह हाल देखते ही दूसरे राजोंने डाहसे आपसमें कहा बड़े शोक
लज्जा की वात है जो हमलोगों के सामनेसे यह संन्यासी राजकन्या
लेजावै जब ऐसा विचारकर मूर्ख राजोंने अर्जुनका सामना किया
पांचो भाई पाण्डव उन्हें युद्ध में जीतकर द्रौपदीको अपनी माता के पा
लेआये व कुन्ती माताकी आज्ञानुसार अर्जुन आदिक पांचो भाइयों
उसे अपनी स्त्री बनाकर रक्खा जब यह हाल दुर्योधनको मालूम हु
कि युधिष्ठिर आदिक पांचो भाई नहीं जले और जीते बचि गये हैं
विदुरको भेजकर उन्हें बुलाया व आधा राज्य अपना उनको बांट दि
जब युधिष्ठिर आदिक पांचो भाइयोंने आधा राज्य अपना पाया तब
हस्तिनापुरके निकट इन्द्रप्रस्थ नाम एक नगर बहुत अच्छा बसाकर
नन्दपूर्वक राज्य करने लगे व अनेक राजोंको जीतकर अपने वशमें
लिया यह समाचार पातेही मोहनप्यारे कई यदुवंशियों को साथ ले
इन्द्रप्रस्थको गये जब देवकीनन्दन उस नगरके निकट पहुँचे तब युधि
आदिक पांचो भाई यह समाचार सुनतेही आगे से आनकर सन्मानपू
उन्हें राजमन्दिर पर लिवा लेगये व श्रीकृष्णजीने कुंती के पास जा
उसके चरणोंपर शिर अपना रख दिया तब कुन्तीने श्यामसुन्दर को गो
में बैठाकर बहुतसा प्यार किया जब द्रौपदी कुन्तीकी आज्ञानुसार

झाड़े हुये हरिचरणों पर गिर पड़ी तव मुरलीमनोहरने उसके शिरपर हाथ रखकर उसे अशीश दिया फिर कुन्तीने श्यामसुंदरको जड़ाऊ चौकीपर बैठाकर प्रसन्नता से उनकी आरती की व छत्तीस व्यंजन बनाकर उन्हें खिलाया जब श्यामसुन्दर भोजन करके पान व इलायची खाने लगे उस समय कुन्तीने वसुदेव व शूरसेन व बलरामजी आदिक की कुशल पूंछ कर उनसे कहा महाराज तुम्हारी कृपाका हाल मैं कहांतक वर्णन करूं पहिले अक्रूरको मेरी सुधि लेने वास्ते भेजकर दूसरी बेर आप आयें ॥

दो० जब तुम प्यारे प्रीति करि पठयो श्रीअक्रूर । तबहीं मन धीरज भयो गयो कष्ट सब दूर ॥

हे दीनानाथ उसी दिनसे मैंने जाना कि आप मेरे सहायक हैं जब आप ऐसे त्रिलोकीनाथ मेरी रक्षा करनेवाले हैं तो मैं किसी का डर नहीं रखती मुझे इस बात का विश्वास है कि जो कोई तुम्हारे शरण आया उसे कुछ दुःख नहीं होता जिस तरह तुम अपने भक्त व तीनों लोकोंका दुःख छुड़ा देते हो उसीतरह मेरे बेटोंको भी अपने शरणागत जानकर उनकी रक्षा करो ॥

चौ० जबजब बिपति परी हरि भारी । तब तब रक्षा करी हमारी ॥
अहो कृष्ण तुम परदुखहरणा । पांचो भाय तुम्हारी शरणा ॥

जिसतरह हरिणी अपने झुण्डसे बिलग होकर भेड़ियेका डर रखती है उसीतरह मेरे पांचो पुत्र दुर्योधन आदिक से अपने प्राणका भय रखते हैं जब कुन्ती यह कह चुकी तब युधिष्ठिर ने श्यामसुन्दर के आगे हाथ जोड़कर विनय किया हे त्रिलोकीनाथ मैं जानता हूं कि पिछले जन्म कोई शुभ कर्म मुझसे हुआ था जिसके प्रतापसे तुम्हारे चरण जिनका दर्शन ब्रह्मादिक देवतोंको जल्दी ध्यानमें नहीं मिलता सो मेरे घरआये ॥

दो० जिन चरणनकी रेणुसों ममघर भयो पुनीत । केहि मुखसों वर्णन करौं माखन प्रभू सुनीत ॥

हे महाप्रभो हमलोग अनाथ होकर सिवाय तुम्हारी दया व कृपा के दूसरे का भरोसा नहीं रखते मुझे ऐसी सामर्थ्य नहीं है जो आप वैकुण्ठ-नाथकी स्तुति वर्णन करनेसकूं जिसतरह आपने मुझको अपना दास जानकर दयाकी राह यहां कृपा की उसीतरह चार महीने बरसात भर यहां

रहकर अपने दासों को सुख दीजिये यह दीन वचन कुंती व युधिष्ठिर सुनकर वृन्दावनविहारी भक्तहितकारी ने उनको बहुत धैर्य दिया व महीने वहां रहकर प्रतिदिन नये नये सुख उन्हें देनेलगे एक दिन श्याम सुन्दर व अर्जुन राजा युधिष्ठिरसे आज्ञा लेकर रथपर बैठके वनमें खेलने वास्ते गये सो अर्जुन ने कई शेर व चीता व भालू व शूकर व रिण व साबर व रीछ आदिकका शिकार मारा व मांस हरिण व साबर राजमन्दिरपर भेज दिया जब बहुत परिश्रम करनेसे मुरलीमनोहर व अर्जुन को प्यास मालूम हुई तब दोनों ने यमुना किनारे जाकर पानी पिया वृक्षकी छाया में सोगये ॥

दो० श्रीयमुना शोभित महा जामें उठत तरंग। शीतल पवन बहै सदा फूले कमल सुरंग॥

जब अर्जुन थोड़ी देर सो कर टहलता हुआ यमुना किनारे गया तब उसने क्या देखा कि यमुनाजल में सुनहला जड़ाऊ मन्दिर बना है उसमें एक कन्या महासुन्दरी बैठी हुई तप करती है यह चरित्र देखते अर्जुनने उस कन्यासे पूछा तुम किसकी बेटी कौन नाम होकर यहां किस कारण अकेली बैठी तप करती हो॥

दो० यह सुनकर बोली तभी महामनोहर बाम। पिता हमारे सूर्य हैं कालिन्दी मम नाम॥

जिन दिनों कृष्णचन्द्र आनन्दकन्द वृन्दावनमें विहार करते थे तब से मैं उस मोहनीमूर्तिपर मोहित होकर उन्हें अपना पति बनाया चाहती हूं व मैंने मनसा वाचा कर्मणा से यह प्रण किया है कि सिवाय वैकुण्ठ नाथके दूसरे से विवाह नहीं करूंगी सूर्यदेवता ने मेरी इच्छा जानकर यह मन्दिर रहनेवास्ते बनवा दिया सो अपने पिता की आज्ञानुसार दिन रात यहां रहकर हरिचरणोंका ध्यान व स्मरण करतीहूं पर मैंने सुनाहै कि श्यामसुन्दरपर अनेक स्त्रियां महासुन्दरी मोहित होकर आठोंपहर उनकी सेवामें रहती हैं इसलिये मुझ गरीब बिचारीका उनके पास द्वारकामें पहुं चना बहुत कठिन है कदाचित् वे दयालु होकर अपना दर्शन देवें तो मेरी कामना पूर्ण होसक्ती है॥

चौ० वे सबके मनकी गति जानैं। दासनकी बिनती नित मानैं॥
जबलों नहिं पूजै मम आसा। तबलों जल में करों निवासा॥

अर्जुन यह बात सुनतेही वहांसे हँसता हुआ श्यामसुन्दरके पास आन कर बोला महाराज यमुनाजलमें एक महासुन्दरी तुम्हैं अपना पति बनाने वास्ते तप करती है तुम ऐसे भाग्यवान्हौ कि तुम्हारे पीछे पीछे महासुन्दरी स्त्रियां दौड़ा करती हैं यह सुनतेही श्यामसुन्दर वहांसे उठकर यमुना किनारे चले गये व अर्जुन ने पहिलेसे जाकर उस चन्द्रमुखी से कहा जिन्हें तुम अपना पति बनाया चाहती हो वही द्वारकानाथ अविनाशी पुरुष यहां आते हैं जैसे यह वचन कालिन्दी ने सुना वैसे मारे हर्ष के आगे दौड़कर हरिचरणोंपर गिरपड़ी व परिक्रमा लेने उपरान्त हाथ जोड़कर सन्मुख खड़ी होगई जब मुरलीमनोहरने उसकी सच्ची प्रीति देखकर हँसते हुये उसका हाथ पकड़ लिया तब कालिन्दीने विनयपूर्वक कहा हे प्राणनाथ मैं मनसा वाचा कर्मणा से आपकी दासी होकर तुम्हारे साथ चलने को तैयार हूं पर संसारी व्यवहार व मर्याद वेद व शास्त्र जो कुछ आपने बना दियाहै उसके अनुसार चलना चाहिये यह वचन सुनकर केशवमूर्ति ने उसीसमय सूर्य देवता के पास जाकर कहा तुम अपनी कन्या हमैं देव तब सूर्य देवता ने उसी क्षण वहां आनकर वह कन्या श्रीकृष्णजी को संकल्प दी तब श्यामसुन्दर उसे रथपर चढ़ाकर इन्द्रप्रस्थमें आये वहां पर विश्वकर्माने पहिलेसे वैकुण्ठनाथकी इच्छानुसार एक स्थान बहुत अच्छा बना रक्खा था उसीमें कालिंदीको उतारकर एक रूप अपना उसके पास रक्खा व दूसरे स्वरूप से अर्जुन को साथ लिये हुये कुन्तीके घर चले गये एक दिन राजा युधिष्ठिर ने केशवमूर्ति से विनय किया हे महाप्रभो ऐसी दया कीजिये कि जिसमें मेरे रहनेवास्ते एक स्थान बहुत अच्छा तैयार होजावे यह वचन सुनतेही गोपीनाथने विश्वकर्माको आज्ञा दी तो उसने द्वारकापुरी में ऐसे उत्तम अनेक स्थान तुरन्त युधिष्ठिर आदिकके रहने वास्ते बना दिये जब पांचो भाई उसमें हर्षपूर्वक रहने लगे तब एक दिन रातको जहां मुरलीमनोहर व अर्जुन बैठेथे अग्निदेवताने आनकर कृष्ण-

चन्द्रसे विनय किया महाराज मुझे अजीर्णका रोग उत्पन्न हुआहै सोकिसी तरह नहीं जाता मैं नन्दनवनको जहां अनेक जड़ी व बूटी गुणवती लगी हैं जलादेऊं तो मेरा रोग छूटजावे श्यामसुन्दरने कहा बहुत अच्छा तुम जाकर उसे जलादेव अग्नि हाथ जोड़कर बोले हे दीनानाथ उस बागकी रक्षा इन्द्र करता है मैं अकेला जाऊं तो इन्द्र पानी बरसाकर मेरी ज्वाला ठंढी कर देगा यह बात सुनकर लक्ष्मीपति ने अर्जुन से कहा हे भाई तुम अग्निके साथ जाकर नन्दनवन इसे जलाने देव जिससे इसका रोग छूट जावै अर्जुन उनकी आज्ञानुसार धनुष बाण उठाकर अग्निके साथ चला गया व उस बाग में पहुँचकर अग्निसे कहा तुम अपनी इच्छानुसार यह बाग जलादेव मैं तुम्हारी रक्षा करनेवास्ते खड़ाहूं जब अग्नि देवता आम व इमली व बेर व पीपर व पाकर व महुआ व जामुन व खिरनी व कचनार व गूलर आदिक वृक्ष वहां के चारों तरफ से जलाने लगे व सब पशु पक्षी आदिक वहां के अपना अपना प्राण लेकर जिधर तिधर भागे और धुवां आकाश में पहुँचा तब राजा इन्द्र ने मेघपति को बुलाकर आज्ञा दी तुम अभी जाकर ऐसा पानी नन्दन बागपर बरसावो जिसमें सब अग्नि बुझ जाय व कोई पशु व पक्षी जलने न पावै जब यह आज्ञा पातेही मेघ राज ने दल बादलकी सेना साथ लिये हुये नन्दन बाग पर जाकर पानी बरसाया तब अर्जुन ने पवन बाण मारकर सब बादल को इस तरह जहां तहां उड़ा दिया जिस तरह हवा से रुई के फूहे उड़ जाते हैं व बाणों से नन्दन बाग के चारों ओर ऐसा पिंजरा बना दिया जिसमें कोई वहां का पशु पक्षी बाहर न जावे व पानी की बूंद उस जगह पहुँचने न पावे जब अग्नि देवता आनन्दपूर्वक बाग जलाते हुये निकटस्थान मय नाम दानवके पहुँचे तब उस दानवने जलनेके डरसे अर्जुन के पास आनकर विनय किया हे राजकुमार मुझे अपनी शरणागत समुझकर मेरा प्राण इस अग्निके हाथसे बचावो यह दीन वचन सुनतेही अर्जुनने प्रसन्न होकर अग्निसे कह दिया तुम मय दानवका घर मत जलाओ जब अग्नि देवताने अर्जुनकी आज्ञासे मय दानवका स्थान छोड़कर और सब नन्दन

बाग को जला दिया तब मय दानवने अर्जुनका उपकार मानकर उससे मित्रताई की व अपनी मायासे एक स्थान सभाका बहुत उत्तम युधिष्ठिर आदिके बैठने वास्ते इन्द्रप्रस्थमें बना दिया जिसे देखकर हमलोग मोहित होजाते थे उसमें कई जगह ऐसे कुण्ड बिल्लौरके साफ़ बने थे जिसको देखकर पानी भरा हुआ मालूम होता था व किसी जगह पानी भरे हुये कुण्ड सूखे दिखलाई देते थे एक दिन राजा दुर्योधन वह स्थान देखनेवास्ते गया जब पानीमें भीगनेके सन्देह से अपना जामा उठाया तब भीमसेन हँसने लगा इसलिये दुर्योधन बहुत लज्जित होकर अपने घर चला आया व उसी दिनसे दुर्योधनने पांडवों के साथ अधिक शत्रुता मनमें बढ़ाई जब अग्निदेवताका रोग अर्जुनकी सहायता करनेसे छूट गया तब उसने बहुत प्रसन्न होकर गांडीव नाम धनुष व दिव्य कवच व एक रथ चार घोड़े श्वेतवर्ण व दो तरकस जिसके बाण कभी नहीं घटते थे व एक तलवार व ढाल अतिउत्तम अर्जुन को दिये ॥

दो० कालिन्दी सुख देनको पांडुसुतनके काज। अग्निभार उपजायके रहे तहां यदुराज ॥

जब श्यामसुन्दरने चार महीने इन्द्रप्रस्थमें रहकर राजा युधिष्ठिर से बिदा चाही तब पांचो भाई पांडव व कुन्ती व द्रौपदी आदिक बहुत उदास होगये इस वास्ते वसुदेवनंदन उन्हें धैर्य देने उपरांत अर्जुन व कालिन्दीको साथलेकर जब कई दिनमें आनन्दपूर्वक द्वारकापुरी पहुँचे तब उनके दर्शन से सब छोटे बड़ोंने सुख पाया कई दिन बीते कृष्णचंद्रजीने राजा उग्रसेन से कहा महाराज कालिन्दी सूर्यदेवता की बेटी जो हमारे संग आई है उसका विवाह मेरे साथ कर दीजिये यह वचन सुनतेही उग्रसेनने शुभ लग्नमें श्यामसुन्दर व कालिन्दीका विवाह बड़े धूमधाम से कर दिया इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जिसतरह मुरलीमनोहर मित्रविन्दाको विवाह लाये थे उसका हाल सुनो श्यामसुन्दरकी फुआ राजदेवी नाम उज्जैन के राजा से विवाही गई थी जब उसकी मित्रविंदा कन्या अतिसुन्दरी व चंद्रमुखी उत्पन्न होकर विवाहने योग्य हुई तब राजा मित्रसेन उसके भाईने स्वयंवर उसका रचकर सब जगह नेवता भेजा सो

अनेक देश के राजा वहां आनकर इकट्ठे हुये यह हाल सुनकर वसुदे-
नन्दन अन्तर्यामी भी जिनकी चाहना व भक्ति वह कन्या हृदय में रख-
थी अर्जुन समेत उज्जैन को गये और वहांपर देश देश के प्रतापी रा-
स्वयंवरमें बैठे थे वहां जाकर खड़े हुये उसी समय मित्रविंदाने सो-
शृंगार किये हाथमें जयमाल लिये उस स्थानपर आनकर जैसे मो-
मूर्तिको देखा वैसे उनपर मोहित होकर वह माला उनके गलेमें डा-
यह हाल देखकर सब राजा अपने अपने मनमें पछिताने लगे व रा-
दुर्योधन जो अपने भाइयों समेत वहां गया था मनमें डाह उत्पन्न ह-
मित्रसेन व विन्दसेन राजकन्याके भाइयोंसे बोला सुनो यार कृष्ण तु-
मामाका बेटा राजकन्याको विवाह लेजायगा तो इस संसार के -
तुम्हारी हँसी करैंगे इस लिये तुम अपनी बहिनको जाकर समझा दो-
वह इनसे अपना विवाह न करै नहीं तो सब राजोंमें तुम्हारी हँसी हो-
यह वचन सुनतेही जैसे मित्रसेन ने अपनी बहिनको समझाया वैसे -
श्यामसुन्दरके निकटसे हटकर अलग खड़ी होगई तब अर्जुनने झुक-
श्रीकृष्णजीके कानमें कहा महाराज इस समय आप किसीका संदे-
करैंगे तो वात विगड़ जायगी जो कुछ करना हो सो तुरन्त कीजिये यह -
सुनतेही वृन्दावनविहारीने झपटकर स्वयंवर के बीचमें मित्राविन्दाका ह-
पकड़ लिया व उसको अपने रथपर बैठाकर द्वारकाको चले यह हा-
देखते ही दूसरे राजा जो वहां थे अपने अपने रथ व घोड़ोंपर चढ़-
उनके पीछे दौड़े व अनेक रंगके शस्त्र लिये हुये उनको चारों ओरसे घे-
लिया जब दैत्यसंहारणने देखा कि विना लड़े ये लोग नहीं पीछा छो-
तब उन्होंने कई वाण ऐसे मारे कि सब राजा जिधर तिधर भाग -
व वृन्दावनविहारीने आनन्दपूर्वक द्वारकामें पहुँचकर शास्त्रानुसार उस-
साथ अपना विवाह किया ॥

दो० ताके अंगप्रसंगते मुदित भयो यदुराय। महिमा वाके भाग्यकी कासों बरणी जा-

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित अब जिस त-
श्यामसुन्दरने सत्यानाम राजकुमारीसे विवाह कियाथा उसका हाल सु-

नग्नजित अयोध्याके नृपतिने सत्या अपनी कन्याका स्वयंवर रचकर यह प्रण किया था जो आदमी मेरे सातों बैलोंकी नाक एक वेर नाथडाले उसको अपनी वेटी विवाह दूंगा इसलिये जो राजा स्वयंवर का हाल सुनकर वहां जातेथे वहलोग उन बैलोंका स्वरूप देखकर कोई उनकी नाक छेदना अंगीकार नहीं करता था यह सुनतेही मुरलीमनोहर अर्जुनको सेनासमेत साथ लेकर राजकन्यासे विवाह करनेवास्ते अयोध्यापुरी में गये जब उन के आवनेका हाल राजा नग्नजितने सुना तव वह आगेसे जाकर हरि-चरणोंपर गिर पड़ा व अनेक वस्तु उन्हें भेंट देकर सन्मानपूर्वक अपने घर लिवालाया व जड़ाऊ चौकी पर बैठाकर चरण धोने उपरांत चरणामृत लिया व विधिपूर्वक पूजन करके वहुत अच्छा भोजन उनको खिलाया व मोतियों की माला पहिनाकर पीताम्बर ओढ़ाया व सच्चे मनसे हाथ जोड़ कर इसतरहपर विनय किया हे महाप्रभु आप सब गुणोंसे भरे होकर कुछ अवगुण नहीं रखते व तुम्हारे चरणोंकी धूरि ब्रह्मादिक देवता व योगी व ऋषीश्वर अपने शिर पर चढ़ावते हैं जब शेषनागजी दो हजार जिह्वासे आपकी स्तुति नहीं करनेसक्के तो दूसरेकी क्या सामर्थ्य है जो तुम्हारे गुण वर्णन करने सकै लक्ष्मी दिन रात तुम्हारा पांव दावकर नारदजी आठोंपहर आपका गुण गाया करते हैं हे वैकुण्ठनाथ सब जगत् तुम्हारी छायामें रहता है आज मेरा वड़ा भाग्य था जो आपके चरण तीनों लोक के तारनेवाले मेरे घर आये व मैंने उन चरणों को अपने हाथ से धोया इन्हीं चरणों का धोवन गंगाजी हैं जिनकी महिमा का वर्णन नहीं होसक्ता जिस जिस जगह आपने चरणकमल अपना रक्खा है उस पृथ्वी पर नेवछावर होजाता हूं ॥

दो० चरणाम्बुज हरिके चहैं शिव विरंचि मुनिईस । धन्य भाग्य जो धरत हैं उन चरणनपरशीश ॥
उदय भयो सब आयके आज हमारो भाग । माखन प्रभु दर्शन दियो कियो बहुत अनुराग ॥

जब राजा ने इसी तरह वहुत स्तुति करके उस दिन मुरलीमनोहर को अपने यहां टिकाया तब सत्यानाम राजकुमारी जो अतिसुन्दरी व चन्द्रमुखी थी मोहनीमूर्ति को देखतेही उनपर मोहित होकर अपने मनमें कहने लगी

हे परमेश्वर मुझसे कोई शुभकर्म पिछले जन्म में हुआ हो तो कृष्ण आनन्दकन्द को स्वामी पाकर अपना जन्म स्वार्थ करूं ऐसा विचार कर उसने अपनी सखियों से कहा हे प्यारियो मेरा मन इस श्याम ने मोहि लिया ॥

चौ० यद्यपि ये त्रिभुवन के स्वामी। सकल विश्व के अन्तर्यामी ॥
सदा विरक्त रहैं मनमाहीं। इस्त्रिन की इच्छा कछु नाहीं ॥
तद्यपि जो इनसे मन लावै। प्रेमरीति की प्रीति लगावै ॥
तासों प्रीति करत सुखदाई। हरिजूकी यह रीति सदाई ॥
जब मैं हरिचरणन को पाऊं। हरिदासन में नाम धराऊं ॥

दो० जिनके मनमें प्रीति है सो सब देव अशीश। श्रीयदुपति मोको वरैं सब ईशनके ईश ॥

जब दूसरे दिन प्रातसमय श्यामसुन्दर उठे तब राजा नग्नजित् हाथ जोड़कर विनय की हे करुणानिधान मुझसे कुछ टहल तुम्हारी नहीं बन पड़ी इसलिये लज्जितहूं और जो आज्ञा दीजिये सो अपनी सामर्थ्य भर तुम्हारी सेवा करूं श्यामसुन्दर अन्तर्यामी को सच्चा प्रेम उस कन्या का मालूम हुआ था इसलिये उन्होंने हँसकर कहा हे राजन् तुम्हारी स्तुति सुनकर हमारा मन भेंट वास्ते बहुत चाहता था सो तुम्हें देख कर बड़ा सुख पाया क्षत्रियवर्ण को मांगना धर्म नहीं है परन्तु तुम्हारी भक्ति व प्रीति देख कर मैं चाहता हूं कि सत्यानाम अपनी कन्या जो गुण व शील से भरी है वह हमें विवाह देव यह वचन सुनकर राजा बड़े हर्ष से विनय की हे वैकुण्ठनाथ जहां लक्ष्मी जी आठों पहर तुम्हारी सेवा में रहती हैं वहां मेरी बेटी उनके सामने क्या वस्तु है जो आप चाहना करैं केवल मेरी भक्ति देखकर दया की राह आप ऐसा कहते हैं सो मेरा बड़ा भाग्य है जो मेरी कन्या आपकी दासियों में रहे पर मैंने इस कन्या के विवाह वास्ते यह प्रण किया है कि जो आदमी मेरे सात बैलों को एकबेर नाथ देवे उसे अपनी बेटी विवाह दूं सो अनेक राजकुमारों ने आन कर ऐसी इच्छा की परन्तु किसी से वह काम पूरा नहीं हुआ उनमें कितने बैलों के सींग से घायल होकर अपने घर चले गये व बहुत राजकुमार अभी तक यहां घायल पड़े हैं आपसे मेरा प्रण पूरा होसके तो यह कन्या विवाह ले जाइये मेरे निकट

सिवाय तुम्हारे दूसरे से यह काम नहीं होगा यह सुनकर श्यामसुन्दर ने कहा बहुत अच्छा मैं सातों बैलों की नाक छेदकर उन्हें नाथ दूंगा यह वचन सुनतेही जब राजा उन सातों बैलोंको जो हाथीके समान बलवान् थे उनके सन्मुख ले आया तब श्यामसुन्दरने उठकर कमर अपनी बांध ली व सात रूप अपने इस तरह पर जो दूसरे को दिखलाई न देवैं धारण करके सातों बैलों की नाक एकबेर में छेद डाली व उन सातों को एक रस्सी में नाथ कर खड़ा करादिया॥

दो० माखन प्रभु ज्ञानी महा कीन्हों चरित अनूप। सात वृषभके कारणे धरयो सप्त निजरूप॥

हे परीक्षित देखो जिनकी आज्ञा में तीनों लोक के जीव रहते हैं उनके निकट सात बैलों का एकबेर में नाथ लेना कौन कठिन है जब राजा नग्नजित यह चरित्र देखकर बहुत प्रसन्न हुआ व इच्छा राजकन्या की पूर्ण हुई तब सब छोटे व बड़े नगरवासियों ने यह चरित्र देखकर अचम्भा माना व स्तुति द्वारकानाथ की करने लगे व राजाने उसीसमय उपरोहित से शुभलग्न पूछकर अपने यहां विवाह की तैयारी व शास्त्रानुसार सत्या अपनी कन्या मुरलीमनोहर को विवाह दी व दशहजार गौ व तीन हजार दासी अतिसुन्दर भूषण व वस्त्र समेत नवलाख हाथी व नवकरोड़ घोड़ा व नवलाख रथ व नब्बेहजार दास व असंख्य रत्न व द्रव्यादिक दहेज में श्यामसुन्दर को देकर अपनी कन्या समेत बिदा किया पर दूसरे राजा जो उस स्वयंवर में इकट्ठे हुये थे क्रोधित व लज्जित होकर आपस में बोले इस यादवको क्या सामर्थ्य है जो हमारे ऐसे प्रतापी राजों के सामने राजकुमारी को ले जावे जब वे लोग ऐसा विचार कर अपनी अपनी सेना समेत चढ़ दौड़े व उन्होंने चारों ओर से आन कर द्वारकानाथ को राह में घेरलिया तब अर्जुन ने गाण्डीव धनुष चढ़ाकर उन राजों को ऐसे बाण मारे कि वे लोग हार मानकर जिधर तिधर भाग गये जब केशवमूर्ति आनन्दपूर्वक द्वारका में आये तब राजा उग्रसेन आदिक सब छोटे बड़े आगे से आनकर गाते व बजाते उनको राजमन्दिर पर लिवा ले गये॥

दो० तहां बहुत उत्सव भयो कासों बरणो जाय। नर नारी हर्षं सभी आनँद उर न समाय॥

जब दहेज की वस्तु देखकर सब द्वारकावासी राजा नग्नजित
बड़ाई करने लगे तब श्याम व बलरामने उसीसमय वह सब दहेज
नग्नजित से पाया था अर्जुन को देकर संसार में यश उठाया इतनी क
सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जिस तरह वसुदेवनन्दन भद्रा
विवाह ले आये थे अब उसका हाल सुनो गयनाम नगर में राजा ऋतु
कृतने भद्रा अपनी बेटीका स्वयंवर रचकर बहुतसे राजोंको इकट्ठा किया
मोहनीमूर्ति भी अर्जुन को साथ लिये हुये वहां जाकर खड़े होगये
चन्द्रमुखी राजकन्या जयमाल हाथ में लिये सब राजों को देखती
श्यामसुन्दर के निकट आई व उसने सांवली मूरत पर मोहित होकर
गलेमें जयमाल डाल दी तब राजा ऋतुसुकृत ने बड़े हर्षसे अपनी क
मुरलीमनोहर को विवाह दी व बहुत सा दहेज उन्हें देकर अपनी क
समेत विदा किया जब श्रीकृष्णजी भद्रा को लेकर द्वारका में आये
घर घर मंगलाचार होने लगा इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले
परीक्षित जिस तरह श्रीकृष्णजी ने लक्ष्मणा को विवाहा था वह क
सुनो भद्रदेशके राजा बड़े प्रतापीने लक्ष्मणा अपनी कन्याका स्वयंवर
कर बहुत से राजोंको नेवता कहला भेजा जब चारों ओर के राजा अ
अपनी सेना साथ लिये बड़ी धूम धाम से वहां आनकर इकट्ठे हुये
वृन्दावनविहारी भी अर्जुनको साथ लेकर उसी स्वयंवर में पहुँचे
राजकुमारीने सोलहों शृङ्गार किये जयमाल लिये राजसभा में आन
जैसे वसुदेवनन्दन को देखा वैसे उनपर मोहित होकर वह माला उन
गले में पहिना दी राजाने यह हाल देखतेही बड़े हर्षसे अपनी क
उन्हें विवाह दी व बहुत सा दहेज देकर कन्या समेत विदा किया
दूसरे राजा जो उसके स्वयंवर में आये थे डाह की राह अपनी सेना सा
लिये द्वारकाकी राहपर जा खड़े हुये जब श्रीकृष्णजी लक्ष्मणाको सा
लेकर अर्जुनसमेत द्वारकाको चले तब उन राजों ने उनसे युद्ध कि
उस समय दैत्यसंहारण व अर्जुनने ऐसे बाण चलाये कि सब राजा हा
मानकर भाग गये व श्यामसुन्दर हर्षपूर्वक द्वारका में पहुँचे व द्वारका

वासियों ने अपने अपने घर मंगलाचार मनाया हे परीक्षित इसी तरह श्यामसुन्दर अपना विवाह करके आठों पहर रानियों समेत आनन्दपूर्वक द्वारकापुरीमें रहनेलगे व सब स्त्रियां प्रेमपूर्वक उनकी टहल करती थीं उन आठों के जो अष्टनायिका व पटरानी कहलाती थीं ये नाम थे रुक्मिणी, जाम्बवती, सत्यभामा, कालिन्दी, मित्रविंदा, सत्या, भद्रा, लक्ष्मणा॥

दो० माखन प्रभुकी नायिका आठों कही सुनाय। सोलहसहस कुमारिका अब कहिहौं समुझाय॥

उनसठवां अध्याय।

श्यामसुन्दरका भौमासुरको मारना व सोलहहजार एक सौ राजकन्याओंसे अपना विवाह करना॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित एकदिन नारदमुनिने फूल कल्पवृक्षका जिसकी सुगन्ध बहुत अच्छी होती है नन्दनबागसे ले आकर श्यामसुन्दरको दिया जब मुरलीमनोहरने वह फूल रुक्मिणीको देडाला तब नारदमुनि सत्यभामा के पास जाकर बोले आज मुझे मालूम हुआ कि वसुदेवनन्दन तुमसे रुक्मिणीको अधिक प्यार करते हैं इसलिये उन्होंने कल्पवृक्षका फूल जो राजा इन्द्रकी बागमें होता है रुक्मिणीको देदिया उनको तेरी प्रीति अधिक होती तो तुझे देते जब यह झगड़ा लगाकर नारदमुनि चले गये तब सत्यभामा उदास होकर कोपभवनमें जा बैठी जब मुरलीमनोहरने उसे मनाकर यह इकरार किया कि मैं कल्पवृक्ष को इन्द्रलोक से लेआकर तेरे आंगन में लगादूंगा तब सत्यभामा प्रसन्न होकर उनके साथ विहार करने लगी हे राजन् एक समय पृथ्वी स्त्रीरूप बनकर तप करने लगी तब ब्रह्मा व विष्णु व महादेव उसे दर्शन देकर बोले तैंने इतना दुःख उठाकर कौन मनोरथ मिलने वास्ते तप किया है स्त्रीरूप धरती ने उन तीनों देवताओंकी दण्डवत् करके विनय किया महाराज दया करके मुझे एक बेटा ऐसा बलवान् व प्रतापी दीजिये जिसका सामना तीनों लोक में कोई न करसकै व किसीके हाथसे वह मारा न जावे यह बात सुनतेही तीनों देवताओं ने प्रसन्न होकर कहा तेरा पुत्र नरकासुर नाम जिसे भौमासुर लोग कहैंगे बड़ा प्रतापी उत्पन्न होकर

सब पृथ्वी के राजों को लड़ाई में जीतलेगा व स्वर्गलोक में जाकर
देवतोंको जीतने उपरांत अदितिके कानोंका कुण्डल लेकर आप प
नेगा व इन्द्रका छत्र अपनी भुजाकी सामर्थ्य से छीनकर अपने शि
धरेगा व संसारी राजोंकी सोलहहजार एकसौ कन्या अतिसुन्दरी वरज
से लेआकर विना विवाही अपने घर रक्खेगा जब श्रीकृष्णजी वैकुण्ठ
उसके साथ लड़ने आवेंगे और तू अपने मुखसे कहैगी कि मेरे वेटेको मा
तव वे उसे मारकर सव राजकन्या द्वारकापुरीमें लेजावैंगे यह वरदा
देकर तीनों देवता अन्तर्धान होगये व पृथ्वीने विचार किया कि मैं अ
पने पुत्रको मारनेवास्ते क्यों कहूँगी कि वह मारा जायगा यह वरदा
पाकर पृथ्वीने तप करना छोड़ दिया कुछ दिन वीते उसके नरकासुर
वालक वड़ा वलवान् उत्पन्न होकर प्राग्ज्योतिषपुरमें सात किले के भीत
राज्य करने लगा व सव पृथ्वी के राजोंको जीतकर अपने आधीन क
लिया और सोलहहजार एकसौ राजकन्या विना विवाही जिसमें एक
एक सुन्दरी थी चलते फिरते खाते पीते वरजोरी उठा ले आया व अप
यहां एक स्थानमें रखकर ऐसा प्रण किया जव वीसहजार कन्या पूरी
होंगी तव एकसाथ उनसे अपना विवाह करूंगा सो एकदिन सव कन्या
आपसमें वैठकर रोने लगीं उसीसमय परमेश्वरकी इच्छानुसार नारदमुनि
ने वहां जाकर उनसे कहा तुम लोग कुछ चिंता मति करो श्यामसुन्दर
त्रिलोकीनाथ तुम्हें यहांसे छुड़ाकर तुम्हारे साथ अपना विवाह करेंगे यह
वचन सुनते ही सव राजकन्या प्रसन्न होकर उस दिनसे नित्य हरिचरण
का ध्यान करने लगीं एकदिन भौमासुर क्रोध करके भूपविमान जो
ब्रह्मासे लेआया था उसपर वैठकर इंद्रादिक देवतोंसे युद्ध करने वास्ते
गया जब स्वर्ग में जाकर देवतों को दुःख देने लगा व देवता लोग उस
के हाथसे अपने प्राणका वचाव न देखकर जिधर तिधर भाग गये तव उस
ने आदिति का कुण्डल व इन्द्रके शिरका छत्र छीनलिया व अपने नगर
में आनकर ऋषीश्वर व हरिभक्तोंको दुःख देने लगा जव देवता व हरि
भक्त आदिक उसके हाथसे बहुत दुःखी हुये तव एक दिन राजा इन्द्र

द्वारकापुरीमें बीच सभा श्यामसुन्दरके आनकर हरिचरणोंपर गिरपड़ा व परिक्रमा लेने व स्तुति करने उपरांत हाथ जोड़कर विनय किया हे दीनानाथ भौमासुर दैत्य ऐसा बलवान् उत्पन्न हुआ जिसने मेरी माता का कुण्डल व मेरा छत्र छीनकर सब देवतोंको स्वर्गसे बाहर निकाल दिया व हरिभक्तों को दुःख देता है इसलिये तुम्हारी शरण आनकर चाहता हूं कि आप उसे मारकर देवता व हरिभक्तों की रक्षा कीजिये सिवाय तुम्हारे दूसरेका भरोसा नहीं रखता जो उसकी शरण जाऊं यह दीन वचन सुनते ही वसुदेवनन्दन ने इन्द्रको धैर्य देकर कहा तू अपने स्थान पर जा मैं भौमासुरको मारकर तेरा दुःख हरूंगा जब इन्द्र मुरलीमनोहरको दण्डवत् करके अपने स्थान पर चलागया तब दैत्यसंहारण गरुड़पर चढ़कर सत्यभामासे बोले चल तुझको भौमासुरका युद्ध दिखलावें व इन्द्रलोकसे कल्पवृक्ष लेआकर तेरे आंगन में लगादेवें तू मुझे उस वृक्षके साथ नारद मुनि को दान कर दीजियो फिर गो व सुवर्ण आदिक शास्त्रानुसार उन्हे देकर मुझको उनसे मोल लेलीजियो तब मैं तेरे वश रहकर सब स्त्रियों से तेरी अधिक प्रीति करूंगा इसी तरह इन्द्राणी ने इन्द्रको व अदिति ने कश्यपजी अपने पतिको दान देकर फिर मोल लेलियाथा जब यह वचन सुनतेही सत्यभामा बड़े हर्षसे चलने को तैयार होगई तब श्यामसुन्दर ने उसे अपने पीछे बैठाकर गरुड़को उड़ाया॥

दो॰ या विधि सतभामा सहित माखनप्रभु यदुराय। भौमासुरके नगरको क्षणमें पहुँचे जाय॥

हे राजन् भौमासुरका नगर छः किलेके भीतर इस उपायसे बनाथा पहिले किला पहाड़का तैयार होकर उसके भीतर दूसरा किला अनेक शस्त्रोंसे बनाथा तीसरा किला पानीसे भरा होकर चौथे किलेमें चारोंओर आगि जलती थी पांचवां किला वायु का होकर छठवां किला रस्सों के जालका बनाथा व सातवें अष्टधाती किलेमें नरकासुरके रहनेका स्थान था सो श्यामसुन्दरकी आज्ञानुसार सुदर्शनचक्र व कौमोदकी गदा व गरुड़जीने क्षणभरमें पहाड़ व पत्थर व शस्त्रोंको तोड़कर पानी सुखा डाला व आगि बुझाने व वायु उड़ाने उपरांत रस्सोंके जाल काटकर

रास्ता बनादिया जब वृन्दावनविहारी सातवें किलेके द्वारपर पहुँचे त
लाख शूरवीर द्वारपालक युद्ध करनेवास्ते उनके सामने आये सो गरुड़
ने उनको अपने पंख व चोंचसे मारकर गिरादिया व दैत्यसंहारणने कि
के भीतर जाकर पाञ्चजन्यशंख अपना बजाया ॥

दो० भौमासुरके श्रवणमें शब्द परयो जब जाय । तबहीं सोवतसे जग्यो मनमें बहुत रिसाय ॥

हमने तीनों लोकमें किसीको ऐसा नहीं छोड़ा जो मेरे साथ लड़नेकी
सामर्थ्य रखता हो यह कौन पुरुष है जिसने यहां आनकर आज मुझे
नींदसेजगाया उसे चलकर देखा चाहिये जिस समय भौमासुर यह विचार
कर रहाथा उसी समय मुर नाम दैत्य उसके मंत्रीने द्वारपालकोंका मरना
सुनतेही नरकासुर के पास जाकर विनय किया महाराज मेरे रहते आपको
परिश्रम करना उचित नहीं है मैं जाकर देखता हूं जो हाल होगा वह
सब तुमसे कहूंगा ॥

दो० तुमसों कौन महाबली तिहूंलोकमें आज । कौन काज श्रम करतहौ सब राजन केराज ॥

यह बात कहके मुर वहां से विदा हुआ व त्रिशूल हाथ में लेकर
श्यामसुन्दर के सामने आया व क्रोधसे लाली लाली आंखें निकाल
कर दांत पीसता हुआ बोला देखूं मुझसे कौन बली है जो यहां लड़ने
आया है जब ऐसा कहकर उसने केशवमूर्तिपर त्रिशूल व गदा आदिक
अनेक शस्त्र अपने चलाये व वसुदेवनन्दनने उसके शस्त्र सुदर्शनचक्रसे
काटडाले तब वह दैत्य जो पांच शिरका था झुँझुलाकर अपने पांचों मुंह
बाये हुये इस इच्छासे उनकी ओर दौड़ा जिसमें वैकुण्ठनाथको निगलजाऊं
उस समय त्रिभुवनपतिने सत्यभामाको घबड़ाई हुई देखकर सुदर्शनचक्रसे
पांचों शिर उसके काटडाले उसी दिनसे संसारमें मुरारि उनका नाम प्रकट
हुआ जब मुर दैत्यके ताम्र आदिक सातों बेटोंने अपने बापका मरना
सुना तब वे लोग अनेक तरहके शस्त्र बांधे हुये बहुतसी सेना साथ लेकर
मोहनप्यारे के सामने आये व अपना अपना शस्त्र उनपर चलाने लगे
वृन्दावनविहारीने सुदर्शनचक्र से इसतरह उन लोगों कोभी सेना समेत
एक क्षण में मारकर गिरा दिया जिसतरह किसानलोग जुवारका खेत

काट डालते हैं जब भौमासुरने सुना कि मुरदैत्य मेरा मंत्री अपने सातों बेटों व सेना समेत मारा गया तब वह क्रोधित होकर बहुतसे शूरवीर व हाथी साथ लिये हुये श्यामसुन्दर पर चढ़ दौड़ा ॥

दो॰ तभी चल्यो अति कोपकै असुर महाबलवन्त। गजमतंग आगे करे जिनके लम्बे दन्त ॥
योधा बहुत इते तहां भौमासुरके संग। कोउ हस्ती कोउ रथन में कोऊ चढ़े तुरंग ॥

जब नरकासुर त्रिभुवनपतिके सामने आनकर गदा व त्रिशूल व भुशुण्डी आदिक अनेक तरहके शस्त्र उनपर चलाने लगा व दैत्यसंहारण सुदर्शनचक्र से उसके शस्त्र काटने लगे तब भौमासुरने खिझलाकर एक तलवार मुरलीमनोहर पर बड़े वेगसे चलाई व ललकार कर बोला आज तुम मेरे हाथसे जीते बचकर नहीं जासक्ते जब उसकी तलवारने भी कुछ काम नहीं किया व सब सेना उसकी दैत्यसंहारण व गरुड़जी ने क्षणभरमें मारडाली और उसने अपने को अकेला देखा तब वह अपने घरसे एक बड़ाभारी त्रिशूल लेकर फिर वृन्दावनविहारी पर मारने झपटा उस समय सत्यभामा ने श्यामसुन्दरसे पुकारकर कहा इस पापीको मारडालो इतनी बात उसके मुखसे निकलतेही वसुदेवनंदनने शिर उसका सुदर्शनचक्र से काटकर गिरा दिया ॥

चौ॰ कुण्डल मुकुट सहित शिर पर्‍यो। धड़के गिरत शेष थरथर्‍यो ॥
तिहूंलोक में आनँद भये। दुख चिन्ता सबहीं के गये ॥
तासु ज्योति हरिमुखहि समानी। जय जय शब्द करैं सुर ज्ञानी ॥
चढ़े विमान पुष्प बरसावैं। वेद बखानि देव यश गावैं ॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् महादेव आदिकका वरदान सत्य करनेवास्ते जब सत्यभामाने जो पृथ्वीका अवतार थी अपने मुखसे भौमासुरके मारनेवास्ते कहा तब श्यामसुन्दरने सुदर्शनचक्रसे उसका शिर काटलिया जब भौमासुर मरगया तब पृथ्वी उसकी माता अपनी पतोहू व भगदत्त पोतेको साथ लेके द्वारकानाथ के पास आई व छत्र व कुण्डल जो भौमासुर इन्द्रलोक से छीन लेआया था व बहुतसे रत्नादिक उन्हें भेंट देकर शिर अपना हरिचरणोंपर रख दिया व हाथ जोड़कर विनय किया हे ज्योतिस्स्वरूप भक्तहितकारी तुम्हारी महिमा व लीला अपरम्पारहै व

आपका भेद व आदि व अन्त कोई नहीं जानसक्ता व तुम अविनाशी पुरु
तीनों कालके जाननेवाले किसीसे कुछ भय नहीं रखते व आप देवता
मनुष्य आदिक तीनों लोकके उत्पन्न करनेवाले हैं व आदि व अन्त
मध्यमें केवल तुम्हारा प्रकाश रहताहै व आप अन्तर्यामी सबमें व्याप
व सबसे विलग रहकर संसारी वस्तु की कुछ चाहना नहीं रखते व लक्ष्मी
जी तुम्हारी दासी होकर चरणकमल आपका आठों पहर अपने हृदय
में लगाये रहतीहैं व ब्रह्मादिक देवता व बड़े बड़े ऋषीश्वर व मुनि तुम्हारे
चरणोंका ध्यान दिन रात अपने हृदयमें रखकर तुम्हें अपना उत्पन्न
पालन करनेवाला जानते हैं सो मेरी दण्डवत् उन्हीं चरणोंको पहुँचे ज
महाप्रलय में शेषनागकी छातीपर शयन करते थे तब आपकी नाभि
से कमलका फूल निकला उसी पुष्पसे ब्रह्माने उत्पन्न होकर तीनों लोक
की रचना की इसलिये चौदहों भुवनकी जड़ आप होकर सबका मनोरथ
पूर्ण करते व मट्टी व हवा व पानी व अग्नि व आकाश पांचों तत्त्व व दशों
इन्द्रियोंको प्रकट करके रजोगुण से संसारकी उत्पत्ति व सतोगुणसे पालन
व तमोगुण से नाश उसका करते हो व गरुड़जी तुम्हारे वाहन हैं व सब
किसी को बल व यश आपकी दया से प्राप्त होताहै व तुम हरिभक्तों की
रक्षा करने वास्ते संसार में मनुष्यरूप अवतार लेकर सबको सुख देतेहो
जिसमें संसारी लोग उस रूपका ध्यान व पूजा व नाम का स्मरण करें व
तुम्हारी लीला की चर्चा आपस में रखकर भवसागर पार उतर जावें
तुम्हारा निर्गुणरूप किसी को दिखलाई नहीं देता इसलिये उस रूपसे जो
कुछ चिह्न व रेखा नहीं रखता प्रीति उत्पन्न होना कठिन है संसारी लोग
अपने वर्ण व धर्म के अनुसार तुम्हारी पूजा कई तरह पर करके अपना
मनोरथ पाते हैं जहां तुम्हारी स्तुति शारदादेवी व शेष व महेश व गणेश
से नहीं होसक्ती वहां मुझ अज्ञान मट्टीकी पुतली को क्या सामर्थ्य है जो
तुम्हारा गुण वर्णन करने सकूं पर तुम जिस पर कृपा करो वह अवश्य
तुम्हें पहिंचान सक्ता है सो मेरी दण्डवत् आपको अंगीकार हो॥

चौ० जय जय कमलनाथ जलशायी। कमलनयन कमला सुखदायी॥

नाम स्वरूप अनन्त तुम्हारे । गावैं निशि दिन सन्त मुरारे ॥
दो० सब देवनके देव तुम कोऊ लहै न भेव । तुमहीं जगकरतार हौ माखन प्रभु हरि देव ॥

पृथ्वी ने इसी तरह से बहुत स्तुति करके भगदत्त अपने पोते को हरिचरणों पर गिरा कर विनय किया हे दीनानाथ कृपासिन्धु आपने मुझे यह वरदान दिया था कि विना तेरे कहे भौमासुर को न मारूंगा फिर किस वास्ते आज उसका वध किया यह वचन सुनतेही केशवमूर्ति ने सत्यभामा की ओर सैन बतलाकर कहा यह पृथ्वी का अवतार है इसके कहने से मैंने नरकासुर को मारा था जब पृथ्वी ने सत्यभामा को देखा तब लज्जित होकर बोली हे नाथ निरञ्जन मेरा पुत्र आपको न पहिचान कर अधर्म करने लगा सो वह अपने दण्डको पहुँचा अब उस के बालक को जो तुम्हारी शरण में है अभय कीजिये जब यह दीन वचन सुनतेही श्यामसुन्दर ने अपना हाथ भगदत्त के शिर व पीठ पर फेरकर उसे बहुत धैर्य दिया तब भौमासुर की स्त्री हाथ जोड़कर बोली हे जगत्-पालक जिसतरह आपने कृपा करके अपना दर्शन हमें दिया उसी तरह अपने चरणों से मेरा घर पवित्र कीजिये जब वसुदेवनन्दन सच्ची प्रीति उन लोगों की देखकर राजमन्दिर पर गये तब भगदत्त व उसकी माता ने बड़े हर्ष से पीताम्बर राह में बिछावते हुये वृन्दावनविहारी व सत्यभामा को अपने घर लेजाकर जड़ाऊ सिंहासन पर बैठाला व चरण धोने उप-रान्त चरणामृत लेकर विधिपूर्वक पूजा उनकी की व सुगन्धादिक उन के अंग में लगाकर छत्तीस व्यंजन खिलाये व सुनहली झारी से हाथ धुलाकर पान व इलायची व उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहिनाकर चमर हिलाने लगी व बड़े प्रेम से भगदत्त की माता ने हाथ जोड़कर विनय किया हे वैकुण्ठनाथ बहुत अच्छा हुआ जो आपने भौमासुर देवता व हरिभक्तों के दुःख देनेवाले को मारडाला देखो रावण व कंसादिक जिस किसी ने परमेश्वर से विरोध किया उसका जगत् में नाश हुआ अब भगदत्त मेरे बेटा को अपना सेवक जानिये व सोलहहजार एकसौ राज-कन्या जो इसके बापने विना विवाही इकट्ठी की हैं उनको दयाकी राह

अंगीकार कीजिये यह वचन सुनतेही वृन्दावनविहारी उस स्थान
जहांपर वे सब श्यामसुन्दर को अपना पति बनाने वास्ते हरिचरणों
ध्यान करती थीं चले गये तो क्या देखा कि सब राजकन्या मैले
पहिने हुये शोच में बैठी हैं जैसे सांवली मूरत मोहनी मूर्ति पर उन
दृष्टि पड़ी वैसे प्रसन्न होकर प्राणनाथ के सामने खड़ी होगईं व हाथ जो
कर विनय किया हे द्वारकानाथ हमलोगोंकी छुट्टी यहां से विना
तुम्हारे होना बहुत कठिन है हे महाप्रभु जिस तरह आप अन्तर्यामी
ब्रह्म परमेश्वर ने हम लोग अबला अनाथों को दुःखी जानकर अपना
दर्शन दिया उसी तरह हम दुःखियों को साथ ले चलकर अपनी दा
बनाइये जिसमें तुम्हारी सेवा करने से हमारा जन्म स्वार्थ हो यह दी
वचन सुनतेही श्रीकृष्णजीने उनको बहुत धैर्य देकर कहा तुमलोग अ
अपने घर जाओ तो वहां तुमको पहुँचा देवैं उन्होंने विनय किया
महाराज अब हमलोगों को तुम्हारा कमलरूपी चरण छोड़कर घर जा
नहीं अंगीकार है हमें अपनी सेवामें राखिये जब केशवमूर्ति ने उन
सच्ची प्रीति देखकर सब राजकन्याओं को अपने साथ द्वारका में ले च
के वास्ते उस मकान से बाहर निकाला व भगदत्त को भौमासुर के सिंहा
सन पर बैठाकर अपने हाथ से राजतिलक उसके लगाया तब भगद
ने अनेक रत्न व रथ व घोड़े व साठ हाथी श्वेत वर्ण चार दातवाले
ऐरावत के वंश में थे श्यामसुन्दर को भेंट दिये व उन सब राजकन्या
को उबटन मलवाने व स्नान कराने उपरांत उत्तम उत्तम भूषण व व
पहिनाये व पालकी व सुखपालकी आदिक पर चढ़ाकर मुरलीमनोह
के साथ अपनी सेनासमेत विदा किया जिस समय वृन्दावनविहारी
लहहजार एकसौ राजकन्याओं को जड़ाऊ पालकी व सुखपाल व
आदिक पर साथ लेकर द्वारका को चले उस समय ऐसी शोभा मोह
प्यारे की मालूम होती थी जैसे तारों में चन्द्रमा सुन्दर दिखलाई देता
श्यामसुन्दर ने सब राजकन्याओं को सेना समेत द्वारकापुरी में भे
दिया व आप सत्यभामा को गरुड़ पर बैठाले और बड़ी छत्र व कु

लिये हुये इन्द्रपुरी को चलेगये जब इन्द्रने जो भौमासुरके मारेजाने का समाचार सुनकर आनन्द मचा रहा था हाल आवने मुरलीमनोहरका सुना तब उसने देवतों समेत आगे से जाकर शिर अपना हरिचरणों पर रखदिया व वसुदेवनन्दन को बड़े आदर भाव से अपने घर लेजाकर इन्द्रासन पर बैठाला व चरण उनका धोकर चरणामृत लिया व विधिपूर्वक पूजा उनकी की ॥

दो० हाथ जोड़ विनती करै धरै चरण पर माथ। हरिदासन के दासहौं तुम नाथन के नाथ॥

इन्द्रके स्तुति करनेसे वैकुण्ठनाथ ने प्रसन्न होकर छत्र व कुण्डल इन्द्र व अदिति का देदिया जब यहहाल सुनकर नारदजी इन्द्रपुरी में श्यामसुन्दर के पास आये तब मुरलीमनोहर ने नारदमुनि से दण्डवत् करके कहा महाराज तुम जाकर इन्द्र से कहो कि सत्यभामा तुमसे कल्पवृक्ष मांगती हैं जैसा वह कहैं वैसा हमको आनकर उत्तर देव यह वचन सुनते ही नारदमुनि ने इन्द्रके पास जाकर कहा सत्यभामा तुम्हारी भौजाई ने कल्पवृक्ष मांगाहै यह वचन सुनकर इन्द्र चुप होरहा व उसने जाकर अपनी स्त्री से यह हाल कहा तब इन्द्राणी क्रोधित होकर अपने पतिसे बोली तुम्हें यह बात याद है या नहीं कि इसी कृष्ण ने व्रज में तुम्हारी पूजा छुड़ाकर व्रजवासियों से गोवर्धन पहाड़ पुजवाया व छल करके सब पकवान व मिठाई आप खाया व सात दिन व सात रात्रि गोवर्धन पर्वत उठा कर तुम्हारा अभिमान तोड़ा था तुम्हें उस बात की लज्जा है या नहीं देखो वह अपनी स्त्री की आज्ञा मानकर यहां कल्पवृक्ष लेने आया है और तुम मेरा कहना कुछ नहीं मानते यह वचन अपनी स्त्री का सुनतेही इन्द्र अज्ञान नारदजी के पास आनकर बोला महाराज तुम श्यामसुन्दर से मेरी ओर से जाकर कह दो कि कल्पवृक्ष नन्दन बाग छोड़कर दूसरी जगह जाने नहीं सक्ता कदाचित् लेजावेंगे तो किसी तरह न रहैगा और यहभी उनसे कहदेना कि व्रजकासा विरोध मुझसे न करैं बरजोरी कल्पवृक्ष ले जावेंगे तो मेरा उनका बड़ा युद्ध होगा जब नारदमुनिने आन कर यह सन्देशा केशवमूर्ति से कहा तब गर्वप्रहारी भगवान्ने उसी समय नन्दन

बागमें जाकर रखवारोंको मारकर भगा दिया व कल्पवृक्ष जिसे पारिजात भी कहते हैं नन्दन बाग से उखाड़ लिया व गरुड़ की पीठपर रख द्वारका को चले आये जब इन्द्र कल्पवृक्ष लेजाने का हाल सुनकर क्रोधसे ऐरावत हाथीपर चढ़ा व वज्र हाथमें लेकर देवतोंसमेत दैत्यसंहार से लड़ने चला तव नारदमुनि ने उसके पास जाकर कहा हे इन्द्र तू मूर्खहै जो अपनी स्त्री के कहने परभी वैकुण्ठनाथ से लड़नेको तैयार हुआ तुझे कुछ लज्जा नहीं आवती जो ऐसी सामर्थ्य थी तो भौमासुर से छत्र कुण्डल क्यों नहीं फेर लाया जब वृन्दावनविहारी परब्रह्म परमेश्वर तेरे विनय करने से नरकासुर को मारकर छत्र व कुण्डल तेरा लेआदि तब तू उन्हीं को अपना बल दिखलाने चला वह दिन तुझे भूल गया वृन्दावन में श्रीकृष्णजी के पांव पर गिरकर अपना अपराध उनसे क्षमा कराया था यह वचन सुनतेही इन्द्र लज्जित होकर हाथी पर से उतर व युद्ध करने नहीं गया श्यामसुन्दरने आनन्दपूर्वक द्वारकापुरी में पहुंच कर कल्पवृक्ष सत्यभामाके आँगन में लगा दिया व राजा उग्रसेनसे आज्ञा लेकर सोलह हजार एक सौ राजकन्याओं से विधिपूर्वक अपना विवाह किया व उन सबको पृथक् पृथक् महलमें जो बाग में विश्वकर्मा ने तैयार किये थे रक्खा और आप उतने रूप धरकर उनके साथ विलग विलग संसारीसुख उठाने लगे ॥

दो० तिनसों हरिजू प्रीति करि अमृत बैन सुनाय। प्रेम रीति समुझाइकै दीन्हीं लाज छुड़ाय॥

वे लोग आठों पहर प्राणनाथ को अपने पास देखकर एक दूसरी से डाह नहीं करती थीं व सब स्त्रियों के घरमें सैकड़ों दासी थीं तिस पर भी उन लोगोंका यह प्रण था कि प्रातसमय श्यामसुन्दरका चरणोदक लेकर अपने हाथ सब सेवा व टहल उनकी करती थीं जिस समय मोहनप्यारे फुलेल लगाने व स्नान व पूजा करने उपरांत छत्तीस व्यंजन सोनहली थालियों में भोजन करते थे उस समय सब रानियां पंखा हिलाती थीं व जड़ाऊ गड़ुयेसे हाथ धुलाकर पान व इलायची देती थीं और जब शय्या पर शयन करते थे तब उनके पांव दाबती थीं पर वैकुण्ठनाथ जो

इच्छा न रखकर सब जगत् को अपने अधीन रखते हैं किसी स्त्री के वश नहीं होते थे व उन स्त्रियों की सुन्दरताईका हाल कोई वर्णन नहीं करने सक्ता वे ऐसी सुन्दरी थीं जिनके सामने सूर्य व चन्द्रमा का तेज धूमिल होजाता था एक दिन महादेवजी ने द्वारकापुरी में जाकर उन स्त्रियों को देखा तो कामदेव के जलादेनेपर भी उनका रूप देखकर मोहित होगये॥

दो० ऐसी सुन्दरि नारिसों माखन प्रभु यदुनाथ। कामकलोल करैं सदा खान पान यकसाथ॥

साठवां अध्याय।

श्यामसुन्दरको रुक्मिणीजीसे ठट्ठा करना॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित एकदिन श्रीकृष्णजी रुक्मिणीके मन्दिर में थे वह स्थान सोनहुला जड़ाऊ बहुत उत्तम बना होकर उसमें मखमली बिछावन बिछे थे व सब जगह चँदवे बँधे होकर मोतियोंकी झालरैं द्वारों पर लटकाई थीं व पारिजातक फूल के गजरे अनेक जगह लटकाये होकर धूप व चन्दनादिक जलने से सुगन्ध उड़ती थी॥

कल्पवृक्षके फूलकी कहिये कहा सुवास। जासों वन उपवन सबी भये सुवास निवास॥

मंद सुगंध शीतल हवा बहने से सबको सुख मिलता था व नहर व झरने बहकर मोर नाचते थे व ऐसे लाल व रत्न वहां जड़े थे जिसके चमक से आठों पहर उजियाला रहकर दीपक जलाने का प्रयोजन नहीं पड़ता था व उस स्थानमें एक शय्या रत्नजटित सब सामग्री समेत बिछी थी व उसके चारों ओर मेवा मिठाई व चौघड़ा आदिक रक्खा होकर उस शय्यापर श्यामसुन्दर लेटे थे उनके भूषण व वस्त्र व रूपकी छवि देखकर चित्त सबका मोहि जाता था॥

दो० शोभा त्रिभुवननाथकी कासों वरणी जाय। कामरूपकी छवि महा वह भी रहै लुभाय॥

चौ० तहां रुक्मिणी सुन्दरि बाला। सबी शृंगार सजे त्यहि काला॥
अंग अंग भूषण छवि छाजै। महा मधुर स्वर नूपुर बाजै॥
सो ध्वनि सुनि मोहित पुरवासी। मानो लगी कामकी फांसी॥

दो० या विधिसों श्रीरुक्मिणी माखन प्रभुके पास। पवन डुलावै प्रेमसों मनमें बहुत हुलास॥

उस समय परमेश्वरकी माया से रुक्मिणी को अभिमान हुआ कि वसुदेवनंदन की सब स्त्रियों से मैं अतिसुंदरी हूं इसलिये मोहनप्यारे मुझे

वहुत चाहते हैं व वैकुंठनाथ अन्तर्यामी ने यह हाल जानकर विचारा रुक्मिणी को क्रोध दिलाकर प्रेमकी परीक्षा लूं कि उसको अपने रूप अभिमान है या मेरी प्रीति अधिक है ऐसा विचारकर वोले हे रुक्मि तुझे ऐसी सुन्दरी और राजा भीष्मककी कन्या होकर मेरे साथ विवा करना उचित नहीं था वैर व विवाह व प्रीति बराबरवाले से करना चाहि मैं किसी देश का तिलकधारी राजा न होकर जरासन्ध के भय से भा हुआ यहां टापू में बसा हूँ व जब से मैंने जन्म लिया तब से कोई कर्म नहीं किया जो कोई मेरा भजन व स्मरण करता है उसे विरक्त निर्धन कर देता हूं इस लिये मेरे भक्त को संसारीसुख नहीं मिलता किसी के साथ प्रीति न रख कर सबसे अपना मन मोटा रखता हूं पन में याचकों को कुछ द्रव्यादिक दिया करता था वही यश सुनकर मेरे साथ विवाह करके धोखा उठाया व शिशुपाल चंदेली के रा को जो तिलकधारी व बलवान् होकर जरासन्धादिक बड़े बड़े रा को अपने साथ बरात में लाया था अंगीकार नहीं किया॥

दो० रुक्मदई शिशुपाल को बांध्यो कंकण हाथ। आयो साजि बरात वह सब राजन ले सा

अय रुक्मिणी तुझसे बड़ी चूक हुई जो तैंने राजा शिशुपाल को वि सके साथ तेरी मँगनी रुक्माग्रजने की थी छोड़कर मुझ गो चराने से विवाह अपना किया और उत्तम मध्यम का विचार न करके अ कुल में कलंक लगाया॥

चौ० कहिये कहा कुबुद्धि तिहारी। भली भांति मनमें न विचारी॥
रुक्मभ्रात की लाज गँवाई। तातमात को लीक लगाई॥
छांड़ि नृपति मोसों हित कीनो। निर्गुण महा जाति को हीनो॥
याते सच बात हम मानी। उलटी बुद्धि त्रियनकी जानी॥
जो तुम कहो लिखो विधिजोई। कर्म प्रमाण होत है सोई॥

दो० ऐसी झूठी बात को मानैं मूरख होय। अपने यश अरु चैन को यत्न करत सब को

सिवाय इसके जिस बातमें लड़कियों को लज्जा है वह तैंने किया ब्राह्मण को पत्री देकर अपने विवाह का संदेशा मेरे पास भेजा सचहै निर्बुद्धि होती हैं॥

चौ० जो तुम कहौ हमैं क्यों लाये। कौन काज कुण्डिनपुर आये॥
सांच बात समझो मनमाहीं। तुम सों मोह हमैं कछु नाहीं॥
बहु नरेश आये वडि ठाहीं। बड़ो गर्व जिनके मनमाहीं॥
त्यहिकारण कुण्डिनपुर आये। उन्हैं भगाय तुम्हैं हरिलाये॥
नातो मैं विरक्त मनमाहीं। कबहूं मोह होत मम नाहीं॥
सदा उदास रहौं चितमाहीं। नारिन की कछु इच्छा नाहीं॥

हे रुक्मिणी तेरे बुला भेजने से वहां जाकर तेरा प्रण पूरा किया सो परमेश्वर ने इतने राजों के सामने मेरी लज्जा रक्खी व बलरामजी ने वहां जैसा पराक्रम किया वह तैंने अपनी आंखों से देखा मैं तुझे अपनी इच्छा से नहीं लाया इसलिये तुझे आज्ञा देता हूं अब भी मन तेरा चाहै तो मुझे छोड़कर किसी तिलकधारी राजा के पास जो तेरे समान कुलीन हो जाकर रह मैं कुछ बुरा नहीं मानूंगा॥

चौं० नारिन में सोइ नारि सुभागी। जाको पुरुष होय बड़भागी॥
या कारण ढूंढ़ो तुम सोई। जामें लोक महायश होई॥

यह कठोर वचन सुनतेही रुक्मिणी रोने लगी व मुख उसका पीला होगया व श्यामसुन्दरकी बातों का कुछ उत्तर न देकर अति शोचसे शिर अपना नीचे करलिया व नख से पृथ्वी खोदने लगी व चित्त उसका ठिकाने न रहकर शरीर कांपने लगा॥

चौं० चिन्ता बहुत बढ़ी उरमाहीं। काहू विधि समझै मन नाहीं॥
दो० ऐसी विधि अकुलाय के पड़ी धरणि मुरझाय। तनुकी सुधि भूली उसे मरणनिकट भइ आय॥

जब वृन्दावनविहारी ने देखा कि अति शोच से प्राणप्यारी मरने चाहती है तब उसे उठाकर अपनी सेज पर बैठा लिया व चतुर्भुजी रूप धरकर एक हाथ से जो उसके बाल बिखड़ गये थे सवाँरने लगे व दूसरे हाथ से उसके आंसू पोंछकर तीसरे हाथ से पंखा हिलाना आरम्भ किया व चौथा हाथ अपना कमल के समान उसके हृदय पर रखकर उसे गले में लगालिया जब उनका प्रेम देखकर रुक्मिणी का चित्त कुछ ठिकाने हुआ तब केशवमूर्ति बोले हे प्राणप्यारी गृहस्थों के पास कुछ पृथ्वी आदिक रहनी अवश्य चाहिये जिसमें वह आनन्दपूर्वक अपना कुटुम्ब पालें सो

मेरे पास कुछ नहीं है इसलिये तुझसे हँसी की थी सो तैंने सत्य मान इतना दुःख उठाया मैं तुझसे अधिक किसी का प्यार नहीं करता तू बात सच मानकर उदासी छोड़दे तेरा अंग अति कोमल है इस घवड़ागई व तैंने जाना ये मुझे छोड़देंगे सो तू धैर्य धरकर हमसे हँस बो

दो० अमृतवैन सुनायकै माखन प्रभु यदुराय। लीन्हीं प्रिया मनायकै दीन्हीं रिस बिस

जब श्यामसुन्दर की प्रेमपूर्वक बातें सुनने से रुक्मिणी का शो छूटगया तब वह अपना को श्यामसुन्दर की गोद में देखकर लज्जा उठ खड़ी हुई व हाथ जोड़कर विनय की हे वैकुण्ठनाथ आपने विचार कर ऐसा कठोर वचन मुझसे कहा मैं अपना को मनसा वा कर्मणा से तुम्हारी दासी जानती हूँ व आप मुझे तिलकधारी राजा के रहने वास्ते कहते हैं सो तुम से प्रतापी तीनों लोक में दूसरा कौन जिसके पास जाकर रहूँ तुम्हारे समान किसी दूसरे को न देख कर त्रिलोकीनाथ समझती हूँ ब्रह्मा व महादेव आदिक देवता तुम्हारे चर का ध्यान सदा रखकर उन चरणों की रज अपने मस्तक पर चढ़ाते हैं तुम्हारी दया से उन्हें यह सामर्थ्य है जिसे चाहैं उसको वरदान दे तिलकधारी राजा बना देवैं॥

दो० तुम चरणन की रेणुका वे चाहत दिन रैन। जिनके दर्शन देखके सुख पावत हैं नै

हे महाप्रभु तुम्हारा ध्यान व स्मरण करने से राजगद्दी आदिक अ तरह का सुख प्राप्त होता है व बड़े बड़े राजा संसारी सुख व राज्य छोड़ तुम्हारा भजन करके भवसागर पार उतर जाते हैं व तुम रजोगुण व त गुण से कुछ प्रयोजन न रखकर आठों पहर क्षीरसागर में शयन करते जब दैत्यों के अधर्म करने से पृथ्वी दुःखी होकर तुम्हारे शरण जाती या गो ब्राह्मण व हरिभक्त लोग दुःख पाते हैं तब आप सगुण अवतार पृथ्वी का भार उतार कर गो ब्राह्मण को सुख देते हैं मुझे ऐसी साम नहीं है जो आपका गुण वर्णन कर सकूं आपने कोई दोष मुझ में देख ऐसा वचन कहा है इसलिये चाहती हूं कि आप दीनदयालु जगत पर्दा ढांकनेवाले मेरा अवगुण छिपाकर क्षमा कीजिये बड़े लोग सदा

छोटों पर दया करते आये हैं हे दीनानाथ मैंने अपनी आंखों से देखा कि जरासन्ध व शिशुपाल आदिक वड़े बड़े राजों को जो अपने वल का घमण्ड रखते थे आपने एक क्षण में भगादिया इससे मैं जानती हूं तीनों लोक में कोई दूसरा तुमसे वलिष्ठ नहीं है व जो तुम अपने भक्तों को कंगाल रखते हो उसका यह कारण है कि संसारी मनुष्य धन व राज्य के मद में अन्धे होकर धर्म कर्म अपना व ध्यान स्मरण तुम्हारा छोड़देते हैं इसलिये तुम अपनी कृपा से उनको कंगाल वनाकर हरिभजन कराते हो जिसमें भवसागर पार उतर जावैं व संसारी सुख सदा स्थिर नहीं रहता व हरिभजनके प्रतापसे महाप्रलय तक सुख मिलताहै जैसा हरिभजन गरीवी में वन पड़ता है वैसा धनपात्र होने में नहीं होसक्ता इसी वास्ते संसारीसुख व व्यवहार झूठ समझकर अम्वरीष व प्रह्लाद व ऋषभदेव व प्रियव्रत व जड़भरत आदिक ज्ञानी राजों ने सातों द्वीपोंका राज्य व परिवार छोड़दिया व विरक्त होकर तुम्हारे चरणों का ध्यान लगाया सो आज तक उनका यश छारहा है और जो तुमने कहा कि हम कुछ चाहना न रखकर तेरी इच्छा से तुझको यहां लेआये हैं सो सच है जहां लक्ष्मीजी तुम्हारी दासी होकर दिनरात सेवामें रहती हैं वहां मेरी कौन गिनती है जो आपके योग्य होऊं आप दीनदयालु ने मुझे दीन जानकर मेरी इच्छा पूर्ण की हे जगत्-पालक शिशुपाल चँदेलीका राजा भी तुम्हारा उत्पन्न किया है तुम्हारी सेवा छोड़कर उसे अंगीकार करती तो आवागमनमें फँसी रहती जिस तरह राजा अम्वरीष आदिक हरिभजन करके मुक्त हुये हैं उसी तरह मैं भी तुम्हारा चरण धोकर भवसागरपार उतर जाऊंगी व तुम्हारी दया से मेरा नामभी सदा स्थिर रहेगा॥

सो॰ जैसी विधि शोभा रची नगर द्वारका माहिं। देश चँदेली को कहै स्वर्ग लोकमें नाहिं॥

हे वैकुण्ठनाथ जो स्त्रियां तुम्हारे भजन व कथा से विमुख होवैं उन्हें शिशुपाल व दन्तवक्त्रादिक पति मिलैं जिस तरह अम्बा नाम कन्या काशीनरेशकी राजा शाल्व को चाहती थी इसी कारण विचित्रवीर्यने उसे छोड़दिया उसीतरह आपने भी विचार किया कि यह राजा शिशु

पाल को चाहती है सो मनसा वाचा कर्मणासे तुम्हारी दासी होकर अ
अपना शत्रु समझती हूं जो स्त्री कि निष्कपट अपने पति की सेवा कर
है उसकी मनोकामना संसार में मिलकर अन्तसमय मुक्त होती है हे प्रा
नाथ जैसे राजा इन्द्रदमनकी कन्याने तप करके शिखण्डीका जन्म ले
भीष्मपितामह से बदला लिया था वैसे मैं नहीं करसक्ती किसवास्ते
मैं तुम्हारी अनेक जन्मकी दासी हौं व आपने यह कहा कि तैंने याच
के मुखसे सुनकर धोखा खाया सो तुम्हारी स्तुति वेद व शास्त्र में लिखी
और ब्रह्मादिक देवता व नारदमुनि आठों पहर तुम्हारा गुण गाया कर
हैं वह बड़ाई सुनकर मैंने ब्राह्मणको तुम्हारे पास भेजा था सो आप दया
होकर इस दासी को लेआये अब मैं यही चाहती हूं कि जन्मजन्मां
तुम्हारी दासी होकर मेरा प्रेम व अनुराग आपके चरणोंमें बना रहे॥

दो० पूरणपुरुष पुराणहौ अलख निरंजन नाम। तुम्हरे चरणन को सदा हितसों करौं प्रणा
तुमतो जानतहौ पिया प्रेमप्रीतिकी रीति। अन्तर्यामी होयके क्यों ठानत अनरीति
दीनदयालु कृपालु हौ बड़े तुम्हारो लाल। निठुर वचन कैसे कह्यो माखनप्रभु गोपाल
याही विधि हांसी करौ निज नारिनके साथ। जैसी तुम हमसे करी माखन प्रभु ब्रजनाथ

यह सुनकर श्रीकृष्णजी बोले हे प्राणप्यारी तेरा प्रेम व विश्वास बड़ा
है मैंने ऐसा कठोर वचन कहकर केवल तेरी प्रीति की परीक्षा ली थी सो
तेरा प्रेम सच्चा पाया जिस तरह मेरे निष्काम भक्त होते हैं उसी तरह तुझे
भी देखा मेरा कठोर वचन सुनने से रंग तेरा पीला होगया पर अन्तः
करणसे प्रेम नहीं घटा सो हे प्राणप्यारी तू अपनी बड़ाई इस तरह समझ
कि मनुष्य मेरी स्तुति करके अपना जन्म स्वार्थ करते हैं और मैं तेरा
गुण इसतरह वर्णन करताहूं जिससमय मैंने तेरे भाई का शिर मुड़वाकर
उसके हाथ बँधवाये थे उस समय भी तैंने सिवाय अधीनताई के मुखसे
कुछ नहीं कहा पतिव्रता स्त्रियों का यही धर्म है कि अपने पतिकी आज्ञा
नुसार चलैं और मैं तेरी सुन्दरताई सुनकर कुण्डिनपुर नहीं गया था के
वल तेरा सच्चा प्रेम देखकर तुझे लेआया अब तू कुछ चिन्ता न करके
सदा प्रसन्न रहाकर जो कोई यह अध्याय सच्चे मनसे कहै व सुनैगा इसी

तरह उसकी भी स्त्री व पुरुष में प्रीति होगी हे परीक्षित यह वचन श्याम-सुन्दरका सुनकर रुक्मिणी हर्ष से उनकी सेवा करने लगी ॥

दो० जैसी यह लीला करी माखन प्रभु यदुनाथ। याही विधि क्रीड़ा करैं सब नारिनके साथ ॥

इकसठवां अध्याय।

श्रीकृष्णजीके वंशकी कथा ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित इसी तरह श्रीकृष्णजी द्वारकापुरी में सोलहहजार एकसौआठ स्त्रीसे भोग व विलास करके धर्म गृहस्थाश्रमका शास्त्रानुसार रखते थे व सब स्त्रियां पतिव्रताधर्मसे आठों पहर सेवा उनकी करती थीं व हरिइच्छासे सब स्त्रियों के दश दश पुत्र श्यामरंग कमल-नयन अति वलवान् व एक एक कन्या महासुन्दरी उत्पन्न होकर वे सब अपने वालचरित्र का सुख माता व पिता को दिखलाते थे व उनके माता व पिता उत्तमोत्तम भूषण व वस्त्र पहिनाकर प्रसन्न होते थे सब एकलाख इकीसहजार अस्सी पुत्र व सोलहहजार एकसौ आठ कन्या वसुदेवनन्दन के उत्पन्न होकर उनके आगे इतनी सन्तान बढ़ी कि उनकी गिन्ती नहीं हो सकी ॥

दो० शोभा आठों रानियन कासों वरणीजाय। शिव विरञ्चि सनकादि मुनि देखत रहैं लुभाय॥

हे परीक्षित सब स्त्रियां आठों पहर केशवमूर्तिको अपने पास देखकर अति प्रसन्न होती थीं और उनकी जो सन्तानें हुई थीं उनका नाम कहते हैं सुनो प्रद्युम्न आदिक रुक्मिणी व भानआदिक सत्यभामा व साम्बआदिक जाम्बवती व सूराति आदिक कालिंदी व श्रीमान् आदिक सत्या व वर-घोष आदिक लक्ष्मणा व वरक आदिक मित्रविन्दा व संग्रामजित् आदिक भद्राके बेटोंका नाम था व ताम्रकेतु व दत्तमान दो भाई बलरामजी के रोहिणी से हुये थे प्रद्युम्न के अनिरुद्ध होकर अनिरुद्ध से बलराम नाम पुत्र उत्पन्न हुआ था सो रुक्माग्रजने मुरलीमनोहरके यहां प्रद्युम्न आदिक पुत्र होनेका हाल सुनकर अपनी स्त्रीसे कहा रुक्मवती मेरी कन्या जो कृतवर्माके पुत्रसे मांगी गई है उसे वहां न विवाहकर स्वयंवर उसका रचूंगा तू चिट्ठी भेजकर रुक्मिणी मेरी बाहिनको उसके बेटोंसमेत बुलाभेज यह

वचन सुनते ही उसने पत्री लिखकर ब्राह्मणके हाथ रुक्मिणीके पा
भेजदी सो रुक्मिणीजी यह समाचार पाते ही वसुदेवनन्दनसे आज्ञा लेक
प्रद्युम्न समेत भोजकट नगरमें गई सो रुक्म अपनी वहिनको देख
अति प्रसन्न हुआ पर उसने पिछली वात याद करके लज्जासे शिर अप
नीचा करलिया व उसकी स्त्रीने पैरोंपर शिर रखकर रुक्मिणीसे कहा ज
से मेरा ननदोई तुम्हें हरलेगया तवसे आज तुम्हारा दर्शन पाया सो तु
हमारे ऊपर कृपा करके प्रद्युम्नका विवाह मेरी कन्यासे करो यह सुनक
रुक्मिणी वोली भैया का हाल तुमको मालूम है फिर क्या झगड़ा क
वोगी ऐसी वात कहते व सुनते मुझे डर मालूम होता है जव रुक्म
यह वृत्तान्त अपनी स्त्रीसे सुना तव वह रुक्मिणीसे वोला हे वहिन अ
तुम कुछ मत डरो वेदकी आज्ञानुसार भानजेको कन्यादान देते हैं
लिये रुक्मवतीका विवाह प्रद्युम्नसे करके श्रीकृष्णजीके साथ नई नातेदा
करूंगा जिसमें पिछला वैर मिटजावै जव यह वात कहकर रुक्माग्रज अप
सभामें जहां पर अनेक राजा उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहिने स्वयंवर क
आये थे जा वैठा तव प्रद्युम्न भी अपनी माता से आज्ञा लेकर वहां जा
खड़ा हुआ जव रुक्मवती जयमाल हाथ में लिये सव राजों को देख
हुई प्रद्युम्न के पास पहुँची तव उसने सांवली सूरतपर मोहित होकर ज
माल उसके गले में डालदिया यह हाल देखतेही सव राजों ने आपस
यह सम्मत किया कि जव प्रद्युम्न राजकुमारी को लेकर यहां से चले त
राह में छीनलेवैं ऐसी इच्छा से सव राजा द्वारका के रास्ते पर जा
हुये व रुक्म ने विधिपूर्वक रुक्मवती का प्रद्युम्न से व्याह कर वहुतसा
व रत्नादिक दहेज में दिया जव रुक्मिणीजी अपने भाई व भौजाइयों
विदा होकर वेटा व पतोहू समेत द्वारका को चलीं व राह में उन सव रा
ने आनकर घेरलिया तव प्रद्युम्न ने वाण मारकर क्षणभर में सव राजों
भगादिया जव रुक्मिणीजी दुल्लह व दुलहिन को साथ लिये हुई आनन्द
पूर्वक द्वारका में पहुँचीं तव वसुदेव व देवकी आदिक रीति व रस्म कर
दुल्लह व दुलहिन को राजमन्दिर में लिवा लेगये व घर घर मंगला

होनेलगा जब कई वर्ष उपरान्त प्रद्युम्न के रुक्मवती के पेट से एक लड़का महासुन्दर व तेजस्वी उत्पन्न हुआ तब श्यामसुन्दर ने मंगलाचार मनाकर मुखमांगा दान व दक्षिणा ब्राह्मण याचकों को दिया व ज्योतिषियों को बुलाकर जन्मलग्न उसका पूंछा तब ब्राह्मणों ने उस बालक का नाम अनिरुद्ध रखकर कहा महाराज यह पुत्र अतिसुन्दर व बलवान् व चौदहों विद्यानिधान होगा यह बात सुनकर वसुदेवनन्दन ने ज्योतिषियों को सन्मानपूर्वक विदा किया और वह बालक प्रतिदिन चन्द्रकलासा बढ़ने लगा जब रुक्म ने यह हाल सुना कि मेरे नाती उत्पन्न हुआ तब उसने बड़े हर्ष से भूषण व वस्त्र भेजकर ऐसी चिट्ठी श्रीकृष्णजी को लिखी कि मैं अपनी पोती का विवाह तुम्हारे पौत्र से करूंगा जब रुक्मने यह पत्री भेजकर थोड़े दिन उपरान्त एक ब्राह्मण के हाथ सामग्री तिलक की द्वारका में भेजदी तब श्यामसुन्दर ने बड़े हर्षसे वह तिलक अनिरुद्ध को चढ़ाया व उस ब्राह्मण को द्रव्यादिक देकर विदा किया व राजा उग्रसेन से आज्ञा लेकर श्याम व बलराम बड़ी धूमधाम से अनिरुद्ध को ब्याहने गये जब बरात भोजकट नगरके निकट पहुँची तब रुक्माग्रज नेवतहारी राजों समेत आगे से लेने गये व सब बरातियों को बड़े आदर भाव से नगर में लेजाकर जनवासा दिया व यथायोग्य सबका सन्मान करके दुल्लह को मड़ये में लेगया जब विधिपूर्वक पोती का कन्यादान देकर रुक्म ने बहुतसा द्रव्यादिक दहेज में श्यामसुन्दर को दिया तब राजा भीष्मक ने जनवासे में जाकर श्रीकृष्णजी से कहा महाराज विवाह होचुका अब यहां अधिक रहना उचित नहीं है किस वास्ते रुक्मने जिन राजों को अपने यहां नेवते में बुलाया है वह आपसे शत्रुता रखते हैं ऐसा न हो जो कोई उत्पात करैं यह कहकर राजा भीष्मक अपने घर चले गये व केशवमूर्ति ने रुक्मिणी को सब वृत्तान्त सुनाकर चलने वास्ते कहा तब वह रुक्म से बोली हे भाई तुम्हारे नेवतेवाले राजा मेरे प्राणनाथ से शत्रुता रखते हैं इसलिये हमको विदा करदेव नहीं तो शुभकार्य में विघ्न हुआ चाहता है यह सुनकर रुक्म बोला हे बहिन तुम किसी बातकी चिन्ता

मत करोमैं पहिले नेवतेवाले राजोंको विदा कर आऊं पीछे जो तुम कहो सो करूंगा जव ऐसा कहकर रुक्म सव राजों को विदा करने वास्ते उनके डेरोंपर गया तव कलिंग देशके नृपति और कई राजोंने रुक्मसे कहा देखो तुमने श्याम व बलराम को इतना द्रव्य दहेज में दिया पर उन्होंने अभि मान की राह कुछ नहीं समझा एक तो इस बात का माख हमलोगों को है दूसरे उस दिन की कसक हमारे मनसे नहीं भूलती जो बलरामजी ने रुक्मिणीहरण में तुम्हारी गति की थी सो हमलोग यादववंशियों को युद्ध में जीतने नहीं सक्के तुम बलदाऊजी को हमारे स्थान पर बुलादो तो चौपड़ में सव धन उनका जीत लेवें व श्यामसुन्दर से बिगाड़ना कुछ प्रयोजन नहीं है जव यह वचन सुनकर रुक्म को पिछली बात याद करके क्रोध उत्पन्न हुआ तव वहां से उठकर कुछ सोच विचार करता हुआ बलभद्रजी के पास जाकर बोला महाराज आपको सव राजों ने दण्डवत् करके चौपड़ खेलने वास्ते बुलाया है यह बात सुनकर जव बलदाऊजी रुक्मके साथ राजों की सभा में आये तव उन्होंने सन्मानपूर्वक बैठाकर उनसे कहा हमलोग आपसे चौपड़ खेलना चाहते हैं इतना कहकर उन्होंने चौपड़ बिछा दिया व रुक्म व बलराम खेलने लगे जव पहिले रुक्म ने दश बाजी बलभद्र से जीति लिया और वह बहुत द्रव्य हार गये तव रुक्मने अभिमानपूर्वक बलराम से कहा सव धन हार गये अब काहे से खेलोगे और कलिंग देशका राजा भी यह बात कहकर हँसने लगा तब बलरामजी लज्जित होकर दश करोड़ रुपये की बाजी लगाकर बोले॥

दो० कह्यो हमारे मन बिषे जो नहिं कपटकुभाव। तौ अबकी हम जीति हैं निश्चयकरि यह दांव॥

जव वह बाजी रेवतीरमण जीतकर रुपया उठाने लगे तव सव राजा अधर्म से बोले रुक्म ने बाजी जीती यह बात सुनकर बलरामजी ने वह रुपया रुक्म को देडाला दूसरी बाजी अर्ब रुपये की लगाकर बलदाऊजी ने पांसा फेंका जव वह बाजी भी संकर्षण जीते तव फिर सव राजा झूठ बोल कर कहने लगे रुक्म ने जीता है कलिंग देश का राजा हँसने लगा जव यह अधर्म सवका देखकर बलरामजी को क्रोध हुआ तव अपने

अभिमान से चिल्लाकर बोला सुनो वलभद्रजी तुम सच कहने से क्यों क्रोध करते हो तुमने जन्म अपना ग्वालों के साथ वनमें रहकर विताया राजसी खेल चौपड़ खेलने का तुम क्या जानो जुआ खेलना व शत्रुओं से लड़ना राजाओं का धर्म है॥

दो० वसे नन्दघर जायकैं रहे चरावत गाय। हम राजनकी सभाको जानत नहीं स्वभाय॥

यह वचन सुनकर रेवतीरमण को ऐसा क्रोध हुआ जैसे पूर्णिमा को समुद्र की लहर वढ़ती है पर उन्होंने रुक्मिणी के संकोच से क्रोध अपना क्षमा किया व सात अर्व रुपये की फिर वाजी लगाकर खेले जव वह वाजी भी वलदाऊजी ने जीती व सव राजा झूठ वोलकर रुक्मका जीतना वतलाने लगे तव यह आकाशवाणी हुई कि वाजी संकर्पणजी ने जीती है तुम सव क्यों झूठ वोलते हो जव आकाशवाणी होने पर भी सव लोग अधर्म से वलभद्रजी को झूठा बनाने लगे तव वलदाऊजी महाक्रोधित होकर रुक्मसे वोले तैंने नातेदारी करने परभी हमसे शत्रुताई नहीं छोड़ी अव चाहे भौजाई वुरा मानैं या भला तुमको विना मारे नहीं छोडूंगा यह वात कहकर रेवतीरमणने सव राजोंकेसामने अपने हल व मूशल से रुक्मको मारडाला जव कलिंगदेश का राजा यह हाल देखकर वहांसे भाग चला तव उसको भी पछाड़कर घुस्सोंसे दांत तोड़डाले व दूसरे राजा जो उस सभामें झूठ वोलकर वलरामजीको हँसते थे उनमें किसीका हाथ व किसीका पैर व किसीकी नाक मारे घुस्सोंके तोड़दिया यह दशा देखतेही और सव राजा अपने प्राणके डरसे भाग गये व जव वलदाऊजी ने श्यामसुन्दरके पास जाकर सव वृत्तान्त वहां का सुनाया तव केशवमूर्ति अन्तर्यामीने रुक्मका अधर्म समझकर अपने भाईको कुछ नहीं कहा और वहांसे दुलह व दुलहिन को रुक्मिणी व वरातियों समेत अपने साथ लेकर द्वारकाको चले॥

दो० या विधिपौत्र विवाहिकै माखन प्रभु यदुनाथ। आनँदसों पहुँचे सदन सकल सेन लै साथ॥

जव उनके आनेका समाचार द्वारकावासियोंने सुना तव सव छोटेवड़े गाते वजाते आगे से आनकर दुलह व दुलहिनको राजमन्दिरमें लेगये

व घर घर मंगलाचार होने लगा व श्याम व बलरामने राजा उग्रसेन
हाथ जोड़कर कहा महाराज तुम्हारे पुण्य प्रताप से अनिरुद्ध को
कर लेआये व रुक्माग्रजको जो बड़ा अधर्मी था मारडाला यह बात
कर राजा उग्रसेन अति प्रसन्न हुये॥

बासठवां अध्याय।

अनिरुद्ध व ऊपाकी कथा॥

राजा परीक्षित ने इतनी कथा सुनकर शुकदेवजीसे विनय किया
महाराज दयालु होकर अब अनिरुद्धहरणकी कथा सुनाइये॥

दो० कहौ प्रकट समझायकै सकल ऋषिनके राय। श्रीमाखन प्रभुकी कथा श्रवणन सदा सुहाय

यह सुनकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित द्वारकानाथकी दयासे
अनिरुद्धकी कथा कहता हूं सुनो ब्रह्माजी के वंशमें कश्यपजी होकर
का पुत्र हिरण्यकशिपु बड़ा बलवान् हुआ जिसके यहां प्रह्लाद भक्त
जन्म लिया व प्रह्लाद का बेटा वैरोचन होकर उसके यहां राजा बलि
धर्मात्मा हुआ जिसका यश आजतक संसार में छाय रहाहै व राजा बलि
के यहां सौ पुत्र होकर बाणासुर बड़ा बेटा उसका महाबली व सत्यवादी
व धर्मात्मा था सो वह शोणितपुर में ब्रह्मचर्यसे राज्य करके नित्य कैलाश
पर्वत पर जाकर पूजा व तप महादेवजीका प्रेमपूर्वक करता था एक दिन
बाणासुर मृदंग लेकर बड़े प्रेमसे महादेवजीके सामने नाचने व गाने लगा
तब भोलानाथ ने प्रसन्न होकर पार्वती समेत उसे दर्शन देकर कहा हे बेटा
तेरा प्रेम देखकर मैं अतिप्रसन्न हुआ जो इच्छा हो सो वरदान मांग बाणा-
सुर ने उनको साष्टांग दण्डवत् करके विनय किया हे महाप्रभु आप
दयालु होकर दर्शन दिया तो मुझे पहिले अमर कर दीजिये फिर चौदह
लोकका राज्य देकर ऐसा पराक्रम दीजिये जिसमें कोई देवता आदि क
मुझे जीतने न सकैं॥

दो० बहुत भांति विनती करूं हौं दासनको दास। तुम ठाकुर तिहुंलोक के पुरवव सबकी आस

यह वचन सुनतेही शिवजी ने हजार भुजा बाणासुर को देकर कहा
हमने तुझे इच्छापूर्वक वरदान दिया अब तू अचल राज्य कर तुझे कोई

नहीं जीत सकैगा जब महादेवका वर पाने से बाणासुरके हजार भुजा हो गईं तब वह उनसे विदा होकर हँसता हुआ राजमन्दिरपर आया व अपनी भुजाके बलसे संसारी राजों व सब देवतोंको जीतकर तीनोंलोकका राज्य करने लगा व नित्य कैलास पर्वत पर जाकर विधिपूर्वक पूजन महादेव जी का करता था व सब देवता उसके आधीन रहते थे व शिवजी ने बाणासुरसे यह कहा था कि हम तेरे नगरकी रक्षा करेंगे इसलिये महादेव के गण शोणितपुरमें रक्षा करने वास्ते रहते थे जब बाणासुरसे कोई शत्रु लड़नेवाला नहीं ठहरा व हजार भुजा उसकी विना लड़े खुजलाने लगीं तब वह बड़े बड़े पर्वत उठाकर दूसरे पहाड़ों पर पटकके चूर करने लगा तिसपरभी उसका बोध नहीं हुआ तब उसने विचारा कि विना युद्ध किये सब भुजा मुझको बोझ मालूम देती हैं इसलिये महादेवजीके पास चल कर किसी शत्रु का पता पूंछूं ऐसा विचारकर कैलास पर्वत पर चला गया व शिवजी से विनय किया हे महाप्रभु तीनोंलोक में कोई ऐसा बलवान् दिखलाई नहीं देता जो मेरे साथ लड़ने सकै जब मैं दिग्पाल हाथियों से लड़ने गया और वह भी हमसे हार मान गये तब मैंने बड़े बड़े पहाड़ों को मुक्का मारकर चूर कर डाला सो विना युद्ध किये सब भुजा मुझे बोझ मालूम होती हैं कोई लड़नेवाला बतलाइये जिससे युद्ध करूं॥

चौ० यद्यपि यह जानों मनमाहीं। तुमसों और बली कोउ नाहीं॥
त्यहि कारण त्रिभुवनके नाथा। तुमहीं युद्ध करौ मम साथा॥

यह अहंकार सुनकर महादेवजी ने विचारा कि मैंने तो इसको भक्त जानकर ऐसा वरदान दिया था सो यह अज्ञान मुझीसे लड़ने आया इस लिये इसका अभिमान तोड़ना उचित है ऐसा विचारकर शिवजी बोले हे मूर्ख अभिमानी तू मत घबड़ा अभी तक तो तीनोंलोकमें ऐसा कोई बल-वान् नहीं है जो तेरे साथ लड़ने सकै पर थोड़े दिनों में श्रीकृष्णजी अवतार लेकर तुझसे लड़ेंगे यह वचन सुनतेही बाणासुर ने प्रसन्न होकर महादेवजी से पूंछा महाराज मुझे उनके अवतार लेने का हाल किसतरह मालूम होगा तब भोलानाथ ने एक ध्वजा बाणासुर को देकर कहा तू

इस ध्वजा को लेजाकर अपने राजमन्दिर पर खड़ी कर दे जिस दि
यह ध्वजा आपसे टूटकर गिर पड़े उस दिन जानियो कि मेरा श
उत्पन्न हुआ वाणासुर वह ध्वजा लेकर बड़े हर्ष से अपने मकान प
चला आया व उसे राजमन्दिर पर खड़ा कर दिया व सदा उसे देख
अपने शत्रु उत्पन्न होनेकी इच्छा रखता था जब कई वर्ष वीते वाणासुर
वाणावती बड़ी स्त्री से एक कन्या ऊषा नाम अतिसुन्दरी उत्पन्न हुई त
उसने प्रसन्न होकर ब्राह्मण व याचकोंको बहुतसा दान व दक्षिणा दि
जब ऊषा सात वर्षकी हुई तब वाणासुरने उसको सहेलियों समेत कैला
पर्वतपर महादेव व पार्वतीके पास विद्या पढ़नेवास्ते भेज दिया सो ऊ
ने वहां पहुँचकर भोलानाथ व पार्वतीको दण्डवत् करके विनय किया
त्रिलोकीनाथ इस दासीको विद्यादान देकर संसारमें यश लीजिये त
महादेव उसे विद्या पढ़ाने लगे कुछ दिनोंमें ऊषा उनकी कृपा से सब शा
व गाने व बजानेमें ऐसी निपुण होगई कि अनेक तरहका बाजा ब
कर छः राग व छत्तीस रागिनी गाने लगी एक दिन ऊषा वीणा बजा
पार्वतीजीके साथ सांगीत राग गाती थी उस समय शिवजीने पार्वती
कहा हे प्राणप्यारी जिस कामदेवको मैंने जलादिया था उसने श्रीकृष्ण
के यहां प्रद्युम्न नामसे जन्म लियाहै ऐसा कहकर शिवजी पार्वतीको सा
लिये गंगाकिनारे चले गये व बड़े प्रेमसे उनके साथ स्नान व जलवि
किया व पार्वतीजीको अपने हाथसे उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहिना
जब जगन्माता वीणा बजाकर सांगीत राग उनको सुनानेलगीं उस स
महादेवजीने प्रसन्न होकर बड़े प्रेमसे पार्वतीजी को गले लगा लिया
हाल देखकर ऊषा को भी इस बात की चाहना हुई कि मेरा ब्याह
हुआ होता तो इसी तरह अपने पतिसे विहार करती जैसे रात्रि वि
चन्द्रमाके शोभा नहीं देती वैसे स्त्री विना पुरुष के अच्छी नहीं मालू
होती उसके मनका हाल पार्वती अंतर्यामीने जानकर उसे अपने पा
बुलाया व ऊषा को धैर्य देकर कहा अय बेटी तेरा स्वामी तुझे स्वप्न
आनकर मिलेगा तू उसे ढुँढ़वाकर भोग व विलास कीजियो जब ऐ

कहकर पार्वतीजीने उसको बिदा किया व ऊषा उन्हें दण्डवत् करके राजमन्दिरपर आई तब बाणासुरने एक स्थान रत्नजटितमें उसको सहेलियों समेत रक्खा जिसतरह चन्द्रमाका प्रकाश द्वितीयासे पूर्णमासी तक बढ़ता है उसीतरह ऊषा बारह वर्ष तक बढ़कर ऐसी सुन्दरी व तरुणी हुई जिसके सामने पूर्णमासीका चन्द्रमा धूमिल दिखलाई देने लगा एक दिन ऊषाने सोरहों शृंगार किये सहेलियोंको साथ लिये अपने माता व पिताके पास जाकर दण्डवत् किया तब बाणासुरने उसे विवाहने योग्य देखकर विचारा अब यह ब्याहने योग्य हुई यह समझकर उसने बहुत दैत्य व राक्षसोंको उसके महलकी रक्षा करनेवास्ते बैठा दिया जिसमें कोई पुरुष वहां जाने न पावै व ऊषा अपने स्वामीके मिलनेवास्ते आठोंपहर पूजा व ध्यान पार्वतीजीका करने लगी सो एकदिन ऊषाने रात्रिको शय्यापर अकेली बैठी हुई यह विचारा देखें राजा मेरा विवाह कब करते हैं जब वह इसी तरह विचारती हुई सोगई तो स्वप्नमें क्या देखा कि एक पुरुष किशोर अवस्था श्यामरंग चन्द्रमुख कमलनयन अतिसुन्दर जड़ाऊ मुकुट शिरपर धरे किरीट कुण्डल व पीताम्बर पहिने अंग अंगपर गहना जड़ाऊ साजे मोतियों की माला गलेमें डाले जर्द उपरना रेशमी ओढे सामने आनकर खड़ा है ऊषा वह मूर्ति देखतेही लज्जित होगई जब उस पुरुषने प्रेमपूर्वक बातोंसे लज्जा उसकी छुड़ाकर अपने गले लगा लिया तब वह सुन्दरी उस मोहनीमूर्तिको अपनी शय्यापर बैठाकर प्रेमकी वार्ता करने लगी जैसे ऊषाने हाथ फैलाकर कमलनयनसे मिलने चाहा वैसे आंख उसकी खुलगई व मनकी इच्छा मनहीमें रही ॥

दो॰ जाग पड़ी शोचत खड़ी भयो परमदुख ताहि। कहां गयो वह प्राणपति देखत चहुँदिशिजाहि॥

जब ऊषाने जागने उपरांत उस पुरुषको नहीं देखा तब व्याकुल होकर कहने लगी अब मैं अपने प्राणप्यारे को किस तरह देखूं कदाचित् न जागती तो किसतरह वह मेरा मन चुराकर भाग जाता अब जो रात बाकी है वह कैसे कटैगी ॥

चौ॰ बिन पीतम जिय निपट अचैन। देखे बिन तरसत हैं नैन॥

कान सुनों चाहत हैं बैन। कहां गये पीतम सुखदैन॥
जो स्वप्नेमें फिरि लखि लेऊं। प्राण साथ उनके करि देऊं॥

जब ऊषा इसतरह अनिरुद्धको स्वप्नेमें देखकर उसपर मोहित हो तब उस रूपका ध्यान हृदयमें रखकर शय्यापर पड़रही व उसी शोचमें नि उसे न आई जब पहरदिन चढ़ेतक नहीं उठी तब उसकी सहेलियां आ में कहने लगीं आज क्या कारणहै जो राजकन्या सोकर नहीं उठी वह सब घबड़ाकर ऊषाका समाचार लेनेवास्ते शीशमहलमें गईं तब रोतीहुई व्याकुल देखकर बहुत समझाया पर विरहकी मारीहुई नहीं सब सहेलियोंसे चित्ररेखा कुम्भाण्डकी बेटीने ऊषाका हाल सुना तब राजकन्याके यहां जाकर क्या देखा कि ऊषा छपरखटमें लेटी हुई रोती यह दशा उसकी देखतेही चित्ररेखाने घबड़ाकर पूंछा अय प्यारी आ क्या दुःख तुमको हुआ जो इतना रोती हो अपना भेद मुझे बतलाओ उसका उपाय करूं मुझे तुम्हारी दयासे यह सामर्थ्य है कि चौदहों लोक जाकर जो काम किसीसे न हो वह करलाऊं ब्रह्माके वरदान देने से शार देवी आठोंपहर मेरे साथ रहती हैं उनकी कृपासे ब्रह्मादिक देवतोंको कर लेने सक्तीहूं मेरा गुण अबतक तुमको नहीं मालूम था आज तुम्हा यह दशा देखकर अपना हाल तुमसे कहा॥

चौ० अब तू कह सब अपनी बात। कैसी कटी आजकी रात॥
मुझसे कपट करो मत प्यारी। पूरण करिहौं आश तुम्हारी॥
दो० अंग अंग व्याकुल महा मानो लगो है प्रेत। कहो कपट समझायकै कासों बाढ्यो हेत॥

ऊषा यह प्रेमपूर्वक बात सुनकर छपरखटसे उतर पड़ी व लज्जासं उसके निकट आनकर धीरेसे बोली अय सखी मैं तुझे परम मित्र जान रातका हाल कहतीहूं तू यह बात अपने मनमें रखकर जो उपाय तुम बनपड़े सो कीजियो आज रातको एक पुरुष श्यामवर्ण कमलनय अतिसुन्दर मेरी शय्यापर आन बैठा जब उसने प्रेमपूर्वक बातें कहकर मे मन हरलिया तब मैंनेभी लज्जा छोड़कर उसको गले लगानेवास्ते हा पसारा तो जाग उठने से फिर उसको नहीं देखा पर वह मोहनीरूप आं में बस रहा है उसका नाम व घर मैं कुछ भी नहीं जानती॥

चौ० वाकी छवि बरणी नहिं जाय। मेरो चित लै गयो चुराय ॥
मन लाग्यो त्यहि सूरतमाहीं। इकक्षण कबहूं भूलत नाहीं ॥

जव मैं कैलास पर्वतपर विद्या पढ़ती थी तव मुझे पार्वतीजीने कहाथा कि तेरा स्वामी तुझको स्वप्नें में आनकर मिलेगा तू उसको ढुंढ़वा लीजियो वही पति आज रात मुझे स्वप्नेमें मिलाथा पर मैं उसे कहां ढुँढ़वाकर पाऊं व अपना दुःख किससे सुनाऊं ॥

दो० पड़ै नींद नयनन नहीं धरै नहीं चित चैन। वह मूरति सुखधामकी ढूंढति हौं दिन रैन ॥

जव ऊषा यह हाल अपना कहकर ठण्ढी श्वास लेने लगी तव चित्ररेखाने कहा हे प्यारी अव तुम किसी वातकी चिन्ता मत करो मैं तुम्हारे चित्तचोर को जहां होगा वहां से ले आकर मिला दूंगी तुम मुझे आज्ञा देव तो मैं तीनों लोकमें जितने सुन्दर पुरुष हैं सवकी तसवीर खींचकर तुम्हें दिखलादूं तुम उनमें से अपने चित्तचोरको पहिंचान कर मुझे बतला देव फिर उसका ले आना मेरा काम है यह बात सुनतेही ऊषा प्रसन्न होकर वोली वहुत अच्छा मैं अपने चित्तचोर को पहिंचान लूंगी यह वात सुनतेही चित्ररेखा ने गणेशजी व शारदा देवी को मनाकर तसवीर खींचना आरम्भ किया व देवता व किन्नर आदिकके करोड़ों चित्र खींचकर उसे दिखलाया जव ऊषाने उनमें अपने चित्तचोरको नहीं पहिंचाना तव उसने तसवीर श्रीकृष्णजी व प्रद्युम्नकी लिखकर ऊषाको दिखलाया जव वह दोनों चित्र देखतेही ऊषा इस तरह लज्जित होगई जिसतरह स्त्री अपने श्वशुर आदिकको देखकर लज्जित होजाती है तव वह चित्ररेखासे वोली मेरा चित्तचोर इन्हींके वंशमें होगा यह वचन सुनते ही चित्ररेखाने जैसे तसवीर अनिरुद्ध की खींचकर राजदुलारीको दिखलाई वैसे ऊषा अचेत होगई जव चित्त उसका ठिकाने हुआ तव चित्ररेखासे वोली स्वप्ने में यही पुरुष मेरा मन चुरा लेगया है अव ऐसा उपाय करना चाहिये जिसमें यह मुझे मिले नहीं तो मेरा प्राण इसके विरह में निकलने चाहता है यह वात सुनकर चित्ररेखा वोली अय प्राणप्यारी अव यह पुरुष मेरे हाथसे वचकर नहीं जा सक्ता यह यदुवंशीकुलमें श्रीकृष्णजी का पोता व प्रद्युम्नका

बेटा अनिरुद्ध नाम द्वारकापुरीमें रहता है व सुदर्शनचक्रकी रक्षा करके कोई मनुष्य व दैत्य व राक्षस विना आज्ञा श्रीकृष्णजीके वहां जाने नहीं सक्ता यह वात सुनतेही ऊषा उदास होकर बोली वहां का पहुँचना ऐसा कठिनहै तो मेरे प्राणनाथको किस तरह ले आवोगी चित्ररेखाने कहा चिन्ता न कर मैं तेरे वास्ते एक बेर उपाय करती हूँ जब ऐसा कहने उप रांत चित्ररेखा चील्हरूप बनकर वहांसे उड़ती हुई द्वारकापुरी के निकट पहुँची तब उसने क्या देखा कि सुदर्शनचक्र चारों ओर घूमकर उस पुरी की रक्षा करताहै व विना आज्ञा उसके द्वारकापुरीमें कोई जाने नहीं सक्ता जब यह दशा देखकर वह खड़ी होरही तब परमेश्वरकी इच्छानुसार नारद मुनिने वहां आनकर चित्ररेखासे पूंछा तू यहां किसवास्ते आई है अब चित्ररेखाने नारदमुनिको दण्डवत् करके सब कारण अपने आनेका उन से वर्णन किया तब नारदमुनिने उसे एक मंत्र वतलाकर कहा तू साधु का वेष वनाकर द्वारका में जा तो सुदर्शनचक्र तुझे नहीं रोंकेगा और अनिरुद्ध को वाणासुरसे लड़ती समय मेरा स्मरण करना चाहिये अब ऐसा कहकर नारदमुनि चले गये तव चित्ररेखाने उसी समय वैष्णवका रूप सांगोपांग वना लिया व अँधियारी रातमें श्यामघटाके साथ बिजुली सी चमकती हुई द्वारकापुरीमें चली गई और सुदर्शनचक्रने वैष्णव समझ कर नहीं रोंका तब ढूंढ़ती हुई अनिरुद्धके महलमें जहां वह शय्या पर अकेला सोया हुआ स्वप्न में ऊषाके साथ विहार कर रहा था जा पहुँची व उनको वहांसे शय्या समेत उठाकर ले उड़ी व एक क्षणमें पलँग उसके बीच महल ऊषाके ले जाकर रख दिया व ऊषासे बोली मैंने तुम्हारे चित्त चोरको यहां ले आकर पहुँचा दिया अब तुम इसके साथ विहार करो अब यह हाल देखकर चित्ररेखा के पांवपर गिर पड़ी व हाथ जोड़कर कहने लगी तू धन्य है जो तैंने मेरे चित्तचोरको क्षणभरमें यहां लाकर अपना प्रण पूरा किया अब जन्मभर तेरा गुण न भूलूंगी यह सुनकर चित्ररेखा बोली संसारमें परोपकारसे उत्तम दूसरी वात नहीं होती अब तुम अपने प्राणपतिको जगाकर इच्छा पूरी करो ऐसा कहकर चित्ररेखा अपने घर

चली गई व ऊषा डर व लज्जासे मनमें कहने लगी किस तरह इसको जगाकर अपना मनोरथ पूर्ण करूं फिर कुछ सोच विचारकर जब राजकुमारी मीठे स्वरोंसे बीन बजाने लगी तब अनिरुद्धने जागकर चारों ओर देखा तो अपने को दूसरे स्थानमें पाकर मनमें कहा मुझको यहां कौन पलँग समेत लेआया ॥

दो० पहिले श्रीप्रद्युम्नकी सुनी इती इन बात। ताही विधि मोको भयो जानो कछु उत्पात ॥

अनिरुद्ध तो यही शोच व विचार कर रहा था ऊषा अपने प्राणनाथ को जागते देखकर रूपरस उनका आंखोंकी राह पीने लगी तब अनिरुद्ध ने उस सुन्दरीको देखकर कहा हे प्राणप्यारी तुम कौन होकर मुझे किस वास्ते यहां उठा ले आई हो जब ऊषा इस बातका कुछ उत्तर न देकर लज्जा से कोने में सिमिट गई तब अनिरुद्ध ने हाथ उसका पकड़कर अपनी शय्यापर बैठा लिया व प्रेमभरी बातें कहकर उसकी लजा छुड़ा दिया जब दोनोंने आपस में गन्धर्व विवाह करके अपने मनकी इच्छा पूरी की तब अनिरुद्धने ऊषासे हँसकर पूंछा हे प्राणप्यारी तैंने मुझे किस तरह देख कर यहां मँगवाया यह सुनकर ऊषा बोली मैं तुम्हें स्वप्नेमें देखकर अति मोहित होगई सो चित्ररेखा तुम्हारे विरहमें मुझे व्याकुल देखकर न मालूम तुमको यहां किस तरह लेआई यह बात सुनकर अनिरुद्ध बोले हे प्राणप्यारी आज मैं भी तुझे स्वप्नेमें देखकर तेरे साथ विहार कर रहा था सो न मालूम कौन मुझे यहां उठा लाया जब मैं वीणा का शब्द सुनकर जागा तब तुझे देखा जब इसी तरह सुख व विलास करते हुये सवेरा होगया तब ऊषाने अनिरुद्धको अपनी सखी व सहेलियोंसे छिपाकर कहीं अलग रक्खा व उसकी सेवा आप करने लगी जब कई दिन बीतनेपर अनिरुद्ध का हाल सब सखी व सहेलियोंको प्रकट होगया तब ऊषा उन्हें छत्तीस व्यञ्जन खिलाकर उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहिनाने लगी ॥

दो० मैनपुत्र सुखदैन का प्रेम लगै दिन रैन। काम कलोल करैं सदा बोलत अमृत बैन ॥

एक दिन ऊषा व अनिरुद्ध आपस में चौपड़ खेलरहे थे उसी समय ऊषाकी माता अपनी कन्याको देखने आई तो अनिरुद्धकी सुन्दरताई

देखतेही अति प्रसन्न होकर दबे पांव फिर गई व ऊषा व अनिरुद्ध यह भेद न जानकर ज्योंके त्यों खेलते रहे चार महीने अनिरुद्धके रहनेका हाल छिपा रहकर फिर इस तरह प्रकट होगया कि एक दिन ऊषा ने अनिरुद्ध को सोया हुआ देख कर यह विचारा कि मेरे बाहर न जाने से सब लोग सन्देह करेंगे ऐसा विचारतेही ऊषा अपने रंगमहल का द्वार खोलकर बाहर निकली व क्षण भर में फिर बन्द करके भीतर चली गई व अनिरुद्ध के साथ विहार करने लगी यह देखकर उस महल के चौकीदारों ने आपस में कहा देखो भाई आज क्या कारण है जो राजकन्या इतने दिनों पर बाहर निकल कर फिर उलटे पैर महल में चली गई यह बात सुनकर दूसरा द्वारपालक बोला मैं कई दिन से ऊषा का रंगमहल आठों पहर बन्द देखकर वहां किसी पुरुष के बोलने व चौपड़ खेलने का शब्द सुनता हूं यह सुनकर दूसरे ने कहा यह बात सच है तो चलो बाणासुर से कहिदें दूसरा बोला राजकन्या की चुगली खाना न चाहिये चुपचाप बैठे रहो होनेवाली बात आप प्रकट होजायगी जिस समय द्वारपालक आपस में यह चर्चा कर रहे थे उसी समय राजा बाणासुर अनेक शूरवीरों समेत टहलता हुआ वहां आ निकला व ध्वजा महादेवजी की दी हुई महल पर न देखकर चौकीदारों से उसका हाल पूंछा तो द्वारपालकों ने कहा महाराज बहुत दिन हुये कि वह ध्वजा आप से टूट कर गिर पड़ी यह बात सुनतेही बाणासुर प्रसन्न होकर व शिवजी का वचन याद करके बोला कि ध्वजा गिरने से मालूम होता है कि मेरा शत्रु लड़नेवाला उत्पन्न हुआ यह वचन बाणासुर के मुख से निकलतेही एक चौकीदार ने हाथ जोड़कर विनय किया हे पृथ्वीनाथ राजकन्या के महल में कई एक दिन से एक पुरुष के हँसने व बोलने का शब्द सुनता हूं पर यह नहीं जानता कि वह कौन है और किस राह से आया यह सुनतेही बाणासुर क्रोधित होकर शस्त्र लिये हुये दबे पांव ऊषा के महल में चला गया तो क्या देखा कि एक पुरुष श्यामरंग अतिसुन्दर ऊषा के पास पलँग पर सो रहा है उसका रूप देखतेही बाणासुर ने प्रसन्न होकर कहा कि यह ऊषा के ब्याह करने

के योग्य है पर इस वात की लज्जा समझ कर महल से वाहर चला आया व अपने साथियों से वोला मेरा शत्रु अभी सो रहा है सोते हुये को मारना न चाहिये इसलिये तुम लोग यह महल घेरे खड़े रहो जिसमें वह भागने न पावै जव सोकर उठै तव मुझ से आनकर कहना यह आज्ञा देकर वाणासुर अपनी सभा में चला आया व वहुतसी सेना ऊषा का मकान घेरने के वास्ते भेजकर उनसे कहा तुम लोग चलो मैं भी वहां पहुँचता हूं उसकी आज्ञा पातेही जव हजारों योद्धाओं ने जाकर ऊषा का रंगमहल घेर लिया व अनिरुद्ध व ऊषा जागकर आपसमें चौपड़ खेलने लगे तव एक चौकीदार ने जाकर वाणासुर से कहा कि तुम्हारा शत्रु नींद से जागा है यह समाचार पातेही उसने तलवार व त्रिशूल लिये हुये ऊषा के द्वारे पर आन कर ललकारा तू कौन चोर राजमन्दिर में घुसा है जल्दी निकलकर मेरे सामने आव तो तुझे दण्ड दूं अव तू यहां से जीता वच कर अपने घर जाने नहीं सक्ता जव ऊषा ने वाणासुरका शब्द सुना तव डरती व कांपती हुई अनिरुद्धसे वोली हे प्राणनाथ मेरा पिता वहुत दैत्य साथ लेकर तुम्हारे पकड़ने के वास्ते चढ़ि आया है अव तुम उसके हाथसे किसतरह वचोगे यह वात सुनतेही अनिरुद्ध ऊषा को धैर्य देकर वोले हे प्राणप्यारी तुम देखती रहो एक क्षण में सव दैत्यों को मारडालूंगा ऐसा कहकर जैसे अनिरुद्ध ने कुछ मंत्र पढ़ा वैसे एक सौ आठ हाथ का पत्थर जिसे शिला कहते हैं उनके पास आन पहुँचा जव अनिरुद्धजी ने वह शिला हाथ में लिये वाहर निकल कर वाणासुर को ललकारा तव वह अपने शूरवीरों समेत इसतरह अनिरुद्ध पर झपटा जिसतरह शहद की मक्खियां छत्ता उजाड़नेवाले पर झुण्ड का झुण्ड झपटती हैं॥

सो० तिन्हैं देखि कोपे तभी महावली अनिरुद्ध। उनसों औ योधान सों भयो परस्पर युद्ध॥

जव वाणासुर की आज्ञा पाकर सव दैत्य अपना अपना शस्त्र अनिरुद्ध पर चलाने लगे तव उन्होंने क्रोधित होकर उसी शिलासे दैत्यों को मारना आरम्भ किया जिसकी चोट से वहुत दैत्य मर गये व कुछ घायल होकर गिर पड़े व वाकी अपना प्राण लेकर भाग गये जव वाणासुर ने

देखा कि यह पुरुष महावली है जिसने सव सेना मेरी मार कर हटा दी तव उसने नागफांस जो महादेवजी ने उसे दी थी उसको फेंक कर अनिरुद्ध को फांसलिया व उसीतरह बांधे हुये अनिरुद्ध को अपनी सभा में ले जाकर कहा हे वालक अव तेरा प्राण लूंगा जो तेरा सहायक हो उसको अपनी रक्षा के वास्ते बुलाव अनिरुद्ध ने यह सुनकर विचारा कि मैं अपने वलसे नागफांस को तोड़कर बाहर निकल जाऊं तो शिवजीका अपमान होगा इसलिये मुझे दुःख हो तो कुछ चिन्ता नहीं पर महादेवजी का वचन झूठा करना न चाहिये जो परमेश्वर की इच्छा होगी सो होगा यहां अनिरुद्ध पड़ा हुआ अनेक तरह का शोच व विचार कर रहा था व ऊषा उसका समाचार पातेही व्याकुल होकर चित्ररेखा से वोली हे सखी ऐसे जीने पर धिकार है जो मेरा प्राणप्यारा दुःख उठावे और मैं सुख से रहूं ऐसे जीने से मेरा प्राण निकल जावे तो अच्छाहै जव ऐसा कहकर ऊषा अतिविलाप करने लगी तव चित्ररेखा उसे धैर्य देकर वोली तू कुछ चिन्ता मत कर तेरे पति का कोई कुछ कर नहीं सक्ता अभी श्याम व वलरामजी यदुवंशियों को साथ लेकर शोणितपुर में पहुँचते हैं व सव दैत्यों को मार कर तुझे अनिरुद्ध समेत द्वारकापुरी ले जावेंगे वे जिस राजकन्या को सुन्दरी सुनते हैं उसे विना लेगये नहीं रहते अनिरुद्ध उन्हीं श्रीकृष्णजी का पोताहै जो कुण्डिनपुर से शिशुपाल व जरासंध आदिक बड़े बड़े प्रतापी राजाओं को जीतकर रुक्मिणी राजा भीष्मक की वेटीको हर ले आये थे यह वात चित्ररेखा की सुनकर ऊषा वोली हे सखी अपने प्राणनाथ को नागफांस में वँधे सुनकर मेरा कलेजा जला जाता है व मुझे खाना व पीना व सोना व वैठना कुछ अच्छा नहीं लगता वाणासुर चाहे मुझको भी अनिरुद्धके साथ मारडाले तो अच्छाहै पर इस महादुःख में मुझसे उनका साथ छोड़ा नहीं जाता ऐसा कहकर ऊषा महलसे वाहर चलीगई व लज्जा छोड़कर राजसभा में अनिरुद्ध के पास जा वैठी यह हाल सुनतेही वाणासुरने स्कन्द अपने वेटे को वुलाकर कहा तुम अपनी वहिन को यहां से घरमें लेजाकर वैठार रक्खो व फिर उसको वाहर निकलने न

देव यह वचन सुनतेही स्कन्दने ऊषाके पास जाकर क्रोधसे कहा तैंने लोक-लाज छोड़कर अपने माता व पिताकानाम डुबाया मैं तुझे अभी मारडालता पर क्या करूं पाप होने को डरताहूं ऊषाने उत्तरदिया हे भाई जो चाहो सो कहो और करो मैंने तो पार्वतीजीके वरदान से यह पति पाया अब इनको छोड़कर दूसरे से विवाह करूं तो संसारमें अपनेको कलंक लगाऊं विधाता ने जो वर मेरे भाग्य में लिख दिया था वह मुझे मिला इनके साथ चाहे मेरा भला हो या बुरा इनके सिवाय मैं दूसरेको नहीं चाहती जब स्कन्दने यह बात ऊषाकी सुनी तब बरजोरी उसका हाथ पकड़कर महलमें लेगया व उसपर चौकी व पहरा रखकर फिर उसे अनिरुद्ध के पास जाने नहीं दिया व अनिरुद्ध को वहांसे दूसरे मकान में लेजाकर हथकड़ी व बेड़ी डालकर कैद रक्खा इधर तो अनिरुद्धजी ऊषाके विरह में व्याकुल रहने लगे व उधर ऊषाने भी उसके बीच विरहसागर में डूबकर खाना पीना छोड़ दिया जब कई दिन उपरांत अनिरुद्धने चित्ररेखा का कहना याद करके नारदमुनिका ध्यान किया तब नारदजी ने उसी समय पहुँचकर अनिरुद्धसे कहा हे बेटा तुम किसी बातकी चिन्ता मत करो श्रीकृष्णजी आनन्दकन्द व बलरामजी यदुवंशियों समेत यहां आनकर तुझे छुड़ा लेजावेंगे अनिरुद्धको ऐसा धैर्य देने उपरान्त नारदमुनिने बाणासुरसे जाकर कहा हे राजन् जिसको तुम बाँधकर अपने यहां कैद रक्खे हो वह अनिरुद्धनाम प्रद्युम्नका बेटा व श्रीकृष्णजीका पोताहै तुम यदुवंशियोंका प्रताप अच्छीतरह जानतेहो जैसा उचित हो वैसा करो मैं तुम्हारे कल्याण के वास्ते यह कहने आयाहूं बाणासुर यह वचन सुनकर अभिमानसे बोला हे मुनिनाथ में सबको जानताहूं तुम्हारे आशीर्वादसे उन्हें देखलूंगा नारदमुनि उसका कुछ उत्तर न देकर वहांसे चलेगये ॥

तिरसठवां अध्याय।

श्यामसुन्दर व बाणासुरसे युद्ध होना ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जब अनिरुद्धको चार महीने से अधिक होगये व उसका पता नहीं मिला तब एक दिन प्रद्युम्न आदिक यदुवंशी

श्याम व बलरामके पास बैठकर बड़ी उदासी से अनिरुद्धकी चर्चा करने लगे पर मुरलीमनोहरने सब वृत्तान्त जानने परभी कुछ हाल उसका अपने बेटा व पतोहू से नहीं बतलाया परन्तु उनकी इच्छासे उसीसमय नारदमुनि वहां आन पहुँचे उनको देखतेही सब छोटे व बड़ोंने दण्डवत करके सन्मानपूर्वक बैठाला तब नारदजीने प्रद्युम्न आदिकको उदास देखकर पूंछा आज तुम लोग मलीन दिखलाई देतेहो यह बात सुनतेही श्रीकृष्णजी ने हाथ जोड़कर विनय किया हे मुनिनाथ आप चारों ओर घूमते हैं कुछ हाल अनिरुद्ध का मालूम हो तो बतलाइये जिसमें हम लोगों का शोच छूटि जाय जबसे कोई उसको पलँग समेत उठा लेगया तब से कुछ पता उसका नहीं लगा यह वचन सुनकर नारदमुनि बोले तुम लोग चिन्ता मत करो अनिरुद्धजी शोणितपुरमें जीते हैं उन्होंने वहां जाकर बाणासुरकी बेटीसे भोग किया था इसीवास्ते राजाने नागफांस में उनको बांध कर अपने यहां कैद रक्खाहै विना युद्ध किये अनिरुद्ध को नहीं छोड़ेगा उसका ठिकाना हमने तुमसे बतला दिया आगे जैसा उचित जानो वैसा करो जब नारदमुनि यह कहकर ब्रह्मलोक को चले गये तब श्याम व बलरामने राजा उग्रसेन के पास जाकर जो हाल नारदमुनि से सुना था वह वर्णन किया राजा बोले तुम हमारी सब सेना अपने साथ लेकर अभी शोणितपुर में चलेजाव व जिसतरह बन पड़े उस तरह अनिरुद्ध को मेरे पास अभी लेआवो यह आज्ञा पातेही श्यामसुन्दर प्रद्युम्न समेत गरुड़ पर बैठकर शोणितपुरको चले व बलरामजी ने बारह अक्षौहिणी सेना साथ लेकर शोणितपुर पर चढ़ाई की उससमय ऐसी शोभा उनकी मालूम देतीथी जिसका हाल तुमसे कहांतक वर्णन करूं व बलदेव जी राहमें सब किला व नगर बाणासुरका तोड़ते व लूटते हुये शोणितपुर में पहुँचे व श्यामसुन्दर व प्रद्युम्नभी उनसे आन मिले तब बाणासुर के सेवकने दैत्यसंहारण की सेना देखतेही अपने स्वामी के पास जाकर विनय किया महाराज श्याम व बलराम तुम्हारा नगर लूटते व उजाड़ते हुये बड़ी भारी सेना साथ लेकर चढ़आये हैं और शोणितपुरको उन्हों

चारोंओर से घेर लिया अब तुम्हारी क्या आज्ञा होती है यह वचन सुनते हीबाणासुरने अपने सेनापतियोंको आज्ञादी कि तुमलोग अपने शूरवीरों को साथ लेकर श्रीकृष्णजीके सन्मुख जाकर खड़े हो मैं भी पीछेसे आताहूं यह वचन सुनतेही बाणासुरका मन्त्री बारह अक्षौहिणी सेना दैत्य व राक्षसोंको साथ लेकर नगरसे बाहर निकला व अनेक शस्त्रोंसमेत यदुवंशियों केसन्मुख आया व बाणासुरभी पूजा व ध्यान शिवजीका करके अपनी सेना में आन मिला बाणासुरके ध्यान करतेही महादेवजीको मालूम हुआ कि इससमय मेरे भक्त पर कुछ दुःख पड़ाहै इसलिये वहां चलकर उसकी सहायता करनी चाहिये ऐसा विचारकर भोलानाथने पार्वतीको कैलास पर्वत-पर अकेली छोड़दी और आप जटा बांधने व विभूति लगाने उपरान्त भांग व धतूरा खाकर श्वेत नागोंका जनेऊ व मुण्डमाला पहिन लिया व बाघम्बर ओढ़ कर त्रिशूल व धनुषबाण व खप्पर हाथमें लेलिया और नन्दी बैलपर बैठकर भूत व प्रेत व पिशाचादिकों को साथ लियेहुये शोणितपुर को चले जब भोलानाथ कानोंमें गजमुक्ता व मुद्रा डाले व मस्तक पर चन्द्रमा व शिरपर गंगाजी धारण किये व लाल लाल नेत्र निकाले गाते बजाते अपनी सेनाको नचाते हुये बाणासुरके निकट क्षणभर में आन पहुँचे तब उनको देखतेही बाणासुर चरणोंपर गिरपड़ा व हाथ जोड़कर बोला हे कृपानिधान इस महाकष्ट में आपके बिना कौन मेरी सुधि ले तुम्हारे प्रताप के सामने यादवलोग अब मेरा क्या करसक्ते हैं यहबात शिवजी से कहकर बाणासुरने श्याम व बलरामकी सेना में कहला भेजा कि हमारा तुम्हारा अकेला धर्मयुद्ध हो यह बात वैकुण्ठनाथने मानकर इसतरह पर एक एक मनुष्य का युद्ध दोनों ओरसे ठहराया श्यामसुन्दर व भोलानाथ व बाणासुर व सात्यकीसे युद्ध होने लगा ॥

दो॰ स्वामिकार्त्तिक अतिबली जिनको जगमें नाम। तिनसों औ प्रद्युम्नसों होन लग्यो संग्राम ॥

बलरामजी व कुम्भाण्डमन्त्री व स्कन्द बेटा बाणासुर व चारुदेष्ण पुत्र मुरलीमनोहर व कुम्भकर्ण दूसरे मन्त्री बाणासुर व साम्बसे युद्ध हुआ जब इसीतरह सब शूरवीर अपनी अपनी जोड़ीसे अनेकशस्त्र लेकर लड़नेलगे

व दोनों सेनामें मारू बाजा बजने लगा व ब्रह्मादिक देवता अपने अ
विमानों पर बैठकर युद्ध देखनेके वास्ते आये तब शिवजीने जैसे पि
धनुष पर ब्रह्मबाण रखकर चलाया वैसे द्वारकानाथने शार्ङ्गधर कमानसे
मारकर उनका बाण काट डाला जब शिवजीने बाण चलाकर बड़ी आं
प्रकट की तब वृन्दावनविहारीने अपनी महिमा से उस आंधी को मि
दिया फिर कैलासपतिने यादववंशियोंकी सेना में अग्निबाण चला
तो श्यामसुन्दर ने जल वर्षाकर उस बाणकी अग्नि बुझादी व एक
अग्निसमान ऐसा छोंड़ा कि महादेवकी सेनामें सबका शरीर मूंछ
समेत जलने लगा तब भोलानाथने अपनी महिमासे पानी वर्षाकर
व अधजले भूत व प्रेतों को ठण्ढा किया व क्रोधित होकर नारायणी
चलानेवास्ते तरकससे बाहर निकाला फिर कुछ शोच विचार करके
दिया उससमय दैत्यसंहारण आलस्य बाण छोड़कर शत्रुकी सेनाको
तरह काटने लगे जिसतरह किसान लोग जुआरका खेत काट डालते
यह दशा देखकर जब महादेवजीने तीन बाण श्यामसुन्दरपर चलाये
लक्ष्मीपतिने उन तीरों को भी काटकर एक तीर ऐसा मारा जिसके ल
से शिवजी गिरपड़े व जमुहाई लेने लगे ॥

दो० बाणासुरके काज शिव कीन्ह्यों बहुत उपाय। माखनप्रभु भगवानसे केहिविधि जीतेजाय

जब स्वामिकार्त्तिकने बड़ा भारी युद्ध प्रद्युम्नसे किया तब प्रद्युम्न
तीनबाण उस मुरैलेके जिसपर स्वामिकार्त्तिक चढ़े थे ऐसे मारे कि
मुरैला रणभूमि छोड़कर आकाशमें उड़ गया जब स्वामिकार्त्तिक आ
से यदुवंशियों को तीर मारने लगे तब प्रद्युम्नजीने मुरलीमनोहरस आ
लेकर मारे तीरोंके उस मुरैले को स्वामिकार्त्तिक समेत पृथ्वीपर गिरा
अचेत करदिया व बलरामजी व साम्बने दोनों मंत्री बाणासुरके मार
यह दशा देखतेही बाणासुर सात्यकीसे लड़ना छोड़कर केशवमूर्ति
सामने आया व पांचसौ कमान जो अपने हाथ में लिये था दो दो
एक एक धनुषपर रखकर सावन भादोंकी बूंद समान श्यामसुन्दर पर
साने लगा उस समय वैकुण्ठनाथने अपने तीरसे सब बाण उसके

कर एक तीर ऐसा मारा कि पांचसौ कमान बाणासुरके कटकर पृथ्वीपर गिरपड़े व उसका सारथी घोड़ों समेत मर गया यह दशा देखतेही जब बाणासुर रणभूमि छोड़कर पैदल भागचला व दैत्यसंहारणने रथ अपना उसके पीछे दौड़ाकर पांचजन्य शंख विजयका बजाया तब कोटरानाम माता बाणासुरकी हाल भागने बेटेका सुनकर अपने पुत्रको बचाने वास्ते राजमन्दिरसे नंगे पैर दौड़ती हुई रणभूमि में आई ॥

दो० तुरत आइ ठाढ़ी भई माखन प्रभुके तीर। पुत्रहेतु व्याकुल महा कीन्हे नग्न शरीर ॥

देखना नंगी स्त्रीका मना होकर धर्मशास्त्रमें ऐसा लिखा है कि एक बेर परस्त्रीको नंगी देखकर जब तक तीनबेर कडुवे तेल से आंखें न धोवे तबतक दोष उसका नहीं छूटता इसलिये श्रीकृष्णजीने कोटराको नंगी देखना उचित न जानकर शिर अपना नीचे करके आंख बन्द कर लिया तब बाणासुर भागकर नगर में चला आया व फिर एक अक्षौहिणी सेना लेकर वसुदेवनन्दनके सामने लड़ने गया जब कोटरा अपने बेटे को सेना समेत देखकर राजमन्दिरपर चली गई व दैत्यसंहारण ने एक क्षणमें वह सेना भी बाणासुरकी मारडाली तब बाणासुर भागकर शिवजी की शरणमें गया व भोलानाथने अपने भक्तको अतिव्याकुल व आरत देखा व क्रोधित होकर विषमज्वर काला रंग जिसके तीन शिर व तीन पैर व तीन आंखें छः हाथ थे श्यामसुन्दरकी सेना में छोड़ा जब वह तप बड़े तेजसे द्वारकानाथकी सेनामें आनकर सबको जलाने लगा तब प्रद्युम्न व सात्यकी आदिक यदुवंशी लोग उसके भयसे थरथर कांपते व जलते हुये सांवली मूरतिके पास जाकर बोले महाराज शिवजी के तपने हम लोगों को जलाकर मरणतुल्य कर दिया इसके हाथसे प्राण बचाइये नहीं तो क्षणभरमें सबलोग मरने चाहते हैं यह दशा देखकर श्यामसुन्दरने शीतज्वर को अग्नितपके सामने जैसे छोड़ दिया वैसे दोनों तप आपस में लड़ने लगे जब शीतज्वरको अग्नितप उठाने नहीं सका तब अपने प्राणके भयसे भागा हुआ महादेवके पास जाकर बोला हे दीनानाथ मुझे अपनी शरणमें रखिये नहीं तो शीतज्वर मेरा प्राण लिया चाहता है यह

सुनकर भोलानाथने कहा सिवाय श्यामसुन्दरके दूसरा कोई ऐसा त्रिभु में नहीं है जो इस तपसे तेरा प्राण बचाने सकै इसलिये उन्हीं की शर जा वही भक्तहितकारी दयालु होकर तुझे बचावैंगे यह वचन सुन अग्नितप जाकर ऊपर चरण श्रीकृष्णजी के गिर पड़ा व आधीनता विनय किया हे कृपासिन्धु पतितपावन मेरा अपराध क्षमा करके अ तप के हाथ से प्राण बचाइये आपका आदि व अन्त कोई नहीं जानता तुम्हारा नाश कभी नहीं होता व तुमने ब्रह्मा व महादेव आदिक देवतों के ईश्वर होकर अपनी इच्छा से वास्ते सुख देने हरिभक्त व मा अधर्मी व बोझा उतारने पृथ्वीके अवतार लिया है व विना चर्चा व रण तुम्हारे नाम व लीलाके जो अक्षर मनुष्य अपने मुखसे निकालते उनको वृथा समझना चाहिये ऋषीश्वर व योगी लोग तुम्हारे स्मरण ध्यान के प्रताप से जो कुछ शुभ व अशुभ किसी को कहते हैं वह उसी समय होजाती है पर वे लोग भी तुम्हारा भेद नहीं जानते व आ सव लीला संसारी जीवों को भवसागर पार उतारने वास्ते करते हैं व आ लक्ष्मीपति व सबसे उत्तम होकर तीनों लोक के उत्पत्ति व पालन व ना करने वाले हैं ॥

दो० माखन प्रभु भगवान की अस्तुति कही न जाय। सर्वरूप सर्वातमा सब घट रह्यो सम

हे दीनानाथ आप जिस तरह शरण आये पर दयालु होकर अप उसका क्षमा करते हैं उसी तरह मुझे बड़ा दुःखी व दीन जानकर शी ज्वर के हाथसे मेरा प्राण बचाइये तीनों लोक में तुम्हारे सिवाय कोई दू मुझे अपनी रक्षा करनेवाला दिखलाई नहीं देता ॥

दो० माखन प्रभु करतारकी महिमा अमित अपार। तप्तशीत व्यापै तहां जहां न नाम तुम्हा

यह दीन वचन सुनकर वसुदेवनन्दनने कहा अब मेरी शरण आ से तेरा प्राण बचा व तेरा अपराध मैंने क्षमा किया पर आजसे हमारे सेव व हरिभक्तोंको कभी दुःख न दीजियो व जो कोई यह कथा मेरी व तेरी अ पने सच्चे मनसे कहै व सुनैगा उसको किसीतरहका तप हो तो छूट जाय अब महादेवजीके पास चलाजा यह बात सुनतेही अग्निज्वर श्यामसुन्द

से विदा होकर भोलानाथ के यहां चला आया तब यदुवंशी लोग अच्छे होगये और बाणासुर जो भाग गया था फिर अनेक शस्त्र अपने हजार हाथ में लेकर श्यामसुन्दरके सम्मुख आया व ललकारकर कहने लगा अभी तक युद्ध करनेसे मेरा मन नहीं भरा तुम सावधान होकर मेरे साथ लड़ो जब वह अभिमानी ऐसा कहकर मुरलीमनोहरपर शस्त्र चलाने लगा तब दैत्यसंहारणने क्रोधित होकर सुदर्शनचक्र से कहा कि चार हाथ बाणासुर के छोड़कर और सब भुजा काट डालो यह आज्ञा पातेही सुदर्शनचक्र इस तरह भुजा बाणासुर की काटकर गिराने लगा जिस तरह कोई मनुष्य क्षण भर में पतली पतली डाली वृक्षकी काट डालता है जब बाणासुर की यह दशा होकर लोहू उसके अंग से नदीरूपी बहने लगा तब उसने लज्जित होकर शिवजी से विनय की हे भोलानाथ मैंने अपने अभिमान का दण्ड पाया अब सिवाय तुम्हारे कोई दूसरा मेरा प्राण बचाने नहीं सक्ता यह दीनवचन सुनकर महादेवजी ने विचारा अब गर्व इसका टूटगया इसलिये अपने भक्तका प्राण बचाना चाहिये ऐसा विचारतेही कैलासपति बाणासुर को साथ लेकर वेदस्तुति करते हुये द्वारकानाथके पास चलेगये व बाणासुर को उनके चरणोंपर गिरा दिया॥

दो० हाथ जोड़ ठाढ़े भये हरिके सन्मुख जाय। बाणासुरके काज शिव अस्तुति करें सुनाय॥

हे दीनदयालु त्रिलोकीनाथ तुम जड़ व चैतन्यके मालिक होकर सब जीवों की उत्पत्ति व पालन व नाश करते हो व तुम्हारी लीला व कामों की कोई गिनती नहीं करने सक्ता आप केवल पृथ्वीका भार उतारने व हरिभक्तों को सुख देने व अधर्मियों को मारने के वास्ते अपनी इच्छा से सगुण अवतार लेते हो और नहीं तो तुम्हारे विराट्रूपमें चौदहों लोक का व्यवहार रहता है सो मैं उस रूपको दण्डवत् करता हूं॥

दो० तुम्हरी शक्ति अनन्तहै अन्त न पाया जाय। भक्त गुप्त देखव सदा रह्यो त्रिशवभरि छाय॥

जिसने संसार में मनुष्य तनु पाकर तुम्हारा स्मरण नहीं किया उसने अमृत छोड़कर विष पिया जिसतरह सूर्य बदली में छिपे रहते हैं उसीतरह तुम अपने को संसार में छिपाकर मनुष्य के समान लीला करते हो जो

मनुष्य तुम्हारा ध्यान छोड़कर संसारीजाल में फँसता है उसे बड़ा
समझना चाहिये हम व ब्रह्मा व इन्द्रादिक देवता तुम्हारे दास
आपका भेद नहीं जानसक्ने संसारी मनुष्यको क्या सामर्थ्य है जो
पहिंचानने सकै जिसपर तुम दयालु होकर अपने ध्यान व पूजा
दिखलाते हो वह तुम्हारी महिमा कुछ जानकर सत्संग करनेसे भव
पार उतरने सक्ता है ॥

दो० जैसे बूड़त जल विषे शीश निकालै कोय। श्वास लेतही एकक्षण महाचैन सुख

हे महाप्रभु जिसतरह डूबता हुआ मनुष्य श्वास लेने से सुख पा
उससे अधिक आनन्द हरिभजन में समझना चाहिये परन्तु हरिभ
चित्त लगाना बहुत कठिन है संसारी जीव झूंठी माया मोह में ऐसे
रहे हैं कि उनका मन तुम्हारी ओर एक क्षण नहीं लगता उनमें जो
संसारी सुख चाहनेवास्ते तुम्हारा भजन व ध्यान करता है उसे हम
वरदान देते हैं पर उसका मनोरथ पूर्ण होना व हमारा वचन सच
तुम्हारे आधीन रहता है हे कृपासिन्धु किसी को ऐसी सामर्थ्य नहीं
तुम्हारी महिमा अपरम्पार का गुण वर्णन करने सकै बाणासुर अ
राह मुझे परमेश्वर जानकर मेरा पूजन करता था अब यह तुम्हारा
होकर मुझे आपके पास सिफारिश करनेवास्ते लेआया है सो मुझ
दयालु होकर इसका अपराध क्षमा कीजिये व इसको प्रह्लाद अपने
के कुल में जानकर अभयदान दीजिये ॥

दो० आज्ञा कीजै चक्रको माखन प्रभु व्रजनाथ। और भुजा सब काटिकै राखै चारों

जब महादेवजी ने इसतरह विनयपूर्वक स्तुति श्यामसुन्दरकी की
वसुदेवनन्दन हँसकर बोले हे भोलानाथ मेरे तुम्हारे में भेद समझने
मनुष्य अवश्य नरक भोगेगा व तुम्हारा ध्यान करनेवाला अंतसमय
पावेगा व तुम्हारे कहनेसे हमने बाणासुरको चतुर्भुजीरूप बनाया जि
तुमने वरदान दिया उसका निर्वाह मैंने किया व सदा करूंगा ॥

दो० आयसु दीन्हीं चक्रको ऐसी बिधि हरिनाथ। बाणासुर भुज काटिकै राखो चारों

हे कैलासपति मैंने प्रह्लादभक्त बाणासुरके परदादासे यह प्रतिज्ञा की

कि तेरे वंश को अभयदान किया इसलिये तुम न कहते तो भी इसका प्राण न लेता पर बाणासुर अति अभिमान करके किसी को अपने तुल्य नहीं समझता था इसवास्ते मैंने सब भुजा उसकी काटकर उसे चतुर्भुजी बना दिया व सब अपराध उसके क्षमा करके तुम्हारा पार्षद उसे किया यह वचन सुनतेही शिवजी प्रसन्न होकर कैलासपर्वत पर चले गये तब बाणासुर ने हाथ जोड़कर विनय की हे वैकुण्ठनाथ जिसतरह आपने कृपा करके दर्शन अपना दिया उसी तरह अपने चरणोंसे मेरा घर पवित्र कीजिये व अनिरुद्ध को ऊषा से विवाह कर अपने साथ ले जाइये यह बात सुनकर जब वृन्दावनविहारी भक्तहितकारी प्रद्युम्न समेत बाणासुर के घर चले तब वह बड़े हर्ष से पीताम्बर राह में बिछवाता हुआ द्वारकानाथ को राजमन्दिर पर ले जाकर जड़ाऊ सिंहासन पर बैठाला व चरण उनका धोकर चरणामृत लिया व हाथ जोड़कर विनय की हे दीनानाथ जिन चरणों का दर्शन ब्रह्मा व महादेव आदिक देवता व सनकादिक ऋषीश्वरों को जल्दी ध्यान में नहीं मिलता उन चरणों के धोने से आज मैं अपने कुल परिवार समेत कृतार्थ हुआ हे महाप्रभु इन्हीं चरणोंको धोकर ब्रह्मा ने वह जल अपने कमण्डलु में रक्खा व महादेवजीने वही जल अपने शिर पर चढ़ाया व भगीरथ ने बड़ी तपस्या से अपने पुरुषों को तारने वास्ते मर्त्यलोक में ले जाकर संसारी जीवोंका उद्धार किया व संसार में वही जल गंगाजी प्रकट हुआ जिनका दर्शन व स्नान व जलपान करने से अनेक जन्मके पाप छूटकर संसारी मनुष्य मुक्ति पाते हैं यह स्तुति कहकर बाणासुर ने ऊषाको राजमन्दिर से बुला भेजा व अनिरुद्धकी बेड़ी व हथकड़ी काटकर उसे स्नान कराया व अच्छा अच्छा भूषण व वस्त्र पहिनाकर विधिपूर्वक अनिरुद्धसे विवाह दिया व बहुतसा जवाहिर व सोना व चांदी व कपड़ा व बरतन व गहना व गौ व रथ व हाथी व घोड़ा जिसकी कुछ गिनती नहीं होसक्की दहेजमें देकर द्वारकानाथको ऊषा व अनिरुद्धसमेत बिदा किया तब श्यामसुन्दरने बाणासुर को धैर्य देकर अपनी ओरसे राजगद्दीपर बैठादिया व दुलह व दुलहिनको

साथ लिये आनन्द मचाते हुये द्वारकाको चले उनका समाचार पा यदुवंशीलोग आगेसे जाकर मंगलाचार मनाते हुये राजमन्दिरपर लि लाये व रुक्मिणीजीने अपने कुलानुसार रीति व रस्म करके अनिरुद्ध दुलहिन समेत महलमें लेगई व सब द्वारकावासियों ने घर घर मंगला मनाया इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् जो कोई नि प्रातसमय इस अध्याय का ध्यान व स्मरण किया करै वह युद्धमें श शत्रुसे कभी नहीं हारैगा ॥

दो० यह लीला अद्भुतमहा कहै सुनै जो कोय। लहै सदा सुख सम्पदा ज्वरकी व्यथा न हो॥

चौंसठवां अध्याय।

नृगराजाकी कथा॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित नागकुलमें नृगनाम राजा बड़ा प्र व धर्मात्मा होकर असंख्य गौ विधिपूर्वक ब्राह्मणोंको दान देता था चित् कोई चाहै तो गंगाकी रेणुका व वर्षाकी बूंदें व आकाशके गिनलेवे पर उसके गोदान किये हुयोंकी गिनती करना बहुत कठि सो ऐसा धर्मात्मा राजा थोड़ा पाप अनजानमें करनेसे गिरगिटान हो था उसको श्यामसुन्दर ने अपना दर्शन देकर कृतार्थ किया इतनी क सुनकर परीक्षितने विनय किया हे मुनिनाथ ऐसा धर्मात्मा राजा अपराध करनेसे इस दशा को पहुँचा उसकी कथा कहिये शुकदेव बोले हे राजन् राजा नृग नित्य नियम करके प्रतिदिन हजारों गौ वि पूर्वक ब्राह्मणों को दान देकर भोजन करता था सो एक दिन कोई उसकी दान दीहुई भागकर विना दान की हुई गौवों में मिलगई राजाने अनजान में वह गौ दूसरे ब्राह्मणको दान कर दिया और ब्राह्मण गौ लेकर अपने घर चला व प्रथम दान लेनेवाले ब्राह्मणने अप गौ पहिंचानकर उसे राहमें रोंका तब दोनों आपसमें झगड़ा करते गौसमेत राजाके पास आये राजा नृगने दोनों ब्राह्मणोंसे हाथ जोड़ विनयपूर्वक कहा॥

चौ० कोऊ लाख रुपैया लेव। गैया इक काहूको देव॥

यह वचन सुनतेही वह ब्राह्मण क्रोधित होकर राजासे बोला जो गौ स्वस्ति बोलकर हमने दान लिया उसको करोड़ रुपया पानेसेभी न देवेंगे यह गौ हमारे प्राणके साथ है यह सुनकर राजाने विनयपूर्वक उनसे कहा महाराज यह अपराध मुझसे अनजानमें हुआ है एक गौके वदले लाख गौ लेकर क्रोध अपना क्षमा करो जव लाख गौ व लाख रुपये देने पर भी दोनों ब्राह्मणोंने नहीं माना और वह गौ छोड़कर अपने घर चले गये तव राजाने वहुत उदास होकर कहा देखो अनजानमें मुझसे यह पाप होगया सो कैसे छूटैगा ऐसा विचारकर राजाने उस अधर्मके छुड़ाने के वास्ते और वहुत सा दान ब्राह्मणोंको दिया पर उसका संदेह न छूटकर कुछ दिन वीते जव राजा मरगया व यमदूत उसे धर्मराज के पास लेगये तव धर्मराजने उसको आदरपूर्वक अपने पास सिंहासन पर वैठाकर कहा हे राजन् तुम्हारा पुण्य वहुत होकर थोड़ा सा पापभी है सो तुम प्रथम अपने पुण्य का फल भोगोगे या पापका दुःख यह सुनकर राजा वोला महाराज पहिले अपने अपराध का दण्ड भोगकर पीछेसे पुण्यका फल भोगूंगा यह सुनकर धर्मराजने कहा तुमने अनजान में जो दान की हुई गौ फिर दूसरे ब्राह्मणको संकल्प दिया था उसी पापसे तुमको गिरगिटान होकर कुछ दिन अँधियारे कुयें में रहना पड़ैगा जव द्वापर के अन्तमें श्रीकृष्णजी अवतार लेकर तुमको अपना दर्शन देंगे तव तुम्हारी मुक्ति होगी यह वचन धर्मराज के मुखसे निकलतेही राजा गिरगिट होकर गिरपड़ा व समुद्र के निकट अँधियारे कुयेंमें रहने लगा जिन दिनोंमें श्रीकृष्णजी वाणासुरको जीतकर द्वारकामें पहुँचे उन्हीं दिनोंमें प्रद्युम्न व शाम्बआदिक यदुवंशी उसी कुयें की ओर अहेर खेलने गये सो एक वालक प्यासा होकर उसी कुयें पर पानी भरने गया तो क्या देखा कि एक गिरगिटानसे कुआं भराहै यह आश्चर्य देखकर उस वालकने अपने साथी लड़कों को वुलाकर वह गिरगिट दिखलाया॥

दो० दयावान हरिपुत्र सब कीन्हों यही विचार। या गिरगिटको कूपते हम काढ़ें इकवार॥

जव लड़कोंके अनेक उपाय करनेपरभी वह गिरगिट कूपसे नहीं

निकला तब उन्होंने आनकर श्रीकृष्णजीसे यह हाल कहके विनय कि
महाराज आप दयाकी राह चलकर उसे निकालिये श्यामसुन्दर अन्तर्या
ने यह वचन सुनतेही उस कुयेंपर जाकर जैसे अपना चरण गिरगिट
छुआदिया वैसे वह गिरगिट भूषण व वस्त्र पहिने हुये दिव्यरूप राजों
समान होगया ॥

दो० ताके माथे मुकुटकी शोभा कही न जाय। मानो आभा सूर्यकी रही चहुंदिशि छा।

और वह कुयें से निकलकर हरिचरणोंपर गिरपड़ा व हाथ जोड़
बोला हे वैकुण्ठनाथ आपने मुझे महाविपत्तिमें दर्शन देकर कृतार्थ कि
सिवाय तुम्हारे मुझ ऐसे अधर्मी को सुख देनेवाला तीनोंलोक में को
नहीं है जब इसीतरह राजा नृग श्यामसुन्दरकी बहुत स्तुति करनेल
तब प्रद्युम्न आदिक लड़कोंने यह अचम्भा देखकर मुरलीमनोहरसे पू
हे महाप्रभु यह कौनहै व किस अपराध से गिरगिट हुआथा इसका
कहिये जिसमें हमारा संदेह छूटजाय यह वचन वृन्दावनविहारी ने सु
तब आप उसकी कथा कहने को न जानकर राजा नृगसे पूंछा तु
कोई देवता व किसी देशके राजा होकर गिरगिट तनुमें क्यों पड़े थे नृग
हाथ जोड़कर विनय किया हे अन्तर्यामी तुमसे कुछ छिपा नहीं है
तुम्हारी आज्ञासे अपना वृत्तान्त कहता हूं सुनिये मैं पूर्वजन्म में रा
इक्ष्वाकु का बेटा नृग नाम बड़ा प्रतापी होकर नित्य दश हजार
विधिपूर्वक गृहस्थ व वेदपाठी ब्राह्मणों को दान देता था सिवाय गौ
और बहुत से मकान बनवाकर सब वस्तु संयुक्त संकल्प देके ब्राह्मणों
कन्याओं का विवाह करादिया करता था व बड़े बड़े ढेर अन्न व मि
के ब्राह्मणों को दान देकर बहुत से देवस्थान व जलाशय संसारी जी
को पानी पीने के वास्ते बनवा दिये थे जगत् में मेरे दान व शुभ
करने की ऐसी कीर्ति फैली जिसका वर्णन नहीं करसक्ता एक दिन ऐ
संयोग हुआ कि एक गौ मेरी दान दी हुई ब्राह्मण के यहां से भाग
व जो गौवें मैंने दूसरे दिन दान देने को मँगवाई थीं उनमें मिलगई
प्रात समय अनजान से वह गौ मैंने दूसरे ब्राह्मण को संकल्प कर दि

व प्रथम दान लेनेवाले ब्राह्मण ने राह में उस गौको पहिंचाना तव दोनों ब्राह्मण झगड़ते हुये गौ समेत मेरे पास आये मैंने उनसे हाथ जोड़कर कहा मुझ से लाख रुपैया या लाख गौ उसके वदले लेकर अपना झगड़ा छोड़देव पर दोनों ने नहीं माना और गौ छोड़कर अपने घर चले गये व जाते समय मुझे शाप दिया कि तू गिरगिट के समान मूड़ी हिलाता है इसलिये गिरगिटान होजा जव कुछ दिन वीते मैं मरगया तव उसी शाप से धर्मराज ने मुझे गिरगिट तनु देकर इस कुयें में डालदिया व विनय करने पर यह कहा कि श्रीकृष्णजी के दर्शन पानेसे तेरी मुक्ति होगी उसी दिन से तुम्हारे दर्शनों की अभिलाषा रखता था सो आज आपने कमलरूपी चरणों का दर्शन देकर मेरा उद्धार किया जिस तरह आपने मुझ ऐसे अधर्मी को अपना दर्शन देकर कृतार्थ किया उसी तरह दयालु होकर ऐसा वरदान दीजिये जिसमें तुम्हारे चरणों की भक्ति मुझे वनी रहै जव द्वारकानाथ ने राजा नृग को इच्छापूर्वक वरदान देकर विदा किया और वह उत्तम विमान पर वैठकर देवलोक को चला गया तव श्यामसुन्दर ने अपने सन्तान व यदुवंशियों से जो वहां पर खड़े थे उनसे कहा देखो ब्राह्मणों की महिमा इतनी वड़ी है कि विना अपराध भी ब्राह्मण किसी पर क्रोध करैं तो उसके वास्ते अच्छा नहीं होता ज्ञानी को चाहिये कि किसी ब्राह्मण का धन न लेवे जिस तरह अग्नि के खाने से मुख जलता है उसीतरह ब्रह्मअंश लेनेवाले की गति समझना चाहिये विष खाने से एक मनुष्य मरता व ब्रह्मअंश लेनेवाले के कुल परिवार का पता नहीं लगता विष खानेवाला औषध करने से अच्छा भी होजाता है पर ब्रह्मअंश लेनेवाले का दुःख छूटने के वास्ते कोई औषध काम नहीं करती जो मनुष्य अनजान में भी ब्राह्मण का धन या पृथ्वी लेता है उसके तीन पुरुष नरक में पड़ते हैं और जो कोई ब्राह्मण की वस्तु वरजोरी छीन लेताहै उसके दश पुरुष माता व पिता को नरक भोगना पड़ता है व जो लोग दान दिया हुआ अपना ब्राह्मण से फेरलेते हैं उसको साठहजार वर्ष नरक का कीड़ा होकर फिर नीच

जाति में जन्म मिलता है पर उनका कईबार गर्भपात होकर जब उत्पन्न होते हैं तब कंगाल व रोगी रहकर जन्म उनका बीतता है राजा नृग की दशा जिसमें अजान से अधर्म हुआ था वह देखकर यह बात सत्य समझना चाहिये॥

दो० दान देत द्विजराज को विघ्न करै जो कोय। सो होवै अतिपातकी नरकवास तिहि होय॥

कदाचित् ब्राह्मण तलवार खींचकर मारने आवे तो शिर अपना उसके चरणों पर रखदेना उचित है व सिवाय अधीनताई के उन्हें कठोर वचन कहना न चाहिये मेरे ऊपर क्रोध करै या दुर्वचन कहै तो मैं कुछ बुरा न मानकर और उसकी सेवा करता हूं तुम लोगों ने सुना होगा कि भृगु ऋषीश्वर ने विना अपराध सोते समय मेरी छाती में लात मारी थी तब मैं पैर उनका यह समझकर दाबने लगा कि मेरी छातीकी चोट उनके न लगी हो यह समझकर ब्राह्मण का सन्मान करना उचित है व ब्राह्मण के प्रसन्न होने से लोक व परलोक दोनों बनता है और ब्राह्मण से झूठ बोलना व ब्याज लेना न चाहिये जो लोग ब्राह्मण को मेरे समान न जानकर उसमें कुछ भेद समझते हैं उन्हें अवश्य नरक भोगना पड़ता है व ब्राह्मणों को माननेवाले मेरे चरणों की भक्ति पाकर परमपद को पहुँचते हैं इसलिये तुमलोग मेरे कहने का प्रमाण किया करो॥

दो० ऐसी विधि समझायके माखन प्रभु यदुराय। यदुवंशिन को साथ ले मन्दिर पहुँचे आय॥

जब श्यामसुन्दर ने राजा उग्रसेन से यह सब हाल कहा तब उन्होंने ब्राह्मणों को बहुत उत्तम जानकर दण्डवत् किया इतनी कथा सुनकर परीक्षित ने पूंछा हे मुनिनाथ राजा नृग ऐसे धर्मात्मा ने अनजान में थोड़ा पाप करने से क्यों इतना दण्ड पाया शुकदेवजी बोले राजा नृगको अपने दान धर्म करने का अभिमान रहता था इसलिये उसकी यह गति हुई दान व धर्म में गर्व करना न चाहिये॥

पैंसठवां अध्याय।

बलरामजी का वृन्दावन में जाना॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित एकदिन श्याम व बलरामजी दोनों

भाई राजमन्दिर में बैठे थे उस समय बलभद्रजी ने वृन्दावन व गोकुल का सुख व आनन्द व यशोदा का प्रेम वर्णन करके श्रीकृष्णजी से कहा कि वृन्दावन से आते समय हम दोनों भाइयों ने यशोदा व गोपियों से करार किया था कि फिर आनकर तुमसे मिलैंगे सो वहां जाने का संयोग नहीं हुआ और हमलोग द्वारका में आनवसे सब व्रजवासी हमारे विरह में चिन्ता करते होंगे आप आज्ञा दीजिये तो हम वहां जाकर सबको धैर्य दे आवैं केशवमूर्ति बोले बहुत अच्छा यह वचन सुनतेही बलरामजी ने मुरलीमनोहर व अपने माता व पिता से बिदा होकर हल व मूशल अपना शस्त्र उठालिया व रथपर बैठकर वृन्दावन को चले जिस जिस देश व नगर में बलदाऊजी पहुँचते थे वहां के राजा आगे से आनकर सन्मानपूर्वक उन्हें अपने घर लेजाते थे व छत्तीसव्यंजन खिलाकर अनेक तरह की वस्तु उन्हें भेंट देते थे इसीतरह रेवतीरमण सब राजाओं से भेंट करते व उनको सुख देतेहुये उज्जैन में अपने सांदीपन गुरुके स्थान पर पहुँचे तब गुरुनारायण व उनकी स्त्रीको साष्टांग दण्डवत् करके उनका आशीर्वाद लिया जब दश दिन वहां रहकर फिर वृन्दावन में आये तो क्या देखा कि जिन गायों को श्यामसुन्दर आप चराया करते थे वे सब गौ ध्यान श्यामसुन्दरका करके वनमें चारोंओर बिड़री फिरती हैं व मुँह बायबायकर सिवाय चिल्लानेके घास चरने पर कुछ चाहना नहीं रखतीं व उनके पीछे पीछे ग्वाल बाल श्यामसुन्दरका यश गाते व प्रेमरंग राते चले जाते हैं व ठौर ठौर व्रजवासीलोग बालचरित्र मोहनप्यारे का आपस में कहकर व सुनकर उसी चर्चामें जन्म अपना काटते हैं जब बलरामजीने यह दशा देखतेही आंखोंमें आंसूभरके रथ अपना खड़ा किया तब नन्द व यशोदा आदिक सब गोपियां व ग्वाल उनके आनेका समाचार सुनकर बड़े प्रेम से मिलनेके वास्ते दौड़े व बलरामजी को देखकर अति प्रसन्न हुये॥

दो॰ नन्द बात देखे तभी और यशोदा माय। बलदाऊ अति प्रेमसों गिरे चरण पर धाय॥

नन्द व यशोदाने बलरामजीको अपने चरणों परसे उठाकर छाती में लगा लिया व मुख चूमकर प्यार किया जब बलरामजीने ग्वाल बालोंके

गले मिलकर उनकी कुशल पूंछी तब व्रजवासीलोगोंने श्याम व बलराम का बालचरित्र याद करके आंखोंमें प्रेमके आंसू भर लिये फिर नन्द यशोदाने बलदाऊजी को बड़े प्रेमसे घर लेजाकर कहा अय बेटा हमलोगों को तुम्हारे विरहमें एक क्षण वर्षके समान बीतता है तुम अपना हाल बतलाओ हमारे विना इतने दिन वहां क्योंकर रहे तुम धन्य हो जो इतने दिनपर आनकर हमारी सुधि ली व अपना चन्द्रमुख दिखलाकर हमारी आत्मा ठण्ढी की कहो मोहनप्यारे व राजा उग्रसेन व वसुदेव आदि यदुवंशी कभी हम को याद करते हैं या नहीं बलरामजी बोले हे नन्दरानी तुम्हारी कृपासे मुरलीमनोहर सब यदुवंशियों समेत प्रसन्न होकर दिनरात आपका यश गाते हैं यह सुनकर यशोदा बोली हे बलरामजी जबसे मोहनप्यारे हमलोगोंकी प्रीति छोड़कर मथुरा में चलेगये तबसे हमारी आंखोंके सामने अँधेरासा छाया रहकर आठोंपहर उन्हींकी याद व चर्चा में दिन बीतताहै कदाचित् मथुरामें रहते तो कभी कभी उनको देख आती इतनी दूर द्वारकामें जाने नहीं सक्ती॥

चौ० कहिये कहा कृष्णकी बाता। जिनको हम चाहैं दिन राता॥
वे हमको चाहत कछु नाहीं। ऐसे निठुर भये मन माहीं॥

हे बलदाऊजी वह ऐसा निर्मोही है कि कभी अपना संदेशाभी नहीं भेजता सच पूंछो तो अब वे द्वारकापुरीके राजा होकर हम गरीबोंको क्यों याद करेंगे॥

दो० अबतो महाधनी भये सब राजनके राज। ग्वालनकी सुधि करतही उनको आवत लाज॥

हे बलरामजी भला यह बतलाओ कन्हैया कभी मेरी व राधा आदि गोपियों की सुधि करता है या नहीं मेरे निकट वह यहांसे वहां अधिक सुख पाताहै पर हमलोगोंको उसके देखे विना चैन नहीं पड़ती देखो रोहिणीने भी हमारी प्रीति छोड़कर श्यामसुन्दरको ऐसा वश कर लिया कि उसने कभी अपना दर्शन नहीं दिया जब यशोदा इसीतरह अनेक बातें कहकर रोने लगी तब बलदाऊजीने उसको समझाकर धैर्य दिया जब बलभद्रजी संध्यासमय वृन्दावन गांवमें निकले तो क्या देखा कि

राधा आदिक सब ब्रजबाला तनुक्षीण मन मलीन श्यामसुन्दरके ध्यानमें जिधर तिधर फिरती हैं व सिवाय जिकर व चर्चा बालचरित्र मोहनप्यारे के दूसरा कुछ प्रयोजन उनको नहीं है जैसे राधा आदिक गोपियों ने बलदाऊजी को अकेले में देखा वैसे झुण्डका झुण्ड उनके पास आनकर दण्डवत् करके पूंछनेलगीं कहो बलरामजी तुम कब आये हमारे प्राणनाथ कभी हमलोगोंको याद करतेहैं या नहीं जबसे हमैं वृन्दावन छोड़कर आप मथुरा गये तब से एक बेर उद्धवके हाथ योग साधनेका संदेशा हमको भेजा था फिर कुछ सुधि नहीं लिया अब सुनाहै कि समुद्रके टापूमें द्वारकापुरी बसाकर वहां रहते हैं अब हम गरीबिनियोंको क्यों याद करेंगे यह सुनकर दूसरी सखी बोली अय प्यारी अब उन्हें क्या प्रयोजन है जो राजगद्दी छोड़कर यहां आवैं॥

चौ० वह काहूके नाहीं मीत। बात पिताकी छोड़ी प्रीत॥
राधा बिन नहिं रहते घड़ी। सो वहहै बरसाने पड़ी॥

दो० सखी एक याबिधि कहै सुनो कृष्णके भाय। जब लौं तुम ब्रजमें हते रहे चरावत गाय॥

दूसरी ब्रजबालाने कहा अय प्यारियो हमलोगोंने लोकलाज व कुल परिवार छोड़कर उससे प्रीति लगाकर क्या सुख पाया उससे कोई अपनी भलाईकी आशा मत रक्खो व दूसरी गोपी बोली द्वारका की स्त्रियां उनका विश्वास किसतरह करती होंगी दूसरीने कहा मैं ऐसा सुनती हूं कि उन्होंने द्वारकापुरीमें जाकर सोलह हजार एकसौ आठ महासुन्दरी राजकन्याओंसे अपना विवाह किया है व उनके साथ आठों पहर प्रीति करते हैं अब उन्हें छोड़कर हम गँवारियोंके पास क्यों आवेंगे॥

दो० सोरहसहस कुमारिका सुन्दर रूप निधान। दश दश सुत जिनके भये श्रीयदुनाथ सुजान॥

दूसरी गोपी बोली अय सखी अब श्यामसुन्दर का पछितावा करना उचित नहीं है और उद्धवजी जो कि निर्गुणरूप का ध्यान बतला गये हैं उसी पर विश्वास रखकर धैर्य धरो दूसरी सखी ठण्ढी श्वास लेकर बोली अय प्यारी मुझे वह सांवली सूरति व मुरली की धुनि नहीं भूलती किस तरह धैर्य धरूं॥

दो० नहिं जानों सखि ज्ञानको कौन देश की रीति। मानहुँ कबहूं नहिं हती ब्रजवासिनसों प्रीति॥

दूसरी सखी विरह की माती हुई बोली अय बलदाऊजी देखो मोहन प्यारे ने इतने दिन बीतने पर भी यह नहीं विचारा कि हमारे विरहमें गो पियों की क्या दशा होती होगी संसार में जो कोई पशु पक्षी पालता है उसको भी इसतरह नहीं भूलता यह कठोरताई उनकी देखकर मैंने जाना कि उनका अन्तःकरण भी उन्हीं के समान काला है नहीं तो वह दीन दयालु व गोपीनाथ कहलाकर ऐसा कठोरपन न करते जब गोपियां इसी तरह पर अनेक बातें कहकर रोते रोते अचेत होगईं तब रेवतीरमण ने उन्हें बहुतसा धैर्य देकर कहा क्यों इतना रुदन करती हो श्यामसुन्दर तुम्हारी अतिप्रीति रखकर तुमको आठों पहर याद किया करते हैं यह वचन सुनतेही सब ब्रजबाला चैतन्य होकर उनमें से एक सखी बोली अरी प्यारियो रोना छोड़कर जो कहूं सो करो॥

चौ० हलधरजूके परसो पांव। सदा रहो इनहीं की छांव॥
यहहैं गौर श्याम नहिं गाता। करिहैं नहीं कपटकी बाता॥
सुनि संकर्षण उत्तर दियो। तुम्हरे हेतु गमन हम कियो॥
आवन हम तुमसे कहिगये। ताकारण हम आवत भये॥
रहि दोमास करैंगे रासा। पुरवैंगे सब तुम्हरी आसा॥

जब बलरामजी गोपियोंसे प्रेमपूर्वक बातैं कहकर मन उनका बहलाने लगे तब एक ब्रजबाला ने कहा हे बलभद्रजी तुम्हारा भाई बड़ा कठोर है हमलोग ऐसा जानतीं तो कभी उससे प्रीति न करतीं दूसरी बोली अय बलदाऊजी वह चित्तचोर यहां सिवाय गाय चराने व मक्खन व दही चुराकर खानेके दूसरा प्रयोजन नहीं रखताथा अब वहां द्वारकापुरीका राजा हुआ हम गरीबिनियोंकी याद क्यों करेगा हमारा नाम लेनेसे उसे लज्जा आती होगी दूसरी सखी जो विरह में व्याकुल थी वह झुँझलाकर बोली अय मैंने मन अपना श्रीकृष्णजी के समान कठोर करलिया उन्हें धन स्त्री प्रतिदिन अधिक मिलैं मैं इसी दुःखसागर में प्रसन्न हूं दूसरी गोपी ने कहा मैं सुनती हूं कि श्यामसुन्दर का प्रद्युम्न बेटा अपने पिताके समान सुन्दर व बलवान् हुआ है व सोलह हजार एकसौ आठ उनकी स्त्रियां

सब सन्तान चिरंजीव रहैं दूसरी ने कहा अक्रूर निर्दयी जो यहां आनकर हमारे प्राणनाथ को लेगया व उद्धवजी हमलोगों से योग सधवाने आया था वे दोनों अच्छीतरह हैं दूसरी गोपी बोली अय बलराम जो तुम हमारी बातों को हँसी न मानकर सच सच बतलाओ कि श्यामसुन्दर की स्त्रियां उनकी बात का विश्वास करती हैं या नहीं दूसरी ब्रजबाला ने कहा उनमें जो बुद्धिमान् होंगी वह कभी उनकी बात का विश्वास न करेंगी दूसरी सखी ने कहा हे बलदाऊजी कभी नन्दलालजी उन स्त्रियों के सन्मुख हमारी भी चर्चा व याद करते हैं या नहीं भला तुम्हीं न्याव करो जिसके वास्ते हमलोग लाज छोड़कर इतना दुःख पाती हैं उसने हमें इसतरह छोड़ दिया है कि जिसतरह सर्प केचुल तजकर फिर उससे कुछ वास्ता नहीं रखता उस निर्दयी की बात कहते हुये मेरी छाती फट जाती है जब इसीतरह सब ब्रजबाला अनेक बातों को कहकर ठण्ढी ठण्ढी श्वास लेने लगीं तब बलदाऊजी ने उन्हें धैर्य देकर कहा आज पौर्णमासीकी चांदनी रात में तुम लोग अपना अपना शृंगार कर आवो तो हम तुम्हारे साथ रासलीला करें यह बात सुनतेही सब ब्रजबालों ने अपने अपने घर जा कर शृंगार किया जब संध्यासमय बलभद्रजी अति उत्तम भूषण व वस्त्र पहिनकर वृन्दावनकी कुंजोंमें गये तब राधा आदिक गोपियां भी पहुँचीं॥

चौ० ठाढ़ी भईं सबै शिरनाय। हलधर छवि बरणी नहिं जाय॥
कनकबरण नीलाम्बर धरे। शशिमुख कमलनयन मन हरे॥
अंगअंग सब भूषण साजै। देखत कामदेव अति लाजै॥

रेवतीरमण की छवि देखतेही सब ब्रजबालों ने उनके चरणों पर गिर कर विनय किया हे दीनानाथ अपने वचन के प्रमाण रासलीला कीजिये यह सुनते ही जैसे बलरामजी ने हूं किया वैसे स्थान रासलीला का यमुना किनारे तैयार होकर शीतल मन्द सुगन्ध हवा बहने लगी व अनेक रंग के बाजे व भूषण व वस्त्रादिक वहां प्रकट होगये तब सब ब्रजबालों ने लाज छोड़कर मृदंग व करताल आदिक बाजा उठा लिया व गति नाचकर अपने गाने व बजाने व भाव बतलाने से बलदाऊजी

को रिझाने लगीं जब रेवतीरमण भी उनका सच्चा प्रेम देखकर उनके गाने व नाचने लगे तब वरुण देवता ने उत्तम वारुणी उनके पीने वास्ते भेजदी सो बलदाऊजी गोपियों समेत पीकर आनन्द मचाने उस समय देवतों ने अपने अपने विमानों पर से बलदाऊजी पर वरसाये व चन्द्रमा ने तारागण समेत रासमण्डल का सुख देखकर अमृतकी वर्षा की व जितने जीव जड़ व चैतन्य वहां पर थे वे परम देखकर अति प्रसन्न हुये व रासलीला देखने के वास्ते यमुनाजल थम्हिकर चलना हवा का बन्द होगया उसी आनन्द में रेवतीरमण जलविहार करना विचारकर यमुनाजी को पुकार के कहा तुम हमारे कट आनकर हमें स्नान कराओ व जब यमुनाजी ने उनकी आज्ञा मानी तब बलरामजी ने क्रोध से हल अपना यमुनाजी में डालकर उसका अपने पास खींच लिया व उसमें जलविहार करके मांदगी की मिटाई उस समय यमुनाजी ने स्त्रीरूप डरती व कांपती हुई हलधर पास आनकर विनय किया हे महाप्रभु मैंने तुमको नहीं पहिंचाना कि शेषजी का अवतार हैं मेरा अपराध आप क्षमा करके अभयदान जब इसीतरह यमुनाजी ने वहुत स्तुति बलदाऊजीकी की तब वह उसका क्षमा करके गोपियों समेत इस तरह यमुना जल में विहार रहे जिसतरह हाथी पानी में हथिनियों के साथ नहाकर प्रसन्न होताहै।

दो॰ कवहूं निर्मल जल विपे कबहूं यमुनातीर। गोपिन सँग क्रीड़ा करैं श्रीबलराम सुधीर।

जब रेवतीरमण जलविहार करके गोपियों समेत बाहर आये तब णादिक देवतोंने उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र व मोतियोंकी माला का ढेर लगा दिया सो बलरामजी व गोपियों ने मनमाना भूषण व वस्त्र लिया व गलेमें फूलोंके गजरे डालकर वनविहार किया उसी दिन वहां पर यमुनाजल टेढ़ा वहताहै जब इसीतरह बलदाऊजीने दो महीने चैत्र व वैशाख वृन्दावनमें रहकर नित्य व्रजवालों के साथ रासविलास जलविहार करके उन्हें सुख दिया व दिनभर नन्द व यशोदा आदिक श्यामसुन्दरकी चर्चासे सुख देकर द्वारका जाने की इच्छा की तब नन्द

दिक अनेक तरहकी वस्तु श्यामसुन्दरके वास्ते देकर रेवतीरमणको विदा किया उस समय गोपियां रोकर कहने लगीं हे वलदाऊजी हमें भी अपने साथ ले चलो रेवतीरमण उन लोगों को धैर्य देकर द्वारकाको चले व थोड़े दिनों में आनन्दपूर्वक द्वारका पहुँच कर सब हाल वहां का केशवमूर्ति से कह दिया ॥

छासठवां अध्याय।

श्रीकृष्णजी का राजा पुण्डरीक मिथ्या वासुदेवको मारना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित उन्हीं दिनों पुण्डरीक नाम कंतितदेश का राजा वड़ा प्रतापी होकर काशीपुरी में रहता था जब उसे यह इच्छा हुई कि मैं अपने को वासुदेव नाम चतुर्भुजी रूप बनाकर संसारी जीवों से अपनी पूजा कराऊं तब उसने दो भुजा काठ की अपने अंग में लगा लिया और पीताम्बर व वैजयन्ती माला व कुण्डल व वनमाला श्यामसुन्दर के समान पहिरने लगा व शङ्ख व चक्र व गदा व पद्म उनके शस्त्र बांधकर काठका गरुड़ चढ़ने के वास्ते बनवाया व जो राजा व प्रजा पुंडरीक का डर मानकर उसे वासुदेव के समान पूजते थे उनपर वह प्रसन्न होता था व जो लोग अपना धर्म विचारकर उसकी पूजा नहीं करते थे उनको दुःख देताथा यह दशा उसकी देखकर संसारीलोग आपस में यह चर्चा करते थे देखो एक वासुदेव तो श्रीकृष्ण नाम यदुकुल में अवतार लेकर बीच द्वारकापुरी के विराजते हैं दूसरे यह राजा अपने को वासुदेवरूप बनाकर पुजवाने चाहता है इन दोनों में हमलोग किसे सच्चा समझें किसे झूठा जब राजा पुण्डरीकको अपनी पूजा कराने से अभिमान उत्पन्न हुआ तब एक दिन अपनी सभा में बैठकर बोला श्रीकृष्ण नाम कौन द्वारका में रहता है जिसे लोग वासुदेव कहते हैं देखो मैं पृथ्वी का भार उतारने वास्ते अवतार लेकर लीला करता हूं और वासुदेव यादवका बेटा मेरा वेष बनाकर संसारी जीवों से अपनी पूजा कराता है इसलिये उसके साथ लड़ना चाहिये ऐसा कहकर राजा पुण्डरीकने एक ब्राह्मणको बुलाकर कहा तुम द्वारका में जाकर श्रीकृष्णजी से कह दो कि मेरा वेष

छोड़कर हमारी आज्ञा पालन करैं नहीं तो हमारे साथ आनकर लड़ै
यह संदेशा लेकर वह ब्राह्मण द्वारका में पहुँचा व राजा उग्रसेन के स
खड़ा हुआ तव द्वारकानाथने उस ब्राह्मण को दण्डवत् करके पूंछा
द्विजराज कहां से आये अपने समाचार वतलाओ यह वचन सुनतेही
ब्राह्मणने हाथ जोड़कर कहा हे महाप्रभु मैं राजा पुण्डरीकका कुछ सं
कहने वास्ते काशी से आया हूं पर वह कहते हुये लज्जा मालूम होत
व दूतको संदेशा छिपाना न चाहिये इसलिये अपने प्राण की रक्षा
तो कहूं श्यामसुन्दर वोले तुम निस्सन्देह कहो इसमें तुम्हारा कुछ अ
नहींहै यह वचन सुनकर ब्राह्मण देवताने कहा हे दीनानाथ राजा पु
रीकने आपको यह सन्देशा कहला भेजा है कि त्रिभुवनपति जगत
उत्पत्ति करनेवाला मैं होकर आठ पटरानीसे भोग व विलास करताहूं
पृथ्वी का भार उतारने वास्ते मैंने अवतार लिया है शङ्ख व चक्र व
व पद्म मेरे पास रहकर गरुड़जी पर मैं चढ़ताहूं तुम मेरा वेष वनाये रह
अपने को वासुदेव नाम क्यों प्रकट करते हो और तुम त्रिभुवनपति ह
तो राजा जरासन्ध के डर से भागकर द्वारका में क्यों रहते अव तु
उचित है कि शङ्ख व चक्र व गदा व पद्मादिक शस्त्र बांधना व वासु
नाम अपना प्रकट करना छोड़कर मेरी आज्ञा में रहो नहीं तो यदुवंशि
समेत तुम्हें मारकर पृथ्वी का भार उतारूंगा तव तुम जानोगे कि
वासुदेव कौन होकर झूंठा वेप किसने वनाया है तुम आजतक नहीं
नते कि अलख अगोचर निरंजनका रूप त्रिलोकीनाथ मैं हूं सव ऋषि
मुनि मेरे नाम पर यज्ञ व दान जप व तप करके वड़ाई पाते हैं व मैं ब्र
रूप होकर उत्पत्ति व विष्णुरूप से पालन व महादेवरूप होकर जगत
नाश करताहूं व हमने मच्छरूप होकर वेद को समुद्र से वाहर निकाला
कच्छपरूप से मन्दराचल पर्वत अपनी पीठपर उठाया व वाराहरूप धर
पृथ्वी को पाताल से निकाल लाये व नरसिंह अवतार लेकर हिर
कशिपु दैत्यको मारा व वामनरूप धरकर राजा वलिसे पृथ्वी दान लि
राम अवतार लेकर रावणका वध किया मेरा यही काम है जव जव दै

अधर्मी राजा हरिभक्तों को दुःख देते हैं तब तब मैं अवतार लेकर पृथ्वीका भार उतारता हूं इसी वास्ते अब भी अवतार लियाहै कृष्णचन्द्रआनन्दकन्द बड़े हर्ष से उसका संदेशा सुनते थे पर दूसरे यादववंशी यह मिथ्या वचन सुनकर उस ब्राह्मण को हँसने लगे व एक यादववंशी क्रोधित होकर बोला हे ब्राह्मणदेवता तुम क्या मिथ्या कहते हो कोई दूसरा यह झूंठी बात आनकर कहता तो विना मारे न छोड़ते यह सुनकर श्रीकृष्णजी ने यादववंशियों से कहा सुनो भाई दूतपर क्रोध करना न चाहिये ॥

दो० राजसभा में बैठकर कबहूं हँसिये नाहिं। या समान अवगुण नहीं लिख्यो पुराणन माहिं ॥

यदुवंशियों से ऐसा कहकर श्यामसुन्दर उस ब्राह्मण से बोले हे द्विज-राज तुम अपने राजासे जाकर कहदेव कि हम तुम्हारा संदेशा सुनकर अति प्रसन्न हुये वह अपने यहां युद्ध की तैयारी करें मैं आनकर अपना वेष छोड़ दूंगा या उससे वासुदेव वेष छुड़ाकर उसका मांस कौवे व कुत्तों को खिलाऊंगा यह वचन सुनतेही ब्राह्मण ने काशी में आनकर सब हाल राजा पुण्डरीक से कहा जब कुछ दिन वीते श्यामसुन्दर ने यदुवंशियों समेत काशीपुरी के निकट पहुँचकर पांचजन्य शङ्ख अपना बजाया तब राजा पुण्डरीक वह शब्द सुनतेही दो अक्षौहिणी दल संग लेकर दैत्य-संहारण के सामने आया जब पारसंग्रह भौमासुर के भाई व मित्र काशी-नरेश ने जो प्रयाग में राजा था यह हाल सुना तब वह भी तीन अक्षौ-हिणी सेना साथ लेकर उसकी सहायता करनेवास्ते काशीजी में आन पहुँचा जिस समय दोनों दलमें मारू बाजा बजकर तीर व तलवार आदिक अनेक तरह का शस्त्र चलने लगा उस समय शूरवीर मार मार कहकर अपना प्राण देते व कायर लोग पीछे को भागकर गिर पड़ते थे जब रण-भूमिमें राजा पुण्डरीक ने चतुर्भुजी रूप बनाये हुए श्यामसुन्दर के सामने आनकर उन्हें ललकारा तब वैकुण्ठनाथ ने हँसते हुये उसका मुकुट उतार कर कहा अब सच बतलावो किसका पाखण्डी रूप है हे राजन् जो संदेशा हमको तुमने कहला भेजा था वह याद होगा उसी प्रमाण हम तुम्हारे पास आये हैं अबभी मेरा वेष अपने अंगसे उतारकर तुम यह बात कहो

कि हमसे अपराध हुआ जो ऐसा संदेशा भेजा तो प्राण तुम्हारा छोड़ देवेंगे नहीं तो तुम्हारा शिर काटलूंगा जब उस अज्ञान राजाने श्यामसुन्दर का कहना नहीं माना तब दैत्यसंहारणने सुदर्शनचक्र से कहा तुम अब जाकर अपनी ज्वालासे सब हाथी व घोड़े व रथ व सवार व पैदल आदि जो दोनों राजों की सेना में हैं जलादेव यह आज्ञा पाते ही सुदर्शनचक्र ने दोनों राजों की सेना में जाकर इस तरह अपनी अग्नि से सब मनुष्य व हाथी आदिक को जला दिया जिस तरह प्रलयकालकी अग्नि सब जगह को भस्म कर डालती है जब केवल पुण्डरीक व भौमासुर का दोनों राजा रहगये तब यदुवंशियों ने कहा हे द्वारकानाथ पुण्डरीक इस रूपसे हमलोग नहीं मारसक्ते यह वचन सुनकर मुरलीमनोहर तुमलोग धैर्य रक्खो यह अभी अपने दण्डको पहुँचताहै जब ऐसा कह दैत्यसंहारणने सुदर्शनचक्र को उन दोनों राजों के शिर काटने की आज्ञा दी तब सुदर्शनचक्र ने जाकर पहिले दोनों भुजा काठकी जो पुण्डरीक लगाये था उखाड़डालीं यह दशा देखतेही जैसे पुण्डरीक अपने प्राण लेकर भागा वैसे सुदर्शनचक्रने दोनों राजोंका शिर काटलिया मुरलीमनोहर की इच्छानुसार शिर काशीनरेश का नगर के द्वारपर आ गिरा व चैतन्य आत्माने मुक्तिपदवी पाई ॥

दो० बैर कियो हरिनाथसों रह्यो सदा चितलाय। दीनी तेहि सायुज्य गति दयासिन्धु यदुराय॥

जब नगरवासियोंने शिर राजा पुण्डरीक का पहिंचानकर राजमन्दिर में यह हाल कहा तब रानियां अतिविलाप से रोकर कहने लगीं तुम तो अपने को अजर अमर कहते थे सो क्षणभरमें किस तरह तुम्हारा प्राण निकलगया जब सब रानियां उसी शिरके साथ सती हो गईं तब सुदक्षिण बेटा पुण्डरीक का क्रोधित होकर बोला जिसने मेरे पिताको वध किया उसे विना मारे नहीं छोड़ूंगा इसी इच्छासे राजकुमार महादेवजी का तप करने लगा और श्यामसुन्दर विजय करके यदुवंशियों समेत आनन्दपूर्वक द्वारका चले आये इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जब कुछ दिनोंतक सुदक्षिणने प्रेमपूर्वक तप व ध्यान शिवशंकर का किया तब

भोलानाथ उसे दर्शन देकर बोले तू क्या चाहता है राजकुमारने शिवजी को दण्डवत् करके विनय किया हे दीनानाथ मैं अपने पिताके मारनेवाले से बदला लिया चाहताहूं यह सुनकर महादेवजी बोले पुण्डरीक का पलटा लिया चाहता है तो वेदके मंत्र उलटे पढ़कर दक्षिणाग्नि में होम कर उस अग्निकुण्डसे एक राक्षसी निकलकर तेरी आज्ञा पालन करेगी पर जो लोग परमेश्वर व ब्राह्मण की भक्ति नहीं रखते उनपर तेरा बल चलेगा व हरिभक्त व महात्मासे विरोध करने में तेरा प्राण जाता रहैगा जब ऐसा कह कर शिवजी अन्तर्धान होगये तब सुदक्षिण यज्ञ कराने लगा जब यज्ञ उसका उनकी आज्ञानुसार पूर्ण हुआ तब कृत्या नाम राक्षसी काले काले बड़े बड़े दांतवाली त्रिशूल हाथ में लिये डरावनी सूरति बनाये ओठ चाटती हुई अग्निकुण्डसे निकलकर बोली हे सुदक्षिण तेरा शत्रु कहां है बताव यह सुनकर राजकुमारने कहा मेरा वैरी वासुदेव नाम द्वारकापुरी में है तू अभी जाकर उसे मारडाल यह वचन सुनतेही कृत्या उसी समय चल कर राहमें नगर व वन जलाती हुई द्वारका पहुँची जब वह अपने तेज से द्वारकापुरीको जलाने लगी तब द्वारकावासियोंने घबड़ाकर वसुदेवनन्दन के पास जो चौपड़ खेल रहेथे जाकर विनयकिया हे दैत्यसंहारण एक राक्षसी न मालूम कहांसे आनकर नगरको जलातीहै इसके हाथसे हमारा प्राण बचाइये यह सुनकर द्वारकानाथ बोले तुम लोग मत घबड़ाव अभी इस राक्षसीको जो काशीसे आईहै निकाले देताहूं इसतरह उन्हें धैर्य देकर श्यामसुन्दर ने सुदर्शनचक्रसे कहा तुम कृत्याको मारकर यहांसे भगा देव और काशीपुरी को जलाकर चले आवो यह वचन सुनतेही जब सुदर्शन ने कोटि सूर्य के समान तेज बढ़ाकर उस राक्षसीको खदेरा तब कृत्या वहां से भागी व उसने काशीमें आनकर सुदक्षिण व सब ब्राह्मणों समेत जो यज्ञ करातेथे मारडाला व सुदर्शनचक्रने भी पहुँचकर अपने तेजसे काशीपुरी को जलादिया जब उस समय सब प्रजा दुःखी होकर सुदक्षिण को गालियां देने लगी व सुदर्शनचक्र अपनी ज्वाला मणिकर्णिकाकुण्ड में ठंढी करके द्वारकापुरी को चले आये व सब हाल वहां का वैकुण्ठनाथ से कह दिया ॥

दो० यह प्रसंग चित लायकै कहै सुनै जो कोय। रहै सदा सुख चैन सों लहै नहीं दुख

सरसठवां अध्याय।

बलरामजीका द्विविद वांदर को मारना॥

परीक्षितने इतनी कथा सुनकर विनय किया हे मुनिनाथ कुछ बलरामजी की और वर्णन कीजिये शुकदेवजी बोले हे राजन् जिस बलदाऊजी ने द्विविद बांदरको मारा था वह कथा कहते हैं सुनो नाम वांदर सुग्रीव का मित्र किष्किन्धापुर में रहकर दश हजार हाथी बल रखता था जब उसने भौमासुर अपने मित्रके मारे जानेका चार पाया तब वह उसका बदला लेने वास्ते बड़े क्रोधसे द्वारकापुरी चला जो नगर व गांव राहमें उसे मिलते थे उन्हें उजाड़ता व स्त्रियों बरजोरी भोग करता व पहाड़ व वृक्षों को उखाड़कर बस्ती आदि फेंकता हुआ चला जाता था कभी अपने मंत्र व मायासे आग व पानी पत्थर वरसाकर अनेक तरह का दुःख देता व कभी छोटे छोटे लड़कों कन्दरामें छिपाकर भारी पत्थर उसके मुखपर रख आता व कभी वृक्षों उखाड़कर उससे संसारी जीवोंको वध करता कभी लोगोंको उठा लेजाकर समुद्र में डाल देता व जहां ऋषि व हरिभक्तों को बैठा देखता वहां मल मूत्र लोहू व पीव वरसाकर उन्हें सताता था॥

चौ० कबहूं नारिन को लै आवै। आन पुरुष के संग सुलावै॥
कबहूं लै पत्थर अति भारी। धरे ल्यायकर द्वार मँझारी॥
दो० कबहूं पैठि समुद्रमें जल डारै झकझोर। बूड़ि जात तिहि नीर सों बहुत लोग

जब वह इसी तरह लोगोंको दुःख देता हुआ द्वारकामें पहुँचा व रूप वनाकर श्यामसुन्दरके महलपर जा बैठा तब उसके डरसे सब रानियां मुरलीमनोहरकी अपना अपना द्वार बन्द करके भीतर छिपगईं उन दिनों बलरामजी रैवत पर्वत पर गन्धर्व व गन्धर्विनियों के साथ क्रीड़ा व विहार करने गये थे द्विविद बांदर ने यह हाल सुनकर विचार किया कि पहिले हलधर को मारकर पीछे से श्रीकृष्णका प्राण लूंगा ऐसा विचारतेही रैवत पहाड़पर जाकर क्या देखा कि बलदाऊजी गन्धर्विनियों के

मदिरा पीकर एक तालावमें जलविहार व गानविद्या कररहे हैं सो द्विविद वांदर छोटा रूप वनाकर एक वृक्ष पर जो तालावके किनारे था चढ़ गया व किलकारियां मारकर एक डालीसे दूसरी डाली पर कूदने लगा व मल व मूत्रसे गन्धर्विनियोंके वस्त्र जो तालाव किनारे रक्खे थे नष्ट करदिये ॥

दो० कवहूं शाखा तोड़के डारत चारों ओर। कवहुँ भूमिपर उतरके करै शब्द अतिघोर ॥

जव उस वांदरने पत्थर मारकर मदिराका घड़ा जो रक्खाथा तोड़डाला तव स्त्रियोंने पुकारकर वलरामजीसे सव हाल उसका कहा यह वचन सुन-तेही रेवतीरमणने तालावमें से निकलकर एक ढेला उस वांदरपर चलाया तव उसने वृक्षके नीचे आनकर सव चीर स्त्रियोंके फारडाले व जिधर तिधर फेंक दिये यह हाल देखतेही वलदाऊजी ने दौड़कर उस वांदरको हाथसे पकड़ लिया तव वह अपना छोटा रूप वनाकर हाथसे वाहर निकलगया व फिर पहाड़ के समान रूप धरकर वलदाऊजी से लड़नेवास्ते सन्मुख आया व वड़े वड़े वृक्ष व पर्वत पृथ्वीसे उखाड़कर उनको मारने लगा जव रेवतीरमण वड़े क्रोधसे हल मुसल अपना उठाकर मारने दौड़े तव द्विविद ने एक वृक्ष वहुत वड़ा जड़से उखाड़कर संकर्षणपर चलाया सो वलदाऊ-जीने वचाकर एक मुसल वांदरके शिरपर मारा उसका शिर फटकर इस तरह लोहू वहने लगा जिसतरह वरसात में गेरूके पहाड़से लाल पानी वहताहै पर उस वांदरने शिर फटने परभी दूसरा वृक्ष उखाड़कर वलदाऊजी को मारा तो रेवतीरमणने अपना मुसल मारकर वह वृक्ष तोड़डाला जव इसीतरह लड़ते लड़ते कोई वृक्ष या पत्थर वहां नहीं रहा तव दोनों आदमी इसतरह वेधड़क होकर आपस में कुश्ती व मुक्कासे लड़ने लगे कि देखने वाले डरगये जव वहुत देरतक द्विविद वांदर ने वलरामजी से युद्ध करके दो चार मुक्का उन्हें मारा तव वलरामजी ने सव स्त्रियोंको उदास व घव राई हुई देख करके द्विविदके गलेका हँसवा ऐसा दवा दिया कि उसके नाक व आंख व कानसे लोहू वहकर वह मरगया जव उसकी लोथ गिरने से पृथ्वी कांपने लगी तव देवतोंने वलरामजी के ऊपर पुष्प वर्षाये व उनकी स्तुति व वड़ाई करते हुये अपने अपने लोकको चले गये ॥

दो० आनँद सों श्रीद्वारका हलधर पहुँचे आय। पुरवासी प्रफुलित भये ज्यों निर्धन धन पा

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित द्विविद बांदर त्रेता से किष्किन्धा में रहता था सो रेवतीरमणने मारकर उसका उद्धार कि

अरसठवां अध्याय।

साम्वका लक्ष्मणासे विवाह होना॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जिसतरह बेटा साम्व श्रीकृष्ण लक्ष्मणा नाम कन्या राजा दुर्योधन की हस्तिनापुर से विवाह लाया वह कथा कहते हैं सुनो लक्ष्मणा नाम कन्या राजा दुर्योधन की विवा योग्य हुई तब दुर्योधनने स्वयम्बर उसका रचकर अनेक राजों को यहां इकट्ठा किया जब साम्व बेटा मुरलीमनोहर का भी यह हाल सुन हस्तिनापुरमें गया तो वहां क्या देखा कि अनेक राजा उत्तम उत्तम व वस्त्र पहिने व शस्त्र लिये राजा दुर्योधनकी सभामें बैठे हैं व अ प्रकारका मंगलाचार वहां होरहा है उसीसमय राजकन्या अतिसुन्दर चन्द्रमुखी रत्नजटित भूषण व वस्त्र पहिने जयमाला हाथमें लिये सब रा को देखती हुई हंसरूपी चालसे साम्वके निकट पहुँची तब उसका देखतेही साम्वने मोहित होकर विचार किया कि ईश्वर जाने यह क किसके गलेमें जयमाल डालदे तौ फिर इसका हाथ आना कठिन है इसलिये वरजोरी इसको रथपर बैठाकर द्वारका ले चलना चाहिये विचारतेही साम्वने लज्जा व भय छोड़कर लक्ष्मणाका हाथ पकड़ लि व तुरन्त उसे रथपर बैठाकर द्वारकाको चले यह हाल देखकर सब राजा स्वयम्बर में आये थे लज्जित होगये व दुर्योधन धृतराष्ट्र आदिक कौ लज्जित होकर बड़े क्रोधसे आपसमें कहने लगे देखो साम्वने हमलो का कुछ भय न मानकर ऐसा अंधेर किया कि राजकन्या को स्वयम्बर वरजोरी लेगया कदाचित् इन तिलकधारी राजोंमें से कोई ऐसा करता कुछ संदेह नहीं था यादवलोग सदासे अपनी कन्या हमारे घराने में आये हैं यह बड़ी लज्जाकी बात है कि उनका बेटा जो भालूका नाती हमलोगों के सामनेसे राजदुलारी को उठा लेजावे यह अपयश हमा

कभी न छूटेगा और हमारी जानमें श्रीकृष्णजी अपने पुत्रका अपराध समझ कर उसकी सहायता नहीं करेंगे कदाचित् अधर्मकी राह लड़ने भी आवैं तो इसतरह हार जावैंगे जिसतरह कामी पुरुष रोग उत्पन्न होने से तुरन्त मरजाते हैं जब हमलोग श्यामसुन्दर को लड़ते समय पकड़ लेवेंगे तब दूसरे यादववंशी हमारा क्या करसक्ते हैं यह बात सुनकर कर्ण बोला यदुवंशियों का सदासे यह चलन है कि दूसरी जगह शुभ कार्य में जाकर विघ्न करते हैं ॥

चौ० जातिहीन अबहीं यह बढे। राज पाय माथेपर चढे ॥

जब धृतराष्ट्रने यह बात सुनकर बड़े क्रोधसे दुर्योधनको साम्बके पकड़लाने वास्ते कहा तब वह कर्ण व विकर्ण व शल्य व भूरिश्रवा व यज्ञकेतु महाशूरवीर व सेना को साथ लेकर चढ़दौड़े व आपस में कहा देखो वह कैसा बली है जो हमैं जीतकर राजकन्या को लेजायगा जब दुर्योधन आदिक ने अपना अपना रथ दौड़ाकर साम्बको चारों ओरसे घेर लिया तब साम्ब अपना रथ खड़ा करके धनुषबाण लेकर दुर्योधन व कर्ण से बोला तुमलोग मेरे माता के कुलपर जातिहीन मत समझो मैं श्रीकृष्णजी वैकुण्ठनाथके वीर्य से उत्पन्न हुआ हूं इसलिये युद्ध में तुम से नहीं हारूंगा चाहो तुमलोग अकेली अकेला मुझसे लड़ाई करलेव चाहो सब कोई मिलकर लड़ो ॥

दो० यद्यपि तुम्हरो तेज बल प्रकट भयो जग माहिं। तद्यपि हमको या समय पकड़ सकोगे नाहिं॥

यह वचन सुनतेही कर्णने साम्बके सन्मुख जाकर कहा मैं जानता हूं कि तू जल्दी हमसे नहीं हारेगा पर हमलोगोंसे जीतकर तुझे द्वारका जाना कठिन है चैतन्य रह हम तुझे बाण मारते हैं जब ऐसा कहकर कर्ण साम्ब पर बाण चलाने लगा तब साम्ब ने उसका वार बचाकर अपने बाणों से चारों घोड़ा व सारथी कर्णके रथके मारडाले व दश दश बाण दुर्योधनादिक सेनापतियोंको मारे सो वह लोग अपनी विद्यासे उसके बाण बचाकर साम्बकी बड़ाई करने लगे जब दुर्योधनादिकने देखा कि साम्ब अकेली अकेला हमलोगों से नहीं मारा जायगा तब छओं शूरवीर एक साथ साम्ब

पर अपने अपनं शस्त्र चलाने लगे उस समय साम्बने मुरलीमनोहर
चरणोंका ध्यान धरकर ऐसे बाण चलाये कि छओं महारथियों को
दिया व उनके रथका घोड़ा सारथी समेत मारडाला जब दुर्योधनादि
यह दशा अपनी देखी तब छओं महारथियोंने एकी बेर अधर्मकी राह
मारकर एकने चारों घोड़ा व दूसरेने सारथी साम्बका मारडाला व तीस
धनुष काटकर चौथे ने ध्वजा रथपर से गिरादी जब सारथी व घोड़ों
जानेसे साम्ब रथ पर से कूदकर पैदल लड़ने लगा तब कर्णने पहुँच
साम्बको पकड़ लिया व अपने रथ पर बैठाकर हस्तिनापुर को ले
व दुर्योधनने साम्ब को अपनी सभामें खड़ा करके कहा हे यादव तेरा
पराक्रम क्या हुआ जिस घमण्ड से तू राजकन्या को बरजोरी उठा
था जब यह सुनकर साम्ब लज्जासे चुप होरहा तब भीष्मपितामहने दुर्यो
से कहा इसका ब्याह लक्ष्मणासे करके बिदा कर देना चाहिये जब दुर्यो
ने भीष्मपितामहका कहना न मानकर साम्बको कैद किया तब नारद
ने हस्तिनापुरमें आनकर दुर्योधन व कर्ण आदिकसे कहा साम्ब द्वारका
नाथके पुत्र से तो चूक हुई थी पर तुम लोगों को उसे कैद करना उचि
नहीं था इसका समाचार सुनकर बलरामजी यहां आवेंगे तब तुम
अपना अपना बल उनके सामने प्रकट करना जो कुछ होना था सो हु
पर साम्ब को किसी बात का दुःख मत देना जब नारदमुनिके कहने
भी दुर्योधनने साम्ब को नहीं छोड़ा तब नारदजी द्वारका में गये
साम्बकी दशा कहकर राजा उग्रसेनसे बोले दुर्योधनादिक कौरव साम्ब
अपने यहां कैदकर बड़ा दुःख देते हैं जल्दी जाकर उनकी सुधि लेव
तो साम्बका प्राण बचना कठिन है॥

चौ० गर्व भयो कौरव को भारी। लाज सकोच न करी तुम्हारी॥
बालकको उन बांध्यो ऐसे। शत्रुन को बांधे कोउ जैसे॥

यह बात सुनतेही राजा उग्रसेन ने श्यामसुन्दर व यदुवंशियों को बु
कर कहा तुम लोग अभी मेरी सेना साथ लेकर हस्तिनापुर में चढ़
व कौरवों को मारकर साम्ब को छुड़ा लाओ जब उग्रसेन की आज्ञानु

दैत्यसंहारण सेना समेत हस्तिनापुर जाने को तैयार हुये तव बलरामजी ने जो दुर्योधनके साथ मित्रता रखते थे मुरलीमनोहरसे विनय की हे महाप्रभु कौरव हमारे पुराने सम्बन्धी हैं थोड़ी बात के वास्ते सेना ले जाकर उनसे विरोध करना न चाहिये मुझे आज्ञा दीजिये तो वहां जाकर सहज में साम्ब को छुड़ालाऊं कदाचित् वह लोग मेरे समझाने से न मानेंगे तो मैं अकेला उनको दण्ड देने योग्य बहुत हूं जब श्रीकृष्णजी ने यह बात मानकर उन्हें जानेकी आज्ञा दी तब बलभद्रजी व उद्धव व अक्रूरादिक कई यदुवंशी व ब्राह्मण व ज्ञानियों को अपने साथ लेकर द्वारका से चले व कुछ दिन बीते हस्तिनापुर के निकट पहुँचकर एक बागमें डेरा किया व अपने आने का समाचार अक्रूर से दुर्योधनादिक को कहला भेजा जब अक्रूरने राजा धृतराष्ट्र की सभामें जाकर बलभद्रजी के आने का हाल कहा तब दुर्योधन जो बलरामजीका चेला था बड़े हर्ष से भीष्मपितामह व द्रोणाचार्य व धृतराष्ट्र व युधिष्ठिर आदिकको साथ लेकर उन्हें अपने मन्दिरपर लाने वास्ते बाग में गया व रेवतीरमण के चरणोंपर गिर कर विनय की हे महाप्रभु जिसतरह आपने दयालु होकर दर्शन दिया उसीतरह आनेका कारण कहकर अपने चरणोंसे मेरा घर पवित्र कीजिये यह सुनकर बलदाऊजी बोले मैं राजा उग्रसेन का संदेशा कहनेवास्ते यहां आया हूं सुनो जब समाचार कैद करने साम्बका द्वारकापुरीमें पहुँचा तब महाराज उग्रसेन की आज्ञा से कृष्णचन्द्र आनन्दकन्दने सेना समेत तुम्हारे ऊपर चढ़ाई की तैयारी की तब मैंने यह हाल सुनकर मुरलीमनोहर से कहा महाराज कौरवलोग हमारे सम्बन्धी हैं इसलिये उनसे अभी लड़ने वास्ते जाना उचित नहीं है मैं अकेला जाकर साम्ब को छुड़ा लाता हूं सो हे दुर्योधन व धृतराष्ट्र व भीष्मपितामह राजा उग्रसेन ने तुम लोगों को यह संदेशा भेजा है कि जिस बालक को छः महारथियों ने मिलकर अधर्म की राह पकड़ लिया जब उस अकेले कुँवर ने छहों आदमियोंको युद्ध में घबड़ा दिया तब तुमने यह नहीं समझा कि उसके सब घरवाले पहुँचकर हमारी क्या गति करेंगे हे धृतराष्ट्र यद्यपि उस बालक अज्ञानसे

अपराध हुआ कि राजकन्या को स्वयंवर में से उठा लेगया पर तुमलों को सम्बन्धी होकर उसे कैद करना उचित नहीं था लड़कियों को अप नातेदारी में देना चाहिये इससे क्या उत्तम है जो पुराने सम्बन्धियों दीजावें अब भी उचितहै कि साम्बको कैदसे छोड़कर लक्ष्मणा का विव उसके साथ करदेव ॥

दो० यद्यपि उस अज्ञानने कीन्हो काज असाधि। तद्यपि तुम पुरुषा इते करते नहीं उपा

यह वचन बलरामजीका सुनतेही दुर्योधन सब कौरवों के सम्म क्रोधित होकर बोला हे बलरामजी आप चुप रहिये अब अधिक व उग्रसेन की न कीजिये हमलोगों से यह नहीं सुना जाता अभी चार की बात है कि उग्रसेन को संसार में कोई नहीं जानता था जबसे उ हमारे साथ नातेदारी की तब से उसकी पदवी बढ़ी देखो उग्रसेन ने हम आधीन होनेपर भी अभिमान से इसतरह हमको संदेशा कहला भेजा जिसतरह कोई राजा अपने प्रजा पर आज्ञा करे बड़ा आश्चर्य है जो प की जूती शिरपर चढ़ने लगीं यादववंशियों को हमने चँवर व छत्र दे राजा बनाया था सो उनको ऐसी बात कहते हुये लज्जा नहीं आती द्वार पुरी का राज्य पाकर पिछली बात अपनी भूल गये जो मथुरा में ग्वा व अहीरोंके साथ रहते थे जब हमने उनको अपने साथ खिलाकर रा गद्दी दिलवाई तब उनकी गिनती राजों में हुई जैसी भलाई हमने उन की वैसा फल पाया किसी दूसरेके साथ ऐसा करते तो जन्मभर हमारा मानता बड़े लाजकी बात है कि यादवलोग सदा से हमारे आधीन रह अब हमारी बेटी व्याहने चाहते हैं ॥

दो० तिनको यह पदवी भई हमसों करत विवाह। कालिह परों मांगत इते आज भये हैं

आकाश से पानी की जगह पत्थर बरसने नहीं सक्ता यह सब हमा नातेदारी करनेका कारण है जो दूसरे राजालोग हमारे नाम पर उन आदर करते हैं नहीं तो उन्हें कौन पूंछता था निर्लज्जता व ढिठाई की देखो जिसने स्वयंवर में से मेरी कन्या ले जाने की इच्छा की उचित था कि साम्ब को मार डालते जिसमें फिर कोई ऐसा न कर

नातेदारी होनेसे ऐसा नहीं किया इसीवास्ते बलदाऊजी उसकी सिफारिश लेकर हमारे यहां आये हैं आज राजा इंद्रभी ऐसी सामर्थ्य नहीं रखता जो मेरे व भीष्मपितामह व द्रोणाचार्य के सन्मुख आनकर लड़ने सकै जब कालयमन व जरासन्ध के घेर लेने से मथुरा छोड़कर भागगये थे तब यह सब घमण्ड व बल उनका कहां गया था जो आज हमारे ऊपर आज्ञा चलाते हैं यह सब दोष भीष्मपितामह व धृतराष्ट्र हमारे पुरुषों का है जिन्होंने यादववंशियोंका सन्मान करके उन्हें इतना ढीठ किया नहीं तो ऐसा क्यों कहला भेजते दुर्योधन यह कठोर वचन उग्रसेन आदिकको कहकर सभामें से उठगया॥

दो॰ तब जान्यो बलरामजी निश्चय करि मनमाहिं। सूधी बात न कुटिलजन कबहूं समझतनाहिं॥

ऐसा विचारतेही बलदाऊजी हँसकर उद्धव आदिक अपने साथियों से बोले देखो कौरवों को अपने राज्य का इतना अभिमान हुआ जो हम लोगोंको चरणकी जूती जानकर अपने को शिर समझते हैं जब श्यामसुन्दर वैकुण्ठनाथ ब्रह्मा व महादेव आदिक देवतों के मालिक होकर राजा उग्रसेन को दण्डवत् करते हैं तब उनको महाराज होने में क्या सन्देह है आज मुरलीमनोहरकी दयासे इन्द्रादिक देवतोंकी यह सामर्थ्य नहीं है जो राजा उग्रसेन को दुर्वचन कहने सकें सो उन्हींको दुर्योधनने हमारे सामने ऐसी बात कही तो मेरा नाम बलदाऊजी कि अभी नगरसमेत इन लोगोंको यमुनाजलमें डुबाकर नाश करडालूं नहीं तो आजसे अपना नाम बलराम न रक्खूं यह बात अपने साथियों से कहकर रेवतीरमण ने क्रोधमें भरे हुये भीष्मपितामह व धृतराष्ट्रसे कहा दुर्योधन अज्ञान को यहां बुलाओ तो अपनी बातोंका उत्तर हमसे सुनै मैंने जाना कि अब प्रीति नातेदारी की छूटकर युद्ध करना पड़ैगा जब भीष्मपितामह के बुला भेजने से दुर्योधन फिर सभामें आनकर बैठा तब रेवतीरमण ने कहा हे दुर्योधन ज्ञानी व अज्ञान मनुष्य इसतरह पहिचाना जाता है कि ज्ञानी लोग सब बात का आगम विचारकर वह काम करते हैं जिसमें लज्जित होना न पड़े व मूर्ख मनुष्य बिन समझे काम करने से पीछे अपने दंड को पहुँचते हैं॥

दो० ज्ञानी जो कारज करैं समझ लेत मन माहिं। कारज विन समझे करैं ताहि ज्ञान कछु नाहिं॥

जिस तरह नया घोड़ा जब तक सवारके हाथका कोड़ा नहीं खाता तब तक सीधा नहीं चलता सो तुमने अभिमान भरी बातें कहकर यह विचार नहीं किया कि कैसा वचन कहता हूं यह सब बात तुमको कहना उचित नहीं था किसवास्ते कि मैंने प्रेम व प्रीति भरी हुई बातें तुमसे कहीं थीं उनका उत्तर तुमने ऐसा दिया जैसा कोई सेवक को भी नहीं कहता मैं चाहता था कि हमारे तुम्हारे में युद्ध न हो सो तुमने दुर्वचन कहकर हम को क्रोध दिलाया व भलमन्सीका कहना मेरा तुमको अच्छा नहीं मालूम हुआ इसलिये तुम अपने कर्तबका दण्ड पाकर लज्जित होगे तुमने नहीं समझा कि अपनी स्तुति व दूसरेकी निन्दा करना अच्छा नहीं होता तुझे अपनी कन्या श्रीकृष्णजीके बेटेको देने से लज्जा मालूम होती है तू उन वैकुण्ठनाथकी पदवी नहीं जानता जिनके चरणोंकी धूरि इन्द्रादिक देवता शिर चढ़ाने से अपनी बड़ाई समझते हैं॥

दो० जिनका ध्यान धरैं सदा शिवविरञ्चि चितलाय। चरणकमल सेवत रहैं श्रीकमला सुखपाय॥

हे दुर्योधन भला तू बतला यह पदवी तेरे कुलमें किसको प्राप्त है जो तैंने अभिमान भरी बातें कहीं ऐसा कहकर बलदाऊजीने क्रोध से अपना हल पृथ्वीमें गड़ादिया व हस्तिनापुरको पृथ्वीसमेत हलसे उठाकर जब यमुनाजलमें डुबाने चाहा वैसे एक कोना पृथ्वीका उठा हुआ देखकर भीष्मपितामह व धृतराष्ट्र ब्राह्मण व ऋषीश्वरादिक जो उस सभामें बैठे थे उठ खड़े हुये व हाथ जोड़कर विनयपूर्वक रेवतीरमणसे कहा हे दीन-नाथ आप ईश्वररूप व धर्मकी वृद्धि करनेवाले होकर अपना क्रोध क्षमा कीजिये व दुर्योधन अज्ञान एक मनुष्यके दुर्वचन कहनेपर हस्तिनापुरको डुबाकर विना अपराध करोड़ोंका प्राण न लीजिये आजसे हमलोग सब राजा उग्रसेनकी आज्ञा पालन करेंगे॥

दो० सब हम मिलि बहुभांतिसों विनती करी सुनाय। दयावन्त बलरामजी दीन्ही रिस बिसराय॥

जब बलदाऊजीने भीष्मपितामह आदिकके विनय करनेसे क्रोध शान्त करके हल अपना जो हस्तिनापुर उलटने वास्ते पृथ्वी में धँसाया था

निकाल लिया तब दुर्योधन साम्बको बहुत अच्छा गहना व कपड़ा पहिनाकर लक्ष्मणा अपनी कन्यासमेत बलरामजीके पास लेआया व हाथ जोड़कर बोला ॥

चौ० तुमहौ अलख शेष अवतारा। धरत शीश धरणी का भारा ॥
हम असाधु अतिहैं अज्ञानी। तुम्हरी गति अगाध नहिं जानी ॥
इतनो दण्ड जो हमको दीन्हों। सो तुम बहुत अनुग्रह कीन्हों ॥
दो० अपनी शक्ति जनायकै कीन्हों हमैं सनाथ। हम दासनके दास हैं तुम नाथनके नाथ ॥

इसीतरह दुर्योधनने बहुत स्तुति करके मंगलाचार मनाया व विधिपूर्वक लक्ष्मणाका विवाह साम्बसे करदिया व बारहहजार हाथी व दश हजार घोड़े व छः हजार जड़ाऊ रथ व हजार दासी अतिसुन्दरी भूषण व वस्त्रसंयुक्त व अनेक वस्तु दहेज में देकर जब दुलह व दुलहिनको विदा किया तब बलरामजी साम्बको लक्ष्मणा समेत अपने साथ लेकर हर्षपूर्वक द्वारकामें पहुँचे व सब हाल वहांका राजा उग्रसेन व श्यामसुन्दर से कह दिया कौरवोंके गर्व टूटने का हाल सुनकर सब कोई आनन्द हुये इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित तुम देखो अभीतक हस्तिनापुर दक्षिण ऊंचा होकर उत्तर नीचा दिखलाई देता है ॥

उनहत्तरवां अध्याय।

नारदमुनिको श्रीकृष्णजीके सब महलोंमें रहने का संदेह करना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित एकदिन नारदजी ने अमरावती पुरीमें क्या देखा कि राजा इन्द्रकी दोनों स्त्रियां आपसमें झगड़ा कर रही हैं तब उन्होंने विचार किया कि दो सवति होनेसे यह दशा है श्रीकृष्णजी के सोलहहजार एकसौ आठ स्त्री हैं उनमें किस तरह बनती होगी न मालूम गोपीनाथ उनको इकट्ठे बुलाते हैं या पारी बांधकर उनके पास जाते हैं यह हाल देखना चाहिये ऐसा विचारकर नारदजी द्वारका में आये तो क्या देखा कि वहां अच्छे अच्छे बाग उत्तम उत्तम पुष्प व फल लगे होकर उनमें अनेक पक्षी बोलते हैं व अनगिनती तड़ाग व बावली में कमल फूले होकर उनपर भौंरोंका गूंजना बहुत शोभा देताहै व सुनहुले

किलेके चारोंओर समुद्र लहर भरकर मालीलोग मीठे मीठे स्वरों सेगा हुये क्यारियां सींच रहे हैं व पनिघटपर झुण्ड की झुण्ड महासुन्दरी स्त्रि अच्छा अच्छा गहना व कपड़ा पहिने दिखलाई दीं जब नारदमुनि सब शोभा देखते हुये नगर में गये तो क्या देखा कि महल व मकान रत्नजटित होकर उनपर अनेकरंगकी कलशियां लगी हैं॥

दो० तिनमें मन्दिर मध्यकी महिमा कही न जाय। मानों रत्नजड़ाव्रमें माणिक धरो बनाय॥

और सब दुकान व सड़क उस नगरकी उत्तम होकर घर घर कथा हरिचर्चा होरही है व यदुवंशीलोग अनेक जगह राजा इन्द्रके समान आ पसमें बैठे हुये श्यामसुन्दर का यश गाते हैं व सब छोटे बड़ों के द्वारे अम्बर व अरगजे जलनेकी सुगन्ध उड़रही है व द्वारकावासी अपने अपने घर होम व यज्ञादिक शुभ कर्म करके अच्छा अच्छा पदार्थ बड़े प्रेम ब्राह्मणोंको खिलाते हैं जब नारदमुनि यह आनन्द देखते हुये रुक्मिणीजी के महलमें गये तो वहां ऐसा रत्नजटित स्थान देखा जिसके सामने आंख नहीं ठहर सक्ती थी व उस महल में तासकी ध्वजा लगी होकर छज्जों कबूतर आदिक पक्षियोंका रूप ऐसा बना हुआ था जिनके पास जंगली पक्षी आन बैठते थे व अरगजे व अम्बरके धुयेंको मोर लोग बादल समझ कर बड़े हर्ष से नाचते थे मोतियों की झालर द्वारपर लटकाई होकर पारि जातक फूलकी सुगन्ध चारोंओर उड़ती थी॥

चौ० सुन्दर बालक खेलत डोलैं। मधुर मनोहर बाणी बोलैं॥
रूपवन्ति दासी मन हरैं। निज स्वामी की सेवा करैं॥

दो० यह शोभा ऋषि देखिकै भूलि गये सब ज्ञान। दासी औ ठकुरानियां नहीं सके पहिचान॥

सो नारद मुनिने वहां क्या देखा कि श्यामसुन्दर उत्तम शय्यापर मुकुट जड़ाऊ पहिने जर्द पीताम्बर बांधे व उपरना रेशमी ओढ़े घूंघरवाली जुलफैं छोड़े माथेपर केसरिका तिलक लगाये कुण्डल जड़ाऊ कानों में डाले व वनमाला व वैजयन्ती माला व मोतियों का हार पहिने नटवररूप बनाये हुये बैठे हँसते हैं व हजारों दासी रहने पर भी रुक्मिणीजी आप खड़ी हुई पंखा हांकती हैं जैसे द्वारकानाथने नारदमुनिको आते हुये देखा

वैसे उठकर उन्हें दण्डवत् करके जड़ाऊ सिंहासनपर बैठाला व अपने हाथ उनका चरण धोया व चरणोदक लेकर विधिपूर्वक उनका पूजन किया व हाथ जोड़कर बोले हे मुनिनाथ आपने दयालु होकर मुझे दर्शन दिया नहीं तो संसारी मनुष्योंको तुम्हारा दर्शन मिलना दुर्लभ है हम क्या सेवा तुम्हारी करें जिसमें हमारा कल्याण हो॥

चौ० जाघर चरण साधुके जावैं। वे नर सुख सम्पति सब पावैं॥

यह वचन सुनकर नारदमुनिने विनय किया हे आदिपुरुष भगवान् मैं तुम्हारा दर्शन करने आया हूं विना दया व कृपा तुम्हारी संसारी मनुष्य भवसागर पार नहीं उतरने सक्ता गंगाजी तुम्हारे चरणका धोवन होकर सब जीवोंको सुख देती हैं मैं कंगाल ब्राह्मण कौन गिनती में हूं जो तुम्हारी स्तुति करनेसकूं मुझपर दयालु होकर ऐसा वरदान दीजिये जिसमें तुम्हारा स्मरण व ज्ञान मुझसे न छूटै॥

चौ० मैं सेवक तुम सबके राजा। मोहिं प्रणाम कियो किहि काजा॥
जगमें लियो मनुज अवतारा। याते करत जगत व्यवहारा॥
नातो तुम चरणनकी रेना। शिव विरंचि चाहैं दिन रैना॥
मैं उनकी पदवी कहँ पावों। दासन में यक दास कहावों॥
तुम्हरो नाम जपै जन कोई। तापर कृपा तुम्हारी होई॥
यह तुम्हरे मन में जिन आवै। नारद हमसे पांव धुवावै॥
याही विधि हम पुत्र तुम्हारे। कृपावन्त तुम तात हमारे॥
जापर कृपा तुम्हारी होई। अन्धकूपसों निकसै सोई॥

दो० भक्तनके दुखहरणको धरणि उतारन भार। लीन्ह्यो तुम अवतारहै माखन प्रभु करतार॥

जब इसतरह स्तुति करके नारदमुनि वहां से विदा होकर सत्यभामा के घरगये तो क्या देखा कि उद्धवजी वहांपर मुरलीमनोहरसे चौपड़ खेलतेहैं॥

चौ० ऋषिको देखि उठे घनश्यामा। बाही भांति करो परनामा॥
कह्यो धन्य हैं भाग्य हमारे। जो तुम से ऋषिराज पधारे॥
कृपा करो द्विजराज गुसाईं। केतिक दिवस रहे यहि ठाईं॥

यह वचन सुनतेही नारदमुनि वहांसे भी श्यामसुन्दरको आशीर्वाद देकर जाम्बवती के यहां गये तव वैकुण्ठनाथको अंगमें उवटन व फुलेल मलवाते देखकर विना भेंट किये फिर आये किसवास्ते कि शास्त्रमें तेल

लगावती समय दण्डवत् करना व आशीर्वाद देना वर्जित है फिर नारद
जी ने कालिन्दी के महल में जाकर देखा तो श्यामसुन्दरको पलँगपर सोते
हुये पाया जब कालिन्दीने नारदमुनिको देखते ही मुरलीमनोहर का चरण
दबाकर जगादिया तब त्रिभुवनपति दण्डवत् करके बोले हे मुनिनाथ
तीर्थरूपी साधुओंके चरण आनेसे संसारीजीवोंका घर पवित्र होजाता है
सो आपने दया करके अपने दर्शनसे मुझे कृतार्थ किया जब नारदमुनि
वहांसे आशीर्वाद देकर मित्रबिन्दाके महलमें गये तो क्या देखा कि श्या
मसुन्दर ब्राह्मणोंको जिवांते हैं नारदमुनिको देखते ही हाथ जोड़कर बोले
हे द्विजराज आपने बड़ी दया की जो इस समय आये आप भी भोजन
करके अपनी जूठन मुझे दीजिये तो उसे खाकर पवित्र होजाऊं नारद
मुनिने कहा हे महाप्रभु आप ब्राह्मणोंको भोजन कराइये मैं फिर आनकर
प्रसाद पाऊंगा यह वचन कहकर नारदमुनि सत्याके महलमें गये तो क्या
देखा कि वृन्दावनविहारी भक्तहितकारी आनन्दपूर्वक विहार कररहे हैं यह
कौतुक देखते ही वहां से उलटे पांव फिरकर भद्राके मन्दिर में आये तो द्वा
रकानाथको भोजन करते पाया वहांसे लक्ष्मणाके घर जाकर वैकुण्ठनाथ
को स्नान करते देखा इसीतरह नारदमुनि अनेक महलोंमें वैकुण्ठनाथकी
परीक्षा लेनेवास्ते गये तो उनको कहीं पूजा व ध्यान करते व किसी जगह
होमपर बैठे व कहीं स्त्रियोंके साथ फूल बरसाकर खेलते व किसी जगह
तड़ागादिकमें स्त्रियोंके साथ नहाते व कहीं घोड़े रथोंपर बैठेव किसी महल
में कथा व पुराण सुनते व कहीं गौ ब्राह्मण को दान देते व किसी जगह हा
थियोंका युद्ध देखते व कहीं द्रव्यादिक गिनवाते व किसी महलमें सन्तान
के विवाह की चर्चा करते व कहीं लड़का खिलाते व कहीं बलरामजीके
पास बैठे हुये अधर्मियों के मारनेका सम्मत करते व किसी जगह बावली
व तड़ागादिक खोदनेवास्ते रुपया देते व किसी जगह वसुदेव व देवकी
के पास बैठे हुये भोजन कराने वास्ते आज्ञा पूंछत व कहीं लड़कियों को
ससुरारसे विदा करते व किसी महलमें भाटोंसे कवित्त सुनते व कहीं अहेर
खेलनेवास्ते बैठे देखा॥

चौ० कहुँ नारिनको कौतुक देखैं। कहुँ नारिनसों खेलत पेखैं॥
कहुँ नारिनसों करत ठिठोली। बोलत विविध भांतिकी बोली॥
कहुँ नारिनमें कलह करावैं। कहूं अनमनी नारि मनावैं॥
दो० कहूं पुत्रको ब्याहके लाये बहूसमेत। तहां करत उत्सव बहुत लोगनको धन देत॥
या विधि जिस जिस महलमें नारद पहुँचे जाय। प्रियासहित देखे तहां माखनप्रभु यदुराय॥
चौ० नारदके संशय मनमाहीं। श्याम बिना कोऊ गृह नाहीं॥
जिस घर जाऊं तहां विहारी। ऐसी प्रभु लीला विस्तारी॥

नारदजीने यह महिमा श्यामसुन्दरकी देखतेही लज्जित होकर कहा देखो त्रिभुवनपतिने मेरा चरण धोकर चरणामृत लिया व मैंने अपने अज्ञान से उनकी परीक्षा लेनेकी इच्छा की सो मुझसे बड़ा अपराध हुआ जब ऐसा विचारकर नारदमुनि भय से कांपने लगे तब मुरलीमनोहर हँसकर बोले हे मुनिनाथ आज तुम्हारी क्या दशा है जैसे यह वचन नारदजीने सुना वैसे हरिचरणोंपर गिरपड़े व हाथ जोड़कर विनय किया हे दीनानाथ मैं अज्ञानतासे तुम्हारी परीक्षा लेने चाहता था सो लज्जित होकर उसका फल पाया अब मुझ दीनपर दयालु होकर मेरा अपराध क्षमा कीजिये॥

चौ० मैं तुम्हरो भिक्षुक यदुनाथा। गावों सदा नाम गुणगाथा॥
तुम्हरी माया सब जगजानी। तिहि सों मेरी मति भरमानी॥
तुम्हरो नाम जपै जो कोई। परमधाम पावत है सोई॥
कृपा करो मेरो भ्रम टारो। भवसागर से पार उतारो॥

यह स्तुति सुनकर वैकुण्ठनाथ बोले हे मुनिनाथ तुम कुछ संदेह अपने मनमें न लाकर मेरी मायाको अति बलवान् समझो जब वह माया सब जगत्को मोहकर मुझे भी नहीं छोड़ती तो दूसरेको क्या सामर्थ्य है जो संसारमें उत्पन्न होकर उसके वश्य न होवै हे नारदमुनि मेरे भेद व कामोंको पहुँचना बहुत कठिन होकर व कोई स्थान मुझसे खाली नहीं रहता सब जीवों के उत्पन्न व रक्षा करने धर्म चारों वर्ण व चारों आश्रमका रखनेवाला मैं हूं व सगुण अवतार लेना मेरा केवल इसवास्ते है जिसमें संसारी जीव मुझे शुभकर्म करते देखकर उसीतरह अच्छा काम किया करें व तुम मेरे भेद व कामोंकी परीक्षा लेनेमें न रहकर हरिभजन किया करो॥
दो० केहिकारण भ्रममें परे करो आपनो काज। लोगनके पालक हरो दर्शन दे ऋषिराज॥

यह सुनतेही नारदमुनि वसुदेवनन्दन से अपना अपराध क्षमा करा बोले हे महाप्रभु आप दयालु होकर ऐसा वरदान मुझे दीजिये जिस तुम्हारे चरणों की भक्ति सदा बनी रहकर संसारी माया मेरे ऊपर न व्या जब केशवमूर्तिने नारदमुनि को इच्छापूर्वक वरदान देकर विदा कि तब वह दण्डवत् करके वीणा बजाते व हरिगुण गाते हुये सत्यभामा पास जाकर बोले सत्यभामा तू पृथ्वी का अवतार है तुम से मुरलीमनो रुक्मिणीको अधिक प्यार करते हैं इसलिये तुम श्यामसुन्दर को मु दान देकर मोल लेलो तो वह तेरे आधीन रहेंगे यह वचन सुनते सत्यभामाने प्राणनाथ से आज्ञा लेकर उन्हें पारिजातक समेत नारद को संकल्प दिया जब नारदमुनि मुरलीमनोहर को अपने साथ ले च तब सत्यभामा उनके बराबर सोना देने लगी सो नारदजीने सोनेके बदले तुलसीदल लेकर मुरलीमनोहरको फेर दिया व आप आनन्दपूर्वक ब्रह्म लोकको चले गये व श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द उसी दिनसे सत्यभामा पर अधिक प्रीति करने लगे॥

चौ० श्रीभगवान महासुखकारी। रहैं सदा जैसे गृहचारी॥
सकल पुत्र दारा सब रहई। और कुटुम्ब कहां लौं कहई॥
रक्षा करि सबको दुख हरें। इच्छा उनकी पूरण करें॥
कृष्णनारि यों मनमें जानें। मोसों बहुत प्रीति हरि मानें॥
यह लीला अद्भुत सुखदाई। जो जन कहै सुनै चितलाई॥
दो० लहै महासुख सम्पदा दुख पावै कछु नाहिं। निर्मल यश प्रकटै सदा रहै वंश जगमाहिं॥

सत्तरवां अध्याय।

कथा मुरलीमनोहरकी कि किस समय कौन कर्म करते थे॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित श्यामसुन्दर संसारी जीवों को राह दिख लाने वास्ते जिससमय जो काम करते थे उसका हाल कहता हूं सुनो जब दो घरी रात रहे पक्षी बोलने लगते थे उसीसमय वसुदेवनन्दन सब महलों में से उठकर दिशा फिरने व दातून करने उपरान्त स्नान करके संसारी मनुष्योंकी तरह अपनी आत्माका ध्यान करते थे॥

दो० जबै उठैं हरि सेजते होहिं विकल सब नारि। पक्षिन दोष विचारिकै देहिं सबन मिलि गारि॥

जब सूर्य निकलने उपरांत वसुदेवनन्दन सब महलोंमें जाकर जड़ाऊ चौकीपर बैठते थे व उनके अंगपर स्त्रियां फुलेल व उबटन मलकर गरम पानीसे स्नान कराती थीं तब वह तुलसीचौरे के पास बैठकर सन्ध्या व तर्पण करके गायत्री जपते थे जब चार घड़ी दिन चढ़ता था तब नित्य एक एक महलमें चौदह चौदह हजार गौ दूध देनेवाली विधिपूर्वक ब्राह्मणों को दान देकर उनका आशीर्वाद लेके भोजन करते थे ॥

दो० खान पान भूषण बसन विविध सुगन्ध लगाय। पहिले विप्रन अर्पिकै आप लेत यदुराय ॥
यद्यपि श्रीभगवान को कर्म लगैं कछु नाहिं। तद्यपि कर्म कियो चहैं लियो जन्म जगमाहिं ॥

जब मुरलीमनोहर अनेकरूपोंसे एकरूप होकर उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहिनकर द्वारेपर आते और वन्दीगणोंसे स्तुति सुनकर सन्मानपूर्वक उन्हें बिदा करते थे तब दारुक रथवान् द्वारे पर जड़ाऊ रथ लेजाकर खड़ा करता था ॥

दो० दर्श पाय हर्षें सबै तभी झुकावैं माथ। कृपादृष्टि तिनपर करैं माखन प्रभु यदुनाथ ॥

जब द्वारकानाथ उस रथपर उद्धवसमेत बैठकर फिरने घूमने जाते थे तब सात्यकी यादव पीछे बैठकर पंखा व चवँर मोहनीमूर्ति के हिलाता था जब श्यामसुन्दरका रथ धीरे धीरे राजसी विभवसे चलता था तब उनकी स्त्रियां अपने अपने महलकी खिड़कियों में से उनकी छवि देखकर अपने अपने भाग्यकी बड़ाई करती थीं जब थोड़ी देर उपरांत कृष्णचन्द्र आनन्दकन्द सुधर्मा सभा में आते थे उस समय सब यादववंशी खड़े होकर सन्मानपूर्वक रत्नसिंहासन पर उनको बैठाते थे कुछ बेर केशवमूर्ति राजा उग्रसेन के पास बैठकर कथा व पुराण सुनते थे व कभी कभी नट व भानुमती आदिकको कौतुक देखकर प्रसन्न होते थे व बैकुण्ठनाथकी दयासे द्वारकापुरी में कुछ रोग व काल किसी को नहीं व्यापता था इसलिये सब छोटे बड़े परमानन्द रहते थे जब वसुदेवनन्दन सुधर्मा सभा से उठकर अनेक रूप धारण करके सब महलों में जाते थे तब छत्तीस प्रकार के व्यञ्जन भोजन करते थे और उसमें अच्छा अच्छा पदार्थ उद्धव व अक्रूर आदिक हरिभक्तोंकोभी मिलता था इतनी कथा सुनाकर शुकदेव

जी बोले हे परीक्षित देखो श्यामसुन्दर त्रिभुवनपति गृहस्थाश्रम होने
भी विरक्त रहकर संसारीजीवों को राह दिखलाने वास्ते ये सब कर्म क
थे एकदिन वैकुण्ठनाथ सुधर्मा सभामें रत्नसिंहासनपर बैठे हुये यदुवंशि
के साथ बातें करते थे उसीसमय एक ब्राह्मण द्वारकापुरीमें आया व
पालकों से कहा तुम श्रीकृष्णजी से जाकर कहि देव एक ब्राह्मण तुम्ह
दर्शन की इच्छा से द्वारेपर खड़ा है आज्ञा हो तो भीतर आनकर अप
मनोरथ पूर्ण करै जैसे द्वारकानाथ ने यह संदेशा द्वारपालक से सुन
उस ब्राह्मणको बुला भेजा और वह ब्राह्मण उनके सामने भीतर गया
त्रिभुवनपतिने नीचे उतरकर उस ब्राह्मणको दण्डवत् किया व अपने प
सिंहासनपर बैठाकर कोमल वचन से पूंछा महाराज आप कहां से कि
कारण यहां आये यह मधुर वचन सुनतेही वह ब्राह्मण हाथ जोड़कर बो
हे महाप्रभु राजा जरासन्ध जो अपने बल व प्रतापका घमण्ड रखता
दिग्विजयवास्ते निकला था सो जिन राजों ने उसकी आज्ञा पालन
उनका देश उसने छोड़ दिया और जो राजा अपने अभिमान से उस
पास नहीं आये उनको युद्ध में जीतकर अपने यहां कैद किया सो
हजार आठ सौ राजा जो उसके यहां कैद हैं उनका संदेशा लेकर आ
हूं श्यामसुन्दर बोले कहो तब उस ब्राह्मणने कहा महाराज उन सब रा
ने दण्डवत् करके यह विनय किया है हे वैकुण्ठनाथ आपका सदासे
प्रण है जब जब दैत्य व अधर्मी राजा हरिभक्तों को दुःख देते हैं तब
आप सगुण अवतार से अधर्मियों को मारकर अपने भक्तों की रक्षा कर
हैं जिसतरह आपने हिरण्यकशिपु को मारकर प्रह्लाद का प्राण बचा
और ग्रह से गजेंद्र को छुड़ाया उसी तरह हम लोगों को भी म
दुःखी व दीन जानकर हमारा कष्ट छुड़ाइये जैसे कर्मरूपी फांसीमें स
जगत बँधा रहकर नष्ट होता है वैसे जरासन्ध की कैद में हम लो
फँसकर बड़ा दुःख पाते हैं इसलिये दिनरात तुम्हारे दर्शनों की इच्छा
बनी रहती है॥

चौ० दुष्टदलन है नाम तुम्हारो। तुमहीं सबको कष्ट निवारो॥

हमको परो दुःख अतिभारी। बेग आय सुधि लेव हमारी॥
जैसे कृपा जनन पर करो। तैसे कष्ट हमारो हरो॥

दो० रैन दिवसहैं बन्दि में परे नहीं क्षण चैन। हमको आय छुड़ाइये माखन प्रभु सुखदैन॥

हे महाप्रभो राजा जरासन्ध अज्ञान अपने राज्य के घमण्ड से ऐसा मतवाला व अन्धा होरहा है कि सत्रहवेर तुम्हारे सामने से भागने परभी लज्जित न होकर एक वेर तुम सबका मनोरथ पूर्ण करनेवास्ते जो भागे थे वड़ा अहंकार करके अपनी वरावर किसीको नहीं समझता सो आपने पृथ्वीका बोझ उतारने वास्ते अवतार लिया है इसलिये उसका घमण्ड तोड़कर हमारा दुःख छुड़ाना चाहिये किसवास्ते कि हमलोग किसी दूसरे का भरोसा नहीं रखते॥

दो० तिहिकारण हम सबनकी है तुमहीं को लाज। तुम बिन को रक्षा करै माखन प्रभु यदुराज॥

चौ० हम जो महा अधम अज्ञानी। धर्म कर्म की बात न जानी॥
दयासिन्धु है नाम तुम्हारो। हम दीनन की ओर निहारो॥
जबलों तुम्हरी कृपा न होई। तब लों ज्ञान न पावत कोई॥
विषयभोग लोगन अति भावै। तुम्हें छोड़ उनसों मन लावै॥
संकट आन परै जिहि काला। तुम्हरो नाम जपै नँदलाला॥
जब तन में कछु व्यथा जनावै। तात मात की सुधि तब आवै॥
ताही विधि तुमको हम जानैं। सबके तात मात पहिचानैं॥
दीनबन्धु विनती सुनि लीजै। जीवदान दीनन को दीजै॥

दो० यद्यपि सुन्दरबदनको दर्शन पायों नाहिं। तद्यपि चरणसरोजको ध्यान धरत मनमाहिं॥

यह दीन वचन सुनतेही दुःखभञ्जन ने दयापूर्वक उस ब्राह्मणसे कहा तुम धैर्य रक्खो मैं सब राजोंका दुःख छुड़ादूंगा॥

चौ० धीरज बिनु कारज नहिं होई। यह निश्चय जानो सब कोई॥

यह वचन सुनतेही वहब्राह्मण प्रसन्न होकर वसुदेवनन्दनको आशीर्वाद देने लगा उसीसमय नारदमुनि वीणा वजाते व हरिगुण गातेहुये द्वारकापुरी में पहुँचे तब श्यामसुन्दरने दण्डवत् करके उनको बड़े सन्मान से अपने पास सिंहासनपर बैठालकर पूंछा हे मुनिनाथ कुछ नई बात हो तो सुनावो और राजा युधिष्ठिर आदिक पाण्डव हमारे भाइयों का कुछ हाल तुम्हें मालूम हो तो बतलावो इन दिनों वहलोग क्या करतेहैं बहुत दिनों

से हमने उनका समाचार नहीं पाया यह बात सुनकर नारदजी बोले महाप्रभो अन्तर्यामिन् आप सब जगत्का हाल जानकर दया की राह मुझ से पूछते हैं तो सुनिये मैं अभी पाण्डवों के पास होकर चला आता हूं राजा युधिष्ठिर आदिक पांचो भाई रात दिन तुम्हारे याद व ध्यान में रहकर इन दिनों राजसूय यज्ञ करने की इच्छा रखते हैं पर सम्पूर्ण होना उसका तुम्हारे आधीन समझकर आठों पहर उनको यह अभिलाषा बनी रहती है कि द्वारकानाथ दयालु होकर आवैं तो हमारा मनोरथ पूर्ण हो।

दो० याते बिलम न कीजिये अबहीं पहुँचो जाय। भक्तनको कारज करो माखन प्रभु यदुराय॥

उसीसमय राजा युधिष्ठिर के नेवता की चिट्ठी इस समाचार से मुरली मनोहरके पास पहुँची कि हे महाप्रभो ब्राह्मणों ने मुझ से राजसूय यज्ञका संकल्प तो करादिया पर विना आने आपके मेरा मनोरथ पूर्ण नहीं होस सक्ता सो मेरी लज्जा तुम्हारे हाथ है जब श्यामसुन्दरने पांडवोंका संदेसा नारदमुनि से सुनकर उनकी चिट्ठी पढ़ी तब यदुवंशियोंसे जो वहां बैठे थे पूंछा सुनो भाई जरासन्धके कैदी राजों ने अपने छुड़ाने का सन्देशा मुझे कहला भेजा है और नारदजी पाण्डवों के यहां जानेवास्ते कहते हैं इन दोनों बातोंमें पहिले क्या करना चाहिये उनमें कोई यदुवंशी बोला महाराज पहिले राजोंकी वंदी छुड़ाना उचित है दूसरे ने कहा प्रथम पांडवोंके मकानपर जाकर उनका यह यज्ञ सम्पूर्ण किया चाहिये यह सुनतेही वसुदेवनन्दनने उद्धवसे कहा॥

चौ० उद्धव तुम हौ सखा हमारे। मन आंखिन से नहीं नियारे॥
दोउ ओर की भारी भीर। पहिले कहां चलैं कहु वीर॥
उत राजा संकट में भारी। दुख पावत हैं आश हमारी॥
इत पांडव मिलि यज्ञ रचायो। ऐसेही प्रभु वचन सुनायो॥

यह बात सुनते ही उद्धवने श्यामसुन्दर से हाथ जोड़कर विनय किया हे महाप्रभो मेरा बड़ा भाग्य है जो आप अन्तर्यामी होकर दयाकी राह मुझ से पूछते हैं॥

इकहत्तरवां अध्याय।

श्रीकृष्णजीका पांडवों के स्थानपर जाना॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित उद्धवभक्त तीनों काल के जाननेवाले बोले हे दीनानाथ मेरे निकट पहिले पांडवोंके पास चलकर उन्हें धैर्य देना उचितहै फिर वहां से भीमसेन व अर्जुनको साथ लेकर जरासन्धके मारने वास्ते जाना चाहिये किसवास्ते कि जरासन्ध दशहजार हाथीका वल रखताहै इसलिये अपने वरावर किसीको नहीं समझता सो भीमसेन जरासन्धके साथ कुश्ती लड़कर तुम्हारी कृपा से उसे मारडालेगा मेरी समझ में जरासन्धकी मृत्यु भीमसेन के हाथ है॥

दो॰ जरासन्ध को मारके राजन लेहु छुड़ाय। पांडुसुतन के यज्ञको दूजो नहीं उपाय॥

हे वैकुंठनाथ जब कैदी राजोंके वालक रोकर अपने वापको याद करते हैं तव उनकी माता धैर्य देकर उनसे कहती हैं अय वेटा तुम मत रुदन करो श्रीकृष्णजी आदिपुरुष भगवान् ने पृथ्वी का भार उतारने वास्ते अवतार लियाहै जिसतरह उन्होंने रामावतारमें जानकी माताको रावण अधर्मी के यहां से छुड़ा लिया था उसी तरह जरासन्ध पापी को मारकर तुम्हारे पिताको छुड़ावेंगे यह वही वैकुंठनाथ हैं जो गजेन्द्र हाथीको ग्राहसे वचा कर शंखचूड़ से गोपियों को छुड़ा लाये थे॥

चौ॰ कंस भूप उनहीं पुनि मारयो। तात मातको कष्ट निवारयो॥
वे प्रभु हैं सबके सुखकारी। उनहीं को है लाज हमारी॥

सो॰ कष्ट सकल संसारको दूरकरत क्षणमाहिं। तिन्हैं तुम्हारो दुख हरत वारलागि है नाहिं॥

चौ॰ जो तुमको ऐसी विधि ध्यावैं। रैन दिवस तुम्हरो गुण गावैं॥
तिन्हपर कृपा वेगि प्रभु कीजै। तहां जाय उनकी सुधि लीजै॥

सो॰ रक्षपाल सब जगतके तुमहीं हौ गोपाल। मैंहूं तुम्हरे शरणहूं माखन प्रभु नँदलाल॥

हे दीनदयालो उन सब राजोंको जरासन्धकी वन्दीसे छुड़ाना चाहिये पर राजा युधिष्ठिरने केवल तुम्हारे भरोसे पर राजसूय यज्ञ करनेकी इच्छा की है नहीं तो पहिले वह अपने पराक्रम से सब राजों को आधीन कर लेते तव ऐसे कठिन यज्ञ का संकल्प करते॥

चौ० तदपि उनपर कृपा तुम्हारी। वह हैं परम भक्त हितकारी॥
त्यहि कारण निश्चय मन आनै। कारज कठिन सहजकर मानै॥
दो० याते बेगि सिधारिकै कीजै उनको काज। तुमहीं को सब लाज है माखन प्रभु व्रजरा

जब तक जरासन्ध मारा न जावे या हार न माने तबतक राजसूय य नहीं होसक्ता उसके मारे जाने में दो अर्थ समझिये एक तो राजा युधि का यज्ञ अच्छीतरह सम्पूर्ण होगा दूसरे बीसहजार आठसौ राजा बन्दी छूटकर तुम्हारी कृपा से सुख पावैंगे यह दोनों काम होने से तुम्हारा संसार में स्थिर रहेगा और राजसूय यज्ञमें सब काम सिवाय राजों दूसरा कोई नहीं करनेसक्ता सो वही राजालोग छूटकर बड़े प्रेम से यज्ञ काम करैंगे इतने राजा इकट्ठे दूसरी जगह मिलना बहुत कठिन है व मनुष्य लड़कर दशों दिशा जीत आवे तौभी इतने राजा इकट्ठे नहीं हो इसलिये पहिले इन्द्रप्रस्थ में चलिये व पाण्डवों से भेंट करके जैसा जा वैसा कीजिये व राजा जरासन्ध ऐसा गौ व ब्राह्मणका भक्त व दाता है उसके द्वारेपर से कोई विमुख नहीं फिरता व जो बात कहता है नहीं छोड़ता॥

चौ० या कारण तुम बेगि सिधारो। शुभ कारज में बिलम न डारो॥
दो० जरासन्ध यह जानि है अपने मनमें भाव। पांडसुतके काजको आये श्रीयदुराव॥

जब यह सम्मत उद्धवका सुनकर श्यामसुन्दर व नारदजी व यदु शियों ने पसंद किया तब मुरलीमनोहरने नारदमुनिसे कहा महाराज हमारी तरफसे जाकर पांडवोंको कह देना कि हम तुम्हारे यहां आते हैं उस ब्राह्मणको विदा करती समय कहा तुम सब राजों से कहिदेव लोग धैर्य रक्खें हम जल्दी वहां पहुँचकर उन्हें बन्दी से छुड़ा देवेंगे॥

दो० ऐसे अमृत बैन सुनि मनमें भये हुलास। आयसु ले तबहीं चल्यो निजराजनके पा

जब उस ब्राह्मणने सब राजों के पास पहुँचकर मुरलीमनोहरका संदे कह दिया तब वह सब प्रसन्न होकर चरणोंका ध्यान करनेलगे व नारद ने इन्द्रप्रस्थ में जाकर संदेशा मुरलीमनोहर का युधिष्ठिर से कहा व मूर्तिने राजा उग्रसेनके पास जाकर पाण्डवोंके यहां जानेकी उनसे आ ली व द्वारकाकी रक्षा वास्ते बलरामजीको वहां छोड़दिया और आप

से यदुवंशी शूरवीर व सेना साथ लेकर इन्द्रप्रस्थको कूच किया पहले आठों पटरानियोंको उत्तम उत्तम नालकी व झप्पान पर बैठाकर व कई हजार हाथी जड़ाऊ हौदा व अम्वारी कसे हुये साथ में ले लिये और आप द्वारकानाथ जड़ाऊ रथपर जिसमें अतिउत्तम घोड़े जुते हुये थे बैठ कर चले हे परीक्षित उससमय कई हजार घोड़े जड़ाऊ साज पहिने व अनेक सिंहासन व जड़ाऊ रथ कोतल उनके साथ चले जाते थे उनकी शोभा कहांतक वर्णन करूं राहमें जहां वह टिकते थे वहां वहुत अच्छा वाजार उनके साथका लगि जाता था व उस देशके राजा व प्रजा मोहनी मूर्तिका दर्शन मिलने से अपने अपने लोचनों का फल पाते थे जव वह लोग अनेकतरहकी वस्तु मुरलीमनोहरको भेंट देते तव केशवमूर्ति उन लोगों को सन्मानपूर्वक विदा करते थे जव इसीतरह श्यामसुन्दर सव छोटे वड़ोंको सुख देते हुये वन्दर व मूरतकी राहसे तीसरे दिन राजा युधिष्ठिरके सिवाने में पहुँचे तव किसीने राजा युधिष्ठिरसे आनकर कहा महाराज कोई राजा सेना लेकर तुम्हारे ऊपर चढ़ा आता है यह वात सुनतेही राजा युधिष्ठिरने नकुल व सहदेव अपने भाइयोंको समाचार लानेवास्ते भेजा जव नकुल व सहदेवको श्यामसुन्दर के आनेका हाल मालूम हुआ व उन्होंने वड़े हर्षसे फिरकर यह समाचार राजा युधिष्ठिरको दिया तव वह वड़े आनंद से अर्जुन व भीमसेन आदिक अपने चारों भाई व ब्राह्मण व ऋषीश्वर वेद पढ़नेवाले व अनेक वस्तु भेंट देनेवास्ते साथ लेकर आगे से गये॥

चौ० श्रीमुख देखि महासुख पायो। तिहि सुखसे सब दुख विसरायो॥
हरि दर्शन की शीतलताई। तासों मनकी तपन बुझाई॥
दो० रोम रोम हर्षित भये कहत युधिष्ठिरराज। सुफल भयो संसारमें जन्म हमारो आज॥

जैसे राजा युधिष्ठिरने निकट पहुँचकर मुरलीमनोहरके चरणोंपर गिरने चाहा वैसे द्वारकानाथने उनको अपने गले लगा लिया व श्यामसुन्दर राजा युधिष्ठिरको अपना वड़ा जानकर उनके चरणोंपर गिरपड़े ऐसी कृपा त्रिभुवनपतिकी देखतेही राजा युधिष्ठिर वड़े प्रेमसे मोहनप्यारे को गोदमें उठाकर प्यार करनेलगे व वड़े हर्ष से विधिपूर्वक पूजा उनकी की॥

दो॰ रूप अनूपम देखिकै मुदित भये मन माहिं। नयननिमिष लागे नहीं तनकी सुधि कछु नाहिं॥

वसुदेवनन्दन ने भीमसेन व अर्जुन से गले मिलकर उन्हें सुख दि व नकुल व सहदेवजी मुरलीमनोहरके चरणोंपर गिरे उन्हें उठाकर छा से लगा लिया॥

चौ॰ पुनि विप्रनको माथ नवायो। कुशल पूंछके हर्ष बढ़ायो॥

व दूसरे क्षत्रीआदिक राजा युधिष्ठिरके साथ हस्तिनापुर से वास्ते खने वैकुंठनाथके आये सब किसीका सन्मान यथायोग्य किया जब रा युधिष्ठिर पीताम्बर बिछवाते चन्दन व गुलाब छिड़कवाते व सोने व चां के फूल लुटाते व अनेकतरह के बाजन बजाते हुये बड़े हर्ष से श्यामसुन्द को नगरमें लिवा लेगये तब स्त्री व पुरुष वहांके रहनेवाले अपने अ द्वारे व खिड़की व कोठोंपर बैठे हुये श्यामसुन्दरके दर्शन वास्ते अभि लाषा रखते थे उन्होंने मोहनीमूर्तिकी छवि देखकर अपने लोचनों फल पाया व सुगन्धित पुष्प व रत्नादिक द्वारकानाथ पर नेवछावर कर एक स्त्री दूसरी से कहने लगी देखो बड़ाभाग्य श्यामसुन्दरकी स्त्रियों हैं जो रात दिन इनकेसाथ भोग विलास करके अपना जन्म स्वार्थ कर हैं व ब्राह्मणोंने यज्ञोपवीत वैकुंठनाथको आशीर्वादके साथ देकर द नगरवासियोंने अपने अपने वित्तानुसार रत्नादिक उनको भेंट दिया वसुदेवनन्दनने यथायोग्य सबका सन्मान किया जब त्रिभुवनपति छोटे व बड़ोंको आनन्द देते हुये राजा युधिष्ठिरके रत्नजटित महलमें तब कुन्ती प्रेमसे उनको देखने वास्ते दौड़ी व मोहनीमूर्तिका चन्द्र देखतेही आनन्द होगई जब श्यामसुन्दरने शिर अपना कुन्तीके चर पर रखकर दण्डवत् की तब उसने शिर उनका उठाकर छाती से लगालि व उन्हें गोदमें बैठाकर प्रेमका आंसू बहाने लगी जब द्रौपदीने आन द्वारकानाथके चरणोंपर शिर रक्खा तब मुरलीमनोहरने अपना हाथ उ शिरपर रखकर उसे व सुभद्रा अपनी बहिनको अशीश दिया जब रुक्मि आदि आठों पटरानियों ने कुन्ती के चरणोंपर शिर अपना रक्खा कुन्ती माताने उनको बड़ी प्रीतिसे छाती में लगाकर अपने पास बैठाला

चौ० बड़ी देरलौं भेंटत रहे। बहुत नीर नयनन ते बहे॥
वारंवार धरैं जगदीशा। कुन्ती के चरणन पर शीशा॥
बहु उठायके कंठ लगावैं। रोमरोम बहु आनँद पावैं॥
द्रोणाकृपाचार्यकी नारी। परम पुनीत महाशुभकारी॥
हरिजू तिन्हैं नवायो शीशा। है प्रसन्न उन दई अशीशा॥

जब सब कोई श्यामसुन्दर व रुक्मिणी आदिक से भेंट कर चुके तब कुन्तीने द्रौपदी व सुभद्रासे कहा तुमलोग आदरपूर्वक नित्य आठों पटरानियोंका शिष्टाचार किया करो व राजा युधिष्ठिर आदिक पांचो भाई अन्तःकरणमें वसुदेवनन्दनकी भक्ति रखते थे प्रेमसे उनका सन्मान करने लगे व उन पांचो में अर्जुन बड़ी मित्रता व प्रीति कृष्णचन्द्र से रखकर सदा उनके साथ एक रथपर अहेर खेलने जाया करता था हे परीक्षित इन्द्रप्रस्थ में वसुदेवनन्दन के आनेसे ऐसा सुख व आनन्द वहांके लोगोंको प्राप्त हुआ जिसका हाल मुझसे वर्णन नहीं होसक्ता जिसतरह चन्द्रमा का प्रकाश राजा व कंगाल दोनों के घरमें एक सा रहता है उसीतरह इन्द्रप्रस्थमें श्यामसुन्दरकी दयासे छोटे वड़ोंके घरमें प्रतिदिन नये नये सुख व आनन्द होने लगे॥

दो० या विधि परम हुलाससों कीन्हों तहां निवास। पांडुसुतनके काजको माखन प्रभु सुखरास॥

बहत्तरवां अध्याय।

श्रीकृष्णजीका जरासन्धके मारनेवास्ते जाना॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जब इसीतरह कई महीने श्यामसुन्दरको आनन्दपूर्वक वहां बीत गये व कुछ चर्चा यज्ञकी नहीं आई तब एकदिन राजा युधिष्ठिर अपनी सभामें जहां पर बहुतसे क्षत्री व ऋषीश्वर व ब्राह्मण बैठे थे उठकर श्यामसुन्दरके सन्मुख खड़े होगये व विनयपूर्वक हाथ जोड़कर उनसे कहा हे त्रिभुवनपते ब्रह्मा व महादेव आदिक सब देवताओं के मालिक तुम्हारे चरणोंका दर्शन बड़े बड़े योगी व ऋषीश्वरोंको जल्दी ध्यानमें नहीं मिलता सो आपने मुझे अपना दास जानकर घर बैठे दर्शन दिया॥

चौ० तुम ऐसी प्रभु लीला करो। काहू से नहिं जाने परो॥
माया में भूला संसार। तुमसे करत लोकव्यवहार॥
जो तुमको सुमिरत जगदीश। उसको जानो अपना ईश॥

हे दीनानाथ तुम्हारी दयासे जगत् में सब इच्छा मेरी पूर्ण हुई पर एक अभिलाषा और रखता हूं आज्ञा हो तो विनय करूं श्यामसुन्दर बोले राजन् जो इच्छा तुमको हो सो बतलाओ वह भी पूरी हो जावेगी यह वचन सुनतेही राजा युधिष्ठिर प्रसन्न होकर बोले हे द्वारकानाथ राजसूय यज्ञ करने की इच्छा रखता हूं व सब मुनि व ऋषीश्वरों को भी इसमें प्रसन्नता है पर विना कृपा तुम्हारी यह कठिन यज्ञ सम्पूर्ण नहीं होसकता जिसतरह आपने कई वेर महाविपत्तिमें हमारी सुधि लेकर मेरा मनोरथ पूर्ण किया उसी तरह अब भी अपनी दयासे यज्ञ अच्छी तरह संपूर्ण करा दीजिये तो उसका फल तुम्हारे अर्पण करके भवसागर पार उतर जाऊं किसवास्ते कि संसारमें हम पांचो भाई तुम्हारे दास कहलाते हैं इसलिये संसारी लोग ऐसा कहेंगे कि श्यामसुन्दरकी दया से पाण्डवोंने राजसूय यज्ञ किया था और यह भी तुम्हारे चरणों का प्रताप है जो इच्छा पूर्ण हुई मैं इस बातका विश्वास रखता हूं कि जो तुम्हारे शरणमें आया उसका कोई मनोरथ बाकी नहीं रहता॥

चौ० जाविधि मन्त्र देहु यदुराजा। आयसु मानि करौं सब काजा॥
दो० तुमहीं सब काजन विषे हमको होत सहाय। और हमारे कौन है माखन प्रभु यदुराय॥

यह आधीन वचन सुनतेही लक्ष्मीपतिने हँसकर कहा हे राजन् तुम्हारा कहना मैंने मानलिया यह बात उत्तम होकर सब देवता व पितर व ऋषीश्वर व मुनि तुमसे इस यज्ञ कराने की चाहना रखते हैं जिसमें अपना अपना भाग पावें जब तुमने अपने प्रेमसे मुझे वश्य करालिया तब तुमको राजसूय यज्ञ या कोई इससे भी बड़ा काम करना कौन कठिन है जिसके आधीन मैं हुआ उसकी कुछ इच्छा बाकी नहीं रहती अर्जुनादिक तुम्हारे चारों भाई ऐसे बलवान् हैं जिनसे कोई दूसरा राजा युद्ध नहीं करने सक्ता लोकपालों को भी ऐसी सामर्थ्य नहीं है जो मेरे सामने उनसे लड़ सकें इसलिये तुम अपने भाइयों को आज्ञा देव कि चारों दिशामें जाकर

सब राजों को जीतने उपरांत बहुतसा द्रव्य लेआवें तब तुम आनन्द से यज्ञ करो यह वचन सुनतेही राजा युधिष्ठिर ने बहुतसी सेना साथ लेकर अर्जुन को उत्तर व भीमसेन को पूर्व व सहदेव को दक्षिण व नकुल को पश्चिम दिशा जाने वास्ते आज्ञा दी सो वह लोग उनकी आज्ञानुसार चारों दिशा में गये जब चारों भाई कुछ दिन में वैकुण्ठनाथ के प्रताप से सातों द्वीप व नवखण्ड व दशों दिशा के राजोंको जीतकर बहुत सा द्रव्य लेआये तब राजा युधिष्ठिर ने हाथ जोड़कर वसुदेवनन्दन से विनय किया हे महाप्रभो यह कार्य तो तुम्हारी कृपासे पूर्ण हुआ अब क्या आज्ञा होती है यह वचन सुनकर उद्धव भक्तने राजा युधिष्ठिरसे कहा महाराज सब देश के राजोंको तुम्हारे भाई जीत आये पर जबतक राजा जरासन्ध मगधपति आपके आधीन नहीं होगा तबतक तुम्हारा यज्ञ सम्पूर्ण नहीं होसक्ता और वह ऐसा बलवान् व धर्मात्माहै जिसे कोई संसारमें जीत नहीं सक्ता ॥

चौ० जो तुम युद्ध करो रणमाहीं। वासों जीति सकोगे नाहीं ॥
एक बात अपने मन ल्याऊं। सो अब तुमसे कहि समझाऊं ॥
विप्र वेष धरिकै हरि जाहीं। अर्जुन भीमसंग तिहि पाहीं ॥
जरासन्ध दाता अतिभारी। जाको यश तिहुँलोकमँझारी ॥
वासे जो मांगे कछु भिक्षा। देत वही जो मनकी इच्छा ॥
यद्यपि शीशहु मांगै कोई। देत बार लाइहि नहिं सोई ॥
विप्ररूप जब वापै जैहैं। युद्धदान ताही क्षण पैहैं ॥

दो० राजन इस संसारमें सुस्थिर है कछु नाहिं। तद्यपि दाता पुरुषको नाम रहै जग माहिं ॥

जब यह वचन सुनकर राजा युधिष्ठिर उदास होगये तब त्रिभुवनपति उन्हें धैर्य देकर बोले हे राजन् तुम किसी बातकी चिन्ता मत करो उद्धव के कहने प्रमाण भीमसेन व अर्जुन अपने दोनों भाइयों को हमारे साथ करदेव किसीतरह बल व छलसे हमलोग राजा जरासन्ध को मार आवेंगे जब यह बात सुनकर युधिष्ठिर ने भीमसेन व अर्जुन को साथ लेकर मुरलीमनोहर के साथ जानेवास्ते आज्ञा दी तब लक्ष्मीपति उन दोनों को साथ लेकर ब्राह्मण वेष में मगधदेश को गये वह तीनों ब्राह्मण-रूप अति सुन्दर ऐसे तेजवान् मालूम देते थे जैसे सतोगुण व रजोगुण

व तमोगुण अपना तन धारण किये हों जब कई दिनमें वह लो
मध्याह्न समय ब्राह्मणरूप से जो अतिथि के भोजन कराने का समय
राजा जरासन्ध के द्वारेपर जाकर खड़े हुये तब एक द्वारपालकने उनको
देखतेही राजा के पास जाकर कहा महाराज तीन ब्राह्मण अति तेजवा
आपसे भेंट करने वास्ते आनकर द्वारेपर खड़े हैं आज्ञा देव तो भीत
आवैं यह वचन सुनतेही जरासन्ध जो उस समय रसोईं खाने जाया च
हता था बहुत प्रसन्न होकर आप द्वारेपर चला आया व श्यामसुन्दर आ
दिक ब्राह्मणरूप को दण्डवत् करके भीतर लेगया व सन्मानपूर्वक अपने
सिंहासन पर बैठाकर उसने कहा महाराज जिसतरह आपलोगोंने दया
की राह यहां आनकर मुझे कृतार्थ किया उसीतरह चलकर भोजन कीजिये
तो तुम्हारा चरण धोकर अपना परलोक बनाऊं॥

चौ॰ विप्रनकी सेवा जो करै। भवसागर से जल्दी तरै॥

यह बात जरासन्ध की सुनकर श्यामसुन्दर बोले हे राजन् हमलोग
बहुत दूरसे तुम्हारा यश सुनकर यहां आये हैं जो हमको इच्छा है सो दे
किसवास्ते कि शूरवीरों को शिर व दानियों को अपना प्राणतक देडालने
में कुछ लोभ नहीं रहता देखो एक कबूतर व्याधा के वास्ते इसतरह अपना
प्राण देकर तर गया था कि एक व्याधा माघ महीने में पक्षी बझाने वन
में गया सो पानी वर्षने व आंधी चलने से कोई पक्षी उसको नहीं मिला
जब सरदी व भूखसे अति व्याकुल होकर अपने घर आने लगा तब उसने
एक कबूतरी को जो सरदी से अचेत होकर पृथ्वी पर पड़ी थी उठालिया
व रात होजाने से अपने घर नहीं पहुँचकर एक बरगदके नीचे बैठ रहा
जब आधीरात को उस कबूतरी का पति जो उसी वृक्ष पर रहता था अपनी
स्त्रीको याद करके पुकारने लगा तब उस कबूतरी ने चैतन्य होकर कहा
हे स्वामिन् अब तुमको मेरे वास्ते शोच करना उचित न होकर अतिथि
का दुःख जो सरदी व भूख से व्याकुल है धर्मकी राह छोड़ाना चाहिये
जब यह सुनकर कबूतर को ज्ञान उत्पन्न हुआ तब वह कहीं से आगि
अपनी चोंच में ले आया व लकड़ी अपने खोते से गिराकर वहां आग

लगा दी तो उस व्याधाकी सरदी छूटगई फिर वह कबूतर अपनी इच्छा से आग में गिरपड़ा व बहेलिये ने उसको खालिया तब वह कबूतरी बहेलिये से बोली अब मुझे भी भूंजकर खालेव विना पुरुषकी स्त्रीका जीना अच्छा नहीं होता जब बहेलिये ने कबूतरी को भी खाकर अपनी भूख मिटाई तब परमेश्वरने उन दोनों पक्षियों का ऐसा धर्म देखकर उनको वैकुण्ठ में बुलाने वास्ते विमान भेज दिया सो वह दोनों पक्षी पार्षदों से विनय करके उस बहेलिये को भी अपने विमान पर बैठाकर परमपद को लेगये सिवाय इसके तुमने सुना होगा कि राजा हरिश्चन्द्र ऐसा धर्मात्मा हुआ जिसने सब राज्य व धन अपना नारायणजी के नामपर ब्राह्मणों को देडाला था सो आजतक कीर्ति उसकी संसार में छारही है विस्तारपूर्वक उसकी कथा कहते हैं सुनो एक समय राजा हरिश्चन्द्र के नगर में काल पड़ने से प्रजालोग भूखों मरने लगे तब उसने भूषण व वस्त्रादिक वस्तु अपनी बेंचकर प्रजा का पालन किया उन्हींदिनों राजा हरिश्चन्द्र संध्यासमय अपनी स्त्रीसमेत भूखे बैठे थे उसीसमय विश्वामित्र ऋषीश्वर ने राजा के धर्म की परीक्षा लेने वास्ते वहां आनकर कहा हे राजन् मुझे इच्छापूर्वक द्रव्य देकर कन्यादान का फल लेव यह बात सुनतेही हरिश्चन्द्र ने घरमें ढूंढ़ा सो जो कुछ भूषण व वस्त्रादिक उनके स्त्री व पुत्र का बचा था वह लाकर ऋषीश्वर को देदिया उसे देखकर विश्वामित्र बोले महाराज इतने में मेरा काम नहीं होगा यह सुनतेही राजाने अपने दासी व दास जो कुछ बचे थे उन्हें भी बेचकर जब रुपया उसका ऋषीश्वर के पास लेआये व केवल एक एक धोती अपनी स्त्री व पुत्रके पास रखलिया तब फिर विश्वामित्र बोले इतने द्रव्य से मेरा अर्थ नहीं होगा व मुझे कोई दूसरा तेरे समान धर्मात्मा संसारमें दिखलाई नहीं देता जिसके पास जाकर मांगूं पर एक डोम धर्मपात्रहै आज्ञा देव तो उससे जाकर मांगूं पर वहां जाते मुझे लज्जा मालूम होती है कि तुम समान ऐसे दानी राजाको छोड़कर उससे क्या मांगूं यह बात सुनकर हरिश्चन्द्र ने ऋषीश्वरको अपने साथ लिवालिया व उस डोम चांडाल के घर जाकर

कहा हे भाई तुम हमको अपने यहां गिरों रक्खो व इन ऋषीश्वर को इच्छापूर्वक द्रव्य देव यह बात सुनकर वह डोम बोला॥

चौ० कैसे टहल हमारी करिहौ। राजस तामस मनसे हरिहौ॥
तुमहो नृपति तेज बलधारी। महानीच है टहल हमारी॥

हे राजन् तुमको श्मशानपर रहकर मुर्दा जलानेवालों से पैसा लेके हमारे घर पहुँचाना होगा व हमारे मकानकी चौकीदारी करनी पड़ेगी तुमसे यह दोनों काम होने सकैं तो हम इस ब्राह्मणको मुँहमांगा द्रव्य देकर तुम्हें गिरों रक्खैं यह वचन सुनकर राजा हरिश्चन्द्रने कहा बहुत अच्छा हम वर्षदिनतक यह दोनों काम तुम्हारे करदेवैंगे यह वचन सुनते ही उस डोमने इच्छापूर्वक विश्वामित्रको द्रव्य देकर बिदा किया तब राजा हरिश्चन्द्र वहां रहकर दोनों काम उसके करनेलगे व उनकी रानी पुत्रसमेत उसी नगर में किसी गृहस्थ के यहां रहकर सेवकाई से अपना दिन बिताने लगी परमेश्वर की इच्छासे कुछ दिन बीते राजा हरिश्चन्द्रका बेटा मरगया व रानीने उसकी लोथ गङ्गाकिनारे लेजाकर जलाने की इच्छा की तब हरिश्चन्द्र ने आनकर अपनी स्त्री से कहा तुम इस मुर्देका पैसा देदेव तो लोथ जलाओ यह वचन सुनते ही रानी रोकर बोली महाराज यह तुम्हारे पुत्रकी लोथ जलाने को लाई हूं व मेरे पास सिवाय एक धोती के और कुछ नहीं है यह बात सुनकर राजा हरिश्चन्द्र बोले हे प्रिया मैं पैसा न लूं तो मेरा धर्म जातारहै इसलिये अपने पुत्रको भी बिना पैसा लिये नहीं जलाने दूंगा यह धर्मरूपी बात सुनते ही जैसे रानी ने अपना अंचल फाड़कर पैसाके बदले देना चाहा वैसे नारायणजी करुणानिधान ने ऐसा धर्म व सत्य राजा हरिश्चन्द्र का देखकर एक विमान जड़ाऊ उसके वास्ते श्मशानपर भेजदिया व पीछेसे आप भी वहां गये व राजाको दर्शन देकर रोहिताश्व उसके बेटेको अपनी महिमासे जिलादिया व राजा हरिश्चन्द्र को उसकी रानीसमेत विमानपर बैठाकर कहा वैकुण्ठ में चलो तब हरिश्चन्द्रने त्रिभुवनपति से हाथ जोड़ विनय किया हे महाप्रभु पतितपावन जिसतरह आपने मुझे अपना दास जानकर दर्शन दिया उसीतरह मेरे

स्वामी डोमको भी वैकुण्ठ में ले चलिये तो मेरा मनोरथ पूर्ण हो यह वचन अपने भक्तका सुनतेही लक्ष्मीपति उस चाण्डाल डोमको भी परिवारसमेत उसी विमानपर बैठाकर निस्सन्देह वैकुण्ठमें ले चले व राजा हरिश्चन्द्रको अमरपदवी दी व राजा रन्तिदेव ऐसा धर्मात्मा हुआ जिसने अड़तालीसवें दिन कुछ अनाज भोजन करने वास्ते पाया था वह भी ब्राह्मणको खिलाकर आप भूखा रहगया उसी धर्म से मुक्त पदवीपर पहुँचा व राजा बलि जब वामन महाराजको सब राज्य व धन अपना देकर शरीर देने वास्ते तैयार हुआ तब उसने राज्य सुतललोकका पाया जिसका यश आज तक संसार में छारहाहै व राजा शिविने कबूतर के बदले अपने शरीरका मांस काट कर देडाला व उद्दालक ऋषीश्वर ने जो छठवें महीने भोजन करते थे आप न खाकर वह भोजन अतिथिको खिलादिया व आप भूखे रहगये उस अन्नदानके प्रताप से विमानपर बैठकर वैकुंठधामको पहुँचे व दधीचि ऋषीश्वरने अपना हाड़ इन्द्रादिक देवताओंको देडाला था॥

चौ० ऐसे दाता भये अपार। जिनका यश गावत संसार॥

हे राजन् सिवाय इन लोगों के और बहुत ऐसे दानी हुये जिन्हों ने अपना धन व प्राण देने में कुछ लोभ नहीं किया उनका हाल कहांतक तुमसे वर्णन करूं जिस तरह पिछले युगोंमें वह लोग धर्मात्मा होते आये हैं उसीतरह तुम भी इस युगमें दानी उत्पन्न हुये व हमारी इच्छा पूर्ण करोगे तो तुम्हारा यश भी संसार में स्थिर रहेगा यह वचन सुनने व चन्द्रमुख उनका देखने से जरासन्धने समझा कि यह लोग ब्राह्मण न होकर राजकुँअर दिखलाई देते हैं इसलिये प्राण भी मांगें तो देना चाहिये जिसमें मेरा धर्म बना रहे देखो राजा बलिने शुक्र पुरोहित के बर्जनेपर भी वामन जी को तीनों लोकोंका राज्य देडाला था सो आजतक उसका यश छारहा है अपना शरीर पालन करने में बड़ाई न मिलकर परोपकार करने से यश नाम होता है ऐसा विचारकर जरासन्ध श्यामसुन्दर से बोला ऐ द्विजराज पहिले तुमलोग अपना नाम निष्कपट बतलाकर जिस वस्तुकी इच्छा रखते हो सो मांगो अपना प्राण तक देने में भी लोभ नहीं करूंगा यह

वचन सुनकर श्रीकृष्णजी बोले हे राजन् तुम सच पूंछते हो तो मैं श्री
यदुवंशी होकर यह दोनों भीमसेन व अर्जुन हमारे फूफाके बेटे हैं
व तुम्हारी पहिले भी मथुरा में भेंट हुई थी तुम मुझको पहिंचानते
तुम्हारे यहां भिक्षा लेने नहीं आया अकेली अकेला युद्धदान
आयाहूं सिवाय इसके और कुछ नहीं चाहता यह सुनतेही जरा
प्रसन्न होकर बोला बहुत अच्छा मैंने तुम्हारा कहना माना पर मेरे सा
भागकर द्वारका जा बसे हो इसलिये तुमसे लड़ते हुये मुझे लज्जा
है व अर्जुनकी अवस्था छोटी है और यह वर्षदिनतक हिजड़ा
राजा विराट्के यहां रहा था उससे क्या लड़ूं पर भीमसेन के साथ जो
बराबरका है लड़ूंगा पहिले आपलोग मेरे यहां भोजन करके पीछे
युद्ध कीजिये जब श्यामसुन्दरने भीमसेन व अर्जुनसमेत राजा जरा
के यहां छत्तीस व्यञ्जन भोजन किया तब राजा जरासन्धने दो गदा
की मँगवाईं और भीमसेनको ब्राह्मण का वेष छुड़ाकर एक गदा उसको
और एक आप ली जब दोनों शूरवीर जो दश दश हजार हाथी
रखते थे नगरके बाहर जाकर अखाड़े में खड़े हुये तब जरासन्ध ने
भीमसेन तुम मेरे मकानपर ब्राह्मणरूपसे आयेथे इसलिये पहिले अपनी
चलाओ यहसुनकर भीमसेन बोला हे राजन् अब धर्मयुद्धमें ज्ञानचर्चा
न होकर जो चाहै सो गदा चलावै जब ऐसा कहकर दोनों वीर आ
गदायुद्ध करनेलगे तब एक दूसरे का वार गदापर रोंककर अपना
बचा लेताथा व लड़ते समय भीमसेन का श्वास पवनके पुत्र होनेसे
फूलता था पर जरासन्ध उससे गदायुद्ध अच्छा जानकर फुरती रख
जब इसीतरह युद्ध करते हुये संध्या होगई और कोई नहीं हारा तब
वीर राजमन्दिर पर चले आये व एक साथ भोजन करके सोरहे और
समय फिर उठकर उसीतरह गदायुद्ध किया जब लड़ते लड़ते दोनों
टूटकर चूर होजाती थीं तब वह दूसरी गदा मँगाकर आपस में लड़
दो० दिनमें काज करैं नहीं बिना युद्ध कछु और। रैनिसमय मिल बैठकर खान पान

जब इसी तरह लड़ते लड़ते सब गदा टूटगईं तब आपस में मह

करने लगे छब्बीसवेंदिन जरासन्धने एक मुक्का भीमसेनकी छातीमें ऐसा मारा कि वह व्याकुल होगया तब उसने रातको कृष्णचन्द्रसे विनय किया महाराज जरासन्ध बड़ा बलवान् है इसलिये अब मैं उससे लड़ने की सामर्थ्य नहीं रखता कल्ह भाग जाऊंगा नहीं तो मेरी लज्जा तुम्हारे हाथ है यह वचन सुनतेही जैसे द्वारकानाथ ने अपना हाथ भीमसेन की छाती पर फेर दिया वैसे सब पीड़ा उसकी छूटगई व पवनसुत को छातीमें लगा लिया और कुछ बल अपना उसे देकर कहा लड़ते समय तुम मेरी सैन समझकर जरासन्धको मार डालना जब सत्ताईसवें दिन फिर दोनों शूरवीर लड़नेलगे उससमय दैत्यसंहारणने भीमसेन को एक तिनका दिखलाकर बीचमेंसे चीर डाला तब पवनसुतने उसका भेद समझतेही श्यामसुन्दरके बल देनेसे जरासन्धको उठाकर पटक दिया व एक जंघा उसकी पैरसे दबाकर दूसरी जंघा पकड़के चीरडाला सो शरीर मगधपतिका जो बीचमें जोड़ा हुआथा आधोआध होकर वह मरगया जरासन्धके मरतेही देवताओं ने प्रसन्न होकर भीमसेन आदिक पर फूल बर्षाये व अनेक बाजन बजाकर जयजयकार करने लगे व श्यामसुन्दर व अर्जुन ने भीमसेनकी भुजा पूजकर उसकी बड़ाई की॥

दो० जरासन्ध या विधि हत्यो भीमसेनके हाथ। सबलोगनको सुख दियो माखन प्रभु यदुनाथ॥

जब जरासन्ध के मरने का समाचार नगर में पहुँचा तब उसकी रानी रोती व पीटती हुई आनकर श्यामसुन्दरसे बोली महाराज तुम धन्य हो जो ऐसा कर्म आपने किया जिसने तुमको सर्वस्वदिया उसका प्राण तुमने लिया जो कोई अपना तनु व धन तुम्हारे भेंट करताहै उसके साथ तुम ऐसी भलाई करते हो जैसे राजा बलिसे किया था जब रानीने अपने पतिवास्ते अति विलाप किया तब श्यामसुन्दर ने उसे धैर्य देकर बिदा कर दिया जब सहदेव बेटा मगधपतिका वसुदेवनंदनको परमेश्वर जानकर उनकी शरण में आया तब द्वारकानाथने जरासन्धकी क्रिया कर्म होने उपरांत सहदेव को राजगद्दीपर बैठाकर अपने हाथसे तिलक लगाया व धैर्य देकर बोले हे बेटा तुम धर्मपूर्वक राज्य करके गौ व ब्राह्मण व प्रजाका पालन करो॥

दो० जो नरेश हैं बन्दिमें ते सब देव छुड़ाय। आनँदसों निज देशमें राज्यकरो चि

तिहत्तरवां अध्याय।

श्रीकृष्णजीका बीसहजार आठसौ राजाओंका छुड़ाना॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जब श्यामसुन्दर सहदेवको राज देकर उसे अपने साथ लियेहुये जहांपर सब राजा कैद थे आये तो देखा कि एक गड़हा पहाड़ की खोहसमान खोदे हुये में सब राजा व एक भारी पत्थर उसके द्वारपर रक्खा है जब सहदेवने मुरलीमनोह आज्ञानुसार सब राजाओंको खोहसे बाहर निकलवाकर उनके खड़ा किया तब वह लोग पहिरने बेड़ी व हथकड़ी व बढ़ने नख बहुत दुःखी थे नया जन्म पाकर हरिचरणों पर गिरपड़े व मोहनी दर्शन पातेही सब दुःख अपना भूल गये व आनन्द होगये व बड़े हाथ जोड़कर विनय किया हे दीनानाथ आपने दयालु होकर बड़ी जो यहां आनकर हमारी सुधि ली नहीं तो इस कैदसे छूटना बहुत था अब तुम्हारे दर्शन पानेसे हमलोगोंका पिछला दुःख सब भूल ग

दो० ऐसी विधि राजा सबै बारबार बलिजाहिं। माखन प्रभुकी लाजसे शीश उठावै

वृन्दावनविहारी यह दशा उन राजाओंकी देखतेही दयालु होकर सैनमें बतलाया वैसे सहदेव ने उनलोगों की हथकड़ी व बेड़ी कट क्षौरकर्म कराके स्नान कराया व छत्तीस व्यंजन खिलाकर उत्तम भूषण व वस्त्र पहिनाये अनेक तरहके हथियार बँधवाकर श्यामसुन्द पास लेआया उससमय द्वारकानाथ ने अपने चतुर्भुजीरूपसे शंख गदा पद्म लिये हुये जैसे उनलोगों को दर्शन दिया वैसे उन लो हृदयमें ज्ञानका प्रकाश होगया तब उन राजाओंने वैकुण्ठनाथके हाथ जोड़कर बड़े प्रेमसे आंसू बहातेहुये विनय किया हे दीन त्रिभुवनपति सब जीवोंके उत्पत्ति व पालन करनेवाले तुम्हारे आदि अन्त को कोई नहीं जानता हमलोग संसारी जीवोंका जो भवजा फँस रहे हैं सिवाय तुम्हारे कोई दूसरा इस फन्देसे बाहर निकालने नहीं है आप चाहते तो द्वारकामें बैठेहुये अपनी इच्छा से राजा ज

को मारकर हमें छुड़ादेते केवल तुमने अपनी कृपासे यहां आनकर हमें कृतार्थ किया नहीं तो तुम्हारे चरणोंका दर्शन वड़े वड़े देवता व ऋषीश्वरों को तप व जप करने परभी जल्दी ध्यानमें नहीं मिलता हे महाप्रभु आपको हमारी दण्डवत् पहुँचे अब हमलोगों का मन राज्य करने वास्ते न चाहकर यह इच्छा रखते हैं कि आठोंपहर आपके नाम का स्मरण व चरणों का ध्यान करके तुम्हारी लीला व कथा सुना करें जिसमें इस अँधियारे कुयें माया व मोह व स्त्री व पुत्रसे वाहर निकलकर भवसागर पार उतर जावें जरासन्धने हमारे साथ वड़ा सलूक करके अपने यहां कैद किया था जिस कारण हमलोगों को तप व योग का फल मिलकर तुम्हारे चरणों का दर्शन प्राप्त हुआ॥

दो० परब्रह्म तुम ब्रह्महौ वासुदेव घनश्याम। माखन प्रभु गोविन्दको हितसों करें प्रणाम॥

यह ज्ञान भरा हुआ वचन सुनकर लक्ष्मीपति वोले अभिमानी राजाओं को इसी तरह दुःख मिलता है जिसतरह तुमने पाया सुनो जिसके मनमें दया व धर्म व मेरे चरणों की भक्ति रहती है वह लोग संसारमें यश पाकर अन्तसमय मुक्त होते हैं वन्ध व मोक्ष अपने कर्मानुसार मिलता है जो कोई क्रोध लोभ मोह को अपने वश रखकर कुकर्म न करे उसे घर व वन दोनों जगह का रहना वरावर है देखो पिछले युगोंमें अभिमान ने राजा नहुप व वेणु व रावण आदिक को राज्यगद्दी से खो दिया व जिन्होंने अहंकार छोड़कर मेरी शरण पकड़ी वह लोग विभीषण व हनुमान् व अम्वरीष व प्रह्लाद के समान अपनी मनोकामना को पहुँचकर मेरे पास बने रहते हैं अभिमानी मनुष्य वहुत नहीं जीता राजा सहस्रावाहु को अपने वल व हजार भुजों का अभिमान हुआ था सो परशुरामजीने उसकी भुजा फरसेसे काटकर मारडाला व भौमासुर व वाणासुर व कंसादिक अनेक राजा अभिमानी नष्ट हुये हैं॥

चौ० सो मति गर्व करो जनि कोई। छूटे गर्व तो निर्भय होई॥

इसलिये तुमलोग दुःख व सुखको समान समझकर सदा मेरे स्मरण व ध्यान में मग्न रहो तो तुम्हें दुख नहीं होगा॥

चौ० जो जन चित लावै मोगाहीं। हमहूं सदा रहैं त्यहि पाहीं॥
जो सब जन्म पाप में रहै। फिर वह शरण हमारी गहै॥
दो० ताको मैं अतिप्रीति करि देत आपनो धाम। यामें दुख व्यापै नहीं रहै सदा विश्राम॥

यह सुनकर सब राजाओं ने विनय किया कि आप दयालु होकर अपने जप व पूजाकी विधि बतला दीजिये तो उसीतरह तुम्हारे स्मरण व ध्यान में लीन रहकर भवसागर पार उतर जावें यह सुनकर वसुदेवनन्दनने कहा सब वेद व शास्त्र का मुख्य ज्ञान यह है कि किसी समय मुझे न भूलकर मेरी कथा व लीला सुना करो व संसारी व्यवहार स्वप्नवत् समझकर मेरे नाम पर यज्ञ व होम किया करो व प्रजापालन व ब्राह्मण व साधु व महात्मों की सेवा करना झूंठ मत बोलो व काम क्रोध व लोभ को अपने वश रख कर कुकर्म से रहित रहो तो तुम लोगों को राज्य भोगने पर भी किसी तरह का दुःख न होकर अन्त समय वैकुण्ठ धाम मिलैगा॥

चौ० जग में बुद्धिमान है सोई। जाके मोह लोभ नहिं होई॥
दो० ज्ञानीजन न्यारो रहै ऐसी त्रिभिजगमाहिं। ज्यों अम्बुज जलमें बसै जलको परसत नाहिं॥

सो अब तुमलोग अपने अपने घर जाकर बालबच्चों का सुख देखो राजा युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञका आरम्भ करके तुमलोगोंको नेवता दिया है सो हमारे पहुँचने से पहिले हस्तिनापुर में जाव जब उनकी आज्ञानुसार सब राजा लोग अपने अपने घर जानेवास्ते तैयार हुये तब सहदेवने रथ व घोड़े व डेरे व सेवकादिक अपने यहांसे उनके संग करदिये व वैकुण्ठनाथ ने सबके गले में एक एक माला मोतियों की अपने हाथसे पहिनाई जब वह सब राजा बड़े हर्ष से श्यामसुन्दर का यश गाते हुये अपने देश को गये व सहदेवने त्रिभुवनपति व भीमसेन व अर्जुन का पूजन विधि पूर्वक किया तब श्रीकृष्णजी सहदेव को साथ लेकर मगधदेशसे इन्द्रप्रस्थ को चले जब हस्तिनापुर के निकट पहुँचकर वसुदेवनन्दन ने पाञ्चजन्य व भीमसेन ने पुण्डरीक व अर्जुनने देवदत्त शंख अपना अपना बजाया तब उस शंखका शब्द सुनतेही राजा युधिष्ठिर बड़े हर्षसे नकुल व सहदेव अपने भाई व सेनापतियों समेत आगे से आनकर लक्ष्मीपतिको सन्मान

पूर्वक अपने घर लिवा लेगये पर राजा दुर्योधन शंख का शब्द सुनकर बहुत उदास होगया जब वसुदेवनन्दन व अर्जुन व भीमसेन राजा युधिष्ठिर के चरणों पर गिरे तब उन्होंने उनको अपनी छाती से लगाकर प्रेम का आंसू बहाया व जरासन्ध के मारे जाने का समाचार सुनकर अतिप्रसन्न हुये ॥

चौहत्तरवां अध्याय।

राजा युधिष्ठिरके यज्ञ में सब राजाओंका आना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित राजा युधिष्ठिर ने ज्ञानकी राह श्यामसुन्दरके सामने हाथ जोड़ विनय किया हे त्रिभुवनपति आपने ब्रह्मा व महादेव आदि सब देवतों के मालिक होकर मेरे वास्ते ब्राह्मणरूप घरके भीख मांगना अंगीकार किया इसलिये मैं अपने बराबर किसी दूसरे की भाग्य नहीं समझता देखो जिन चरणों का दर्शन बड़े बड़े योगी व ऋषीश्वर व देवतों को जप व तप करने से भी जल्दी ध्यान में नहीं मिलता उन्हीं चरणों से तुमने मुझे अपना भक्त जानकर मेरा घर पवित्र किया जिनके चरणों का धोवन गंगाजी होकर तीनोंलोकों को तारती हैं वही परब्रह्म परमेश्वर तुम होकर मेरी आज्ञा पालन करते हो यह सब तुम्हारी दया भक्तवत्सलता की राह से है नहीं तो ब्रह्मा व महादेव आदिक ऐसी सामर्थ्य नहीं रखते जो तुम्हारे ऊपर आज्ञा करें देखो संसारी मनुष्य राज्य व धनके पानेसे किसीको अपने बराबर नहीं समझता सो आप त्रिभुवनपति होकर मेरे यहां कोई काम छोटा या बड़ा करने में कुछ अभिमान नहीं रखते ॥

दो॰ तुम्हरे सुमिरण ध्यानमें पावन होत शरीर। याते सुमिरत हौं सदा माखन प्रभु बलवीर ॥

और कुन्तीने जरासन्धका मारना सुनकर श्यामसुन्दरसे विनय किया हे महाप्रभु! अब तुम्हारी कृपासे राजसूय यज्ञ अच्छीतरह सम्पूर्ण होगा यह वचन सुनतेही भीमसेन हँसकर बोले हे माता तुम झूठी स्तुति मुरलीमनोहर की क्या करती हो जरासन्ध को मैंने मारा है ॥

दो॰ एक ओर बैठे रहे आनँद सों घनश्याम। जरासन्ध बलवान सों मैं कीन्हों संग्राम ॥

यह बात सुनकर केशवमूर्ति बोले हे माता भीमसेन सत्य कहतेहैं मैंने इसको सैन से वतला दिया था कि जरासन्धकी दोनों टांगें चीर मारडालो उसी उपाय से वह मारा गया यह सुनकर युधिष्ठिर आदिक कोई हँसने लगे सब सातों द्वीप नवों खण्डके चन्द्रवंशी व सूर्यवंशी रा अपनी अपनी स्त्रियों समेत द्रव्य व रत्नादिक भेंट देने वास्ते साथले हस्तिनापुर में आये तब राजा युधिष्ठिर ने भेंट उनकी लेकर नगरके तरफ उन लोगोंको डेरा दिया व यथायोग्य सबका सन्मान किया व जो राजा जरासन्धकी कैदसे छूटकर आयेथे वह लोग बड़े हर्षसे यज्ञका काम करनेलगे व सब नेवतहारी राजाओं ने श्यामसुन्दर व रुक्मि आदिक आठों पटरानियों का दर्शन प्रेमसे करके लोचनोंका फल पाया नकुल जाकर भीष्मपितामह व दुर्योधन आदिक कौरवोंको अपने यहांलि लाया व शुकदेव व वेदव्यास व नारदमुनि व कश्यप व वशिष्ठ व वाम व अत्रि व परशुराम व धूम्र व भरद्वाज व च्यवन व कण्व व मैत्रेय आदि बहुतसे ऋषीश्वर व ब्रह्मा व महादेव व इन्द्र व गन्धर्व व किन्नर व यक्ष लोकपालादिक सब देवता व महात्मालोग अपनी अपनी स्त्रियों स राजा युधिष्ठिर का नेवता व वैकुण्ठनाथके दर्शन करने वास्ते उस आये व उन्होंने त्रिभुवनपतिका दर्शन करके अपना अपना जन्म स किया तब राजा युधिष्ठिरने देवता व ऋषीश्वरोंका पूजन विधिपूर्वक क उन्हें जड़ाऊ सिंहासनपर बैठाला व सिवाय उनके और बहुत से अ गिनत चारों वर्ण जो अनेक देशसे वहां आये उन लोगोंका सन्मान य योग्य किया व श्यामसुन्दरकी आज्ञानुसार एक एक काम यज्ञ का राजोंको बांट दिया जब यज्ञ करनेका मुहूर्त आया तब द्वारकानाथने कर राजा युधिष्ठिर से कहा अब तुम यज्ञ करने वास्ते बैठो हम व आदिक सब लोगों का सन्मान करेंगे यह सुनतेही राजा युधिष्ठिर ने कपड़े उतारकर नई धोती पहिन ली व शुभ लग्नमें सुवर्णके हलसे हाथ यज्ञ करने वास्ते पृथ्वी जोतकर तैयार की व साकल्य आदिक वस्तु यज्ञकी सुवर्ण के बर्तनों में मँगाकर ऋषीश्वरों के पास रखवा

जब ब्राह्मण व ऋषीश्वरोंने वेदी व अग्निकुण्ड बनाकर वेदमंत्र पढ़ना आरम्भ किया तब राजा युधिष्ठिर द्रौपदी से गांठ जोड़कर यज्ञशाला में आये व आसनपर बैठकर अग्निकुण्डमें आहुति देनेलगे उस समय देवतों ने वैकुण्ठनाथकी आज्ञानुसार प्रत्यक्ष अपना अपना हाथ फैलाकर यज्ञका भाग लिया व राजा युधिष्ठिरने सब ब्राह्मणोंके हाथमें सोनेका स्रुवा होम करने वास्ते दिया था और सब सुनहले वर्तन यज्ञके देखकर नेवतेवाले आश्चर्य मानके कहते थे देखो इतना द्रव्य राजाने कहांसे पाया जो ऐसी तय्यारी की उनमें ज्ञानीलोग उत्तर देते थे जिसपर लक्ष्मीपति आप सहायक हैं उनको क्या कमी है यह वचन उन लोगोंका सुनतेही राजा युधिष्ठिर हँसकर श्यामसुन्दरसे बोले॥

दो० कहत तुम्हारे नामते सिद्धि होत सबकाज। नमस्कार तुमको करों यज्ञपुरुष यदुराज॥

जब राजसूय यज्ञ राजा युधिष्ठिरका अच्छीतरह सम्पूर्ण हुआ तब सब देवता व गन्धर्वादिक बड़ाई राजा युधिष्ठिर के भाग्यकी करने लगे व दुन्दुभी बजाकर उनपर पुष्पोंकी वर्षा की उससमय राजा युधिष्ठिरने भीष्मपितामह व दूसरे छत्रधारी राजाओंसे जो वहां बैठेथे पूछा॥

चौ० जगमें जो कुछ कारज कीजै। निज पुरुषनसे आज्ञा लीजै॥
तो वह काज सदा शुभ होय। यह निश्चय जानो सब कोय॥
याते हमैं मंत्र यक दीजै। पूजा प्रथम कौनकी कीजै॥
कौन बड़े देवनके ईश। ताही पूजि नवावैं शीश॥

यह बात सुनकर अभीतक किसीने उत्तर नहीं दिया था कि सहदेव जरासन्धके पुत्रने उठकर राजा युधिष्ठिरसे विनय किया महाराज आप जान बूझकर क्या पूंछते हैं सिवाय द्वारकानाथ त्रिभुवनपतिके दूसरा कौन पूजने योग्य है जिसका पूजन करोगे श्यामसुन्दरने सब जगतकी उत्पत्ति व पालन व नाश करनेवाले होकर पृथ्वीका भार उतारने व अधर्मियों को मारने वास्ते अपनी इच्छासे अवतार लिया है इसलिये उन्हीं को अग्निरूप व यज्ञपुरुष जानना चाहिये जिसतरह वृक्षकी जड़में पानी देनेसे सब डाली व पत्तोंको वह जल गुण करता है उसीतरह कृष्णचन्द्र की पूजा करने से सब देवता तृप्त होंगे वसुदेवनन्दनका भेद कोई नहीं

जानता जितनी वस्तु संसार में देखते हौ सब उन्हींकी उत्पत्ति कीहुई
व गंगाजी इनके चरणोंका धोवन होकर तीनोंलोकों को तारती हैं इन
स्मरण व ध्यान करने व कथा सुननेसे सब पाप छूटकर मुक्ति मिलती
जिस जगह आप साक्षात् परब्रह्म परमेश्वर विराजते हैं वहां दूसरेकी पू
नहीं होसक्ती और यह सब परमेश्वरकी मायाहै जो हमलोग अपना भा
बन्धु व यदुवंशी इनको समझते हैं ॥

चौ० सब संसार शरीर समाना । प्राणरूप हैं यह भगवाना ॥
सर्व आतमा इनको जानो । पूरण शांतरूप पहिचानो ॥

दो० हरिजूकी पूजा करै मन चितदै जो कोय । मानो पूजे देव सब सुफल कामना होय ॥

यह वचन सहदेवका सुनकर श्यामसुन्दर उसे सैनसे बर्जनेलगे कु
मत कुछ कहो पर जितने देवता व ऋषीश्वर व ज्ञानी राजा जो उस
में बैठे थे यह बात सुनतेही बोल उठे हे सहदेव तेरी बुद्धि व माता व
पिता व गुरुको धन्य है जिन्होंने तुझको ऐसा ज्ञान सिखाया तुम्हा
पुरुषा इसीतरह के धर्मात्मा व ज्ञानी होते आये हैं जब राजा युधिष्ठि
यह बात सहदेव व ज्ञानी राजाओंकी अपनी इच्छानुसार सुनी तब
हर्षसे जड़ाऊ सिंहासन मँगवाकर द्वारकानाथको रुक्मिणीआदिक आ
पटरानी समेत उसपर बैठाला व चरण उनका धोकर चरणामृत लि
और वह जल अपने परिवारसमेत शिर व आंखोंमें लगाया व सब दे
व राजाओंने वह चरणामृत पीकर अपना अपना जन्म सुफल किया
राजा युधिष्ठिरने वैकुण्ठनाथको पीताम्बर पहिनाया व केसरि व रक्तचन्द
का तिलक लगाकर रेशमी उपर्ना ओढ़ाया व रत्नजटित उत्तम उत्तम भू
अंग अंगमें पहिनाकर जड़ाऊ किरीट व मुकुट शिरपर बांधा व रत्न व मोति
का हार व सुगन्धित पुष्पोंकी माला गले में पहिनादी व विधिपूर्वक पू
करके बहुतसा रत्न व द्रव्यादिक उनके आगे भेंट रखकर विनय की हे लक्ष्मी
पति आप तीनोंलोक व सब वस्तुके मालिकहैं इसलिये मुझे तुमको
देतेहुये लज्जा आती है यह आनन्द देखतेही देवताओं ने श्यामसुन्दर
दण्डवत् करके उनपर फूल बरसाये व वसुदेवनन्दनकी बड़ाई करने लगे

दो० ऐसी विधि पूजे जभी माखन प्रभु जगदीश। भये लोग आनन्द सब राजहि देत अशीश॥

उस समय द्वारकानाथ ऐसे सुन्दर मालूम देते थे जिनकी उपमा कही नहीं जाती व कोई राजा अच्छीतरह आंख उठाकर इस कारण उनकी ओर देख नहीं सक्ता था जिसमें उन्हें दृष्टि न लगे इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित श्यामसुन्दर की पूजा करने से जितने छोटे व बड़े वहां पर थे सब प्रसन्न हुये पर शिशुपाल चंदेली के राजा को यह बात अच्छी नहीं मालूम हुई इसलिये वह थोड़ी देर नहीं बोला फिर कुछ शोच विचार करके अपनी मृत्यु निकट पहुँचने से उठ खड़ा हुआ व क्रोधसे सभा में हाथ उठाकर बोला हे राजा युधिष्ठिर व धृतराष्ट्र व भीष्मपितामह व दुर्योधन आदिक तुमलोग बड़े बड़े ज्ञानी व धर्मात्मा होकर ऐसे मूर्ख होगये कि एक बालक के कहने से पूजा श्रीकृष्णजी की इसतरह पर की जिसतरह कोई मनुष्य यज्ञ व होम करने की खीर काकको खिला देवै तुमलोग नहीं जानते कि वसुदेवनन्दन ने बहुत दिन तक वनमें गो चराकर अहीरोंके संग रोटी खाई व परस्त्रियोंके साथ रासलीला करके भोग व विलास किया जब से आजतक यह बात अच्छीतरह नहीं मालूम हुई कि ये वसुदेव यादवके बेटे हैं या नन्दके तब इनका कौन वर्ण व किसका बालक कहा जावे यह बड़ा आश्चर्य है जो तुमलोग ऐसे आदमी को जिसके माता पिताका ठिकाना नहीं लगता अलख अगोचर समझते हो इन्हीं श्रीकृष्णने राजा इन्द्रकी पूजा छुड़ाकर गोवर्द्धन पहाड़को पुजवाया था ये शास्त्र के अनुसार न चलकर जो कुछ इनके मनमें आता है सो करते हैं सिवाय दूध व दही आदिक चुराने व अधर्म करने के कोई शुभकाम इन्होंने नहीं किया देखो ये शत्रुके भयसे जन्मभूमि अपनी छोड़कर समुद्रके किनारे जाबसे हैं इसलिये व्रजवासियों को इनके विरह में अतिदुःख होताहै जिसपर भी ये कुछ ध्यान नहीं करते व वृन्दावन में रहकर इन्होंने गोपियोंका चीर चुराया था और यदुवंशीलोग राजा ययातिके शापसे तिलकधारी राजा न होकर थोड़ेदिनों से बढ़गये हैं फिर तुमलोगोंने क्या समझकर इनकी पूजा की मैं परमेश्वरकी सौगन्द

खाकर कहता हूं ये सब बातें कहने से मुझे कुछ अपनी पूजा कराने इच्छा नहीं है जो सचथा सो कहदिया देखो जहांपर वेदव्यास व ना मुनि व पराशर आदिक बड़े बड़े ऋषीश्वर व ब्रह्मा व महादेव व इन्द्रा दिक सब देवता बैठे हैं वहां पर श्रीकृष्णकी पूजा करना इसतरह समझ चाहिये जिसतरह होमकी सामग्री कोई कुत्तेको खिला देवै व राजा युधिष्ठि श्यामसुन्दरकी बड़ाई जो करते हैं तो इसका यह कारण है जिसतरह कुन्ती ने अपने पतिको छोड़के दूसरोंके वीर्यसे युधिष्ठिर आदिकको उत्पन्न कि उसीतरह श्रीकृष्णजी के बापका ठिकाना नहीं लगता अपने बराबरवालों की सब चाहना करते हैं केशवमूर्ति शिशुपालकी बातका कुछ उत्तर देकर एक एक दुर्वचन कहनेपर रेखा खींचते जाते थे॥

दो० मथुरा गया प्रयाग तजि गयो और ही देश। खारी जल ऊपर बस्यो किये ठगनसों मे

जब इसीतरह अनेक दुर्वचन शिशुपाल द्वारकानाथको कहने ल तब ज्ञानी लोग परमेश्वरकी निन्दा सुनने में अधर्म समझकर वहां उठगये व भीमसेन व द्रोणाचार्य व अर्जुनने क्रोधित होकर शिशुपाल कहा हे मूर्ख अभिमानी तू हमारे सन्मुख त्रिभुवनपति की निन्दा करता चुप रह नहीं तो अभी तुझे मारडालते हैं जब ऐसा कहकर भीमसे शिशुपाल के मारनेवास्ते दौड़ा तब शिशुपाल भी उसके सन्मुख जा ऐसा ललकारा कि सभावाले डरगये उससमय श्यामसुन्दरने सिंहासन उतरकर भीमसेन आदिकको समझाया कि तुमलोग शिशुपालपर श मत चलाओ व दुर्वचन कहने से मत बजों जो यह चाहै सो कहै दे क्षणभर में यह आप मारा जायगा॥

दो० भीमादिक सबसे कह्यो क्रोध न कीजै आज। निज भ्राताके यज्ञमें विघ्न करो क्यहि का

जब वैकुण्ठनाथ के वर्जने से भीमसेनने शिशुपालको नहीं मारा राजा युधिष्ठिर शोचित होकर बोले देखो शिशुपाल मेरी सभामें वैकुण्ठ नाथको ऐसा दुर्वचन कहताहै क्या करूं विना आज्ञा त्रिभुवनपतिकी कहने नहीं सक्ता जब इसीतरह शिशुपालने एकसौ एक कठोर व श्यामसुन्दर को कहे व युधिष्ठिर उनके भक्तको भी दुर्वचन सुनाया

वसुदेवनन्दन ने क्रोधवश होकर पूजाकी थालीको अपने मंत्रसे सुदर्शन-चक्र बनाकर शिशुपालका शिर काटडाला तो उसके धड़से एक ज्योति निकलके पहले आकाश में जाकर फिर श्रीकृष्णजी के मुखमें समागई यह चरित्र देखकर देवताओंने श्यामसुन्दर पर फूल बरसाये व ऋषीश्वर लोग उनकी स्तुति करनेलगे व दूसरे राजाओं ने शिशुपाल ऐसे अधर्मी की मुक्ति देखकर बहुत आश्चर्य माना इतनी कथा सुनकर परीक्षितने पूंछा हे मुनिनाथ श्रीकृष्णजी ने शिशुपाल को ऐसे कठोर वचन कहने पर किसतरह मुक्ति दी व एकसौ एक रेखा खींचकर उसे मारनेका क्या कारण था शुकदेवजी बोले हे राजन् यह हाल इसतरह पर है कि जय व विजयने सनकादिक के शाप देने से तीनबेर संसार में जन्म लिया और तीनबेर परमेश्वर से शत्रुताई करके मुक्ति पाई जब पहिले उन दोनों ने हिरण्याक्ष व हिरण्यकशिपु होकर देवतोंको दुःख दिया तब नारायणजीने वाराह व नृसिंह अवतार लेकर उनका वध किया दूसरीबेर जब वे रावण व कुम्भ-कर्णका जन्म पाकर गो व ब्राह्मणों को दुःख देने लगे तब वैकुण्ठनाथ ने श्रीरामचन्द्रका अवतार लेकर उनको मारडाला ॥

दो० अब यह तीजे जन्म में भयो एक शिशुपाल। दन्तवक्र है दूसरो असुरन को भूपाल ॥

हे राजन् शिशुपाल व दन्तवक्र मुरलीमनोहर को अपना शत्रु जान कर दिन रात ध्यान उनका करते थे इसीवास्ते श्रीकृष्णजी परब्रह्म अवतार ने शापकी अवधि बीतने पर शिशुपाल व दन्तवक्रका शिर सुदर्शनचक्र से काटकर उनको वैकुण्ठ में भेज दिया व सौ रेखा खींचने का कारण यह है कि महादेवी नाम बहिन वसुदेवजी की दमघोष राजा चन्देलीको ब्याही गई थी जब उसके पेटसे शिशुपाल जिसके तीन आंखें व चार भुजायें थीं उत्पन्न हुआ व राजाने ज्योतिषियों को बुलाकर उसकी जन्मकुण्डली का फल पूंछा तब ब्राह्मणोंने विचारकर कहा महाराज यह बालक अतिबलवान् व प्रतापी होकर उस मनुष्य के हाथ से माराजायगा जिसके गले मिलने से एक आंख व दो भुजा इसकी गुप्त होजावेंगी दूसरा कोई संसार में इस को मारने नहीं सक्ता जब यह वचन ज्योतिषियों का महादेवीने सुना तब

वह इस बातकी परीक्षा लेनेवास्ते शिशुपाल अपने बेटेको सबकी गोदमें
देकर गले लगाने लगी एकबेर महादेवी शिशुपाल समेत द्वारका
शूरसेन अपने बाप के यहां जाकर थोड़ेदिन रही जब उसने ज्योतिषि
का वचन याद करके अपने बेटेको यदुवंशियों के साथ गले मिलवा
तब श्यामसुन्दर से गले मिलतेही दो भुजा व एक आंख शिशुपालकी
लोप होगई यह दशा देखतेही महादेवीने विनयपूर्वक कहा हे द्वारकानाथ
मैं तुमसे यह भीख मांगती हूं कि अपनी फुआके बेटा शिशुपालको
समझकर कभी मत मारना यह वचन सुनकर त्रिभुवनपति बोले हे फुआ
मैं तेरे बेटेके सौ अपराध क्षमा करूंगा अधिक अपराध करेगा तो बिना
मारे न छोडूंगा इस बातका वचन महादेवी लक्ष्मीपति से लेकर अपने
चलीगई व उसने यह विचारकर अपने मनको धैर्य दिया कि मेरा बालक
किसवास्ते सौ अपराध वसुदेवनन्दनके करैगा इसीवास्ते श्यामसुन्दर
सौ कठोर वचन शिशुपाल के सहकर उसे मारा और वही गुप्त
द्वारकानाथ ने राजसूय यज्ञ में कहकर सब राजाओंका सन्देह छुड़ाया
यह सुनकर परीक्षितने कहा हे मुनिनाथ अब आगे कथा सुनाइये शुकदेव
जी बोले हे परीक्षित जब राजा युधिष्ठिरका यज्ञ अच्छीतरह सम्पूर्ण हुआ
तब उन्होंने न्योतहारी राजाओं को उनकी स्त्रियों समेत यथायोग्य उत्तम
उत्तम भूषण व वस्त्र देकर बिदा किया और वे लोग आनन्दपूर्वक अपने
अपने घर को गये व जितने छोटे बड़े उस यज्ञमें आये थे वे लोग राजा
युधिष्ठिरसे ऐसे प्रसन्न हुये कि किसी का मन घर जानेवास्ते नहीं चाहता
था पर राजा दुर्योधन को धर्मपुत्र की बड़ाई सुनने व प्रताप देखने से ऐसी
डाह हुई कि क्रोधित होकर अपने घर चलागया॥

पचहत्तरवां अध्याय।

राजा युधिष्ठिर का शोभास्थान वर्णन करना॥

राजा परीक्षित इतनी कथा सुनकर बोले हे मुनिनाथ जहां सब राजा
उस यज्ञ करनेसे प्रसन्न हुये थे वहां दुर्योधनने क्यों खेद किया व यज्ञ का
काम किसतरह सबको बांटा गया था यह कथा कहिये शुकदेवजी बोले

हे परीक्षित तुम धन्य हौ जो हरिकथा सुनने से तृप्त नहीं होते सुनो अर्जुन आदिक चारो भाई राजा युधिष्ठिरकी आज्ञा आनन्दपूर्वक मानकर किसी छोटेवड़े काम करनेमें लज्जा नहीं रखते थे पर सब बातोंके मालिक श्यामसुन्दर थे इसलिये उन्होंने यथायोग्य सब काम राजाओं को सौंप दिया भीमसेनको भोजन कराने का काम सौंपकर बांट देना उसका धृष्टद्युम्न के अधीन किया कोष द्रव्यादिक का राजा दुर्योधन को सौंपकर खर्च करना उसका कर्णके जिम्मे किया था जिसका दान आजतक संसारमें प्रकट है व सन्मान करना व सुधि लेना न्योतेवाले राजाओं का अर्जुन को सौंप कर अलंकृत करना स्थान सभाका विदुरके अधीन हुआ था व देवता व ब्राह्मण व ऋषीश्वरोंकी पूजा व सेवा करना सहदेव को सौंपा और इकट्ठी करलाना द्रव्यादिक सब वस्तुका नकुलके जिम्मे किया व श्रीकृष्णजीने ब्राह्मणों का पैर धोना और जूठी पत्तल उनकी उठावना अपने जिम्मे रक्खा था व द्रौपदी रुक्मिणी आदिकका शिष्टाचार अन्तःकरण से करती थी इसीतरह पर राजा युधिष्ठिरने मुरलीमनोहर की आज्ञानुसार जो काम यज्ञ का जिस राजाको सौंप दिया था वे लोग उस कामको वड़े प्रेम से करते थे पर राजा दुर्योधन कपटकी राह एक रुपये की जगह दश रुपया राजा युधिष्ठिरका इस कारण लोगोंको देडाला था जिसमें द्रव्य वँटिजावै तो राजा युधिष्ठिरकी हँसी हो सो वैकुण्ठनाथ की दयासे इस तरह बहुत देने में अधिक यश व धर्म राजाका होता था व दुर्योधनके हाथमें चक्र रहनेसे ऐसा प्रभाव था कि जिस भंडारे से वह एक रुपया खर्च करै उसमें दशगुणा वढ़ जावै इसकारण द्वारकानाथ अन्तर्यामी ने उसे कोष द्रव्यादिक का सौंपा था पर दुर्योधन को यह महिमा नहीं मालूम थी हे परीक्षित जब अच्छीतरह यशपूर्वक यज्ञ राजा युधिष्ठिरका सम्पूर्ण हुआ तब धर्मराज ने असंख्य द्रव्य व रत्न व भूषण व वस्त्रादिक ब्राह्मण व ऋषीश्वर यज्ञ करनेवाले व उनकी स्त्रियोंको इच्छापूर्वक देकर प्रसन्न किया व सब छोटे बड़ों को साथ लिये हुये गंगाकिनारे जाकर वहां द्रौपदी समेत विधिपूर्वक स्नान किया उस समय ब्राह्मण व ऋषीश्वरों ने वेद पढ़ा व देवतोंने राजा

युधिष्ठिरपर फूल वर्षाये और कहा धन्यभाग्य धर्मराज का है जिसने ऐसा कठिन यज्ञ सम्पूर्ण किया व अप्सरों ने अपने अपने विमानोंपर नाचकर गन्धर्वोंने गाना सुनाया॥

चौ० या विधि सकल स्वर्ग के वासी। देखि यज्ञविधि भये हुलासी॥

दो० नर नारी छोटे बड़े कहत धन्य यदुराज। जिनकी कृपा सुदृष्टि से भयो यज्ञको काज॥

उस समय सब हस्तिनापुरवासी उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहिने हुये शोभा देखने वास्ते अपने अपने कोठे व खिड़कियों पर बैठकर बड़ाई भाग्य राजा युधिष्ठिरकी करते थे उनका रूप व नगर की शोभा देखकर सब यदुवंशी आपसमें कहने लगे हमलोग जानते थे कि द्वारकापुरी के बराबर दूसरा नगर संसारमें न होगा सो हस्तिनापुर उससे भी उत्तम दिखलाई दिया जब राजा युधिष्ठिर स्नान करके अपने स्थान पर आये तब जितने ब्राह्मण व याचक व भिखारी वहां इकट्ठे हुये थे उनको मुँहमांगा दान व दक्षिणा देकर आनन्दपूर्वक बिदा किया जब ऐसी दातव्य युधिष्ठिरकी देखकर सब छोटे बड़े उनका यश गाने लगे तब दुर्योधनको युधिष्ठिरकी बड़ाई सुनने व सब राजाओं को उनके सामने दण्डवत् करते देखने से बहुत डाह उत्पन्न हुई॥

दो० यज्ञकथा शिशुपालवध कहै सुनै जो कोय। पावत फल वह यज्ञको लहै मुक्तिफल सोय॥

श्यामसुन्दर अपनी पटरानियों को नित्य समझाया करते थे कि तुम लोग सेवा कुन्ती व द्रौपदी की अच्छीतरह करना जिसमें वे किसी बात का खेद न पावें व पटरानियों की सुन्दरताई व भूषण व वस्त्रकी तय्यारी देखने व घुंघुरूका शब्द सुननेसे देवताओं का चित्त ठिकाने नहीं रहता था मनुष्य कौन गिनती में है जब राजा युधिष्ठिर अपने उत्तम स्थान में जो मय नाम दानव ने बना दिया था जड़ाऊ सिंहासन पर द्रौपदी समेत बैठे तब द्वारकानाथ की इच्छानुसार अप्सरा व गन्धर्वों ने देवलोक से आनकर वहां नाचना व गाना आरम्भ किया था उससमय शोभा धर्मराज की ऐसे मालूम देती थी जैसे इन्द्र अमरावतीपुरीमें अपनी स्त्री को साथ लेकर इन्द्रासन पर बैठें पर राजा युधिष्ठिर ऐसे सुख व धर्म

मिलने पर भी कुछ अभिमान न लाकर यह समझते थे कि श्यामसुन्दर के प्रताप से मेरा यज्ञ सम्पूर्ण होकर यह यश मिलता है जिससमय राजा युधिष्ठिर इन्द्र के समान राजसभामें बैठे हुये अप्सराओंका नाच देख रहे थे उसी समय राजा दुर्योधन बहुत सेना साथ लिये अभिमानपूर्वक वहां आनकर स्थान देखने चला उसमें बिल्लौर व रत्नादिक जड़े होकर कई जगह कुण्ड बिल्लौर के ऐसे बने थे जिसमें पानी भरा हुआ मालूम होता था व कई जगह जल भरे हुये कुण्ड सूखे दिखलाई देते थे जब दुर्योधनने धोखे से सूखे आंगन में पानी समझकर अपना जामा उठाया व दूसरी जगह सूखा स्थान जानकर पानीमें कपड़ों समेत चला गया तब रुक्मिणी व द्रौपदी आदिक स्त्रियां खिड़कियोंमेंसे यह दशा देखकर हँसने लगीं व भीमसेन खिलखिलाकर बोला हे धृतराष्ट्र के बेटा आगे चलो यह दशा दुर्योधनकी देखकर राजा युधिष्ठिर ने भीमसेन को हँसने से बहुत बर्जा पर वह उनके बर्जने पर भी खिलखिलाकर हँसता रहा तब दुर्योधन अति लज्जित होकर मनमें कहने लगा देखो ये लोग मुझे अन्धा बनाकर मेरी हँसी करते हैं जब ऐसा विचारकर दुर्योधन क्रोधवश बिना स्थान देखे उसी जगह से अपने घर फिरगया तब राजा युधिष्ठिर बहुत शोच करने लगे पर भीमसेन व श्यामसुन्दर प्रसन्न हुये व दुर्योधन अपनी सभामें बैठकर मंत्रियों से बोला देखो श्रीकृष्णका बल पाकर युधिष्ठिर को ऐसा अभिमान होगया कि आज सभामें भीमसेनने मेरी हँसी की इस बात का बदला उनसे न लूँ तो आजसे अपना नाम दुर्योधन न रक्खूं इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित दुर्योधनसे अधिक शत्रुताई होनेका यही कारण था उसी दिनसे दुर्योधन ने युधिष्ठिर आदिक के पीछे पड़कर उन्हें बनवास दिया विस्तारपूर्वक हाल उसका महाभारतमें लिखा है श्रीकृष्णजी परब्रह्मपरमेश्वर महाभारत कराके बड़े बड़े शूरवीरों का नाश कराना चाहते थे इसलिये उनकी इच्छानुसार कौरवों व पांडवों में शत्रुताई हुई थी॥

दो० जो प्रकटे संसार में भार उतारन काज। भारत चाहत हैं करन माखन प्रभु यदुराज॥

छिहत्तरवां अध्याय।

राजा शाल्वका द्वारकामें युद्ध करना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित जिस दिन राजा शाल्व जो शिशुपाल की बरात में कुंडिनपुर जाकर श्याम व बलराम से हार मानके भाग आया था उसी दिन उसने यह प्रतिज्ञा की थी कि मैं यदुवंशियोंका वंश संसारमें जीता छोडूं तो आजसे क्षत्रिय न कहलाऊं ॥

दो० मास्योजबशिशुपालको माखनप्रभुगोपाल। शाल्वनृपतिअतिदुखितभो सुनत मित्रको काल॥

शिशुपालका मरना सुनते ही राजा शाल्वने विचार किया कि यदुवंशियों को जो बड़े बलिष्ठ हैं विना वरदान पाये किसी देवताका जीतना कठिन है जब ऐसा विचारकर राजा शाल्व शिशुपाल का बदला लेने वास्ते तप व ध्यान महादेवजीका सच्चे मनसे करने लगा व वर्ष दिनतक बराबर केवल मुट्ठीभर राख सन्ध्यासमय खाकर रहा तब शिवजीने प्रसन्न होकर अपना दर्शन उसे दिया और कहा तुझे जो इच्छा हो सो वरदान मांग ॥

दो० महामुदित कर जोरिके बोल्यो शाल्वनरेश। शत्रुवैर मोहिं दीजिये भोलानाथ महेश॥

हे महाप्रभु मुझे ऐसा विमान आकाशमें उड़नेवाला देव जिसे देखकर यदुवंशी लोग डरजावें व कोई शस्त्र देवता व दैत्यका भी उस विमान पर न लगै यह वचन सुनतेही शिवजीने मय नाम दानव को बुलाकर कहा तू एक विमान बहुत बड़ा व चौड़ा राजा शाल्व के वास्ते ऐसा बनादे जिसमें कोई शस्त्र न लगै व जहां चाहै वहां उड़ाता हुआ क्षणभर में लेजावै जब मयदानव ने महादेवजी की आज्ञानुसार एक विमान अष्टधाती बहुत लम्बा व चौड़ा अपनी माया से तैयार कर दिया तब राजा शाल्व अपने शूरवीर व सेना को शस्त्र समेत उस विमान में बैठाकर द्वारकाकी ओर गया उन दिनों श्यामसुन्दर प्रद्युम्न आदिक को यज्ञ होने उपरान्त द्वारका में भेजकर आप राजा युधिष्ठिर के प्रेमसे बलराम समेत इन्द्रप्रस्थ में रहगये थे जब उनके पीछे राजा शाल्व ने पहुँचकर द्वारकापुरी को चारों ओरसे घेर लिया व वहाँ के वृक्ष व स्थानों को

जड़से उखाड़कर गिराने लगा व उसकी मायासे द्वारकापुरीमें प्रलयकाल की आंधी चलकर आगि व पत्थर वरसने लगे तव द्वारकावासियोंने घबड़ाकर राजा उग्रसेन से यह हाल कहा राजाने प्रद्युम्न व शाम्बको बुला कर आज्ञा दी कि श्याम व बलरामका न रहना सुनकर राजा शाल्व हम लोगों को दुःख देने आया है इसलिये तुम दोनों भाई हमारी सब सेना साथ लेकर उससे युद्ध करो यह वचन सुनते ही जब प्रद्युम्नजीने द्वारकावासियों को धैर्य दिया और शाम्ब व सात्यकी व कृतवर्मादिक शूरवीर व बहुत सेना अपने साथ लेकर नगरके बाहर लड़ने आये तब राजा शाल्व ने प्रद्युम्न को देख कर ऐसे वाण चलाये कि चारों तरफ घटारूपी अँधियारा छागया उससमय प्रद्युम्न ने जैसे द्युतिवन्त शस्त्र अपना छोड़ा वैसे अँधियारा छूटकर इसतरह उजियाला होगया जिसतरह सूर्य निकलने से कुहिरा नहीं रहजाता जब शाल्वका रथ सन्मुख आया तब प्रद्युम्न ने एक तीरसे रथकी ध्वजा काटकर दूसरे वाणसे सारथी को मार डाला व तीसरे तीरसे रथके घोड़ों को मारकर पृथ्वी पर गिरा दिया व बहुत शूरवीर उसके साथियोंको अपने वाणसे घायल कर डाला जब राजा शाल्व ऐसी शूरताई प्रद्युम्नकी देखकर घबड़ागया तब सन्मुख लड़नेकी सामर्थ्य न रखकर मायायुद्ध करनेलगा कभी बड़ा स्वरूप बनाकर सामने आता व कभी छोटा रूप बनाकर आकाशसे आगि व पत्थर बरसाता था॥

दो० ऐसी विधि माया बहुत करी मूढ़ रणमाहिं। श्रीप्रद्युम्नप्रतापसे दूर होत क्षणमाहिं॥

इधर तो शाल्व अपने मायायुद्ध से यदुवंशियोंको दुःखदे रहा था उधर देवमान उसके मन्त्री ने प्रद्युम्न पर वाण चलाना आरम्भ किया उससमय कामरूप ने अपने तीरोंसे उसका वाण काटकर एक तीर ऐसा उसके मारा कि देवमान अचेत होगया जब थोड़ी देर में देवमान का चित्त ठिकाने हुआ तब उसने क्रोधित होकर एक गदा ऐसे जोर से प्रद्युम्न के शिर पर मारी कि वे मूर्च्छा खाकर रथ में गिर पड़े तब देवमान चिल्लाकर बोला कि मैंने कामरूप को मार डाला जब यह वचन सुनकर सब यदुवंशी घबड़ागये तो धर्मपाति रथवान् पुत्र दारुक सारथी ने कृष्णकुमारको बहुत

अचेत देखा तब वह रथ उनका रणभूमि से अलग लेगया जब थोड़ी
वीते प्रद्युम्न चैतन्य हुये तब उन्होंने रथ अपना रणभूमि में न देख
बड़े क्रोध से सारथी से कहा तैंने बहुत बुरा किया जो मुझे रणभूमि
अलग लेआया॥

चौ० ऐसो नहीं उचित है तोहिं। जानि अचेत भगायो मोहिं॥
यदुकुल में ऐसो नहिं कोई। खेत छोड़ि जो भागा होई॥

हे धर्मपति तैंने मुझे कभी युद्ध से भागते देखा था जो आज रणभूमि
से भगाकर मेरे माथेपर कलंकका तिलक लगाया अब मैं श्याम व बलराम
को अपना मुँह क्या दिखलाऊंगा संसारीलोग मेरी हँसी करके भाई लोग
मुझे नपुसंक कहैंगे व रुक्मिणी माता मेरे उत्पन्न होनेका दुःख मानेंगी
भौजाइयां मुझे लज्जित करैंगी कि तैंने यह काम करके अपने बाप
नाम धराया व जगत् में मेरी हँसी कराई॥

चौ० रण में मरे परमपद पावै। जीत होय तौ शूर कहावै॥
दो० रामकृष्ण सुनिहैं जबै पछितैहैं मनमाहिं। कहिहैं प्रकट्यो प्रद्युमन महा कपूतन माहिं॥

जब धर्मपति ने यह सब बात प्रद्युम्न की सुनी तब रथ से उतर हाथ
जोड़कर विनय की हे दीनदयालु आपसे कुछ हाल राजनीति का
छिपा न होकर मेरे गुरुने ऐसा बतलायाहै कि जब महारथी लड़ते समय
अचेत होजावे तब उसके सारथी को चाहिये कि रथ उसका रणभूमि से
अलग लेकर खड़ा रक्खै व सारथी घायल होजावे तो महारथीको उसकी
रक्षा करनी उचित है इसलिये जब तुम गदा लगने से अचेत होगये तब
मैंने रथ तुम्हारा रणभूमिसे विलग लाकर खड़ा करदिया॥

दो० गुरुकी आज्ञा जानकर मैं कीन्हों यह काज। मोहिं दोष लागै नहीं यदुकुलके शिरताज॥

हे महाप्रभु दौड़ाते समय रथ मेरा पीछे रहकर रस्सी या पहिया उसका
टूटजाता तो मैं दोषी होता विना अपराध सेवक पर क्रोध करना न चा-
हिये थोड़ी देर आराम करचुके अब चलकर संग्राम कीजिये यह वचन
सुनकर प्रद्युम्न बोले हे धर्मपति तुमने तो अपने गुरु की आज्ञानुसार यह
काम किया पर इसमें मेरी नाम धराई हुई इसलिये तुम सौगन्द खाव कि

यह हाल किसी से हम नहीं कहेंगे जब धर्मपति ने सौगन्द खाकर प्रद्युम्न का शोच छुड़ाया तब उन्होंने हाथ मुँह धोकर धनुर्बाण अपना उठा लिया व रथ अपना रणभूमिमें लिवा लेगये ॥

सतहत्तरवां अध्याय।

श्रीकृष्णजीका द्वारका में आना व राजा शाल्व को मारना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जो यदुवंशी प्रद्युम्न को अचेत देखकर उदास होगये थे वे लोग कामरूप का रथ देखतेही ऐसे आनन्द होगये जैसे मुर्दे के तनु में प्राण आजावे उससमय कृष्णकुमारने अपने साथियों को धैर्य देकर धर्मपति से कहा तुम जल्दी रथ मेरा देवमान के पास जहां वह यदुवंशियों को मार रहा है ले चलो जब यह बात सुनकर सारथी ने रथ प्रद्युम्न का देवमान मन्त्री के सन्मुख पहुँचा दिया तब कृष्णकुमार ने उसे ललकार कर कहा तू इधर उधर गरीबोंको क्या मारताहै हमसे आन कर युद्ध कर यह वचन सुनतेही देवमान यदुवंशियों से लड़ना छोड़कर प्रद्युम्न पर बाण चलाने लगा तब कामरूपने चार तीर से चारों घोड़े उसके रथ के मारकर एक बाण से सारथी को मारडाला व दो तीर से ध्वजा व छत्र व एक बाण से धनुष काटकर तीन तीर से देवमान को मार गिराया उस समय शाम्ब भी इसतरह शाल्व की सेना मारकर गिराने लगा जिस तरह किसान लोग जुआर का खेत काट डालते हैं जब ऐसा युद्ध प्रद्युम्न व शाम्ब का देखकर बहुत साथी राजा शाल्व के भाग चले तब अनेक मनुष्य भागती समय समुद्र में डूबकर मरगये जब इसीतरह सत्ताईस दिन बराबर राजा शाल्व प्रद्युम्न आदिक से लड़ता रहा तब यदुवंशियोंने ऐसी सामर्थ्य व वीरता उसकी देखकर आपस में कहा यह कोई बड़ा शूरवीर है जो इतने दिन हमारे सामने युद्ध में ठहरा नहीं तो श्यामसुन्दर की दया से आजतक कोई शूरवीर पांच दिन से अधिक हमारे सन्मुख नहीं लड़ा हे परीक्षित जब इसीतरह राजा शाल्व मायायुद्ध करके यदुवंशियों को दुःख देने लगा तब इन्द्रप्रस्थ में वासुदेव ने क्या स्वप्न देखा कि द्वारकापुरी को किसी ने जलाकर समुद्र में डुबादिया व यदुवंशीलोग

रणभूमि में मरे पड़े हैं तब उन्होंने युधिष्ठिर से कहा महाराज अशुभ
देखने से मुझे ऐसा मालूम होता है कि शिशुपाल के साथी दैत्य द्वारका
यदुवंशियों को मारकर नाश किया चाहते हैं आज्ञा देव तो वहां जा
उनकी रक्षा करें राजा युधिष्ठिरने हाथ जोड़कर विनय की हे महाप्रभु
आपका कहना टालना नहीं है यह वचन सुनतेही जब श्याम व बल
रथपर बैठकर द्वारका को चले तब नगर के बाहर आनकर क्या देखा
एक हरिणी बाईं ओर से निकल गई और कुत्ता सन्मुख खड़ा हुआ
अपना झाड़ता है ये दोनों अशकुन देखतेही मुरलीमनोहर अन्तर्या
सब दशा द्वारका की जानकर सारथी से बोले रथ जल्दी लेचलो॥

दो० दारुक रथ हांक्यो तभी हरिकी आज्ञा पाय। बाणरूप दूजे दिवस रणमें पहुँचे आ

केशवमूर्तिने युद्ध राजा शाल्वका देखकर बलदाऊजी से कहा हे
तुम द्वारका में जाकर राजा उग्रसेन व प्रजा की रक्षा करो मैं शाल्व
मारकर वहां आऊंगा जब रेवतीरमण यह आज्ञा पाकर द्वारका को
तब दैत्यसंहारणने दारुक से कहा जल्दी मेरा रथ शाल्व के सन्मुख ले
जैसे वह रथ मुरलीमनोहर का दौड़ाकर उसके सामने पहुँचा वैसे रा
शाल्व ने ध्वजा रथ वैकुण्ठनाथकी पहिंचान कर एक सांग दारुक
वान् पर चलाई तब लक्ष्मीपति ने तीरसे सांग उसकी काटकर सोलह
ऐसे मारे कि विमान राजा शाल्वका कुम्हारके चाकके समान घूमने ल
उस समय शाल्वने एक भाला बड़े वेग से श्यामसुन्दर पर चलाया
द्वारकानाथ उसको भी अपने तीरसे काटकर इसतरह बाण मारने लगे
राजा शाल्व घबड़ा गया पर उसनें फुरती करके ऐसा बाण श्यामसुन्द
की बाईं भुजा में मारा कि शार्ङ्गधनुष् उनके हाथ से गिर पड़ा जब उस
गिरनेका शब्द तीनों लोकों में पहुँचा तब देवता व यदुवंशी लोग डर
उदास होगये व राजा शाल्व अज्ञानीने अपनी जीत समझकर बिहा
कहा हे कृष्णचन्द्र तुम रुक्मिणी को जिसकी मँगनी शिशुपाल
मित्रसे हुई थी बरजोरी उठा लेगये व राजा युधिष्ठिरके यज्ञ में तुमने शिशु
पालको मारडाला दो घड़ी मेरे सन्मुख खड़े रहकर भाग न जावोगे

आज अपने मित्रका बदला तुमसे लूंगा मुझे भौमासुर व शकटासुर आदिक दैत्य जिनको बल व छलसे तुमने मारडाला था मत समझना यह वचन सुनकर दैत्यसंहारण बोले हे शाल्व शूरवीरलोग अपनी बड़ाई आप नहीं करते संसार में अपना यश गावनेवाले को कोई अच्छा नहीं कहता इसलिये जो कुछ बल रखता हो सो दिखलाव जिसकी मृत्यु निकट पहुँचती है उसको भली बुरी बात कहनेका कुछ विचार नहीं रहता जिस तरह शिशुपाल मारा गया उसीतरह एक क्षणमें तेरी भी वही दशा होगी ऐसा कहकर मुरलीमनोहरने एक गदा शाल्वके शिरपर इस वेगसे मारी कि लोहू मुँहसे गिरकर अङ्ग उसका कांप उठा पर वह अन्तर्धान होकर मायायुद्ध करके अग्नि वर्षाने लगा तब वसुदेवनन्दनने ऐसे बाण मारे कि सब माया छूटकर राजा शाल्व विमान समेत पृथ्वीपर गिरपड़ा जब फिर उठकर उसने एक गदा श्यामसुन्दर पर चलाई तब लक्ष्मीपतिने वह गदा काटकर एक गदा उसको ऐसी मारी कि वह अचेत होगया जब थोड़ीदेर में वह चैतन्य हुआ तब मन्त्रके बलसे अपने को दूत बनाकर शिर व मुँहमें धूर लपेटे पसीना बहाता हुआ श्यामसुन्दरके सन्मुख आया व रुदन करके बोला अय त्रिभुवनपति मुझे देवकी तुम्हारी माताने भेज कर कहा है कि राजा शाल्व वसुदेव तुम्हारे पिताको मारने वास्ते पकड़ लेगया तुम उनकी सुधि क्यों नहीं लेते यह वचन दूतका सुनते ही एक क्षण मुरलीमनोहरने शोचित होकर फिर विचार किया कि बलरामजीके सामनेसे जिनको कोई देवताभी जीतने नहीं सक्ता राजा शाल्व वसुदेवको किस तरह पकड़ लेगया होगा जिससमय केशवमूर्ति इसीतरह का शोच व विचार कररहे थे उसीसमय शाल्व मायारूपी वसुदेव बनाकर उनके बाल पकड़े हुये श्रीकृष्णजीके सन्मुख ले आया तब मायारूपी वसुदेव तड़फता हुआ श्यामसुन्दरसे बोला हे बेटा हम तुमको उत्पन्न व पालन व रक्षा करनेवाला संसारका जानते हैं सो राजा शाल्व मुझे तुम्हारे सामने लाकर प्राण लेना चाहता है इसके हाथसे जल्दी छुटाओ यह बड़े लज्जा की बात समझना चाहिये जो मैं तुम्हारे ऐसा बेटा त्रिभुवनपति रखकर

इतना दुःख पाऊं जिस समय मायारूपी वसुदेव इसतरह विलाप क
था उसीसमय शाल्वने ललकार कर फिर श्यामसुन्दरसे कहा देखो
वसुदेवको पकड़कर तुम्हारे सामने मारते हैं तुम्हें बल हो तो छुड़ा
ऐसा कहने उपरांत राजा शाल्वने मायारूपी वसुदेव का शिर तलवा
काटकर बरछीकी नोकपर उठालिया व सब लोगोंको दिखलाकर बो
श्रीकृष्ण तुमने देखा जिसतरह तुम्हारे बापको मैंने मारडाला उसी त
यदुवंशियोंको मारकर समुद्रमें डालदूंगा यह हाल देखकर एक क्षण मु
मनोहरको मूर्च्छा आगई फिर उन्होंने ध्यान धरकर देखा तो मालूम हु
कि यह मायारूपी वसुदेव बना है इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बो
हे राजन् जिससमय मायारूपी दूतने आनकर देवकीका संदेशा कहा
शाल्वने मायारूपी वसुदेवका शिर काट लिया उससमय लक्ष्मीपति
कुछ संदेह हुआ था यह हाल सुनकर ऋषीश्वर व ज्ञानीलोग ऐसा क
हैं कि जिन परमेश्वरका नाम लेनेसे संदेह छूटकर मन शुद्ध होजाता
उनके कामों में संदेह करना न चाहिये ॥

चौ० जो प्रभु केवल ब्रह्म कहावें। केहि कारण इतनो भ्रम पावें॥
जग में मनुष देहधरि आये। तेहि कारण इतनो भ्रम पाये॥
दो० माखनप्रभु भगवानको कबहूं भ्रम कछु नाहिं। तद्यपि यह लीला करी जानिलेहु मन

जब केशवमूर्तिने समझा कि शाल्वने मायारूपी वसुदेव बनाकर
काटा है तब पांचजन्य शंख बजाकर बड़े क्रोधसे रथ अपना उसके
दौड़ाया व एक गदा ऐसी मारी कि विमान राजा शाल्वका सौ टु
होकर समुद्रमें गिरपड़ा उससमय शाल्वने विमान परसे कूदकर एक ग
वसुदेवनन्दनपर चलाई सो दैत्यसंहारण ने अपनी गदासे उसकी ग
तोड़ डाली॥

चौ० सोई गदा वज्रसम भारी। केतिकबार शाल्वपर मारी॥
दो० वाको बल कहिये कहा युद्ध करै अतिघोर। श्रीमाखन प्रभुकी गदा क्षणमें डारै तोर

जब इसीतरह देरतक राजा शाल्व द्वारकानाथसे गदायुद्ध करता रह
तब वृन्दावनविहारीने बाणसे भुजा उसकी काटकर गदा समेत गिरादि
व सुदर्शनचक्र मारकर इसतरह शिर उसका काट लिया जिसतरह इ

वृत्रासुर दैत्यको मारा था जब शाल्व के धड़से एक ज्योति निकलकर वसुदेवनन्दनके मुखमें समागई तब देवताओंने मरना राजा शाल्वका देख कर दुन्दुभी बजाई व दैत्यसंहारणपर फूल वर्षाकर उनकी स्तुति करने लगे॥

अठहत्तरवां अध्याय।

राजा दन्तवक्र व विदूरथ दोनों भाइयोंका श्यामसुन्दरसे लड़ने वास्ते आवना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जिसतरह दन्तवक्र व विदूरथ दोनों भाई शिशुपाल के मारे गये थे उनका हाल कहते हैं सुनो जिस दिन राजा शिशुपाल युधिष्ठिर के यज्ञमें मारागया उसी दिन से वे दोनों कृष्णजी से शिशुपाल अपने भाईका बदला लेने वास्ते विचार किया करते थे जब उन्होंने सुना कि राजा शाल्व हमारे भाईका मित्र द्वारकामें जाकर लड़ रहाहै तब उन दोनोंने भी बहुत सेना साथ लेकर द्वारकापुरी पर लड़ने वास्ते चढ़ाई की ॥

दो॰ गजरथ पैदल तुरँगकी सेन लिये निज साथ। चले द्वारकाओरको सब असुरनके नाथ ॥

श्यामसुन्दर राजा शिशुपालको मारकर अभीतक द्वारकापुरीमें नहीं पहुँचे थे कि उसीसमय दन्तवक्र व विदूरथ दोनों भाइयोंने अपनी सेनासमेत वहां पहुँचकर मुरलीमनोहरको घेर लिया जब उन्हें देखकर सब यदुवंशी घबड़ागये तब दन्तवक्र वासुदेव के सन्मुख जाकर अभिमानसे बोला तुमने मेरे भाई व मित्रको मारा इसलिये आज तुमको यदुवंशियों समेत यमपुरी भेजकर उनका बदला लूंगा पहिले तुम अपना शस्त्र मेरे ऊपर चला लेव पीछे हम तुमको मारेंगे जिसमें तुमको यह अभिलाषा न रहजावे कि हमने दन्तवक्र पर शस्त्र नहीं चलाया तुमने बड़े बड़े शूरवीर युद्ध में मारे हैं पर आज मेरे हाथसे जीते बचकर तुमको अपने घर जाना बहुत कठिन है ॥

चौ॰ कहत सुनो मोहनगोपाला। धनि भ्राता मेरो शिशुपाला ॥
जेहिकेवैर काजह्यां आयों। दर्शन महाराज को पायों ॥
जाको दरश तुम्हारो होई। भवसागर से उतरत सोई ॥
अब मोको चिन्ता कछु नाहीं। दुहूंभांति निर्भय मनमाहीं ॥
जो मैं मरों तुम्हारे हाथा। होइ हौं स्वर्गलोक को नाथा ॥

दो॰ अरु जो तुमको मारकर जियत रहौं जगमाहिं। तौ राजनको राजहौं यामें संशय नाहिं ॥

जब इसीतरह अनेक बातें कहकर दन्तवक्रने एक गदा श्रीकृ
चलाई तब दैत्यसंहारण अपनीगदासे उसकीगदा गिराकर बोले हे दन्
जितना वल तेरे अंग में था वह सब तैंने गदा चलाकर पूरा किया
चैतन्य हो हमारी पारी है यह कह कर द्वारकानाथने कौमोदकी
गदा अपनी इस वेग से दन्तवक्रकी छातीपर मारी कि वह रक्त व
करके उसी क्षण मरगया ॥

दो० प्राणज्योति वाकी निकस चढ़ी स्वर्गकी छाहँ । फेर समानी आनकर मोवन प्रभु
यह दशा देखकर विदूरथ भाई दन्तवक्र का ढाल तलवार लियेहुये
लीमनोहर के सन्मुख आया तब लक्ष्मीपतिने उसका शिर सुदर्शन
काटकर मुकुट व कुण्डलसमेत पृथ्वीपर गिरा दिया जब उन दोनों
मरतेही सब सेना उनकी भाग गई तब तीनोंलोकों में हर्ष होकर देवता
ने श्यामसुन्दरपर फूल वर्षाये व दुन्दुभी बजाकर सब देवता व ऋषि
स्तुतिकरके बोले हे दीनानाथ तुम्हारी लीला अपरम्पार होकर कोई
भेद जानने नहीं सका जय व विजय आपके द्वारपालक सनकादि
शाप देने से प्रथम हिरण्याक्ष व हिरण्यकशिपु व दूसरीवेर रावण व कु
कर्ण व तीसरे जन्म शिशुपाल व दन्तवक्र हुये वे शत्रुतावश तुम्
भजन व स्मरण करते थे आपने उनका उद्धार करनेवास्ते तीन वेर
अवतार धारण किया व अपने हाथ से उनको मारकर फिर वैकुण्ठ में
दिया ऐसा दीनदयालु व अपने भक्त की रक्षा करनेवाला दूसरा कौन
जब सब देवता यह स्तुति कहकर श्यामसुन्दरको दण्डवत् करके
अपने लोकमें चलेगये तब वृन्दावनविहारी भक्तहितकारी ने जैसे
व मरेहुये यदुवंशियोंको अमृतरूपी दृष्टिसे देखा वैसे मरेहुये जीकर
लोग अच्छे होगये जब यह महिमा वैकुण्ठनाथकी देखकर सब छोटे
उनका यश गानेलगे तब लक्ष्मीपति सब यदुवंशियों को साथ
आनन्दपूर्वक दुन्दुभी बजाते हुये द्वारका आये व राजा शाल्व आदि
की जो वस्तु लूटलाये थे वह सब उग्रसेनको दी उनको देखते ही सब
बड़ों ने प्रसन्न होकर अपने अपने घर मंगलाचार मनाया व वैकुण्ठ

की आज्ञा से विश्वकर्मा ने जो स्थान दैत्यों ने तोड़ डाले थे क्षणभर में ज्योंके त्यों बनादिये व श्रीकृष्णजी ने उसी दिन युद्ध करना छोड़कर यह प्रतिज्ञा की कि अब शस्त्र धारण न करूंगा इतनी कथा सुनाकर शुकदेव जी बोले हे परीक्षित जब कुछ दिन बीते राजा युधिष्ठिर आदिक पाण्डवों व दुर्योधन आदिक कौरवों से महाभारतकी तैयारी हुई तब श्यामसुन्दर राजा उग्रसेन से यह समाचार कहकर बलरामजी से बोले हे भाई इस महाभारत में मुझे क्या करना चाहिये यह बात सुनकर बलदाऊजी ने मनमें विचारा कि मुरलीमनोहर पाण्डवोंकी इच्छा पूर्ण करने वास्ते महाभारत कराया चाहते हैं मैं वहां रहकर दुर्योधन अपने चेलेकी सहायता करूंगा तो केशवमूर्ति खेद मानेंगे व श्यामसुन्दरकी आज्ञा पालन करने में दुर्योधन बुरा मानेगा इसलिये हस्तिनापुर न जाकर तीर्थयात्रा करने चला जाताहूं आगे जो इच्छा वैकुण्ठनाथकी होगी वैसा करेंगे यह बात विचार कर रेवतीरमणने श्रीकृष्णजी से विनय किया हे महाप्रभु आप हस्तिनापुर में जाकर जैसा उचित हो वैसा कीजिये मैंभी तीर्थयात्रा करता हुआ वहां आनकर पहुँचूंगा यह वचन सुनकर केशवमूर्तिने महाभारत करानेकी इच्छा से बलदाऊजी को वर्जना उचित नहीं जाना जब वसुदेवनन्दन कुरुक्षेत्र में जहां अठारह अक्षौहिणी दल महाभारत करने वास्ते इकट्ठा हुआ था गये तब बलदाऊजी भी प्रभासक्षेत्र व सरस्वती व गंगा व यमुना आदिक बहुत तीर्थों पर स्नान व दान व यात्रा करते हुये नीमषार व मिश्रिखमें पहुँचे वहां पर उन्होंने क्या देखा कि एकस्थानपर बहुतसे ऋषीश्वर व मुनि इकट्ठे होकर यज्ञ करते हैं व दूसरी जगह रोमहर्षण सूतपौराणिक चेला वेदव्यासजी का सिंहासनपर बैठा हुआ शौनकादिक ऋषीश्वरोंको कथा सुनाताहै बलदाऊजी को देखतेही शौनकादिक सब ऋषीश्वर सन्मान करनेवास्ते उठखड़े हुये पर रोमहर्षण विद्या के अभिमान से नहीं उठा तब रेवतीरमण क्रोधित होकर बोले इस मूर्खको किसने व्यासगद्दी दी है हरिकथा बांचने वास्ते ऐसा ज्ञानी व हरिभक्त चाहिये जिसके लोभ व अहंकार न हो आप ऋषीश्वर लोग देखते हैं यह पौराणिक विद्या पढ़ने

पर भी शास्त्रानुसार न चलकर अभिमान के मदमें अन्धा होरहा है जि
तरह कलियुग के ब्राह्मण दूसरों को उपदेश देकर आप मर्यादपूर्वक न
चलते उसीतरह यह काम क्रोध मोह लोभ के वश होकर छोटे बड़ों
नहीं पहिचानता व हमारा अवतार केवल अधर्मी व कुचालियों के मा
वास्ते हुआ है इसलिये जो कोई हमारे सामने कुमार्ग चले उसका अ
राध हम क्षमा नहीं करसक्के ऐसा कहने उपरान्त शेषावतार ने एक कु
मंत्र पढ़कर क्रोधसे सूतकी तरफ फेंका तो वह कुशा लगते ही शिर रो
हर्षणका कटकर गिरपड़ा यह हाल देखतेही शौनकादिक ऋषीश्वरों
चिल्लाकर बलभद्रजी से कहा महाराज यह सूत हरिचरित्र सुनाकर आ
व सुननेवालों को कृतार्थ करताथा उसे व्यासगद्दीपर बैठे हुये तुमने मा
डाला सो अच्छा नहीं किया हमलोग जानते हैं कि आपने अपनी इच्छा
से अवतार लिया है पर इसको जो वैश्य व ब्राह्मणसे उत्पन्न होकर हमा
आज्ञानुसार व्यासगद्दी पर बैठा था तुमने जो मारा इसलिये तुमको ब्र
हत्या लगी अब तुमको प्रायश्चित्त करना चाहिये कदाचित् तुम ऐ
नहीं करोगे तो दूसरा कोई ब्रह्महत्या से किसवास्ते डरेगा वेद व शास्त्र
जो आदिपुरुषकी श्वासा है ब्राह्मणोंको अति उत्तम लिखते हैं देखो अ
श्यामसुन्दर तुम्हारे छोटे भाई परब्रह्म परमेश्वरको भृगु ऋषीश्वरने बि
अपराध लात मारी थी तब उन्होंने पांव ऋषीश्वरका हाथसे दबाकर क
था कि मेरे कठोर हृदयसे आपके कोमल चरणों पर चोट न लगी हो
से ब्राह्मणोंकी पदवी समझना चाहिये यह ज्ञानरूपी वचन सुनकर क्रो
बलरामजीका शान्त हुआ तब उन्होंने ऋषीश्वरोंसे कहा महाराज आ
लोग सच कहते हैं मुझसे अपराध हुआ जो मैंने क्रोधवश ब्राह्मण को
मारडाला आप कोई प्रायश्चित्त इसका बतलाइये जिसमें हमारा शरी
शुद्ध होजावे व कोई पुत्र इस सूतका हो तो बुलावो उसे हम व्यासगद्दी
पर बैठाल देवें ॥

दो० हमहूंको दूषण लगे जो कछु करैं अनीति। औरनकी कहिये कहा कठिन कर्मकी रीति॥

यह सुनकर ऋषीश्वर बोले तीर्थके स्नान करने से तुम्हारा पाप छू

जावेगा जब शौनकादिकोंने उग्रशर्मा बेटा रोमहर्षण को वहां बुला भेजा तब शेषावतारने उग्रशर्माको उसके बापकी जगह व्यासगद्दी पर बैठाकर ऐसा वरदान दिया कि तुझे विना पढ़े सब विद्या याद होजावें जैसे यह वचन रेवतीरमणके मुखसे निकला वैसे सूतपुत्रको छहों शास्त्र व अठारहों पुराण विना पढ़े कण्ठ होगये तब वह व्यासगद्दी पर बैठकर कथा बांचने लगा यह महिमा बलरामजीकी देखतेही सब ऋषीश्वर प्रसन्न होकर बोले महाराज तुम्हारी दयासे सूतके मरनेका शोच तो छूटा पर इल्वल दैत्य बांदररूप से पूर्णमासी व अमावास्या व द्वादशी को आनकर हमारे यज्ञ व होम में पीव व रक्त व हड्डी फेंक देताहै इसलिये हमलोग बड़ा दुःख पाते हैं आप तीर्थवासियोंपर दयालु होकर उस बांदर को मार डालिये तो हम लोग निर्भय होकर यज्ञ व होम किया करें यह वचन सुनकर बलरामजी बोले बहुत अच्छा हम उस बांदरको मारकर तुम्हारा दुःख छुड़ावेंगे॥

उन्नासीवां अध्याय।

बलरामजीका बांदररूप इल्वल दैत्यको मारना॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित रेवतीरमण ऋषीश्वरों के कहनेसे इल्वल दैत्यको मारने वास्ते कई दिनतक नीमषार मिश्रिख में टिके रहे तब पूर्णमासी के दिन बड़ी आंधी चलकर पानी व रक्त व पीव बरसने लगा उस समय ऋषीश्वरोंने बलरामजी से कहा महाराज ये सब लक्षण उस बांदरके आवनेके हैं यह वचन सुनकर बलदाऊजी ने जैसे हल व मूसल अपने शस्त्रोंको याद किया वैसे वे दोनों उनके पास आन पहुँचे जब वह बांदर रूपी दैत्य श्यामरङ्ग पहाड़ ऐसा लम्बा व चौड़ा बड़े बड़े दांत व लाल लाल आंखें निकाले डरावनी सूरत बनाये त्रिशूल लिये बादल के समान गर्जता हुआ वहां आया तब बलदाऊजी अपना हल व मूसल उठा कर उसकी तरफ चले॥

दो॰ बनहूं रामहिं देखिकै जानिलियो मनमाहिं। इन समान योधावली तिहूं लोकमें नाहिं॥

जब उस बांदरने बलरामजी को अपनेसे बलवान् देखा तब वह मंत्रके बलसे अंतर्धान होकर मल व मूत्र बरसाने लगा यह दशा देखतेही रेवती-

रमणने उस बांदर को हलकी नोकसे उठाकर पृथ्वीपर पटक दिया व मूसल ऐसा उसके शिरपर मारा कि प्राण उसका निकल गया उस दैत्य का मरना देखकर सब ऋषीश्वर इस तरह प्रसन्न होगये जिस तरह वृत्रासुर दैत्यके मरनेसे देवता आनन्दित हुये थे व उसी समय ऋषीश्वरोंने रेवती-रमण को आशीर्वाद देकर ऐसी सुगन्धित पुष्पोंकी माला गलेमें पहिरा दी जिसका फूल कभी न कुम्हिलावे व देवताओंने बलदाऊजी पर फूल वर्षाकर दुन्दुभी बजाई ॥

दो० तहँ लाये सब देवता भूपण बसन बनाय। पहिराये बलरामको शोभा कही न जाय॥

जब ऋषीश्वरोंने दैत्यके मारेजाने से निर्भय होकर बलदाऊजी को विदा किया तब रेवतीरमण गढ़मुक्तेश्वर व गोमती व गण्डक व गंगा व व्यासा व कौशिकी व सरयू व पुलहाश्रम व शोणभद्र व प्रयाग व काशी आदिक तीर्थोंमें गये और वहां पर स्नान व दान किया फिर वहांसे गया जी व गंगासागर व गोदावरी व भागीरथी व सिंहलद्वीप व भीमरथी व सेतुबन्ध रामेश्वर व विंध्यक्षेत्र व श्रीशैल आदिक तीर्थों में जाकर स्नान करके दश दश हजार गौ विधिपूर्वक ब्राह्मणोंको दान दिया फिर वहांसे स्वामिकार्त्तिक व अगस्त्यमुनि व परशुरामजी व अर्जुनवाला का दर्शन करते व राहमें सब लोगों को सुख देते हुये वर्षवें दिन पृथ्वी की परिक्रमा करके हरद्वारमें आये ॥

दो० तहां सुनी बलरामजू लोगनसे यह बात। पाण्डुसुतन अरु कौरवन युद्ध होत दिन रात॥

यह हाल सुनतेही रेवतीरमण कुरुक्षेत्र को चले और जिस समय राजा दुर्योधन व भीमसेन महाभारत के अठारहवें दिन आपस में गदायुद्ध कर रहे थे उसी समय वहां पहुँचे जब उनको देखकर युधिष्ठिर आदि पांचों भाई व दुर्योधनने दण्डवत् किया तब बलदाऊजी उन लोगों को आशीर्वाद देकर बोले बड़े शोचकी बातहै कि श्यामसुन्दर त्रिभुवनपतिके रहने पर भी कौरवों व पांडवोंने रजोगुण व तमोगुणके वश होकर अपने भाई बन्धुआदिक लाखों मनुष्योंका नाश किया व भीमसेन व दुर्योधन दोनों मनुष्य बल में बराबर हैं पर भीमसेनका श्वासा लड़ती समय नहीं फूलता

व दुर्योधन उससे गदायुद्ध अच्छा जानता है यह दशा उनकी देखकर बलदाऊजीने भीमसेन व दुर्योधन से कहा तुमलोग लड़ना छोड़देव जिसमें तुम्हारा वंश रहे देखो महाभारत करने में इतना कुल व परिवार तुम्हारा मारा गया तिसपरभी तुमको अपना भला व बुरा नहीं सूझपड़ता यह वचन सुनते ही परमेश्वर की इच्छानुसार दोनों वीरों ने बलदाऊजी से हाथ जोड़कर विनय की महाराज अब रण पर चढ़कर हमलोगों से उतरा नहीं जाता ॥

दो० यद्यपि बरजैं रामजू युद्ध करो मति कोय। तद्यपि उन मान्यो नहीं भावी परबल होय ॥

जब रेवतीरमणके समझाने पर भी उन दोनों ने लड़ना नहीं छोड़ा तब बलदाऊजी इच्छा वैकुण्ठनाथकी इसीतरह समझकर चुप हो रहे व उसी समय भीमसेनने एक गदा दुर्योधनकी जंघामें ऐसीमारी कि जंघा उसकी टूटगई और वह पृथ्वीपर गिरपड़ा तब दुर्योधनने बलरामजीसे रोकर कहा हे महाप्रभु आप मेरे गुरुहैं मैं तुमसे झूठ नहीं कहता इस महाभारत में सब मनुष्य श्रीकृष्ण तुम्हारे भाईके सम्मत से मारेगये व पाण्डवलोग उन्हींके बलसे लड़ते हैं नहीं तो उनको क्या सामर्थ्य थी जो कौरवों से लड़ते युधिष्ठिर आदिक पाचो भाईइसतरह श्यामसुन्दरके वश हो रहे हैं जिस तरह काठकी पुतली को नट अपने आधीन रखकर जिधर चाहै उधर नचावै द्वारकानाथको ऐसा उचित नहीं था जो पांडवोंकी सहायता करके हमारे साथ शत्रुताई करैं देखो भीमसेन ने दुश्शासनकी भुजा उखाड़कर उसे मारडाला व हम लोगों के सन्मुख उसका रक्त पिया व अधर्म की राह मेरी जंघा में गदा मारकर मुझे पृथ्वीपर गिरा दिया और मैं इससे अधिक पाण्डवों के अधर्मका हाल आपसे कहांतक वर्णन करूं जो कुछ मेरे भाग्य में लिखा था सो हुआ जिस तरह इस महादुःख में आपने दयालु होकर दर्शन दिया उसी तरह मेरे वास्ते जो उचित हो सो कीजिये जब यह आधीन वचन दुर्योधन से बलदाऊजी ने सुना तब श्रीकृष्णजी के पास जाकर बोले हे भाई तुमने यह कैसी अपनी माया फैलाई जो इतने मनुष्य महाभारत में तुम्हारे सामने मारे गये व दुश्शासन की भुजा उखड़वाकर

दुर्योधनकी जंघा तोड़वाई यह धर्मयुद्धकी बात नहीं है कि कोई बलवान मनुष्य किसीकी भुजा उखाड़कर कमरके नीचे गदा चलावै धर्मयुद्ध में एक एक मनुष्य अपने बराबरवाले को ललकारकर लड़ते हैं यह सुनकर वसुदेवनन्दन बोले हे भाई तुम नहीं जानते कौरवलोग बड़े अधर्मी व पापी हैं उनका हाल कुछ कहा नहीं जाता देखो पहिले दुर्योधनने दुश्शासन व शकुनीके कहने से कपट जुआ खेलकर सब देश व धन युधिष्ठिर आदिक का जीत लिया व उनको तेरह वर्ष वनवास दिया फिर दुश्शासन ने शिरके बाल पकड़े हुये द्रौपदी को राजसभामें लाकर नंगी करने चाहा जिस समय दुर्योधनने द्रौपदी ऐसी पतिव्रताको अपनी जंघा पर बैठानेवास्ते कहा उसी समय भीमसेनने सौगन्द खाकर यह प्रतिज्ञा की थी कि दुश्शासनकी भुजा उखाड़कर दुर्योधनकी जंघा अपने गदासे तोडूंगा वही प्रण भीमसेनने अपना पूरा किया सिवाय इसके और जो जो अधर्म व पाप कौरवोंने युधिष्ठिर आदिक से किये हैं उसका हाल कहांतक तुमसे कहूं यह महाभारत की आग जो प्रज्वलित हो रही है किसी तरह बुझने नहीं सक्ती तुम इस बातका कुछ शोच मत करो जब बलदाऊजी ने यह वचन मुरलीमनोहरके मुखसे सुना तब इच्छा उनकी इसीतरह पर जान कर कुरुक्षेत्रसे द्वारकापुरी में चले आये और वहां से रेवती अपनी स्त्री व कई यदुवंशियोंको साथ लेकर फिर नीमषार मिश्रिख में इस इच्छासे गये जिसमें ब्रह्महत्याका पाप जो तीर्थस्नान करने से छूट गया था वह ऋषीश्वरों को दिखला आवें जैसे शौनकादिक ऋषीश्वरों ने बलदाऊजी को देखा वैसे अति प्रसन्नतासे आशिष देकर कहा अब तुम्हारी ब्रह्महत्या छूट गई जब यह वचन बलदाऊजीने सुना तब बड़े हर्षसे वहां स्नान व दान व यज्ञादिक शुभकर्म किया व ऋषीश्वरोंको ज्ञान उपदेश देकर यदुवंशियों समेत द्वारकापुरी में चले आये व अपने जाति भाइयोंका सन्मान किया॥

दो०रामकथा पावन सदा कहै सुनै जो कोय। ताको श्रीभगवानसों प्रेम प्रीति अति होय॥

अस्सीवां अध्याय।

सुदामा ब्राह्मणकी कथा ॥

राजा परीक्षितने इतनी कथा सुनकर शुकदेवजीसे विनय की महाराज आप समझते होंगे कि परमेश्वरकी कथा व लीला सुनकर इसे सन्तोष हुआ होगा सो मेरा मन अभीतक हरिकथा सुनने से नहीं भरा सत्संग विना भाग्य के नहीं मिलता इससे मैं जानताहूं कि मेरे पिछले जन्मका पुण्य सहाय हुआ जो मैंने अन्त समय गंगा किनारे आनकर तुम्हारा दर्शन पाया जिस जगह परमेश्वर की कथा होकर सत्संग रहता है वहां पर देवता स्वर्ग से आते हैं देखो जो नारदमुनि दिन रात फिरते रहकर कहीं नहीं ठहरते वेभी सत्संग में आनकर बैठते हैं हमारे पितरों ने अपने कर्मानुसार वैकुण्ठ से भी उत्तम स्थान पाया होगा पर तुम्हारे मुखारविंदसे जो मैंने श्रीमद्भागवत सुना है इसलिये हमारे पितरलोग उत्तम से भी उत्तम स्थान रहने वास्ते पावेंगे जिस मनुष्य के मुखसे परमेश्वर का नाम नहीं निकलता उसको पशु से भी निषिद्ध समझना चाहिये जो कान से स्तुति व कथा भगवान् की नहीं सुनता वह कान सर्प व विच्छू के विल समान है जो शिर हरिमन्दिर व देवस्थान पर साधु व ब्राह्मण के सन्मुख दण्डवत् नहीं करता वह मस्तक अंगपर बोझे के समान समझना उचित है जो आंख दर्शन श्यामसुन्दर का प्रकट व ध्यान में नहीं करती वह आंख मोरपंख के समान समझनी चाहिये जो गृहस्थ प्रेम वैकुण्ठनाथका रखकर अपने वर्णका धर्म करते हैं उनको योगी व संन्यासी व परमहंसों से उत्तम जानना चाहिये इसलिये मनुष्य को उचित है कि मनुष्य तनु पाकर हरिभजन व सत्संग में जन्म अपना वितावे हे शुकदेव स्वामी तुम्हारे ऊपर भगवान् की बड़ी कृपा है इसलिये चाहताहूं कि मुझे कुछ और हरिचरित्र सुनाइये शुकदेवजी बोले हे राजन् तेरी बुद्धि धन्य है जो तुम हरिकथा सुनने से ऐसी प्रीति रखते हो ॥

दो॰ जो यातेथि चितदै सुनै हरिकी कथा पुरान। कृपा करतहैं ताहिपर माखन प्रभु भगवान ॥

हे परीक्षित अब हम कथा सुदामा ब्राह्मण जिसका दरिद्र श्यामसु
ने छुड़ाया व उसे कुबेर देवता के समान द्रव्य व इन्द्रका ऐसा सुख दि
था कहते हैं सुनो दक्षिण दिशा द्राविड़ देशमें विदर्भनाम एक नगर
वहां के राजा व प्रजा अपने कर्म व धर्म से रहकर साधु व ब्राह्मणकी से
किया करते थे उसीनगर में सुदामा ब्राह्मण वेद व शास्त्रका पढ़ा हुआ गु
भाई श्रीकृष्णजीका रहकर इस गरीबी से अपना जन्म काटता था कि
तनुभर कपड़ा व पेटभर भोजन नहीं मिलकर कभी कभी उपास होजाते
तिसपर भी वह मन अपना विरक्त रखकर आठोंपहर मग्न रहता था सु
शीला उसकी स्त्री भोजन व वस्त्रका दुःख पानेपर भी प्रेमपूर्वक अपने प
की सेवा करती थी और वे दोनों स्त्री पुरुष संसारी सुख स्वप्नवत् समझ
दिन रात स्मरण व ध्यान परमेश्वरका किया करते थे व बिना मांगे
कुछ मिलता था उसे खाकर प्रसन्न रहते थे एकबेर ऐसा संयोग हुआ कि
सुदामा ब्राह्मणको स्त्री व चारों बेटों समेत दो उपास बीत गये जब ती
दिन दो बालक भूखसे अति व्याकुल होकर रोने लगे व सुशीलासे बे
का कलपना देखा नहीं गया तब उसने डरती व कांपती हुई अ
स्वामीसे हाथ जोड़कर विनय की महाराज मैंने सुना है कि श्रीकृष्ण
लक्ष्मीपति तुम्हारे मित्र व गुरुभाई हैं व उन्होंने केवल ब्राह्मणोंकी र
करने व हरिभक्तोंका दुःख छुड़ानेवास्ते अवतार लिया है आप उनके पा
क्यों नहीं जाते जिसमें तुम्हारा दुःख व दरिद्र छूटजावे तुमको गृहस्थ
ब्राह्मण समझकर वे इतना द्रव्य देवैंगे कि फिर तुम्हें कुछ संसारी इ
न रहैगी यह सुनकर सुदामाने कहा अय प्रिया तेरा ज्ञान कहां जा
रहा जो तुझे इतनी तृष्णा उत्पन्न हुई ब्राह्मणोंको लालच करना अ
न होकर तृष्णा रखने में ब्रह्मतेज नहीं रहता जैसे तीनपन हमारे बी
गये वैसेही चौथापन भी परमेश्वर की दया से बीत जायगा इस सम
लालच रखकर वहां जाऊं कहीं रास्तेमें बुढ़ाई से गिर परूं तो संसारी लो
कहेंगे कि सुदामा ने बुढ़ौती समय लालचवश होकर अपना हाथ
तोड़ा यह बात सुनकर सुशीला बोली हे महाप्रभु मैं आपको लालच

राह वहां जाने वास्ते सम्मत न देकर इसलिये कहती हूं कि महात्मा व बड़े लोगोंका दर्शन करने से सब दुःख छूटकर सुख प्राप्त होता है श्यामसुन्दर त्रिभुवनपति ब्राह्मणोंपर बड़ी दया रखते हैं वहां जाने से तुमको सिवाय सुखके कुछ दुःख प्राप्त न होगा ॥

दो॰ तिहिकारण विनती करत चितदे सुनिये कन्त। उनपै क्यों नहिं जातहौ जिनकीकृपाअनंत ॥

यह सुनकर सुदामाने कहा हे प्राणप्यारी सच है मैं श्रीकृष्णजी से मित्रता व जान पहिचान रखकर अपनेको उनका सेवक समझता हूं जब मैं उनके पास भेंट करने जाऊंगा तब वे मुझे कंगाल जानकर द्रव्यादिक संसारी सुख भोगनेवास्ते देवेंगे इसलिये मेरे निकट उन त्रिभुवनपति से जो अर्थ धर्म काम मोक्ष चारों पदार्थों के देनेवाले हैं द्रव्यादिक जो सदा स्थिर नहीं रहता लेना उचित नहीं है किसवास्ते कि जब उनकी दया से मुझे धन मिलैगा तब हमसे ध्यान व स्मरण उनका जैसा गरीबी में बन पड़ता है वैसा नहीं हो सकेगा व संसारी सुखमें लपट जाने से परलोकका शोच भूल जायगा मैंने पूर्वजन्म किसी को कुछ दान दिया होता तो इस जन्ममें मुझे मिलता विना दिये कोई नहीं पाता इस बातमें तुम मुझे कुछ दुःख मत देव हमारे दिन बहुत अच्छे बीतते हैं यह सुनकर जब सुशीलाने जाना कि मेरे स्वामी संसारी सुख स्वप्नवत् समझकर कुछ इच्छा नहीं रखते तब फिर हाथ जोड़ कर बोली हे महाप्रभु मैं कुछ धन की इच्छा न रखकर इस कारण कहती हूं कि उन परब्रह्म परमेश्वरका दर्शन करनेसे तुम्हारी मुक्ति होगी यह सुनकर सुदामा बोले अय प्राणप्यारी गुरु व महात्माके यहां विना कुछ भेंट लिये जाना उचित नहीं है और मैं ऐसी सामर्थ्य नहीं रखता जो कुछ वस्तु उनके वास्ते लेजाऊं यह बात सुनतेही सुशीला प्रसन्न होकर चारमूठी चावल अपने चार परोसियोंसे मांग लेआई व पुरानी धोतीके लत्तेमें बांधकर अपने स्वामीको देके कहा महाराज हम कंगालों की थोड़ी सी भेंट त्रिभुवनपति बड़ी प्रसन्नता से लेवेंगे जब सुदामाने चावल भेंट देने वास्ते पाया तब वह पोटली कांख में दबाकर लोटा डोरी कांधे पर धर ली व गणेशजी को

मनाकर लाठी लिये राहमें यह विचार करता द्वारकाको चला देखो
भाग्यमें द्रव्य मिलना तो नहीं लिखा है पर कृष्णचन्द्र आनन्दकन्द
दर्शन पाकर अपना जन्म स्वार्थ करूंगा परंतु एक वातकी चिन्ता मुझे
है कि श्यामसुन्दर त्रिभुवनपति सोलहहजार एकसौ आठ महल
रानियोंके पास रहते हैं जहां पर बड़े बड़े राजाओं का पहुँचना कठिन
वहां मुझ कंगाल मनुष्यको कौन जाने देगा व मेरी खवर उनको किस
तरह पहुँचैगी ॥

दो० यह मनमें शोचत चल्यो मैं तो दीन अनाथ। कैसे म्वहिं पहिचानि हैं वे त्रिभुवनके नाथ॥

अव मैं लज्जावश अपने घर भी फिर जाने नहीं सक्ता देखो वड़े शोक
की वात है जो अपनी झोपड़ीको जिसमें भीख मांगकर आनन्दपूर्वक
दिन काटता था हाथसे खोई व श्यामसुन्दरके पास पहुँचना भी कठिन
दिखलाई देता है जव सुदामा ब्राह्मण इसीतरह शोच विचार करता हुआ
तीनपहर में द्वारकापुरी के निकट पहुँचा तव उसने क्या देखा कि चारों
ओर उस पुरीके समुद्र लहर मारकर उत्तम उत्तम रत्नजटित स्थान वने
व सव छोटे वड़ों के घर मंगलाचार व हरिचर्चा हो रही है जव सुदामा
ब्राह्मण यह सव आनन्द देखता हुआ श्यामसुन्दर की ड्योढ़ीपर पहुँचा
तव इस भयसे कि मुझको कोई भीतर जाने से रोक न देवे वारंवार पीछे
देखता हुआ आगे को चला वृंदावनविहारीकी आज्ञानुसार ब्राह्मणों को
किसी समय महलमें जानेवास्ते मनहाई नहीं थी इसलिये किसी द्वार
पालकने उसको भीतर जाने से नहीं वर्जा जव सुदामा ब्राह्मण तीन
ड्योढ़ी नांघकर चौथे द्वारेपर जहां द्वारकानाथ जड़ाऊ सिंहासन पर बैठे
हुये रुक्मिणीके साथ चौपड़ खेलते थे पहुँचा तव द्वारपालकने उसका
हाल पूछने उपरांत मुरलीमनोहरके पास जाकर विनय की ॥

स० शीश पगा न झँगा तनुमें नहिं जानि को आहि वसै केहि ग्रामा।
धोती फटीसी लटी दुपटी अरु पांव उपानहकी नहिं सामा॥
द्वार खड़ो द्विज दुर्वल देखि रह्यो चकिसो वसुधा अभिरामा।
पूछत दीनदयालु को धाम वतावत आपन नाम सुदामा॥

यह वचन सुनते ही केशवमूर्ति चौपड़ खेलना छोड़कर सिंहासन से

उतरपड़े व आंखों में आंसू भरकर मिलने वास्ते दौड़े जब सुदामाने श्रीकृष्णचन्द्रको आते देखा तो दौड़कर उनके चरणों पर गिरपड़ा तब श्यामसुन्दरने सुदामाको बड़े प्रेमसे उठाकर अपनी छातीमें लगालिया इतनी कृपा द्वारकानाथकी अपने ऊपर देखकर सुदामा मनमें कहने लगा हे परमेश्वर मैं यह हाल प्रकट देखता हूं या स्वप्नमें द्वारकानाथने सुदामा का हाथ पकड़े हुये उसे सिंहासन पर लेजाकर बैठाला व अपने हाथ से उसकी धूरि झाड़कर पैरके कांटे निकाले व उसका चरण धोनेवास्ते रुक्मिणी से जल मांगा व सुदामा से कहा ॥

स० काहे बिहाल बिवाइनते पग कंटकजाल गड़े पुनि जोये।
हाय महा दुख पायो सखा तुम आये इतै न कितै दिन खोये ॥
देखि सुदामाकी दीनदशा करुणा करिकै करुणामय रोये।
पानी परातको हाथ छुयो नहिं नैनन के जलसे पग धोये ॥

जब चरण धोती समय सुदामा अतिलज्जा से ज्यों ज्यों पैर अपना सिकोरे लेता था त्यों त्यों वैकुण्ठनाथ उसपर अधिक दयालु होकर अपने हाथ उसका चरण धोते थे यह बात देखकर रुक्मिणी आदिक आठों पटरानी चाहती थीं कि सुदामाकी सेवा हमलोग अपने हाथसे करें जिसमें हमारे प्राणपति को श्रम न हो पर त्रिभुवनपति ने यह बात न मानकर अपने हाथ से सुदामा के अंग पर चन्दन लगाया व देवता के समान विधिपूर्वक उसका पूजन किया व छत्तीस व्यञ्जन खिलाकर पान व इलायची देने व अतर लगाने उपरान्त फूलोंका गजरा उसे पहिनाया व रुक्मिणी आदिक आठों पटरानियोंसे कहा तुमलोग जितनी सेवा सुदामा हमारे मित्र की प्रेमपूर्वक करोगी उतना हम तुमलोगोंसे प्रसन्न होंगे जिस समय रुक्मिणीजी सुदामा के चँवर हिलाने लगीं उस समय देवता लोग अपने अपने विमानों पर से यह हाल देखकर बड़ाई भाग्य सुदामा की करने लगे ॥

दो० यहिविधि विप्रहिं पूजिकै माखन प्रभु यदुराय। कुशलक्षेम पूछन लगे अमृतबैन सुनाय ॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित यह चरित्र देखतेही

रुक्मिणी व सत्यभामा आदिक सब स्त्रियां द्वारकानाथकी व जो यदुवंशी वहां पर थे अचम्भा मानकर आपस में कहने लगे देखो रूपवान् व सुपात्रका सब कोई आदर करते हैं इस दरिद्री बूढ़े ब्राह्मणने न मालूम पिछले जन्म कौन ऐसा भारी तप किया था व क्या गुण इसमें भरा है जिसके कारण त्रिभुवनपति अपने हाथ से इतनी सेवा इसकी करते हैं॥

चौ० याहि कृष्ण पूजत हैं जैसे। निज पूरुष मानत हैं तैसे॥

दो० या विरंचि सनकादि हैं या नारदऋषि आहि। या शिव गौरीनाथ हैं हरि पूजत हैं ताहि॥

उस समय सत्यभामाने जो बड़ी बोलनेवाली थी दूसरी स्त्रियोंसे कहा श्रीकृष्णजी सदा हमलोगों के साथ अभिमान भरी हुई बातें किया करते हैं अब उनके मित्र को देखो जिसने जन्म भर नया कपड़ा कभी स्वप्न में भी नहीं देखा पहिरनेवास्ते कौन कहै न मालूम यह ब्राह्मण देवता किस नगर में रहते हैं जिनपर ऐसा दरिद्र छारहाहै पर इसका बड़ा भाग्य समझना चाहिये जिसने वैकुण्ठनाथ को ऐसा वश करलिया पहिले मैंने नन्द व यशोदा इनके माता व पिता के गौ चरानेका हाल सुना था व आप दही मक्खन चुराकर खाया करते थे अब इनके मित्र को देखकर मुझे बहुत विश्वास हुआ कि वे सब बातें सत्य हैं जब सुदामा ने ऐसी कृपा श्यामसुन्दर की अपने ऊपर देखी तब उसने मन में समझा कि केशवमूर्ति ने मुझे नहीं पहिंचाना किसी दूसरे के धोखेसे मेरी टहल करते हैं मैं इस योग्य नहीं हूं वैकुण्ठनाथ अन्तर्यामी ने यह हाल जानकर उसका संदेह छुड़ानेवास्ते कहा हे मित्र तुमको याद होगा जब हम व तुम दोनों मनुष्य एक साथ सांदीपन गुरुके यहां विद्या पढ़ते थे और उन्हीं दिनों तुम्हारा विवाह हुआ था सो बतलाओ हमारी भौजाई अच्छी तरह हैं व तुम राह में क्षेम कुशलसे यहां तक आये मुझको तुम्हारे देखने की बहुत चाहना लगी थी तुमने बड़ी दया की जो अपने चरणों से मेरा स्थान पवित्र करके मुझे दर्शन दिया मैं अच्छी तरह जानता हूं कि तुम उन दिनों में भी मन अपना विरक्त रखते थे अब बतलाओ किसतरह बीतती है देखो जिसतरह सोलह हजार एक सौ आठ स्त्री रहने पर भी

किसी के आधीन नहीं रहता उसी तरह ज्ञानी लोग संसारमें रहकर मन अपना विरक्त रखते हैं॥

दो० सकल वस्तु संसारकी कबहूं सुस्थिर नाहिं। स्यहि कारण ज्ञानी पुरुष चित न धरत धनमाहिं॥

हे सुदामा जैसी प्रीति व दया से सांदीपन गुरु महात्मा पुरुष ने सब विद्या हमको पढ़ाई थी उसमें से एक अक्षर पढ़ने के बदले हम जन्मभर उऋण नहीं होसक्ते जो कोई गुरुको परमेश्वर समान जानकर सेवता है जितना हम उससे प्रसन्न होते हैं उतना यज्ञ व तप व दान करनेवालों से खुश नहीं होते॥

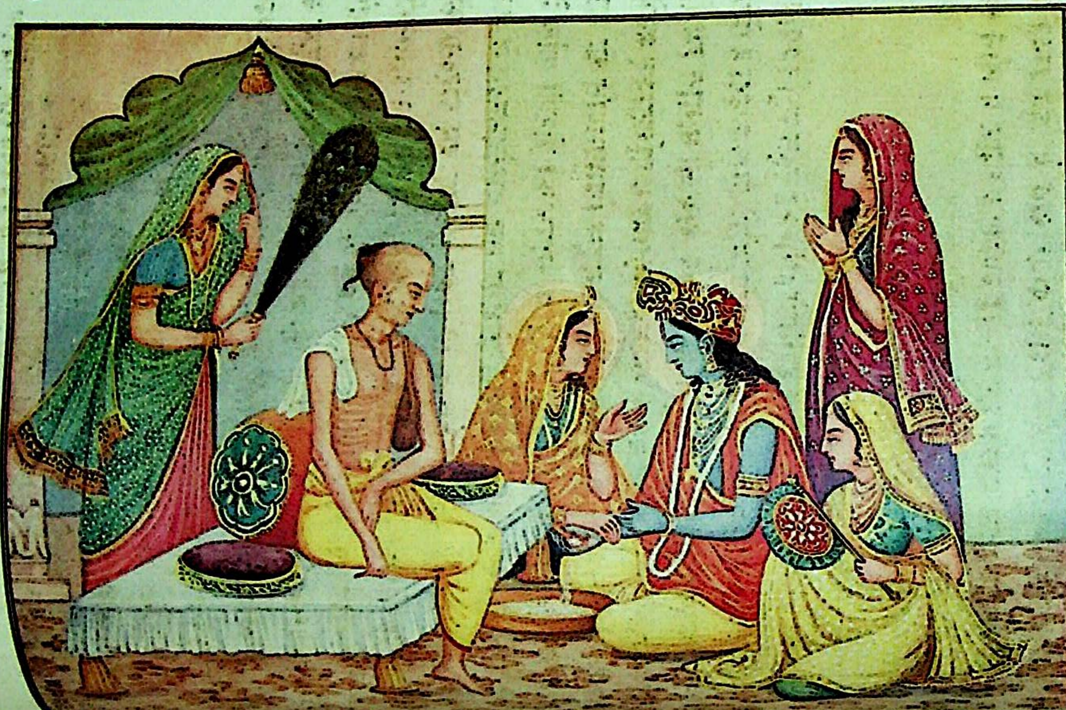
दो० गुरुसेवा दुर्लभ महा चित दे करै जु कोय। जो मनमें इच्छा करै सो सब पूरण होय॥

हे सुदामा तुमने भी पढ़ने लिखने में हमारी बड़ी सहायता की थी व मेरे बदले गुरु की सेवा करते थे और यह बात तुमको याद होगी कि जब एक दिन गुरु की स्त्री ने हमें व तुम्हें वन में लकड़ी लेआने वास्ते भेजा तब तुमने हमारे बदलेभी लकड़ी तोड़कर कहा था कि तुम्हारे हाथ कोमल हैं लकड़ी तोड़ने में दुःख होगा जब लकड़ीका बोझ शिरपर लेकर दोनों आदमी घरको चले तब ऐसी आंधी चलकर पानी वर्षने लगा कि दश पग रास्ता चलना कठिन हुआ॥

दो० पवन झकोरै तेजसों शीत भयो दुखदाय। काठभार मस्तक धरे हमको लियो छिपाय॥
बहुत भांति रक्षा करी आप रहे दुखमाहिं। तुम्हरी प्रीति अनन्त है उऋण होत मैं नाहिं॥

जब उस दिन हम व तुम आंधी चलने व पानी वर्षने से घरतक नहीं पहुँचकर रातको वन में रहगये तब गुरुजी अपनी स्त्री पर बहुत क्रोधित होकर प्रातसमय हम दोनों को वन में ढूंढ़ने आये व व्याकुलता से हमारा व तुम्हारा नाम पुकारकर कहने लगे तुमलोग जहां पर हो वहां से बोलो जिसमें मुझे धैर्य हो नहीं तो तुम्हारे शोच में मेरा प्राण निकलने चाहता है जब गुरुजी ने रोते व चिल्लाते हमारे पास पहुँचकर हमको सर्दीसे कांपते हुये देखा तब दौड़कर प्रेम से उठा लिया व शिर व मुँह हमारा चूमकर बोले तुमलोगोंने अपनी सेवा से मुझे बहुत प्रसन्न किया इसलिये तुमको आशीर्वाद देता हूं कि सब विद्या तुमको याद होकर कभी न भूलें व गुरु

के चरणों में तुम्हारी निष्कपट प्रीति बनी रहै हे सुदामा जबसे विद्या
कर हम व तुम बिलग हुये तब से आज तुमको देखकर मुझे ऐ
आनन्द प्राप्त हुआ मानो सांदीपन गुरु का दर्शन पाया जब
सुनकर सुदामा का सन्देह छूट गया तब उसने नम्रता से हाथ जो
कर विनय की हे स्वामी तुम त्रिभुवनपति होकर मुझे क्यों ल
लज्जित करते हो जहां चारों वेद आपके श्वासा होकर तीनों लो
के जीव तुम्हारा पूजन करते हैं वहां आपने केवल संसारी जी
को राह दिखलाने वास्ते गुरु से विद्या पढ़ी है व आपके आदि व अ
व भेद को कोई पहुँचने नहीं सक्ता तुम सब जगत् के माता व पि
अविनाशी पुरुष होकर संसारी व्यवहार अपनी इच्छा से करते हो
तुम्हारा नाश कभी नहीं होता जो लोग प्रेमपूर्वक आपका नाम जप
तुम्हारी कथा व कीर्तन सुनते हैं उनको संसार में यश प्राप्त होकर अन्त
समय मुक्ति मिलती है जब शेषनाग हजार मुख से दिन रात आप
चर्चा रखने पर भी तुम्हारे भेद को नहीं पहुँच सक्के तब देवता व संसा
जीवों की क्या सामर्थ्य है जो तुम्हारा आदि व अन्त जानने सकें आ
पलक भांजते भर में चौदहों भुवन उत्पन्न व नाश करने की सामर्थ्य र
कर सब जीवों का पालन करते हैं व आप सदा एकरस रहकर घट
बढ़ने से कुछ प्रयोजन नहीं रखते व तुम्हारा चमत्कार सब जीवों में हो
आप अपने तेज से प्रकाशित रहते हैं तुम अपनी इच्छा से मनुष्य त
धरकर जो काम मनुष्यों को करना चाहिये वह बात संसारी जीवों क
राह दिखलाने वास्ते करते हो नहीं तो आप जन्म मरण से रहित
तुम्हारे काम व अवतार की गिन्ती कोई करने नहीं सक्ता हे दीनान
जिस चतुर्भुजी मूर्ति से आप जर्द पीताम्बर व वैजयन्ती माला पहि
शंख चक्र गदा पद्म धारण किये गरुड़ पर बैठते हैं उस रूप को मैं हजा
दण्डवत् करता हूं व सब छोटे बड़ों को अपना बालक समझकर आ
गरीबों पर अधिक दया करते हैं व तीनों लोक में किसी का डर न रख
अभिमानियों का अहंकार तोड़ देते हैं श्यामवर्ण अंग तुम्हारा ऐसा सुन्द



व कोमल होकर कमलरूपी आंखें हँसते हुये मुखारविन्द पर ऐसी शोभा देती हैं जिनका वर्णन मुझ से नहीं होसक्ता मेरा पूर्वजन्म का पुण्य सहाय हुआ जो तुम्हारे चरणों का दर्शन पाया अब मैं कुछ इच्छा न रखकर यही चाहता हूं कि आठोंपहर तुम्हारे स्मरण व ध्यान में लीन रह कर संसारी व्यवहार स्वप्न के समान समझूं ॥

इक्यासीवां अध्याय।

सुदामा ब्राह्मण का श्रीकृष्णजी से विदा होना ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जब सुदामाने इसीतरह बहुत स्तुति श्यामसुन्दर की प्रेमपूर्वक की तब द्वारकानाथ अन्तर्यामी ने हँसकर कहा हे मित्र हम तुम्हारी अमृतरूपी बातों से बहुत प्रसन्न हुये अब जो सौगात हमारी भौजाई ने भेजी है सो देव यह वचन सुनतेही सुदामा ने पछिताकर मनमें कहा देखो बड़े शोच की बात है जो मूठी भर तंडुल त्रिभुवनपति को भेट देऊं जब ऐसा विचार कर सुदामा लज्जा से चावल की पोटली कांख में छिपाने लगा और मुख उसका मलीन होगया तब वसुदेवनन्दन ने मन में कहा देखो एकबेर हमारा कलेवा छिपाकर सुदामा इस दरिद्रता को पहुँचा तिसपर भी वही बात करता है फिर केशवमूर्ति ने वह पोटली उसकी बगल में से खींचकर खोल डाली व बड़े प्रेम से भूसी मिला हुआ दो मुट्ठी चावल खाकर बोले हे सुदामा जितना प्रीति सहित एक फूल व तुलसीदल चढ़ाने से मैं प्रसन्न होता हूं उतना विना भक्ति लाखों मन मिठाई व जड़ाऊ भूषण से खुशी नहीं होता ॥

चौ० दुर्योधन बहु पाक बनाये। प्रीति विना मोको नहिं भाये ॥
विदुरभक्त की प्रीति जु जानी। बासी साग बहुत रुचि मानी ॥
विविध भांति मिष्टान्न जु लावै। विना प्रीति कछु काज न आवै ॥
जो कुछ तुम लाये हम पाहीं। थोड़ो मति जानो मनमाहीं ॥

दो० सागपात भी प्रीति सों हमको देय जु कोय। त्यहि समान सब सृष्टि में कछुक स्वाद नहिं होय ॥
तण्डुल की महिमा कहत माखन प्रभु यदुराज। सुर नर मुनि तिहुँलोक के तृप्त भये हैं आज ॥

पोटली खोलती समय थोड़े से चावल पृथ्वीपर गिरपड़े सो उसे मुरलीमनोहर अपने हाथ उठाने लगे व रुक्मिणी आदिक आठों पटरानियों से

कहा एक एक दाना चावल का चुनकर मुझे उठादेव जिसमें कोई द
पैर के नीचे न आवै व चावल खाती समय द्वारकानाथ बोले जैसा स
इस तण्डुल में मिलता है वैसा भोजन आज तक यशोदा व देवकी
मुझे नहीं खिलाया था ऐसा कहकर जैसे श्यामसुन्दर ने तीसरी मु
चावल उठाके खाने चाहा वैसे रुक्मिणीजी उनका हाथ पकड़कर बो
बस कीजिये हमलोग भी तुम्हारे चरणों के आधीन हैं कुछ हमारे ल
वास्ते भी रक्खोगे या नहीं ॥

स० हाथ गहे प्रभु को कमला कह नाथ कहा तुमने चित धारी।
तण्डुल खाय मुठी दुइ दीन कियो तुमने दुइलोक बिहारी॥
खाय मुठी तिसरी अब नाथ कहां निज वास कि आस विचारी।
रंकहि आपसमान कियो तुम चाहत आपहि होन भिखारी॥

यह सुनकर श्रीकृष्णजी ने कहा॥

स० क्यों रस में विष वाम कियो अब और न खान दियो यक फंका।
विप्रहि लोक तृतीयक देत करी तुम क्यों अपने मन शंका॥
भामिनि मोहिं जिवांइ भली विधि कौन रह्यो जगमें नर रंका।
लोग कहैं हरिमित्र दुखी हमसे न सह्यो यह जात कलंका॥

यह सुनकर रुक्मिणी जी बोलीं॥

स० भार्गव है तुम जीति धरा द्य विप्रन को अतिही सुख मानो।
विप्रन काढ़ि दियो तुमको निशि तादिनको विसरो खिसियानो॥
सिन्धु हटाय करी तुम ठौर द्विजन्म सुभाव भली विधि जानो।
सो तुम देत द्विजै सबलोक कियो तुमने अब कौन ठिकानो॥

यह सुनकर श्रीकृष्णजी ने उत्तर दिया॥

स० भामिनि देउँ द्विजै सबलोक तजो हठ मोरे यही मन भाई।
लोक चतुर्दश की सुख सम्पति लागत विप्र विना दुखदाई॥
जाय बसों उनके गृह में करिहौं द्विजदम्पति की सेवकाई॥
तौ मन मांह रुचै न रुचै सो रुचै हमको यहि ठौर सुहाई॥

यह वचन सुनकर रुक्मिणी जी बोलीं॥

स० नेक न कानि करैं द्विज ये नृग से नृप को निरथी करि डारयो।
शाप दियो पुनि शंकर को अबलौं मखते शिवभाग विसारयो॥
विप्रन फेरि विजय जय को तुम देखत घोर कुयोनि में डारयो।
सो तुम जानि सबै गुण दोष करौ फिरहू द्विजको प्रतिपाल्यो॥

यह सुनकर श्यामसुन्दरने कहा ॥

स० विप्रन के मुख ते सुर जेंवत विप्र रची श्रुतिरीति सुहाई।
विप्र विना जग अन्धपशू विन विप्र नहीं गुण दोष लखाई ॥
विप्रहि मोहिं रुचै निशि वासर विप्रन ही ममशक्र चलाई।
विप्रनते न उऋण कभूं हठ छोड़ि प्रिया करु विप्र भलाई ॥

यह सुनकर रुक्मिणी जी बोलीं ॥

स० तातहिं द्वार कलंक भरा तव नाथ हत्यो उरलात महारी।
शालत सो अजहूं उरमें हमसंग कुरीति सदा द्विज पारी ॥
ब्राह्मण है तुमहूं वलिपै पिय जाति सुभाव दया परिहारी।
सो तुम जानि सबै गुणदोप पड़ो द्विज हाथ न श्यामपुरारी ॥

यह सुनकर मुरलीमनोहरने उत्तर दिया ॥

स० भामिनि क्यों विसरी अवहीं निज व्याहसमै द्विजकी हितुआई।
शोच लियो द्विजकी करनी जिसके करसों पतिया पठवाई ॥
विप्र सहाय भयो तिहि औसर को द्विज के सम है सुखदाई।
योग्य नहीं अर्द्धांगिनि है तुम को द्विज हेत इती निठुराई ॥

जब त्रिभुवनपतिने देखा कि तीसरी मुट्ठी खाने से रुक्मिणी उदास होजायगी तब वह न खाकर रुक्मिणी से कहा हे प्राणप्यारी यह ब्राह्मण मेरा बड़ा मित्र होकर संसार में सुख व दुःखको बराबर जानताहै व आठों पहर मेरे स्मरण व ध्यानमें रहकर संसारी सुखकी कुछ चाहना नहीं रखता जब मुरलीमनोहरने इसीतरह अनेक बातें समझाकर रुक्मिणीका बोध किया तब वसुदेव व देवकी व उद्धव आदिक यदुवंशी जो वहां बैठेथे यह हाल देखकर आपस में हँसी सें कहने लगे देखो इस ब्राह्मणके समान कोई दूसरा गरीब संसारमें न होगा जो इतनी दूरसे मुट्ठीभर तंडुल सौगात लाया है व कृष्णचन्द्र को ब्राह्मणसे भी अधिक कंगाल समझना चाहिये जो अकेले उस चावलको खाकर उसकी बड़ाई करते हैं व दूसरेको नहीं देते उनकी बात सुनकर वसुदेवनन्दनने उत्तर दिया तुमलोग इस तंडुल का स्वाद क्या जानो तुम्हारा भाग्य उदय हुआ जो इस ब्राह्मण के चरणों का दर्शन पाया ॥

दो० इन तंडुलके स्वादको जानत है नहिं कोय। हम विन्नु ऐसो कौन है जाको प्रापत होय ॥

जब पहर रात बीते द्वारकानाथने सुदामाको महल में लेजाकर अ
पलँगके पास दूसरे छपरखटपर सुलाया तब मुरलीमनोहरकी आज्ञा
रुक्मिणीजीने सुदामा का पैर दाबा व श्यामसुन्दर आधीराततक अ
मित्रसे लड़कपनकी बातें करते रहे जब सुदामाजी सोगये तब केशव
अन्तर्यामीने विचारा कि यह ब्राह्मण द्रव्यकी चाहना नहीं रखता पर
की स्त्रीने संसारी सुख व लक्ष्मी मिलने वास्ते इच्छा रखकर इसे व
मेरे पास भेजाहै इसलिये सुदामाको इतना धन देना चाहिये जो देवता
को भी प्राप्त न हो ऐसा विचारते ही वैकुण्ठनाथ ने उसीसमय विश्वक
को बुलाकर आज्ञा दी कि तुम अभी सुदामापुरी में जाकर उसके र
वास्ते ऐसा रत्नजटित स्थान बना देव जिसके बराबर चौदहों भुवन
दिखलाई न देवै आठों सिद्धि व नवों निधि वहां बनी रहैं जिसमें क
कामना सुदामाकी बाकी न रहै ॥

दो० तबहिं विश्वकर्मा चल्यो प्रभुकी आज्ञा पाय। मंदिर रत्नजड़ायके क्षणमें दिये बनाय॥

जब सुदामा निद्रामें एक करवँटसे दूसरी करवँट लेता था तब वसुदेव
नन्दन प्रेमसे उसके अंगपर हाथ फेरकर बड़ाई करते थे जब तीसरे दि
सुदामा प्रातसमय नित्य नियम करके श्यामसुन्दरसे बिदा होने गया त
देवकीनन्दनने ड्योढ़ी तक सुदामा के साथ जाकर आंसू भरके कहा हे
भाई तुमने बड़ी दया की जो अपना दर्शन मुझे दिया मैं तुमसे यही
माँगताहूं कि हमको भूल मत जाना जब सुदामा मोहनीमूर्तिको दण्डव
करके अपने घर चला तब वह आंखोंकी राह स्वरूप वृन्दावनविहारी
हृदयमें रखकर कहने लगा देखो श्रीकृष्णजीने मेरे ऊपर इतनी दया की
जिसका पलटा मैं कई जन्मतक नहीं देसक्ता पर कुछ द्रव्य मुझे नहीं दिया
जिससे दरिद्र मेरा छूट जाता जिसतरह कंगालरूप अपने घरसे आया
उसीतरह खाली हाथ फिर चला ॥

चौ० फिर वह द्विज समझ्यो मनमाहीं। विघ्न अनेक होत धन माहीं॥

दो० याही कारण कृपा करि मित्र आपनो जान। मोहिं द्रव्य दीन्हों नहीं माखन प्रभु भगवान॥

मेरे वास्ते यह गरीबी बहुत अच्छी समझनी चाहिये जिसमें परमेश्वर

का भजन आनन्द से बन पड़ता है धन रखनेवाले सदा खटके में रहते हैं इससे अधिक क्या धन होगा जो त्रिभुवनपति के चरणोंका दर्शन मुझे प्राप्त हुआ वहुत अच्छी वात मैंने की जो द्वारकानाथ से कुछ नहीं माँगा माँगनेसे धन तो मिलता पर मुझे लोभी समझते अब मैं अपने घर जाकर ब्राह्मणी को समझालूंगा जब सुदामा इसीतरह शोच विचार करता हुआ अपने गांवके निकट पहुँचा तब उसने वहां अपनी झोपड़ीका पता न पाकर क्या देखा कि उस जगह एक स्थान रत्नजटित बना है और उसके चारों ओर अनेक तरहके फल व फूल बागों में लगे होकर वृक्षोंपर तूती व कोकिला व मोर आदिक सुन्दर पक्षी बैठे हुए मीठी मीठी बोली बोल रहे हैं व पुष्पों पर भवँरे रस चूसने वास्ते गूंजते व महलके द्वारेपर चोपदार व सिपाही लोग बैठे होकर अनेक दासी व दास अपना अपना काम करते हैं सुदामा यह आश्चर्य देखतेही शोचित होकर कहने लगा हे परमेश्वर थोड़े दिन में ऐसा सुन्दर स्थान यहां किसने बनाया या मैं राह भूल कर कहीं दूसरी जगह चला आया व मुझे यह हाल प्रकट दिखलाई देता है या स्वप्ने में न मालूम पुरानी झोपड़ी मेरी क्या होकर वह पतिव्रता स्त्री कहां चलीगई बड़े शोचकी बात है जो मैंने लोभवश बाहर निकल कर अपने घर व स्त्री को भी हाथसे खोया हे नारायण अब मैं क्या करूं व कहां जाऊं एक तो गरीबी के दुःखमें पड़ा था दूसरे स्त्री खोजनेका शोच और अधिक हुआ अब मैं उसे कहां जाकर ढूंढूं जिस समय सुदामा इसी शोच व विचारमें वहां खड़ाथा उसीसमय सुशीला अपने स्वामीको देखने वास्ते कोठे पर चढ़ी जैसे उसने सुदामाको द्वारपर खड़े देखा वैसे दासियों को आज्ञा दी कि हमारे पति जो द्वारेपर खड़े हैं उनको सन्मानपूर्वक भीतर लिवालाओ तब द्वारपालक व दासियों ने यह आज्ञा पातेही सुदामा के पास जाकर दण्डवत् करके उनको भीतर चलने वास्ते कहा व कोई शरीर की धूरि झाड़कर पंखा हिलाने लगा तब सुदामा उनके आदरभाव करने से घबड़ाकर बोला मुझ गरीब ब्राह्मणको राजाओं के घर में क्यों लिये जाते हो यह सुनकर द्वारपालकों ने विनय की महाराज यह स्थान

आपकाहै निस्सन्देह भीतर चलिये जब सुदामा उनकी बातका विश्वास न मानकर डरसे कांपने लगा तब सुशीला सोरहों शृंगार किये सखियोंके साथ लिये आरती करने वास्ते द्वारेपर आई व सुदामाके चरणोंपर गिर कर परिक्रमा लिया व आरती करके हाथ जोड़कर विनय की॥

चौ० ठाढ़े क्यों मंदिर पग धारो। मनते शोच करो तुम न्यारो॥
तुम पाछे विश्वकर्मा आये। तिन मंदिर पलमाहिं बनाये॥

भूषण व वस्त्र पहिरने से सुशीलाका रूप बदल गया था इसलिये कुछ क्षण बीते उसे पहिचानकर ध्यान में श्रीकृष्णजीकी दण्डवत् की व उसके साथ भीतर जाकर क्या देखा कि मखमली परदे मोतियों की झालर लगाकर सब द्वारों में लटकाये हैं व रत्नजटित चौकी व शय्या बिछी होकर सब स्थानों में अगर व चन्दन आदिक जलने से सुगन्ध उड़ रही है व ऐसी मणि व रत्नादिक वहां रक्खे थे जिनके प्रकाश से रातको उजियाला रहकर दीपक जलाने का प्रयोजन नहीं पड़ता था॥

दो० रत्नजटित घर देखिकै चकितभयो मनमाहिं। ज्यहिसमान तिहुँलोकमें और ठौर कहुँनाहिं॥

यह सब राजसी विभव देखकर जब सुदामाका मुख मलीन होगया तब सुशीला ने आश्चर्य मानकर पूछा हे स्वामी धन मिलने से संसारी लोग प्रसन्न होते हैं आप यह सब इन्द्रपुरीका सुख व इतना धन पाकर क्यों उदास होगये इसका भेद बतलाइये यह सुनकर सुदामा बोले हे प्राणप्यारी यह धन जड़रूपी माया परमेश्वरकी बहुत बलवान् होकर सब जगतको मोहलेती है इसलिये जैसा गरीबी में मुझसे हरिभजन बनपड़ता था वैसा धन सुख पाने से नहीं होसकेगा यही समझकर मेरा मुख मलीन होगया देखो श्यामसुन्दरने बिना मांगे इतना धन मुझको दिया पर थोड़ा समझकर मुखसे कुछ नहीं कहा इसलिये मैं यह सब विभव मिलने का हाल कुछ न जानकर अपनी टूटी झोपड़ी वास्ते पछिताता था सच है बड़े लोग किसीको कोई वस्तु देते हैं तो मुखसे नहीं कहते मुझे इस बातका बड़ा शोच है जो इतने दिनतक दर्शन त्रिभुवनपतिका न करके अवस्था अपनी वृथा खोई है प्रिया तुम इस धनको अपना न जानकर आठोंपहर

यह समझती रहना कि सब सुख व धन मुझे द्वारकानाथ की कृपा से मिलाहै जिसमें तुझे अभिमान न होवै और मैं त्रिभुवनपति से दिन रात यही मांगताहूं कि जन्म जन्मान्तर परमेश्वर का दास व सेवक होकर उनकी सेवा व टहल में बनारहूं ॥

दो० जबलौं सुमिरे ना हरी जो संतनके मीत । वे दिन गिनती में नहीं गये वृथा सब बीत ॥

यह बात सुनकर सुशीलाने मनमें कहा देखो श्यामसुन्दर अन्तर्यामी ने विना मांगे इच्छा मेरी पूर्ण की फिर वह बोली हे स्वामी अब तुम निश्चिन्त होकर हरिभजन किया करो ऐसा समझकर सुशीला ने सुदामा को उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहिनाये व सुगन्धादिक उनके अंगमें लगाकर हरिभजन संयुक्त उनके साथ संसारी सुख भोगने लगी और तन छोड़ने उपरान्त वैकुण्ठ में जाकर लक्ष्मीनारायण के दासी व दास हुये इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित देखो चार मुट्ठी चावल परमेश्वर को देने से सुदामा ऐसी सुन्दर गतिको पहुँचा जो लोग सदा प्रेमपूर्वक छत्तीस व्यंजन नारायणजीको भोग लगाते हैं उनको न मालूम कैसा सुख मिलेगा व सुदामाका स्थान ऐसा उत्तम विश्वकर्मा ने बनाया था जिसे देखकर इन्द्रादिक देवता मोहि जाते थे ॥

दो० यह चरित्र अद्भुत महा चितदे सुनै जु कोय । रहै सदा सुख चैन सों अन्त मुक्ति फल होय ॥

बयासीवां अध्याय ।

श्यामसुन्दरका सूर्यग्रहण स्नान करनेवास्ते कुरुक्षेत्र में जाना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित अब हम श्रीकृष्णजी के कुरुक्षेत्रयात्रा की कथा कहते हैं सुनो एकबेर सूर्यग्रहण लगने में श्यामसुन्दर व बलराम जी ने राजा उग्रसेन से कहा महाराज कुरुक्षेत्र में सूर्यग्रहण स्नान का बड़ा माहात्म्य होकर जो वस्तु वहां दान करै उसका हजार गुणा फल मिलता है यह सुनकर यदुवंशियों ने पूंछा हे महाप्रभु ऐसा माहात्म्य वहां का किसतरह हुआ केशवमूर्तिने कहा वह स्थान बहुत पुराना व पवित्र होकर पहिले उसका नाम स्यमन्तकक्षेत्र था जबसे परशुरामजी ने क्षत्रियों को मारकर वहां रक्तकी नदी बहाई व उसी रुधिरसे पितरोंका तर्पण किया व

ऋषीश्वरों ने उस स्थानपर तप व ध्यान परमेश्वरका किया तबसे वहांक
नाम कुरुक्षेत्र प्रकट होकर सूर्यग्रहण नहानेका बड़ा माहात्म्य हुआ य
वचन सुनते ही जब राजा उग्रसेन व यदुवंशीलोग प्रसन्न होकर वहां
चलनेवास्ते तैयार हुये तब मुरलीमनोहरने अपने माता व पिता व रुक्मिण
आदिक सब स्त्रियों को साथ लेलिया बड़े विभवसे राजा उग्रसेन व यदु
वंशियों समेत कुरुक्षेत्रको कूच किया व अनिरुद्ध अपने पोता व कृतवर्म
यादवको द्वारकापुरी में छोड़ दिया जब यदुवंशीलोग अनगिन्ती हाथी
व घोड़े व रथोंपर बैठकर चले व रानियों के चंडोल व नालकी आदिक
नगर से बाहर निकलीं उस समय ऐसी शोभा मनहरणप्यारेकी मालूम
होती थी जैसे ताराओं में चन्द्रमा शोभा देते हैं ॥

दो० चले कटक सब साजिकै माखन प्रभु यदुराज। विविध भांति बाजे बजे सुखको भयो समाज॥

जब श्यामसुन्दर यदुवंशियों समेत कुरुक्षेत्र के निकट पहुँचे व तीर्थ
वहां से दिखलाई देने लगा तब सब छोटे बड़े सवारियों परसे उतरकर पैदल
चले किसवास्ते कि वेद व शास्त्र में ऐसा लिखा है कि तीर्थ जाती समय
सम्पूर्ण रास्ता पैदल न चल सकै तो जहांसे तीर्थ का स्थान दिखलाई दे
वहां से अवश्य पैदल चलना चाहिये इसलिये द्वारकानाथ ने सबको साथ
लिये हुये पहिले ब्रह्मकुण्डपर जिसमें से वेद निकला था जाकर स्नान
किया फिर बहुतसी गौ विधिपूर्वक व सुवर्ण व द्रव्य व हाथी व घोड़े आ
दिक अनेक तरहकी वस्तु तीर्थवासी ब्राह्मणोंको दान दिया व उत्तम उत्तम
डेरों में टिककर अपने साथियोंसे कहा तुमलोग यहां तीर्थ में ब्राह्मणोंका
सन्मान करके किसीको दुर्वचन मत कहना व श्यामसुन्दरने जिस जगह
ऋषीश्वर व महापुरुषों के आने व रहनेका समाचार पाया वहां आप
जाकर उनका दर्शन किया व अपने सेवकोंको आज्ञा दी ॥

दो० तात हमारे नन्दजू और यशोदा माय। उनकी सुधि जो कुछ मिलै हमसों कहियो आय॥

जब दुर्योधन आदिक अनेक देशके राजाओंने जो ग्रहण स्नान करने
वहां आयेथे मुरलीमनोहरके यहां आनकर उनका दर्शन करके अपना जन्म
सफल जाना तब धृतराष्ट्र आदिक बड़े बड़े नृपति व भीष्मपितामह

राजा उग्रसेनकी बहुत स्तुति करके उनसे विनय की महाराज तुम्हारा बड़ा भाग्य है देखो जिस परब्रह्म परमेश्वरका दर्शन ब्रह्मा व महादेव आदिक देवताओं को जल्दी ध्यान में नहीं मिलता वही त्रिभुवनपति दिन रात तुम्हारी आज्ञामें रहकर विना पूंछे कोई काम नहीं करते व सब जगह के ईश्वर होकर तुम्हें दण्डवत् करते हैं ऐसी पदवी किसी देवताको नहीं मिल सक्ती यह वचन सुनकर जब राजा उग्रसेन ने सन्मानपूर्वक उनको विदा किया तब राजा भीष्मक व नग्नजित् आदिक वसुदेवनंदन के श्वशुर व सालोंका हाल जो वहां ग्रहण स्नान करने आयेथे सुनकर मुरलीमनोहरकी स्त्रियां उनसे भेंट करने वास्ते गईं तब वे लोग उन्हें देखकर अति प्रसन्न हुये व उन्होंने बहुत सी सौगात अपने अपने देशकी मुरलीमनोहरको भेंट देकर उनका दर्शन प्रेमपूर्वक किया व कुन्ती ने श्रीकृष्णजीसे कहा मैं जानती थी कि मेरे बेटों पर तुम दया रखते हो सो तुम्हारे भाइयोंने दुर्योधनके हाथसे इतना दुःख उठाया पर तुमने कुछ सुधि नहीं ली इस बातका मुझे बड़ा पछतावा है यह वचन सुनकर लक्ष्मीपतिने कहा हे बुआ इसमें कुछ मेरा दोष न होकर सब दुःख सुख अपने प्रारब्ध से मिलता है जिस तरह आंधी चलने से कोई तिनुका विना उड़े नहीं रहसक्ता उसी तरह सब जीव परमेश्वर के आधीन रहकर अपने अपने कर्मों का फल भोगते हैं उसमें तिलभर घटने बढ़ने नहीं सक्ता यह सुनकर कुन्ती ने वसुदेवजी से कहा हे भाई जबसे तुमने मेरा विवाह कर दिया तबसे कुछ सुधि नहीं ली व मैंने जैसा दुःख दुर्योधन के हाथसे पाया उसका हाल परमेश्वर जानता है देखो श्याम व बलरामने भी हरिभक्तोंका दुःख छुड़ानेवास्ते संसार में अवतार लेकर मेरे ऊपर कुछ दया नहीं की इसमें कुछ तुम्हारा भी दोष न होकर यह बात सच है कि जब खोटे दिन आने से परमेश्वर विमुख होते हैं तब बाप व भाई आदिक किसी की सहायता कुछ काम नहीं करती यह सुनते ही वसुदेवजीने रोकर कहा हे बहिन हरिइच्छा बलवान् होकर कर्मकी गति जानी नहीं जाती जिससमय दुर्योधनने तुमको दुःख दिया था उन्हीं दिनों में कंसने मुझे कैद रखकर मेरे

बेटोंके मारनेवास्ते जो जो उपाय किये थे उनको तुमने सुना होगा जब परमेश्वरकी दयासे दोनों बालक किसी तरह बचे तब राजा जरासन्ध आनकर ऐसा लड़ा जिसके डरसे अपना देश छोड़कर टापूमें जा बसे इसी कारण तुम्हारी कुछ सुधि नहीं लेसके इसीतरह अनेक बातें कहकर वसुदेवजीने कुन्तीका बोध किया जब नन्द व यशोदा आदिकने भी वेभी ग्रहण स्नान करने वहां जाकर श्यामसुन्दर के डेरेसे तीन कोसपर टिके थे यह हाल सुना कि मोहनप्यारे अपने कुटुम्ब समेत यहां आये हैं तब वे लोग उनसे भेंट करने वास्ते व्याकुल होकर आपसमें कहने लगे अब वृन्दावनविहारी सब राजाओं के शिरताज हुये हैं इसलिये उनको हमारी तरफ देखते लज्जा मालूम होगी जहां अनेक ब्योढ़ीदार रहते हैं राजाओंका पहुँचना कठिन है वहां हम गँवारों को कौन जाने देगा॥

दो० जिस जागह नरपति घनी बैठन पावत नाहिं। हम सब ग्वाल गँवारजन कैसे अब तहँ जाहिं॥

जब नन्द व यशोदा आदिक ब्रजवासियोंसे विना देखे मुरलीमनोहर के नहीं रहा गया तब वे लोग घवड़ाकर श्यामसुन्दर का डेरा पूछते हुये वहां से दौड़े व उसी समय किसीने आनकर श्रीकृष्णजी से कहा कि नन्द व यशोदा आदिक भी ग्रहण नहाने वास्ते यहां आनकर टिके हैं यह वचन सुनतेही मोहनप्यारे उनके प्रेमसे रोने लगे यह दशा उनकी देखकर देवकी माता घवड़ागईं व अपने अंचल से उनका आंसु पोंछकर बोलीं हे लालन जहां तुम्हारा नाम लेने से जगत् का दुःख छूटजाता है वहां तुम्हें कौन ऐसा दुःख प्राप्त हुआ जो इतना रोते हो यह सुनकर त्रिभुवनपति ने कहा हे माता जबसे मैंने नन्द व यशोदाके आने का समाचार सुना है तबसे मेरा मन उनके चरण देखने वास्ते व्याकुल होकर मुझे कुछ अच्छा नहीं लगता सो तुम जल्दी रथ आदिक भेजकर उनको यहां बुलवावो तो मुझे उनके दर्शन मिलने से धैर्य हो हम बहुत अच्छी शुभ सायत में द्वारका से चले थे जो तीर्थ स्नान करने का फल पाकर ब्रजवासियोंसे भेंट हुई यह वचन सुनतेही वसुदेवजीने रथ व पालकी व हाथी व घोड़े आदिक वाहन ब्रजवासियों के लाने वास्ते भेजकर कहा

हे बेटा आज बड़ी खुशी का दिन है इसलिये तुमसे कुछ लेकर तब नन्द व यशोदाको तुम्हारे पास आने देंगे यह सुनकर वृन्दावनविहारीने कहा हे पिता संसारमें कोई वस्तु ऐसी नहीं है जो मैं तुम्हारे भेंट करूं मेरा शरीर तुम्हारे ऊपर न्योछावर है ॥

दो० यह सुनकर वसुदेवजी मुदित कहत सुख पाय । तुमसे पूत सपूतकी महिमा कही न जाय ॥

जब एक सखीने श्रीकृष्णचन्द्र को रोते हुए देखकर रुक्मिणी आदिक पटरानियों से यह हाल कहा तब वे सब घबड़ाकर वैकुण्ठनाथ के पास चली आईं व मुँह ढांपकर देवकी से उनके रोने का कारण पूंछने लगीं॥

चौ० यह सुनि कहत देवकी माता । श्रीयदुनाथ प्रेमकी बाता ॥
नन्द यशोदा व्रजते आये । जिन याको है लाड़ लड़ाये ॥
याते इनकी यह गति भई । सुधि बुधि सकल भूलि तनुगई ॥

दो० कंस कुटिलके त्रासते वास कियो जिनपास । उनके गुण नहिं कहि सकैं जो मुखहोयँ पचास ॥

यह वचन सुनतेही रुक्मिणी आदिकपटरानियाँ हँसकर आपसमें कहने लगीं देखो आज हमारे प्राणनाथ राधा आदिक गोपियों से भेंट करके अपना कलेजा ठंढा करैंगे व बालापन की प्रीति समझकर व्रजबालाओं को भी बहुत सुख मिलैगा व हमलोग राधाप्यारीकी सुन्दरताई जो सुना करती थीं अब उसे देखकर मालूम होगा कि वह कैसी सुन्दरी है जब ग्वालबालों की संगति में नन्दलालजी मोरपंख शिरपर रखकर नाचैं व गावेंगे तब वह आनन्द देखकर हम लोगोंको भी बड़ा सुख प्राप्त होगा ॥

दो० धन्य यशोदा नन्द धनि धन्य नन्दके नन्द । धनि हम सब जो देखिहैं व्रजजन आनँदकन्द ॥

यह वचन रुक्मिणी आदिक का सुनकर श्यामसुन्दरने रोते रोते मुसकरा दिया व घबड़ाकर नन्द व यशोदा आदिक को आगे से लेनेवास्ते चले जब यशोदाने वृन्दावनविहारी को आते हुये देखा व अपना जन्म सफल जानकर उनको उठाने वास्ते दौड़ी तब मोहनप्यारे गोपियों के गोल में घुसकर जैसे यशोदा माता के चरणों पर गिर पड़े वैसे नन्दरानी ने उनको उठाकर छाती से लगा लिया व बारंबार उनका मुँह चूम कर बलायें लेने लगी ॥

दो० माखनप्रभुहि निहारिकै मुदित यशोदा माय । राजचिह्न सब देखिकै फूली अँग न समाय ॥

जब केशवमूर्ति नन्दबाबा को देखकर बड़े प्रेमसे रोते हुये उनके चरणों पर गिर पड़े तब नन्दरायने आंसू भरके उन्हें गोदमें उठालिया व अपने लाल का आंसू पोंछकर बहुतसा प्यार किया फिर श्यामसुन्दरने श्रीदामा ग्वालबालों के गले मिलकर उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र उनको दिया सौगात वे लोग जो इनके वास्ते ले आये थे उसको बड़े प्रेम से लिया॥

दो० हेमवर्ण पीताम्बर ग्वालबाल सब लेहिं। ताके पलटे कान्हको कारी कामरि देहिं॥

जब ललिता आदिक सखियां व वृषभानुदुलारी को देखतेही जैसे आंखों में आंसू भरकर उनके निकट पहुँचे वैसे श्यामा उनको देखतेही प्रेमवश रोते रोते व्याकुल होगई॥

दो० अंग अंग व्याकुल महा परी धरणि मुरझाय। यह गति देखत कुँवरिकी लीन्ही धाय उठाय॥

जब यह दशा लाड़िली की देखकर ललिता आदिक ने उनको बहुत समझाया तब राधाप्यारी ने सचेत होकर घूंघट निकाल लिया उससमय श्यामसुन्दर का मुखारविन्द देखनेसे व्रजवासियों को जैसा आनन्द हुआ वह मुझसे वर्णन नहीं होसक्ता फिर वसुदेवजी ने नन्दरायसे गले मिल कर कुशल पूंछने उपरान्त कहा तुम्हारी दया से यह सब सुख मुझे मिला है जैसे व्रजकी गौवोंने जो नन्दरायके साथ आई थीं श्यामसुन्दरको देखा वैसे आंखों में आंसू भरकर पूंछ उठाये हुये मुरलीमनोहर के पास दौड़ी चली आईं तब केशवमूर्तिने बड़े प्रेम से उनकी पीठ पर हाथ फेर कर प्यार किया व ग्वाल बालों से सब गायोंका हाल नाम ले लेकर पूछने लगे॥

दो० गायनकी बातैं कहत माखन प्रभु यदुराय। त्यों त्यों हर्षित होत सब आनँद उर नसमाय॥

जब श्याम व बलराम बड़े प्रेमसे नन्द व यशोदा आदिक व्रजवासियों को साथ लेकर अपने डेरे में आये तब देवकी व रोहिणी ने यशोदा के गले मिलकर कुशल पूंछने उपरान्त कहा हे नन्दरानीजी हमलोग जन्म भर तुम्हारी सेवा करें तो भी तुमसे उऋण नहीं होसक्तीं किस वास्ते कि हमारे लड़कोंका प्राण तुम्हारी कृपा से बचा है नहीं तो कंस पापी के हाथ से इनका बचना कठिन था यह सुनकर यशोदा बोलीं मैं तो अपने को मोहनप्यारेकी धाय समझती हूं कन्हैया ने अपना बालचरित्र दिखलाकर

जैसा सुख मुझे दिया है वह आनन्द दूसरे को स्वप्ने में भी नहीं मिलने सक्ता व उसके वियोग में जितना दुःख मैंने उठाया उसका हाल परमेश्वर जानता है आज तुम्हारी कृपा से कान्हर को देखकर सब शोच मेरा छूट गया जब राधा आदिक गोपियों ने देवकी माता के चरणों पर शिर रख कर दण्डवत् की तब देवकी ने उन्हें आशिष देकर श्यामा को गले में लगा लिया व उसका रूप जो पटरानियों से भी अधिक सुन्दरी थी देख कर मनमें कहा ऐसी महासुन्दरी स्त्री मेरे प्राणप्यारे से किस तरह छोड़ी गई जब रुक्मिणी आदिक स्त्रियों ने यशोदा से मिलने वास्ते आनकर श्यामा का रूप देखा तब अपनी अपनी सुन्दरताई का अभिमान भूल गईं उस समय रुक्मिणी ने वसुदेवनन्दन से हाथ जोड़ के विनय की हे व्रजनाथ तुम्हारी आज्ञा पाऊं तो आज राधाप्यारी को अपने यहां ले जाकर शिष्टाचार करूं॥

दो॰ माखन प्रभु आज्ञा दई लेजाइय निज धाम। राधा कुँवरि जैंवाइकै पूरण कीजै काम॥

यह वचन सुनतेही रुक्मिणी ने श्यामा के पास आनकर उसका हाथ पकड़ लिया व बड़े प्रेम से अपने यहां लेजाकर छत्तीस व्यञ्जन खिलाया व अपने यहां से उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्रादिक उसे पहिनाकर सोरहों शृंगार करके बैठा दिया तब सत्यभामा आदिक स्त्रियां श्यामा का रूप जो चन्द्रमा से भी अधिक सुन्दरी थी देखकर मोहित होगईं व सबों ने लज्जा से आंखें अपनी नीचे करलीं उससमय वृन्दावनविहारी ने जाकर वृषभानुदुलारी की शोभा देखी तो रुक्मिणी आदिक से कहा॥

दो॰ जो चाहै मोहिं वश करन। तिहूंलोक में कोय। श्रीवृषभानुकुमारिको हित सों सेवे सोय॥

यह बात मुरलीमनोहर की सुनतेही राधा प्रसन्न होकर मुस्कराने लगी व रुक्मिणी आदिक ने समझा कि वैकुण्ठनाथ वृषभानुदुलारी का हम सबसे अधिक प्यार करते हैं जिस समय द्वारकानाथ ने नन्द व यशोदा आदिक व्रजवासियों को एक ओर बैठाकर बड़े प्रेम से सुनहुली थालियों में छत्तीस व्यञ्जन उनके सामने परोस दिये व दूसरी ओर आप यदुवंशियों समेत बैठकर भोजन करने लगे उस समय सब छोटे बड़े वह आनन्द

देखकर प्रसन्न होगये इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित श्यामसुन्दर जितना प्रेम व्रजवासियों के साथ रखते थे उसका हाल मुझ से कहा नहीं जाता जब सब कोई भोजन करके सुचित्त हुये तब वसुदेव नन्दन ने व्रजवासियों को पान इलायची व इत्र देकर नन्दजी से विनय किया हे बाबा मेरी भक्ति करनेवाले भवसागर पार उतरि जाते हैं सो तुम लोगों ने अपना तन मन धन मेरे ऊपर न्योछावर करके मुझ से प्रीति लगाई इसलिये तुम्हारे बराबर कोई दूसरा भाग्यवान् नहीं है देखो जहां ब्रह्मादिक देवता व बड़े बड़े ऋषीश्वर जल्दी मेरा दर्शन ध्यान में नहीं पाते वहां मैं तुम लोगों की भक्ति व प्रीति देखकर दिन रात तुम्हारे पास बना रहता हूं इसलिये मेरा प्रकाश घट घट व्यापक समझकर तुम्हें मेरे वियोग का शोच न करना चाहिये जब कृष्णचन्द्र आनन्दकन्द ने इसी तरह नन्द व यशोदा आदिक को बहुत समझाकर धैर्य दिया तब वे लोग आपसमें बैठकर बालचरित्र व यश मोहनप्यारेका कहने लगे फिर केशव मूर्ति सब गोपियों को जो उनसे बहुत प्रीति रखती थीं एकान्तमें बैठाकर जब प्रेम की बातें उनसे करने लगे तब व्रजवासियों ने छवि मोहनीमूर्ति की देखकर अपनी अपनी आंखें ठंढी कीं उस समय एक गोपी बालापन की प्रीति समझकर निर्भय होके बोली हे नन्दलाल तुमने इतना धन व विभव कहां से पाया और सब हाथी व घोड़े किसी के मँगनी लेआये हो कि तुम्हारे हैं तुमको यह बात याद होगी कि हम सब व्रजबाला तुम्हारे एक विवाह होने वास्ते हँसा करती थीं सो अब तुम सोलह हजार एकसौ आठ स्त्री से विवाह करके उनके साथ भोग व विलास करते हो भला यह तो बतलाओ तुमको हमारा दूध दही चुराकर खाना व ऊखलसे अपना बांधे जाना व बनमें गोपियोंको रोंककर दधिदान लेना सुधि है या नहीं हमलोगों को तुम्हारे वियोग में एक दिन वर्ष समान बीतता था तुमने इतने दिन हमारे बिना किसतरह काटा जैसी कठोरता तुमने हमारे साथ की ऐसा निर्मोही संसार में कोई न होगा जब वृन्दा-वनविहारीने ऐसी ऐसी अनेक बातें गोपियोंकी सुनी तब विनयपूर्वक

उनसे बोले हे प्राणप्यारियो जो सुख व विलास मैंने तुम्हारे साथ किया है वह आनन्द यह सब विभव रहने परभी नहीं मिलता जो कोई प्रेमपूर्वक मेरा ध्यान व स्मरण किया करता है उससे मैं क्षणभर भी विलग नहीं रहता मैं ग्रहण स्नान करनेके बहाने केवल तुमलोगों से भेंट करने वास्ते यहां आया हूं ॥

चौ० हम को तुम सुमिरौ मन माहीं। हमहूं सदा रहैं तुम पाहीं ॥
सर्व आतमा हम को जानो। सब जीवन के जीव बखानो ॥
आतम ही सों आतम देखो। यह अध्यातम ज्ञान विशेखो ॥
राजन ऐसी विधि बहि ठाई। हरिजू सब गोपिन समुझाई ॥
सफल जन्म ताको जग माहीं। जाको मन हरिचरणन पाहीं ॥

यह सुनकर गोपियोंने कहा हे प्रभु ज्ञान उपदेश करती समय हमलोगोंको उद्धवका कहना अच्छा नहीं मालूम हुआथा पर अब उस ज्ञान का गुण जानकर हमलोग अपनेको तुमसे बिलग नहीं समझतीं तुम्हारा ध्यान रखनेसे अर्थ धर्म काम मोक्ष चारों पदार्थ मिलकर जो सुख हमें प्राप्त होताहै वह आनन्द बड़े बड़े योगीश्वरोंको भी जल्दी मिलने नहीं सक्ता वहमलोगोंका आवना तुम्हारे दर्शनोंकी इच्छासे यहां हुआहै सो दयालु होकर ऐसा वरदान देव जिसमें दिन रात तुम्हारे कमलरूपी चरणों का ध्यान हमारे हृदय में बनारहकर प्रतिदिन तुमसे अधिक प्रीति हो श्यामसुन्दर उन्हें इच्छापूर्वक वरदान देकर बहुत देरतक उनसे लड़कपनकी बातें करते रहे फिर वहांसे उठकर राधाप्यारी के पास चले गये ॥

दो० श्रीवृषभानु कुमारिसँग लागे करन हुलास। भूलिगये रनिवास सब माखन प्रभु सुखरास ॥

एक दिन रुक्मिणी आदिक पटरानियां आपस में बैठकर अभिमानसे कहने लगीं जितनी प्रीति श्यामसुन्दरकी हमलोग करती हैं उतना प्रेम गोपियोंको होना कठिनहै मुरलीमनोहर अन्तर्यामीने यह हाल जानकर उनका गर्व तोड़ने वास्ते अपनी स्त्रियों व ब्रजवालोंको एक जगह बैठा कर कहा तुमलोगोंमें जिनको मेरी अधिक प्रीति होगी उनके हृदय में मेरा वास रहता होगा यह वचन सुनते ही सब ब्रजवाला व स्त्रियों ने अपना अपना अंचल उठाकर देखा तो रुक्मिणीआदिकको अपने तनु

में कुछ चिह्न नहीं दिखलाई दिया व गोपियोंके हृदयमें श्यामरंग शोभायमान नटवरवेष त्रिभुवनपति का देखपड़ा यह महिमा व्रजबालों की देखतेही वे लोग अपने प्रेमका घमण्ड भूलकर मनमें कहने लगीं जितनी प्रीति गोपियां श्यामसुन्दरकी रखती हैं उतना प्रेम हमें होना बड़ा दुर्लभ है॥

दो० गोपरूपभगवानको देखत अति सुखपाय। हरिचरणनपर गिरपड़ीं मनमें बहुत लजाय॥

जब केशवमूर्ति लोकाचार करनेवास्ते दूसरे राजाओंके डेरेपर जो वहां टिके थे गये तब उन्होंने आगे से आनकर साष्टांग दण्डवत् किया व सन्मानपूर्वक लेजाकर जड़ाऊ सिंहासनपर बैठाला व अनेक तरह की वस्तु भेंट देकर विनय की हे महाप्रभु हम लोग सदा तुम्हारी स्तुति सुन कर दर्शनोंकी इच्छा रखते थे सो अब आपका चरण देखने से अपने समान किसीका भाग्य नहीं समझते जिसतरह आपने दयालु होकर हमें कृतार्थ किया उसी तरह कृपा करके ऐसा वरदान दीजिये जिसमें तुम्हारे चरणोंकी भक्ति व प्रीति सदा हमारे हृदयमें बनीरहे वैकुण्ठनाथ उन्हें वरदान व धैर्य देकर अपने स्थानपर चले आये॥

तिरासीवां अध्याय।

द्रौपदी व रुक्मिणी आदिकका आपस में बातचीत करना॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित जिसतरह द्रौपदी व रुक्मिणी आदिक ने आपसमें अपने अपने विवाहकी बातचीत की थी वह कथा कहते हैं सुनो एक दिन युधिष्ठिर आदिक पांचो भाई व कौरव बहुत राजाओं समेत त्रिभुवनपति की सभामें बैठे हुये इसतरह उनकी स्तुति करनेलगे॥

चौ० परमहंस है नाम तुम्हारो। तुमसे प्रकट वेद हैं चारो॥
विप्र धेनु रक्षा के काजा। तुम अवतार लियो यदुराजा॥
आदि अंत तुम पूरण कामा। तुम को हित से करैं प्रणामा॥

दो० ऐसी विधि अस्तुति करी सब राजन सुखपाय। पातक तजि पावन भये परसत प्रभुके पाय॥

उसी दिन कुन्ती व द्रौपदी जिनकी महिमा सब जगत् जानता है रुक्मिणी आदिक पटरानियोंके पास बैठकर इधर उधरकी बातें करनेलगीं तब कुन्ती ने रुक्मिणीसे हँसकर कहा तुमने अभीतक अपने विवाह का

नेग मुझे नहीं दिया सो देना चाहिये रुक्मिणी हाथ जोड़कर बोली हे माता मेरा तनु व धन सब तुम्हारी भेंट है फिर द्रौपदी बोली हे रुक्मिणी बहिन जिसतरह श्यामसुन्दर तुमलोगोंको विवाह लायेथे वह हाल सुनने की मैं बहुत इच्छा रखती हूं सो दया करके अपने अपने विवाह होने की कथा सुनावो यह बात सुनकर रुक्मिणीजी बोलीं ॥

चौ० जो तुम हँसो नहीं गुणज्ञाता। तौ हम कहैं ब्याहकी बाता ॥
देश चँदेली सब जग जानो। तहँ शिशुपाल नरेश बखानो ॥
पहिले तिहि सों भई सगाई। सकल विवाह कि सोज मँगाई ॥
दो० सो नरेश आयो तभी बहु राजा लै साथ। रीति भांति कुलकी करी कंकण बांध्यो हाथ ॥

मुझे मनसा वाचा कर्मणासे यह चाहना थी कि द्वारकानाथकी दासी होकर रहूं इसलिये त्रिभुवनपति अन्तर्यामी कुण्डिनपुरमें आये और सब राजाओंको जीतकर मुझे हर ले गये सो उनकी सेवामें रहकर अपना जन्म स्वार्थ करती हूं फिर सत्यभामाने अपने विवाह होनेका हाल वर्णन किया व जाम्बवतीने अपने विवाहका वृत्तान्त कह सुनाया ॥

चौ० फिर बोली कालिन्दी रानी। चित दे सुनु द्रौपदी सयानी ॥
मैं धरि हरिचरणनकी आसा। बहुदिन जलमें कियो निवासा ॥
दो० एकदिवस अर्जुन सहित आये श्रीभगवान। हाथ पकड़ मोहिं लायके दीन्हो पद निर्वान ॥

मित्रविन्दा ने कहा हे द्रौपदी रानी श्यामसुन्दरकी स्तुति सुनकर मुझे यह अभिलाषा हुई कि सिवाय मोहनप्यारे के दूसरेसे अपना विवाह न करूंगी सो मेरे भाइयोंने यह हाल जानकर मेरा विवाह त्रिभुवनपति के साथ करदिया अब मुझे दिन रात यही इच्छा रहती है कि जन्म जन्मांतर बैकुण्ठनाथ की दासी होकर रहूं फिर सत्या ने अपना हाल जिसतरह द्वारकानाथ उसे ब्याहलाये थे कह दिया ॥

चौ० भद्रा कहत सुनो तुम बानी। लोगन अस्तुति श्याम बखानी ॥
तबते नेम कियो मनमाहीं। उन बिन और भजौं मैं नाहीं ॥
याते पिता कृष्णको दीन्हीं। मम इच्छा सब पूरण कीन्हीं ॥
दो० चरणकमल श्रीकृष्णके जो सेवै चितलाय। सुभग भाग्य तिहि नारिकी कासों बरणीजाय ॥
चौ० बोली बहुरि लक्ष्मणा रानी। निज विवाहकी कथा बखानी ॥

मेरो पिता स्वयंवर कीनो। मेरो मन हरिके रसभीनो॥
तहां आय मोहन सुखदाई। पाणिग्रहण करि दया जनाई॥
तवते भई कृष्ण की दासी। रैनि दिवस नित रहत हुलासी॥
अब तुम मोको देव अशीशा। जन्म जन्म सेऊं जगदीशा॥

जब आठों पटरानी अपने अपने विवाहका हाल कहचुकीं तव सोलह हजार एकसौ राजकन्या वोलीं हे द्रौपदी हमलोगों को भौमासुर दैत्यने बरज़ोरी उठा लाकर अपना विवाह करनेवास्ते एकस्थान में रक्खा था।

चौ० जव हम शरण कृष्णकी आई। बिनती बहुत करी उनपाई॥
हरि अंतर्यामी सुखदानी। अपनी समझ दया मनआनी॥
दो० तुरत आय पहुँचे तहां माखन प्रभु यदुराय। भौमासुरको मारकर लीन्हो हमैं छुड़ाय॥

उसी दिनसे हमलोग मुरलीमनोहर की सेवा में रहकर अपने को पटरानियों की दासी समझती हैं सो हे द्रौपदी तुम हमैं ऐसा आशीर्वाद दो जिसमें सदा श्यामसुन्दरकी सेवा में बनीरहैं जब द्रौपदी व गांधारी व कुन्ती व यशोदा आदिकने श्यामसुन्दरके सब विवाहोंका हाल सुना तब प्रसन्नता से उन्हें आशीर्वाद देकर बड़ाई भाग्य रुक्मिणी आदिक की करने लगीं॥

चौ० फिर सतभामा पूंछन लागी। सुनौ द्रौपदी परम सुभागी॥
हम अपनी सब कथा सुनाई। अब तुम हमसों कहौ जनाई॥
दो० पांच जननसे कौन विधि तुम्हरो भयो विवाह। अद्भुतलीला सुननकी मनमें बड़ी उछाह॥

यह वात सुनकर द्रौपदी वोली हे प्यारियो हमारे पिताने मेरा स्वयंवर रचकर यह प्रण किया था जो कोई तेलके कराह में परछाहीं देखकर अपने वाणसे मत्स्य वेधे उसीको अपनी कन्या विवाह दूंगा जब दुर्योधन व जरासन्ध आदिक वहुत राजाओं ने आनकर मत्स्य वेधने में लज्जा उठाई व अर्जुनने वह मत्स्य वेधकर मेरे पिताका प्रण पूरा किया तब मैंने उनके गले में जयमाला डाल दी यह हाल देखकर सब छोटे व बड़े प्रसन्न हुये पर दुर्योधन आदिक अधर्मी राजाओं ने लज्जित होकर पांचो भाइयों से युद्ध किया सो हारमानकर भागगये जब अर्जुन ने मुझे घरलेजाकर

अपनी माता से कहा हम एक सौगात ले आये हैं तब कुन्तीजी खानेकी वस्तु समझकर बोली कि पांचोभाई आपस में बांट लेव ॥

दो० याते पांचो पाण्डवन लीन्हों मोहि बिवाहि। प्रकट देहसे पांचहैं जीव एकही आहि ॥

यह बात सुनकर रुक्मिणी आदिक द्रौपदी की बड़ाई करने लगीं इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित एक दिन श्यामसुन्दर की सभा में युधिष्ठिर आदिक पाण्डव व सब यदुवंशी व बहुत से राजा बैठेहुये थे उसीसमय नारदमुनि व वेदव्यास व विश्वामित्र व देवल व च्यवन व सतानन्द व भरद्वाज व गौतम व वशिष्ठ व भृगु व अत्रि व मार्कण्डेय व अगस्त्य व वामदेव व पराशर व परशुरामआदिक बहुतसे ऋषीश्वर वैकुण्ठनाथ के दर्शनवास्ते वहां आये उनको देखते ही श्यामसुन्दर ने सब राजाओंसमेत खड़े होकर सन्मानपूर्वक सब ऋषीश्वरोंको आसन पर बैठाला व चरण उनका धोकर चरणामृत लिया व विधिपूर्वक पूजन उनका करके हाथ जोड़कर यह स्तुति की ॥

चौ० ऋषि दर्शन दुर्लभ जगमाहीं। देवनहूंको प्रापत नाहीं ॥
आज सुफल है जन्म हमारो। जो हम पायो दरश तुम्हारो ॥

दो० हरिभक्तनके दरशकी महिमा कही न जाय। जन्मजन्म के पाप सब क्षणमें जात नशाय ॥

चौरासीवां अध्याय।

वसुदेवजी का यज्ञ करना ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जब श्यामसुन्दर ऋषीश्वरों की पूजा व स्तुति कर चुके तब उन्होंने कौरव व पाण्डव आदिक राजाओंसे जो वहां पर थे कहा हमलोगों का वड़ाभाग्य समझना चाहिये जो इन ऋषीश्वरों ने दयालु होकर घर बैठे अपना दर्शन दिया विरक्त साधुओंके चरण देखने से गंगास्नान का फल प्राप्त होकर मरने उपरांत ऐसा उत्तम स्थान रहने वास्ते मिलताहै जहांपर बड़े योगी व ज्ञानी नहीं पहुँच सकें इसलिये ऋषीश्वरों का सत्संग मिलना सब तीर्थ नहाने व देवस्थान दर्शनसे उत्तम होकर इनकी पूजा परमेश्वर समान जानना चाहिये जो लोग ऋषीश्वर व मुनि नहीं मानते उन्हें गदहे व बैलों के समान समझना उचित है ॥

दो० चरण साधुके प्रीतिकरि पूजतहै जो कोय। संसारीसुख भोगकरि अन्त मुक्तपद होय ॥

जब ऋषीश्वरलोग यह वचन त्रिभुवनपति का सुनकर लज्जित होंगे तब नारद मुनि द्वारकानाथ से हाथ जोड़कर बोले हे महाप्रभु हमलोग इस योग्य नहीं हैं जैसा आपने अपने मुखारविन्द से कहा आपने केवल संसारीजीवों को उपदेश करनेवास्ते इतनी बड़ाई हमारी की जिसमें लोग ब्राह्मणों को बड़ा जानकर उनका सन्मान करें नहीं तो हमलोग कौन गिनती में हैं हमारा कल्याण इसी में है जो तुम्हारे चरणोंका ध्यान किसी समय हमें न भूलै देखिये यदुवंशीलोग जिसकुल में आपने अवतार लिया है वे आपको न पहिंचानकर अपना नातेदार समझते हैं तब दूसरे को क्या सामर्थ्य है जो तुम्हारे भेदको पहुँचसकै केवल आप हरिभक्तों को सुखदेने व दुष्टोंको मारनेवास्ते वारंवार अवतार लेते हैं नहीं तो जन्ममरण से तुम रहितहौ॥

चौ० तुम जगजीवन जगत निवासा। हम तुम्हरे दासन के दासा॥
तुम जो अस्तुति करत हमारी। हमको भरम होत है भारी॥
जगतगुरू जगदीश गुसांई। तुमसे सृष्टि होत सब ठांई॥
तुमहीं सब देवन के देवा। तुम्हरो हम नहिं जानैं भेवा॥
तुम्हरी माया सब जग छाई। लोगनकी सुधि बुधि बिसराई॥
ताते विविधभांति भ्रम मानैं। तुम्हरो भेद कौन विधि जानैं॥

दो० तुम्हरी अद्भुत शक्ति है घटघट रही समाय। फिर सबते न्यारे रहौ माखन प्रभु यदुराय॥

चौ० कोऊ तुम्हैं पिता करि जानै। कोऊ पुत्र भाव मन आनै॥
तुमहीं सबके पालनहारे। को कहिसकै चरित्र तुम्हारे॥
तुम्हरो दर्शन बहुसुख दाता। तिहि प्रताप जानै यह बाता॥
धरती भार उतारन काजा। भक्तन हित प्रकटे यदुराजा॥
वेद कहत हैं तुम्हरी बानी। तुम्हरी गति उनहूं नहिं जानी॥
तुम्हरी भक्ति सकल सुख राशा। कोऊ जन नहिं होत निराशा॥
तुम दयालु प्रभु पूरण कामा। तुमको हम सब करत प्रणामा॥

दो० तुमतौ पूरणब्रह्म हौ सकल धर्मके धाम। विप्रनकी अस्तुति करत तिहिकारण घनश्याम॥

हे वैकुण्ठनाथ हमलोग तुम्हारी कृपा से यह चाहना रखते हैं कि आठोंपहर आपके चरणों का ध्यान हमारे हृदय में बना रहकर हरिकथा सुनने से कभी प्रीति न घटै जब ऋषीश्वर लोग यह स्तुति करके अपने

अपनी कुटी पर जाने लगे तब वसुदेवजी ने उनके सामने हाथ जोड़कर विनय की महाराज कोई ऐसा उपाय बतलाइये जिसमें आवागमन से छूटकर भवसागर पार उतर जाऊं यह वचन सुनकर जैसे सब ऋषीश्वरोंने नारदजी की ओर देखा वैसे नारदमुनि हँसकर बोले हे ऋषीश्वरो वैकुण्ठनाथ की माया ऐसी प्रबल है जिसने सब संसार को मोहकर अपने वशमें करलिया जिसतरह गंगा किनारे के रहनेवाले उनका माहात्म्य न जानकर कूपजल से स्नान करते हैं उसीतरह वसुदेवजी संसारी मायांमें लपटने से श्यामसुन्दर त्रिभुवनपति जगत्कर्ता को अपना पुत्र जानकर मुक्त होने की राह हमलोगों से पूँछते हैं वही गति सब यदुवंशियों की होकर अपने अज्ञान से कोई उनको नहीं पहिंचानता यह बात ऋषीश्वरों से कहकर नारदमुनि बोले ॥

चौ० कहत सुनो वसुदेव सुजाना। तुम्हरे घरमें श्रीभगवाना ॥
तिन्हैं छांड़ि तुमसे गुण ज्ञाता। हमसे कह पूछतहीं बाता ॥

हे वसुदेवजी अभी तुम्हारे सामने सब ऋषीश्वरोंने श्यामसुन्दर की स्तुति की तिसपर भी तुमने उनको नहीं पहिंचाना इस बात का हमें बड़ा आश्चर्य मालूम होता है जो तुम्हारे ऐसा ज्ञानी होकर ईश्वर को न पहिंचाने पर इसमें तुम्हारा कुछ दोष न होकर यह बात सच समझना चाहिये कि बिना कृपा त्रिभुवनपति की देवता आदिक भी उनको नहीं पहिंचान सक्ते संसारी मनुष्य कौन गिनती में हैं जो उनके भेद को पहिंचान सकें ॥

दो० कोऊ जन जानै नहीं माखन प्रभुके भेव। इन गति अगम अपारहै सब देवन के देव ॥

इसलिये वेदानुसार एक बात कहता हूं कि तुम कुरुक्षेत्र में विधिपूर्वक यज्ञ करके उसका फल श्रीकृष्णजी को अर्पण करदेव तो तुम्हारे हृदय से अज्ञानता की काटि छूटकर मुक्ति मिलैगी ॥

चौ० पापनाश बिन धर्म न होई। यह जानै निरचय सब कोई ॥
जो हरिसेवा में चित धरै। मनमें कछु इच्छा नहिं करै ॥
तिहि को पाप कटै क्षणमाहीं। मुक्त होय कछु संशय नाहीं ॥
दो० श्रीमाखन प्रभु पूजिकै फल चाहै जो कोय। तिनके कर्म कटै नहीं मुक्ति कौन विधि होय ॥
चौ० हरिके काम कर्म शुभ कीजै। ताको फल उनहीं को दीजै ॥

या विधि कर्म करै जो कोई। भवसागर से उतरै सोई॥
जो तुम कहौ कि हम गृहचारी। योगरीति के नहिं अधिकारी॥
तो तुमको यकवात जनाऊं। कर्मयोगकी राह बताऊं॥
जो कछु पुण्यदान तुम करो। नेम धर्म व्रत मनमें धरो॥
उसका फल हरिजूको दीजै। मनमें कछु इच्छा नहिं कीजै॥
वे हरि तुमसे न्यारे नाहीं। सदा बसैं तुम्हरे घरमाहीं॥

दो॰ या विधि नारद का वचन सुनकर श्रीवसुदेव। महामुदित मनमें भये जब जान्यो यह भे[द]॥

यह वचन सुनतेही वसुदेवजी ने नारदमुनि आदिक ऋपीश्वरों [से] हाथ जोड़कर विनय की महाराज आपलोग दयालु होकर ऐसा [यज्ञ] करा दीजिये जिसमें मेरा मनोरथ पूर्ण हो यह सुनकर नारदजी बोले [बहुत] अच्छा तुम तैयारी करो हमलोग तुमको सोमयज्ञ करा देवैंगे यह सुनते[ही] वसुदवेजी ने सब सामग्री मँगाकर जो स्थान कुरुक्षेत्र में बहुत पवित्र [था] वहां यज्ञ की तैयारी की जब यज्ञशाला में सब ऋषीश्वर व यदुवंशी [व] राजा लोग आनकर इकट्ठे हुये तब वसुदेवजी शुभ सायत में ब्रह्मचर्य [से] मृगछाला पहिन कर देवकी आदिक अठारहों रानियों समेत यज्ञ करने[के] वास्ते जा बैठे उस समय अनेक राजा व यदुवंशी लोग अपनी अपनी स्त्रियों समेत बड़े प्रेमसे यज्ञकी टहल करनेलगे तब वसुदेवजी ने नारदमु[नि] आदिक ऋपीश्वरों को वरण देकर कुण्डमें आहुति डालना आरम्भ कि[या] तब श्यामसुन्दरकी इच्छानुसार देवता लोग अग्निकुण्ड से प्रत्यक्ष निक[ल]कर अपना अपना भाग लेने लगे उस समय उर्वशी आदिक अप्सराओं [ने] आनकर अपना अपना नाच दिखलाया व गन्धर्वोंने गाना सुनाया व देवताओं ने दुन्दुभी वजाकर आकाश से फूल वर्षाये व सब छोटे बड़े जो वहां पर थे उन्होंने गाय बजाय कर मंगलाचार मनाया व ब्राह्मणों[ने] वेद उच्चारण किया व भाटोंने कवित्त सुनाये इतनी कथा सुनाकर शुकदेव[-] जीने कहा हे परीक्षित उस समय जैसा आनन्द वहां पर हुआ था वह मुझसे वर्णन नहीं होसक्ता जब वैकुण्ठनाथ की दया से यज्ञ अच्छी तरह सम्पूर्ण हुआ तब वसुदेवजीने फल उसका मुरलीमनोहर को संकल्प देकर विधिपूर्वक उनका पूजन किया व यज्ञ करानेवाले ऋपीश्वरों को पीताम्बर

व सोना व गौ व रत्नादिक दान व दक्षिणा दी सिवाय ऋषीश्वरोंके और जितने ब्राह्मण व याचक व मंगन वहां पर थे उनको इतना मुँह मांगा द्रव्यादिक दिया कि फिर उनको कुछ इच्छा न रही जब ऋषीश्वर व ब्राह्मण लोग वसुदेवजी आदिक को आशीर्वाद देकर अपने अपने स्थान पर चले गये तब श्यामसुन्दर ने कौरव व पाण्डव व दूसरे राजाओं को यथा-योग्य भूषण व वस्त्र देकर सन्मानपूर्वक विदा किया उस समय वसुदेवजी ने रोकर नन्दराय से कहा हे भाई तुमने श्याम व बलराम को पालकर उनकी रक्षा की है इसलिये मैं जन्म भर तुमसे उऋण नहीं होसक्ता व मुझसे आज तक कोई टहल तुम्हारी नहीं बनपड़ी जो उससे उऋण होता इसलिये चाहता हूँ कि थोड़े दिन आप यहां ब्रजवासियों समेत रहते तो मैं भी तुम्हारी सेवा व टहल करके उऋण होता जब नन्दराय यह सुनकर बड़े हर्ष से चार महीने ब्रजवासियों समेत कुरुक्षेत्र में टिके रहे तब वसुदेवजी ने प्रतिदिन उनका नया शिष्टाचार व श्याम व बलरामने सेवा उनकी प्रेमपूर्वक की ॥

दो० महिमा त्रिभुवननाथकी कासों बरणीजाय। ब्रजवासिन अति सुखदियो आनँद उर न समाय॥

जब चार महीने कुरुक्षेत्रमें रहकर राजा उग्रसेनने द्वारकापुरी चलनेकी तैयारी की तब श्यामसुन्दरने नन्द व यशोदा से रोकर कहा मुझसे तुम्हारा चरण छोड़ा नहीं जाता पर लाचारी से विनय करता हूं कि आप भी वृन्दावन जाकर गायों की सुधि लीजिये यह वचन सुनतेही नन्द व यशोदा व्याकुल होकर पृथ्वी पर गिरपड़े व ग्वालबाल व गोपियों ने रुदन करके कहा हे नन्दकिशोर हमलोग तुम्हारा चरण छोड़कर वृन्दावन न जावेंगी हमको भी अपने साथ द्वारकापुरी ले चलो जैसी कठोरताई तुमने पहिले मथुरा में रहकर की थी वही बात अबभी करने चाहते हो यशोदा अतिविलाप करके बोली हे देवकी बहिन तुम मुझे श्यामसुन्दर की दूध पिलानेवाली समझकर अपने साथ लेचलो सिवाय दर्शन करने मोहनीमूर्तिके तुमसे भोजन व वस्त्र न लेऊंगी॥

दो० मेरे घर गोधन सबै जो चाहो सो लेव। मनमोहन को नयन भरि प्रतिदिन देखन देव॥

जब राधाप्यारीने सुना कि श्यामसुन्दर हमलोगोंको बिदा करके आप द्वारका जाया चाहते हैं तब वह अतिविलाप करके मुरलीमनोहर से बोलीं एकबेर तुम मुझे वृन्दावन छोड़कर मथुरा चले गये थे सो मेरी यह दशा हुई अब फिर उसीतरह मेरा प्राण लिया चाहते हो इसलिये अब मैं तुम्हारा चरण नहीं छोड़ूंगी दूध का जला हुआ छाछ फूंककर पीता है जिसतरह सोलह हजार एक सौ आठ स्त्रियां तुम्हारी सेवा करती हैं उसीतरह मुझ को भी दासी समझकर अपनी टहल में रक्खो जब त्रिभुवनपति ने यह दशा व्रजवासियों की देखकर समझा कि ये लोग मेरा पीछा नहीं छोड़ कर द्वारका चला चाहते हैं तब अपनी माया फैलाकर उन लोगोंका मन इसतरह फेर दिया कि समझाने बुझाने से वृन्दावन जाने वास्ते माना उस समय श्यामसुन्दर नन्द व यशोदा आदिक सब छोटे बड़ों को अनेक तरह का भूषण व वस्त्र व रत्नादिक देकर बिदा किया॥

चौ० श्रीवसुदेव महा सुरज्ञानी। व्रजवासिन से बोलत बानी॥
तुमतो प्राण समान हमारे। तुमसे कैसे होहुँ नियारे॥
या विधि कहत प्रेमकी बाता। नयन नीर भीजे सब गाता॥

दो० व्रजवासी व्रजको चले सब गोधन ले साथ। गृह आये आनन्दसों माखन प्रभु यदुनाथ॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित बिदा होती समय जैसा विलाप नन्द व यशोदा व राधा आदिक ने किया था वह मुझसे कहा नहीं जाता जब केशवमूर्ति द्वारकापुरी में पहुँचे तब सब छोटे बड़ों ने प्रसन्न होकर मंगलाचार मनाया व देवताओं ने आकाशसे द्वारकापुरी पर फूल वर्षाये॥

पचासीवां अध्याय।

वसुदेवजीको श्यामसुन्दरकी स्तुति करना॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जिसतरह श्याम व बलराम अपने मरे हुये भाइयों को लिवा लाये थे वह कथा कहते हैं सुनो एकदिन राम व कृष्ण दोनों भाई प्रातःकाल उठकर जैसे माता व पिताके चरणोंको दण्ड-वत् करने गये वैसेही वसुदेवजी ने अपना शिर श्यामसुन्दर के चरणोंपर

घर दिया यह हाल देखकर मुरलीमनोहर बोले हे पिता आप मेरे चरणों पर गिरके मुझे क्यों दोष लगाते हो तब वसुदेवजी ने हाथ जोड़कर विनय की कि हे कृष्ण तुम परब्रह्म परमेश्वर का अवतार होकर जन्म व मरण से कुछ प्रयोजन नहीं रखते व तुम्हारे आदि व अन्तको कोई पहुँचने नहीं सक्ता आजतक मैं तुम्हारी महिमा नहीं जानता था अब ऋपीश्वरों के कहने से मुझे विश्वास हुआ कि आप त्रिलोकीनाथ हैं व सब जीवों में तुम्हारा प्रकाश रहता है देखो सूर्य देवता तुम्हारे तेज से प्रकाशित रहकर सब जगह में उजियाला करते हैं जिस जल से सब जड़ व चैतन्य जीवों का पालन होता है उसे तुम्हारा रूप समझना चाहिये व चन्द्रमा जो अपनी किरण से अमृत वर्षाकर संसारी जीव व वृक्षोंको सुख देते हैं व वायु चलने से जीवों को आराम मिलताहै व पर्वत अपने बोझ से पृथ्वी को दबाये रहकर हिलने नहीं देते व गंगा व समुद्रादिक सदा बहकर कभी नहीं सूखते सो उनको भी केवल तुम्हारी कृपासे यह सामर्थ्य हुई है व जितने जीव जड़ व चैतन्य संसार में दिखलाई देते हैं उन सब को तुम्हारी आज्ञा व इच्छा से ब्रह्मा ने उत्पन्न किया है व विष्णु भगवान् पालन करके महादेवजी उनका नाश करते हैं व आप आदिपुरुष भगवान् का अवतार ब्रह्मा व विष्णु व महेश से भी श्रेष्ठ हैं व आपकी माया ऐसी बलवान् है जिसने सब जगत् को मोहलिया इसलिये तुमको कोई पहिंचानने नहीं सक्ता बिना तुम्हारी शरण आये मनुष्य को संसारी मायाजाल से छूटना कठिन है जिसतरह बाजा बजानेवाला अपने मन माना उसमें से राग व रागिनी निकालता है उसीतरह आप संसारीजीवों की बुद्धि अपने अधीन रखकर जैसा चाहते हो वैसा कर्म उनसे कराते हो व तुम्हारे एक एक रोम में हजारों ब्रह्माण्ड बँधे होकर तुम्हारे भेद को कोई जानने नहीं सक्ता आजतक मैं अपने अज्ञान से तुमको पुत्र समझता था अब नारदमुनि के कहने से मुझे विश्वास हुआ कि आप किसी के पुत्र व पिता व भाई व मित्र नहीं हैं केवल पृथ्वी का बोझा उतारने व दैत्य व अधर्मी राजाओं को मारने व हरिभक्तों को सुख देनेवास्ते यदुकुल में

अवतार लिया है सो मुझे ऐसा ज्ञान देव जिसमें तुमको अपना पुत्र न जानकर आदिपुरुष समझूं व जिसतरह आपने अजामिल ऐसे बहुत पापियों को तारकर मुक्ति दी है उसीतरह मुझपर भी दयालु होकर भवसागर पार उतार दीजिये व जबतक संसारमें जीता रहूं तबतक सिवाय ध्यान व स्मरण तुम्हारे के मायाजालमें न फसूं॥

चौ० तुमहीं सबके सिरजनहारे। पांच तत्त्व हैं अंश तुम्हारे॥

दो० जन्मसमय जान्यो इत्यों ब्रह्मरूप मनमाहिं। सो माया के मोहमें ज्ञान रह्यो कछु नाहिं॥

जब श्यामसुन्दर ने यह स्तुति अपनी सुनी तब हँसकर बोले हे पिता तुमको जो बात जाननी उचित थी वह तुमने समझकर कही अब अपने कहने पर स्थिर रहकर मेरा प्रकाश सब जीवों में एकसा समझा करो तो मेरी माया तुमपर नहीं व्यापैगी यह बात सुनकर वसुदेवजीको ऐसा ज्ञान हुआ कि उसीदिन से श्याम व बलराम को पुत्रभाव छोड़कर ईश्वररूप समझने लगे व हरिचरणों में लीन होकर जीवन्मुक्त होगये फिर एक दिन मुरलीमनोहर ने देवकीसे कहा हे माता तुम्हारा ऋण मेरे ऊपर बड़ा है इसलिये जो कुछ मांगो सो देवें यह वचन सुनते ही देवकी ने रोकर कहा हे बेटा तुम परब्रह्म परमेश्वरका अवतार हो जिसतरह तुमने अपने गुरुका मरा हुआ बेटा लादिया था उसीतरह मेरे छवों बालक जो कंस अधर्मीने मारडाले हैं लादेव तो मेरा शोच छूटजावै॥

दो० तिहिकारण जान्यों तुम्हें अपने मन विश्वास। कर्त्ता हौ सब सृष्टिके मालन प्रभु सुखरास॥

चौ० यह सुनि बोले कृष्णमुरारी। सुनो मातु तुम बात हमारी॥
जो इच्छा तुम्हरे मनमाहीं। प्रभु पूरण करिहैं क्षणमाहीं॥

ऐसा कहकर श्याम व बलराम सुतललोकमें गये उनको देखतेही राजा बलि आगे से जाकर दोनों भाइयोंके चरणोंपर गिरपड़ा व पीताम्बर राह में बिछवाता हुआ बड़े आदरभाव से अपने घर ले जाकर जड़ाऊ सिंहासन पर बैठाला व दोनों भाइयोंके चरण धोकर चरणामृत लिया और जल अपने शिर व आंखोंमें लगाकर सब घरवालों पर छिड़क दिया॥

दो० बलि राजा चाहत हतो हरि चरणनकी रैन। श्रीमाखन प्रभु दर्शते तन मन पायो चैन॥

राजा बलिने विधिपूर्वक पूजा श्याम व बलरामकी करके सुगन्धादिक उनके अंगपर लगाया व पुष्पांका गजरा व मोतियोंकी माला गले में पहिनाकर छत्तीस प्रकारके ब्यंजन भोजन कराया व बड़े हर्ष से राम व कृष्णके चँवर हिलाने लगा व हाथ जोड़कर इसतरह पर स्तुति की हे दीनानाथ जिन चरणों का दर्शन ब्रह्मादिक देवता व बड़े बड़े योगी व ऋषीश्वरों को जल्दी ध्यानमें नहीं मिलता सो आपने दयालु होकर उन्हीं चरणोंसे मुझ गरीब की झोपड़ी पवित्र की इसलिये अपने बराबर दूसरे का भाग्य नहीं समझता जब प्रह्लाद मेरा दादा व शेषनागजी तुम्हारे भेदको नहीं पहुँचसके तब मुझ अज्ञानको क्या सामर्थ्य है जो तुम्हारी महिमा व स्तुति वर्णन करने सकूं जिसतरह आपने दयालु होकर घर बैठे अपने चरणों का दर्शन दिया उसीतरह मेरी स्त्री व लड़केबालों को घर व धनसमेत जो मैं भेंट करता हूं लीजिये व मुझे अपना दास समझकर अपने आनेका कारण वर्णन कीजिये यह आधीन वचन सुनकर केशवमूर्ति ने कहा हे राजा बलि एकदिन मरीचि ऋषीश्वर के छवों पुत्रोंने तरुणाईके गर्वसे ब्रह्माजीकी हँसी की थी इसलिये ब्रह्माने क्रोधित होकर उनको ऐसा शाप दिया कि तुमलोग दैत्ययोनिमें जन्म लेव उसी कारण उन छवों बालकों ने पहिले हिरण्याक्ष व हिरण्यकशिपुके यहां उत्पन्न होकर फिर मेरी माताके पेटसे जन्म पाया जब राजा कंसने उन छवों बालकोंको मार डाला तब वह तुम्हारे घर आनकर उत्पन्न हुये अब देवकी माता हमारे भाइयों के वास्ते बहुत शोच करती है इसलिये मैं उन को लेने आया हूं यह वचन सुनतेही राजा बलि ने बड़े हर्ष से जैसे उन छवों बालकोंको लादिया वैसे त्रिभुवनपति उन्हें अपने साथ लेकर द्वारका में चले आये जब देवकी ने छवों बेटों को देखा तब बड़े प्रेमसे उठाकर दूध पिलाने लगी ॥

चौ० बारबार निज कंठ लगावै। राम कृष्णको हांसी आवै ॥

उससमय वसुदेवजी व देवकी को विश्वास हुआ कि श्याम व बलराम परब्रह्म परमेश्वरका अवतार हैं यह समझकर उन्हें बड़ा हर्ष हुआ व

श्यामसुन्दरकी इच्छानुसार उन छवों बालकोंको ज्ञान उत्पन्न होकर अपने पूर्वजन्म की सुधि आई तब वह अपनी माता व श्याम व बलरामको दण्डवत् करके उसी समय देवलोकमें चलेगये यह दशा देखकर देवकी को बड़ा शोच हुआ पर श्याम व बलराम के समझाने से संसारी व्यवहार झूठा समझकर मनको धैर्य दिया व हरिचरणों में ध्यान लगाकर मन अपना संसारी मायासे विरक्त करलिया ॥

दो० यह चरित्र चितलायकै कहै सुनै जो कोय। श्रीमाखन प्रभु चरणसे कबहूं बिलग नहिं होय॥

छियासीवां अध्याय।

अर्जुन का सुभद्राको बरजोरी से उठा ले जाना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जिसतरह अर्जुनका विवाह सुभद्रा श्यामसुन्दर की बहिनसे हुआ था वह हाल कहते हैं सुनो जब द्रौपदी कुन्ती माताकी आज्ञा से युधिष्ठिर आदिक पांचों भाईकी स्त्री होकर रहने लगी तब नारद मुनिने आनकर युधिष्ठिर आदिक से कहा कि स्त्री व धन के वास्ते बाप बेटा व भाई भाई में सदासे झगड़ा होता आया है इसलिये एक उपाय बतलाये देता हूं उसके करने से तुम पांचों भाइयों में द्रौपदी के वास्ते विरोध न होगा यह सुनकर युधिष्ठिर आदिक ने कहा हे मुनि नाथ जो आप कहैं सो करैं यह सुनकर नारदमुनि बोले एक वर्षमें तीन सौ साठ दिन होते हैं सो तुम पांचों भाई बहत्तर बहत्तर दिन की पारी बांधकर इस प्रणसे द्रौपदीको अपने पास रक्खा करो कि जब एक भाई की पारी में दूसरा भाई बीच महल द्रौपदी के जावे तो बारह वर्ष तक बन वास करै यह वचन नारदमुनि का पांचों भाई मानकर उसी तरह द्रौपदी को अपने पास रखते थे सो एकदिन ऐसा संयोग हुआ कि द्रौपदी आधी रातको राजा युधिष्ठिर के मन्दिर में थी व उस दिन धनुष बाण अर्जुन का राजा युधिष्ठिर के स्थानमें रक्खा था उसी समय एक ब्राह्मणने आन कर अर्जुनसे कहा कि मेरी गौ चोर चुराकर लिये जाता है सो दिलवा दीजिये यह सुनकर अर्जुनने विचार किया कि इससमय राजा युधिष्ठिर के महलमें अपना धनुष बाण लेने जाता हूं तो बारह वर्ष तक बनमें

रहना पड़ेगा व चोर को मारकर ब्राह्मणकी गौ नहीं लादेता तो क्षत्रिय का धर्म नहीं रहता इसलिये धर्म छोड़ने से वनमें रहना उत्तम है ऐसा विचारतेही अर्जुन उसीसमय राजा युधिष्ठिर के महल में जाकर अपना धनुष बाण लेआया व चोरको मारकर ब्राह्मण की गौ दिलवा दी व प्रात समय अपने वचन प्रमाण संन्यासीरूप धरकर वनमें चला गया व उसने तीर्थयात्रा करते हुये द्वारका पहुँचकर क्या सुना कि सुभद्रा वसुदेवजीकी कन्या महासुन्दरी जो विवाहने योग्य हुई है उसका विवाह रेवतीरमण दुर्योधनसे करना चाहते हैं व श्यामसुन्दरकी इच्छा मुझे देने वास्ते है यह सुनकर अर्जुन ने चाहा कि मेरा विवाह उसके साथ होता तो वहुत अच्छी वात थी जव अर्जुन इसी इच्छा से चार महीना वर्षाऋतुमें अपने को संन्यासी वेषमें छिपाकर राजमन्दिरके निकट मृगछाला विछाकर वैठा तव द्वारकावासी उसे महापुरुष जानकर अपने घर रसोई खिलाने वास्ते लेजाने लगे यह सुनकर एकदिन वलरामजी ने उसको राजमन्दिरमें बुला भेजा व चरण धोकर बड़े प्रेमसे छत्तीस व्यंजन खिलाये जैसे अर्जुन ने सुभद्रा मृगनयनीको देखा वैसे चन्द्रमुखी पर मोहित होकर उसके मिलने वास्ते देवता व पितर मनाने लगा व सुभद्राभी उसके रूपपर मोहित होकर मनमें कहनेलगी यह संन्यासी न होकर कोई राजकुमार मालूम होता है परमेश्वर इसको मेरा पति वनाते तो अच्छा होता ॥

दो॰ अर्जुन भोजन करिचलो मनतो रह्यो लुभाय। कुँवरि सुभद्रा मिलनको लाग्यो करन उपाय ॥

श्यामसुन्दर अन्तर्यामी को अर्जुन अपने भक्त व सुभद्रा के मनका हाल जान कर यह इच्छा थी जिसमें हमारी वहिन अर्जुनसे विवाही जावे पर उन्हों ने रेवतीरमण के डरसे यह वात प्रकट करनी उचित नहीं जानी जव एकदिन कथा सुननेके वहाने से अर्जुनके पास गये तव उसने त्रिभुवनपति को बड़े आदर भाव से वैठाकर विनय की हे दीनानाथ मुझे सुभद्रा से विवाह करने की वड़ी इच्छा है जिसतरह आप सव मनोरथ मेरे पूर्ण करते आये हैं उसीतरह दयालु होकर यह कामना भी पूरी कीजिये यह सुनकर द्वारकानाथ ने कहा हे अर्जुन तुम थोड़े दिन यहां टिके

शिवरात्रिको सब छोटे बड़े द्वारकावासी सुभद्रासमेत रेवत पहाड़पर महा देवजी की पूजा करने जावेंगे उसदिन तुम भी मेरे रथपर बैठकर वहां जाना जब अवसर मिलै तब सुभद्रा को उठाकर अपने रथपर बैठा लेना व रथ दौड़ाकर हस्तिनापुरको चले जाना कदाचित् कोई सामना करै तो तुम उसके साथ लड़ना इसमें कुछ मेरे खेदका भय न करना यह सुनतेही अर्जुन प्रसन्न होकर वहां टिका रहा जब शिवरात्रिको सब स्त्री व पुरुष द्वारकावासी सुभद्रासमेत रेवत पहाड़पर पूजा करने गये तब संन्यासीरूप अर्जुन भी मुरलीमनोहर के रथपर बैठकर वहां चलागया व धनुष-बाण लेकर रास्ते में खड़ा हुआ जैसे सुभद्रा पूजा करके अपनी सहेलियोंको साथ लिये हुये फिरी वैसे अर्जुनने लाज व संकोच छोड़कर सुभद्रा का हाथ पकड़ लिया व रथपर बैठाकर हस्तिनापुरको चला जब यह बात यदुवंशियों ने सुनकर रेवतीरमणसे कहा तब बलरामजी क्रोधित होकर बोले ॥

चौ० अभी जाय परलय मैं करिहौं। भूमि उठाय माथपर धरिहौं॥
मेरी बहिन सुभद्रा प्यारी। ताको कैसे हरै भिखारी॥
महादण्ड अर्जुन को देहौं। कुँवरि सुभद्राको लै ऐहौं॥

बलरामजी बड़े क्रोध से बहुत यदुवंशियों को साथ लेकर अर्जुन के पीछे जानेवास्ते तैयार हुये तब श्यामसुन्दरने रेवतीरमण के पास जाकर समझाया कि सुनो भाई अर्जुन हमारी फुआका बेटा परम मित्र जाति व कुल में उत्तम होकर बाणविद्या अच्छी जानता है यदुवंशियों में मुझे कोई ऐसा नहीं दिखलाई देता जो उसका सामना करसके सच है अर्जुन ने अनुचित किया पर हमको उसके साथ लड़ना उचित नहीं है किसवास्ते कि बेटी अपनी जातिको देनी चाहिये इससे क्या उत्तम है जो अर्जुन पुराने नातेदारको दीजावे इसलिये आप दयालु होकर क्रोध अपना शान्त कीजिये व अब इस बातकी चर्चा करनी उचित न होकर सामग्री दहेजकी हस्तिनापुर में भेज देनी चाहिये यह सुनते ही बलदाऊजी ने झुंझलाकर हल व मूसल अपना पटक दिया व यदुवंशियों से कहा यह सब काम मुरलीमनोहरका है जो आग लगाकर पानी को दौड़ते हैं इनको अपने

भक्तोंकी प्रसन्नताके सामने लाजका विचार नहीं रहता इन्हों ने सिखला दिया होगा तब अर्जुन सुभद्राको उठालेगया नहीं तो उसको क्या सामर्थ्य थी जो ऐसा अनुचित करता मैं अपने भाई की आज्ञा टालने नहीं सक्ता इसलिये जैसा यह कहते हैं वैसा करो यह कहकर बलरामजी ने बहुतसा द्रव्य व भूषण व वस्त्र व हाथी व घोड़ा व रथ व दासी व दासादिक को संकल्प करके दहेज हस्तिनापुर में भेज दिया व अर्जुन अपने घर पहुँचकर वेदानुसार सुभद्रा से विवाह करके संसारी सुख उठाने लगा इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित देखो नारायणजी अपने भक्तों का ऐसा मान रखते हैं इतनी क्षमा संसारी मनुष्य भी नहीं करसक्ता अब मैं दूसरा हाल उनकी महिमा का कहताहूं सुनो मिथिला नगरी में बहुलाश्व नाम राजा परमभक्त मनसा वाचा कर्मणा से अपने को दास लक्ष्मीपतिका समझताथा व उसी नगर में श्रुतदेव नाम ब्राह्मण हरिभक्त रहकर आठोंपहर उनके स्मरण व ध्यान में मग्न रहता था विना मांगे जो कुछ मिलता उसी में सन्तोष रखकर किसी से कुछ नहीं मांगता था सो नित्य रातको दोनों परमभक्त आपस में बैठकर यह विचार किया करते थे कि कल्ह वैकुण्ठनाथ के दर्शनवास्ते द्वारका चलकर अपना जन्म स्वार्थ करेंगे प्रातसमय वहां न जाकर कहते थे कि श्यामसुन्दर अन्तर्यामी दीनदयालु आप यहां आनकर दर्शन देते तो बहुत अच्छा होता जब उन दोनों की सच्ची भक्ति त्रिभुवनपति ने देखी तब वह मुझे व नारदमुनि व वेदव्यास व वशिष्ठ व अगस्त्य व देवल व वामदेव व अत्रि व परशुरामजी आदिक ऋषीश्वरों को अपने साथ रथपर बैठाकर मिथिलानगरी को चले रास्ते में जो देश व नगर मिलता था वहां के राजा आगे से आनकर अनेकतरहकी सौगात देते व उनके दर्शन से अपना अपना जन्म स्वार्थ करते थे॥

दो॰ मारवाड़ पंचाल ह्वै माखनप्रभु यदुराय। पहुँचे अति आनन्द सों मिथिला नगरी जाय॥

जब श्यामसुन्दर के आने का समाचार राजा बहुलाश्व व श्रुतदेव ब्राह्मण ने सुना तब आगे जाकर उन्हें दण्डवत् की जिस स्थानपर चरण

केशवमूर्तिका पड़ता था वहां की धूर उठाकर वह दोनों परमभक्त अपने
शिर व आंखों में लगाते थे हे परीक्षित उस दिन कृष्णचन्द्र आनन्दकन्द
का दर्शन पाकर सव छोटे वड़े मिथिलापुरवासियों को ऐसा सुख मिला
जिसका हाल मुझसे कहा नहीं जाता राजा व ब्राह्मण ने लक्ष्मीपति
के सामने हाथ जोड़कर विनय किया हे महाप्रभु जिसतरह आपने दयालु
होकर अपना दर्शन दिया उसीतरह अपने चरणों से हमारा घर पवित्र
कीजिये यह सुनकर मुरलीमनोहर ने विचारा कि राजा व ब्राह्मण दोनों
मेरे भक्त हैं व इन्हीं की प्रसन्नता वास्ते यहां आयाहूं इसलिये दोनों केश
जाकर इनका मान रखना चाहिये पहिले राजा के घर जाने से ब्राह्मण
कहैगा मुझे कंगाल जानकर मेरे घर नहीं आये राजा धनपात्रको मुझसे
अच्छा जाना व ब्राह्मण के घर प्रथम जाता हूं तो राजा खेद मानकर
कहैंगे श्यामसुन्दर मेरा अपमान करके प्रथम ब्राह्मणके घर चलेगये इस
लिये वह वात करना चाहिये जिसमें दोनों प्रसन्न रहैं ऐसा विचारतेही
त्रिभुवनपति दो स्वरूप अपने रथ व ऋषीश्वरों समेत वनाकर राजा व
ब्राह्मण दोनोंके स्थान पर चलेगये व श्यामसुन्दर की मायासे वहुलाश्व
राजाने समझा कि केवल मेरे घर द्वारकानाथ आये हैं व ब्राह्मणने जाना
कि मुरलीमनोहर ने राजमन्दिर न जाकर हमारे यहां कृपा की है जब
केशवमूर्ति राजमन्दिरपर पहुँचे तव उसने द्वारकानाथ को जड़ाऊ सिंहा
सनपर वैठाकर चरण उनका अपने हाथसे धोया व चरणामृत लेकर वह
जल शिर व आंखों में लगाया और अपने घरवालों पर छिड़क दिया व
सव ऋषीश्वरोंको विलग विलग सिंहासन पर वैठाकर विधिपूर्वक पूजा
श्यामसुन्दर व ऋषीश्वरोंकी की व वहुतसे रत्नादिक लक्ष्मीपतिको भेंट दे
कर चरण उनका प्रेमपूर्वक दावनेलगा व वड़े हर्ष से वोला आज मैं अपने
वरावर किसी दूसरेका भाग्य नहीं समझता देखो जिन चरणों का दर्शन
महादेव आदिक देवताओं व वड़े वड़े योगीश्वरों को जल्दी ध्यान में
नहीं मिलता वही चरण आज मेरी गोदमें विराजते हैं व वैकुण्ठनाथने
मुझे अपना दास समझकर अपने चरणोंसे मेरा घर पवित्र किया इसी

तरह बहुत स्तुति करके राजा बहुलाश्वने श्यामसुन्दर व ऋषीश्वरों को छत्तीस व्यंजन खिलाया व वसुदेवनन्दन को उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहिनाकर चँवर हिलाते समय उनसे विनय की ॥

चौ० मोहिं सनाथ कियो यदुनाथा। दर्शन दियो ऋषिनके साथा ॥

दो० तुमतो जगतनिवास हो माखनप्रभु सुखरास। निजदासनके घर विषे कछु दिन क॰ो निवास ॥

यह दीन वचन सुनकर त्रिभुवनपति अपने भक्तका मनोरथ पूर्ण करने के वास्ते इक्कीस दिन वहां रहे उसे ब्रह्मज्ञान उपदेश किया जब श्यामसुन्दर उस कंगाल ब्राह्मणके घर गये तब श्रुतदेवने कुशाके आसन पर अँगौछा बिछाकर मुरलीमनोहर को बैठा दिया व अपनी स्त्री समेत उनके प्रेममें डूबकर बड़े हर्ष से नाचने लगा व चरण मुरलीमनोहर का धोकर चरणामृत लिया व गंगाजीकी मिट्टीका तिलक वसुदेवनंदन के लगाकर तुलसीदल उनपर चढ़ाया व इमिली व बड़हर व आंवलाआदिक फल जो खट्टे मीठे हैं व मोटा चावल खेतमेंका बिना हुआ व साग पात ले आकर बड़े प्रेमसे त्रिभुवनपति व ऋषीश्वरों के सामने रखदिया व खस की मिट्टी से गंगाजल सुगंधित बनाकर पीने को लेआया तब वैकुण्ठनाथने ऋषीश्वरों समेत आनन्दपूर्वक भोजन किया जब श्रुतदेव हाथ व मुँह वृन्दावनविहारी व ऋषीश्वरों का धुलाकर सुचित्त हुआ तब मुरलीमनोहर के सामने हाथ जोड़कर विनय किया हे महाप्रभु जब से बाल अवस्था भोगकर सयाना हुआ तब से सिवाय स्मरण व ध्यान तुम्हारे चरणों के दूसरा उद्यम नहीं रखता आज आपने कमलरूपी चरणों का दर्शन देकर मुझ कंगाल की इच्छा पूर्ण की जो लोग संसारीजाल में फँसे रहकर धन व परिवार का अभिमान रखते हैं उनको तुम्हारे चरणों का दर्शन स्वप्ने में भी नहीं मिलता व जो तुम्हारे स्मरण व ध्यान व पूजा व हरिचर्चा व कथा सुनने में प्रीति रखते हैं वह संसार में अपनी कामना पाकर अन्तसमय मुक्त होते हैं इसलिये आपको हजारों दण्डवत् करता हूं जो आज्ञा देव सो करूं ॥

दो० हाथजोड़ बिनती करों धरों चरणपर माथ। म्वहिं अनाथको दरश दे कीन्ह्यो नाथ सनाथ ॥

ऐसी प्रीति व भक्ति उस ब्राह्मण की देखकर श्यामसुन्दर ने कहा हे द्विजराज हम तुमको अपना निज भक्त व मित्र जानकर बहुत प्यारा समझते हैं व जो मनुष्य वेद व शास्त्र पढ़े हुये ब्राह्मणोंकी पूजा करता है उसका मनोरथ हम तुरन्त पूर्ण करदेते हैं सब ऋषीश्वर तुमपर दयालु होकर अपना दर्शन देने यहां आये हैं जिसतरह तीर्थ नहाने व देवस्थानके दर्शन करनेसे मनुष्य पवित्र होजाताहै उसीतरह इन ऋषीश्वरोंका चरण देखने से शरीर में पाप नहीं रहता सो तुम इनकी सेवा अच्छीतरह करो मैं अपने तनुसे भी ब्राह्मणको अधिक प्यारा जानताहूं जो मनुष्य ब्राह्मण की सेवा नहीं करता उसे मूर्ख समझना चाहिये ज्ञानीलोग ब्राह्मणको परमेश्वर तुल्य जानते हैं व मनुष्य तनुमें जो शुभ काम बन पड़े उसीको उत्तम समझना चाहिये नहीं तो यह शरीर एक दिन नाश होकर कुछ काम नहीं आता इसलिये तुमको वेदानुसार हमारे स्मरण व पूजनमें रहना चाहिये त्रिभुवनपति इक्कीस दिन श्रुतदेव ब्राह्मणके घरमें ऋषीश्वरों समेत रहकर ज्ञान समझाने उपरांत द्वारकापुरी को चले व राह में से सब ऋषीश्वरों को विदा कर दिया ॥

दो० निजगृह पहुँचे आनकर माखन प्रभु यदुराय। पुरवासी प्रफुलित भये दरश परश सुखपाय ॥

सत्तासीवां अध्याय।

त्रिभुवनपति की स्तुति ॥

राजा परीक्षितने इतनी कथा सुनकर पूंछा हे शुकदेवस्वामी द्वारकानाथ ने श्रुतदेव ब्राह्मणसे कहा कि तुम शास्त्रानुसार मेरा ध्यान व पूजन किया करो सो मुझे यह बड़ा सन्देह है कि परब्रह्म निराकार रूपकी स्तुति जो कुछ रूप व रेख न रहकर देखने में नहीं आते वेदने किसतरह की होगी विस्तार से कहकर मेरा सन्देह छुड़ा दीजिये यह बात सुनकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित वेदमें स्तुति वैकुण्ठनाथकी बहुत लिखी है मैं इतनी सामर्थ्य नहीं रखता जो सब गुण उनका वर्णन करसकूं पर थोड़ासा हाल जो मुझे मालूम है सो कहता हूं सुनो जिस आदि निराकार ज्योति ने बुद्धि व इन्द्री व प्राण व धर्म व अर्थ व काम व मोक्ष को बनाया है वह

महाप्रभु सदा निर्गुणरूप रहकर ब्रह्माण्ड रचती समय विराट्रूप धारण करके शेषनाग पर शयन करते हैं उनकी कथा इसतरह पर है कि सनक व सनन्दन व सनातन व सनत्कुमार चारों भाई परमेश्वर का अवतार सृष्टि होने से पहिले ब्रह्माकी इच्छानुसार उत्पन्न हुये हैं सो उनके स्वभाव में राजस व तामसका प्रवेश न होकर सदा वह सतोगुणरूप रहते हैं व उन में सदा एकलीला व कथा परमेश्वर की कहता है व तीन भाई सुनते हैं जो कुछ स्तुति आदिज्योति भगवान्की उन्होंने की है वही बात नर नारायण ने नारदमुनि से सतयुगमें की थी वही कथा हम तुमसे कहतेहैं सुनो जिस तरह मकड़ी अपने मुखसे जाला निकालकर फिर उसे खाजातीहै उसीतरह सब जीव जड़ व चैतन्य तीनोंलोक के परमेश्वर की इच्छासे पलक भांजने भर में उत्पन्न होकर फिर उन्हींके रूप में समाजाते हैं उस समय महाप्रलय होनेसे चारोंओर पानी दिखलाई देकर केवल आदिज्योति भगवान् रहि जाते हैं जब उनको संसार रचने की फिर इच्छा होती है तब उनकी स्वासासे चारों वेद उत्पन्न होकर जिसतरह प्रातसमय वन्दीगण राजाओं की स्तुति करके जगाते हैं उसी तरह वह वेद दिव्यरूप चतुर्भुजी स्वरूप के सामने हाथ जोड़कर जगाने वास्ते विनय करते हैं ॥

दो० त्यागो निद्रा योगकी जागो हरी मुरार। निज माया विस्तारिकै सिरजो पुनि संसार ॥

हे परब्रह्म अविनाशी पुरुष तुम जन्म लेने व मरने व जागने व सोने से रहित निर्दोष रहकर आठों पहर चैतन्य रहते हो व चौदहों भुवन तुम्हारी माया से उत्पन्न होकर वह माया आपको नहीं व्यापती तुम्हारा आदि व अन्त व मध्य न रहकर आपकी महिमाको कोई पहुँच नहीं सक्ता व तीनों लोकों में तुम्हारे समान कोई सुन्दर न होकर आप सदा प्रसन्न रहते हैं व सब जीवों की उत्पत्ति व पालन व नाश तुम्हारी इच्छासे होता है और जितनी दया तुम अपने भक्तों पर रखते हो उतनी प्रीति व रक्षा कोई देवता अपने भक्त की नहीं करने सक्ता व तुम सब में संयुक्त व सब वस्तु से अलग रहकर रजोगुण व तमोगुण व सतोगुणसे कुछ प्रयोजन नहीं रखते केवल तुम्हारे स्मरण व ध्यान करने से संसारी जीव मुक्तपदवी

पर पहुँचते हैं व तुम्हारा नाम जपने के तुल्य यज्ञ व तीर्थ व दान व जप तप व आचार कोई धर्म नहीं होता व ब्रह्मा व महादेव आदिक सब देवता तुम्हारे कमलरूपी चरण के ध्यान में आठोंपहर लीन रहते हैं इसी कारण उन्होंने ऐसी पदवी पाई चौदहों लोक में तुम्हारे समान कोई नहीं है आपकी विना कृपा संसारी मायाजाल से कोई छूट नहीं सक्ता जब बड़े बड़े योगी व ऋषीश्वर सब इन्द्रियों को अपने वश रखकर तुम्हारा स्मरण व ध्यान सच्चे मन से करते हैं तब आपकी दया से उनकी मुक्ति होती है।

दो० आदि अन्त सब जगत के तुमहीं पुरुष अनन्त। सदा एकरस रहतहौ माखन प्रभु भगवन्त॥

हे दीनानाथ अनेक जीव शिशुपाल व कंस व रावण व हिरण्यकशिपु आदिकने तुम्हारे साथ शत्रुता की थी सो वह लोग अपने प्राण के डाले तुम्हारा ध्यान करने में भवसागर पार उतर गये व बहुत जीव तुम्हारी कथा व कीर्तन की चर्चा आपस में रखकर अपना जन्म स्वार्थ करते हैं उनमें उत्तम उसी को समझना चाहिये जो आठों पहर तुम्हारे चरण कमल का ध्यान रखकर संसारी माया से विरक्त रहता है व सिवाय भक्ति के मुक्ति को भी चाहना नहीं रखता व सत्संग के बराबर दूसरी वस्तु अच्छी नहीं समझता व साधु वैष्णव की सेवा व सत्संग प्रेमपूर्वक करता है वह मनुष्य तुम्हारी माया का कुछ डर न रखकर सीधा वैकुण्ठ में जहां सूर्य व चन्द्रमा का प्रवेश नहीं रहता विमान पर बैठकर चला जाता है॥

दो० वह जन परम पुनीत है पावत पद निर्वान। अंतकाल तुमको मिलत माखन प्रभु भगवान॥

हे वैकुण्ठनाथ जो मनुष्य अपने अज्ञान से तुम्हारा स्मरण व ध्यान छोड़कर दूसरे देवता को पूजता है वह आवागमन में फँसा रहकर मुक्ति पदवी नहीं पाता व आपके रोम रोम में हजारों ब्रह्माण्ड बँधे रहकर किसी जीव का हाल तुम से छिपा नहीं रहता जिस तरह सोने का अनेक गहना बनाने से विलग विलग नाम होकर सब गहना गलाने पर केवल सोना रहजाता है उसी तरह तुम्हारा प्रकाश सबके तनु में रहकर देवतादिक जो पूजते हैं वह पूजा भी आपको पहुँचती है इसलिये जो लोग ज्ञान की

दृष्टि से जड़ चैतन्य में तुम्हारा रूप एकसा देखकर संसारी तृष्णा छोड़ देते हैं उन्हीं का कल्याण होता है ॥

दो० यद्यपि ज्ञानप्रकाशते बहुविधि करै बखान। भक्ति बिना पावै नहीं कबहूं पद निर्वान॥

हे दीनानाथ ब्रह्मा भी बिना शक्ति व आज्ञा तुम्हारी संसार रचने की सामर्थ्य नहीं रखते जगत् में सब व्यवहार झूठा होकर केवल तुम्हारा नाम सच्चा है जिसतरह अग्नि का ढेर एक जगह रहकर उसमेंसे चिनगारियां उड़ती हैं उसीतरह अग्निरूपी ढेर आप होकर सब जीवों को चिनगारी के समान समझना चाहिये जैसे एक चिनगारी आग सुलगाने से बहुत होजाती है वैसे चिनगारीरूप जीव आपकी भक्ति करने से तुम्हारे तुल्य होजाता है ॥

चौ० योगेश्वर जो तुमको ध्यावैं। श्वास रोंकि ब्रह्माण्ड चढ़ावैं॥
हृदयकमल में तुमको देखैं। अद्भुत रूप अनूपम पेखैं॥
भक्त तुम्हारे पढ़त पुराना। वे तुमको पावत भगवाना॥
तुम्हरी भक्ति धरैं मनमाहीं। चार पदारथ चाहत नाहीं॥

दो० हँसत तुम्हारे ध्यान में रोम रोम हर्षाय। देखि दशा संसार की रुदन करत पछिताय॥

चौ० जो तुम कहो सन्तहितकारी। हमसे उत्पति भई तुम्हारी॥
तुम हमको कैसी विधि जानो। जो अस्तुति यहि भांति बखानो॥
अहो नाथ यह कृपा तुम्हारी। नातो केतिक बुद्धि हमारी॥
हमहूं यद्यपि वेद कहावैं। तदपि तुम्हारो भेद न पावैं॥
तुम्हरो रूप न देखो जाई। पन्थ तुम्हारो देत बताई॥
ज्ञान भक्ति वैराग जु होय। तब तुमको पहिंचानत कोय॥
जो जन विषयभोग परिहरै। भक्तियोग निज मनमें धरै॥

दो० तुम चरणनके ध्यान में मगन रहैं दिनरैन। तुम्हरी अमृतकथा सुनि लहैं सदा सुख चैन॥

हे वैकुण्ठनाथ जो मनुष्य संसार में मनुष्यतनु पाकर इन्द्रियों के वश रहता है व स्त्री व पुत्र के प्रेम में लपटकर तुम्हारी भक्ति नहीं करता उसे अभागी व मुर्दे के समान समझना चाहिये वह मनुष्य चौरासी लाख योनिमें जन्म पाकर बड़ा दुःख पाता है व सब जीव पुराने होकर अपने

कर्मानुसार अनेक तनुमें दुःख व सुख भोगते हैं जिस तरह तालाव
पानी प्रतिदिन कम होताजाताहै उसी तरह गृहस्थी करनेवाले की
व सामर्थ्य घटती जाती है ॥

दो० याही विधि प्राणी सबै बूड़त माया माहिं । नाहीं तो वह आपसे काहू व्यापत

चौ० मनुष्यजन्म दुर्लभ जगमाहीं । देवनहूं को प्रापत नाहीं ॥
सकल देव यह मनसा करैं । मानुष है भवसागर तरैं ॥
नरशरीर नौकासम जानो । वेदपुराण डांड़ही मानो ॥
केवटरूप गुरु है सोई । नौकापार लगावत जोई ॥
या विधि सों जो पार न होई । आतमघाती समझो सोई ॥
जबतक भक्ति करै नहिं कोई । भवसागर से पार न होई ॥

दो० याते कीजै शुभ करम यही धर्मकी रीति । माखन प्रभु करतारसों जबलौं उपजै प्रीति
अष्टसिद्धिको देखिकै लोभ करै जो कोय । ताहि पदारथ भक्तिको कैसे प्रापत
यह अस्तुति वेदन कहीं अपनी बुद्धि प्रमान । निर्गुणरूप अनूपको कैसे करे

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित यही स्तुति
कर चारों वेद चतुर्भुजी भगवान्को सृष्टि रचनेवास्ते जगाते हैं व सनक
दिक आठों पहर यही चर्चा आपस में रखते हैं व यही बात नरनाराय
ने नारदजी से कही थी व नारदमुनि ने वेदव्यास हमारे पिता से
व उन्होंने विस्तारपूर्वक मुझे पढ़ाई व मैंने वही हाल जो सब वेद व शा
का सार है तुमको सुनाया और यही ज्ञान श्यामसुन्दरने राजा बहुला
व श्रुतदेव ब्राह्मण को बतलाया था ॥

दो० यह अस्तुति जो रैन दिन कहै सुनै चितलाय । ताके पाप रहैं नहीं विष्णुलोक

अठासीवां अध्याय ।

भस्मासुर दैत्यकी कथा ॥

राजा परीक्षित ने इतनी कथा सुनकर शुकदेवजी से विनय की
मुनिनाथ मुझे संसारमें यह बात उलटी दिखलाई देती है कि नाराय
वैकुण्ठनाथ लक्ष्मीपति होकर अपने भक्तों को ऐसा कंगाल रखते हैं
उनको अच्छीतरह भोजन व वस्त्र भी नहीं मिलता व महादेवजी
घदों की तरह अपना वेष रखकर सर्पों की सेल्ही व मुण्डमाला गले

पहिने रहते हैं और उनके भक्त व सेवक धनपात्र होकर बड़े आनन्द से अपना जन्म बिताते हैं इसका क्या कारण है यह सन्देह मेरा छुड़ा दीजिये यह बात सुनकर शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित यह तुमने बहुत अच्छी बात पूछी इसका हाल सुनो॥

दो० सदा तीनपन बसत हैं शिवकी मूरतिमाहिं। सकल कामना देत हैं एक मुक्ति को नाहिं॥

हे राजन् त्रिभुवनपति भगवान् विरक्त रहकर संसारी किसी वस्तुकी चाहना नहीं रखते इसलिये उनके भक्तलोग भी नाश होनेवाली संसारी वस्तु को नहीं चाहते व लक्ष्मीपति ऐसी इच्छा नहीं करते कि हमारे भक्त संसारी मायाजालमें लपटकर नष्ट होवें तुमने सुना होगा कि कई मनुष्य महादेव के भक्तों ने उनसे वरदान पाकर उन्हींके साथ शत्रुता की थी इसीकारण परब्रह्म परमेश्वर मायरूपी धन जिसके मदमें मनुष्य अन्धा होकर अनेक कुकर्म करता है अपने भक्तों को नहीं देते हे राजन् जो प्रश्न तुमने हमसे किया है यही बात एक बेर राजा युधिष्ठिर तुम्हारे दादा ने श्रीकृष्णजी से पूछी थी तब श्यामसुन्दरने कहा हे राजन् मायारूपी लक्ष्मी मिलने से जिसमें बहुत विकार भरा है मनुष्य संसारी सुख में लपट जाते हैं व जब तक मुझे याद नहीं करते तबतक आवागमनसे नहीं छूटते इसलिये अपने भक्तों को नहीं देता जिसमें वे लोग संसारी सुख में लपटकर परलोक का शोच भूल न जावें इसवास्ते जो मनुष्य मेरी शरण पकड़ताहै उसका धन व अभिमान कृपा की राह हरलेता हूं जब निर्धन होने से स्त्री व पुत्र व भाई आदिक सब परिवारवाले उसका निरादर करते हैं तब वह उनका प्रेम छोड़कर आनन्द से साधु व वैष्णवका सत्संग करता है जब महापुरुषोंकी संगति से ज्ञान पाकर मेरे भजन व स्मरण में ध्यान लगाता है तब हम उसको मुक्ति पदवी देते हैं व ब्रह्मादिक दूसरे देवताओं की पूजा करने से जो लोग स्वर्गादिक में जाते हैं वह सुख सदा स्थिर नहीं रहता व मेरी भक्ति व पूजा करनेवाले विभीषण व अर्जुन व सुग्रीव व प्रह्लाद व अम्बरीष आदिक संसारी सुख भोगकर अटलपदवी पाते हैं इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित महादेव आदिक दूसरे देवता अपनी पूजा

करनेसे प्रसन्न होकर छोड़ देने में खेद मानते हैं व वैकुण्ठनाथ सदा सात्त्विकी स्वभाव रहकर किसीको शाप नहीं देते ॥

दो० बहु असुरनको रुद्रजू दिये तुरत वरदान। तिन सन्तनसों आपही पायो कष्ट निदान॥

हे परीक्षित वाणासुर की कथा तुम सुन चुके हौ कि शिवशंकरसे वरदान पाकर उन्हीं के साथ लड़ने आया था अब हम दूसरे दैत्य का हाल कहते हैं सुनो एक दिन वृकासुर दैत्य महामूर्ख शकुनीका वेटा तप करनेकी इच्छा रखकर घरसे वाहर निकला जब उसने राहमें नारदमुनि को आते देखा तब दण्डवत् करके पूछा हे मुनिनाथ मुझे तप करनेकी इच्छाहै सो तुम दयालु होकर वतलाओ कि ब्रह्मा व विष्णु व महेश तीनों देवताओंमें जो तुरन्त प्रसन्न होकर वरदान देते हों उनका तप करूं यह बात सुनकर नारदजी बोले हे वृकासुर इन तीनों देवताओंमें महादेवजी तुरन्त वरदान देते हैं व थोड़ासा अपराध करने में अपना क्रोध क्षमा नहीं करते देखो उन्होंने सहस्रार्जुन के तप करने से प्रसन्न होकर उसको हजार भुजा दी थीं इसलिये तुम शिवजी का तप करो तो जल्दी फल मिलैगा जब नारद मुनि यह वात कहकर चले गये तव वृकासुर उसी समय केदारेश्वर की ओरगया॥

दो० शिवकी मूरति थापिकरि अग्निकुण्डके तीर। बैठ्यो आसन मारके होमन लग्यो शरीर॥

जव सात दिन व रात में उसने अपने अंगका सब मांस छुरी से काटकर हवन कर दिया व आठवें दिन स्नान करके अपना शिर काटने चाहा तव भोलानाथ ने अग्निकुण्ड से निकलकर उसका हाथ पकड़ लिया व अपने कमण्डलु का जल उसपर छिड़क दिया जब उसके प्रताप से वृकासुर का अंग दिव्य रूप होकर कुन्दन के समान चमकने लगा तब शिवजी ने कहा हे वृकासुर हम तेरी पूजा से प्रसन्न हुये अब तुझे जो इच्छा हो वरदान मांग यह वचन सुनतेही वृकासुर ने हाथ जोड़कर विनय की हे महाप्रभु मुझे ऐसा वरदान दीजिये कि जिसके शिरपर अपना हाथ रख दूं वह उसी समय जलकर राख होजावै यह बात सुनकर शिवजीने विचारा कि यह अधर्मी दैत्य ऐसा वरदान मांगकर संसारी जीवों को दुःख देने चाहता है पर क्या करूं वचन देचुका यह समझकर महादेवजी बोले

बहुत अच्छा हमने मुँह मांगा वरदान तुमको दिया जब वह दैत्य यह वरदान पाकर प्रसन्न हुआ तब उस अधर्मीने पार्वतीजीका रूप देखकर विचार किया इससे दूसरी बात उत्तम नहीं जो मैं अपना हाथ भोलानाथके शिर पर धरकर उन्हें जलादूं व पार्वतीको अपने घर लेजाऊं जब वह पापी ऐसा विचार कर शिवजी के मस्तकपर हाथ रखनेवास्ते चला तब महादेव जी अन्तर्यामी वहाँसे भागकर सबलोक व दशों दिशामें गये पर उस दैत्यने उनका पीछा नहीं छोड़ा जब ब्रह्मादिक कोई देवता शिवजीकी रक्षा नहीं करसके तब वे व्याकुल होकर वैकुण्ठनाथके सामने दौड़े चले गये व दण्डवत् करके हाथ जोड़कर विनय की हे त्रिभुवनपति मैंने यह दुःख अपने ऊपर आप उठाया है जिसमें इस दैत्य पापी के हाथ से मेरा प्राण बचे वह उपाय कीजिये यह दीन वचन सुनतेही नारायणजी भक्तहितकारीने महादेवजी से कहा तुम धैर्य रक्खो मैं इसका यत्न करताहूं ऐसा कहकर वैकुण्ठनाथ ने उसी समय अपने को ब्राह्मणरूप बनालिया व ऋषीश्वरोंकी तरह कमण्डलु व मृगछाला लियेहुये जहां वृकासुर दौड़ा चला आता था वहां जाकर उससे कहा हे वृकासुर तू इतना घबड़ाकर कहां भागा जाताहै अपना समाचार हमसे तो बतलाव जब उस दैत्यने वरदान पाने व अपनी इच्छाका हाल त्रिभुवनपति से कहा तब वैकुण्ठनाथ ऋषीश्वररूप बोले तू बड़ा अज्ञानहै कि महादेवजी की बात जो विष व धतूरा खाये व भूतोंको साथ लिये नंगे फिरा करते हैं मुण्डमाल व सर्पोंका हार पहिनकर शास्त्रानुसार नहीं चलते व श्मशानपर बैठेहुये बौड़होंकी तरह हँसते हैं व नाचते हैं सच्चा मानकर इतना दुःख उठाता है जबसे दक्षप्रजापति ने महादेवको शाप दिया तब से सब बातें उनकी सच्ची नहीं होतीं इसलिये तुम अपने शिरपर हाथ रखकर पहिले उस वरदान की परीक्षा करलेव जब तुम्हारे निकट उनका वचन सच ठहरजावै तब जो चाहना हो सो उनके साथ करना यह सुनते ही वृकासुरने परमेश्वरकी माया से वह वचन सच्चा मान कर जैसे अपने शिरपर हाथ रक्खा वैसे जलकर राखकी ढेरी होगया यह चरित्र देखते ही भोलानाथ प्रसन्न होकर नाचने लगे व देवताओं ने

आकाशसे त्रिभुवनपतिपर फूल वर्षाये व अप्सराओंने नाचकर गन्धर्वों
गाना सुनाया तब उस समय आदिपुरुष भगवान् ने महादेवजी से कहा
ऐसे अधर्मी दैत्यको इसतरह का वरदान देना उचित नहीं है जगद्गुरु
का अपराध करने से वह अपने दण्डको पहुँचा यह बात सुनकर शिवजी
ने विनय की हे महाप्रभु तुम हमारी रक्षा करनेवाले बने हो इसलिये हम
से अपराध भी होजाता है जब भोलानाथ इसीतरह बहुत स्तुति वैकुण्ठ
नाथकी करचुके तब त्रिभुवनपति ने उनको धैर्य देकर विदा किया इतनी
कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले ॥

चौ० रुद्रमोक्ष लीला सुखदाई। जो जन कहै सुनै चितलाई॥
दो० रहै सदा सुखचैन से दुख पावै वह नाहिं। सब पापनसे छूटकर मुक्त होत क्षणमाहिं॥

नवासीवां अध्याय।

भृगुऋषीश्वरका लक्ष्मीपतिकी छातीपर लात मारना॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित एक समय भृगुआदिक सातों ऋषी-
श्वर सरस्वती किनारे बैठेहुये आपस में ज्ञानचर्चा कररहे थे उस समय कई
ऋषीश्वरों ने भृगुजी से पूंछा कि ब्रह्मा व विष्णु व महेश तीनों देवताओं
में कौन बड़ा है जब यह बात सुनकर किसी ने महादेव किसीने विष्णु
किसीने ब्रह्माको बतलाया तब भृगुऋषीश्वरने कहा इन तीनों देवताओं
में जो क्रोध अपना क्षमा करके बुराई के बदले भलाई करै उसीको उत्तम
समझना चाहिये सो मैं जाकर उनकी परीक्षा ले आताहूं ऐसा कहकर
भृगुऋषीश्वर ब्रह्माजीकी सभामें चलेगये व विना दण्डवत् किये उनके
सामने जा बैठे यह देखकर सब ऋषीश्वर व ब्राह्मणों ने जो वहां बैठे थे
अचम्भा माना व ब्रह्माने क्रोध से भृगुकी ओर देखकर शाप देने चाहे
पर बेटा जानकर कुछ नहीं बोले॥

दो० पुत्र आपनो जानकर भये कोपते शांति। प्रथम परीक्षा पिताकी सुत लीन्हीं यहि भांति॥

जब भृगुऋषीश्वर ने रजोगुणवश ब्रह्माको अपने ऊपर क्रोधित देखा
तब वहां से उठकर कैलास पर्वतपर जहां गौरीशंकर विराजते थे गये जैसे
भोलानाथने भृगुऋषीश्वर अपने भाईको आते देखा वैसे खड़े होगये व

हाथ पसारकर गले मिलने चाहा तब ऋषीश्वर ने महादेवजी से कहा तुम अपना कर्म व धर्म छोड़कर श्मशानपर बैठे रहते हो इसलिये मुझे मत छुओ यह अभिमानपूर्वक वचन सुनते ही जब गौरीपतिने क्रोध से त्रिशूल उठाकर भृगुऋषीश्वरको मारने चाहा तब पार्वतीजी ने शिवजी से हाथ जोड़कर विनय की महाराज यह ऋषीश्वर तुम्हारा छोटाभाई है इसका अपराध क्षमा कीजिये जब पार्वती के कहनेसे भृगुऋषीश्वरका प्राण बचा तब भोलानाथको तमोगुणवश देखकर वहांसे विष्णु भगवान् की परीक्षा लेने वास्ते वैकुण्ठको गये वह वैकुण्ठ कैसा है जहां सूर्य व चन्द्रमा का प्रकाश होनेपर भी दिनरात बराबर उजियाला बना रहताहै और वहां सब पृथ्वी सोनहुली व रत्नजटित होकर बारहों महीने तुलसी के वृक्ष व सुगन्धित फूल व उत्तम उत्तम फल लगेरहते हैं व अच्छे अच्छे तड़ाग व बावली आदिक बने होकर उसके किनारे अनेक रंगके पक्षी बोलते हैं जब भृगुऋषीश्वरने बेधड़क बीच महल के जहां वे जड़ाऊ पलँगपर सोगये थे व लक्ष्मीजी उनका पैर दाबती थीं घुसकर एक लात बाईंओर छाती में मारी तब वैकुण्ठनाथ नींदसे चौंककर ऋषीश्वरको देखतेही उनका पैर दाबने-लगे व चरणोंपर गिरकर विनयपूर्वक बोले हे द्विजराज मेरा अपराध क्षमा कीजिये मेरी छाती बड़ी कड़ी है इसलिये आपके कोमल चरणपर अवश्य दुःख पहुँचा होगा मुझे तुम्हारे आनेका समाचार मालूम होता तो आगेसे पहुँचता और आपने दयाकी राह मेरा लोक पवित्र करके यह जो लात मारी है इसलिये सदा इस चरणका चिह्न अपनी छातीपर बना रहने दूंगा इसमें मुझे कुछ लज्जा नहीं है जब भृगु ऋषीश्वर ने ऐसी क्षमा त्रिभुवनपति में देखकर मीठा वचन सुना तब लज्जित होकर उनकी स्तुति करने लगे व लक्ष्मीजी ने लात मारती समय मनमें क्रोध किया था पर वैकुण्ठनाथ के डरसे ऋषीश्वरको कुछ शाप नहीं दिया जब त्रिभुवनपतिने भृगुऋषीश्वर का पूजन करके उन्हें विदा किया तब उन्हों ने सरस्वती किनारे जाकर तीनों देवताओंका हाल अपने साथियों से कहदिया यह समाचार पाते ही सब ऋषीश्वर दूसरे देवताओंका पूजन छोड़कर स्मरण व ध्यान

विष्णु भगवान् का सच्चे मनसे करनेलगे इतनी कथा सुनाकर शुकदेव ने कहा हे परीक्षित एक दूसरी महिमा श्यामसुन्दर की कहते हैं द्वारकापुरी में एक ब्राह्मण बहुत शीलवान् अपने कर्म व धर्म से रहता जब उस ब्राह्मणके यहां एक पुत्र उत्पन्न होकर मरगया तब वह लोथ बालककी राजा उग्रसेनके पास लेजाकर कहने लगा तुम्हारे अधर्म से मेरा पुत्र पिताके सामने मरगया व प्रजालोग दुःख पाते हैं द्वापर कलियुगका लक्षण राजा के पापसे होता है वह ब्राह्मण अनेक दुर्वचन कहने उपरांत मरा हुआ बेटा उग्रसेनके द्वारे पर रखकर अपने घर चला आया इसीतरह सात बालक और उस ब्राह्मण के घर उत्पन्न होकर मर गये सो वह ब्राह्मण उनकी लोथ उसी तरह राजाके यहां रखआया जब नवईं बेर उसकी स्त्रीके गर्भ रहा तब उस ब्राह्मण ने राजसभा में जाकर श्याम व बलराम के सामने अतिविलाप करके कहा हे दीनानाथ पहिले राजा उग्रसेन पापीको धिक्कार है जिसके राज्य में प्रजा दुःख पाते हैं दूसरे उन लोगों को धिक्कार है जो इस अधर्मी की सेवा में रहते हैं तीसरे मुझे धिक्कारहै जो ऐसे पापियोंके देशमें रहताहूं जिनके अधर्मसे मेरे पुत्र नहीं जीते और तुम क्षत्रिय होकर ब्राह्मणका दुःख नहीं छुड़ाते जब उस ब्राह्मण ने राजसभामें खड़े होकर अनेक बात इसीतरह पर कहीं व श्याम व बल राम व प्रद्युम्नआदिक किसी यदुवंशीने उसको उत्तर नहीं दिया तब अर्जुन जो उससमय वहां बैठा था बाणविद्याका घमण्ड रखकर अभिमानपूर्वक बोला बड़े लज्जाकी बातहै जो उग्रसेन महाराज कहलाकर ब्राह्मण का दुःख निवारण नहीं करते जिस राजाके देशमें गो व ब्राह्मण कष्ट पाते हैं उसका यश व धर्म नहीं रहता ऐसा कहकर अर्जुन उस ब्राह्मणसे बोला हे द्विजराज तुम किसवास्ते इतना रोकर दुःख उठाते हो इन दिनों राजा आप स्वार्थी होकर गो व ब्राह्मणकी रक्षा नहीं करते ॥

चौ० तुम्हरे पुत्र जन्मते मरैं । पुरके लोग यत्न नहिं करैं ॥

दो० यद्यपि बहु योधा बसैं नगर द्वारका माहिं । तद्यपि विद्या धनुषकी जानत कोऊ नाहिं ॥

हे ब्राह्मणदेवता अब तुम धैर्य धरकर अपने घर बैठो जब तुम्हारी स्त्री

के बालक उत्पन्न होनेका समय आवे तब तुम मुझसे आनकर कह देना मैं उस बालककी रक्षा करूंगा यह सुनकर उस ब्राह्मणने अर्जुनसे कहा जहां श्याम व बलराम व प्रद्युम्न ऐसे शूरवीर बैठे होकर कुछ नहीं बोलते वहां ऐसे अभिमानपूर्वक वचन कहते हो तुम्हारी क्या सामर्थ्य है जो मेरे बालकको मरनेसे बचाओगे यह वचन सुनकर अर्जुन बोले मुझे श्रीकृष्ण व बलभद्र व प्रद्युम्न मत समझो मैं अर्जुन गाण्डीव धनुषका बांधनेवाला हूं मेरे सामने मृत्युकी सामर्थ्य नहीं है जो तेरा पुत्र मारने सकै॥

चौ० शिवसे युद्ध कियो यकबारी। महाप्रसन्न भयो त्रिपुरारी॥
मेरो वचन सांच तुम जानो। कछु संदेह न मन में आनो॥
तुम्हरे सुतकी रक्षा करिहौं। नातो अग्निमाहँ मैं जरिहौं॥

यह बात सुनकर ब्राह्मण अपने घर चलागया जब उस ब्राह्मणकी स्त्री के बालक उत्पन्न होनेका समय पहुँचा व उसने अर्जुन के पास जाकर यह हाल कहदिया तब अर्जुन महादेवको नमस्कार करके धनुर्बाण लिये हुये ब्राह्मणके घर चला गया व बाणोंका ऐसा कोट चारों ओर बनादिया कि जिसमें हवा भी ब्राह्मणके घर में जाने न सकै व आप धनुर्बाण लेकर उस बालकका प्राण बचानेवास्ते चारोंओर फिरने लगा जब उस ब्राह्मण का बालक उत्पन्न होकर बिना रोये न मालूम कहां अन्तर्धान होगया तब उसकी स्त्री अपने स्वामी से बोली महाराज तुमने अर्जुनकी बहुत बड़ाई की थी कि वह मेरे बालककी रक्षा करैगा पहिले पुत्रको तो क्षण दो क्षण रोते हुये भी देखती थी इस बेर तो मैंने उसको अच्छी तरह आंखों सेभी नहीं देखा न मालूम कहां लोथ उसकी गुप्त होगई यह वचन अपनी स्त्रीका सुनतेही उस ब्राह्मण ने अर्जुनके पास जाकर ऐसा दुर्वचन उसे सुनाया कि वह अतिलज्जित होकर राजा उग्रसेनकी सभा में चला गया व उसके पीछे ब्राह्मणने भी वहां पहुँचकर सभावालों के सामने कहा हे अर्जुन तैंने मेरा पुत्र बचाने वास्ते प्रण किया था सो तेरा अभिमान क्या हुआ जो तू मेरे पुत्रका प्राण बचाने नहीं सका इसलिये तुझे धिक्कार है कुछ लज्जा रखता हो तो चुल्लूभर पानी में डूब मर व किसी को अपना

मुख मत दिखला और आजसे धनुर्बाण रखना व झूंठ बोलना छोड़कर बन में चलाजा तैंने राजा विराट के यहां हिजड़ा बनकर वर्षरोज अपना दिन काटाहै तुझसे क्या शूरताई होगी जब इसी तरह उस ब्राह्मण ने अनेक दुर्वचन राजसभा में अर्जुनको कहा तब वह बहुत लज्जित होकर बोला हे द्विजराज तुम ये बातें सच कहते हो अब तुमसे यह प्रतिज्ञा करता हूं कि तीनों लोक में से तुम्हारे मरेहुये बालक ढूंढ़कर लादूंगा नहीं तो धनुर्बाण समेत अग्नि में जलकर मरजाऊंगा यह बात ब्राह्मण से कह कर अर्जुनने स्नान किया व धनुर्बाण उठाकर उन लड़कों को ढूंढ़ने वास्ते स्वर्ग व पाताल में चला गया जब अर्जुन ने चौदहों लोक व यमपुरी व स्थान धर्मराज व आठों लोकपाल में खोजने पर भी उनका पता नहीं पाया तब शोच करता हुआ द्वारकापुरीमें आनकर अपने सेवकोंसे बोला॥

चौ० बहुत काठ लावो यहि ठाईं। अग्नि लगायदेव चौठाईं॥
दो० करिहौं अग्निप्रवेश मैं जरिहौं धनुषसमेत। वचन हारि संसारमें पति धरिहौं केहि हेत॥

जब अर्जुन चिता तैयार करके अग्नि में कूदनेलगा तब श्यामसुन्दर गर्वप्रहारी भक्तहितकारी ने अर्जुन के पास जाकर कहा हे भाई तुम्हारी शूरताई में कुछ सन्देह नहीं है अभी तुम किसवास्ते जलते हो हमारे साथ चलो जहां ब्राह्मणके पुत्र होंगे वहांसे ढूंढ़लाकर तुम्हारी प्रतिज्ञा पूरी करूंगा ऐसा कहकर त्रिभुवनपति अर्जुनसमेत अपने रथपर चढ़े व पूर्वओर सातों द्वीप व समुद्र व लोकालोक पर्वतके पार जाकर ऐसी जगह पहुँचे जहां सिवाय अँधेरेके कुछ दिखलाई नहीं देताथा तब श्रीकृष्णजीने सुदर्शनचक्रको आज्ञा दी कि तुम अपने प्रकाशसे रास्ता दिखलाते चलो यह वचन सुनते ही सुदर्शनचक्र हजार सूर्यसे अधिक अपना तेज बढ़ाकर आगे आगे चला॥

दो० तेज सुदर्शनचक्रको रह्यो चहूंदिशि छाय। अर्जुन देखिसके नहीं राख्यो नयन छिपाय॥

जब इसीतरह बहुत दूरतक वह रथ चलागया तब वहांपर इस वेगसे पानी लहर मारता हुआ दिखलाई दिया जिस तरह दो पर्वत आपस में लड़ते हों जब श्यामसुन्दर ने अपना रथ पानी में डालदिया तब अर्जुन ने आंख खोली तो उसे वहांपर एक महल रत्नजटित बहुत लम्बा व चौड़ा

चमकता हुआ दिखलाई दिया जब रथसे उतरकर दोनों भीतर गये तब उस मकान में क्या देखा कि शेषनागजी अपने कोमल अंगपर नीलाम्बर पहिने व हजार मुकुट व दोहजार कुण्डल जड़ाऊ धारण किये लेटे हैं सिवाय लेने नये नये नाम परमेश्वर के दोनोंहजार जिह्वाओं से दूसरा कुछ प्रयोजन नहीं रखते व शेषनागकी छातीपर विष्णु भगवान् मोहनी-मूर्ति कमलनयन अष्टभुजी स्वरूप से मुकुट व जड़ाऊ गहना अङ्गअङ्गपर साजे जनेऊ का जोड़ा व वैजयन्ती माला व कौस्तुभमणि गले में डाले पीताम्बर पहिने व उपरना रेशमी ओढ़े इस सुन्दरताई से विराजते हैं जिनका रूप देखकर एक एक अंग महासुन्दर पर तीनोंलोक के जीव मोहित होजावैं व शङ्ख व चक्र व गदा व पद्म चारों शस्त्र अपना अपना रूप धारण किये नन्द व सुनन्द व पुण्य व शील व सुशील व गरुड़ व विशुक व सेन व सनाभ व नवों मंत्री उनके चारों ओर बैठे हैं व ब्रह्मा व महादेव आदिक देवता सामने खड़े हुये स्तुति करते हैं जब अर्जुन यह चरित्र देखकर सब अभिमान अपना भूल गया तब श्यामसुन्दरने अर्जुन समेत अष्टभुजी स्वरूप के सामने जाकर इसतरह उन्हें नमस्कार किया जिसतरह कोई अपनी परछाहीं को दण्डवत् करै उस स्वरूप ने श्यामसुन्दरको देखतेही हँसकर कहा तुमने एकसौ पचीस वर्ष मर्त्यलोक में रहकर पृथ्वी का बोझा उतारा व मेरी शक्ति से अवतार लेकर बहुत दैत्य व अधर्मियों को मारा व देवता व ब्राह्मण व हरिभक्तों को सुख देकर मुझे प्रसन्न किया इन दिनों मेरा मन तुम्हें देखनेवास्ते बहुत चाहता था इसलिये मैंने ब्राह्मण के बालक यहां मँगाकर अर्जुन से अभिमानपूर्वक वचन कहला दिया कि उसकी प्रतिज्ञा रखने वास्ते तुम अवश्य यहां आवोगे वे सब बालक यहांपर हैं उनको लेजाव ऐसा कहकर जब अष्टभुजी स्वरूप भगवान् ने श्यामसुन्दर को विदा किया तब वे आपस में नमस्कार करके ब्राह्मणके लड़कों को लेकर अर्जुन समेत द्वारकापुरी में आये व अर्जुन ने वे सब बालक उस ब्राह्मणको देकर अपनी लज्जा छुड़ाई व शिर अपना मुरलीमनोहर के चरणोंपर रखकर समझा कि वसुदेवनन्दनकी दया से मैंने

महाभारत किया था नहीं तो मुझे क्या सामर्थ्य है जो कर्ण व भीष्मपितामह आदिक वीरोंको जीतने सक्ता इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजीने कहा॥

चौ० जो यह कथा सुनै धरि ध्यान। उसके पुत्र रहैं कल्यान॥

नब्बेवां अध्याय।

त्रिभुवनपति के सन्तानों की कथा॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित कोई ऐसी सामर्थ्य नहीं रखता जो श्यामसुन्दर का सब गुण वर्णन करने सकै पर मैं उन ज्योतिस्स्वरूपको हजारों दण्डवत् करता हूं जिनकी दया से हम व तुम इस अमृतरूप कहने व सुनने से मुक्तिपदवी पावैंगे इसलिये थोड़ीसी महिमा उनकी और कहते हैं सुनो वैकुण्ठनाथ ने केवल पृथ्वी का बोझा उतारनेवास्ते यदुकुल में सगुण अवतार लेकर ये सब लीला की थीं व उनकी इच्छा से द्वारका कंचनपुरी में सब स्थान व बाग जड़ाऊ तैयार होकर अनेक रंगके सुगन्धित पुष्प व फल बारहों महीने लगे रहते थे व तालाब व बावली के किनारे अनेक भांति के पक्षी मीठी मीठी बोलियों में स्तुति द्वारकानाथकी करते थे व कई हजार हाथी द्वारपर बांधे होकर अनेक पहलवान चाणूर व मुष्टिक ऐसे मल्लयुद्ध करनेवास्ते सदा वहां बने रहते थे व सब सड़क व गली व चौरहों पर चन्दन व गुलाबजल से छिड़काव होकर अनेक देशके व्यापारी सब तरहकी वस्तु वहां बेंचनेवास्ते लेआते थे व यदुवंशियों के घर ऋद्धि व सिद्धि बनी रहकर उनकी स्त्रियां जड़ाऊ गहना व कपड़ा पहिने इत्र व फुलेल लगाये हुये नित्य मंगलाचार मनाया करती थीं व सब छोटे बड़े द्वारकावासी हरिकथा सुनने व साधु ब्राह्मणकी सेवा में प्रीति रखकर अपने कर्म व धर्म से रहते थे॥

दो० तहां नारि सब यादवन अतिसुन्दर सुकुमारि। जिनको रूप निहारिके सकुचावैं सुरनारि॥

और सोलहहजार एकसौआठ स्त्रियां श्यामसुन्दर की अपने अपने जड़ाऊमहल व बागों में अलग अलग त्रिभुवनपति के साथ भोग व विलास करके अपना अपना जन्म स्वार्थ करती थीं व इन्द्रपुरी से अप्सरा लोग अपना नाच दिखलानेवास्ते द्वारकामें आनकर गन्धर्वलोग गाना

सुनाते थे व श्यामसुन्दर अपने सोलहहजार एकसौआठ स्वरूप से सब स्त्रियों के पास रहकर उनकी इच्छा पूर्ण करते थे और वे स्त्रियां आठोंपहर द्वारकानाथकी सेवामें रहकर ऐसा उनपर मोहित थीं कि एक क्षण उनको विना देखे श्यामसुन्दर के चैन नहीं पड़ता था किसी समय मोहनप्यारे के रहने पर भी व्याकुल होकर पक्षियों से पूछती थीं कि हमारे प्राणनाथ कहां चलेगये फिर चैतन्य होकर उनको देखने से अपने वरावर किसी दूसरे का भाग्य नहीं समझती थीं एक दिन मुरलीमनोहर ने सब स्त्रियों के साथ जलक्रीड़ा करना विचारकर जैसे समुद्रको आज्ञा दी वैसे घुटने भर पानी वहां होगया ॥

दो॰ पूरणमासी रातको सब नारिनके साथ। जलविहार लागे करन माखन प्रभु यदुनाथ ॥

जिससमय श्यामसुन्दरने चांदनी रातमें सोलहहजार एकसौ आठ स्त्रियों के साथ विलग विलग रूप धरकर विहार किया उससमय समुद्र में ऐसी शोभा मालूम होती थी जिसका हाल वर्णन नहीं होसक्ता ॥

चौ॰ तबै टिटिहिरी बोली बानी। तासों कहन लगी यक रानी ॥
कारण कौन शब्द तू करै। हरि संयोग वियोग मन धरै ॥
चकई बोलि उठी तेहि काला। ऐसी विधि बोली यक बाला ॥
तेरो भेव जानि हम लीन्हों। पतिवियोगते अतिदुख कीन्हों ॥
क्यों हरि काज शब्द तू करै। सगरी रैन चैन नहिं परै ॥
फिर उन सुनी सिंधुकी बानी। तेहि अवसर बोली यक रानी ॥
कहै एक श्रीकृष्ण मुरारी। शयन करत हैं सिंधु मँझारी ॥
तेही काज शब्द अति करै। श्रीव्रजराज प्रीति उर भरै ॥
फिर उन देखि चन्द्रकी कांति। सखी एक बोली यहि भांति ॥
तोहिं कृष्णको दरशन भयो। तेरो क्षयी रोग सब गयो ॥
रैवतगिरि देखा तिहि काला। याविधि बोलि उठी यक बाला ॥
तू दिन रैन तपस्या करै। मनमें ध्यान कृष्ण को धरै ॥
राजन ऐसी विधि सब बाला। कहैं मनोहर वचन रसाला ॥

दो॰ अष्टनायका आदि दै सब नारिनके साथ। ऐसी विधि क्रीड़ा करैं माखन प्रभु यदुनाथ ॥

श्यामसुन्दर की सन्तान इतनी बढ़ी थी कि तीन करोड़ अट्ठालीस हजार तीन सौ ब्राह्मण उन लड़कों को विद्या पढ़ाने के वास्ते रहते थे इस

लिये यदुवंशियों की गिन्ती नहीं होसक्की देखो जो श्यामसुन्दर आप
वंश की रक्षावास्ते नित्य असंख्य द्रव्य व गौ ब्राह्मणों को दान दिर
करते थे वही त्रिभुनपति इतना प्रेम रखने पर भी दुर्वासा ऋषीश्वर
शापसे सब यदुवंशियों का नाश कराके वैकुण्ठ में चले गये श्रीकृष्ण
के वंश में केवल वज्रनाभ अनिरुद्ध का बेटा जीता बचा था सो मथुरा
इन्द्रप्रस्थका राजा हुआ उसके कुल में व्रतबाहु व सत्यसेन आदिक
राजा बड़े प्रतापी व हरिभक्त व धर्मात्मा हुये थे इतनी कथा सुनाय
शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित जो मनुष्य दशमस्कन्ध की कथा स
मन व प्रीति से कहता व सुनता है उसको बड़ा भाग्यमान समझना
चाहिये वह मनुष्य संसारमें मनोकामना पाकर अन्तसमय मुक्त होताहै॥

ग्यारहवां स्कन्ध ॥

नारदमुनिका वसुदेवजी को ज्ञान समुझाना ॥
पहिला अध्याय ।

दुर्वासा आदिक ऋषीश्वरोंका द्वारका में आवना ॥

राजा परीक्षित ने दशमस्कन्धकी कथा सुनकर शुकदेवजी से विनय की हे मुनिनाथ यादवलोग धर्मात्मा व हरिभक्त थे उनको दुर्वासा ऋषीश्वर ने किसवास्ते शाप दिया यह सुनकर शुकदेवजी बोले हे राजन् इस का हाल इस तरह पर है कि एक दिन श्यामसुन्दर ने मन में विचारा कि हमने पृथ्वी का भार उतारने व हरिभक्तों की रक्षा करनेवास्ते अवतार लिया था जिसमें संसारी जीव मेरी कथा व लीला कह व सुनकर भवसागर पार उतर जावैं सो बड़े बड़े दैत्य व कंस व जरासन्ध आदिक अधर्मी राजाओं को मारा और कौरव व पाण्डवों से महाभारत कराके पृथ्वी का भार उतारा पर छप्पन करोड़ यदुवंशी जो बड़े बलिष्ठ व धनपात्र हैं उन का भार अभी बना है और सब मेरी सन्तान व भाई बन्धु होकर मुझसे पालन हुये हैं इसवास्ते इनको अपने हाथ से मारने में पाप होगा किसी ब्राह्मण से शाप दिलवाकर मरवाडालना चाहिये ऐसा विचारतेही उनकी इच्छानुसार दुर्वासा व वशिष्ठ आदिक बहुत से ऋषीश्वर तीर्थयात्रा करते हुये द्वारकापुरी में आये तब जगत्पतिने उनका पूजन व आदरभाव करके हाथ जोड़कर विनय की जिसतरह आपलोगों ने दयालु होकर अपना दर्शन दिया उसीतरह थोड़े दिन यहां रहकर हमारी इच्छा पूर्ण कीजिये यह वचन सुनकर ऋषीश्वरों ने कहा महाराज यहां विधिपूर्वक हमारा तप व जप नहीं बन पड़ता केशवमूर्ति बोले तुमलोग पिण्डारकक्षेत्र में जो यहां से निकट है रहकर स्मरण व ध्यान करो यह बात मानकर सब ऋषीश्वर पिण्डारकक्षेत्र में चले गये व वहां परमेश्वर का तप विधि-

पूर्वक करने लगे सो एक दिन श्यामसुन्दर की माया से प्रद्युम्न व साम्ब आदिक उसी ओर अहेर खेलने वास्ते गये तब उन्होंने ऋषीश्वरों को तप व स्मरण करते हुये देखकर आपसमें कहा ये सब ब्राह्मण संसारी लोगोंके ठगनेवास्ते झूठी समाधि लगाये बैठे हैं ये लोग सच्चे महापुरुष होंगे तो इनको भूत व भविष्य व वर्तमान तीनों काल की बात मालूम होगी यह वचन सुनकर साम्ब ने प्रद्युम्न आदिक अपने साथियोंसे कहा तुम लोग मुझे जो मूछ व दाढ़ी नहीं रखता स्त्रियों का वस्त्र पहिनाकर कुछ वस्तु मेरे पेट में बांध देव व मुझे इन ऋषीश्वरों के पास ले जाकर पूछो इस गर्भवती स्त्रीके पुत्र होगा या कन्या देखो वे लोग क्या कहते हैं जब होन-हार की वश्य होकर प्रद्युम्न आदिक ने उसीतरह ऋषीश्वरों से पूछा तब उन्होंने कहा तुम लोगों को श्यामसुन्दर के पुत्र व पोता होकर ब्राह्मणों से ठट्ठा करना उचित नहीं है जब उन लड़कों ने ऋषीश्वरों के वर्जने पर भी उस बात का उत्तर देने वास्ते बहुत हठ किया तब दुर्वासा ऋषीश्वर ने हरिइच्छा से क्रोधित होकर ऐसा शाप दिया कि इसके पेटसे एक मूसल उत्पन्न होकर सिवाय श्याम व बलराम तुम्हारे सब कुल का नाश करेगा यह वचन सुनतेही प्रद्युम्न आदिक उदास होकर आपस में कहने लगे देखो हमलोगोंने बहुत बुरा काम किया जो ब्राह्मणों को दुःख देकर उनका शाप अपने ऊपर लिया जब यह बात कहकर प्रद्युम्न ने शाम्ब के पेट में कपड़ा जो बांधा था खोला तो उस कपड़े के भीतर से एक मूसल लोहे का छोटा सा निकला यह अचम्भा देखतेही वे सब घबड़ाकर चले आये व राजा उग्रसेन की सभामें जहां श्याम व बलराम यदुवंशियों समेत बैठे थे चले गये व वह मूसल दिखलाकर शाप होने का समाचार कहदिया यह बात सुनतेही राजा उग्रसेन व यदुवंशियों ने शोचित होकर आपस में सम्मत किया कि मूसल को लोहारों से सोहन कराके इसका चूर समुद्र में डाल देना चाहिये जिसमें इस शाप की जड़ न रहै यह बात ठहराकर राजा उग्रसेनने श्यामसुन्दर से पूछा इसमें तुम क्या कहते हो जगत्पति आगमजानी ने शाप का हाल सुनतेही मनमें प्रसन्न होकर कहा बहुत



अच्छा जैसा यदुवंशी लोग कहते हैं वैसा करो इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित वैकुण्ठनाथ को वह शाप छुड़ा देना कुछ कठिन नहीं था पर उनकी इच्छा से यह बात हुई थी इसलिये उन्होंने कुछ उपाय उसका नहीं किया व यदुवंशियोंने उस मूसल को समुद्र किनारे लेजाकर सोहन कराके उसका चूर समुद्र में डाल दिया व एक टुकड़ा छोटा सा सोहन करती समय जो बच गया था उसको समुद्र में फेंककर अपने घर चले आये व श्यामसुन्दर की इच्छा से वह टुकड़ा एक मछली निगलगई व उस मछली को एक केवटने जाल में फँसाकर जब उसका पेट चीरते समय वह टुकड़ा पाया तब उसे तीरकी गांसी बनाकर अपने पास रक्खा व जिस जगह लुहारों ने उस मूसल का सोहन किया था वहां पर समुद्र किनारे एक घास सरपत जिसकी चटाई बनाते हैं उत्पन्न हुई॥

दूसरा अध्याय।

वसुदेवजी को नारदमुनि का ज्ञान सिखलाना॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जब दुर्वासा ऋषीश्वर के शाप देने से द्वारकापुरी में अनेक अशकुन होने लगे तब श्रीकृष्णजी ने विचारा कि ये सब यादव दुर्वासा ऋषीश्वर के शाप से थोड़े दिनों में मारेजावेंगे इसलिये चाहिये कि वसुदेव व देवकी अपने माता व पिता को ज्ञान समझा कर मुक्त करूं पर वे लोग मुझे अपना बेटा जानकर मेरे कहने से विश्वास नहीं करेंगे नारदजी आनकर उपदेश करते तो उनके वास्ते उत्तम होता जब ऐसा विचार कर त्रिभुवनपति नारदमुनि को याद किया और वह उसी समय उनके पास आये तब द्वारकानाथने दण्डवत् करके कहा हे मुनिनाथ तुम थोड़े दिन यहां रहते तो बहुत अच्छा था नारदमुनिने विनय की हे दीनानाथ आपको मालूमहै कि दक्षप्रजापति के शाप देने से मैं सिवाय दो घड़ी के अधिक एक जगह ठहर नहीं सक्ता श्रीकृष्णजीने कहा तुम द्वारका में निस्संदेह रहो यहां शाप नहीं व्यापैगा यह वरदान पाकर नारदजी बड़ी प्रसन्नता से वहां रहे जब एक दिन नारदमुनि बीन बजाते व हरिगुण गाते हुये वसुदेव को देखने वास्ते गये तब वसुदेवजी ने आदरपूर्वक उन्हें

बैठाया व वेदानुसार पूजन करके हाथ जोड़कर विनय की हे मुनिना
मेरा बड़ा भाग्य है जो आपके चरण यहां आये व हम लोग संसा
मनुष्य मायारूपी अँधियारे कुयें स्त्री लड़कों में पड़े रहते हैं सिवाय मिले
ज्ञानरूपी रस्सी के उस कुयें से बाहर निकलना कठिन है कदाचित्
ऐसा कहैं कि तुम बड़े भाग्यवान् हो जो परब्रह्म परमेश्वर ने तुम्हारे
अवतार लिया सो हे नारदमुनि मुझसे बड़ी भूल हुई जो पूर्व जन्म में
तप करती समय परमेश्वरका दर्शन पाकर उनसे यह वरदान मांगा कि
तुम मेरे पुत्र हो मुझे अपनी मुक्ति मांगना उचित था इसलिये अब चाह
ताहूं कि तुम्हारे मुखारविन्द से भागवतधर्म सुनकर भवसागरपार उत
जाऊं यह सुनकर नारदमुनिने कहा हे वसुदेवजी भागवतधर्म नवो योगी
श्वरों ने राजा जनकको सुनाया था वही पुराना इतिहास कहते हैं सुनो
ऋषभदेवजी के सौ पुत्र जयंतीनाम स्त्रीसे उत्पन्न होकर उनमें नव बालक
नवखण्डके राजा हुये व इक्यासी बेटोंने वेद व शास्त्र पढ़ा व भरतनाम बड़
पुत्र उनका अपने बापकी जगह सिंहासनपर बैठा व नवो बेटे उनके
नव योगीश्वर कहलाते हैं परम ज्ञानी व बालयती व महात्मा होकर जहां
मन उनका चाहता था वहां फिरा करते थे व हरिभजनके प्रताप से उनको
ऐसी सामर्थ्य थी जहां चाहैं वहां क्षणभरमें चले जावैं सो एक दिन ये नवो
योगीश्वर घूमते हुये राजा जनक की सभा में जहां पर बहुत से परिड
व ज्ञानीलोग बैठे थे चले गये उनके मुखारविन्द का प्रकाश जो सूर्य
अधिक चमकता था देखतेही राजा जनकने सभावालों समेत उठकर एक
साथ नवो योगश्वरों को दण्डवत्की व परिक्रमा लेकर हाथ जोड़कर
आपलोग वैकुण्ठ से आते हैं इसलिये मैं तुमको विष्णु भगवान् का पार्षद
समझताहूं मेरे पूर्वजन्म के पुण्य सहाय हुये जो तुम्हारा दर्शन पाया
संसारी मनुष्य की मृत्युका ठिकाना नहीं रहता यही समझकर मैंने आप
को एकसाथ दण्डवत् की जिसतरह आपने दयालु होकर अपने चरणों
मेरा घर पवित्र किया उसीतरह जो बात मैं पूछूं उसका सन्देह छुड़ादीजिये
यह सुनकर वे योगीश्वर बोले हे राजन् जो कुछ तुम्हें इच्छा हो सो पूछो

राजा जनक ने कहा महाराज संसार में कौन ऐसी वस्तु है जो सदा स्थिर रहकर उसका वियोग नहीं होता कदाचित् यह कहाजावे कि जो कोई अपने घरमें बहुत धन व स्त्री व पुत्र आज्ञाकारी रखता है उसे कुछ शोच नहीं होता सो मेरे जानमें उसे सदा सुख नहीं रहता किसवास्ते कि जब उस घर में कुछ हानि होकर स्त्री व लड़के मरजाते हैं तब वह बहुत शोच करता है सुख उसे कहना चाहिये जो सदा स्थिर रहे व प्रतिदिन अधिक होकर उसमें कभी न घटे सो आपलोग बतलाइये कि वह कौन वस्तु है जिसका नाश नहीं होता यह सुनकर योगीश्वरों में से कश्यपनाम बड़े भाई ने कहा हे राजन् सुख उन्हीं को प्राप्त है जो आठों पहर मन अपना बीच स्मरण व ध्यान आदिपुरुष भगवान् के लगाये रहते हैं व धन व स्त्री व पुत्रादिक नाश होनेवाली वस्तु से कुछ प्रीति नहीं रखते पर संसारी जीवों की यह प्रकृति है कि धन मिलने व स्त्री व पुत्र आज्ञाकारी होने से समझते हैं कि हमारे बराबर दूसरा कोई सुखी न होगा जब उनका धन कुछ हानि होकर कोई मनुष्य घरवाला मरजाता है तब उसके शोच में ऐसे व्याकुल होजाते हैं कि उनका चित्त ठिकाने नहीं रहता इसलिये संसारी मनुष्य से जो कोई पूछे तुम्हें धैर्य है व नहीं तो उन दोनों को मूर्ख समझना चाहिये किसवास्ते कि जो सुख सदा स्थिर नहीं रहता उसका होना व न होना दोनों बराबर हैं हे राजन् तुम इस बातका विश्वास मानो कि जो मनुष्य परमेश्वर से विमुख रहकर अपने परलोक का शोच नहीं करता उसे कभी सुख नहीं मिलता व धर्म नहीं समझना चाहिये जो श्रीकृष्णजी ने अपने मुखारविन्दसे गीता में अर्जुनसे कहाथा सारांश उस ज्ञानका यह है कि मनुष्य आठोंपहर अपना मन बीच याद व स्मरण नारायणजी के लगाये रखकर किसी कामको ऐसा न समझे कि यह मैंने किया व दिन रात यह जानता रहे कि सब काम परमेश्वर की इच्छासे होते हैं व नारायणजी तप व स्मरण व ध्यान व भजन किये विना जिसको भक्त कहते हैं मिलने नहीं सक्ते इसलिये उनका प्रेम उत्पन्न होनेवास्ते पहिली राह जो सहज है बतलाते हैं सुनो जिसमें

संसारी जीव वह रास्ता चलकर अपने सुख स्थानपर पहुँच जावें जिस तरह परब्रह्म परमेश्वरने कृष्णावतार लेकर गोवर्धनपहाड़ अपनी अंगुलीपर उठालिया व कंस व जरासन्ध आदिक अधर्मी राजाओं को मारकर गोपियों के साथ रासमण्डल किया व रामचन्द्र व वामन आदिक अनेक अवतार धरकर जो लीला संसारमें की हैं वह कथा सच्चे मनसे कह व सुनकर इस बातका अभिमान न रक्खे कि एक बेर यह कथा सुनचुके हैं फिर सुन करके क्या करेंगे व वह मनुष्य हरिचरित्र कहने व सुनने के प्रतापसे विरक्त होकर अन्तसमय परमेश्वर के चरणों में पहुँचता है व ज्ञानीको चाहिये कि सब स्थानपर नारायणजीको एकसा देखकर यह समझता रहै कि आदिपुरुष भगवान् केवल इसीवास्ते सगुणअवतार धारण करते हैं जिससे संसारी मनुष्य उनकी लीला व कथा सुनकर भवसागर पार उतर जावें इसलिये मनुष्यतनु पाकर उनके ध्यान व स्मरण से क्षण भर भी विमुख रहना न चाहिये कदाचित् मन चंचल मनुष्य का एकबेर परमेश्वर के चरणों में न लगे तो थोड़ा थोड़ा प्रेम उनसे नित्य बढ़ावै जिस तरह संसारी मनुष्य इच्छा जाने किसी नगर व देशकी रखकर नित्य एक एक पगभी उस राहपर चलै तो कुछ दिनों में उस स्थानपर पहुँच सक्ता है उसी तरह सूर्यरूपी हरिचरणों का ध्यान व प्रेम धीरे धीरे बढ़ाने से उसके हृदय में ज्ञानका दीपक प्रज्वलित होकर अज्ञानका अँधियारा छूटजाता है व जो कोई अपने घरसे नहीं चलता उसको दूसरे स्थानपर पहुँचना बहुत कठिन है जिस तरह तीन दिनके भूखे मनुष्य को भोजन देखनेसे धैर्य होकर ज्यों ज्यों वह ग्रास उठाकर खाता है त्यों त्यों उसे सामर्थ्य होती जाती है उसी तरह परमेश्वर का स्मरण व ध्यान करते करते मनुष्य के मनसे प्रतिदिन संसारी माया छूटकर हरिचरणों में अधिक प्रेम बढ़ता जाता है जब वे योगीश्वर यह सब ज्ञान कहचुके तब राजा जनक उठ खड़े हुये व फिर दण्डवत् करके उनसे पूछा महाराज जो मनुष्य भागवतधर्म से रहकर उसी तरह सब काम करते हैं उनका रूप किस तरह का होता है व कौन लक्षण से उनको पहिंचानना चाहिये यह सुनकर हरिनाम दूसरे भाईने

कहा हे राजन् परमधर्म रखनेवाले मनुष्य कभी हँसते कभी रोदेते हैं उनके हँसने का यह कारणहै कि किसी समय प्रसन्न होकर कहते हैं हे परमेश्वर तुम्हारा निराकाररूप किसीको दिखलाई नहीं देता इसलिये आप हरिभक्तोंपर दयालु होकर सगुण अवतार धारण करते हैं जिसमें संसारी जीव तुम्हारा स्मरण व ध्यान करके मुक्तपदवी पावें और यह बात समझकर वे लोग रोदेते हैं कि इतनी अवस्था हमारी विना याद व चर्चा परमेश्वर के वृथा व्यतीत हुई व भक्त नारायणजी के तीन तरहपर उत्तम मध्यम निकृष्ट होकर उत्तम भक्त के ये लक्षण हैं कि वे सब जीव जड़ व चैतन्यमें परमेश्वर की शक्ति बराबर समझकर किसीसे मित्रता व शत्रुता नहीं रखते व आठों पहर हरिचरणों के ध्यान व स्मरणमें लीन व मग्न रहते हैं व जिस तरह मद पिये हुये मनुष्य अचेत होकर अपने तनु व वस्त्रकी सुधि नहीं रखते उसी तरह उत्तम भक्त अपने शरीरकी सुधि न रखकर ईश्वर के ध्यान में मग्न रहते हैं व परमेश्वर के विराट्रूप में सब संसारी जीवों को एकसा देखकर हरिभक्त व महात्मालोगों से प्रीति रखते हं व अपने व दूसरे में कुछ भेद न जानकर स्त्री व पुत्र व धन आदिक संसारी सुखसे कुछ प्रीति नहीं रखते व तीनों लोकका राज्य सत्संग व भक्तिके समान नहीं समझते व लक्षण मध्यम भक्तके ये हैं कि वे लोग साधु व महात्माओं से प्रीति रखकर कुसङ्गति में नहीं बैठते व किसीका बुरा न चाहकर संसारी जीवों पर दया रखते हैं पर ज्ञानी होनेसे परमेश्वर की शक्ति सब जीवों में बराबर नहीं समझते व लक्षण निकृष्ट भक्तके सुनो कि वे लोग संसारी माया मोह में फँसे रहकर किसी समय पूजा व स्मरण परमेश्वर का भी करलेते हैं जब तक मनुष्य तृष्णा नहीं छोड़ता तबतक मन उसका संसारी माया से विरक्त नहीं होता ॥

तीसरा अध्याय।

तीन योगीश्वरों का राजा जनकको ज्ञान उपदेश करना ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित राजा जनकने तीनों तरहके भक्तों का हाल सुनकर उन योगीश्वरों से पूछा महाराज माया परमेश्वरसे अलगहै

या नारायणजीमें मिली है सो वर्णन कीजिये यह सुनकर अन्तरिक्ष नाम तीसरे भाईने कहा हे राजन् उत्पन्न होना व मरना सब जीवों का परमेश्वर की मायासे होताहै व उस मायाको हरिइच्छा समझनी चाहिये व मायाके तीन गुण सात्त्विक व राजस व तामससे उत्पत्ति व पालन व नाश संसारी जीवों का होकर अपने कर्मानुसार सब जीव फल पाते हैं व संसारी मनुष्य मायावश होकर सदा काम क्रोध लोभ मोहमें फँसा रहताहै व परमेश्वर का स्मरण व ध्यान नहीं करता जिसमें आवागमन से छूटकर भवसागर पार उतरजावे विना दया व कृपा नारायणजी की कोई मनुष्य मायारूपी जालसे छूट नहीं सक्ता जब आदिपुरुष भगवान् को महाप्रलय होने उपरान्त फिर संसार रचने की इच्छा होती है तब वे मायाकी ओर आंख उठाकर देखते हैं उसी समय मायासे महत्तत्त्व प्रकट होकर वही सब जगत् को उत्पन्न करता है व जब त्रिभुवनपति संसार का नाश करना चाहते हैं तब उनकी इच्छानुसार उसी माया से महाप्रलय होकर ऐसा मूसलधार पानी बर्षता है कि सिवाय जलके पृथ्वी पर कुछ नहीं रहता इसलिये ज्ञानी मनुष्य को उत्पन्न व नाश होना जगत् का मायारूपी खिलौना समझकर आठों पहर अपने भवसागर पार उतरने का उपाय करना चाहिये यह सुनकर राजा जनकने पूछा जब आपलोग मायाको परमेश्वर की इच्छा बतलाते हैं तब संसारी मनुष्य उस मायाजाल से किस तरह छूटने सक्ताहै कोई उपाय इसका बतलाइये यह वचन सुनकर प्रबुद्ध नाम चौथे योगीश्वरने कहा हे राजन् जब इस बातका विश्वास हुआ कि माया नारायणजी की इच्छा है व विना आज्ञा परमेश्वरकी कोई काम पूरा नहीं होता तब मनुष्य को उचितहै कि सब काम में त्रिभुवनपतिको कर्ता व धर्ता जानकर अपनेको उस मायाका खिलौना समझै व जो कर्म आरम्भ करै उसे ऊपर इच्छा परमेश्वर के छोड़कर मनमें यह विश्वास रक्खे कि वैकुण्ठनाथ चाहेंगे तो यह काम पूरा होगा अपनेको वह काम करने वाला न जानै व किसी के गाली देने से खेद न मानकर विना प्रयोजन अधिक न बोले व सब जीव जड़ व चैतन्यमें परमेश्वरका चमत्कार बराबर

समझकर उनपर दया रक्खै व किसी जीवको दुःख न देवे व दूसरे की स्त्री माता समान जानकर थोड़ा या वहुत जो कुछ अपने भाग्यसे मिलै उस पर सन्तोष रखकर अधिक मिलने की चाहना न करै व अकेले में बैठकर हरिचरणों का स्मरण व ध्यान करता रहै व जव दूसरों के पास बैठे तव सिवाय चर्चा व कथा परमेश्वर की वृथा बात न करै इस तरह अभ्यास रखने से संसारी माया छूटकर मन उसका हरिचरणों में लगजाताहै कदाचित् कोई ऐसा कहै कि वहुत मनुष्य उपाय व उद्यम करनेवाले अपनी कामना को पहुँचकर सदा प्रसन्न रहते हैं सो हे राजन् तुम इस बात का विश्वास मानो कि विना इच्छा परमेश्वरकी किसीका मनोरथ नहीं मिलता व सब तरह की हानि व लाभ त्रिभुवनपति की इच्छानुसार होता है देखो जे संसारमें उत्पन्न हुयेहैं वे एक दिन अवश्य मरैंगे सो मरती समय कोई उनसे यह बात नहीं कहैगा कि तुम स्त्री व पुत्र व हाथी व घोड़ा आदिक का नाम लेव सब इष्ट व मित्र यही कहैंगे कि इस समय परमेश्वर का नाम लेकर उन्हें याद करो जिसमें तुम्हारा परलोक बनै फिर किस वास्ते पहिले से उस परमेश्वर को याद नहीं करता कि अन्तसमय उसी के साथ काम रहताहै दूसरा कोई सहायता करने नहीं सक्ता कदाचित् तुम ऐसा कहो कि अव संसारी सुख उठाकर मरती समय परमेश्वर को याद करलेवेंगे सो तुम विश्वास करके जानो कि जव मन तुम्हारा पहिले से बीच प्रेम स्त्री व पुत्र व द्रव्यादिक में लगा रहैगा तव मरती समय परमेश्वर में मन लगना वहुत कठिन है इसलिये मनुष्य का तनु पाकर पहिले से उनके स्मरण व ध्यानमें चित्त लगाना चाहिये जो अन्तसमय काम आवे जिस तरह द्रव्य गाड़कर रखने से आठों पहर उस जगह का ध्यान मनमें बना रहता है व चोर आदिक के डरसे कभी कभी जाकर उस स्थान को देख आता है व किसी दूसरे से द्रव्य गाड़नेका हाल नहीं कहता उसी तरह उसे दिन रात वैकुण्ठनाथ को याद रखकर प्रेम रखने का हाल किसी से कहना न चाहिये यह ज्ञान सुनकर राजा जनक ने विनय की आपने कहा कि परमेश्वर की लीला व कथा सुनने व ध्यान करनेसे संसारी माया

छूटजाती है इसलिये थोड़ी स्तुति नारायणजी की सुना चाहताहूं सो दयालु होकर कहिये यह सुनकर पिप्पलायन पांचवें भाईने कहा हे राजन् उत्पत्ति व पालन व नाश करनेवाले तीनों लोकके वही वैकुण्ठनाथ हैं उन्हीं का प्रकाश चौरासीलाख योनिमें रहताहै पर किसी जीवके मरनेसे उनका नाश नहीं होता व किसी जीवके उत्पन्न होनेसे वे जन्म भी नहीं लेते वे अविनाशी पुरुष अपने तेजसे प्रकाशित रहकर सदा एक तरह पर सब वस्तु में मिले व सबसे विलग रहतेहैं व सब जीवों में चलने व फिरनेकी सामर्थ्य व मनुष्यको भली व बुरी बातका ज्ञान उन्हीं की शक्तिसे होताहै और उनका प्रकाश किसीको दिखलाई नहीं देता व हाथसे पकड़ाई न देकर इस तरह बीच हृदयके छिपे रहते हैं जिस तरह पत्थर व लकड़ी में अग्नि दिखलाई नहीं देती जैसे उपाय करके पत्थर व लकड़ीमेंसे अग्नि निकलती है वैसे ज्ञानकी राह उनकी शक्ति को भी शरीरमें देखना चाहिये जिसतरह गूलरके वृक्षमें हजारों फल लगे होकर उनके भीतर मच्छड़ भरे रहते हैं उसी तरह करोड़ों ब्रह्माण्ड परमेश्वरके रोम रोममें बँधे रहकर सब जीवोंको वे पालन करतेहैं ऐसे त्रिभुवनपति का पहिंचानना बहुत कठिनहै व उनकी भक्ति व प्रीति सच्चे मनसे करे तब उनकी महिमा जानसक्ता है व मनुष्य की दशा चार तरहपर जाग्रत् व स्वप्न व सुषुप्ति व तुरीय होती हैं जाग्रत् जागने व स्वप्न नींदको कहते हैं सुषुप्ति उसे समझना चाहिये जिस तरह किसी समय मनुष्य नींद से उठकर कहताहै हम ऐसा सोये कि न जागते थे न नींद में अचेत होकर सोये रहे व तुरीय उसको कहते हैं जैसे कोई परमेश्वर के ध्यान में लीन होकर बैठा रहै व अपने तनु व वस्त्रकी कुछ सुधि न रक्खे व चारों अवस्था में परमेश्वर का प्रकाश बीच शरीरके रहता है व उन्हींकी शक्तिसे मनुष्य सब कर्म शुभ व अशुभ करते हैं और यह बात इसतरह समझना चाहिये कि जब परमेश्वर अपना चमत्कार अंगमेंसे खींच लेतेहैं तब वह मरजाताहै व उससे कोईकाम नहीं होसक्ता कदाचित् कोई ऐसा कहै कि परमेश्वर सब जगह वर्तमानहैं तो दिखलाई क्यों नहींदेते उसे यह उत्तर देना चाहिये कि मूर्खको दिखलाई नहीं देते व ज्ञानीसे वे छिपे नहीं रहते॥

चौथा अध्याय।

अवतारों की कथा॥

नारदमुनिने कहा हे वसुदेव इतनी कथा सुनकर राजा जनकजी बोले हे ऋषिराज जिन दिनों में बालक था उन दिनों एकबेर सनकादिक मेरे पिताके पास आये थे जब मैंने हाथ जोड़कर उनसे पूछा महाराज परमेश्वरकी भक्ति व तपस्या किस तरह करनी चाहिये तब उन्होंने कुछ उत्तर न देकर हँस दिया और मुझे वह ज्ञान सुनने योग्य नहीं समझा यह वचन राजा जनकका सुनकर उपचिरहोत्र नाम छठयें योगीश्वर ने कहा हे राजन् तुम ज्ञान सुनने योग्य हो पर उन दिनों अज्ञान बालक थे इसलिये सनकुमार आदिक ने तुमसे कुछ ज्ञान नहीं बतलाया अब हम कहते हैं सुनो कर्म तीन तरहपर कर्म विकर्म अकर्म होता है व कर्म उसे कहना चाहिये कि ब्राह्मण व क्षत्रिय व वैश्य व शूद्र चारों वर्ण अपने अपने धर्मपर जैसा उनके वास्ते वेद व शास्त्र में लिखा है स्थिर रहें व विकर्म वह है कि एक वर्ण का धर्म दूसरा वर्ण करै व अकर्म उसे समझना चाहिये कि जानबूझ कर चोरी व कुकर्म आदिक करके संसारीजीवोंको दुःख देवै इसलिये मनुष्य को उचित है कि नित्य पूजा व ध्यान रामचन्द्र व श्रीकृष्ण व नृसिंहजी आदिक किसी अवतार का अपने गुरु की आज्ञानुसार किया करै व स्मरण व ध्यान करना परमेश्वरका केवल एक अवतार पर होकर चौबीसों अवतारों में जिसपर मन उसका चाहै उसी तरह स्वरूपकी पूजा व भक्ति साधन करे यहसुनकर राजा जनक बोले महाराज जिस तरह आपने पूजा करनेवास्ते कहा उसी तरह दयालु होकर अवतारों की कथा वर्णन कीजिये दुर्मिल नाम सातवें योगीश्वर ने कहा हे राजन् कोई ऐसी सामर्थ्य नहीं रखता जो परमेश्वर के सब अवतार वर्णन करसकै जो ऐसा विचार करै उसे मूर्ख समझना चाहिये कदाचित् कोई चाहे तो आकाश के तारे व बालू की रेणुका व बर्षते पानी की बूंदें गिन लेवे पर वैकुण्ठनाथ के अवतार नहीं गिन सक्ता पृथ्वी व आकाश व सूर्य व चन्द्रमा व दशो दिशा व चौदहों भुवन व चौरासीलाख योनि आदिक बीच विरादरूप परमेश्वर के होकर

सब संसारी वस्तु के मालिक व उत्पन्न करनेवाले वही हैं जब विराट्रूप की नाभिसे कमलका फूल निकलता है तब उस फूल से ब्रह्मा उत्पन्न हो कर तीनों लोककी रचना करते हैं व नरनारायण का अवतार लेकर बदरी केदार में बैठे हुये केवल इसवास्ते तपस्या करते हैं जिसमें संसारी लोग उनको तप करते देखकर परमेश्वरका स्मरण व ध्यान करके भवसागर पार उतर जावैं जब इन्द्रको त्रिभुवनपति की महिमा न जानने से यह भय हुआ कि मेरा इन्द्रासन लेने वास्ते ये तपस्या करते हैं तब उसने उनका तप भंग करने की इच्छा से कामदेव व वसंतऋतु व दश अप्सरा व मंद सुगंध शीतल हवाको वहां भेजा जैसे वे सब बीच स्थान तपस्या करने नरनारायण के पहुँचे वैसे वसंतऋतु ने एक बगीचा उत्तम उत्तम फूल व फल लगाहुआ सब सामग्री व भोग व विलास समेत वहां प्रकट करदिया व मंद सुगंध शीतल हवा चलकर उस बाग में अप्सरा नाचने लगीं व कामदेव कोकिलारूप से वृक्षपर बैठ कर जब काम बढ़ानेवाली बोली बोलने लगा तब नरनारायण ने जिनका मुखारविन्द सूर्य से अधिक चमकता था जैसे आंख उठाकर उन लोगोंकी तरफ देखा वैसे कामदेव आदिक मारे डरके सूख गये व मनमें कहने लगे ऐसा न हो जो ये महापुरुष शाप देकर हमें भस्म करदेवें यह दशा उनकी देखते ही त्रिभुवनपति अंतर्यामी ने हँसकर कामदेवादि से कहा तुमलोग मत डरो इसमें तुम्हारा कुछ अपराध न होकर इन्द्रने तुमको अपना राज्य छूटने के डरसे यहां भेजाहै सो मैं इन्द्रलोककी कुछ चाहना नहीं रखता यह वचन सुनते ही कामदेव व वसन्तऋतु आदिक ने नरनारायण के सामने हाथ जोड़ कर विनय की हे वैकुण्ठनाथ संसारी जीव कोई ऐसा नहीं है जो हमारे फन्दे में न आवै पर हमलोग आपको जो आदिपुरुष का अवतार हैं कुछ धोखा नहीं देसके जब तुम्हारा भजन व स्मरण करनेवाले अपने बलसे हमारे शिरपर लात धरकर सीधे वैकुण्ठको चलेजाते हैं तब आपपर किस का वश चलसक्ता है संसार में बहुत मनुष्य भूख व प्यास व कामदेव को अपने वश रखकर संसारी सुखकी चाहना नहीं करते पर क्रोध ऐसा बल-

वान् है कि उसके अधीन होकर वे लोग भी अपने शुभकर्म व तपस्याका फल क्षणभरमें खो देते हैं सो आपमें क्रोधका प्रवेश न होकर तुम्हारी भक्ति व प्रीति करनेवाले भी काम व क्रोध के वश नहीं होते इसलिये हजारों दंडवत् हमारी आपको पहुँचें यह वचन सुनते ही नरनारायण ने उसी समय अपनी माया से हजार सुंदरी जिनके सामने रम्भा आदि अप्सरा कुछ वस्तु नहीं हैं व कोसोंतक उनके अंगकी सुगंध उड़ती थी वहां प्रकट करदिया और वे सब लक्ष्मीपति की सेवा करनेवास्ते हाथ जोड़कर चारों तरफ खड़ी होगईं उनका रूप देखते ही कामदेवादिक लज्जित होकर अपना अपना अभिमान भूल गये उन स्त्रियों पर मोहित होकर आपस में कहने लगे हमलोगों ने ऐसी रूपवती स्त्रियां कभी इन्द्रलोक में भी नहीं देखी थीं यह सुनकर त्रिभुवनपति ने कामदेवादिक से कहा तुमलोग इन सब स्त्रियोंको इन्द्रपुरी में लेजावो कामदेव ने विनय की महाराज इनको इसीजगह रहने दीजिये नहीं तो वहां लेजाने में सब देवता आपस में लड़कर मरजावेंगे यह बात सुनकर नरनारायण ने कहा इन सब में तुम्हारे निकट जो कुरूप हो उसे लेजाव जब कामदेवादिक उर्वशी नाम को नरनारायण की आज्ञानुसार अपने साथ लेकर वहांसे विदा हुये व उन्होंने इन्द्रलोकमें पहुँचकर सब महिमा नरनारायणकी कही तब इन्द्र उन्हें पूर्णब्रह्म जानकर उनकी स्तुति करने लगे व उर्वशीका रंग व रूप देखते ही अतिप्रसन्न होकर उसे सब अप्सराओंका मालिक बनाया फिर हंसरूपी पक्षीका अवतार लेकर सनत्कुमार को उत्तर दिया व हयग्रीव अवतार धर कर मधुकैटभ दैत्यका वध किया व पाताल से वेद लाकर ब्रह्माको दिया व मत्स्य अवतार लेकर राजा सत्यव्रतको ज्ञान सिखलाया व कच्छप अवतार धरकर मन्दराचल पहाड़ अपनी पीठपर उठाया व मोहनी अवतार लेकर देवताओं को अमृत पिलाया व वाराह अवतार धरकर पृथ्वीको पातालसे निकाल लाये व वामन अवतार होकर राजा बलि से पृथ्वी दान ली व कपिलदेव अवतार धरकर देवहूती अपनी माताको सांख्ययोग ज्ञान उप-देश किया व परशुराम अवतार होकर सहस्रबाहु आदिक अनेक क्षत्रियों

का वध किया व रामचन्द्र अवतार धरकर लंकापति रावणको मारा व नृसिंह अवतार होकर प्रह्लादभक्तकी रक्षा की व श्रीकृष्ण अवतार धरकर कंसादिक राजा व अनेक दैत्योंको मारडाला व कौरवों व पांडवों से महाभारत कराके पृथ्वीका भार उतारा व बौद्ध अवतार धरकर दैत्यों को यज्ञ करने से बरजा व जब कलियुगके अन्तमें कुछ धर्म नहीं रहेगा तब कल्कि अवतार लेकर सत्ययुगका धर्म व कर्म चलावेंगे इन अवतारों में जिसका मन चाहे उसी स्वरूपका पूजन व ध्यान करने से मनोकामना मिलकर अन्तसमय मुक्ति होती है ॥

पांचवां अध्याय।

आठवें व नवें योगीश्वरोंका ज्ञान कहना ॥

राजा जनकने इतनी कथा सुनकर पूछा महाराज जो लोग परमेश्वर के स्मरण व ध्यानसे विमुख रहते हैं उनकी मरने उपरान्त क्या दशा होती है चमसनाम आठवें योगीश्वर ने कहा हे राजन् चौरासी लाख जीव जड़ व चैतन्य नारायणजीकी इच्छासे उत्पन्न होकर मरने उपरान्त जीवात्मा सब किसी का फिर परमेश्वरके रूपमें मिलजाता है व सब जीवों का पालन करने व सुख देनेवाले वही आदिपुरुष भगवान् हैं जो कोई उनको उत्पन्न व पालन व नाश करनेवाला तीनों लोक का जानकर दिन रात उनके स्मरण व ध्यान में लीन रहकर कहता है हे वैकुण्ठनाथ महादेव व ब्रह्मादिक देवता तुम्हारे भजन व स्मरण के प्रतापसे जो कुछ आशीर्वाद व शाप किसीको देते हैं वह बात सच होकर हरिभक्तों का सब दुःख आपकी दयासे छूटजाताहै इसलिये संसाररूपी समुद्र पार उतरनेवाले तुम्हारे चरणोंका ध्यान जहाज के समान समझना चाहिये हे राजन् इस तरहका ज्ञान व ध्यान रखनेवाले मनुष्य मुक्तिपदवी पर पहुँचते हैं व जो लोग मनुष्य तनु पाकर चारों वर्ण व चारों आश्रम में परमेश्वर का भजन व स्मरण नहीं करते व हरिकथा सुनने में प्रीति न रखकर संसारीमाया में फँसे रहते हैं व अधर्मकी कमाई से अपना कुटुम्ब व शरीर पालन करके परमेश्वरका चमत्कार सब जीवोंमें [illegible] नहीं समझते व बिना प्रयोजन

दूसरोंके साथ शत्रुता व परस्त्री व धन लेने वास्ते इच्छा रखकर जीवहिंसा करते हैं उनका कभी कल्याण नहीं होता वे मनुष्य बहुत दिन तक नरक भोगने उपरान्त चौरासी लाख योनि में जन्म पाकर अनेकतरह का दुःख पाते हैं व जो मनुष्य अपने उत्पन्न व पालन व नाश करनेवाले को नहीं मानता उसे अधर्मी समझना चाहिये जिसतरह मल व मूत्र पेटसे विलग होकर अशुद्ध होजाता है उसीतरह परमेश्वर से विमुख रहनेवाले मनुष्य स्थानभ्रष्ट होकर नरक में जाते हैं व जो ब्राह्मण अपने लाभ वास्ते दूसरों को वशीकरण व मारण व उच्चाटन बतलाकर मुक्त होने की राह नहीं सिखलाते उनको पाखण्डी व अधर्मी समझना उचित है व जो लोग सन्त व महात्मा व हरिभक्तों को तुच्छ जानकर सब जीवों में परमेश्वर का रूप बराबर नहीं देखते व वेदानुसार राह न चलकर केवलअपनास्वार्थ समझते हैं व धन पाकर धर्म नहीं करते उन्हें अभागी व पापी समझना चाहिये किस वास्ते धर्म करने से ज्ञान प्राप्त होकर तृष्णा छूटजाती है व विरक्त होनेसे मुक्तिपदवी पाते हैं देखो जब मरती समय अपना शरीर व स्त्री व पुत्र व सेवक आदिक कोई रक्षा नहीं करसक्ते तब उनके प्रेम में फँसकर नष्ट होना वृथाहै जिसतरह मनुष्य अपना शरीर पुष्ट करने वास्ते पशु व पक्षी आदिक मारकर खाताहै उसीतरह दूसरे जन्ममें वह पशु व पक्षी उसे मारकर अपना बदला लेते हैं व मदिरा पीने व साधु व ब्राह्मण व परमेश्वरसे विमुख रहनेवालों को यमदूत बर्जोरी नरक में डालकर बड़ा दुःख देते हैं इतनी कथा सुनकर राजा जनकने पूछा महाराज सब युगों में अवतार आदिपुरुष भगवान्‌का किसतरह पर था करभाजन नाम नवें योगीश्वर ने कहा सतयुगमें अवतार परमेश्वरका चतुर्भुजी चन्द्रमाके समान श्वेत होकर सतयुगमें सब मनुष्य धर्मात्मा व सच्चे व हरिभक्त थे व धर्मके चारों पैर बने रहकर अन्तसमय सबको वैकुण्ठधाम मिलता था व त्रेतायुग में अवतार परमेश्वरका अग्निरूपी लाल होकर तौर अपना ब्रह्मचारी के समान रखते थे व धर्मके तीन पावँ रहकर वासुदेव नामका चर्चा रहता था व द्वापरयुग में अवतार नारायणजी का श्यामरंग नीलमणि के समान

चमकता होकर धर्म के दो पावँ थे व मुकुट जड़ाऊ शिरपर रखकर पूजा परमेश्वरकी होती थी व कलियुग में अवतार लक्ष्मीपतिका श्यामरंग सूर्य के समान चमकता होकर धर्मका एक चरण रहजाता है व कलियुग के मनुष्य निर्धन रहते हैं व धनपात्र भी सूम होकर जैसा चाहिये वैसा दान व धर्म नहीं करते इसवास्ते कलियुगवासी मनुष्य केवल परमेश्वर का नाम जपने व हरिचरणों में ध्यान लगाने व उनकी कथा व लीला सुनने से भवसागर पार उतरजाते हैं परमेश्वरके शरण जानेवाले किसी देवता का डर न रखकर देवऋण पितृऋण ऋषिऋण से उऋण होजाते हैं व हरिभक्तों पर परमेश्वरकी छाया रहने में कोई उनको कुछ दुःख दे नहीं सक्ता व नारायणजी अपने भक्तोंपर दयालु होकर उनको कुकर्म करने से बचाये रहते हैं व हे राजन् कलियुग में जो कोई नित्य यह श्लोक पढ़ कर परमेश्वर की दण्डवत् करैगा उसे नारायणजी वांछित फल देकर अन्त समय उसका उद्धार करैंगे व अर्थ उस श्लोकका यह है हे श्रीनारायण जी महाराज मैं तुम्हारे कमलरूपी चरणों का ध्यान जो फूलसे भी अधिक कोमल हैं हृदय में रखताहूं तुम्हारे चरण छोड़कर दूसरा कोई ध्यान करने योग्य नहीं है जो कोई उन चरणोंका स्मरण करता है वह भाग्यवान होकर उसको किसी देवता व दैत्य व मनुष्य व पशुआदिक का कुछ भय नहीं रहता व तुम्हारे चरणोंके ध्यान करनेके प्रतापसे मन मेरा काम क्रोध लोभ मोह में कि वह अधर्म की जड़ हैं नहीं फँसता जिससमय तुम्हारे कमलरूपी चरणोंको याद व ध्यान करता हूं उस समय मेरा सब मनोरथ पूर्ण होकर कोई इच्छा नहीं रहती व गंगा व यमुना व नर्मदा व सरस्वती आदिक सब तीर्थ आपके चरणों में रहकर चरण तुम्हारे सब दुःख अपने भक्तों का दूर कर देते हैं मैं आपको उत्पन्न व पालन व नाश करनेवाला तीनों लोकका जानकर दण्डवत् करताहूं यह सुनाकर नवें योगीश्वर ने कहा हे राजन् सतयुग में दशहजार वर्ष तप करने से परमेश्वर प्रसन्न होते थे व बीच त्रेता के हजार वर्ष तप करने से मनुष्य फल पाता था व द्वापर में सौ वर्ष पूजा व ध्यान करने से मनुष्य का मनोरथ पूर्ण होता था व

कलियुग में एक दिन रात मनुष्य परमेश्वर को सच्चे मनसे एक चित्त होकर याद व ध्यान करै तो नारायणजी प्रसन्न होकर उसकी इच्छा पूर्ण कर देते हैं इसलिये सब योगी व मुनि तप व जप करनेवालों को यह इच्छा रहती है कि एक बेर हमारा जन्म भी बीच कलियुग के भरतखण्डमें होता तो थोड़ा परिश्रम करने में परमेश्वर का दर्शन पाते सो हे राजन् हमको इस बातका बड़ा पछितावा है कि कलियुगवासी ऐसे सहज में मिलने वाले परमेश्वर को नहीं याद करते व वैकुण्ठनाथ ने गीता में अपने मुखारविन्द से कहा है कि जो कोई अपने को मनसा वाचा कर्मणा से मुझे सौंपि देवै उसको संसार में किसीतरहका दुःख व भय नहीं होता इतनी कथा सुनाकर नारदमुनिने कहा हे वसुदेव जब योगीश्वरों ने यह सब ज्ञान राजा जनक से कहा तब राजा ने विधिपूर्वक उन योगीश्वरोंकी पूजा व परिक्रमा करके विदा किया व अपने मनसे राज्य व परिवार व धनकी प्रीति छोड़कर उसी ज्ञान के प्रतापसे सदेह वैकुण्ठ में गया सो तुम भी इसी ज्ञानपर विश्वास रखकर हरिचरणों का ध्यान करो तुम्हारी मुक्ति होजावेगी हे वसुदेव जब वैकुण्ठनाथ ने तुम्हारे घर पुत्र होकर अवतार लिया व तुम अपने प्राणसे अधिक उनको चाहते हो तब तुम्हारे भवसागर पार उतरने में क्या संदेह है पर उनको अपना बेटा जानना छोड़कर आदि-पुरुष भगवान् समझो उन्होंने केवल पृथ्वीका भार उतारने व हरिभक्तों को सुख देने वास्ते संसार में अवतार लिया है व मैं उन्हीं का दर्शन करने वास्ते सदा यहां आताहूं जब यह ज्ञान नारदमुनि से सुनकर वसुदेव व देवकी को विश्वास हुआ कि श्रीकृष्णजी परब्रह्म परमेश्वरका अवतार हैं तब दोनों मनुष्य उनके चरणोंपर गिरपड़े व पुत्रभाव छोड़कर परमेश्वर समान उनको समझने लगे व नारदमुनि वैकुण्ठनाथ से विदा होकर ब्रह्मलोक को चलेगये शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जो कोई इस अध्याय को विधिपूर्वक कहै व सुनैगा वह सब पापों से छूटकर मुक्तिपदवी पर पहुँचैगा ॥

छठवां अध्याय।

ब्रह्मादिक देवताओं का श्रीकृष्णजी के पास आना॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित नारदमुनि के जाने उपरान्त एकदिन श्रीकृष्णजी सुधर्मा सभामें बैठे थे उससमय ब्रह्मा व महादेव व इन्द्र व कुबेर व वरुण व दक्षप्रजापति आदिक देवता व ऋषीश्वर श्यामसुन्दर के सगुणरूपका दर्शन करने वास्ते आकाशमार्गसे द्वारकामें आये व नन्दन बाग के फूल उनपर वर्षाये व दण्डवत् करके हाथ जोड़कर श्रीकृष्णजी से विनय की हे महाप्रभु जिन चरणों का ध्यान बड़े बड़े योगी व ऋषीश्वर आठोंपहर अपने हृदय में रखकर मुक्ति पदवी पाते हैं उन्हीं तीर्थरूपी चरणों का दर्शन करनेवास्ते हमलोग आनकर भवसागर पार उतरना चाहते हैं हे निर्गुण निराकार आप सब जगत् के उत्पन्न व पालन व नाश करने वाले हैं व संसारी लोग यज्ञ व तप व ध्यान व तीर्थ करनेपर भी हरिच रणों की भक्ति किये विना संसार व परलोकका सुख नहीं पाते व जबतक तुम्हारी दया से पूर्वजन्मका पुण्य सहाय नहीं होता तबतक तुम्हारे च रणों में प्रीति न होकर हरिकथा में चित्त नहीं लगता व हम लोगों के विनय करने से आपने मर्त्यलोक में सगुण अवतार लेकर पृथ्वी का भार उतारा व एकसौ पचीस वर्ष संसारमें रहकर साधु व वैष्णवों को सुख दिया व अधर्मी व दुःखदायी राजाओं को मारकर धर्मकी रक्षा की हे त्रिभुवन पति अब दुर्वासाऋषीश्वर के शापसे छप्पन करोड़ यदुवंशी इसतरह जल रहे हैं जिसतरह वृक्ष सूखकर भीतर से खुखला होजाता है आप सब जीवों के मालिक हैं जैसा उचित होवै वैसा कीजिये यह सुनकर श्यामसुन्दर बोले हे ब्रह्मा मैंने तुम्हारी इच्छा जान ली कंस व जरासंध व कालयवन आदिक अधर्मी राजा व दैत्योंको मारकर कौरवों व पाण्डवों से महा भारत कराके पृथ्वीका भार उतार चुकाहूं केवल यदुवंशियों का नाश करना और रहगया है सो थोड़े दिनमें उनका भी नाश कराके वैकुण्ठ में आनपहुँचताहूं तुमलोग अपने अपने स्थानपर चलो यह सुनकर ब्रह्मा दिक देवता उनसे बिदा होकर अपने अपने लोकको चलेगये व त्रिभु

वनपति ने गोलोक को जाना विचारकर एक दिन राजा उग्रसेन की सभामें यदुवंशियों से कहा इनदिनों ब्राह्मण के शाप देने से द्वारकापुरी में नित्य नये नये अशकुन होते हैं इसलिये सब किसीको प्रभासक्षेत्र में चलकर स्नान व दान व यज्ञ व होम वहांपर करके यह दोष छुड़ाना चाहिये जिस तरह समुद्र में रहने से चन्द्रमा का क्षयीरोग छूट गया था उसी तरह प्रभासक्षेत्र में नहाने व दान करने से तुम्हारा दोष भी छूट जायगा जब राजा उग्रसेन आदिक सब यदुवंशी श्यामसुन्दरकी आज्ञानुसार प्रभासक्षेत्र में जानेवास्ते तैयारी करने लगे तब उद्धव भक्तने जो लड़कपन से उनका मित्र व सेवक था दण्डवत् करने व परिक्रमा लेने उपरान्त आंखों में आंसू भरकर त्रिभुवनपति से विनय की कि हे महाप्रभु यदुवंशियोंको प्रभासक्षेत्र में जाने से मैं जानताहूं कि आप उनका वहां नाश कराके वैकुण्ठको पधारेंगे नहीं तो तुम्हारे तीर्थरूपी चरणोंका ध्यान करने से हजारों शाप छूटजाते हैं उनको वहां भेजने का क्या प्रयोजन है जिस तरह बालापन से मैं आजतक तुम्हारी सेवामें रहा उसी तरह मुझे अपने चरणों से विलग न करके साथ लेचलो व ऐसा वरदान देव कि किसी योनि में मेरा जन्म हो पर तुम्हारे कमलरूपी चरणोंकी भक्ति व प्रीति मेरे हृदय में बनीरहे॥

सातवां अध्याय।

श्यामसुन्दर का उद्धव से ज्ञान कहना॥

शुकदेवजी ने कहा हे राजन् जब उद्धव ने श्यामसुन्दर के साथ चलने वास्ते बहुत विनती की तब जगत्पालने उसे अपना भक्त व मित्र जानकर कहा हे उद्धव सच है यदुवंशीलोग दुर्वासा ऋषीश्वर के शापसे जलरहे हैं आजके सातवें दिन सब यदुवंशियों का नाश होकर द्वारका समुद्रमें डूब जावेगी व ब्रह्मादिक देवता मुझे बुलाने आयेथे इसलिये मैं भी साथ योगाभ्यासके तनु अपना त्यागकर वैकुण्ठको चला जाऊंगा सो तुमको भी उचित है कि पहिले से विरक्त होकर मेरे चरणों में ध्यान लगावो मैंने ब्राह्मण के शापसे तुम्हें छुड़ादिया व हे उद्धव मेरे जाने उपरान्त धर्म संसार से उठ

जायगा यह वचन सुनतेही उद्धव रोकर बोला हे त्रिभुवनपति मैंने बिन
ज्ञान पाये संसारी मोह छोड़ दिया तो विरक्त होने से क्या लाभ होगा
इसलिये दयालु होकर ऐसा ज्ञान उपदेश कीजिये जो मरते समय तक न
भूलै यह सुनकर द्वारकानाथ ने कहा हे उद्धव संसार में जो तुम देखते व
सुनते हो सबको झूठा व्यवहार समझकर मन अपना हमारे चरणों में
लगावो जब तुम संसारीवस्तु नाश होनेवाली से प्रेम तोड़कर मेरे अवि-
नाशी रूपका ध्यान सच्चे मनसे करोगे तब तुम्हें मेरी माया नहीं व्यापैगी
और तुम मुझे आठों पहर अपने पास देखोगे जिसतरह पौशालेपर अनेक
मनुष्य इकट्ठे होकर पानी पीने उपरांत बिलग बिलग होजाते हैं उसी
तरह माता व पिता व स्त्री व पुत्र थोड़े दिन साथ रहकर अन्त समय चार
पगभी मरनेवाले के साथ नहीं जाते अपने स्वार्थ व जगत् को दिखलाने
वास्ते चार दिन रो लेतेहैं इसलिये उनका प्रेम स्वप्नके समान झूठा समझना
चाहिये केवल ज्ञान व वैराग्य व पाप व पुण्य अपने साथ जाकर उसी से
दुःख व सुख प्राप्त होता है इसलिये मनुष्यको चाहिये कि अपना मरना
आठों पहर याद रखकर कुकर्मों से डरता रहै व सब जड़ व चैतन्य में मेरा
प्रकाश बराबर समझकर किसी जीवको दुःख न देवै जिसतरह दिन रात
बदला करतेहैं उसीतरह संसारमें उत्पन्न होने व मरनेकी गति होकर यह
बात कोई नहीं जानता कि मरने उपरांत कौन योनिमें हमारा जन्म होगा
यह ज्ञान सुनकर उद्धवने विनय की कि हे वैकुण्ठनाथ अन्तर्यामी स्त्री व
पुत्रका मोह छोड़कर विरक्त होना बहुत कठिन है मुझ अज्ञानपर दयालु
होकर कोई ऐसा सहज उपाय बतलाइये जिसमें संसारी माया छूटकर
तुम्हारे चरणों में भक्ति उत्पन्न होवे मुझे ज्ञानरूपी नौकापर बैठाकर भव-
सागर पार उतार दीजिये यह सुनकर श्यामसुन्दर बोले हे उद्धव जिसतरह
हवा किसी वस्तुसे मिलावट न रखकर बिलग रहती है उसी तरह तुम भी
सब वस्तु भली व बुरी को इस शरीर से अलग समझकर संसारी माया
छोड़देव देखो जैसे चन्द्रमा की कला नित्य घटती बढ़ती है वैसे यह शरीर
बालापन व तरुणाई व बुढ़ापा भोगकर सदा एक तरह पर नहीं रहता

जिस तरह सूर्यदेवता अपना प्रकाश पृथ्वी व पहाड़ व पानी पर बराबर रखकर किसीके साथ कुछ प्रेम नहीं रखते उसी तरह तुमभी सबकी प्रीति छोड़कर मन अपना विरक्त करलेव जैसे कबूतर व कबूतरी अपने बच्चोंकी प्रीति में फँसकर नष्ट हुये थे वैसे संसारीलोगभी स्त्री व पुत्र का प्रेम रखने से दुःख उठाते हैं यह सुनकर उद्धव ने विनय की महाराज उन दोनों पक्षियों की कथा विस्तारपूर्वक कहिये केशवमूर्तिने कहा हे उद्धव एक कबूतर अपनी मादी व बच्चों समेत वृक्षपर रहकर जिस तरह राजा इन्द्र इन्द्राणी से विलास करता है उसी तरह वहभी अपनी मादीसे खोते में भोग करके सुख उठाता था जब एकदिन वह कबूतर अपने बच्चे अकेले छोड़ कर मादीसमेत चारा लेनेवास्ते चलागया तब बहेलिये ने वहां आयकर उन बच्चोंको जालमें फँसालिया जब वह कबूतर व कबूतरी यह हाल बच्चों का देखकर प्रेमवश आप उस जालमें कूदपड़े तब वह बहेलिया सबको फँसाकर अपने घर लेगया देखो जिसतरह उन दोनोंने बच्चोंकी प्रीति से जालमें कूदकर अपना प्राण दिया व बच्चों ने कुछ सहायता उनकी नहीं की उसीतरह संसारी लोग स्त्री व पुत्रके मोहमें फँसकर नरक भोगते हैं तब वहांपर कोई उनकी सहायता नहीं करता इसलिये उन लोगोंके वास्ते जो दुःख में कुछ काम नहीं आते दुःख उठाना व अपना परलोक बिगाड़ना उचित नहीं है हे उद्धव पिछले युगमें यदु नाम राजा ज्ञान सीखने की अभिलाषा रखकर अनेक योगी व ऋषीश्वरों के पास जाया करता था एक दिन उसी चाहना में गोदावरी के किनारे चलागया सो वहां पर दत्तात्रेय नाम ब्राह्मण अति तेजवान् रूपको बैठे देखकर सुखपाल से उतर पड़ा व दण्डवत् करने व परिक्रमा लेने उपरांत हाथ जोड़कर विनय की हे ईश्वरको पहुँचे हुये महात्मा पुरुष इस तरुणाई में इतनी पदवी तुमने कहां से पाई तुम्हारा तेज देखने से मालूम होताहै कि आप बड़े ज्ञानी होकर अपने गुणको छिपाये हैं व संसार में रहने पर भी कुछ वस्तु अपने पास न रखकर इसतरह संसारसे विरक्त दिखलाई देते हो जिसतरह कमल का फूल पानीमें उत्पन्न होकर जलसे विलग रहताहै व संसारी मनुष्यों

को देखताहूं कि काम क्रोध मोह लोभकी अग्नि में जलकर एक क्षण सुखसे नहीं रहते व आप इस तरह आनन्दमूर्ति दिखलाई देतेहैं जिसतरह हाथी ज्येष्ठ महीने की धूप का मारा हुआ जलमें जाकर ठण्ढा व मस्त होजाताहै इसलिये तुमसे विनय करताहूं कि जो कुछ ज्ञान व परमेश्वर की महिमा आपको मालूम हो सो दयालु होकर मुझे बतलाइये यह वचन सुनतेही दत्तात्रेयने उसकी ओर देखा व हँसकर कहा हे राजन् मैंने चौबीस गुरु अपने समझकर जो कुछ ज्ञान उनसे सीखाहै वह कहताहूं सुनो व पचीसवां गुरु मेरा यह शरीरहै जब मैंने अपने शरीरको विचारकर देखा तब मालूम हुआ कि इस तनुमें मल व मूत्र व रक्त व मांस अशुद्ध वस्तु भरी होकर सिवाय लेने नाम परमेश्वर व करने शुभ कर्म के दूसरी वस्तु उत्तम नहीं है किसवास्ते संसारी मायामें फँसकर जन्म अपना वृथा विताऊं जब यह समझकर परमेश्वरका भजन व स्मरण करनेवास्ते अकेला अपने घरसे बाहर निकला व बौड़होंके समान चारों ओर फिरनेलगा तब लड़कों ने मुझे बौड़हा समझकर पीछे पीछे फिरना व पत्थर मारना व गाली देना आरम्भ किया व सिवाय चौबीस गुरुके जिसने मुझे गायत्री मंत्र उपदेश किया था उसे विलग समझना चाहिये सो पहला गुरु मेरा पृथ्वी होकर उससे तीन बातें मैंने सीखीहैं मैंने एक पहाड़को देखा कि धरती से ऊँचा रहकर अनगिनत मनुष्य व पशु पक्षी आदिक जीवोंको अपने ऊपर रहने व चलने आंधी व वर्षने पानी के वह अपने स्थानसे नहीं हिलता तब मैंने विचारा कि ज्ञानीको भी संसारीमाया व चाहनामें जो हवा व पानी के समान है लपट कर अपनी जगहसे हिलना न चाहिये किसवास्ते कि तनु मनुष्यका मूठी भर मिट्टी का बनकर आयुर्दा हवाके समान बीती जाती है दूसरे वृक्षोंको देखा तो पृथ्वी में उत्पन्न होकर अपनी छाया व फल व फूलसे सब जीवोंको सुख देतेहैं व एक पैरसे खड़े रहकर वर्षाऋतु व गर्मी व सर्दीका दुःख उठाने परभी अपने स्थान से नहीं हिलते एक दिन मैंने घरसे निकलकर क्या देखा कि बहुत मनुष्य वृक्षकी छाया में बैठे थे जब वहां से ठंढे होकर जाने लगे तब किसी ने उसकी डाली व

किसीने पत्ता व फल तोड़ लिया पर वह वृक्ष कुछ नहीं बोला यह हाल उसका देखकर मैंने अपने मनमें कहा कि ज्ञानी मनुष्यों को अपना तनु व धन परोपकारके वास्ते समझकर अपना प्राणतक देने में मुकरना न चाहिये किसवास्ते कि यह शरीर मिट्टी का पुतला सदा बनता व बिगड़ता रहताहै इससे क्या उत्तम जो दूसरे के काम आवे तीसरे हमने पृथ्वी को देखा कि संसारी लोग उसकी छातीपर लात रखते हैं पर वह किसी को भला व बुरा नहीं कहती सो हमने विचारा कि ज्ञानी मनुष्य को भी किसीकी स्तुति करने से प्रसन्न होना व दुर्वचन कहने में खेद मानना न चाहिये दूसरा गुरु मेरा हवा है मैंने हवाको सुगन्धित फूल व लहसुन आदिक दुर्गन्ध दोनोंमें बहते हुये देखकर अपने मनमें कहा ज्ञानी मनुष्य कोभी जो कुछ मीठा व कड़वा कर्मानुसार मिले वह खाकर आनन्दपूर्वक स्मरण व ध्यान परमेश्वरका करै व कुछ स्तुति व निन्दा उसकी न करै तीसरा गुरु मेरा आकाश है जिसतरह गूलरका फल भीतर से खोखला हो कर उसमें छोटे छोटे मच्छड़ भरे रहतेहैं उसी तरह पृथ्वी व आकाश गोल होकर उसके भीतर सब जीव जड़ व चैतन्य वास करते हैं सो हमने इस ब्रह्माण्ड में क्या देखा कि प्रकाश सूर्यका बीच बर्तन चांदी व सोना व मिट्टीके पानी भरेहुयेमें बराबर पड़कर उसको किसीसे मिलावट व आश्रय नहीं रहता व बर्तन तोड़ने व पानी गिरानेसे वह प्रकाश फिर सूर्य में मिल जाताहै व बर्तनों में छाया पड़नेसे कुछ तेज उनका घट नहीं जाता यह हाल देखकर हमने जाना कि परमात्मा पुरुषको जिनकी शक्ति चौरासी लाख योनिमें रहती है आकाशके प्रमाण समझना चाहिये इसलिये जीवों के मरने में उनकी कुछ हानि न होकर वे अपने तेज से एक जगह प्रकाशित रहते हैं व उनकी शक्ति सब जीवों में रहने से कुछ उनका तेज कम नहीं होजाता चौथा गुरु मेरा पानी मोतीके समान उज्ज्वल होकर किसी जगह मैला जो दिखाई देता है वह कारण मिट्टी व राख आदिक मिलने का समझना चाहिये नहीं तो वह उज्ज्वल व पवित्र होकर सब जगत को शुद्ध कर देताहै उसे हमने देखकर समझा कि ज्ञानी को भी

पानी के समान शुद्ध रहकर अपने पास बैठनेवालों को ज्ञान उपदेश करके पवित्र कर देना चाहिये जिसमें सब छोटे बड़े उसको अच्छा कहें पांचवां गुरु मेरा अग्नि है जिस में सब वस्तु डालनेसे जलजाती हैं व दूसरे दिनके वास्ते कुछ नहीं रहतीं व जो लोग अग्निमें यज्ञ व होम करते हैं उनका पाप जलकर छूट जाता है उसी तरह ज्ञानी को भी चाहिये कि जो कुछ उसको मिले उसी दिन सब खर्च करडाले दूसरे दिनके वास्ते कुछ न रक्खै व जो कोई उसे खिलादे वह खाकर अपने आशीर्वाद से खिलानेवालेका पाप छुड़ादेवे छठवां गुरु मेरा चन्द्रमाहै जिसतरह चन्द्रमा सदा एकरूप रहकर सूर्य के समीप व दूर होने से उसका तेज घटता व बढ़ताहै उसी तरह जन्म लेना व मरना संसारमें होकर वह परमात्मा पुरुष जिसका प्रकाश चौरासी लाख योनि में रहता है सबसे विलग व सदा एकरस रहता है इसलिये हमने अपना गुरु परमात्माको भी समझा व सातवां गुरु अपना सूर्यको मानकर उनसे दो वस्तु मैंने पाई एक तो जिस तरह आठ महीनेतक सूर्य देवता समुद्र व नदी आदिक का पानी सुखाकर चार महीने वर्षाऋतु में वह पानी बर्षा देते हैं उसी तरह ज्ञानी को चाहिये कि जो कुछ मिले उस वस्तुपर तृष्णा न रखकर किसीको दे डाले दूसरे यह कि बहुतसे बर्तन पानी भरकर धूप में धर दे तो सूर्यरूपी परछाहीं बीच उन बर्तनों के दिखलाई देती है पर अनेक सूर्य दिखलाई देनेसे सूर्य देवता बहुत नहीं होजाते इसलिये मैंने जाना कि परमात्मा पुरुष एक होकर केवल उनकी छाया सब जीवोंमें रहती है आठवां गुरु मेरा कपोत नाम पक्षी है जब वह अपने बच्चों के पालने वास्ते जाल में दाना चुगने गया व बहेलिया वहजाल उठाकर अपने घर चला आया तब हमने मनमें कहा देखो जिसतरह यह पक्षी अपने बच्चों के वास्ते जाल में फँसकर नष्ट हुआ उसी तरह ज्ञानी मनुष्य संसारी प्रीति रखने से दुःख पावेगा जितना कष्ट उस पक्षी ने एक दिन में उठाया उतना सुख हजार वर्षमें भी उसको प्राप्त नहीं होता इसलिये मैं स्त्री व पुत्रका प्रेम छोड़ कर अकेला बहुत प्रसन्न रहता हूं ॥

आठवां अध्याय ।

दत्तात्रेयका राजा यदुसे ज्ञान कहना ॥

दत्तात्रेय ने कहा हे राजन् नवां गुरु मेरा अजदहा सर्प है कि जबसे उसने जन्म पाया तबसे उसी जगह रहकर कहीं भोजन ढूंढ़ने नहीं गया जब हरिणादिक पशु आनकर अपना सींग उसके अंगमें चुभावते थे तब वह एक दो को उठाकर निगल जाता था इसी तरह नित्य विष्णु भगवान् उसका पालन करते थे और वह सांप किसी दिन भूखे रहजाने पर भी सन्तोष रखता था उसे देखकर मैंने समझा कि ज्ञानी को भी गृहस्थों के द्वारे मांगने वास्ते जाना अपनी पति खोना है उसी दिन से मैं किसी के घरपर भोजन मांगने वास्ते नहीं जाता जो कुछ परमेश्वर विना मांगे भेज देते हैं उसे खाकर प्रसन्न रहता हूँ व उत्तम व मध्यम भोजनका स्वाद जिह्वातक रह कर पेट में जाने से मल होजाता है दशवां गुरु मेरा समुद्र है जो वर्षाऋतु में अनेक नदियोंके मिलने से कुछ न बढ़कर गर्मी व जाड़े में भी नहीं सूखता सदा एकरूप रहकर उसके आदि व अन्त को कोई नहीं देखता उसे देखकर मैंने विचारा कि ज्ञानी को भी समुद्र की तरह निश्चिन्त रहना उचित है लाभ व हानि होने में कुछ हर्ष व खेद करना न चाहिये ग्यारहवां गुरु मेरा पतंग है जिस तरह वह दीपक पर मोहित होकर उससे मिलनेवास्ते बेधड़क जल मरता है उसी तरह संसारी जीव अपनी स्त्री व पुत्र व धनके मोह में फँसकर अन्त समय नरक भोगते हैं इसलिये ज्ञानी को स्त्री से प्रीति न रखकर पतंग के समान परमेश्वर से प्रेम करके अपना प्राण देना चाहिये जिस में मुक्ति पदार्थ मिले जब स्त्री से प्रीति करने में दोनों पंख ज्ञान व वैराग्य के जल जाते हैं तब वह पंगुल होजाने से वैकुण्ठ में नहीं पहुँच सक्ता नरक में पड़कर अनेक तरह का दुःख भोगता है इसवास्ते मायारूपी स्त्री से अलग रहकर कभी उसके पास अकेले में बैठना न चाहिये स्त्री व धन से सुख चाहने वाले लोग पतग के समान जलकर नष्ट होजाते हैं व स्त्री के पास बैठने में ज्ञानी मनुष्य ऐसे अन्धे व बहिरे होजाते हैं कि उनको

अपना भला व बुरा न सूझकर किसी की लज्जा नहीं रहती यही बात समझकर मैंने स्त्री की संगति छोड़ दी बारहवां गुरु मेरा शहदकी मक्खी है एकबेर मैंने क्या देखा कि उसने बड़े परिश्रम से जो शहद छत्ते में इकट्ठा किया व कृपणता से आप उसे न खाकर किसी दूसरे को भी नहीं दिया था वह शहद एक मुसहर सब मक्खियोंको जलाकर छत्तेसे निकाल कर लेगया यह हाल देखकर मैंने विचार किया कि द्रव्य बटोरनेवालों की यही दशा होती है उस दिन से दूसरे रोज के वास्ते कुछ न रखकर सब खर्च कर डालता हूं सो ज्ञानी मनुष्य को अपने भोजन प्रमाण मांग कर अधिक लेना न चाहिये धन बटोरने से मक्खियों की तरह दुःख प्राप्त होता है तेरहवां गुरु मेरा हाथी है मैंने देखा कि हाथी फांसनेवालोंने वन में गड़हा खोदकर उसको सरहरी से पाटा व काले कागज का हाथी व हथिनी बनाकर उस पर खड़ाकर दिया जब एक जंगली हाथी उसे सची हथिनी समझकर कामवश वहीं दौड़ता हुआ जाकर गड़हे में गिरपड़ा तब हाथी फांसनेवालों ने रस्सा से बांधकर उसको पकड़ लिया यह दशा हाथी की देखकर मैंने विचार किया कि ज्ञानी को स्त्री की चाहना करनी उचित न होकर कठपुतलीसे भी प्रीति रखना न चाहिये जिस तरह हाथी ने हथिनी के वास्ते गड़हे में गिरकर दुःख उठाया था उसी तरह परस्त्री-गमन करनेवाले नरक में पड़कर बहुत कष्ट पाते हैं चौदहवां गुरु मेरा मधुहा मक्खी के छत्ते से शहद निकालनेवाला है जो शहद भँवरे बहुत दिनों में इकट्ठा करते हैं उसको वह एक बेर निकालकर लेजाता है उसे देखकर मैंने विचारा कि भँवरे उस शहद को खाजाते तो वह किस तरह लेने पाता इकट्ठा करनेवालों को सिवाय दुःखके कुछ सुख नहीं होता इस लिये ज्ञानी को चाहिये कि जो गृहस्थ बहुत लड़के वाले रखकर अपने यहां द्रव्य बटोरे हो उसके यहां से अपने प्रयोजन भर मांग लाकर भोजन कर लेवे झोली बांधकर लेचलने से राह में कोई छीन लेगा पंद्रहवां गुरु मेरा हरिण है जिस तरह वह राग सुननेवास्ते जाकर बाण लगने से घायल होता है उसी तरह संसारी मनुष्य मायारूपी स्त्री का गाना व

वचन सुनकर उसके वश होजाते हैं इसलिये ज्ञानी को अपने स्थान से उठ कर दूसरी जगह जाना व स्त्री का गाना सुनना उचित नहीं है सोलहवां गुरु मेरा मछली है किसवास्ते लालच थोड़े से मांसादिक के जो कटिया में लगाकर अहेर खेलते हैं अपना प्राण देती है सो एक मछली को कटिया में फँसे हुये देखकर मैंने समझा कि ज्ञानी मनुष्य को भी उत्तम भोजन ढूंढ़ना उचित न होकर जो कुछ भला बुरा परमेश्वर की इच्छा से मिल जावे उसे खाकर पंचभूतात्मा व अपनी जिह्वा को वश में रक्खै जिसमें उसको बड़ाई मिले सत्रहवां गुरु मेरा पिंगला नाम वेश्या है एक दिन हमने राजा जनक के नगर में जाकर क्या देखा कि पिंगला वेश्या सोलहों शृंगार करके सन्ध्या समय में बीच इच्छा आवने किसी व्यसनी के आधी रात तक अपने द्वारे पर बैठी रही पर कोई चाहनेवाला उसका नहीं आया तब वह बहुत उदासी से अपने भीतर जाकर शय्या पर लेट रही पर कामरूपी मद में उसको नींद न आकर ऐसा ज्ञान उत्पन्न हुआ जैसा किसीको दशहजार वर्ष तक ध्यान करनेसे भी नहीं मिलता उस वेश्या ने मनमें बिचारा देखो बड़े शोच की बात है कि मैंने जन्म अपना वृथा खोकर स्मरण व ध्यान त्रिभुवनपति जगत्पालक का नहीं किया व परमात्मा पुरुष सच्चे मित्र का प्रेम छोड़कर संसारी मनुष्य झूठे चाहनेवालों से प्रीति लगाई मेरे बराबर कोई दूसरा मूर्ख न होगा जैसा मैंने अपने साथ किया वैसा कोई अन्धा भी नहीं करता कि अपने मालिक को जो शरीर में वर्तमान है भूलकर नहीं देखा जिस तरह यह शरीर हवा व पानी व मिट्टी व हड्डी व मांस से बनकर नाशरूपी रस्सियों से बँधा है उसीतरह चरखा काठका डोरा से बँधा रहकर घूमताहै जैसे मकानमें अनेक द्वारे रहते हैं वैसे शरीरमेंभी नवद्वारे नाक व कानआदिक रहकर हरएक द्वारसे अशुद्ध वस्तु निकलती है सो मैंने चाहा कि इस घर में प्रसन्न रहूं अब मैंने जाना कि इस झूठे संसारमें सिवाय दुःखके कुछ सुखप्राप्त नहीं होता और केवल परमेश्वर का स्मरण व ध्यान करने व कथा सुनने से लोक व परलोक बनता है जितना मैं रुपया लेनेवास्ते जो मरने उपरान्त काम

नहीं आता अपने व्यसनी को रिझाती थी उतना शृंगार करके त्रिभुवन-पति को लोभाती तो मेरा परलोक बनजाता देखो जो लोग मायारूपी रस्सी से बँधे होकर अपने दुःख में आप व्याकुल हैं उनसे मूर्खताई की राह अपना सुख चाहकर ज्ञान व वैराग्य संसारी बन्धन काटनेवालों से प्रीति नहीं लगाई इसलिये आज मैंने संसारी माया छोड़कर यह प्रण किया कि आदिपुरुष भगवान्‌से जो वैकुण्ठका सुख देनेवाले हैं प्रीति लगा कर उनके साथ विहार करूं व संसारी मनुष्यकी ओर जो विपत्ति में काम नहीं आते आंख उठाकर न देखूं व सिवाय परमेश्वर के और किसी से कुछ वस्तु न मांगूं किसवास्ते कि महात्मा लोगोंने ऐसा कहाहै कि मनुष्य जिस वस्तु की इच्छा रखता हो नारायणजी से मांगे और दूसरे किसी से कुछ इच्छा न करे परमेश्वर सब वस्तु अपने यहां रखकर यह चाहते हैं कि कोई हमसे कुछ मांगे व संसारी मनुष्य ऐसी सामर्थ्य नहीं रखता जो सबकी इच्छा पूर्ण करसके कदाचित् ऐसा कहूं कि कोई व्यसनी न आने व द्रव्य न मिलने से यह ज्ञान मुझे प्राप्त हुआ सो इस तरह कई बेर मेरे स्थानपर व्यसनी न आनकर मुझे उपास होगया था न मालूम कौन जन्म का पुण्य सहाय होने से आज यह ज्ञान मेरे मनमें आया हे राजन् वह वेश्या तीन पहर रात बीततक ज्ञानभरी बात विचार करतीहुई शय्यापर सो रही व उसी दिनसे अपना उद्यम छोड़कर हरिचरणों का स्मरण व ध्यान करने लगी इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित यह सब ज्ञान उस वेश्याको दत्तात्रेय के दर्शन मिलने से प्राप्त हुआ था पर वह यह बात नहीं जानती थी दत्तात्रेय ने कहा हे राजन् यह हाल पिंगलाका देखतेही मैं भी उसी दिनसे संसारी माया छोड़कर बीच स्मरण व ध्यान परमेश्वर के मग्न रहताहूं संसारी वस्तु की चाहना रखने में बड़ा दुःख होकर तृष्णा छोड़ देने व हरिभजन करने से इस तरह सुख व मुक्तिपदार्थ मिलता जिसतरह वह वेश्या अपने व्यसनी की प्रीति छोड़कर भवसागर पार उतर गई ॥

नवां अध्याय।

राजा यदुसे दत्तात्रेय का ज्ञान कहना॥

दत्तात्रेयने कहा अठारहवां गुरु मेरा चील्ह है एकदिन हमने देखा कि एक चील्ह मांसका टुकड़ा अपने चंगुल में लिये हुये उड़ी जाती थी जब दूसरी कई चील्हें वास्ते छीनने टुकड़ा मांसके उसको चोंच व चंगुल से मारनेलगीं तब उस चील्हनें मनमें कहा देखो मुझे इन चील्हों से कुछ शत्रुता नहीं है केवल मांसके टुकड़े के वास्ते यह सब मुझे मारती हैं जब ऐसा समझकर उसने वह टुकड़ा गिरादिया तब दूसरी चील्हें जो मारती थीं चलीगईं और वह चील्ह आनन्द से एक वृक्षपर बैठरही उसे देख हमने विचार किया कि धनादिक रखने से परिवारवाले व चोर व ठग मेरे साथ शत्रुता करेंगे इसलिये कोई वस्तु अपने पास न रखकर आनन्दपूर्वक परमेश्वर का भजन करतारहूं व उन्नीसवां गुरु मेरा अज्ञान बालक है जो काम व क्रोध व मोह व लोभ के वश न होकर इतना विरक्त रहता है कि मणि हाथ में रखता हो और कोई मनुष्य मेवा व मिठाई के बदले उससे वह रत्न मांगै तो देडाले व सिवाय खेलनेके दूसरा उद्यम नहीं रखता व अपने घर द्वार से कुछ प्रीति न रखकर ज्ञानियों की तरह विरक्त रहता है उसको देखकर मैंने समझा कि ज्ञानीको भी निर्लोभ रहकर कुछ तृष्णा रखनी न चाहिये संसार में दो मनुष्य एक बालक अज्ञान व दूसरा ब्रह्मज्ञानी प्रसन्न होकर और सब कोई दुःख व सुख में फँसे रहते हैं बीसवां गुरु मेरा कुमारी कन्या है एक दिन मैंने गृहस्थ ब्राह्मण के घर भीख मांगने वास्ते जाकर क्या देखा कि अकेली कुमारी कन्या वहां होकर और सब घरवाले कहीं बाहर गये थे उसी समय तीन मनुष्य दूसरे नगर से उसके विवाह का संदेशा लेकर वहांपर आये सो उस छोकरी ने सबको बड़े सन्मानसे बैठाला व चावल न तैयार रहने से आप कोठरी में जाकर मेहमानों के वास्ते धान कूटने लगी जब उस समय चूड़ियां उसकी बोलीं तब उसने विचारा कि ये लोग चूड़ियों का बोलना सुनकर कहेंगे कि इनके घर एक दिनके खाने वास्ते भी चावल नहीं हैं इस बात में लज्जा समझ

कर उसने दो दो चूड़ी हाथ में रखलीं और सब चूड़ी एक एक करके तोड़डालीं तिसपर भी बोलना उनका बन्द नहीं हुआ जब उसने एक एक और तोड़कर अकेली चूड़ी रहने दी तब बोलना चूड़ी का बन्द होनेसे धान कूटकर मेहमानों को भोजन खिलाया यह हाल देखकर मैंने समझा कि बहुत लोगों की संगति करने से आपस में झगड़ा होता है दो मनुष्य साथ रहने से भी अनेक वार्ता होकर हरिभजन नहीं बनपड़ता इसलिये ज्ञानीको किसी से संगति व प्रीति करनी उचित न होकर अकेले हरिभजन करना चाहिये इक्कीसवां गुरु मेरा तीर बनानेवाला है एक दिन हमने बाजार में तीर बनाने वाले की दूकान पर खड़े होकर क्या देखा कि वह तीर बना रहा था उसी समय राजाकी सवारी बड़ी धूमधाम से उस दूकान के सामने होकर दूसरी ओर चली गई थोड़ी देर उपरान्त राजा के एक नौकर ने जो पीछे रहगया था आनकर तीर बनाने वाले से पूछा कि राजाकी सवारी किधर गई है उसने उत्तर दिया कि मैंने राजाकी सवारी नहीं देखी यह बात सुनकर हमने तीर बनानेवाले से कहा अभी सवारी राजाकी धूमधामसे तुम्हारे सामने होकर चलीगई है किसवास्ते झूठ बोलते हो तब वह बोला हम तीर बनाने में लगे थे इसलिये कुछ ध्यान सवारी का नहीं किया उससमय हमने अपने मनमें कहा कि तुझे भी सब इन्द्रियों को वशमें रखकर इसी तरह नारायणजी का ध्यान करना चाहिये बाईसवां गुरु मेरा सांप है जो अपने रहने वास्ते घर नहीं बनाकर चूहों के बिलमें रहजाता है उसे देखकर मैंने विचार किया कि ज्ञानी साधुको भी घर बनाना उचित न होकर जहां रात होजावै वहां स्थान अपना समझना चाहिये तेईसवां गुरु मेरा मकड़ी है जो सूतके समान तार अपने मुखसे निकालकर फिर उसे खाजाती है उसको देखकर मैंने विचार किया कि परमेश्वर को भी इसी तरह जानना चाहिये कि चौरासी लाख योनि उनसे उत्पन्न व पालन होकर अन्तसमय जीवात्मा सबका उनके रूपमें समा जाता है इसलिये ज्ञानीको मनसा वाचा कर्मणा से बीच स्मरण व ध्यान घट घट व्यापक भगवान् के लीन रहना उचित है व चौबीसवां गुरु मेरा

भृंगी कीड़ा है जिसके डरसे दूसरे कीड़े उसीका रूप होजाते हैं उसको देखकर मैंने कहा कि ज्ञानी को भी चाहिये कि परमेश्वर में इस तरह मन लगावे जिसमें उन्हीं का स्वरूप होजावे यह सब ज्ञान कहकर दत्तात्रेय बोले जो कुछ ज्ञान इन चौवीसों गुरुओं से हमने सीखा था वह तुमको सुनादिया इस ज्ञानको तुम समझकर नारायणजी का स्मरण व ध्यान करो तुम्हारी मुक्ति होजावेगी हे राजन् चौरासी लाख योनि में बहुतसा शोच व दुःख उठाकर बड़ी कठिनता से मनुष्यका तनु मिलता है इसलिये यह तनु पाकर संसारीमाया मोहमें फँसना उचित नहीं है केवल परमेश्वर का तप व ध्यान करने वास्ते मनुष्य का तनु मिलता है सिवाय इस चोले के दूसरी योनि में परमेश्वर नहीं मिलसक्के जो कोई मनुष्य तनु पाकर हरिभजन नहीं करता वह फिर चौरासी लाख योनि में जन्म लेकर बड़ा दुःख पाता है जब इस जीव ने मनुष्य तनु पाया तो ऐसा समझना चाहिये कि वह एक पैर अपना भवसागर पार उतरने की नौकापर रख चुका जिसने इस शरीरमें शुभ कर्म किया वह दूसरा पांव भी उस नौकापर रखकर भवसागर पार उतर जाताहै नहीं तो उस नावसे चौरासीलाख योनि में गिरकर बहुत दुःख पावेगा यह शरीर कभी दुबला रहकर कभी मोटा होजाता है इसलिये नाश होनेवाले तनुका कुछ मोह करना न चाहिये जो लोग स्त्री व पुत्र व द्रव्य व हाथी व घोड़ा आदिक को अपना जान कर यह समझते हैं कि अन्त समय ये सब मेरी सहायता करेंगे उनको अवश्य नरक भोगना पड़ता है यह मन चंचल जो अपने वश नहीं रहता इसे अवश्य अपने आधीन रखना चाहिये नहीं तो जिस तरह छः चोरोंने एक रत्न चुराकर भाग न लगने से आपस में झगड़ा करके फांसी पाई उसीतरह सब इन्द्रियां अपना अपना सुख भोगने वास्ते मनको अपनी ओर खींचकर उसे नरक में डालदेती हैं व अज्ञान मनुष्य उनके वश हो कर बहुत दुःख पाता है जिस तरह संसारमें कोई स्त्री रखनेवाले नष्ट होते हैं उसी तरह मन चंचल व नाक व जिह्वा व लिंगादिक इन्द्रियों के वश होकर दुःख पाता है पहिले परमेश्वर ने पशु व पक्षी व वृक्षादिक उत्पन्न

करने से सन्तुष्ट न होकर जब मनुष्य का तनु बनाया तब आनन्द होकर कहा कि इस शरीर में ज्ञान प्राप्त होनेसे जीवन्मुक्तपदवी पर पहुँचैगा इस लिये मनुष्यतनु केवल भगवत् भजन करनेवास्ते होकर मनुष्य को संसारी मायामें लपटना न चाहिये पेट भरना व भोग करना दूसरी योनिमें भी प्राप्त होसक्ताहै पहिले से पानी भरा हुआ आग बुझावने के काम आनकर आग लगने के समय कुआं खोदने व पानी भरने में वह बुझने नहीं सक्ती हे राजन् मैं परमेश्वर का चमत्कार सब जीवों में बराबर समझकर प्रसन्न रहताहूं सो तुम्हें व सब संसारी जीवों को भी इस तनु में मुक्ति मिलने वास्ते उपाय करना उचित है नहीं तो पीछे सिवाय पछिताने के कुछ हाथ नहीं लगेगा हे उद्धव दत्तात्रेय यह सब ज्ञान राजासे कहकर तीर्थयात्रा करने चलेगये व राजा यदु उसी ज्ञानके प्रतापसे मुक्तपदवीपर पहुँचा सो तुमभी वही ज्ञान मनमें दृढ़ रखकर संसारी प्रीति छोड़देव ॥

दशवां अध्याय।

श्यामसुन्दर का उद्धव को ज्ञान सिखलाना ॥

श्रीकृष्णजीने कहा हे उद्धव संसारी मनुष्यको चाहिये कि अपने वर्ण व आश्रम का धर्म शास्त्रानुसार रखकर किसी बात की चाहना न करे यज्ञ व श्राद्धादिक देवकर्म व पितृकर्म करके गुरुकी सेवामें प्रीति रखकर गुरु का वचन सच्चा माने जब तुम मन अपना संसारी मायासे बटोरकर एक चित्त करोगे तब गुरुका उपदेश तुम्हारे हृदय में प्रवेश करेगा देखो यह शरीर शुभ व अशुभ कर्म करके अनेक जन्म पाता है इसलिये मनुष्यतनु में आत्मा को शरीर से अलग समझकर संसारी सुख व व्यवहार को झूंठा समझना चाहिये विना हरिभक्ति किये व आत्माको अंग से विलग जाने मुक्ति नहीं होने सक्ती बालापन व तरुणाई व बुढ़ापा तीनों अवस्था शरीर में होकर आत्मा सदा एकरूप रहताहै व मनुष्य अपने अज्ञान से दुःख मानकर सुख प्राप्त होने का उपाय नहीं करता यज्ञ व तीर्थ आदिक शुभ कर्म करने के फलसे संसारी जीव देवलोक में जाकर सुख भोगते हैं अवधि बीतने उपरान्त फिर मृत्युलोक में जन्म पाकर अधर्म करने के बदले नरक

भोगना पड़ता है जब तक मुक्ति प्राप्त नहीं होती तब तक वह जीव आवागमन में फँसा रहने से अनेक तरहका दुःख पावताहै इसलिये भव-सागर पार उतरनेवास्ते सिवाय हरिभजन व सत्सङ्ग के दूसरा उपाय उत्तम नहीं होता और जो तुम कहतेहौ कि हमको अपने साथ ले चलो जिसमें तुमसे बिलग न हों हे उद्धव ज्ञान प्राप्त होने से वियोग का दुःख नहीं होता व तुम संसार में इन जीवोंको जो देखते हो ब्रह्मासे लेकर चींटीतक ये सब मृत्युका ग्रास हैं व मैं जन्म व मरणसे रहित होकर जब पृथ्वी का भार उतारनेवास्ते अवतार लेताहूं तब मुझे भी निर्गुणरूप त्याग करना पड़ता है इसलिये तुम्हें चाहिये कि सदा मन अपना मेरे भजन व स्मरण में लगाये रहकर बीच ध्यान हरिचरणों के लीन रहो तो वियोग का दुःख तुम्हारे हृदयमें नहीं रहैगा हे उद्धव जगत् में ज्ञान व अज्ञान दो बात प्रकट होकर जे लोग ज्ञानी हैं वे इस शरीर को वृक्षके समान जानकर उसपर दो पक्षी बैठेहुये समझते हैं उनमें एक पक्षी थोड़ा भोजन करके सामर्थ्य अधिक रखताहै उसे परमात्मा समझना चाहिये जो काम व क्रोध व मोह व इन्द्रियों के सुखसे कुछ प्रयोजन नहीं रखता व दूसरा पक्षी बहुत खानेपरभी निर्बल रहकर संसारी सुखमें प्रसन्न रहताहै उसे जीवात्मा समझना चाहिये व स्त्री व द्रव्य व सुख मिलने से प्रसन्न होकर उसके वियोग में दुःख पाता है और यह नहीं समझता कि हानि व लाभ व दुःख व सुख परमेश्वर की इच्छा-नुसार होकर उसमें दूसरे का कुछ वश नहीं चलता हे उद्धव संसारी मनुष्य के भवसागर पार उतरने वास्ते जो उपाय करना चाहिये सो कहते हैं सुनो मनमें किसी बातका अभिमान रखना व दुर्वचन कहना व दूसरेको धनपात्र देखकर डाह करना व बिना प्रयोजन अधिक बोलना व स्त्री व पुत्रोंसे बहुत प्रीति करनी उचित न होकर परमात्माको शरीरसे अलग समझना न चाहिये जिस तरह काठमें आग छिपी रहकर उपाय करनेसे प्रकट होती है और काठ जलादेने से वह अग्नि उससे बिलग होकर फिर उसके साथ नहीं रहती उसी तरह प्रकाश परमेश्वर का सब जीवों में रहकर जब वे अपनी शक्ति शरीरसे खींचलेते हैं तब मरजाता है वह लोथ जलादेने से आत्माको कुछ

दुःख नहीं पहुँचता व परमात्मा का प्रकाश सब जीवों के तनुमें एकसा देखने से कुछ डर न होकर भेद समझने में अनेक तरहका भय लगा रहता है इसलिये आत्माको सब जगह बराबर जानकर संसारी मायासे छूटने वास्ते आठों पहर उपाय करना चाहिये हे उद्धव इस तरह का ज्ञान रखने वाला मनुष्य अवश्य मुक्त होता है ॥

ग्यारहवां अध्याय।

श्यामसुन्दर का उद्धवको ज्ञान सिखलाना ॥

केशवमूर्तिने कहा हे उद्धव संसार में दुःख व सुख मायाके गुणोंसे होकर मुझे वह माया नहीं व्यापने सक्ती जिस तरह स्वप्नमें कोई मनुष्य अनेक तरहका हर्ष व विषाद देखकर जागने उपरान्त सब झूठा समझता है उसी तरह संसारी व्यवहार झूठा होकर परमेश्वर की माया से सच मालूम होता है व जीवात्मा सबके तनुमें मेरी शक्ति होकर जबतक वह जीव मुझे नहीं पहिंचानता तब तक मुझसे बिलग रहता है व मेरा भेद जाननेवाले इस तरह मेरे स्वरूपमें लीन होजाते हैं जिस तरह शीशे में अपनी परछाहीं दिखलाई देकर उसको उलटने से फिर वह रूप नहीं देख पड़ता व मूर्ख मनुष्य शीशा अज्ञान के हाथ में रखकर अपनेको मुझ से बिलग समझते हैं ज्ञानीलोग गृहस्थाश्रम रहने व सब जगत् का काम करनेपरभी मन अपना विरक्त रखकर संसारीजाल में नहीं फँसते ज्ञान व वैराग्य दोनों मुक्ति देनेवाले होकर अज्ञानी मनुष्य को सिवाय दुःख के कुछ सुख नहीं मिलता परमेश्वर के शरण जाने में ज्ञान प्राप्त होकर उन से विमुख रहनेवाले ज्ञान नहीं पाते जिस तरह हवा सुगन्ध व दुर्गन्ध दोनों तरह की वस्तु में होकर बहती है पर दोनों से बिलग रहकर कुछ सुगन्ध व दुर्गन्धका प्रवेश उसमें नहीं होता उसी तरह ज्ञानी को भी किसी की बड़ाई करने में प्रसन्न होना व दुर्वचन कहने से खेद मानना न चाहिये जो लोग अपनी स्त्री व पुत्र व हाथी व घोड़ा आदिक का रोग देखकर मेरी माया लपटने से शोच करते हैं उनको मूर्ख समझना उचित है किस वास्ते कि उनके शोच करने से कुछ गुण नहीं निकलता सबको अपने

कर्मानुसार दुःख व सुख मिलता है इसलिये ज्ञानी को चाहिये कि हानि व लाभ व दुःख व सुख परमेश्वर की इच्छापर जानकर अपने को किसी बात में अगुआ न समझै जो कोई वेद व शास्त्र पढ़कर नारायणजी की भक्ति नहीं रखता उसका पढ़ना व्यर्थ है बूढ़ी व बांझ गाय का रखना व कर्कशा स्त्री व अधर्मी सन्तान का पालन करना धर्मकी राह है किसवास्ते कि उनसे कुछ प्राप्त नहीं होता व जो लोग धन पाकर दान व धर्म आदिक शुभ कर्म में खर्च नहीं करते व उसको अपना समझकर रख छोड़ते हैं उस द्रव्यका होना व न होना दोनों बराबर होकर उन्हें कुछ सुख नहीं मिलता इसलिये ज्ञानी को धन पाकर यज्ञ व तीर्थ व दान व धर्म में खर्च करके उसका फल परमेश्वर को अर्पण कर देना चाहिये जिसमें लोक व परलोक दोनों बन पड़ें इतना ज्ञान सुनकर उद्धव ने विनय की महाराज आपने त्रिभुवनपति होकर केवल हरिभक्तों को भवसागर पार उतारने वास्ते नरतनु धारण किया है सो दयालु होकर मुक्ति होनेका उपाय बतलाइये यह वचन सुनकर वैकुण्ठनाथने कहा हे उद्धव जो गृहस्थ संसारी काम करनेपरभी मन अपना मेरी तरफ लगाये रहकर मुझे अपना मालिक व उत्पन्न करनेवाला समझै व किसी का बुरा न चाहकर अधिक तृष्णा न रक्खै व अपने शरीर के समान मुझे प्यारा जानकर गुरु का बताया हुआ मंत्र जपे व हर्ष व शोच को बराबर समझकर काम व क्रोध व मोह व लोभ व भूख व प्यास के वश न होवै व सिवाय हरिभक्ति के दूसरी चाहना न रखकर ठाकुरपूजा व भजन में प्रीति करै व किसीके गाली देने से खेद न मानकर मेरी शक्ति सब जीवों में बराबर समझै व अपनी सामर्थ्य भर परोपकार करके परमेश्वर की लीला व कथा सुनने में मग्न रहै व सिवाय स्मरण व ध्यान सगुणरूप मेरेके दूसरा कुछ उद्यम न रक्खे देवस्थान उत्तम बनवाकर ठाकुर के पुष्प चढ़ाने वास्ते वाटिका लगवा देवे व जो कुछ धन घरमें हो उसे परमेश्वर का जानकर अपना न कहे व जो कुछ अच्छी वस्तु भोजनवास्ते मिले वह पहिले ठाकुरको भोग लगावै फिर उसमें ब्राह्मण आदिक चारों वर्ण व अपने कुल परिवारवालों

को थोड़ा थोड़ा देने उपरान्त आप खावे व प्रतिदिन सूर्य को दण्डवत् और अग्नि में होम करके ब्राह्मण को इच्छाभोजन खिलावे व अपनी सामर्थ्यभर दान व दक्षिणा दिया करै व गौ की सेवा आप करके सब जगह बीच जल व पृथ्वी व आकाश आदिक के हमारा चतुर्भुजीस्वरूप ध्यान में देखे व प्रतिदिन देवताओं के नाम होम व पितरों के नाम तर्पण करके तालाव व बावली व कुयें व धर्मशाला आदिक जीवोंके सुख पावने वास्ते बनवा देवे व गरीव मनुष्य व ब्राह्मणों का स्थान बनवाकर उनकी कन्या विवाहने वास्ते आप द्रव्य देवै और साधु व महात्माओं की सुधि खाने व पहिरने से लेकर इस बात का अभिमान मन में न ले आवे कि यह शुभकर्म हमने किया व दूसरे के सामने भी इसकी चर्चा व अपनी बड़ाई न करे जो लोग शुभकर्म करके अपने मुखसे कहते हैं जिह्वा में अग्नि देवता का वास रहने से उनका पुण्य जल जाता है हे उद्धव इस तरहका धर्म व कर्म रखनेवाले मनुष्य से मैं बहुत प्रसन्न रहता हूं पर विना सत्संग किये यह सब ज्ञान प्राप्त नहीं होता साधु व महात्मा की संगति करने व मेरे ध्यान धरनेसे मनुष्य ज्ञान पाकर भवसागर पार उतर जाताहै॥

बारहवां अध्याय ।

वैकुण्ठनाथका उद्धवसे सत्संगका माहात्म्य कहना ॥

श्रीकृष्णजी ने कहा हे उद्धव मैंने यज्ञ व तप व दान व धर्म व वैराग्य आदिक का हाल तुमको सुनाया अब संत्संग की महिमा जिससे भक्ति उत्पन्न होती है कहता हूं सुनो जैसा हमें सत्संग प्यारा होकर भक्ति करने में जल्दी प्रसन्न होता हूं वैसा वेद पढ़ने व योगाभ्यास साधने व व्रत आदिक रखनेवालों से सुख नहीं पाता केवल सत्संग करने से मेरे चरणों में भक्ति उत्पन्न होकर संसारी जीव मुझे पहिचानते हैं और वे लोग जगत् में अपनी मनोकामना पाकर अन्तसमय आवागमनसे छूट जाते हैं देखो राजा वलि व वाणासुर व सुग्रीव व हनुमान् व जाम्बवन्त व जटायु व कुब्जा व व्रजवासी आदिक अनेक जीव मेरी भक्ति व दर्शन करने से भवसागर पार उतर गये व शवरी व निषाद आदिक अनेक जीव नीच

ऊंच जाति भक्ति करने से मुक्ति पदवी पर पहुँचे व गोपियों ने कुछ वेद व शास्त्र न पढ़ने व तीर्थ व्रत न करने व मेरी महिमा न जानने पर भी मुझे पतिभाव समझकर ऐसी प्रीति मेरे साथ की कि हमारे वियोग में उनको क्षण भर एक कल्प के समान मालूम होकर मेरे संग रास करती समय छः महीने की रात एक पलभर जानपड़ी थी सो उन्होंने उसी प्रीति व भक्ति के प्रताप से लक्ष्मीरूप होकर वैकुण्ठवास पाया जिस तरह कोई जान व अनजान में अमृत पीने से अमर होकर उत्तम औषध खाने से सदा तरुण बना रहता है उसी तरह जाने व विना जाने मेरी भक्ति व प्रीति करनेवाले मनुष्य संसार में सुख पाकर जन्म व मरण से छूट जाते हैं जैसे तागे में दाने काठ व रुद्राक्ष व सोने आदिक के पिरोकर माला बनती है उसी तरह संसारी जीव मेरे स्वरूप में रहते हैं पर यह बात विना बतलाने गुरु व सुनने कथा व करने सत्सङ्ग के मालूम नहीं होती इसलिये संसारी मनुष्यको गुरुकी सेवा व भक्ति करनी व ज्ञानरूपी तलवारसे मायारूपी संदेह काटकर सब जीवों में परमेश्वरकी शक्ति बराबर समझनी चाहिये यह सब ज्ञान सुनकर उद्धवने विनय की हे दीनानाथ जब भक्तिकी इतनी बड़ी पदवी है तब आपने यज्ञ व तप आदिक अनेक तरहके धर्म क्यों बनाये हैं श्यामसुन्दरने कहा हे उद्धव यज्ञ व तप आदिक कर्म करने से भी गुण निकलता है जिसमें हरिचरणों की भक्ति उत्पन्न हो जिसने भक्तिपदार्थ पाया उसे दूसरा धर्म व कर्म करना न चाहिये॥

तेरहवां अध्याय ।

श्यामसुन्दरका उद्धवको ज्ञान बतलाना ॥

श्यामसुन्दरने कहा हे उद्धव सात्त्विक व राजस व तामस तीन गुण मायाके होकर परमात्मा इन तीनोंसे विलग रहता है जिस समय सात्त्विक शरीरमें अधिक होता है उस समय धर्म व शुभकर्मकी ओर मनुष्यका मन लगताहै व सात्त्विकी स्वभाववाले को संसार में सबलोग अच्छा कहते हैं जो मनुष्य क्रोध अधिक रखकर कुछ कर्म किया करै उसे तामसी समझना चाहिये व जिनके शरीरमें राजस अधिक होता है वे लोग सुखकी चाहना

बहुत रखतेहैं इसलिये ज्ञानी मनुष्यको उचितहै कि आठों पहर मन अपना सात्त्विककी ओर लगाये रखकर ऐसा कर्म व धर्म करता रहै जिसमें मेरी याद उसको न भूले यह सुनकर उद्धव ने विनय की हे महाप्रभु जब मनुष्य ने जाना कि यह कर्म बुरा है व इसके करनेसे मुझे दुःख होगा तब वह जान बूझकर कष्ट देनेवाला काम करके गर्भ व नरक में सदा क्यों दुःख उठाता है वैसा कर्म किस वास्ते नहीं करता जिसमें जन्म व मरण से छूटजावे कौन मनुष्य ज्ञान उसका फेरकर कुकर्म की ओर लगा देताहै यह सुनकर त्रिभुवनपतिने कहा हे उद्धव उसकी बुद्धि नष्ट करनेवाली दो वस्तु होकर उनमें एक तृष्णा है जब मनुष्यको किसी वस्तुके लेनेवास्ते चाहना हुई व दूसरा कोई उसमें बाधक हुआ तब क्रोध उत्पन्न होता है और यही दोनों तृष्णा व क्रोध सब जीवों से अशुभकर्म कराते हैं व मुझ से विमुख रखकर उनका परलोक बनने नहीं देते जिस तरह चोर व लम्पट द्रव्य लेने व परस्त्रीगमन करने वास्ते दूसरे के घर जाकर पकड़े जाते हैं उसी तरह जबतक मनुष्य मुक्तिपदवी पर नहीं पहुँचता तबतक चाहना व क्रोधके वशमें रहकर जन्म व मरणका दुःख उठावताहै जिसने काम व क्रोधको जीतकर मुझे अपना मालिक व उत्पन्न करनेवाला जाना उस को ज्ञानी व मेरा भक्त समझना चाहिये यह सुनकर उद्धवने विनय की महाराज आपने सब यदुवंशियों को किस वास्ते मुक्ति नहीं दी एक पर दया करना व दूसरे को अभागी छोड़ना क्या कारण है श्यामसुन्दर ने कहा हे उद्धव हम पहिले तुझसे कहचुके हैं कि ज्ञान व अज्ञान के दो मार्ग हैं कदाचित् एक होता तो किसी मनुष्यको शोच व डर पूजा व भजन शुभ व अशुभ नरक व स्वर्गका न रहता हे उद्धव संसार में दो तरह के मनुष्य एक आत्माराम व दूसरे दयाराम होकर आत्माराम उसको कहना चाहिये जो आठों पहर परमेश्वर के स्मरण व ध्यान में लीन रहकर धन व संसारी सुख मिलने में हर्ष व उसकी हानि होने से कुछ विषाद नहीं करता व दयाराम उसको समझना उचित है जो संसार में द्रव्य व सुन्दर स्त्री व पुत्र आज्ञाकारी मिलने से प्रसन्न रहकर उन सबके वियोग होने में

शोच उठाते हैं इसलिये ज्ञानी मनुष्य को चाहिये कि अपने वर्ण व आश्रम के धर्मानुसार चलन रखकर अपनी क्रिया कभी न छोड़े अपने धर्म से फिरने में ब्रह्महत्याके समान पाप होता है हे उद्धव एक वेर सनत्कुमार आदिकने ज्ञानका अभिमान अपने मनमें उत्पन्न करके ब्रह्मा से यह वात पूछी थी कि संसारी मनुष्यका मन पंचभूत आत्मा से क्योंकर विलग होता है हमने सव तीर्थोंका स्नान किया व आठों पहर कथा व लीला परमेश्वरकी आपसमें कहते व सुनते रहते हैं तिसपर भी मन हमारा आजतक संसारी चाहना से विरक्त नहीं हुआ इसका क्या कारण है जव ब्रह्मा उसका उत्तर नहीं दे सके व दूसरे देवता जो वहां वैठे थे ब्रह्मा को हँसनेलगे तव ब्रह्माने वहुत लज्जित होकर मुझे याद किया उस समय मैं उनकी वात रखने वास्ते वहां चला गया व वीच तनु हंस पक्षी श्वेतवर्ण वाहन ब्रह्मा जो सभासे वाहर वैठा था प्रवेश करके सनकादिक के निकट चला गया व उन लोगों का अभिमान तोड़ने वास्ते वोला तुम क्या पूछते हो यह वात सुनकर सनत्कुमारने कहा तुम कौन हो तव मैंने उत्तर दिया हम व तुम विलग न होकर शरीर के अलग रहने परभी पंचभूत आत्मा जिसको प्राण कहते हैं हमारे तुम्हारे अङ्गमें एक है इसलिये पूछना तुम्हारा वृथाहै जव तुम अज्ञान वालक की तरह प्रश्न करते हो तव ब्रह्मा जी तीनों लोकोंकी रचना करनेवाले तुमको क्या उत्तर देवें हे सनत्कुमार जिस तरह अज्ञानी मनुष्य मनमें मनसूवा विचारकर संसार के सव सुख भोग लेते हैं पर वह सुख उनको प्राप्त नहीं होता उसी तरह संसारी व्यवहार व यह शरीर झूठ होकर परमेश्वरकी मायासे चार दिन वास्ते सच मालूम होता है जैसे अँधेरे में रस्सी पड़ी हुई देख कर सांप का सन्देह होजाता है वैसे अनेक शरीर नाश होनेवाले जीवात्मा विलग विलग दिखलाई देकर चौरासी लाख योनि में मेरा प्रकाश रहता है इसलिये शरीरको रस्सीरूपी झूठा सांप समझकर इस अंगनाश होनेवाली वस्तुसे प्रीति रखनी न चाहिये मेरी शक्ति निकल जाने से यह शरीर कुछ काम नहीं आवता जिस तरह वादल समुद्रका जल सोखकर वरसाते हैं तो फिर वह पानी

नदी व नाले की राह बहकर समुद्र में मिल जाता है उसी तरह जितने जीव जड़ व चैतन्य संसार में दिखलाई देते हैं वे सब मेरी इच्छासे उत्पन्न होकर मरने उपरान्त जीवात्मा सबका फिर मेरे रूप में समाजाता है जो लोग संसारी व्यवहार झूठा समझकर मायारूपी जाल में नहीं फँसते व विरक्त होकर हरिचरणों में सच्ची प्रीति करते हैं उन्हें तुरन्त मेरा दर्शन हो कर वैकुण्ठ का सुख मिलता है जिस तरह मदिरा के नशे में मनुष्य मतवाला होकर अपने तनु व वस्त्रकी सुधि नहीं लेता उसी तरह हरि-भक्त लोग भी मेरे ध्यान में लीन रहकर अपने शरीर की सुधि नहीं रखते व मैं यज्ञ व तप आदिक शुभ कर्मों का फल देनेवाला होकर सब किसी को उसके कर्मानुसार जन्मभर भोजन व वस्त्र देता हूं हे सनत्कुमार मन चाहना से कभी नहीं विलग होता इस वास्ते हमने मत्स्यावतार धारण करके राजा सत्यव्रत को ज्ञान उपदेश किया था जिसमें संसारी मनुष्य हमारी कथा व लीला सुनकर उसी ज्ञान के प्रमाण मेरा स्मरण व ध्यान करैं व संसारी तृष्णा छोड़कर हरिचरणों में प्रीति लगावैं व जिस तरह संसार में पूर्व व पश्चिम आदिक चारों ओर जाने की राहैं बनी हैं उसी तरह यज्ञ व तप दान व धर्म तीर्थ व व्रत सत्संग व भक्ति आदिक मेरे पास पहुँचने वास्ते रास्ते बने हैं जो मनुष्य जिस मार्ग पर चाहै उसपर सच्चे मनसे चलै मेरे निकट पहुँच जायगा सनत्कुमार आदिक यह ज्ञान सुनते ही बहुत लज्जित होकर अभिमान अपना भूल गये व अपने मनका सन्देह छोड़कर हंसरूपी भगवान्‌को दण्डवत् की व बहुतसी स्तुति करने उपरान्त उनसे विदा होकर अपने स्थानपर चलेगये और हम अभिमान उनका तोड़कर वैकुंठमें चले आये॥

चौदहवां अध्याय।

उद्धवको वेद व शास्त्रका हाल श्रीकृष्णजी से पूछना॥

उद्धवने इतनी कथा सुनकर श्यामसुन्दर से विनय की हे दीनानाथ अनेक मुनि व योगीश्वरों ने वेद व शास्त्र में आपके मिलनेवास्ते यज्ञ व तप आदिक अनेक राहैं लिखी हैं सो तुम्हारे निकट पहुँचनेका जो रास्ता

सहज हो वह बतलाइये श्रीकृष्णजी ने कहा हे उद्धव जब ब्रह्मा कमलके फूल से उत्पन्न हुये तब उन्होंने वेद जो मेरे श्वासा हैं हमारी इच्छा से पाकर भृगुऋषीश्वर आदिक अपने पुत्रों को पढ़ाया व ऋषीश्वरों ने अर्थ उसका देवता व दैत्य व गन्धर्व व विद्याधर व यक्ष व किन्नर आदिकों को सिखलाया उनमें जिनको जितना ज्ञान था उसने वह समझकर संसार में फैलाया पर उस वेदके निज अर्थको कोई नहीं पहुँचा व बाजे मनुष्य काम व क्रोध व स्त्री व पुत्र व कोई यज्ञ व तप व बाजे तीर्थ व व्रत व कोई दान व धर्मको उत्तम मानते हैं पर इन सब कर्मों से मनुष्य भवसागर पार उतरने नहीं सक्ता व जितनी वस्तु संसार में दिखलाई देती हैं एक दिन इन सबका नाश अवश्य होगा जो लोग परमेश्वरका स्मरण व ध्यान उत्तम समझकर उसमें अपना मन लगाये रहते हैं व संसारी वस्तुकी कुछ चाहना न रखकर इन्द्रलोक आदिकका सुख भी कुछ माल नहीं समझते व सिवाय भक्ति हरिचरणों की मुक्तिपदार्थ भी नहीं चाहते जो मनुष्य विना इच्छा मेरी भक्ति व सेवा करते हैं व सबको अपना मित्र जानकर किसी के साथ शत्रुता नहीं रखते उन भक्तों के लक्षण कहते हैं सुनो वे लोग आठों सिद्धियां प्राप्त रहने पर भी उनकी ओर न देखकर आठों पहर मन अपना मेरी ओर लगाये रहते हैं व मैं उनको सातों द्वीप व तीनों लोकोंका राज्य व मुक्तिपदार्थ देताहूं सोभी नहीं लेते इसलिये उनसे लज्जित रहकर उन के पीछे पीछे फिरने उपरान्त दिन रात यही विचार करता हूं कि कौन वस्तु इन्हें देकर इनकी सेवासे उऋण होजाऊं जिस जगह वे भक्त चरण अपना रखते हैं वहांकी धूरि उठाकर इस कारण अपने अंगपर मललेताहूं जिसमें करोड़ों ब्रह्माण्ड के जीव जो मेरे शरीर में रहते हैं उसके लगने से पवित्र होजावें हे उद्धव उन भक्तों के बराबर में अपने शरीर व लक्ष्मी व महादेवजी को प्यारा न जानकर सबसे उनको उत्तम समझताहूं जब मेरा कोई भक्त संसारी माया में लपटकर नष्ट होने चाहता है तब मैं उसके हृदय में ज्ञान प्रकाश करके कुकर्म करने से बचा लेताहूं व जो हरिकथा वार्ता सुनते समय मेरे प्रेम में डूबकर रो देते हैं उनका पाप आंसूकी राह बहकर

अन्तःकरण शुद्ध होजाता है व मच्छड़ आदिक अनजान में मरजाने का दोष उनको नहीं लगता जैसा भक्ति करने से मैं तुरन्त मिलता हूं वैसी दूसरी राह सहज मेरे निकट पहुँचनेवास्ते नहीं है जिसतरह आग में डालदेने से सोने का सब मैल छूट जाता है उसीतरह भक्ति करने से शरीर में पाप नहीं रहता पर यह सब बात चित्तके आधीन होकर यही मन संसारी माया में लपटनेसे नष्ट होता है व मेरी ओर ध्यान लगावनेवाले मनुष्य संसार में अपनी मनोकामना पाकर अन्तसमय वैकुण्ठवास पाते हैं इसलिये मनुष्य को स्त्री व लंपट पुरुषकी संगति से अलग रहकर मेरी ओर मन लगाना चाहिये जैसा उनकी संगति करने से तुरन्त मनुष्यका ज्ञान छूटजाता है वैसा दूसरी तरह नहीं बिगड़ता अब हम तुमको परमेश्वरकी ओर मन लगाने की रास्ता बतलाते हैं सुनो अकेले बैठकर पहिले मन अपना एकाग्र करै फिर अपने कमलरूपी हृदय में मेरे चतुर्भुजी स्वरूप का ध्यान लगावे जिस तरह आमकी गुठली बोते हैं तो उसके फुनगा का बकरी आदिक के खाने का भय लगा रहता है जब रक्षा करने से वह वृक्ष तैयार होजाता है तब हाथी भी उसको उखाड़ने नहीं सक्ता उसी तरह जब प्रतिदिन मेरा ध्यान व स्मरण करने से संसारी माया छूट कर वृक्षरूपी भक्ति हृदय में जड़ पकड़ लेती है तब फिर कम नहीं होती व योगाभ्यास साधने व इन्द्रियों को वश करने से अष्टसिद्धियां बनी रहती हैं सो हे उद्धव तुम हरिभक्तों की बड़ी पदवी समझकर मेरी भक्ति सच्चे मनसे किया करो तुम्हारा मनोरथ पूर्ण होजायगा ॥

पन्द्रहवां अध्याय ।

श्रीकृष्णजीको उद्धवसे अष्टसिद्धियोंका हाल कहना ॥

इतनी कथा सुनकर उद्धव ने विनय की हे महाप्रभु आपने कहा कि योग साधने व इन्द्रियों को वश करने से अष्टसिद्धियां बनी रहती हैं सो उनमें क्या गुण है श्यामसुन्दर बोले हे उद्धव आठ सिद्धि बड़ी व दश सिद्धि छोटी होकर उनमें एक सिद्धि ऐसा गुण रखती है कि बूढ़ा मनुष्य चाहे तो अपने को लड़का बनालेवे व दूसरी छोटे शरीरको बड़ा बनाकर

तीसरी ऐसी सामर्थ्य रखती है कि अपना शरीर रुई के समान हलका बना-
कर जहां चाहै वहां उड़ता हुआ चलाजावे चौथी हलकेसे भारी बनाने
की सामर्थ्य रखकर पांचवीं में ऐसा गुण है कि हजारों कोसका हाल
बैठा हुआ देखलेवे छठी सिद्धि से हजारों कोसकी बात सुनकर सातवीं में
ऐसा गुण है जो वस्तु जहांसे चाहै मँगवालेवे आठवीं से सब देवता वश
होजाते हैं यह सामर्थ्य आठों बड़ी सिद्धिमें हैं नवीं सिद्धिसे अंगपर बुढ़ापा
प्राप्त न होकर दशवीं में यह सामर्थ्य है कि जिस जगह मन दौड़ावे वहां
एक क्षणमें पहुँच जावे ग्यारहवीं से दूसरेका स्वरूप आप बनाकर बारहवीं
में यह सामर्थ्य है कि अपने प्राण को दूसरे तनुमें प्रवेश करदेवे तेरहवीं
सिद्धि से जब चाहै तब मरै चौदहवीं सिद्धिमें यह सामर्थ्य है जिसके वास्ते
मन चाहै वहां जाकर उसके संगमें विहार करै पन्द्रहवीं सिद्धिसे जिस वस्तु
की चाहना मनमें उत्पन्न हो वह उसी समय आनकर प्राप्त होजावे सोल-
हवीं से जिसको जो आज्ञादे वह मानकर भूत व भविष्यत् व वर्तमान तीनों
काल का हाल जानलेवे व सत्रहवीं सिद्धिसे दूसरेके मनकी बात जानकर
कुछ गर्मी व सर्दी उसको न व्यापै अठारहवीं से जलती हुई आग व बढ़ता
हुआ पानी रोककर जिसे चाहै उसको विषकी गर्मी प्रवेश करने न देवे
सिवाय इन अठारह सिद्धि के जन्म व औषध व तप व मंत्र चार सिद्धि
और योग साधने से मिलती हैं जन्मसिद्धिवाला जहां चाहै वहां जन्म
लेवे व औषधसिद्धिवाला जिसे जो औषध देवे वह अमृत के समान गुण
करै व मंत्रसिद्धिवाला मंत्र पढ़कर जो बात कहै वह सच होजावे व तप
सिद्धिवाले का तप कोई विघ्न नहीं करने सक्ता है उद्धव ये सब सिद्धियां
एक एक गुण रखती हैं व मैं सब सिद्धियों का फल देनेवालाहूं व उन
सिद्धियों के वश करने का यह उपाय है सुनो अग्नि में गर्मी व बीच
जलके सर्दी व पृथ्वी पर कड़ाई व हवाको स्पर्श व आकाश में शब्द ये
पांचों बातें मेरी कृपासे हैं जो कोई इन पांचों वस्तुवों में मेरा ध्यान लगाकर
सच्चे मनसे मेरी महिमा समझै उसको पहिली सिद्धि मिलती है व पांचों
भूतात्मा व आकाश व अग्नि आदिक का जो ध्यान करै वह दूसरी सिद्धि

पावै व मेरे विराट्रूप का ध्यान करने से तीसरी सिद्धि व चतुर्भुजी व छोटे रूपका ध्यान रखने में चौथी सिद्धि व महत्तत्त्वरूप का ध्यान करने से पांचवीं सिद्धि व अहंकाररूप का ध्यान रखने में छठी सिद्धि व विष्णुरूपका ध्यान लगाने से सातवीं सिद्धि व वासुदेवरूपका ध्यान धरने में आठवीं सिद्धि व निराकाररूप का ध्यान करनेवाले संसारी चाहना छोड़ कर परम आनन्द रहते हैं व परमेश्वर का श्वेतरूप ध्यान धरने में कभी बूढ़ा नहीं होता व अपने शरीर में परमात्मा का ध्यान करने से दूसरी बात सुनाई देकर सूर्यरूपी परमेश्वर में ध्यान लगाने से हजारों कोस की वस्तु दिखलाई देती हैं व वायुरूपी परमेश्वर का ध्यान करने से एक क्षण में जहां चाहै वहांपर चलाजावै व योगाभ्यास करके अग्नि में मन लगावै तो अपना रूप जैसा चाहै वैसा बनालेवे व अपने हृदय में आत्मा का ध्यान रखनेसे दूसरे तनुमें अपना जीव प्रवेश करने की सामर्थ्य होजाती है व सतोगुण का ध्यान करने से जिसके संग चाहै उसके साथ विहार करता फिरै व मनुष्य आठों पहर अपने मनमें यह विचार करता रहै कि सब बात परमेश्वर की आज्ञा से होती है उसको सब छोटे बड़े मानते हैं व साथ योगाभ्यास के अपना श्वास ब्रह्माण्ड में चढ़ाने से भूत व भविष्यत् व वर्तमान तीनों काल की बातें मालूम होती हैं व अग्नि व जल आदिक पांचों तत्त्व के ध्यान करनेवाले जलती हुई आग व बढ़ता हुआ पानी रोकदेने सक्तेहैं व जो मनुष्य इन्द्रियों को अपने वशमें रखकर सच्चे मनसे मेरे चरणों का ध्यान करताहै उसके सामने अठारहों सिद्धियां हाथ जोड़े खड़ी रहती हैं पर उन सिद्धियों के सुखमें फँसनेवाला मनुष्य नष्ट होकर मुझे नहीं पावता व जो लोग मेरे चरणों में ध्यान लगाये रहकर उस सुख को कुछ माल नहीं समझते वह संसार में अपनी मनोकामना पाकर अन्तसमय चतुर्भुजीरूप से वैकुण्ठवास करते हैं ॥

सोलहवां अध्याय।

उद्धवजीसे श्रीकृष्णजीको मुख्य ज्ञान भगवद्गीताका कहना ॥

उद्धवने अठारहों सिद्धियोंका हाल सुनकर त्रिभुवनपतिसे पूछा है

दीनानाथ आप देवता व वृक्षादिकमें कहां कहां विराजते हैं श्यामसुन्दर ने कहा हे उद्धव जिस समय महाभारत होने वास्ते अठारह अक्षौहिणी दल कुरुक्षेत्र में इकट्ठा हुआ व अर्जुन ने द्रोणाचार्य व भीष्मपितामह आदिक अपने गुरु व परिवारवालों को दुर्योधन की ओर देखकर युद्ध करना अंगीकार नहीं किया उस समय मैंने थोड़ीसी महिमा अपनी अर्जुन से कहकर विराट् रूप अपना उसे दिखलाया और उसका मोह छुड़ाकर महाभारत करायाथा वही हाल तुमसे कहताहूं सुनो जो मनुष्य अज्ञानवश सब जीवों में मेरा प्रकाश देखने न सकै तो इन सब जगह जो नाम हम सुनाते हैं अवश्य मेरा चमत्कार समझै सब जीवों में आत्मा बोलता पुरुष मैं होकर आदि व मध्य व अन्त सबको मुझे जानना चाहिये व सूर्यदेवता की बारह कला होकर हर महीने में वह अपने नये स्वरूप से प्रकाश करते हैं उसमें विष्णु नाम स्वरूप व उनचास पवन में मरीचि नाम वायु व तारागणों में चन्द्रमा व चारों वेदों में सामवेद व देवताओं में ब्रह्मा व इन्द्र व वरुण व कुबेर व स्वामिकार्त्तिक व यमराज व ग्यारहों रुद्रों में शंकर नाम महादेव व पांचों तत्त्वों में अग्नि व पहाड़ों में सुमेरु व गौवों में कामधेनु दिव्य पितरों में अर्यमा नाम पितर व प्रजापतियों में दक्ष व चारों वर्णों में ब्राह्मण व चारों आश्रमों में संन्यासी व नदियों में गंगा व रागों में दीपक व धातुओं में सुवर्ण व हाथियों में ऐरावत व घोड़ों में उच्चैःश्रवा व यज्ञों में ज्ञानयज्ञ व पुरोहितों में वसिष्ठ व स्त्रियों में शतरूपा व राजऋषीश्वरों में स्वायम्भुवमनु व युगों में सतयुग व सेवकों में हनुमान् व कथा बांचनेवालों में वेदव्यास व दानियों में राजा बलि व रत्नों में कौस्तुभमणि व घासों में कुशा व पंचगव्यों में घृत व दशों इन्द्रियों में ग्यारहवां मन व नव ग्रहों में बृहस्पति व ऋषीश्वरों में भृगु व मंत्रों में ॐकार व वृक्षों में पीपल व देवऋषीश्वरों में नारदमुनि व सनत्कुमार व वैष्णवों में कपिलदेव व सातों समुद्रों में क्षीरसागर व मनुष्यतनु में राजा व सर्पों में वासुकि व नागों में शेषनाग व दैत्यों में प्रह्लाद भक्त व पशुओंमें सिंह व पक्षियों में गरुड़ व शूरवीरों में परशुराम व वेद व

शास्त्र में गायत्री व बारहों मास में अगहन व ऋतुओं में वसन्तऋतु व पुष्पों में गुलाब व सच बोलनेवालों में सचाई व गन्धर्वों में विश्वावसु नाम गन्धर्व व अप्सराओं में पूर्वचित्ती नाम अप्सरा व पांचों भाई पांडवों में अर्जुन व विद्या जाननेवालों में शुक्राचार्य व यदुवंशियों में वासुदेव मैं हूं और वह काम जिसमें मनुष्य सन्तान उत्पन्न होने वास्ते इच्छा रखकर अपनी स्त्री से भोग करता है मुझे समझना चाहिये व जो लोग अपनी बड़ाई की चाहना रखकर ज्ञान से शुभ कर्म करते हैं वह इच्छा व ज्ञान मैं हूं व जितनी बातें छलकी हैं उनमें श्रेष्ठ जुआ व मायारूपी लक्ष्मी मैं हूं व जड़ सब जीवों की मैं होकर विना शक्ति मेरे कोई जीव चलने व हिलनेकी सामर्थ्य नहीं रखता कदाचित् कोई चाहे तो रेणुका व तारे व वर्षा की बूदें गिन लेवै पर मेरी विभूतियों की गिनती नहीं करसक्ता हे उद्धव संसार की उत्पत्ति व पालन व नाश मेरी विभूतियों से होता है व तुम जितनी वस्तु संसार में देखते हो सब में मैं हूं इसलिये मेरे भेद व महिमा को पहुँचना बहुत कठिन है देखो संसारी मनुष्य बहुतसा अन्न व घृत आदिक जो अग्नि में यज्ञ व होम करते हैं उसके करने से यह उत्तम है कि अपनी चाहना को जो काम व क्रोध व मोह व लोभ के वश होकर कुकर्मों की ओर दौड़ती है ज्ञानरूपी अग्नि में जला देवे व ज्ञानी उसको कहना चाहिये जो अपने गुण को आदरपूर्वक एक जगह लिये बैठारहै द्वारे द्वारे फिरकर अपना अपमान न करावे व बहुत द्रव्य रखनेवालों को धनीपात्र जानना उचित न होकर जो मेरी भक्ति व प्रीति रखता हो उसे धनवान् समझना चाहिये व जो लोग अपनी स्त्री को ओट में रखते हैं उनको लज्जावान् न जानकर कुकर्मोंसे रहित रहनेवालेको श्रेष्ठ समझना उचित है व जो मनुष्य रणभूमिमें बाण व खड्गादिक घाव उठाकर बहुत युद्ध करते हैं उनको शूरवीर समझना वृथा होकर रणधीर उसे जानना चाहिये जो अपने काम व क्रोध व मोह व लोभ व इन्द्रिय व मन अति बलवान् शत्रुओं को जीतकर उनके वश न होवे हे उद्धव मैंने तुझे अपना भक्त जानकर थोड़ासा हाल सुना दिया तुम अपने मन व

इन्द्रियों को वश में रखकर मेरा ध्यान करो अठारहों सिद्धियां तुम्हारे पास बनी रहैंगी ॥

सत्रहवां अध्याय।

श्रीकृष्णजीका उद्धवसे चारों युगों का हाल कहना ॥

उद्धव ने यह सब महिमा त्रिभुवनपति की सुनकर पूछा हे दीनानाथ चारों युगों में कौन धर्म वड़ा होकर किस तरह लोग रहते थे श्यामसुन्दर ने कहा हे उद्धव सत्ययुगमें श्वेतवर्ण व एक वेद होकर ब्राह्मण व क्षत्रिय व वैश्य व शूद्र चारों वर्ण उसी रूपका ध्यान व वेदानुसार सब काम करते थे व त्रेता में यज्ञावतार का ध्यान लगाकर यज्ञ होता था व एक वेद से चार वेद ऋग्वेद व यजुर्वेद व सामवेद व अथर्वणवेद तय्यार होकर ऋग्वेद व यजुर्वेद व सामवेद की क्रियानुसार यज्ञ करते थे व अथर्वणवेद केवल मंत्र व शस्त्रविद्या जानने के वास्ते है व ब्रह्मा ने अपने मुख से ब्राह्मण व भुजासे क्षत्रिय व जंघा से वैश्य पांव से शूद्र चारों वर्ण उत्पन्न किये थे व संन्यासी मेरे शिर व ब्रह्मचारी हृदय व वानप्रस्थ पसुली व गृहस्थ जंघा से प्रकट होकर ब्राह्मणका यह धर्म है कि अपने मन व इन्द्रियों को वश रखकर आचार से पवित्र रहै व जो कुछ थोड़ा या वहुत धर्मकी कमाई से मिलै उसपर सन्तोष रखकर मेरा तप व ध्यान किया करै व किसीके दुर्वचन कहने से खेद न मानकर अधिक तृष्णा न रक्खे व हरिभक्त होकर झूंठ न बोले जिसमें इतने लक्षण हों उस ब्राह्मण को अपने कर्म व धर्म पर स्थिर समझना चाहिये व क्षत्रिय के लक्षण यह हैं मुखारविन्द उसका तेजवान् व शरीर वलवान् होकर मनमें धैर्य रक्खे व शूरताई ऐसी रखता हो कि घाव लगने से घवड़ा न जावे व चाकरी व जमींदारी से अपना कुटुम्ब पालकर सामर्थ्य भर दान व दक्षिणा देवै व साधु व ब्राह्मण की भक्ति रखकर सच्चे मन से उनकी सेवा व टहल करै व वैश्यका धर्म यह है कि व्यापार व खेती व महाजनी से अपना परिवार पालै व द्रव्य उत्पन्न करने की चाहना आठों पहर मनमें रक्खे व सामर्थ्यभर दान व दक्षिणा देकर साधु व ब्राह्मणकी सेवा किया करे व शूद्र का धर्म यह है

कि ब्राह्मण व क्षत्रिय व वैश्य तीनों वर्ण की सेवा करने से जो कुछ मिले उसमें अपने दिन काटकर अधिक तृष्णा न बढ़ावे चारों वर्णोंको उचित है कि जीवहिंसा व चोरी व कुकर्म आदिकसे रहित रहकर झूंठन बोलैं व काम व क्रोध व मोह व लोभ को अपने वश रखकर ऐसा काम करें जिसमें संसारी जीव उनसे प्रसन्न रहैं व कोई उनको बुरा न कहै व चारों आश्रम का धर्म यह है कि ब्रह्मचारीको चाहिये कि गुरुके घर रहकर मनसा वाचा कर्मणा से उनकी सेवा व आज्ञापालन करै व गुरु को मनुष्य न जानकर परमेश्वरभाव समझै व स्त्री का अंग न छूकर उसके पास न बैठे क्षौर न बनवावै व जो कुछ भीख मांग लेआवे सब गुरुके सामने धरकर उन का दिया हुआ खावे कदाचित् गुरु भोजन न देवै तो मांगना उचित नहीं है कामदेव को ऐसा अपने वश रक्खै जिसमें वीर्य न गिरे व कभी स्वप्ने में वीर्य गिरजावे तो स्नान करके दशहजार गायत्री मंत्र जपै व अपना तन मन धन गुरुपर नेवछावर समझै और कोई अशुद्ध वस्तु न खावे विद्या पढ़ने व गुरुदक्षिणा देने उपरान्त गुरुसे बिदा होवै व गृहस्थी करना चाहै तो अच्छे कुल में अपने से छोटी अवस्था की कन्या बिवाहै और जब वह महीनेभर उपरान्त स्त्रीधर्म से होवे तब चौथे दिन एक बेर उससे प्रसंग किया करै व गृहस्थधर्म रखकर जो अभ्यागत व संन्यासी द्वारपर आवे उसको कुछ भोजन व वस्त्र देकर प्रसन्न करना चाहिये खाली फेर देना अच्छा नहीं होता गृहस्थाश्रम ब्राह्मणका उत्तम धर्म सुनो जो दाना अनाज काटने उपरान्त खेत में पड़ा रहजाता है उसीको चुनकर भोजन करै या दूधभिक्षा जो कोई प्रसन्नता से देवै उसे मांग ले आकर अपना कुटुम्ब पालै व मध्यम धर्म यह है कि विद्या पढ़ाने व कथा बांचने व यज्ञ कराने से अपनी जीविका रक्खे जब ब्राह्मणपर विपत्ति पड़े तब हारमान कर खेती व व्यापार व चाकरी करके अपना कुटुम्ब पालै व ब्राह्मण को अपने से छोटे वर्ण की सेवा करना न चाहिये व ब्रह्मचारी को विद्या पढ़ने उपरान्त गृहस्थी की चाहना न होवे तो वन में जाकर परमेश्वरका तप व भजन करे जो क्षत्रिय व वैश्य गरीब ब्राह्मण मेरे प्राणरूपी को भोजन

व वस्त्र देकर सच्चे मन से उनकी सेवा करते हैं उनपर मैं बहुत प्रसन्न हो मुँहमांगा द्रव्य सन्तान देता हूं व क्षत्रिय राजा अपनी प्रजा को पुत्र के समान पालन करने व उनका दुःख छुड़ाने से संसार में यश पाकर मरने उपरान्त भवसागर पार उतर जाते हैं जब क्षत्रिय को विपत्ति पड़े तब वह व्यापार करके या वनमें अहेर खेलकर अपनी जीविका रक्खे व लाचारी से भीख मांगकर अपना पेट पालै व वैश्यवर्ण विपत्ति पड़ने से शूद्र का काम करै व शूद्रको विपत्ति पड़े तो चटाई आदिक बनाकर अपने दिन काटै ब्राह्मणको वेदानुसार अपने धर्म से रहकर प्रतिदिन संध्या व तर्पण व ठाकुरपूजन व श्राद्ध करना व अतिथि व संन्यासी को भोजन व वस्त्र देना उचित है व स्त्री व पुत्रों से अधिक प्रीति न रक्खे व मेरे चरणों का ध्यान करता रहै इसतरह कर्म व धर्म रखनेवाले चारों वर्ण व चारों आश्रम को मैं उद्धार कर देताहूं व जो लोग संसारी मायामें लपटकर धर्म व अधर्म का विचार नहीं करते उनको अवश्य नरक भोगना पड़ता है॥

अठारहवां अध्याय।

उद्धव से श्रीकृष्णजी का वानप्रस्थआदिक का धर्म कहना॥

श्यामसुन्दर ने कहा हे उद्धव वानप्रस्थका धर्म यह है जब पचास वर्ष से अधिक अवस्था होकर मन उसका वैराग्य करनेवास्ते चाहै तो अपनी स्त्री समेत या अकेला वनमें जाकर परमेश्वर का भजन व स्मरण करै व शिरपर जटा बढ़ाकर केले के पत्ते से कोपीन बनावे प्रात व मध्याह्न व सन्ध्या तीनोंकाल स्नान करके पृथ्वीपर सोवे व गर्मी में पञ्चाग्नि तापे व बीच जाड़े के गलेभर पानी में खड़ा रहै व बरसात में बीच मैदान के बैठ कर तप करै व पृथ्वी का बोया हुआ अनाज न खावै जब इस तरह तप करने से शरीर निर्बल होकर बुढ़ाई आजावे तब संन्यास लेकर सिवाय दण्ड व कमण्डलु व कोपीनके और कुछ वस्तु अपने पास न रक्खे व सात घरसे अपने खाने भरको भोजन मांग ले आवे व राह चलते समय पृथ्वी की ओर देखता रहै जिसमें चिउँटी आदिक कोई छोटा जीव पांव के नीचे दब न जावे व अपने मन व इन्द्रियों को वशमें रखकर चित्त अपना किसी

स्त्रीकी व अच्छी वस्तुकी ओर न दौड़ावे व स्वादादिक भोजनकी चाहना न रखकर जहां से अच्छा भोजन मिलै वहां फिर न जावै व कभी झूंठ न बोलै व संसारी सुखको स्वप्नके समान झूठा समझै व आठों पहर अकेले में परमात्मा का ध्यान करता रहै व एक जगह अधिक न रहकर तीर्थों में फिरा करे व पाखण्डी मनुष्यों की संगति न रखकर किसीका डर न माने व सदा प्रसन्नचित्त रहै और अपने सुखके वास्ते किसी के साथ शत्रुता व मित्रता न रक्खे अपना स्वभाव कोमल बनाये रहकर ऐसा मीठा वचन बोले जिसमें कोई दूसरा उससे न डरे व हानि व लाभ होने का कुछ हर्ष व विषाद न करै केवल भिक्षा लेनेवास्ते नगर व गांव में जावै व वस्ती से बाहर रहकर जिसतरह गुरुने बतलाया हो उसीतरह आठोंपहर परमेश्वर का स्मरण व ध्यान करता रहै जबतक मेरे निर्गुण रूपका ध्यान उसके मनमें न आवै तबतक सगुण रूपकी उपासना किया करे जब निर्गुणरूप ध्यान में आजावै तब सगुणरूप का स्मरण छोड़कर सब जीवों में मेरा प्रकाश एकसा समझै इसतरह के कर्म व धर्म रखनेवाले को संन्यासी जानना चाहिये केवल दण्ड व कमण्डलु धारण करने से संन्यास धर्म का फल नहीं मिलता हरिभजन करने में इन्द्रादिक देवता विघ्न करते हैं इस लिये तप व स्मरण करते समय मनको स्थिर रखना उचित है जो लोग अपने धर्म व कर्म से रहते हैं उन्हें निस्सन्देह मुक्ति मिलती है अपना धर्म छोड़ देनेवाले को चोर व ठगकी तरह नरक में दण्ड मिलता है इसलिये मेरी भक्ति चारों वर्ण व चारों आश्रम को करनी चाहिये ॥

उन्नीसवां अध्याय।

श्यामसुन्दरका उद्धव से चार तरह के भक्तों की कथा कहना ॥

उद्धव ने इतना ज्ञान सुनकर पूंछा हे दीनानाथ जिस तरह संसारी मनुष्य कालरूपी सांपके मुखमें पड़े रहकर प्रतिदिन अपना सुख चाहते हैं उसी तरह मुझे भी समझकर कोई सहज राह भवसागर पार उतरने वास्ते वर्णन कीजिये श्यामसुन्दर ने कहा हे उद्धव जो ज्ञान भीष्मपितामह ने राजा युधिष्ठिर से कहा था वही तुमसे कहते हैं सुनो संसारी मनुष्य को

चार तरहपर एक कथा पुराण सुनने व दूसरे लोगों का मरना देखकर अपनी मृत्यु विचारने व तीसरे साधु व महात्मा विरक्त पुरुषों की संगति करने व चौथे संसारी व्यवहार झूठा समझने से ज्ञान प्राप्त होता है परन्तु कथाको प्रेमपूर्वक सुनकर उसमें विश्वास रखना चाहिये ऐ उद्धव मेरे निर्गुणरूप का ध्यान करनेवालों को जीवन्मुक्त समझो और उनका लक्षण सुनो वह लोग जिस धर्म करने से मुझे पाते हैं उस कर्म का फल मुझे देकर कुछ चाहना नहीं रखते व संसार में चार तरह के भक्त होते हैं एक विपत्ति पड़ने व रोगी होने से मेरी भक्ति करता है व दूसरे ज्ञान प्राप्त करने व भवसागर पार उतरनेकी इच्छा रखकर व तीसरे द्रव्य व सन्तान व संसारी सुख मिलनेवास्ते मेरा ध्यान करते हैं व चौथे ज्ञानी जो मुझे परमेश्वर जानकर भक्ति करते हैं व उसके वदले कुछ इच्छा नहीं रखते उनको मैं उन तीनों से अधिक प्यारा जानताहूं हे उद्धव यज्ञ व तप व दान व धर्म व तीर्थ व व्रत आदिक सव शुभ कर्म अच्छे होते हैं परन्तु भक्ति व ज्ञानके वरावर जिससे मुझे उत्पन्न करनेवाला व मालिक जानता है यज्ञादिक नहीं होते सो तुम भी ज्ञानकी राह संसारी चाहना छोड़कर मेरी भक्ति रखते हो इसलिये अपनी मुक्ति होने में कुछ सन्देह मत समझो सिवाय इसके थोड़ासा मुख्य ज्ञान और कहते हैं सुनो मनुष्य को अपनी वड़ाई करना उचित न होकर अहङ्कार छोड़ देना चाहिये देखो नाक व कान व जिह्वा व आंख व त्वचा पांच ज्ञानइन्द्रिय व हाथ व पांव व वाक् व लिंग व गुदा पांच कर्म इन्द्रिय व ग्यारहवां मन होकर जो मनुष्य उनको संसारी सुखकी ओर लगाता है उसे अज्ञान समझना चाहिये व ज्ञानी को उचित है कि अपने मन व इन्द्रियों को संसारी माया से विरक्त रखकर मेरी ओर व ठाकुरपूजने में लगावै व संसारके आदि व मध्य व अन्तमें परमेश्वरका चरित्र जानकर मेरी कथा व लीला प्रेमसे सुने जो वस्तु खाने व पहिरने वास्ते किसी तरहकी मिलै उसको पहिले मेरे नामपर अर्पण करके पीछे आप खाय व पहिने व जो तड़ाग व वावली व कुआं व वाग आदि धर्म की राह वनवावै सवका फल मुझे देकर अपने मनमें इस वातका अभिमान न रक्खै कि यह शुभकर्म

मैंने कियाहै इतनी कथा सुनकर उद्धवने पूंछा हे वैकुण्ठनाथ तप व दान व नियम व संयमका हाल वर्णनकीजिये व ज्ञानी किसको कहते हैं व मूर्ख कौन कहलाता है शुभ व अशुभ कर्म करने व स्वर्ग जानेवाले व नरक व धनी-पात्र व कंगाल व दाता व सूमका हाल बतलाइये श्यामसुन्दरने कहा हे उद्धव जीवहिंसा व चोरी आदिक कुकर्मों से बचे रहकर सच बोलना व गुरु व भगवान् में प्रीति रखकर वेद व शास्त्रका वचन सच जानना व विना प्रयोजन अधिक न बोलकर सब जीवों पर दया रखना यह संयमहै व हाथ पांव मिट्टी से मलकर धोना व स्नान व सन्ध्या व पूजा व यज्ञ व तप व श्राद्ध व तीर्थ व व्रत करना यह नियम समझना चाहिये व दान उसका नाम है कि विरक्त मनुष्य को कर्म छोड़कर मनसा वाचा कर्मणा से किसीका बुरा न चाहै व गृहस्थाश्रम भोजन व वस्त्र व पृथ्वी व सोना आदिक वस्तु ब्राह्मणों को दान करै व तप यह है कि स्त्री भोग करने का सुख छोड़ देवै व ज्ञानी वह है जो शास्त्रानुसार राह चलकर अपनी मुक्ति का शोच रक्खै व जो कोई परमेश्वरको भूलकर अपना शरीर पालन करता है उसे मूर्ख समझना चाहिये व मेरे वचन प्रमाण सब काम करना उत्तम राह होकर उसके विपरीत चलना कुमार्ग जानो व जो मनुष्य संसार में किसी वस्तुकी चाहना नहीं रखते व प्रेमपूर्वक मेरे चरणों का ध्यान करते हैं उन्हें स्वर्ग पहुँचनेवाला समझो और संसारी प्रीति रखने वाले व लोभी व झूंठे मनुष्यों को नरक जानेवाला जानना चाहिये व जो लोग ज्ञानी होकर मेरी भक्ति सच्चे मनसे करते हैं उनको धनीपात्र व जिसको सन्तोष न होवै उसे दरिद्री जानना उचित है व जो कोई मूर्ख मनुष्य को सिखलाकर उसके भवसागर पार उतरने का शोच रक्खै उसे दाता समझो व जो लोग अपने मन व इन्द्रियोंको नहीं जीतकर उनके वश होरहे हैं उनको सूम जानना चाहिये हे उद्धव जो जो बात तुमने पूंछी सबका उत्तर हमने कहदिया जो कोई हमारा वचन सच जानकर उसी का प्रमाण करैगा उसके वास्ते संसार व परलोक में दोनों जगह अच्छा है॥

बीसवां अध्याय।

श्यामसुन्दरका उद्धवजीसे माया छूटनेका उपाय कहना ॥

उद्धव ने विनय की हे यदुनाथ आपसे सब ज्ञान सुनकर उसका अर्थ मैंने यह समझा कि संसारी मायामोह में फँसना बुरा होकर विरक्त रहना उत्तम है सो कोई उपाय ऐसा बतलाइये जिसमें मनुष्य बीच संसारी माया के न फँसे यह बात सुनकर श्यामसुन्दरने कहा हे उद्धव हमने तीन तरह की राह वास्ते भवसागर पार उतरने संसारी जीवों के तुमसे कही एक ज्ञान दूसरा कर्म तीसरी भक्ति जिसको ज्ञान प्राप्त हुआ वह संसारी माया में नहीं लपटता व संसारकी प्रीति में जो फँसा है उसको शुभ कर्म करना चाहिये व जो लोग मन अपना ज्ञानकी ओर कुछ लगाये रहकर संसारी माया में भी लपटे हैं उनको भक्ति करनी उचित है जब तक मेरी कथा सुनने में प्रीति न होकर मन उसका संसारी मायासे विरक्त न होय तब तक शास्त्रानुसार कर्म करता रहै व जो धर्म स्वर्ग जाने वास्ते शास्त्रों में लिखे हैं वे कर्म करै व संसारी सुख व स्वर्ग जानेकी कुछ चाहना न रक्खे तब कर्म करने से विना इच्छा भी वह सुख मिलैगा इसलिये मनुष्यको आठों पहर परमेश्वरका ध्यान रखकर पहिले शुभकर्म करना चाहिये जब तक हाथ व पांव व नाक व कान व आंख आदिक सब इन्द्रियों में सामर्थ्य रहती है तबतक सब कर्म अच्छी तरह बन पड़ते हैं व बुढ़ापे के समय इन्द्रियों की सामर्थ्य घटजाने से कोई कर्म विधिपूर्वक नहीं बन पड़ता इस लिये कभी ऐसा विचार करना न चाहिये कि अभी तरुणाई में संसारी सुख उठा लेवैं बुढ़ापेके समय परलोकका शोच करलेवैंगे किस वास्ते कि शरीर मनुष्य का वृक्षके समान होकर कालरूपी लुहार वह वृक्ष काटने वास्ते दिन रात उसपर कुल्हाड़ा चलावता है न मालूम किस समय यह शरीररूपी वृक्ष गिरपड़ेगा इसलिये मनुष्यको संसारी प्रीति से विरक्त रहकर दिन राति अपनी मृत्यु याद रखनी व मेरे चरणोंका ध्यान करना चाहिये जिसमें उसकी मुक्ति हो दूसरा ज्ञान सुनो एक वृक्षपर दो पक्षी खोता लगा कर रहते थे जब उस वृक्षको लुहार काटने लगा तब एक पक्षीने कहा यहां

से उड़ चलो दूसरा पक्षी बोला बैठे रहो जिस तरह उड़ जानेवाला पक्षी जीता बचकर बैठे रहने में दुःख पावताहै उसीतरह संसारी माया छोड़ देने से मुक्ति प्राप्त होकर उसके साथ लिपटे रहने में आवागमनसे नहीं छूटता तीसरे मनुष्यतनु नौकारूपी जानकर गुरुको मांझीके समान समझना चाहिये सो वह नाव समुद्रमें पड़ी रहकर हवारूपी मेरे चरणों का ध्यान उसे किनारे पहुँचानेवाला है जो कोई नौकारूपी मनुष्यतनु पाकर भवसागर पार उतरनेका उपाय नहीं करता उसे बड़ा मूर्ख व आत्मघाती जानना उचितहै जबतक मनुष्य ज्ञानकी राह अपने मनको कुमार्गमें चलने से नहीं रोकता तबतक उसको अनेक तरहके दुःख प्राप्त होते हैं इसलिये मन चंचलको कुमार्ग करने से धीरे धीरे रोकै तो कुछ दिन ऐसा साधन करनेसे चित्त उसका विरक्त होजाता है जब मन मनुष्यका विरक्त होकर मेरी ओर लगा तब फिर संसारी मायामें नहीं लपटता और प्रतिदिन उसे मेरी भक्ति अधिक उत्पन्न होती है जो कोई अपने वर्ण व आश्रमका धर्म व मेरे चरणोंमें प्रीति रखकर मनमें इस बातका विश्वास जानै कि हरि चरणोंका ध्यान करने के प्रतापसे संसारी माया छूट जावेगी वह मनुष्य अवश्य मुक्त होता है हे उद्धव भवसागर पार उतरनेवास्ते भक्तिके बराबर दूसरा कुछ उपाय उत्तम नहीं है व मेरे भक्त मुक्तिकी भी चाहना नहीं रखते व चारों तरहकी मुक्ति मुझसे न लेकर भक्तिको उससे अच्छा जानते हैं जिसपर मैं बड़ी कृपा करता हूं उसे भक्ति प्राप्त होती है व ब्रह्मादिक देवता उसके दर्शनवास्ते चाहना रखते हैं॥

इक्कीसवां अध्याय।

श्यामसुन्दरका उद्धवजीसे भक्ति उत्पन्न होनेका ज्ञान कहना॥

श्यामसुन्दरने कहा हे उद्धव जो मनुष्य यह सब सुमार्ग भक्ति व ज्ञानका जो हमने तुमसे कहाहै छोड़कर दूसरी ओर मन अपना लगाता है वह कुकर्म करने से चौरासीलाख योनि व नरक में बहुत दुःख पाकर आवागमन से नहीं छूटता जो लोग मनुष्यतनु पाकर परमेश्वरका भजन व स्मरण नहीं करते उनको बड़ा अभागी व मूर्ख समझना चाहिये व जो

मनुष्य आठों पहर अपना मरना याद रखकर शास्त्रानुसार अपने वर्णका धर्म रखते हैं संसार में उन्हींका जन्म लेना सफलहै व अपना धर्म छोड़ने के बराबर दूसरा पाप अधिक नहीं होता जैसा धर्म चारों वर्ण चारों आश्रम के वास्ते वेदमें लिखाहै वैसा कर्म करके अपने आचार व चलन से रहे तो प्रतिदिन ज्ञान व धर्म बढ़कर उसको मेरे मिलने की राह दिखलाई देती है व नियम व आचार धनी व कङ्गाल दोनोंसे निबहसक्ता है सामर्थ्यवाला मल व मूत्र करने उपरांत दूसरी धोती पहिन लेवे व कङ्गाल मनुष्य जिसके पास दूसरा वस्त्र न हो वह गीली धोती पहिनकर अपना नियम रक्खे व सूखा अन्न हवा लगने से पवित्र रहता है वह चाण्डाल के छूने से भी अशुद्ध नहीं होता व सूती कपड़ा धोने से पवित्र होकर रेशमी वस्त्रको जबतक पहिनकर दिशा फिरने न जावे व भोजन करती समय व सूतक में न पहिने तबतक शुद्ध रहता है उसे धोनेका प्रयोजन नहीं होता व तांबे व पीतल का बर्तन खटाई व राख के मांजने व चांदी धोने व सोना हवा लगने से पवित्र होता है कदाचित् किसी बर्तन या कपड़े में मल व मूत्र लगजावे तो जबतक कि दुर्गन्ध व रङ्ग न छूटै तब तक वह पवित्र नहीं होता व शरीर मनुष्य का प्रतिदिन स्नान व सन्ध्या व तर्पण व होम करनेसे शुद्ध रहता है व ज्ञानी मनुष्य को सब वस्तु ठाकुर को भोग लगाकर भोजन करना चाहिये बिना भोग लगाये कोई वस्तु खाना अपने मांसके बराबर होता है व मनुष्यको भोजन बनावती समय अपना नाम लेना उचित न होकर यह बात कहनी चाहिये कि ठाकुरजी के भोग लगाने वास्ते रसोई तय्यार करो इस तरह का अभ्यास रखनेसे सब पापोंकी जड़ व अहङ्कार छूटजाताहै व अज्ञान बालक को नियम व आचार रखना उचित न होकर पांच वर्ष की अवस्थातक कुछ पाप व पुण्य किसी बात का उसे नहीं लगता व छठवें वर्ष से लेकर बारहवर्ष की अवस्थातक कुछ हत्या आदिक होजावे तो उसका प्रायश्चित्त पिताको करना चाहिये उसके उपरांत जो कुछ पाप करे तो उसका प्रायश्चित्त आप करना उचित है व विपत्ति पड़ने से कोई अधर्म करके भी अपना पेट पाले तो दोष नहीं ल-

गता व सामर्थ्य रखकर धर्म छोड़देने में पाप होता है जिसतरह सब धर्मों का विचार करना ब्राह्मण व क्षत्रिय व वैश्य उत्तम वर्ण को उचित होकर नीच जातिके वास्ते कुछ आचार विचार नहीं रहता उसी तरह कोठे पर सोनेवाले मनुष्य को नीचे गिरने का डर होकर पृथ्वीपर सोनेवाला गिरने से नहीं डरता इसलिये जहांतक वनपड़े वहां तक अपने को अधर्म करने से वचाये रहै जितना पाप कम करैगा उतना प्रतिदिन उसके वास्ते अच्छा होगा जो लोग सुन्दर स्त्री देखने व अतर आदिक सूंघने व अच्छा भोजन खाने व कोमल शय्यापर सोने से प्रसन्न होकर सब तरहका सुख चाहते हैं उनको सिवाय दुःख के कुछ सुख नहीं मिलता व संसारी चाहना जो सब दुःख की जड़ है छोड़ देनेवाले बहुत प्रसन्न रहते हैं जिस तरह संसार में चाहना सबको दुःख देती है उसी तरह स्वर्ग में भी तीन वस्तु एक दूसरों को अपने से ऊँचे सिंहासन पर बैठे देखकर डाह करना दूसरे अपने बराबर बैठनेवाले से विरोध उठावना तीसरे नीचे बैठनेवालों को अभिमान की राह छोटा समझना दुःख देनेवाला है इसलिये स्वर्ग की भी इच्छा न रखनी चाहिये जो मनुष्य संसारी सुख व स्वर्गकी चाहना न रखकर हरिचरणों में ध्यान लगाये रहता है वह महाप्रलय तक मेरे साथ वैकुण्ठ में सुख भोगकर दूसरा जन्म नहीं पावता हे उद्धव जो लोग मुझे ईश्वर जानकर एक बेरभी सच्चे मन से मेरा स्मरण व ध्यान करते हैं वे मुझको कभी नहीं भूलते इसलिये मनुष्यको उचितहै कि शास्त्रानुसार अपना धर्म रखकर मेरे चरणों में प्रीति लगाये रहै॥

बाईसवां अध्याय।

श्रीकृष्णजीका तत्त्वों का हाल वर्णन करना॥

उद्धव ने इतनी कथा सुनकर विनय की हे वैकुण्ठनाथ मैंने चौबीस तत्त्वों का हाल सुना पर बाजे ऋषीश्वर तीन व कोई छः व बाजे नव व कोई ग्यारह तत्त्व कहते हैं इसका भेद वर्णन कीजिये जिसमें मेरा सन्देह छूट जावे श्यामसुन्दरने कहा हे उद्धव संसाररूपी मायासे योगी व ऋषीश्वर कोई नहीं वचकर जो बात कहते हैं वह सच मानो मेरी माया व्यापने

से योगी व ऋषीश्वरों को भी अनेक राह दिखलाई देकर जबतक वे मेरे भेद को नहीं पहुँचते तबतक मन उनका एक बात पर स्थिर नहीं रहता जिसने ज्ञान की राह मुझे पहिंचाना उसके मन से सब भेद छूटजाता है जब तक मेरी माया के तीनि गुण सतोगुण व रजोगुण व तमोगुण बराबर रहते हैं तबतक संसार की रचना होकर उन तीनों के घटने बढ़ने से जगत्की उत्पत्ति होती है और नव तत्त्व जो तुमने सुने थे उनके नाम ये हैं पुरुष महत्तत्त्व अहंकार आकाश वायु अग्नि जल पृथ्वी माया व ग्यारह तत्त्व जो सुने हैं उनको त्वचा व आंख नाक कान जिह्वा पांच ज्ञान इन्द्रिय हाथ व पांव व लिंग व गुदा और वाक् पांच कर्म इन्द्रिय व ग्यारहवां मन समझना चाहिये अंग को त्वचासे ठण्ढा व गर्म व कोमल व कड़ाई विचारना आंखोंसे देखना नाकसे सूंघना कानसे सुनना जिह्वा से खट्टे मीठेका स्वाद चखना हाथ से शुभ व अशुभ कर्म करना पांव से चलना लिंगसे स्त्रीका सुख भोगना गुदासे मल त्यागना वाक् से बोलना मनकी इच्छानुसार सब कर्म होते हैं हे उद्धव इन सब इन्द्रिय व अहंकार व महत्तत्त्वसे संसार उत्पन्न होताहै व छः तत्त्व जो कहते हैं उनसे पृथ्वी जल अग्नि वायु आकाश पंचभूतात्मा छठवां परमात्मा पुरुषको जानो जबतक मनुष्य मेरी मायामें फँसा रहताहै तबतक उसे लाखों तरहके भ्रम लगे रहते हैं जब उसने मेरी मायासे बिलग होकर मुझे अपना स्वामी जान लिया तब फिर मन उसका दूसरी ओर नहीं लगता वह सब जीवोंमें मेरा प्रकाश बराबर देखता है यह सब बखेड़ा मनका होकर मनुष्य संसारीमाया में लपटनेसे मुझे नहीं पहिंचानता व इसी मनको मेरी ओर लगाने से भवसागर पार उतरजाताहै हे उद्धव मनुष्य मरतीसमय जिस ओर अपना मन लगावते हैं मरने उपरांत वही तनु उनको मिलता है व हरिचरणोंका ध्यान करने से अन्तःकरण शुद्ध होकर वैकुण्ठ में पहुँचते हैं जो लोग अपना शरीर पुष्ट करने वास्ते जीवहिंसा करते हैं उनको अवश्य नरकवास होकर चौरासी लाख योनि भोगनी पड़ती हैं देखो सोती समय शरीर एक जगह पड़ा रहकर मन कई जगह घूमने से अनेक तरह का स्वप्न देखता है व

जागने में भी मन हजारों कोसोंपर दौड़ जाता है इसलिये मनको शरीर से विलग समझना चाहिये जिसने मायारूपी ब्रह्मांड बनाया हुआ समझ कर अपना मन वशमें किया उसने इन्द्रियादिक सबको जीतलिया व अपने मनके वश रहनेवाले संसारी माया में लपटकर नष्ट होते हैं व आत्मा में मेरा प्रकाश शुद्ध रहकर कुछ नहीं करता पर उसको भी माया के साथ फँसकर संसार उत्पन्न करना पड़ता है व मैं सतोगुणके साथ होकर ऋषीश्वर देवता व रजोगुण से मिलकर दैत्य व मनुष्य व तमोगुण में मिश्रित होकर भूत प्रेत व पशु आदिक को उत्पन्न करताहूं जिसतरह मकड़ी अपने मुखसे जाला निकालकर फिर खालेती है उसी तरह हम भी अपनी शक्ति सबके तनुमें रखकर मरने उपरांत खींच लेते हैं जैसे बहती नौकापर चढ़ने से किनारे के वृक्ष चलते हुये दिखलाई देते हैं व घूमती समय पृथ्वी व आकाश घूमता हुआ मालूम पड़ताहै वैसे सब कर्म शुभ व अशुभ संसारके मेरी माया व इच्छा से होकर मनुष्य ऐसा जानते हैं कि यह काम हमने किया इसलिये ज्ञानी मनुष्यको अपना परलोक बनाने वास्ते काम व क्रोध व मन आदिकको अपने वश रखकर किसीके गाली देने से खेद मानना न चाहिये ॥

तेईसवां अध्याय।

श्रीकृष्णजी का उद्धव से एक ब्राह्मणका इतिहास वर्णन करना ॥

उद्धव ने यह सब ज्ञान सुनकर विनय की हे महाप्रभु यह बात बहुत कठिनहै जो गाली व कठोर वचन सुनकर क्षमा करै श्रीकृष्णजी ने कहा हे उद्धव तुम सच कहते हो तीर व तलवार के घाव मलहम लगाने से अच्छे होजाते हैं पर कठोर बात कहने से जो घाव कलेजे में पड़जाताहै वह किसी तरह नहीं मिटता पर ये सब बातें मनके कारण से होती हैं जिसने अपने मन व अहंकारको वश करलिया उसे इन बातोंका खेद नहीं होता वह सब जीवों में परमेश्वर का चमत्कार एकसा देखकर सब बातको ऊपर इच्छा परमेश्वर के समझता है व जो लोग अपने इन्द्रिय व मनके वश होरहे हैं उनको दुर्वचन कहने से क्रोध उत्पन्न होता है इस

बातका एक इतिहास तुमसे कहते हैं मन लगाकर सुनो उज्जैन नगर में एक ब्राह्मण बड़ा धनपात्र व्यापार करनेवाला रहकर ऐसा सूम व लोभी व क्रोधी व कामी था कि उसने कभी अपने जाति भाई व ब्राह्मणादिक को मुखसे भोजन करने वास्ते नहीं कहा एक कौड़ी वास्ते मित्रका शत्रु होकर अपने खाने पहिरने में भी सूमपन रखता था इसलिये बहुत धन उसने बटोरा पर सूम होने से सब परिवारवाले व स्त्री व पुत्र उससे शत्रुताई रखते थे संसारी मनुष्यके पास द्रव्य होने से आत्मा व परिवार व देवता व पितर व अतिथिको सुख प्राप्त होता है सो ये पांचों उस ब्राह्मणके शत्रु थे जब वह ब्राह्मण बूढ़ा होगया व सामर्थ्य व्यापार करने की उसमें नहीं रही तब उन्हीं पांचों के शापसे आगि लगने व चोर चुरालेजाने व लूटने राजा व पचालेने देनदारोंके सब धन उसका जातारहा व जो द्रव्य पृथ्वी में गाड़ाथा वह भी टलगया जब वह ब्राह्मण सब धन अपना खोकर खाने विना दुःखी हुआ व जाति भाई लोग उसका निरादर करनेलगे तब एक दिन बैठे हुये उसने मनमें विचारा देखो मैंने इतना द्रव्य बटोरकर कोई धर्म व कर्म परलोक बनाने वास्ते नहीं किया और न खर्च करके संसारीसुख उठाया सूमका धन इसीतरह व्यर्थ जाता है व तृष्णा रखने से सब गुण मनुष्य का नष्ट होकर यश नहीं रहता जिस तरह सुन्दर मनुष्य के मुखपर कोढ़का दाग रहने से सुन्दरताई उसकी नष्ट होजाती है उसी तरह लोभी मनुष्य तेजहीन रहकर उसे कोई अच्छा नहीं कहता देखो जिस धनको लोग उत्तम जानते हैं वह ऐसा बुरा होता है कि पहिले व्यापार करती समय अपने व विरानेके साथ शत्रुता करने व झूंठ बोलनेसे मिलता है व रात्रि दिन उसकी रक्षा करने में चोर व डाकू व राजा व जाति भाइयों का भय लगा रहने से अच्छीतरह निद्रा नहीं आती जिसमें कोई ले न जावे व द्रव्य प्राप्त होने से वेश्यागमन व जुवा व जीवहिंसा व जातिभाइयों से अभिमान उत्पन्न होकर अनेक तरह के पाप करने में आवते हैं जिस कारण संसार में अपयश उठाकर मरने उपरान्त नरक भोगना पड़ता है परमेश्वर ने बहुत अच्छा किया जो मेरा सब धन जातारहा जिसद्रव्य में

इतने अवगुण भरे हैं उसे पाकर शुभ कर्म में खर्च करडालना चाहिये द्रव्य इकट्ठी करने से सिवाय दुःख के कुछ सुख नहीं मिलता चारदिन के जीने में मायारूपी द्रव्य व स्त्री के वास्ते बहुत मनुष्यों से शत्रुता करनी उचित नहीं है जो लोग भरतखण्ड में मनुष्यतनु पाकर बीच प्रीति द्रव्य व स्त्री पुत्रों के फँसकर नष्ट होते हैं उनका संसार में जन्म लेना व्यर्थ है और उन्हें बड़ा मूर्ख समझना चाहिये देवतालोग यह इच्छा रखते हैं कि भरतखण्ड में हमारा जन्म बीचतनु मनुष्य के होता तो इस शरीर से जितनी बड़ी पदवी को चाहते हैं पहुँचजाते सो अब बुढ़ाई आने व इन्द्रियों की सामर्थ्य घटने से मैं कुछ शुभ कर्म नहीं करसक्ता इसलिये अब जितने दिन मेरे जीनेमें हैं उतने रोज अपने आत्माको कुछ दुःख देकर बीचस्मरण व ध्यान परमेश्वर के मग्न रहूं ऐसा विचारतेही उसने विरक्त होकर संन्यास धारण करलिया व एक जगह बैठकर परमेश्वर का भजन व स्मरण करने लगा जब वह ब्राह्मण नगर में भिक्षा करने जाता था तब पुरवासी उसको पहिंचानकर पिछली बात याद करके बहुत दुःख देते थे कोई गाली देकर उस पर थूक देता व कोई दण्ड व कमण्डलु छीनकर उसको रस्सों से बाँधने उपरान्त कहता था यह बड़ा सूम व कपटी होकर अब बकुला भक्त बना है हे उद्धव इसीतरह वह ब्राह्मण अनेक दुःख पानेपर भी किसी से कुछ खेद न मानकर अपने मनमें समझता था कि मुझे कोई देवता व मनुष्य व नवग्रह व जाड़ा व बरसात व गर्मी कुछ दुःख नहीं देते सब दुःख अपने प्रारब्ध व मनसे होता है संसारी मनुष्य अपना मन चलायमान होने से शुभ व अशुभ कर्म जैसा करते हैं वैसे दुःख व सुख उनको भोगना पड़ता है जिसने अपना मन वशमें किया उसे कुछ दुःख नहीं होता और यज्ञ व तप आदिक करने का प्रयोजन नहीं रहता पर यह मन चंचल बलवान् शत्रु जल्दी वश में नहीं होता मन के कारण से सदा शत्रु व मित्र होते आये हैं व मनको रोंक लेने से कोई शत्रुताई व मित्रताई नहीं रखता मनका विचार सब होकर शरीरका किया कुछ नहीं होसक्ता किस वास्ते कि मनुष्य अपनी स्त्री को अंग से लपटा कर कन्या को भी गले

लगावता है पर मनके कारण स्त्री को लपटावती समय कामदेव सतावता है व कन्याके गले लगावने में नहीं जागता जिसने अपना मन वश में नहीं किया उसका धर्म व कर्म करना वृथा है इसलिये मनको संसारी मायासे रोंककर हरिचरणोंमें लगाना चाहिये॥

दो० मनके हारे हारि है मनके जीते जीत। परब्रह्मको पाइये मनहीं की परतीत॥

हे उद्धव वह ब्राह्मण अपने मनको रोंककर ऐसा ज्ञानी होगया कि शत्रु व मित्र को बराबर समझकर किसी के गाली देने व मार पीट करने से क्रोध नहीं करता था इसी तरह का ज्ञान मन में रखकर मरने उपरान्त मुक्तिपदवी पर पहुँचा इस अध्याय को सच्चे मन से कहने व सुननेवाला अपने मन व काम व क्रोधादिक के वश न होकर भवसागर पार उतर जायगा॥

चौबीसवां अध्याय।

श्रीकृष्णजीका आदिपुरुष व मायाका हाल कहना॥

श्रीकृष्णजीने कहा हे उद्धव आत्मापुरुष व मायाका हाल विलग करके कहते हैं सुनो जहां आत्मापुरुष निरंकाररूप है वहां वाणी व मन पहुँचने की सामर्थ्य नहीं रखते जब उस पुरुष को संसार उत्पन्न करने की इच्छा होती है तब वह पहिले अपनी माया को जिसे प्रकृति भी कहा जाता है उत्पन्न करते हैं उसी मायासे सात्त्विक व राजस व तामस तीन गुण प्रकट होते हैं जबतक तीनों गुण बराबर रहते हैं तबतक कोई जीव उत्पन्न नहीं होता व उनके घटने व बढ़ने से संसार की चाहना होती है व मेरा प्रकाश माया में मिश्रित होनेसे महत्तत्त्व प्रकट होकर उसमें अहङ्कार उत्पन्न होता है व अहङ्कार से वैकारिक व तामस व तेजस प्रकट होते हैं वैकारिक से पंचभूत व तामस से ग्यारह इन्द्रियां व तेजस से ग्यारह देवता इन्द्रियोंके मालिक उत्पन्न होकर जबतक ये सब अलग रहते हैं तबतक ब्रह्माण्ड पुरुष प्रकट नहीं होता जब मेरी शक्ति से ये सब वस्तु इकट्ठी होजाती हैं सो वह ब्रह्माण्डरूप मेरा होकर उस स्वरूप की नाभि से एक फूल कमल का तब ब्रह्माण्डपुरुष उत्पन्न होकर बहुत दिनतक जलमें शेषनागपर शयन

करते हैं निकलता है उस फूलकी डार से ब्रह्मा उत्पन्न होकर तप करने उपरान्त रजोगुण से सब जीव उत्पन्न करके तीनों लोक की रचना करते हैं सो देवता स्वर्गलोक व दैत्य व दानव आदिक पाताललोक व मनुष्य आदिक मर्त्यलोक में रहकर अपने कर्मानुसार स्वर्ग व नरक का दुःख व सुख भोगते हैं व ब्रह्मा के एक दिनमें चौदह इन्द्र बदल जाते हैं जब ब्रह्मा का एक दिन बीतकर सन्ध्या समय वह सो रहते हैं तब कोई लोक नहीं रहता जब ब्रह्मा प्रातःकाल उठकर रचना करते हैं तब फिर सब लोक व संसार प्रकट होजाते हैं व ब्रह्मा के मरने उपरान्त सिवाय पानी के कुछ नहीं रहता पृथ्वी पानी में व पानी अग्नि में व अग्नि वायु में व पवन आकाशमें व आकाश अहङ्कारमें व अहङ्कार महत्तत्त्वमें व महत्तत्त्व माया में मिलकर वह माया मेरे निरङ्कार‌रूपमें समाजाती है॥

पच्चीसवां अध्याय।

श्रीकृष्णजीका उद्धवसे रजोगुण व तमोगुण व सतोगुणका लक्षण वर्णन करना॥

श्यामसुन्दरने कहा हे उद्धव अब हम सतोगुण व रजोगुण व तमोगुण का लक्षण वर्णन करते हैं सुनो जो मनुष्य मन में दया रखकर अपनी इन्द्रियों के वश न होवे शुभ व अशुभ कर्म करने का विचार किया करै व किसीके गाली देनेसे खेद न मानकर परमेश्वर का स्मरण व ध्यान करता रहै व सच बोलकर स्वभाव में धैर्य रख व सब बातों की याद व मन में सन्तोष रखकर किसी वस्तु की चाहना न करै व ठाकुरजी की पूजा व सेवा में मन लगाये रहै ये लक्षण सतोगुण के हैं व कोई जो सुन्दरी स्त्री व उत्तम भूषण व वस्त्र व स्थान व बाग आदिक संसारी सुख की चाहना रखकर अभिमान से किसीका कहना न मानै व जो शुभ कर्म करै उसमें अपना यश चाहै व सदा सामर्थ्य व द्रव्य बढ़ाने का उपाय करता रहै उसे रजोगुणी समझना चाहिये व जो मनुष्य अधिक क्रोध व लोभ रक्खै व झूंठ बोलकर जीवहिंसा करै व कुकर्म करने व मांगने से निर्लज्ज होकर लोगों के साथ झगड़ा करता रहै व आठों पहर आलस्य में भरा रहकर अधिक सोवै ये लक्षण तमोगुण के हैं व सब वस्तु को अपना समझना व

मेरा तेरा विचारना व अपने को मैं जानना यह बात तीनों गुण मिलने से होती है पर मेरा भजन व ध्यान करनेवालेको सतोगुणके प्रतापसे कुछ चाहना नहीं रहती व तीनों गुण आठ पहर बराबर न रहकर घटा बढ़ा करते हैं व सतोगुण अधिक होने से मन में हर्ष व ज्ञान उत्पन्न होता है व रजोगुण बढ़ने से संसारी सुख की चाहना होती है व तमोगुण अधिक होने से चिन्ता व क्रोध व नींद व आलस्य बढ़कर जीवहिंसा व अधर्म करनेको मन चाहता है जागना सतोगुण व सोना व स्वप्न देखना रजोगुण व उदास होकर चिन्ता में बैठ रहना तमोगुण के लक्षण समझना चाहिये थोड़ा खाना सात्त्विकी व अच्छा पदार्थ भोजन करनेवास्ते ढूंढ़ना राजसी व भूख से अधिक खाना जिसमें अजीर्ण उत्पन्न हो तामसी जानना उचित है व आत्मा तीनों में मिश्रित व सबसे विलग रहता है व सतोगुण स्वभाववाले स्वर्ग का सुख भोगते हैं व रजोगुणी मनुष्य अपने कर्मानुसार दुःख व सुख भोगकर जन्म व मरण से नहीं छूटते व तमोगुणी लोग पशु आदिक चौरासीलाख योनि में उत्पन्न होकर अपने कर्मानुसार नरक में बड़ा दुःख पाते हैं व संसार से विरक्त होने व मेरे चरणों का ध्यान व भक्ति करनेवाले हमारे पास वैकुण्ठ में पहुँचते हैं व गृहस्थी छोड़कर वन में रहना सतोगुण व नगर व गृहस्थी में रहकर संसारी सुख चाहना रजोगुण व मद पीना व जुआ खेलना व पर स्त्रीगमन करना व कुसंगत बैठना तमोगुण व देवस्थान पूजा करना तीर्थयात्रा में रहना निर्गुणका लक्षण है व ज्ञानचर्चा रखना सात्त्विक व श्राद्ध आदिक संसारी कर्म करना राजसी व जीवहिंसा व पाप आदिक तामसी व मेरी पूजा व जपमें लीन रहना निर्गुण धर्म समझना चाहिये हे उद्धव इसीतरह सब बातों में सतोगुण व रजोगुण व तमोगुण के लक्षण होकर कोई जीव तीनों गुणोंसे बाहर नहीं है इन तीनोंसे विरक्त होकर निर्गुण भक्ति व पूजा करनेवाले मेरे निकट पहुँचते हैं॥

छब्बीसवां अध्याय।

श्रीकृष्णजीको उद्धवसे जो ज्ञान राजा पुरूरवाको गन्धर्वलोकमें हुआ वह वर्णन करना॥

श्यामसुन्दरने कहा हे उद्धव जिसे मेरे मिलनेकी चाहना हो वह मनुष्य कभी लम्पट व लोभी व जुआरी व संसारी प्रीति रखनेवाले व अपना शरीर पालन करनेवाले व अधर्मियोंसे संगत व प्रीति न रक्खे ऐसे लोगोंकी संगत करने से भी नरक भोगना पड़ता है इसलिये साधु व महात्माओं का सत्संग करना चाहिये जिससे हरिचरणों में प्रीति उत्पन्न हो जिस तरह राजा पुरूरवा उर्वशी अप्सराकी प्रीति में फँसकर नष्ट हुआ था उसी तरह संसारी लोग स्त्री व लम्पट के पास बैठकर अपना परलोक बिगाड़ देते हैं सो हे उद्धव तुम उन लोगोंकी संगत कभी मत करना इतनी कथा सुनकर उद्धवने पूछा हे त्रिभुवनपति राजा पुरूरवाका हाल किस तरह पर है यह वचन सुनकर मुरलीमनोहरने कहा हे उद्धव जिस तरह राजा पुरूरवा इला नाम स्त्रीसे उत्पन्न होकर उर्वशी अप्सराके वास्ते गन्धर्वलोकमें जा बसा था वह सब कथा नवम स्कन्धमें लिखी है अब उसके ज्ञान प्राप्त होनेका हाल सुनो जब राजा पुरूरवाने गन्धर्वलोक में रहकर हजारों वर्ष उर्वशीके साथ भोग व विलास किया व मन उसका नहीं भरा तब मेरी इच्छानुसार एकदिन उसने ज्ञानकी राह मनमें विचारा कि इतने दिन कामदेव के वश होकर मैंने संसारी सुख उठाया पर मेरी इन्द्रियों की चाहना पूरी नहीं हुई जिस तरह अग्निमें घी डालनेसे ज्वाला बढ़ती जाती है उसी तरह इन्द्रियको जितना अधिक सुख देवै उतनी चाहना बढ़कर कभी सन्तोष नहीं होता देखो मैं बुधका बेटा ऐसा ज्ञानी व प्रतापी राजा होकर उर्वशीके जाती समय उसके पीछे इसतरह नंगा उठ दौड़ा जिसतरह गदहा कामातुर होकर गदहीको खरेदे चला जाता है व उसने मुझे ऐसा वश कर लिया जैसे नटलोग वानरको अपने आधीन करलेते हैं व मैं उसके भोग व विलास में लपटकर ऐसा अन्धा होगया कि मुझे छोटे व बड़ोंकी लज्जा न रहकर दिन रात बीतनेकी सुधि जातीरही व हजारों राजा सातों द्वीपके जो मेरे आधीन थे हमारे अज्ञानपर हँसने

लगे सचहै जो कामी पुरुष स्त्रीके वश होजाते हैं उन्हें अपना भला व बुरा दिखलाई न देकर उनका तेज व बल व ज्ञान व धर्म कुछ नहीं रहता देखो मांस की पुतलीपर जिसमें मल मूत्र व लोहू आदिक भरा रहकर सब द्वारोंसे अशुद्ध वस्तु निकलती है मैं ऐसा बौड़हा होगया कि जहां इन्द्रादिक देवता मेरे साथ लड़नेकी सामर्थ्य नहीं रखते थे वहां एक स्त्रीने जीतकर अभिमान मेरा तोड़ दिया व उसकी प्रीति में फँसकर ऐसा अपने को भूलगया कि उर्वशी के समझाने परभी मुझे कुछ ज्ञान नहीं हुआ देखो जिस शरीरको माता व पिता व स्त्री व भोजन देनेवाला व कालचक्र मृत्यु व मालिक अपना समझते हैं वह शरीर मरने उपरान्त कुछ काम नहीं आता और फिर उसे कोई एक दिन घरमें नहीं रखसक्ता इसलिये मनुष्यको उचितहै कि पहिलेसे संसारी माया छोड़कर हरिचरणों में प्रीति लगावै ऐसा विचारतेही राजा पुरूरवा उर्वशीका प्रेम छोड़कर गन्धर्वलोक से पृथ्वीपर गिरपड़ा व हरिचरणोंमें ध्यान लगाकर मुक्तिपदवी पाई है उद्धव स्त्रीके ध्यान लगाये रहने से यज्ञ व तप व तीर्थ व व्रत व दान व धर्म आदिकका करना कुछ गुण नहीं करता व विना सत्संग ज्ञान प्राप्त नहीं होता व जो लोग अपने अज्ञानसे समुद्ररूपी सागरमें गोता खारहे हैं उनको भवसागर पार उतरनेके वास्ते सत्संग नौका समझना चाहिये अन्धेको सत्संग आंख के समान होकर जिस तरह माता व पिता अपने पुत्रका भला चाहते हैं उसी तरह संसारी मनुष्य के कल्याणवास्ते सत्संग होता है जब मनुष्यको सत्संग करने से ज्ञान प्राप्त होकर अपने शरीर व स्त्री आदिककी प्रीति छूटजाती है तब वह विरक्त होकर हरिचरणोंमें ध्यान लगानेसे मुक्ति पाताहै जबतक मायारूपी स्त्री व द्रव्यकी तृष्णा नहीं छोड़ता तबतक स्वप्नमें भी ज्ञान नहीं प्राप्त होता संसारी मनुष्यका दुःख छोड़ानेवाली केवल मेरी भक्ति व शरण होकर इससे उत्तम दूसरा उपाय नहीं है इसलिये धन चाहनेवालेको धर्म करना उचित है व जो नरक जानेसे डरता है वह सत्संगमें बैठे तो उसको ज्ञान प्राप्त होकर मुक्ति मिलेगी विरक्त पुरुष व सन्त व महात्माको मेरा स्वरूप समझना चाहिये ॥

सत्ताईसवां अध्याय।

श्रीकृष्णजी को उद्धवसे पूजादिक की विधि कहना ॥

उद्धवने इतनी कथा सुनकर विनय की हे दीनानाथ धर्म ब्रह्मचारी व वानप्रस्थ व योग व तप आदि का बहुत कठिन है व विना पूजा तुम्हारी शरीर पवित्र नहीं होता ब्रह्मा व नारद व बृहस्पति व व्यासजीने वेद व शास्त्र में अनेक उपाय लिखे हैं सो दया करके अपनी पूजाकी विधि जिसके करने से संसारी लोग भवसागर पार उतर जाते हैं वर्णन कीजिये श्याम-सुन्दरने कहा हे उद्धव मेरी पूजाका अन्त नहीं है पर संक्षेप सें थोड़ासा हाल उसका कहताहूं सुनो एक विधि हमारी पूजा की वेदमें दूसरी तंत्र-शास्त्रमें लिखी है सो मनुष्यको चाहिये कि प्रातसमय उठकर मेरा व अपने गुरुके चरणोंका ध्यान करै फिर उसको दिशा व दतुइनि व स्नान व सन्ध्या व तर्पण व जप करने से सुचित्त होकर मेरा सगुण रूप पूजना चाहिये व मेरी मूर्ति आठ तरह से एक पत्थर व दूसरी काठ व तीसरी सोना व चौथी चांदी व पांचवीं पीतल व छठवीं तांबा व सातवीं पृथ्वीपर चबूतरा आदिक व आठवीं मिट्टीका स्वरूप बनाकर पूजा व ध्यान करै सिवाय इसके मूर्ति रत्न व चित्रकारी कागज व दीवार व शीशेपर खींचकर जिसतरह होनेसकै पूजा करना उचितहै व दोतरहपर मूर्ति मेरी होतीहै एक चल व दूसरी अचल मूर्ति ठाकुरजी आदिक जो सिंहासनपरसे उठाकर स्नान कराने उपरान्त सिंहासनपर बैठालके पूजते हैं उसे चल समझना चाहिये व जो मूर्ति शिवालय व मन्दिर आदिक में स्थापन करदेते हैं और फिर वह उठने नहीं सक्ती उसको अचल जानना उचित है सो दोनों मूर्ति चल व अचलको स्नान कराने व चन्दन लगाने उपरान्त भूषण व वस्त्र पहिनाकर धूप व दीप व माला फूल व तुलसीदल नैवेद्य से पूजन करके अतर मल देना व शीशा दिखलाना चाहिये व चित्रकारी की मूर्ति को स्नान कराना उचित न होकर कपड़े से पोछने उपरान्त पूजन करना उचित है व पृथ्वीपर चबूतरा आदिक बनाये हो उसमें पहिले भगवान्का ध्यान करके विधिपूर्वक पूजना चाहिये व जो कोई मानसी पजा किया

चाहै वह अपने मनमें नारायणजी के स्वरूपका ध्यान लगाकर जिस तरह मूर्तिको पूजते हैं उसी तरह धूप दीप नैवेद्य आदिकसे ध्यानमें पूजन करै और हमारे पूजन करती समय ध्यान सुदर्शनचक्र व पाञ्चजन्य शंख व गदा व पद्म व धनुर्बाण व हल व मूशल मेरे शस्त्र व वैजयन्ती माला व नन्द व सुनन्द व पुण्य व सुशील व गरुड़ व विशुक व सेन व सुनाम नवोपार्षद व दुर्गादेवी व गणेश व वेदव्यास व इन्द्र आदिक देवताओंका करना चाहिये व जितनी वस्तु भोजनकी अपने को बहुत प्यारी हो उसे बनवाकर ठाकुरजीका भोग लगावै कदाचित् नित्य सब तरहका भोजन तैयार न हो सकै तो अन्नकूट आदिक पर्व के दिन ठाकुरजीका भोग लगानेवास्ते अवश्य छत्तीस व्यंजन बनवाना उचित है व जो मनुष्य प्रति दिन मिट्टीकी मूर्ति बनाकर पूजा करै उसे आवाहन व विसर्जनका मंत्र अवश्य पढ़ना चाहिये व ठाकुर पूजनेवालेको वह मन्त्र पढ़ना न चाहिये व होम करनेवाले को अग्नि में मेरा ध्यान लगाना व जल व सूर्य को भी हमारा रूप समझना उचित है व पूजा करती समय मेरे चरणों में मन लगाये रहै और पूजा करने उपरांत साष्टांग दण्डवत् करके ठाकुरजी से हाथ जोड़कर कहै हे महाप्रभु मैं तुम्हारे शरण पड़ता हूं मुझे अपना दास जानकर उद्धार कीजिये इसीतरह नित्य पूजनके उपरांत चरणामृत लेकर प्रसाद ठाकुरजीका भोजन करै व विष्णुसहस्रनाम का पाठ पढ़कर मेरी कथा व लीला सुने व भजन व स्मरण करने में दिन रात लीन रहै व जिसे परमेश्वर धन देवे वह ठाकुरमन्दिरके खर्च वास्ते गांव व जागीर देकर बाग लगवा दे जिसमें अच्छीतरह ठाकुरपूजा हो व अनेक रङ्ग के फूल सुगन्धित उनमें चढ़ा करैं पर उस बाग व गांवको बेचने या पोत व किराया लेनेकी इच्छा न रक्खै हे उद्धव मैं भक्ति व प्रीतिकी राह जितना केवल जल चढ़ावने से प्रसन्न होता हूं उतना बिना भक्ति करोड़ों रुपया हरिमन्दिर में लगाने व दान देने से राजी नहीं होता जो मनुष्य सच्चे मनसे प्रति दिन इस तरह मेरा पूजन व सेवा करता है उसके सामने अठारहों सिद्धियां बनी रहती हैं व जितना फल पूजा करने व देवस्थान

बनवानेवालों को प्राप्त होता उतना पुण्य उनको भी समझना चाहिये जो लोग पूजा करने व देवस्थान बनाने का सम्मत देकर उस काम में सङ्ग देते हैं व जो लोग अपने व दूसरे की दान दी हुई पृथ्वी ब्राह्मणसे या देवस्थान आदिकका चढ़ाया हुआ बाग बर्जोरी छीन लेते हैं व ऐसा सम्मत देने वालों को साठिहजार वर्ष तक कीड़ा होकर विष्ठामें रहना पड़ता है॥

अट्ठाईसवां अध्याय।

श्रीकृष्णजी को उद्धवसे ज्ञान विरक्त होनेका वर्णन करना॥

श्यामसुन्दरने कहा हे उद्धव ज्ञानी को किसी की स्तुति व निन्दा करना उचित न होकर सब जीवों में परमेश्वरका चमत्कार एकसा समझना चाहिये दूसरेकी निन्दा करनेवाले अवश्य नरक भोगते हैं इसलिये मनुष्य को उचित है कि मन अपना एक ओर लगाये रखकर ठाकुर की पूजा करती समय दूसरी ओर ध्यान न लगावे व शरीरमें एक आत्मा जो शुद्ध है उसका ध्यान आठों पहर करता रहै व यह बात मनमें विश्वास जाने कि नारायणजी मायाके गुणोंको साथ लेकर सब संसार उत्पन्न व पालन व नाश करते हैं जब मनुष्यने ऐसा विचारकर एक परमेश्वर को सच व संसारी व्यवहार झूंठा समझा तब मन उसका विरक्त होकर मेरी ओर लग जाता है व जब आत्मा मन इन्द्रियों के साथ मिलगया तब वह संसारी प्रीति में फँसकर मायाजालसे नहीं छूटता जिसतरह मनुष्य स्वप्नमें अनेक वस्तु देखकर जागने उपरान्त उसे झूंठा समझता है उसीतरह संसारी व्यवहार मिथ्या होकर केवल परमेश्वर का नाम सच जानना चाहिये हर्ष व शोच व क्रोध व लोभ व अहङ्कार व भय व प्रीति व शत्रुताई व जन्म व मरण यह सब गुण मायाके होकर आत्मा उनसे बिलग रहता है और यह संसार नट व भानमतीके खेल समान झूंठा होकर न आदि में था न महाप्रलयमें रहैगा इसलिये मनुष्यको ज्ञानरूपी तलवारसे संसारी प्रीति व मन इन्द्रियों की तृष्णा काट डालना चाहिये जब उसने संसारी माया छोड़कर अपने मन व इन्द्रियों को वशमें किया तब उसको घर व बनका रहना दोनों बराबर हैं जिसतरह सोने का अनेक गहना बनवाने

से नाम उसका पृथक् पृथक् होता है और वह सब गहना गलवा डाले तो केवल सोना कहलाता है उसीतरह संसारके आदि व अन्त व मध्यमें कांचनरूपी नारायणजी रहते हैं व उनकी इच्छासे अनेक जीव उत्पन्न होकर बिलग बिलग नाम उनका होताहै व महाप्रलय होने में सारा जगत् नाश होकर जीवात्मा सब जड़ व चैतन्यका परमेश्वरके रूप में समाजाता है जैसे सड़कमें सीपका टुकड़ा चांदीके समान चमकता हुआ देखकर कोई लोभी उठा लेवे और उठाती समय सीप समझकर लज्जित होजावे वैसे संसारी गति झूंठी समझना चाहिये जिस तरह उड़तेहुये बादलसे आकाश कुछ मिलावट नहीं रखता उसी तरह आत्मा चौरासीलाखयोनिमें व्यापक रहने पर भी सबसे बिलग रहता है इसलिये मनुष्यको चाहिये कि मन अपना मायाके गुणोंसे विरक्त रखकर ऐसा हरिचरणों में ध्यान लगावे कि संसारी वस्तुकी कुछ चाहना व प्रीति न रहै जिसतरह औषध खानेसे रोग शरीरमें नहीं रहता उसीतरह अपने मन व इन्द्रियोंको वश रखनेसे संसारी तृष्णा व प्रीति छूटजातीहै जिसने मन व इन्द्रियोंको अपने वशमें नहीं किया उसका तप व स्मरण करना वृथा है जब मन मनुष्यका बीच ध्यान चरण परमेश्वरके लीन होगया तब उसे अपने शरीर व संसारकी प्रीति नहीं रहती इसलिये मनुष्य चलते फिरते सोते जागते खाते पीते मन अपना आठों पहर नारायण की ओर लगाये रहै जिसतरह सूर्य निकलने से अँधियारा रातका छूटजाता है उसीतरह मेरी भक्ति करने से अज्ञान नहीं रहता योग व तप भंग होने से जल्दी गति नहीं होती व मेरे भक्तसे कुछ अपराध भी होजाताहै तो दूसरे जन्म में उसका उद्धार करदेताहूं व आत्मा शरीर में रहने से सब इन्द्रियों को चलने व फिरने व बोलने की सामर्थ्य रहती है व जितने देवता प्रकाश अपना इन्द्रियों में रखते हैं सब देवताओं को भी वही आत्मा सामर्थ्य देखकर उनसे बिलग रहता है इसवास्ते ज्ञानी व योगियों को चाहिये कि आत्मा की ओर ध्यान लगाकर संसारी माया व मोहमें न फँसें ऐसे मनुष्योंपर पिछले जन्मके अधर्म करने से कोई दुःख भी पड़जाता है तो मैं उनका कष्ट निवारण करदेताहूं यह वचन मेरा सच्चा

मानकर नाश होनेवाले शरीर से प्रीति न रखना व इन्द्रियों को सुख देना उचित नहीं है ॥

उन्तीसवां अध्याय।

श्रीकृष्णजीका उद्धवसे मनके रोकने का ज्ञान कहना ॥

उद्धव ने इतनी कथा सुनकर विनय की हे दीनानाथ आपने कहा कि मनको रोकना चाहिये सो हवासे भी अधिक वेग रखनेवाले मनको रोकना बहुत कठिन है कोई ऐसा उपाय बतलाइये जिसमें मन रोका जावे व हरि चरणों में प्रीति उत्पन्न हो सिवाय तुम्हारे दूसरा कोई इसका यत्न बतलाने नहीं सक्ता व आपकी माया ने संसारी जीवों को ऐसा भुला रक्खा है कि विना दया व कृपा तुम्हारी कोई इस मायारूपी जाल से नहीं छूटता जहां ब्रह्मादिक देवताओं को तुम्हारा भेद जानना कठिन है वहां संसारी मनुष्य हरिचरित्र समझने की कहां सामर्थ्य रखते हैं यह बात सुनकर श्यामसुन्दर ने कहा हे उद्धव जो कोई संसार में जन्म लेकर मेरे चरणोंका ध्यान व स्मरण करताहै तो उसको धीरे धीरे संसारी प्रीति छूटकर प्रतिदिन हरिचरणोंमें प्रेम बढ़ताहै जहां तीर्थपर मेरे भक्त व ज्ञानीलोग रहते हैं वहां उनकी संगतमें रहकर मेरा भजन व स्मरण किया करै व सब जीवोंपर दया रखकर चौरासी लाख योनिमें मेरा प्रकाश बराबर समझै व किसी जीवको दुःख न देकर जहांतक बनिपड़े वहांतक मनसा वाचा कर्मणासे दूसरेका उपकार करै व मनमें यह अभिमान न रक्खै कि उत्तम जाति व बड़ा मनुष्य हो कर कंगाल व शूद्रको किसतरह पानी पिलाऊं व उसे छूकर भोजन दूं जब तक मनुष्य प्रकाश परमेश्वर का बीच तनु ब्राह्मण व चाण्डाल के एकसा नहीं समझता तबतक वह अज्ञान है व जिसने देवता व दैत्य व मनुष्य व पशु व पक्षी आदिक चौरासी लाख योनि में परमेश्वरका रूप बराबर जाना उसे कोई दुःख देनेकी सामर्थ्य नहीं रखता वह अवश्य मुक्त होता है हे उद्धव यह सब गुप्त ज्ञान हमने आजतक किसी से नहीं कहा था सो तुझे सुनाया इसको याद रखने से तेरी मुक्ति होजावेगी व तुम भी यह ज्ञान हरिभक्त व साधु व महात्मा लोगोंको सुनाना और जो मनुष्य चोर व

लम्पट व पाखण्डी व लोभी व जुआरी व मद्यप व झूंठे हों व जीवहिंसा करके पराया उपकार नहीं मानें उनसे मत कहना जिसतरह अमृत पीने-वाले को दूसरी औषध खानेका प्रयोजन नहीं रहता उसी तरह यह ज्ञान समझनेवालोंको अपने भवसागर पार उतरने वास्ते दूसरा कुछ उपाय करना न चाहिये जो कोई यह ज्ञान व हरिकथा सच्चे मनसे सुनकर दूसरे को उपदेश करेगा उसको हम यमराजकी फाँसीसे छुड़ाकर परमपद देवेंगे इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित उद्धव ने यह सब ज्ञान सुनकर आंखोंमें आंसूभरलिया व श्रीकृष्णजी के सामने हाथ जोड़कर विनय की हे महाप्रभु आपने दयाकी राह ज्ञानका दीपक मेरे हृदयमें प्रकाशित क-रके इसतरह मायारूपी अँधेरा छुड़ादिया जिसतरह सूर्य निकलने से कुहिरा नहीं रहता व तुम्हारी कृपा से मन मेरा विरक्त होकर स्त्री व पुत्रों का प्रेम छूटगया आपको दयाका पलटा कोई दिया चाहे तो किसी तरह उऋण नहीं होसक्ता इसलिये कमलरूपी चरणों को बार बार दण्डवत् करके यह वरदान मांगताहूं जिसमें तुम्हारा चरण छोड़कर मन मेरा दूसरी ओर न जावै यह वचन सुनकर श्रीकृष्णजी आनन्दमूर्ति ने अपनी खड़ाऊं देकर कहा हे उद्धव तुम यहां से बदरी केदार जाकर नित्य गंगा स्नान किया करो व कन्दमूल खाकर मेरे चरणों का ध्यान लगावो तुम्हारी मुक्ति हो जावैगी और अब मैं भी कलियुगवासियों के उद्धार होने वास्ते भागवत रूपी मूर्ति अपनी संसार में छोड़कर गोलोक को जाऊंगा उस कथाके पढ़ने व सुनने से संसारी मनुष्य भवसागर पार उतर जावेंगे उद्धवजी यह वचन सुनतेही श्यामसुन्दर का वियोग समझकर अति दुःखी होगये पर उनकी आज्ञा टालना उचित न जानकर खड़ाऊं का जोड़ा शिरपर धर लिया व दण्डवत् करने व परिक्रमा लेने उपरान्त मोहनीमूर्तिका स्वरूप आंखोंकी राह हृदय में रखकर उनसे बिदा हुआ व बदरिकाश्रम में जाकर त्रिभुवनपति की आज्ञानुसार स्नान व ध्यान करने लगा सो उसी ज्ञानके प्रताप से कुछदिन बीते तनु अपना साथ योगाभ्यास के छोड़कर मुक्ति-पदवीपर पहुँचा इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी ने श्यामसुन्दर को ध्यान

में दण्डवत् किया और परीक्षित से बोले हे राजन् देखो त्रिभुवनपति ने सब वेदोंका सार अमृतरूपी ज्ञान व भक्ति निकालकर ग्यारहवें स्कन्ध में उद्धवको पिलाय दिया जिस तरह देवता व दैत्यों ने समुद्र मथन करके चौदह रत्न निकाले थे उसी तरह वेदव्यासजी ने सब वेद व शास्त्र देखकर उसका सार श्रीमद्भागवत बनाया है॥

तीसवां अध्याय।

सब यदुवंशियों का आपसमें लड़कर नाश होना व श्रीकृष्णजी के पांव में जरा नाम केवटको बाण मारना॥

राजा परीक्षितने इतनी कथा सुनकर विनय की हे मुनिनाथ श्यामसुन्दरको शाप छुड़ाने की सामर्थ्य थी फिर किसवास्ते उन्होंने यदुवंशियों पर दया नहीं की शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित वसुदेवनन्दन परब्रह्म परमेश्वर के अवतार को जो संसारी मायासे रहित थे यदुवंशियोंका नाश करना था पर आपने उनकी पालना की थी इसलिये अपने हाथ मारना उचित न जानकर ब्राह्मण से शाप दिलवा दिया जब उद्धव बदरी केदार की ओर चले गये तब श्रीकृष्णजी ने ऐसा बिचारा कि द्वारकापुरीमें शाप नहीं व्यापैगा इस कारण यदुवंशियों को प्रभासक्षेत्र में चलनेवास्ते कहा सो त्रिभुवनपति की आज्ञानुसार सिवाय राजा उग्रसेन व वसुदेवजी के सब यदुवंशी हाथी व घोड़े व रथोंपर चढ़कर प्रभासक्षेत्र में पहुँचे व स्नान व दान करने उपरांत उस दिन तीर्थव्रत रखकर वहां टिक रहे दूसरे दिन परमेश्वर की इच्छानुसार सब यदुवंशी मदिरा पान करके मतवाले होगये व समुद्र किनारे बैठकर अपनी अपनी बड़ाई करने लगे व इसी बात पर स्नान करती समय पहिले पानी के छींटों से लड़ने लगे फिर आपस में बाण व तलवार व गदा आदिक अनेक शस्त्र चलनेलगे जिसतरह अधर्म करनेवाले वेद व शास्त्र का वचन झूंठा जानकर अपने मनमाना पाप करते हैं उसी तरह ब्राह्मण के शापसे यदुवंशीलोग श्याम व बलराम का समझाना न मानकर जब बलभद्रजी से लड़नेवास्ते दौड़े तब दोनों भाई अलग बैठकर कौतुक उनका देखने लगे जब लड़ते लड़ते शस्त्र सब

किसी के टूटकर हाथी घोड़े मारे गये तब उसी पतली को जो मूशल के चूरसे समुद्र किनारे जमी थी उखाड़कर एक दूसरेको मारनेलगा सो दुर्वासा ऋषीश्वर के शाप से वह पतली मारती समय तलवाररूपी घाव होकर सब यदुवंशी मरने लगे जैसे कुलवंती स्त्री दूसरे पुरुष को देखकर छिपजाती है वैसे क्रोध उत्पन्न होने से सब यदुवंशियों का सतोगुण व ज्ञान शरीर से जाता रहा जिस तरह बांसका वन आगि लगने से जलजाता है उसी तरह दुर्बुद्धि उत्पन्न होनेसे बाप बेटा व भाई भाई आपसमें लड़कर छप्पन करोड़ यदुवंशी नाश होगये जब सिवाय श्याम व बलराम के और कोई जीता नहीं बचा तब श्यामसुन्दर ने बलभद्रजी से कहा अब भार पृथ्वी का उतर गया इसलिये हम व तुम दोनों भाइयों को भी वैकुण्ठमें जाना चाहिये यह सुनतेही बलभद्रजीने सब वस्त्र अपना उतारि डाला व कोपीन बांधने उपरान्त सिंधुके तीर बैठकर साथ योगाभ्यास के अन्तर्धान होगये तब श्यामसुन्दर चतुर्भुजी स्वरूप धारण करके शङ्ख व चक्र व गदा व पद्म समेत समुद्र किनारे नीचे बृक्ष पीपल के जाबैठे जिस समय त्रिभुवनपति बृक्ष से उठँगे हुये दाहिना पैर अपने बांयें घुटने पर रखकर वैकुण्ठ जाने की इच्छा रखते थे उसी समय वसुदेवनन्दन की इच्छानुसार जरा नाम केवट जो बालि वानर का अवतार था धनुष बाण लेकर वहां आन पहुँचा व उसने पैर मुरलीमनोहर का दूरसे चमकता हुआ देखकर हरिण के धोखे से बाण मारा तो वही तीर जिसमें मछली के पेट से निकले हुये लोहे का फल बना था आनकर ऊपर चरण त्रिभुवनपति के लगा जब वह केवट अपना सौजा उठानेवास्ते निकट आया तब श्यामसुन्दरके पांव में घाव देखकर पीला होगया व डरके मारे कांपता हुआ हाथ जोड़कर बोला हे दीनानाथ मेरे बराबर दूसरा कोई अपराधी संसार में न होगा जिसने लक्ष्मीपति को तीर मारकर दुःख दिया इस पाप करने से मेरा उद्धार किसीतरह नहीं होसक्ता इसलिये तुम मुझे अपने हाथसे मारडालो जिसमें मेरे दण्ड पावनेका हाल सुनकर कोई दूसरा सन्त व महात्मा का अपराध न करै व हे महाप्रभु जब तुम्हारी मायाको ब्रह्मादिक देवता नहीं

जानसके तब मुझ अधर्मी व अज्ञानी को क्या सामर्थ्य है जो तुम्हारी महिमा को पहुँचने सकूं जब वह केवट बहुत विलाप करके ऊपर चरण मुरलीमनोहर के लोटने लगा तब श्यामसुन्दर ने हँसकर कहा तू कुछ उदास मत हो मेरी इच्छानुसार तुझसे अनजान में यह अपराध हुआ है जिसमें ब्राह्मणका शाप झूंठा न हो तू धैर्य रख तेरे वास्ते वैकुण्ठसे विमान आता है यह वचन मुरलीमनोहरके मुख से निकलतेही एक विमान जड़ाऊ वहां आन पहुँचा सो त्रिभुवनपति की आज्ञानुसार वह केवट दिव्य रूप होने उपरांत विमानपर बैठकर वैकुण्ठमें चला गया इतनी कथा सुना कर शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित देखो जो कोई ऐसे दीनदयालु परमेश्वर की शरण छोड़कर दूसरे का भरोसा रखता है उसे बड़ा मूर्ख समझना चाहिये उस केवटके जाने उपरांत दारुक नाम सारथीने ढूंढ़ते हुये वहां पहुँचकर जैसे मुरलीमनोहर को दण्डवत् किया वैसे त्रिभुवनपति की इच्छानुसार वह रथ घोड़ों समेत उड़कर आकाश में चला गया व श्रीकृष्णजी ने दारुक सारथी से कहा तुम द्वारका में जाकर वसुदेवजी आदिक से यदुवंशियों का हाल कहके उन्हें समझा देना कि अब द्वारकापुरी समुद्र में डूब जावैगी इसलिये सब लोग अपनी अपनी वस्तु समेत अर्जुन के साथ हस्तिनापुर चलेजावैं व हमारी ओर से अर्जुन को कहि दीजियो कि मेरे वैकुण्ठ जाने का कुछ शोच न मानकर सब स्त्री व बूढ़े व लड़कोंको अपने संग लेजावैं व हमने जो ज्ञान उसको गीता में समझाया है वही बात सच जानकर मेरे चरणों का ध्यान करता रहै व हे दारुक मेरा भजन व स्मरण करने व अपना धर्म रखने से तेरी भी गति होजावैगी यह वचन सुनतेही दारुक सारथी उनसे विदा होकर रोता व पीटता द्वारकाकी ओर चला॥

इकतीसवां अध्याय।

श्यामसुन्दरका वैकुण्ठधामको जाना व वसुदेव आदिकका उनके शोच में मरना॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित जब देवताओं ने उस केवटको विमान पर चढ़े हुये वैकुण्ठकी ओर जाते देखा तब ब्रह्मा व इन्द्र व कुबेर व वरुण

व गन्धर्व व विद्याधर व चारण व किन्नर आदिक सब देवता अप्सराओं को साथ लेकर अपने अपने विमानों पर गाते व बजाते व फूल वर्षाते हुये जहां पर श्यामसुन्दर बैठे थे वहां आकाश में आनकर इस इच्छा से इकट्ठे हुये कि अब द्वारकानाथ वैकुण्ठ में आते हैं चलकर मोहनीमूर्तिकी छवि देख लेवैं नहीं तो फिर उस अद्भुत रूप का दर्शन कहां मिलैगा सो हमलोग भी उनको अपने स्थान पर ले जाकर दो चार दिन उनकी सेवा करैंगे ऐसा विचारकर वे लोग मुरलीमनोहर के चढ़ने वास्ते अपने अपने लोक से दिव्य विमान ले आये थे जब श्यामसुन्दर ने देवताओं को आकाश में देखा तब अपने शरीर में परमात्मा का ध्यान लगाकर आंखें बन्द करलीं व उसी शरीर से बिजुली के समान चमककर इसतरह वैकुंठ को चलेगये कि ब्रह्मादिक देवताओं को भी अच्छी तरह उनका स्वरूप दिखलाई नहीं दिया इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित वैकुण्ठनाथकी महिमा व भेदको पहुँचना बहुत कठिन है पर सब कोई अपनी सामर्थ्य भर उनका गुण गाते हैं देखो जो आदिपुरुष भगवान् कैसे कैसे वीरोंको मारकर गुरुका मरा हुआ बेटा यमपुरी से लेआये थे वही त्रिभुवनपति मनुष्यतनु धरने के कारण जरा नाम केवटके बाण मारने से वैकुण्ठको चले गये जब श्रीकृष्णजीका वंश जगत् में नहीं रहा तब संसार में जन्म पाकर कोई जीता न बचैगा इतनी कथा सुनाकर सूतजी ने शौनकादिक ऋषीश्वरोंसे कहा जब दारुक सारथी ने द्वारका में पहुँचकर हाल मरने सब यदुवंशी व जाने श्याम व बलरामका वैकुण्ठधाममें वसुदेव व उग्रसेन आदिक से कहा तब सब स्त्री व पुरुष छोटे बड़े जो वहां पर थे रोते रोते व्याकुल होकर प्रभासक्षेत्रको दौड़े जब उन्होंने रणभूमिमें पहुँच कर समुद्र किनारे सब यदुवंशियों की लोथें पड़ी हुई देखीं व श्याम व बलरामका दर्शन नहीं पाया तब वसुदेव व देवकी व राजा उग्रसेन हाय मारकर उसी जगह मर गये व रुक्मिणी व सत्यभामा आदिक आठों पटरानी मुरलीमनोहर व रेवती बलरामजी की स्त्री चिता बनाकर जल मरीं व प्रद्युम्न आदिक सब वीरोंकी स्त्रियां अपने अपने पतियों के साथ

सती होगई जब उस समय अर्जुनने भी वहां पहुँचकर यह दशा देखी व दारुकके मुखसे श्यामसुन्दरका उपदेश सुना तब उसने ऐसा शोच किया जिसका वर्णन नहीं होसक्ता पर श्यामसुन्दरने जो ज्ञान अर्जुनको गीता में कहा था वह समझकर अपने मनको धैर्य दिया व सब किसीने अपने अपने घरवालों की लोथ जलाकर शास्त्रानुसार क्रिया व कर्म किया व जिनके कुलमें कोई नहीं बचाथा उनका अर्जुनने दाह क्रिया जब त्रिरात्री वहां पर होचुकी तब अर्जुन वज्रनाभ अनिरुद्ध के बेटा व स्त्री व बूढ़े व बालकोंको जो बचगये थे अपने साथ लेकर हस्तिनापुरको चला उस समय सिवाय स्थान रहने श्रीकृष्णजीके और सब द्वारका समुद्रमें डूबगई अबतक वहां कभी कभी मन्दिर श्यामसुन्दरका बिजुली की तरह चमकता हुआ दिखलाई पड़ताहै जब अर्जुनने हास्तिनापुर पहुँचकर यह सब समाचार कहा तब युधिष्ठिरआदिक पांचों भाइयोंने राजगद्दी हस्तिनापुरकी परीक्षितको व राज्य इन्द्रप्रस्थ व मथुराका वज्रनाभको जो श्रीकृष्णजीके कुलमें बचा था देदिया व आप पांचों भाई विरक्त होकर उत्तर दिशामें चले गये व हिमालयमें गलकर मुक्तपदवीपर पहुँचे इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजीने कहा हे राजन् जिसदिन श्रीकृष्णजी वैकुण्ठ को पधारे उसी दिन सत्य व धर्म संसारसे उठकर उनके साथ चला गया पर जो कोई इस स्कन्धको मन लगाकर पढ़ै व सुनैगा वह अनेक जन्मके पापोंसे छूटकर मुक्ति पावैगा॥

बारहवां स्कन्ध।

कलियुगवासी मनुष्यों व राजाओंका हाल कहना व तक्षक सांपका राजा परीक्षितको काटना व मार्कण्डेय ऋषीश्वरकी कथा ॥

पहिला अध्याय।

शुकदेवजीको कलियुगवासी राजाओंका हाल परीक्षितसे वर्णन करना ॥

राजा परीक्षितने इतनी कथा सुनकर विनय की हे मुनिनाथ आपने कहा जिस दिन श्रीकृष्णजी वैकुण्ठ को गये उसीदिन सत्य व धर्म संसारसे उठगया क्या उनके पीछे कोई ऐसा धर्मात्मा राजा नहीं हुआ जो धर्मको स्थिर रखता अब यह बतलाइये कि फिर किसके वंशमें राज-गद्दी रही थी शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित श्यामसुन्दरके रहनेतक द्वापर युग था उनके पीछे कलियुग में जो राजा हुये उन्होंने सचाई व धर्म छोड़ दिया व थोड़ी आयुर्बल रहने से कुछ शुभ कर्म भी नहीं करसक्के थे जब श्रीकृष्णजी महाराज वैकुण्ठ धामको गये तब पांडवों के वंशमें तुम चक्रवर्ती राजा हुये व तुम्हारे उपरान्त वज्रनाभ व जनमेजय चक्रवर्ती राजा होंगे व जरासन्धका बेटा जो सहदेव था उसके वंशमें पुरुजित् नाम राजा होगा उसे चाणक मंत्री मारकर प्रदेवत् अपने पुत्रको राज्य देगा उसके वंशमें तीनसौ अड़तीस वर्षतक राजगद्दी रहेगी फिर शिशुनाग नाम राजा होगा उसके कुलमें काकौरन व क्षेमधर्मा आदिक उत्पन्न होकर तीनसौ साठ वर्ष राज्य करेंगे फिर महानन्दी राजाके बिन्द नाम बेटा शूद्रीसे उत्पन्न होकर बरजोरी सब क्षत्रियोंका धर्म नष्ट करैगा व उसके डरसे सब कुलीन क्षत्री भागकर पंजाबमें जा बसेंगे व पर्वत के रहनेवाले क्षत्री शूद्रधर्म रक्खेंगे व राजा बिन्दके आठ बेटे राज्य करेंगे व उन आठों को चन्द्रगुप्तनाम दास मारकर आप राजगद्दी पर बैठजायगा व उसके

वंशमें वारीचारी व देवहूती आदिक उत्पन्न होकर हजार वर्ष तक वह राजा रहैंगे फिर कण्व नाम मंत्री देवहूती अपने राजा को स्त्री के विषय में फँसे रहने से मारकर आप राज्य करैगा उसी कुल में वसुदेव व वहुमित्र व नारायण नाम आदिक उत्पन्न होकर उनके वंशमें तीनसौ पैंतालीस वर्षतक राज्य रहैगा फिर कनल नाम शूद्र नारायण नाम अपने राजाको मारकर आप राजगद्दी पर बैठजायगा उसके वंशमें कृष्ण व पूर्णमास आदिक उत्पन्न होकर तीस पीढ़ी साढ़ेआठसौ वर्षतक राज्य करैंगे फिर उभरती शहरके रहनेवाले सात अहीर राजा होकर उन्हें मारने उपरांत कावोंका राज्य होगा व उनके पीछे चौदह पीढ़ी तक मुसल्मान राजा होकर वादशाह कहलावेंगे व एक हजार निन्नानवे वर्ष उनका राज्य रहैगा व मुसल्मानों को जीतकर दशपीढ़ी गोरण्ड राज्य करैंगे उनके पीछे ग्यारहपीढ़ी निन्नानवे वर्षतक मौनका राज्य होगा इतने लोग कलियुग में नामी राजा होकर फिर अहीर व शूद्र व म्लेच्छ राजा होंगे व कलियुगवासी राजा अपना कर्म व धर्म छोड़कर स्त्री व बालक व गौका वध करैंगे व दूसरे का धन व स्त्री व पृथ्वी वर्जोरी छीनकर काम व क्रोध व लोभ अधिक रक्खेंगे उनकी दशा देखने से प्रजालोग अपने कर्म व धर्म से न रहकर वहुत पाप करैंगे ॥

दूसरा अध्याय।

शुकदेवजीको कलियुगवासियोंका लक्षण कहना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित कलियुग में प्रतिदिन संसारी मनुष्य दया व सचाई छोड़देने से सामर्थ्यहीन होजावैंगे और आयुर्वल थोड़ी होने में कुछ शुभ कर्म उनसे नहीं वनपड़ेगा व राजालोग प्रजाको दुःख देकर चारों भाग अन्नका लेलेवेंगे व वर्षा थोड़ी होकर अन्न कम उत्पन्न होगा व महँगा पड़ने से सब मनुष्य खाने विना दुःख पाकर अपने अपने वर्ण व आश्रमका धर्म छोड़ देवैंगे व कलियुग में आयुर्वल मनुष्य की एकसौ वीस वर्ष की लिखी है पर अधर्म करने से पूरी आयुर्दाय न भोग कर उसके भीतर मरजावैंगे व कलियुग के अन्त में वहुत पाप करने के

कारण बीस वाईस वर्ष से अधिक कोई नहीं जीवेगा व ऐसा चक्रवर्ती व प्रतापी राजा भी कोई नहीं रहैगा जिसकी आज्ञा सातों द्वीप के राजा पालन करैं जिनकेपास थोड़ासा भी राज्य व देश होगा वे अपने को वड़ा प्रतापी समझैंगे व थोड़ी आयुर्दाय होनेपरभी पृथ्वी व धन लेनेवास्ते आपस में झगड़ा करेंगे व अपना धर्म व न्याय छोड़कर जो मनुष्य उनको द्रव्य देगा उसका पक्ष करैंगे व पाप व पुण्य का विचार न रक्खैंगे व चोरी व कुकर्म करने व झूंठ वोलने में अवस्था अपनी विता कर दमड़ी की कौड़ी वास्ते मित्रसे शत्रु होजावेंगे व गायोंका दूध वकरी के समान थोड़ा होकर ब्राह्मणों में कोई ऐसा लक्षण नहीं रहैगा जिसे देखकर मनुष्य पहिंचानसकै कि यह ब्राह्मण है पूछने से उनकी जाति मालूम होगी व धनपात्रकी सेवा सब लोग करैंगे व उत्तम मध्यम वर्ण का कुछ विचार नहीं रहैगा व व्यापार में छल अधिक होगा व स्त्री पुरुष का चित्त मिलने से ऊँच नीच जाति आपस में भोग विलास करैंगे व ब्राह्मणलोग अपना धर्म व कर्म छोड़कर जनेऊ पहिरने से ब्राह्मण कहलावैंगे व ब्रह्मचारी व वानप्रस्थ जटा शिरपर वढ़ाकर आचार व विचार अपने आश्रम का छोड़ देवैंगे व कङ्गाल उत्तम वर्ण से धनपात्र मध्यम वर्णको अच्छा समझैंगे व मूर्ख मनुष्य झूंठी वात वनानेवाला सच्चा व ज्ञानी कहलावेगा व तीनों वर्ण के मनुष्य जप व तप व सन्ध्या व तर्पण करना छोड़कर नहाने उपरांत भोजन करलेवैंगे व केवल स्नान करना वड़ा आचार समझकर वह वात करैंगे जिसमें वीच संसार के यश होव अपनी सुन्दरताई वास्ते शिरपर वालरखकर परलोक का शोच न करैंगे व चोर व डाकू वहुत उत्पन्न होकर सवको दुःख देवैंगे व राजालोग चोर व डाकूसे मेलकर प्रजाका धन चुरवालेवैंगे व दशवर्ष की कन्या वालक जनैंगी और कुलीन स्त्रियां दूसरे पुरुषपर चाहना रक्खैंगी व अपना कुटुम्ब पालनेवाले को सबलोग अच्छा जानकर केवल अपने पेटभरने से सब छोटे वड़े प्रसन्न रहैंगे व वहुत लोग अन्न व वस्त्रका दुःख उठावैंगे व वृक्ष छोटे होकर औषधों में गुण नहीं रहैगा व शूद्रके समान चारों वर्णका धर्म

होकर राजालोग थोड़ी सी सामर्थ्य रखनेपर सब पृथ्वी लेनेवास्ते इच्छा रक्खैंगे व गृहस्थलोग माता व पिताको छोड़कर ससुर व साले व स्त्रीकी आज्ञा में रहैंगे व निकटके तीर्थोंपर विश्वास न रखकर दूरके तीर्थों में जावैंगे पर तीर्थ नहाने व दर्शन करने से जो फल मिलते हैं उसपर उनको निश्चय न होगा व होम व यज्ञ आदिक संसार में कम होकर गृहस्थलोग दो चार ब्राह्मण खिलादेने का बड़ा धर्म समझैंगे व सबकोई धर्म व दया छोड़कर ऐसे सूम होजावैंगे कि उनसे अतिथिको भी भोजन व वस्त्र नहीं दियाजायगा व संन्यासीलोग अपना कर्म व धर्म छोड़कर गेरुआ वस्त्र पहिरने से दण्डी मालूम होंगे इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित जब अन्त कलियुग में इसी तरह घोर पाप होगा तब नारायण जी धर्म की रक्षा करनेवास्ते सम्भलदेश में गौड़ ब्राह्मण के घर कलङ्की अवतार लेवैंगे व नीले घोड़े पर चढ़कर हजारों राजा व अधर्मी व पापियों को खड्गसे मारडालैंगे जब उनके दर्शन मिलनेसे बचे हुये मनुष्यों को ज्ञान प्राप्त होजावैगा तब वह लोग पाप करना छोड़कर अपने धर्म से चलैंगे उसके आठसौ वर्ष उपरांत सतयुग होकर सब छोटे बड़े अपना धर्म करैंगे हे राजन् इसीतरह ब्राह्मण व क्षत्री व वैश्य व शूद्र चारों वर्णका वंश बराबर चलाआता है सतयुगके आदि में राजा देवापि चन्द्रवंशी जो बदरिकाश्रममें व राजा मरु सूर्यवंशी जो मन्दराचल पहाड़पर बैठेहुये तप कररहे हैं सूर्यवंशी कुलको उत्पन्न करैंगे व सतयुगके प्रवेश करने से कलियुगका धर्म जाता रहैगा देखो इतने बड़े बड़े राजा पृथ्वीपर होकर मिट्टी में मिलगये व सिवाय भलाई व बुराई के कुछ उनके साथ नहीं गया और यह शरीर मरने उपरांत कुछ काम न आनकर पड़ा रहने से इसको कौवे व कुत्ते खाजाते हैं व कीड़े पड़ने व दुर्गन्ध आवने से कोई उसके पास खड़ा नहीं होता व जलादेने से राख होजाता है जो लोग नाश होनेवाले शरीर को पुष्ट करनेवास्ते जीवहिंसा करते हैं उनको बड़ा मूर्ख समझना चाहिये जब ऐसे प्रतापी राजा नाश होकर केवल यश व अयश उनका रहगया तब वह शरीर लाखों यत्न करनेपर भी किसीतरह स्थिर नहीं रहता

इसलिये मनुष्यको उचितहै कि अपने शरीर व संसारकी प्रीति व अहंकार छोड़कर हरिचरणों में ध्यान लगावे व परमेश्वरका भजन व स्मरण करके भवसागर पार उतरजावे मनुष्यतनु पानेका यही फल है नहीं तो पीछे से बहुत पछतावेगा व हे परीक्षित तुम बड़े भाग्यवान् हौ जो अन्त समय परमेश्वर की कथा व लीला सुनने में तुम्हारा मन लगा है ॥

तीसरा अध्याय।

शुकदेवजीको राजा परीक्षितसे पिछले राजोंका हाल कहना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जो नृपति दूसरे का राज्य व धन लेने वास्ते इच्छा रखकर पिता व पुत्र व भाई भाई में लड़ मरते हैं ऐसे राजों पर पृथ्वी हँसकर कहती है देखो यह सब मृत्युका कलेवा होकर मेरे मालिक हुआ चाहते हैं व अपने बाप व दादा का मरना देखने पर भी संसारी तृष्णा नहीं छोड़ते व जितना परिश्रम दूसरे की पृथ्वी व द्रव्य व स्त्री लेनेवास्ते उठाकर अपने व बिरानेको मार डालते हैं उतना उपाय काम व क्रोध व मोह व लोभ बलवान् शत्रुओंको जीतने व अपना परलोक बनावनेवास्ते नहीं करते जब राजा पृथु व पुरूरवा व गाधि व नहुष व सहस्रार्जुन व मान्धाता व सगर व खट्वांग व धुन्धमार व रघु व तृणबिन्दु व ययाति व सर्याति व कुबलयाश्व व बलि व नृग व हिरण्यकशिपु व हिरण्याक्ष व वृत्रासुर व रावण व भौमासुर आदिक ऐसे ऐसे प्रतापी व शूरवीर राजा सब गुण व योगाभ्यास जाननेवाले मेरे ऊपर रहकर मुझे अपना कहते कहते मरगये पर मैं किसीके साथ न जाकर अब केवल कहानी उन लोगों की रहगई तब कलियुगवासी छोटे छोटे राजा जो कुछ धर्म व पराक्रम नहीं रखते वृथा मुझे अपना जानकर आपसमें लड़ते मरते हैं इसलिये मनुष्यतनु पाकर यह चाहिये कि मन अपना संसार से विरक्त रखकर परमेश्वरकी लीला व कथा सुने व हरिचरणोंमें प्रीति उत्पन्न करे हे राजन् तुमको कुछ संसारी चाहना रहगई हो तो इन राजाओंकी गति समझकर विरक्त होने उपरान्त हरिचरणों में ध्यान लगावो व संसारी व्यवहार झूंठा होकर सिवाय फल हरिभजन के

और कुछ साथ नहीं जाता इतनी कथा सुनकर राजा परीक्षितने विनय की हे मुनिनाथ चारोंयुगों के कौन कौन धर्म हैं व बीच कलियुगके कौन उपाय करने से हरिचरणों में प्रीति उत्पन्न होती है शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित सतयुगमें धर्मके चारों पैर सत्य व दया व तप व दान बने थे व सब छोटे बड़े अपने अपने धर्म व कर्म से रहते थे व सबलोग आपस में प्रीति रखकर कोई किसीसे शत्रुता नहीं रखता था व त्रेतामें ब्राह्मण व क्षत्री व वैश्य व शूद्र अपना अपना धर्म रखकर यज्ञ आदिक करते थे परन्तु दूसरे की स्त्री गमन करने से धर्म का एक पैर टूटजाताहै व द्वापर में संसारी मनुष्य अपने यश मिलनेवास्ते यज्ञ व पूजा करते हैं परन्तु दूसरेका धन लेने व परस्त्रीगमन करने से धर्म के दो चरण टूटजाते हैं व कलियुग में तीन अंश पाप व एक भाग पुण्य होने से धर्मका एक चरण रहकर तीन पैर टूटजाते हैं व कलियुगवासी मनुष्य केवल थोड़ासा दान देना व कुछ सचाई रखकर अन्त कलियुगमें वह भी छोड़ देवैंगे इसलिये बीच कलि-युगके संसारी मनुष्य लोभी व कुरूप व अभागी अधिक उत्पन्न होकर एक दो रुपये वास्ते मनुष्य का प्राण मारडालैंगे व कुलीन स्त्रियां अपने पतिकी प्रीति छोड़कर दूसरे पुरुषसे प्रेम रखैंगी व जबतक पति धनपात्र रहैगा तबतक स्त्री उसकी आज्ञा में रहकर विपत्ति पड़ने से दूसरे पुरुष के पास चली जावेगी व सब लोग अच्छे भोजन व सुन्दरी स्त्री की चाहना रखकर संन्यासी आदिक गृहस्थ होजावेंगे व विपत्ति पड़ने से सेवक अपने स्वामी को छोड़कर दूसरी जगह चाकरी करेगा व सब कोई अपने स्वार्थ की प्रीति रखकर बुढ़ौती समय राजालोग अपने दासों को छोड़ादेवैंगे व बहुत मनुष्य द्रव्य व संतानकी अधिक चाहना रखकर भूत व प्रेतों को पूजैंगे व धन लेनेवास्ते बेटा मा व बापको दुःख देगा माता व पिता भी खाने के लोभसे अपना बेटा बेचडालैंगे व शूद्रलोग वैरागी व संन्यासी आदिकका वेष बनाकर दान लेने उपरान्त ब्राह्मणों को मंत्र उपदेश करैंगे व आप कथा वांचनेवास्ते ऊंचे सिंहासनपर बैठकर ब्राह्मणोंको नीचे बैठालैंगे व इसीतरह अनेक पाप संसारमें होकर हरिभजन व स्मरण कम

होजायगा व चारों युगका फल प्रतिदिन मनुष्यके शरीर में प्रकट होता है जिस समय मन जप व ज्ञान व धर्मकी ओर लगै उस समय धर्म सतयुग का समझना चाहिये व जब लोभ व तृष्णा मनमें अधिक उत्पन्न हो तब धर्म त्रेतायुगका जानो जिस समय अभिमान व कामदेव व प्रेम मन में प्रकटहो उससमय धर्म द्वापरका समझो व जब झूंठ व जीवहिंसा व क्रोध मन में अधिक उत्पन्न हो वह धर्म कलियुगका जानना उचित है राजा परीक्षितने कलियुगका लक्षण सुनते ही बहुत डरकर पूंछा हे मुनिनाथ जब कलियुग का ऐसा धर्म है तो संसारी जीव किस तरह उद्धार होंगे शुकदेवजीने कहा हे राजन् कलियुगमें यज्ञ व तप व योगाभ्यास आदिक कुछ नहीं बनपड़ता परन्तु एक बात बहुत अच्छी है दूसरे युगोंमें संसारी मनुष्य सच्चे व धर्मात्मा व दयावान् होने पर भी बहुत दिनोंतक यज्ञ व तप व पूजा नारायणजीकी व तीर्थ स्नान करने से मुक्त होते थे सो कलियुग में केवल परमेश्वर का नाम जपने व उनकी लीला व कथा सुनने व गंगा नहाने से भवसागर पार उतरजाते हैं जिस तरह अजामिल ब्राह्मण महा पापी मरते समय नारायण नाम अपने बेटेको पुकारने से वैकुण्ठ में चला गया था उसी तरह कलियुगवासी परमेश्वर का नाम लेतेही सब पापों से छूटकर पवित्र होजाते हैं दूसरे युगमें अधर्म कम होकर जब किसी से कुछ पाप होजाता था तब वह प्रायश्चित्त उसका करडालते थे कलियुग में बहुत अधर्म होनेसे कोई प्रायश्चित्त नहीं करसक्ता इसलिये दीनदयालु परमेश्वर केवल भगवान् का नाम लेने से सब पाप छुड़ाकर सहजमें मुक्त करदेते हैं तिसपरभी कलियुगवासी अज्ञानी मनुष्य दिनरात संसारी सुखमें लपटे रहकर एक क्षण नारायणजी को याद नहीं करते व जिह्वासे वृथा बककर परमेश्वरका नाम नहीं लेते कलियुग में केवल भगवान् का नाम लेने व पूजा व ध्यान व भजन करने व उनकी कथा व लीला सुनने व भक्ति रखनेसे संसारी मनुष्योंका सब दुःख व पाप व अज्ञान छूटजाता है और जब उनके हृदयमें नारायणजीकी कृपासे ज्ञानरूपी दीपक प्रकाशित होत है तब वह मायारूपी अँधियारेसे बाहर निकलकर मुक्ति पावते हैं व मनुष

सतयुग में तप व त्रेता में यज्ञ व द्वापर में पूजा व कलियुग में भजन व स्मरण करने से कृतार्थ होता है सो हे राजन् तुम भी श्रीकृष्णजी सांवली सूरत का ध्यान हृदय में लगावो तो चतुर्भुजी स्वरूप होजावोगे व तुमने कलियुगवासियोंके उद्धार होनेका धर्म जो पूछा था सो संसाररूपी समुद्रसे पार उतरने वास्ते परमेश्वरकी लीला व कथा सुनना व पढ़ना सहज समझना चाहिये इससे उत्तम कोई दूसरा उपाय नहीं है और यह श्रीमद्भागवत पुराण जो ब्रह्माजी से नारदमुनिने सुनकर वेदव्यासजी को बतलाया व मैंने उनसे पढ़कर तुमको सुनाया जब यही कथा सूतजी नैमिषार मिश्रिषमें शौनक आदिक अट्ठासीहजार ऋषीश्वरों को सुनावेंगे तब यह अमृतरूपी कथा कलियुग में प्रकट होकर संसारी मनुष्य कोभव-सागर पार उतारैगी ॥

चौथा अध्याय ।

शुकदेवजीको अग्नि व जल व वायु आदिकका हाल राजा परीक्षितसे वर्णन करना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित ब्रह्माके एक दिन में चौदह इन्द्र राज्य भोगते हैं सन्ध्यासमय दिन प्रलय होने से तीनों लोकों में सब जीवोंका नाश होजाता है व उनके दिनके प्रमाण रातभी होकर रैनिसमय ब्रह्मा सो रहते हैं और जब ब्रह्माकी आयुर्बल पूरी होकर महाप्रलय होता है तब सैकड़ों वर्ष पहिले से अवर्षण होकर काल पड़ता है सो अन्न न उत्पन्न होने से सब जीव मारे भूखके मरजाते हैं व पाताल में शेषनागजी विष उगलकर व आकाश में सूर्यदेवता अपना तेज प्रकट करके चौदहों लोकों को जला देते हैं फिर मेघपति के पानी बरसाने से पृथ्वी पर सिवाय जलके और कुछ दिखलाई नहीं देता व जल व अग्नि व वायु आकाश में व आकाश शब्द में व यह पांच तत्त्व अहङ्कार में व अहङ्कार महत्तत्त्व में व महत्तत्त्व माया में व माया ईश्वरके रूपमें समाजाती है केवल नारायणजी अविनाशीपुरुष जिनका आदि व अन्त कोई नहीं जानता और उनके पास मन व शब्द व सतोगुण व रजोगुण व तमोगुण आदिक पहुँचने नहीं सके वर्तमान रहकर जाते हैं सो अजब महाप्रभु

के हैं व जागना व सोना व सुषुप्ति व संसारी उत्पत्ति माया के गुणोंसे समझनी चाहिये व आदिपुरुष भगवान् को ज्ञानरूपी आंखके देखनेसे मायारूपी संसार झूंठा मालूम होता है जिस तरह कपड़े में सूतके तार होते हैं उसीतरह सब जीवोंमें परमेश्वरकी शक्ति व्यापक रहती है जिसने सूर्यरूपी ज्ञान समझा उसके हृदय में काम व क्रोध व मोह व लोभका अँधियारा नहीं रहता और वह देवता व मनुष्य व दैत्य व पशु आदिक चौरासीलाख योनिको बराबर समझकर किसीके साथ शत्रुता व मित्रता नहीं रखता जिस तरह बत्ती जलने से दीपकका तेल कम होकर तेल चुकजाने उपरांत दिया बुझजाता है व जलना तेलका कुछ मालूम नहीं होता उसीतरह कालपुरुष प्रतिदिन तेज व बल व आयुर्दाय क्षीण करते करते मृत्यु पहुँचने से सब जीवों को मारडालता है व अज्ञानी मनुष्य मरना अपना याद नहीं रखता इसलिये जो कोई कालरूपी मुँह से छूटना चाहै वह हरिभजन व स्मरण करके भवसागर पार उतरजावै ॥

पांचवां अध्याय।

शुकदेवजीका राजा परीक्षित से परमेश्वरकी स्तुति वर्णन करना ॥

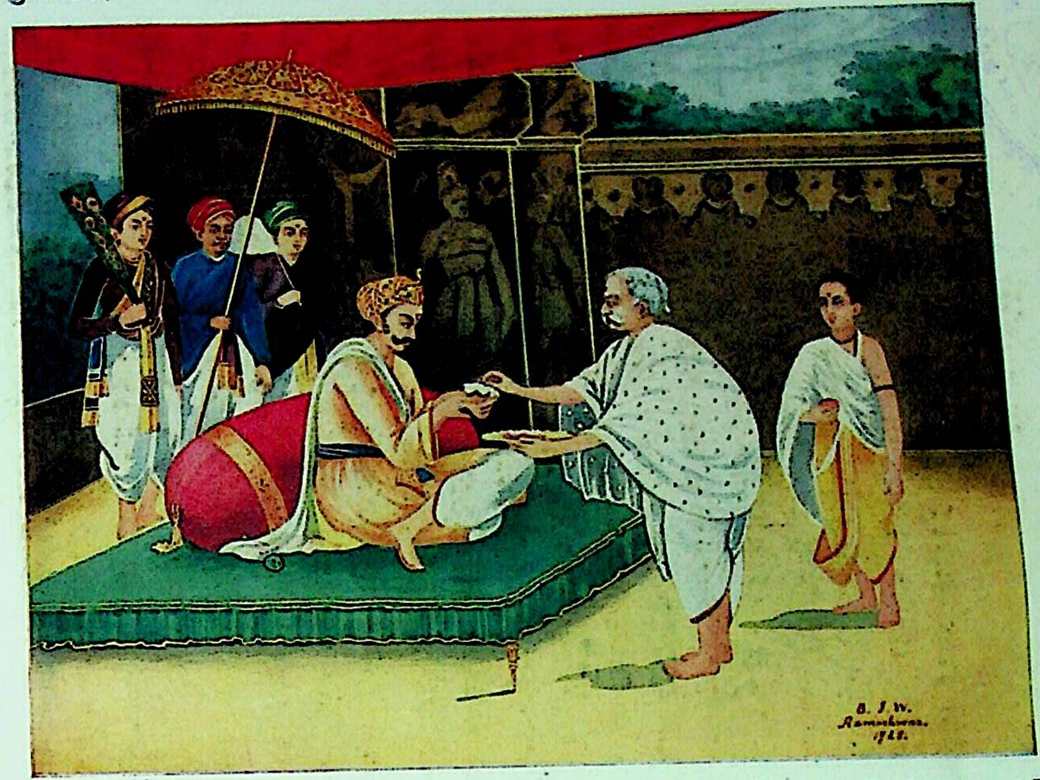
शुकदेवजीने कहा हे राजन् श्रीमद्भागवत में सब लीला व चरित्र परमेश्वरका लिखाहै व भागवतपुराणको उन परब्रह्मका स्वरूप समझना चाहिये जिनके नाभि से कमलका फूल निकलनेसे ब्रह्माने उत्पन्न होकर महादेवको उत्पन्न किया था सो तुम तक्षक सांपके काटने व अपने मरनेका कुछ डर न रखकर सब जगह परमात्मा पुरुषको वर्तमान देखो व आदि व अन्त व मध्यमें केवल परब्रह्म अविनाशीपुरुष को जो उत्पन्न होने व मरने से रहित हैं सत्य जानो व सब व्यवहार संसारका झूंठा समझो तब तुमको मालूम होगा कि कौन किसको काटता है अपने अज्ञान व परमेश्वरकी मायासे संसारी लोग उत्पन्न होना व मरना मनुष्यका मालूम करते हैं सच पूंछो तो आत्मा सदा अमर रहकर कभी नहीं मरता और यह शरीर मायाके गुणोंसे बनता व बिगड़ता रहता है जिस तरह पानी भरे हुये बर्तन में छाया पड़ने से दूसरे सूर्य दिखलाई देते हैं व बर्तन

तोड़डालनेसे फिर वह छाया सूर्यमें मिलजाती है व बर्तनके तोड़नेसे सूर्य का नाश नहीं होता उसीतरह शरीर उत्पन्न होनेसे जन्म लेना व उसके नाश होने उपरांत मरना कहा जाताहै इसलिये परमात्माको सूर्यरूपी जानकर शरीर बर्तनके समान समझना चाहिये और यह शरीर पांच कर्मइन्द्री व पांच ज्ञानइन्द्री व पांच तत्त्व व मन बुद्धि सत्रह वस्तु मिलकर तैयार होताहै बुद्धि को रथरूपी व मन घोड़ा उस रथका जानना चाहिये व उस मनमें परब्रह्मका प्रकाश मिलने से शरीरको चलने व फिरने व खाने व पहिरने की सामर्थ्य होतीहै जब वह प्रकाश शरीर से निकलकर बिलग होजाता है तब शरीर मुर्दा होकर सिवाय गल व सड़जाने के कुछ काम नहीं आता व चौरासी लाख योनिमें नारायणकी शक्ति होकर बाहरभी वही परमेश्वर कालरूप से रहते हैं सो तुम अपना शरीर मायाका बनाया हुआ समझकर परमात्माको तनुसे अलग जानो ब्राह्मणके शापानुसार तक्षकसांपके काटनेसे आज शरीर तुम्हारा नाश होजायगा व जीवात्मा जो शरीरसे बिलग रहता है वह नहीं मरेगा और अब तुम्हारे मरनेका समय निकट आ पहुँचा इसलिये बीच ध्यान चरण व स्मरण नाम परमेश्वर के मन लगाकर इस बातका विश्वास जानो कि अनेक जन्मके पाप नारायण नाम लेनेसे छूटजाते हैं व भागवतपुराण सुनने से अब तुम्हारी मुक्ति होने में सन्देह नहीं रहा जब तुम श्यामसुन्दरका ध्यान जिनकी कथा हमने सुनाई है करोगे तब उनकी ज्योति में लीन होने से इस शरीर छूटने का ज्ञान याद नहीं रहैगा ऐसा मूल मन्त्र जिसमें सब गुण परमेश्वरके लिखे हैं हमने तुमको सुनादिया इससे उत्तम कौन वस्तु चाहते हो इस अमृतरूपी कथा के सच्चे मनसे पढ़ने व सुननेवाले अवश्य मुक्ति पदवीपर पहुँचते हैं॥

छठवां अध्याय।

राजा परीक्षितको तक्षक सांपका काटना॥

सूतजी ने शौनकादिक ऋषीश्वरों से कहा जब श्रीमद्भागवत सात दिन में सुनकर राजा परीक्षितका अज्ञान जाता रहा व परमात्माको शरीर



N. K. P. L. तक्षक काटने से महाराज परीक्षित् का भस्म होना। [स्कं० १२, अ० ६]

से अलग व सब जगह वर्तमान देखने में प्रीति शरीर की छूटगई तब उस ने विधिपूर्वक शुकदेवजी की पूजा करने व चरणपर गिरने उपरांत हाथ जोड़कर विनय की हे मुनिनाथ आपने मेरा संदेह व शोच छुड़ाकर मुझे उद्धार किया महात्मा व परोपकारी लोग सदा से अज्ञानी मनुष्यको जो बीच अँधियारे कुवां माया मोह स्त्री व लड़कों के पड़ा रहता है ज्ञानरूपी रस्सी थँभाकर निकालने उपरांत भवसागर पार उतार देते हैं और यह भागवतपुराण जिसके आदि व मध्य व अन्त में श्रीकृष्णजीका माहात्म्य लिखा है सुनकर मेरा मन हरिचरणों में लीन होगया इसलिये अब मुझे तक्षक सांप के काटने व अपने मरनेका कुछ डर नहीं रहा आज सातवें दिन तक्षकके काटने से मैं यह शरीर त्याग करूंगा आप आज्ञा दीजिये तो बोलना छोड़कर श्यामसुन्दर के स्वरूप का ध्यान लगाऊं शुकदेवजी ने कहा इस समय तुमको हरिचरणों का ध्यान अवश्य करना चाहिये जब यह वचन सुनकर परीक्षित आंखें बन्द करके श्रीकृष्णजी का ध्यान करने लगा व शुकदेवजी व सब ऋषीश्वर वहां से उठकर अपने अपने स्थान पर चले गये तब तक्षक सांप पहर दिन रहे अपने स्थानसे ब्राह्मण का रूप धरकर परीक्षित को काटने चला उसी समय कश्यपजी की आज्ञा से धन्वन्तरि वैद्य तुमड़ी आदिक सब औषध झोली में लेकर परीक्षित को अच्छा करनेवास्ते घर से निकले जब राह में ब्राह्मणरूपी तक्षक ने धन्वन्तरिको देखकर पूछा तुम कहां जातेहौ तब उसने उत्तर दिया आज हस्तिनापुर में तक्षक सर्प राजा परीक्षित को काटैगा इसलिये मैं उसका विष उतारने जाता हूं यह बात सुनकर मायारूपी ब्राह्मण ने कहा तुम तक्षक सांप के काटे हुये को अच्छा करसक्ते हो धन्वन्तरि बोले तक्षक क्या माल है किसी तरह का सांप काटे तो मैं अच्छा कर देसक्ता हूं यह वचन सुनकर उसने कहा तक्षक सांप मैं हूं हम यहां एक वृक्ष को काटते हैं तुम फिर उसे हरा करदेव तो मुझे विश्वास हो कि परीक्षित का विष उतार सकोगे धन्वन्तरि ने कहा बहुत अच्छा जैसे तक्षक ने उसी जगह बरगद के वृक्ष में काटा वैसे वह वृक्ष एक लोहार समेत जो उस पर चढ़ा हुआ

लकड़ी काटता था तक्षक के विष से जलकर राख होगया धन्वन्तरि ब्राह्मण ने आचमन करने उपरांत संजीवनी मंत्र पढ़कर जैसे उस राख पर पानी का छीटा मारा वैसे राख से डाली व पत्ता निकलकर दो घड़ी में फिर वह वृक्ष ज्यों का त्यों तैयार होगया व लोहार लकड़ी काटनेवालाभी जी उठा यह हाल देखतेही तक्षक सांप घबड़ाकर धन्वन्तरिसे बोला हे द्विजराज तुम किस वस्तुके वास्ते चाहना रखकर परीक्षित का विष उतारने जाते हो धन्वन्तरिने उत्तर दिया हम ऐसे धर्मात्मा राजा को जिससे बहुत लोगों का भला होता है जिलाकर मुँहमांगा धन पावेंगे तक्षक बोला महाराज तुम केवल विष उतारने का मंत्र जानकर और भी कुछ ज्ञान रखते हो या नहीं धन्वन्तरिने कहा मैं भूत भविष्यत् वर्तमान तीनों काल की बात जान सक्काहूं यह बात सुनकर तक्षक ने पूंछा हे द्विजराज पहिले तुम विचारो कि राजा परीक्षित की आयुर्बल पूरी होचुकी या कुछ और भी है धन्वन्तरिने अपनी विद्या से विचारकर कहा परीक्षित की आयुर्बल पूरी होकर अब थोड़ा विलम्ब उसके मरने में रहगया है यह बात सुनकर तक्षक बोला महाराज जब ऐसा है तब तुम्हारा मंत्र उसको गुण न करैगा कदाचित् कुछ उसकी आयुर्बल और होती तो तुम अवश्य उसे जिला देते और तुम्हें द्रव्यकी चाहना है तो मुझसे लेकर अपने घर चले जाव धन्वन्तरि ने कहा बहुत अच्छा फिर तक्षक ने एक वृक्ष के नीचे उसको द्रव्य बतला दिया सो धन्वन्तरि वहां खोदकर जितना उससे उठ सका उतना द्रव्य लेकर अपने घर चला गया व तक्षक हस्तिनापुर में जाकर कीड़ारूप से एक फूल में बैठरहा जब ब्राह्मणों ने वह फूल उठाकर राजा परीक्षित को दिया तब कीड़ारूपी तक्षकने फूलसे निकलकर जैसे परीक्षित को काट लिया वैसे शरीर राजाका जलकर राख होगया व चैतन्य आत्मा दिव्य विमानपर बैठकर वैकुण्ठ में पहुँचा व तक्षक सांप वहां से उड़कर इन्द्रलोक में चला गया यह हाल देखकर जितने लोग उस जगह बैठे थे रोनेलगे व सब स्त्री व पुरुष नगरवालोंने यह समाचार सुनकर बड़ा शोच किया व जनमेजय ने परीक्षित अपने पिता को दाह देकर शास्त्रानुसार

क्रिया व कर्म उसका किया व मंत्रियों की इच्छानुसार राजसिंहासन पर बैठा व जो लोहार वृक्षके साथ जलकर फिर जी उठा था उसने हस्तिनापुर में आनकर सब हाल वहां का जो जो बात तक्षक सांप व धन्वन्तरि ब्राह्मण से हुई थी ज्यों की त्यों सब लोगों से कही यह समाचार परीक्षित के मन्त्रियों ने सुनकर तक्षक से बहुत बुरा माना जब जनमेजय को बारह वर्ष राजगद्दी पर बैठे होचुके तब उसने भी मंत्रियों से हाल मरने अपने पिता व भेंट होने तक्षक व धन्वन्तरिका सुनकर बहुत क्रोध करके कहा देखो तक्षक ने शृङ्गी ऋषि के शाप देने से मेरे पिता को काटा तो उसका दोष नहीं था पर उसने धन्वन्तरि वैद्यको राह में द्रव्य देकर हस्तिनापुर आने से वर्जा इसलिये मैं उसे अपना शत्रु समझकर इसतरह सब सांपों को अपने पिताके बदले जला डालूंगा जिसमें उनका वीर्य संसार में न रहै यह बात विचारतेही जनमेजय ने ब्राह्मण व ऋषीश्वरों को बुलाकर उनसे विनय की आप लोग कोई ऐसा यज्ञ कराइये जिसमें सब सांप जलकर मरजावैं ब्राह्मणोंने कहा बहुत अच्छा सर्पसत्र यज्ञ करने में सब सांप आपसे आनकर जलजाते हैं वही करो जब जनमेजय ने सारस्वत ब्राह्मणको आचार्य बनाकर वह यज्ञ करना आरम्भ किया तब मंत्रके प्रभाव से हजारों सांप अपनी जगह छोड़कर दौड़े हुये वहां चले आये व अपनी इच्छासे स्रुवामें बैठकर आहुति देते समय अग्निकुण्डमें गिरने व जलनेलगे जब इसीतरह करोड़ों सर्प उस यज्ञ में जलकर मरगये व तक्षक अपने प्राण के डरसे इन्द्र के शरण में जाछिपा इसलिये यज्ञशालामें नहीं पहुँचा तब जनमेजय ने ब्राह्मणों से पूंछा महाराज सब सांप जलकर मरे जाते हैं पर तक्षक मेरा शत्रु अभीतक क्यों नहीं आया ब्राह्मणों ने उत्तर दिया तक्षक सांप इन्द्रकी रक्षा करने से अबतक यहां आनकर नहीं जला यह बात सुनकर जनमेजयने यज्ञ करानेवाले ब्राह्मणों से कहा महाराज हमारे शत्रुकी रक्षा करने से इन्द्रभी मेरा वैरी ठहरा सो तुम्हारा मंत्र ऐसी सामर्थ्य नहीं रखता जिसमें तक्षक इन्द्रसमेत यहां आनकर जल जावें ऋषीश्वरों ने उत्तर दिया परमेश्वर की दया से मंत्रमें सब सामर्थ्य है अब

हमलोग तुम्हारे कहने से वैसाही मंत्र पढ़ैंगे जैसे ब्राह्मणों ने वही मंत्र पढ़कर अग्निकुण्ड में आहुति डाली वैसे सिंहासन राजा इन्द्रका जिसके नीचे वह सर्प बैठा था तक्षक समेत उड़ा यह हाल देखकर आस्तीक नाती वासुकिनागने बृहस्पति पुरोहित से कहा इस समय आप कुछ सहायता इन्द्र व तक्षक की नहीं करते तो वह दोनों अग्निकुण्ड में जलकर मर जावैंगे तब बृहस्पति गुरुने आस्तीक को साथ लिये हुये यज्ञशाला में जाकर अंगिरसगोत्री ब्राह्मण यज्ञ करानेवालों से जो उनके कुलमें थे कहा तुम लोग आहुति देने में थोड़ी देर लगाकर यही पूर्णाहुति जनमेजय से दक्षिणा मांगलेव जिसमें इन्द्र व तक्षक का प्राण बच जावै जब मन्त्रके प्रभाव से इन्द्रका सिंहासन तक्षक समेत उड़ता हुआ यज्ञशाला में आन पहुँचा तब बृहस्पति गुरु व आस्तीकने बहुत स्तुति करने उपरान्त जनमेजयसे कहा हे राजन् परीक्षितको ब्राह्मणके शापसे मरना लिखा था इसमें तक्षक का कुछ दोष नहीं है व तक्षक सब सर्पोंका राजा होकर अमृत पीने से वह मरने नहीं सक्ता और तुम जो समझते हो कि तक्षक के काटने से हमारा बाप मरा सो यह बात ज्ञानके बाहर होकर मरना व जीना दुःख व सुख हानि व लाभ परमेश्वर की इच्छा व अपने प्रारब्ध से होता है देखो जिसतरह संसारीलोग आगि से जलने व पानी से डूबने व शस्त्रसे मारने व सांप के काटने व बाघ के खाने व स्थानके गिरने व विषके देने व अनेक रोगादिक से जैसा जिसके प्रारब्ध में लिखा रहता है मरजाते हैं पर एक बहाना होकर मृत्युका नाम कोई नहीं लेता उसी तरह तुम्हारा पिताभी अपने प्रारब्धानुसार तक्षक सांपके काटनेसे मरकर मुक्तिपदवी पर पहुँचा व तुमने एक तक्षक के बदले करोड़ों सर्प विना अपराध जलाकर मार डाले ज्ञानी व धर्मात्माको ऐसा न चाहिये अब क्रोध अपना क्षमा करके यह यज्ञ मत करो व मरना परीक्षित का अपने प्रारब्ध से समझकर और सर्पों को न जलाओ व किसी के मारने से कोई नहीं मरता व उन परमेश्वर को दण्डवत् करनी चाहिये जिनकी माया से लोगों को यह अभिमान उत्पन्न होता है कि हमने अपने शत्रु को मारकर जीत लिया

नारायणजी केवल यह बात कहनेवास्ते बनाकर मारना व जिलाना सबका अपने आधीन रखते हैं दूसरे किसी को यह सामर्थ्य नहीं है जो उसमें दम मारसकै जब यह बात बृहस्पतिगुरु व आस्तीकनागसे सुनकर जनमेजयको ज्ञान उत्पन्न हुआ तब उसने ब्राह्मणों से कहा पूर्णाहुति अग्नि में मत डालो उस समय तक्षकने जनमेजयको ऐसा वरदान दिया कि जो लोग हमारा व तुम्हारा नाम स्मरण करेंगे उनको कोई सर्प न काटेगा जब जनमेजय ने ऋषीश्वरों व ब्राह्मणों को दक्षिणा देकर बिदा किया तब बृहस्पति गुरु जिनकी दया से इन्द्र व तक्षक का प्राण बचा था उनको अपने साथ लेकर चलेगये व इतनी कथा सुनाकर सूतजी ने श्यामसुन्दर को ध्यानमें दण्डवत् करके शौनकादिक ऋषीश्वरों से कहा हमने अमृत रूपी भागवत पुराण तुमलोगों को सुनादिया इसके प्रताप से सब पाप छूट कर तुम्हारी मुक्ति होजावैगी॥

सातवां अध्याय।

सूतजीका शौनकादिक ऋषीश्वरों से शुभाशुभ कर्मों का फल कहना॥

सूतजी ने शौनकादिक ऋषीश्वरों से कहा इन्द्रादिक देवताओं को परमेश्वरकी यह आज्ञाहै कि जो मनुष्य जैसा पुण्य व यज्ञ व तप आदिक करे उसको वैसा स्वर्ग देना चाहिये व पाप करनेवालों को धर्मराज उनके कर्मानुसार नरक में भेज देवें व जो लोग केवल परमेश्वर का भजन व स्मरण करते हैं उनको इन्द्रपुरी से ऊपर ब्रह्मलोक में जगह मिलती है व नारायणजी की निर्गुण पूजा व भजन करनेवाले वैकुण्ठ में जाकर महा प्रलय तक वहांका सुख भोगते हैं सो राजा परीक्षित भी भागवतपुराण सुनने से श्यामसुन्दर के प्रेम में लीन होकर वैकुण्ठको चला गया जितना यज्ञ व तप व भजन व स्मरण संसारीलोग करते हैं उसमें एक वास्ते चाहने किसी अर्थ व दूसरा बिना रखने इच्छा के होता है सो हमने दोनों तरहका हाल इस भागवत में तुमलोगों को सुना दिया अठारहों पुराण में श्रीमद्भागवत उत्तम है यह बात सुनकर शौनकादिक ऋषीश्वरों ने नाम अठारहों पुराणोंका पूंछा तब सूतजीने कहा ब्रह्मपुराण, पद्मपुराण, विष्णुपुराण,

शिवपुराण, लिंगपुराण, गरुड़पुराण, नारदपुराण, अग्निपुराण, स्कन्दपुराण, भविष्यपुराण, ब्रह्मवैवर्तपुराण, मार्कण्डेयपुराण, मत्स्यपुराण, कूर्मपुराण, वाराहपुराण, नृसिंहपुराण, ब्रह्माण्डपुराण, भागवतपुराण हैं इन सब पुराणों में परमेश्वर का गुण व चारित्र वर्णन किया है व किसी पुराण में सात्त्विकी व किसी में राजसी व किसी में तामसी धर्म लिखा है व श्रीमद्भागवत में केवल सात्त्विकी धर्म व भगवद्गुण वेदव्यासजीने वर्णन किये हैं सो हमने तुमको सुनाया अब और क्या सुना चाहते हो ॥

आठवां अध्याय।

मार्कण्डेय ऋषीश्वरकी उत्पत्तिको सूतजीका कहना ॥

शौनकादिक ऋषीश्वरों ने इतनी कथा सुनकर पूंछा हे सूतजी आपने परमेश्वरका गुण व चरित्र हमलोगोंको सुनाकर कृतार्थ किया सो तुम बहुत दिन चिरंजीव रहो और हमलोग अब यह सुना चाहते हैं कि हमारे कुल में मार्कण्डेय ऋषीश्वर ने परमेश्वरकी माया किसतरह देखकर वैकुण्ठनाथ का दर्शन पाया व व्यासजीने सब वेदोंको किसतरह अलग अलग वर्णन किया सूत पौराणिक ने कहा जब ब्रह्माने देखा कि कलियुगवासी मनुष्य थोड़ी आयुर्दाय होने से सब वेद पढ़ नहीं सकेंगे तब ब्रह्माके विनय करने से नारायणजी ने वेदव्यास का अवतार धारण करके वेदों का सार निकाल लिया व उसका नाम बिलग बिलग रखकर वह सब अपने चेलों को पढ़ाया व जो पुराण वेदों में से निकाला था उसका नाम मार्कण्डेयपुराण रक्खा यह सुनकर ऋषीश्वरों ने पूंछा पहिले यह बतलाइये कि मार्कण्डेयने इतनी बड़ी आयुर्बल किसतरह पाई थी सूतजीने कहा मृकण्डनाम एक ऋषीश्वर होकर उसके कोई पुत्र नहीं था जब उस ऋषीश्वरने सन्तान उत्पन्न होनेवास्ते देवताओंके नामपर बहुत तप व होम किया तब देवताओंने दर्शन देकर कहा हे ऋषीश्वर तेरे भाग्य में बेटा नहीं लिखा है पर तप व होम करनेके प्रतापसे तेरे एक पुत्र उत्पन्न होकर बारहवर्षकी अवस्था में मरजायगा यह सुनकर ऋषीश्वरने विनय की मैं सन्तान होनेकी इच्छा रखता हूं बारह वर्षका होकर मरजायगा तो

मैं सन्तोष करलूंगा जब देवताओं के आशीर्वाद से मृकण्डके पुत्र उत्पन्न हुआ तब ऋषीश्वरने मार्कण्डेय उसका नाम रखकर बड़ा हर्ष मनाया जब वह बालक बारह वर्षका हुआ तब उसके माता व पिता रोने लगे मार्कण्डेयने उनको रोते देखकर पूंछा तुमलोग किसवास्ते इतना विलाप करतेहो उन्होंने कहा अय बेटा अब तुम्हारे मरनेका दिन निकट आनपहुँचा यही समझकर हमलोग रो देते हैं यह सुनकर मार्कण्डेय बोले संसार में कोई ऐसा उपाय भी है जिसके करने से हम जीते रहैं उसके माता पिता ने कहा अय बेटा नारायणजीकी दयासे सब मनोरथ मनुष्यके पूर्ण होते हैं यह वचन सुनते ही मार्कण्डेय वनमें जाकर परमेश्वरका तप व ध्यान करनेलगा जब उसे छः मन्वन्तर तप करते बीत गये तब राजा इन्द्रने डर कर विचारा कि यह ब्राह्मण तप करके मेरा इन्द्रासन छीन लेगा ऐसा विचारतेही इन्द्रने कामदेव व वसन्तऋतु व गन्धर्व व अप्सराओंको मार्कण्डेय की तपस्या भंग करनेवास्ते भेजा सो उन्होंने हिमालय पहाड़से उत्तर ओर भद्रा नदी के किनारे जहां मार्कण्डेय शिलापर बैठा हुआ तप करता था पहुँचकर क्या देखा कि वहां घने घने वृक्षोंकी छाया होकर अनेक रंगके सुगन्धित फूल व फल लगे हैं व कोकिला व मोर आदिक अनेक पक्षी वहां बैठे हुये अपनी सोहावनी बोली बोल रहे हैं यह शोभा देख कर कामदेव आदिक मोहित होगये व जब प्रातःकाल मार्कण्डेय अग्निहोत्र करके वहां पर बैठे उसी समय अप्सरा उनके सामने नाचकर भाव बतलाने लगीं व गन्धर्वोंने अनेक बाजा बजाकर छः राग व छत्तीस रागिनी गाये व कामदेवने कोकिलारूप होकर कामरूपी बाण चलाया व वसन्तऋतुकी महिमा से बहुत उत्तम बाग वहां तैयार होकर शीतल मन्द सुगन्ध हवा बहने लगी जब नाचती समय एक अप्सरा का कपड़ा हवासे उड़गया तब वह नंगे बदन गेंद उछालती हुई मार्कण्डेयके निकट चलीआई पर मार्कण्डेयका चित्त कुछ चलायमान नहीं हुआ जब अनेक उपाय करने परभी कामदेव व अप्सरा आदिकका कुछ वश उन पर नहीं चला तब वह लोग शाप देनेके डरसे भागकर कांपते हुये इन्द्र

के पास फिर आये व बहुत लज्जित होकर कहा महाराज हमारा पराक्रम मार्कण्डेयपर कुछ नहीं चलता यह हाल सुनकर इन्द्रादिक देवताओं ने बहुत आश्चर्य माना व देवता लोग मार्कण्डेयके दर्शन वास्ते आप वहां जाकर उनकी स्तुति करने उपरांत चले आये जब इसी तरह कुछ दिन और मार्कण्डेयको तप करते बीते तब नारायणजी गरुड़पर बैठकर वहां गये व अपने चतुर्भुजी स्वरूपका दर्शन मार्कण्डेयको देकर कहा जो कुछ तुझे इच्छा हो सो वरदान मांग मार्कण्डेयने वैकुण्ठनाथ को देखते ही दण्डवत् की व परिक्रमा लेने व स्तुति करने उपरांत हाथ जोड़कर बोला हे दीनानाथ मैं अपनी आयुर्बल अधिक चाहताहूं त्रिभुवनपतिने कहा तू एक कल्पांत तक जीता रहैगा ऐसा कहकर लक्ष्मीपति वैकुण्ठ को चले गये॥

नवां अध्याय।

नारायणजीका मार्कण्डेय ऋषीश्वरको महाप्रलयका कौतुक दिखलाना॥

सूतजीने शौनकादिक ऋषीश्वरों से कहा जब मार्कण्डेय ब्रह्माके एक दिन प्रमाण आयुर्बल पावने परभी उसी तरह तप व ध्यान करता रहा तब कुछ दिन उपरांत नारायणजीने मार्कण्डेयको फिर दर्शन देकर कहा अब तू क्या चाहता है मार्कण्डेय हाथ जोड़कर बोला हे महाप्रभु अब मुझे किसी वस्तुकी चाहना नहीं है पर तुम्हारी मायाका थोड़ासा कौतुक देखना चाहताहूं जिस मायासे आप सब जीवोंको उत्पन्न करके फिर नाश कर देते हैं वैकुण्ठनाथने कहा बहुत अच्छा आजके सातवें दिन हम तुझे अपनी माया दिखलावेंगे पर तुम चैतन्य रहकर मुझे भूल मत जाना भूलने से तुम्हारा पता नहीं लगेगा मार्कण्डेय ने विनय की हे त्रिभुवनपति मैं आपको कभी न भूलूंगा जब यह बात सुनकर नारायणजी वैकुण्ठ को चले गये तब मार्कण्डेयभी वहांसे अपने स्थानपर चला आया जब सातवें दिन मार्कण्डेयने नदी किनारे बैठकर तप करतेसमय महाप्रलयको देखना चाहा तब क्या दिखलाई दिया कि एक ओरसे बड़ी आंधी उठकर मारे धूरके अँधियारा छागया यह हाल देखकर मार्कण्डेयने मन में कहा हम ने आजतक ऐसी आंधी कभी नहीं देखी फिर चारों ओरसे पानी उमड़ा

हुआ आनकर जहां वह बैठा था वहां अथाह जल होगया व उस पानी में वह गोता खाने लगा व कभी गोता खाकर जल में डूबजाता व कभी पानीके वेगसे ऊपर निकल आता था व कभी घड़ियाल आदि जलचर उसको निगल जाते व कभी अपने मुखसे उगिल देते थे जब मार्कण्डेय की समझ में हजारों वर्षतक उसका यह हाल हुआ तब वह अपने मन में बहुत लज्जित होकर कहने लगा देखो मुझसे बड़ी चूक हुई जो ऐसा वरदान मांगकर इस दशाको पहुँचा अब परमेश्वरसे यह इच्छा रखता हूं कि नारायणजी दया करके मुझको इस पानीसे जीता बाहर निकालें मार्कण्डेयको भगवान्‌जीका ध्यान करते ही जब मायारूपी जल में एक टापू व बरगदका वृक्ष दिखलाई दिया तब उसने प्रसन्न होकर मनमें कहा हे परमेश्वर मुझे किसी तरह इस टापू तक पहुँचा दे तो बरगद की डाली पकड़कर अपना प्राण बचालेऊं जब मार्कण्डेय भगवान्‌की दयासे उस वृक्षके पास पहुँच गया तो उसने क्या देखा कि एक पत्ता बरगदका दोने के समान बना होकर उसमें एक बालक बारह तेरह दिनकी अवस्था का श्यामरंग चन्द्रमुख कमलनयन अति सुन्दर सोता हुआ अपने पैर का अँगूठा हाथ में पकड़े मुँहमें डाले चूसताहै जब मार्कण्डेय निकट जाकर उस बालककी छवि देखने लगे तब बालकरूपी भगवान्‌ने अपना श्वास खींचा तो मार्कण्डेय मच्छड़की तरह उनके नाकमें घुसगया और वहांपर पृथ्वी व आकाश व सूर्य व चन्द्रमा व सातों द्वीप व नवों खण्ड व दशों दिशा व आठों लोकपाल व तालाब व वृक्ष व नगर व ग्राम व समुद्र व पहाड़ व खानि चांदी व सोना व कुटी ऋषीश्वर व मुनीश्वर व अपना स्थान आदिक सब संसारी वस्तुओं को उस स्वरूपमें देखकर आश्चर्य माना जब श्वास छोड़ते समय नाक के बाहर निकल आया तब उसने फिर उस बालकको उसीतरह देखकर चाहा कि उसे गोदमें उठाकर प्यार करें ऐसा विचारकर मार्कण्डेयने जैसे उस बालक को उठाने चाहा वैसे बालकरूप भगवान् मायारूप पानी व वृक्षसमेत अन्तर्धान होगये व मार्कण्डेय अपने समझमें करोड़ों वर्षतक मायाका कौतुक देखकर जब चैतन्य होगया तब उसने

अपने को ज्यों का त्यों नदी किनारे बैठा पाया और बिचारा तो दो घड़ीसे अधिक विलम्ब नहीं हुआ था ॥

दशवां अध्याय।

महादेव व पार्वतीजीका मार्कण्डेयके पास आना ॥

सूतजीने शौनकादिक ऋषीश्वरों से कहा मार्कण्डेयने मायारूपी महाप्रलय का कौतुक देखकर ध्यानमें नारायणजीसे विनय की हे त्रिभुवनपति मुझसे बड़ा अपराध हुआ जो आपकी माया देखने वास्ते वरदान मांगा जहां तुम्हारी मायाको ब्रह्मादिक देवता न जानकर बड़े बड़े ऋषीश्वर व मुनि व ज्ञानी उस माया में फँसे रहते हैं वहां मेरी क्या सामर्थ्य है जो तुम्हारी मायाका भेद जान सकूं जिसतरह मच्छड़ पहाड़ उठावनेकी इच्छा रखकर वह काम नहीं करसक्ता उसीतरह मैं यह वरदान मांगकर लज्जित हुआ मुझे अपने शरणागत जानकर अपराध मेरा क्षमा कीजिये मार्कण्डेयजी ऐसा कहकर बीच ध्यान परमेश्वर के लीन होगये इतनी कथा सुनाकर सूतजी बोले हे ऋषीश्वर परमेश्वरकी महिमा जानने वास्ते सब छोटे बड़े अपने सामर्थ्यभर परिश्रम करते हैं पर उनके भेदको पहुँच नहीं सक्के जिसने भेद जानने वास्ते गोता मारा उसका आज तक पता नहीं लगा अब हम मार्कण्डेय ऋषीश्वरका एक हाल और कहते हैं सुनो एक दिन महादेव व पार्वती दोनों मनुष्य बैल पर चढ़े बहुतसे गणोंको अपने साथ लिये हुये चले जाते थे राहमें पार्वतीजीने मार्कण्डेयको इसतरह बीच ध्यान परमेश्वरके लीन बैठे देखा जिस तरह समुद्रका पानी गंभीर रहकर विना चलने हवाके नहीं हिलता तब पार्वतीने महादेवजीसे हाथ जोड़कर विनय की हे महाप्रभु इस ऋषीश्वर को तपस्या का कुछ फल दीजिये महादेवजी ने कहा इसे किसी वस्तु की चाहना नहीं है हम इसको क्या देवें सिवाय भक्ति व ध्यान हरिचरणों के यह मुझको भी कुछ माल नहीं समझता पर तेरे कहनेसे हम चलकर इसके साथ दो बातें करते हैं साधु व महात्माकी संगति करने में बड़ा सुख होता है जब महादेवजी पार्वती समेत मार्कण्डेयजी के पास गये तब

उनको परमेश्वर के ध्यान में ऐसा लीन देखा कि इनके जानेका हाल उसे कुछ मालूम नहीं हुआ इसलिये शिवजी ने उसके हृदयमें प्रवेश करके जिस चतुर्भुजी मूर्ति श्यामसुन्दर का ध्यान वह करता था उस स्वरूपको वहां से अन्तर्धान करके अपना प्रकाश उस जगह प्रकट किया जब मार्कण्डेय को अपने हृदय में चतुर्भुजी रूप दिखलाई न देकर एक पुरुष श्वेतवर्ण दश भुजा व तीन आंखवाला शेरकी खाल व मुण्डमाला पहिने त्रिशूल व डमरू लिये हुये ध्यान में देखपड़ा तब उसने घबराकर आंख खोलदी तो महादेवको उसी रूपसे पार्वती समेत बहुत गण साथ लिये हुये जैसे अपने सामने खड़े देखा वैसे उठ खड़ा हुआ व दण्डवत करने उपरांत परिक्रमा लेकर उनको बड़े आदरभावसे आसनपर बैठाला व विधिपूर्वक उनकी पूजन करके हाथ जोड़ कर विनय की हे दीनानाथ आप सब देवताओंके मालिक होकर सब गुणोंसे भरे हैं मैं ऐसी सामर्थ्य नहीं रखता जो तुम्हारी स्तुति करने सकूं जिस तरह आपने दयालु होकर मुझे अपना दर्शन दिया उसी तरह मेरी हजारों दण्डवत् लीजिये और अपने आनेका कारण बतलाइये यह बात सुनतेही भोलानाथने हँसकर कहा हे ऋषीश्वर जिस महा प्रलयमें चौदहों लोक नाश होकर कोई जीव नहीं रहता उस महा प्रलयको तुमने देखा इसलिये मैं तुम्हारे दर्शन करने आयाहूं जितना ब्राह्मण व हरिभक्त व साधु मुझे प्यारे हैं उतना इन्द्रादिक देवताओं से प्रीति नहीं रखता जिस तरह मुझे अपना भक्त प्यारा मालूम होताहै उसीतरह नारायणजी के सेवकों को भी जानताहूं ज्ञानी मनुष्यको हमारे व विष्णु भगवान्के बीचमें कुछ भेद समझना न चाहिये जितना तुम्हारे ऐसे हरिभक्तोंका दर्शन पाकर संसारी मनुष्य शुद्ध होजाते हैं उतना तीर्थस्नान करने व देवताओं के दर्शन से पवित्र नहीं होते तुमको जो कुछ इच्छा हो वह वरदान हमसे मांगलेव हमारा दर्शन निष्फल नहीं होता यह वचन सुनकर मार्कण्डेय ऋषीश्वरने महादेव व पार्वतीजीको साष्टांग दण्डवत् करके विनय की हे महाप्रभु आप साक्षात् ईश्वर होकर मुझ अज्ञानी को इतनी बड़ाई देते हैं जिसतरह कल्पवृक्ष के

नीचे जाकर मनुष्यका सब मनोरथ पूर्ण होजाताहै उसीतरह तुम्हारा दर्शन पानेसे कुछ इच्छा न रहकर केवल यही वरदान मांगताहूं जिसमें सदा बीच चरण वैकुण्ठनाथ व आपके मेरी भक्ति बनी रहै यह बात सुनकर शिवजी ने कहा तुम एक कल्पतक चिरंजीव रहकर कभी बूढ़े न होगे व तुमको सदा मेरी व नारायणजीकी भक्ति बनीरहैगी व अठारहों पुराणमें एक तुम्हारे नामसे प्रकट होगा यह वरदान देने उपरान्त शिवजी वहां से अन्तर्धान होकर कैलास पर्वतपर चले गये व सब हाल उत्पन्न होने व तपस्या करने व वरदान पावने मार्कण्डेय ऋषीश्वरका पार्वतीजीसे वर्णन किया इतनी कथा सुनाकर सूतजीने शौनकादिक ऋषीश्वरों से कहा तुमने मार्कण्डेय ऋषीश्वरका हाल जो पूंछा सो हमने सुनादिया॥

ग्यारहवां अध्याय।

शौनकादिक ऋषीश्वरोंका सूतजीसे शंख चक्र गदा व पद्म आदिक का हाल पूंछना॥

शौनकादिक ऋषीश्वरोंने इतनी कथा सुनकर पूंछा हे सूतजी परमेश्वर के पूजन करने की विधि वर्णन कीजिये और यह बतलाइये कि शंख व चक्र व गदा व पद्म व शस्त्र व वैजयन्ती माला व पीताम्बर जो आठों पहर नारायणजी धारण किये रहते हैं ये सब कौन वस्तु हैं सूतजीने कहा तुम लोग बड़ी गुप्त बात पूंछते हो इसलिये मैं वेदव्यास अपने गुरुको दण्डवत् करके कहता हूं सुनो यह ब्रह्माण्ड भगवान्का रूप है पृथ्वी पैर आकाश शिर आंखें सूर्य वायु नाक दशों दिशा कान लोकपाल भुजा चन्द्रमा मन यमराज दांत वृक्ष शरीर के रोयें मेघघटा शिर के बाल पहाड़ तनुकी हड्डी समुद्र पेट नदियां शरीरकी नसें होकर सब व्यवहार संसारका विराट् रूपमें समझना चाहिये जो मनुष्य उस रूपका ध्यान लगाकर सब जीवों में परमेश्वर की शक्ति बराबर देखता है व काम व क्रोध व मोह व लोभ आदिक के वश न होकर किसी से शत्रुता व मित्रता नहीं रखता व कौस्तुभमणि नारायणजी की ज्योति व वैजयन्ती माला माया व पीताम्बर चारों वेद व जनेऊ का जोड़ा ओंकार व कानों का कुण्डल सांख्य शास्त्र व योगशास्त्र व मुकुट ब्रह्मलोक व शेषनाग उनके बैठनेका सिंहासन

व पद्म सतोगुण व गदा पराक्रम व शंख जलतत्त्व व सुदर्शनचक्र अग्नि तत्त्व व खड्ग आकाशतत्त्व व शार्ङ्गधनुष कालरूप होकर परमेश्वर के तरकस में सब जीवों का कर्म भरा रहता है व वैकुण्ठ परमेश्वर का छत्र व गरुड़ वेदरूप व लक्ष्मीजी शक्ति व नन्द व सुनन्दादिक पार्षद उनकी विभूति हैं इसलिये नारायणजी अपने भक्तोंपर प्रसन्न होकर अपना भूषण व वस्त्र पहिने व शंख लिये हुये दर्शन देते हैं व उनका चरित्र कोई नहीं जानसक्ता हमने गुरु की कृपा से यह सब कथा तुमको सुनाई जो मनुष्य प्रातःकाल उठकर नारायणजी का ध्यान शंख व चक्र व गदा आदिक समेत करता है तुरन्त उसपर प्रसन्न होकर उसे कृतार्थ कर देते हैं इतनी कथा सुनकर ऋषीश्वरों ने पूंछा बारहों महीने में सूर्य भगवान् नये नये रूप पृथक् पृथक् नाम से जो प्रकाश करते हैं उनका क्या कारण है सूत जी बोले सूर्य देवता एकस्वरूप भगवान्जी का है सो क्षण व घड़ी व पहर के पहिचान करनेका ज्ञान उनके प्रकाश से मालूम होता है चैत के महीने में सूर्य धाता नाम से प्रकाश करते हैं व कृतस्थली अप्सरा उनके आगे नाचकर तुम्बुरु गन्धर्व गाना सुनावता है व हेती राक्षस उनका रथ पीछे ढकेलता है व वासुकि नाग उस रथ में सर्पों की रस्सी बांधने व कृत यक्ष उसकी मरम्मत करने वास्ते बने रहते हैं व पुलस्त्य नाम ऋषीश्वर उनके साथ रहकर स्तुति करते जाते हैं व वैशाख में सूर्य का नाम अर्यमा होकर पुलह नाम ऋषीश्वर उरजा नाम यक्ष प्रहेती राक्षस व पुंजकस्थली अप्सरा व नारद गन्धर्व व कुक्षनीर नाग व ज्येष्ठमें सूर्य का नाम मित्र हो कर अत्रि ऋषीश्वर व पौरुषेय राक्षस व तक्षक नाग व मेनका अप्सरा व हाहा गन्धर्व व रथस्व यक्ष व आषाढ़में वरुण नाम सूर्य का होकर वशिष्ठ ऋषीश्वर रम्भा अप्सरा हूहू गन्धर्व सहजन्य यक्ष सर्वज्ञ नाग चित्रसेन राक्षस व सावन में इन्द्र नाम सूर्यका होकर विश्वावसु गन्धर्व परमलोचा अप्सरा श्रोता यक्ष वर्य नाम राक्षस भादोंमें विवस्वान् नाम सूर्यका होकर उग्रसेन गन्धर्व व व्याघ्र नाम राक्षस असारन यक्ष भृगु ऋषीश्वर निम्लोचा अ-प्सरा शंखपाल नाग व कुवार में त्वष्टा नाम सूर्य का होकर जमदग्नि

ऋषीश्वर कामल नाग तिलोत्तमा अप्सरा धृतराष्ट्र गन्धर्व बृहद्धती राक्षस सत्यजित यक्ष व कार्त्तिक में विष्णुनाम सूर्य का होकर अश्वतर नाग व रम्भा अप्सरा सुवर्चा गन्धर्व सत्यजित यक्ष व विश्वामित्र ऋषीश्वर घृतापी राक्षस व अगहनमें अंशुमान नाम सूर्य का होकर कश्यप ऋषीश्वर तार्क्ष यक्ष ऋतुसेन गन्धर्व उर्वशी अप्सरा विन्दाछत्र राक्षस महाशंख नाग व पूस में भग नाम सूर्यका होकर सुवर्च नाम राक्षस अरिष्टनेमि गन्धर्व परण यक्ष ऋषीश्वर व करकोटक नाम नाग पूर्वचित्ती अप्सरा व माघ में पुरुष नाम सूर्य का होकर धनञ्जय नाग व वात नाम राक्षस सुखेन गन्धर्व सुरुचि यक्ष घृताची अप्सरा गौतम ऋषीश्वर व फागुन में पर्जन्य नाम सूर्यका होकर क्रतुनाम यक्ष सुवर्चा राक्षस व विश्व गन्धर्व व ऐरावत नाम सेनजिता अप्सरा सूर्य के साथ रहकर सब महीनोंमें अपना अपना काम करते हैं इतनी कथा सुनाकर सूतजीने कहा हे ऋषीश्वरो जो मनुष्य प्रातःकाल व सन्ध्यासमय सूर्य भगवान्का स्मरण करके इन सब ऋषीश्वर आदिक का नाम लेवे वह अनेक जन्म के पापों से छूटकर परम गतिको पावता है॥

बारहवां अध्याय।

सूतजीका श्रीमद्भागवतकी सम्पूर्ण कथा कहना॥

सूतजी ने शौनकादिक ऋषीश्वरों से कहा जो कथा श्रीमद्भागवत अमृतरूपी हमने तुमको सुनाई उसके आदि से अन्त तक सब लीला व चरित्र परमेश्वरका लिखाहै पहिले व्यासजी व नारदका संवाद फिर राजा परीक्षितकी कथा जिसतरह उनको शृंगीऋषिने शापदिया था व हाल आवने शुकदेवजीका राजा परीक्षितके पास व फिर बातचीत होना नारद व ब्रह्माजी से व कथा अवतारों की व भेंट होना विदुर व उद्धव से व मुख्य ज्ञान सुनाना मैत्रेयजीका विदुर को व वर्णन करना उत्पत्ति ब्रह्माण्ड की व परमेश्वर का वाराह अवतार धरकर मारना हिरण्याक्ष का व कपिलदेव अवतार लेकर सांख्ययोग ज्ञान सिखलावना देवहूती अपनी माताको व हाल तनु त्याग करने सतीजी व यज्ञ विध्वंस होने दक्षप्रजापति का व

कथा राजा ध्रुव व पृथु व प्राचीनबर्हिष व पुरंजन व प्रियव्रतकी व हाल सातों द्वीप व सातों समुद्र व नवों खण्ड व मारना वृत्रासुर दैत्य व लेने नरसिंह अवतार व रक्षा करनी प्रह्लाद भक्त व कथा गजेन्द्रमोक्ष व लेना कच्छप अवतार वास्ते निकालने चौदहों रत्न व मथने समुद्र व राजा बलि व वामन अवतार की व हाल राजा पुरूरवा व उर्वशी अप्सरा व सूर्य-वंशी व चन्द्रवंशी व परशुराम व रामचन्द्र अवतार राजा दुष्यन्त व रानी शकुन्तला व राजा ययाति व देवयानी व यदु जिनके वंशमें श्यामसुन्दर त्रिभुवनपति ने वसुदेवजी के घर अवतार धारण किया व जाना श्यामसुन्दर का गोकुल में व अनेक लीला करके सुख देना नन्द व यशोदा आदिक सब ब्रजवासियों का व फिर मथुरा में आनकर मारना राजा कंसको व युद्ध करना जरासन्ध आदिक से व बसावना द्वारकापुरी व हाल विवाहने रुक्मिणी आदिक आठों पटरानी व मारने भौमासुर व ले आवना सोलह हजार एकसौ कन्या उनके यहां से व विवाह करना अपना उनके साथ व मारना बड़े बड़े दैत्य व अधर्मी राजाओं को व कौरव व पांडवों से महाभारत कराके भार उतारना पृथ्वी का व नाश करना छप्पन करोड़ यदुवंशियों का दुर्वासा ऋषीश्वर के शापसे व चलेजाना वैकुण्ठ में हे ऋषीश्वरो हमने सम्पूर्ण कथा श्री मद्भागवत व हाल मार्कण्डेय ऋषीश्वर व कथा सूर्य भगवान् की तुमलोगों को सुनादी संसारी मनुष्यों को उचित है कि जिह्वा से आठोंपहर परमेश्वर का नाम लेकर कानों से उनकी कथा व लीला सुनें व नारायणजी के गुण व महिमा की चर्चा आपसमें रखकर थोड़ा या बहुत जहांतक बनिपड़े हरिचरणों में ध्यान लगावें व सब जीवोंपर दया रखकर अपनी सामर्थ्यभर मनसा वाचा कर्मणा से उपकार करते रहें मनुष्यतनु पावने का यही फल समझना चाहिये जैसा व्यासजी ने भागवतपुराण में परमे-श्वरका निर्मल यश लिखा है वैसा दूसरे पुराणों में वर्णन नहीं किया जिन शुकदेवजी महाराज की दया से हमने अमृतरूपी कथा तुमको सुनाई उन्हें बारम्बार दण्डवत करताहूं जितना फल ब्राह्मणको चारों वेद पढ़ने से प्राप्त

होता है उतना फल एक श्रीमद्भागवत पढ़ने व सुनने में जानना चाहिये क्षत्रियको इसके पढ़ने व सुननेसे विजय व वैश्यको व्यापारमें लाभ होकर मरने उपरांत मुक्तिपदवी मिलती है व शूद्रके सब पाप छूटजाते हैं॥

तेरहवां अध्याय।

अठारहों पुराणोंका हाल॥

सूतजी ने शौनकादिक ऋषीश्वरों से कहा जिन भगवान् के चरणों का ध्यान ब्रह्मा व महादेव व इन्द्र व उनचास मरुद्गण व कुबेर आदिक देवता व ऋषीश्वर व योगी व मुनि अपने हृदय में रखकर दिनरात उनका स्मरण व भजन करते हैं व उनके आदि व अन्तको किसी ने नहीं पाया उनको बारम्बार नमस्कार करता हूं जिन्होंने वास्ते रक्षा करने देवता व निकालने अमृतादिक चौदहों रत्नके कच्छपरूप धारण किया था उनको मेरी हजारों दण्डवत् पहुँचें हे ऋषीश्वरो अठारहों पुराणमें जितने जितने श्लोक हैं उनके हाल सुनो ब्रह्मपुराण दशहजार व पद्मपुराण पचपन हजार व विष्णुपुराण तीसहजार व शिवपुराण चौबीसहजार व श्रीमद्भागवतपुराण अठारहहजार व नारदपुराण पचीसहजार व मार्कण्डेयपुराण नव हजार व अग्निपुराण पन्द्रह हजार चारसौ व भविष्यपुराण चौदहहजार पांच सौ व ब्रह्मवैवर्तपुराण अठारहहजार व लिंगपुराण ग्यारहहजार व वाराहपुराण चौबीसहजार व स्कन्दपुराण इक्यासीहजार एकसौ व वामन पुराण दशहजार व कूर्मपुराण सत्रहहजार व मत्स्यपुराण चौदहहजार व गरुड़पुराण उन्नीसहजार व ब्रह्माण्डपुराण बारहहजार श्लोक हैं व श्रीमद्भागवत का सार चार श्लोक नारायणजी ने ब्रह्माजी से कहा व ब्रह्माजी ने उसका हाल नारदसे बतलाया व नारद ने व्यासजी को उपदेश किया व वेदव्यास ने अठारहहजार श्लोक में यह सब हाल विस्तारपूर्वक लिख कर भागवतपुराण उसका नाम रक्खा इस पुराणके आदि व मध्य व अन्त में सब नारायणजीका चरित्र वर्णन किया है जो लोग इस पुराणको भादों सुदी पूर्णमासी के दिन सुनहुले सिंहासनपर धरकर वेद व पुराण जानने वाले ब्राह्मणों को दान करते हैं उनको परमपद मिलता है श्रीमद्भागवत

महापुराण सत्रहों पुराणों से उत्तम होकर चारों वेदों का सार इसमें लिखा है जिसतरह नदियों में गंगा व देवताओं में नारायण तपस्या करनेवालों में महादेवजी बड़े हैं उसीतरह सब पुराणों में भागवतपुराण उत्तम है इस पुराण के पढ़ने व सुनने से हमारी व तुम्हारी दोनों की गति होजावेगी जिनके नाम लेने व दण्डवत् करने से सब पाप व दुःख छूटजाते हैं उन परमेश्वर व वेदव्यास व शुकदेव महाराजको दण्डवत् करताहूं जिस तरह देवतालोग स्वर्ग में रहकर अमृत पीने से नहीं मरते उसी तरह संसार में जो लोग अमृतरूपी भागवतपुराणको सच्चे मनसे पढ़ व सुनकर उसपर विश्वास रक्खेंगे उनको संसारमें रोगादिक का दुःख न होगा व भूत प्रेत आदिक का भय छूटकर अशुभ ग्रहों का फल नहीं व्यापैगा ॥

दो० चूहामलसुत विमलमति गज्जनलाल कुमार। गो ब्राह्मण हरिचरणरत माखनलालउदार ॥
सो० विरच्यो माखनलाल श्रीमद्भाषा भागवत। सुनत कटै भवजाल अन्तसमय हरिपुर बसै ॥
जे जन परमसुजान भूली लेव सुधारि मम। बालबुद्धि अज्ञान वेद शास्त्र जानौं नहीं ॥

इति श्रीक्षत्रियवंशावतंस काशीवासी श्रीकृष्णदास मक्खनलालकृत श्रीमद्भागवतभाषा सुखसागरे द्वादशस्कन्धः समाप्तः ॥

शुभम्भूयात् ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

पहिले उल्था इस पोथी का संवत् १६?? में श्रीकृष्णदास मक्खनलालने काशीपुरी में बनाकर छपवाया था परन्तु उस उल्था में यामिनीभाषा अधिक लिखगई थी इस कारण साधु व महात्मालोग उसे अच्छी तरह नहीं पढ़सके थे इसलिये फिर से उस पोथी को पंडित जोखूराम रहनेवाले दरवांसी व जगन्नाथप्रसाद खत्री रहनेवाले काशीजी के सम्मत करके यामिनीभाषा निकालदी व इस देशकी बोली में जो समझसके हैं लिखी ॥



पुराण-महापुराण

हमारे यंत्रालय में निम्न-लिखित पुराणादि अत्यंत शुद्धता-पूर्वक छापे गए हैं। इनको मँगाकर पढ़िए और इनकी पवित्र और अत्यंत मनोहर कथाओं से लौकिक और पारलौकिक लाभ उठाइए।

(१) आदिब्रह्मपुराण (केवल भाषा)—इसमें संपूर्ण सृष्टि का वृत्तांत है। पृष्ठ-संख्या ६८८; मूल्य १॥)

(२) पद्मपुराण (केवल भाषा)—इसमें सृष्टिखंड, भूमिखंड, स्वर्गखंड, ब्रह्मखंड, पाताल-खंड, उत्तरखंड और क्रियायोगसार ये सात खंड हैं। पृष्ठ-संख्या ३६६४; मूल्य १५) सब खंड अलग-अलग भी मिलते हैं।

(३) जैमिनिपुराण (केवल भाषा)—इसमें महाभारत के अंत में युधिष्ठिरजी ने जो अश्वमेधयज्ञ किया है, उसका सविस्तार वर्णन है। पृष्ठ-संख्या २०६; मूल्य १)

(४) शिवपुराण (केवल भाषा)—श्रीशिवजी का निर्गुण-सगुण स्वरूप सती-गिरिजा विवाह, शिवजी के ३८ अवतार, लिंगों की महिमा, शिवजी के द्वादश व्रतों के निरूपण आदि विषय हैं। पृष्ठ-संख्या १०१४; मूल्य ४॥) सजिल्द

(५) श्रीमद्भागवत (सटीक)—यह भगवद्भक्ति-परिपूर्ण सर्वश्रेष्ठ पुराण। मूल्य २१)

सुखसागर—केवल भाषा ६), गुटका २)

(६) बृहन्नारदीयपुराण (केवल भाषा)—इसमें १८ पुराणों का सार, समस्त तीर्थों के माहात्म्य, व्रतों के निरूपण आदि विषय वर्णित हैं। पृष्ठ-संख्या ३१२; मूल्य ॥-)

(७) मार्कंडेयपुराण (सटीक) दो भागों में—इसमें वशिष्ठ-विश्वामित्र-युद्ध, वेदोत्पत्ति, देवासुर-संग्राम आदि का वर्णन है। पृष्ठ-संख्या ११८४; मूल्य २॥)

(८) भविष्यपुराण (केवल भाषा)—इसमें भूत, भविष्य और वर्तमान-काल एवं धर्म का वर्णन है। पृष्ठ-संख्या ७४६; मूल्य २॥)

(९) लिंगपुराण (केवल भाषा)—इसमें सृष्टि, प्रलय, भूगोल तथा शिव-लिंगों का सविस्तार वर्णन है। पृष्ठ-संख्या ६३०; मूल्य १॥-)

(१०) वाराहपुराण (केवल भाषा)—इसमें वराह भगवान् के विशद चरित्रों का वर्णन है। पृष्ठ-संख्या ६३८; मूल्य १॥-)

(११) स्कंदमहापुराण (सटीक)—इसमें माहेश्वर, वैष्णव, ब्राह्म, काशी, अवंतिका, नागर और प्रभास ये सात खंड हैं। कागज़ सफ़ेद, पृष्ठ-संख्या ६२८३; मूल्य ४०) सब खंड अलग-अलग भी मिलते हैं।

(१२) वामनपुराण (केवल भाषा)—इसमें देवासुर-संग्राम तथा वामन भगवान् का सविस्तार वर्णन है। पृष्ठ-संख्या ५६२; मूल्य १।=)

(१३) मत्स्यपुराण (सटीक)—इसमें मत्स्यावतार धारण करने का कारण, देव, दानव, गंधर्वादि की उत्पत्ति तथा सूर्य चंद्र-वंश का सविस्तार वर्णन है। पृष्ठ-संख्या ६६२; मूल्य ४॥)

(१४) गरुड़पुराण (सटीक)—इसमें संपूर्ण प्रेत-कर्म अर्थात् षोडशी, सपिंड, शांति वृषोत्सर्ग आदि का पूर्ण विधान है। पृष्ठ-संख्या १७६; मूल्य ॥-)

नोट—अन्य पुस्तकों के लिये कार्ड डालकर बड़ा सूचीपत्र मुफ़्त मँगा लीजिए।

पुस्तकें मिलने का पता:—

मुंशी विष्णुनारायण भार्गव,

प्रोप्राइटर—नवलकिशोर-प्रेस, हज़रतगंज, लखनऊ.